साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५, अंक ६ | रविवार, ५ जनवरी, १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

श्रद्धानन्द बलिदान भवन को सरकार 'राष्ट्रीय स्मारक' घोषित करें

17

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

नई दिल्ली "युग पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द ने हिन्दू, मुस्लिम व सिख एकता को सुदृढ़ करने के साथ साथ स्वतन्त्रता आन्दोलन मे भी अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान दिया है अत भारत सरकार को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन श्रद्धानन्द बाजार को, एक राष्ट्रीय स्मारक घोषित करना चाहिए।" ये उद्‌गार सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के तत्वावधान में २५ दिसम्बर को आयोजित ६५वें श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर अपने अध्यक्षीय भाषण में ऐतिहासिक लालकिला मैदान में एक श्रद्धांजलि सभा में व्यक्त किए।

विशाल आम जन-समूह को सम्बोधित करते हुए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि भयानक सर्दी व बर्फ के बावजूद उत्तरकाशी मे पीडित राहत कार्य आर्य समाज द्वारा तब तक जारी रखा जायगा जब तक कि पीड़ितों की स्थिति सामान्य नहीं हो जाती।

स्वामी जी ने इस अवसर पर यह भी घोषणा की कि हिन्दी एव भारतीय भाषाओं के विकास तथा अंग्रेजी को हटाने के लिए आर्य समाज द्वारा पूरे देश मे भारतीय भाषा सम्मेलन आयोजित किए जयेंगे। आगे उन्होंने बताया कि यदि आवश्यकता हुई तो अंग्रेजी नाम पट्टो को पोतने के लिए भी आर्य समाज द्वारा स्थान-स्थान पर आन्दोलन चलाये जायेंगे।

प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु सम्मानित

इस कार्यक्रम मे प्रख्यात वैदिक विद्वान प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने शाल ओढा कर सम्मानित किया। सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने प्रशस्ति पत्र तथा आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्रीमती कृष्णा चड्ढा ने सम्मान राशि भेंट की।

विशेषांक का विमोचन

समारोह मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के हिन्दी साप्ताहिक आर्य सन्देश "स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एव आचार्य रामदेव संयुक्तांक" का प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री दरबारी लाल ने करतल ध्वनि में विमोचन किया।

विशाल शोभा यात्रा

इससे पूर्व प्रात १० बजे यज्ञ के पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व मे एक विशाल शोभा यात्रा शुरू हुई। आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव एव महामन्त्री डा० धर्मपाल, दिल्ली आर्य प्रान्तीय महिला सभा की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला आर्या, सर्वश्री चौधरी लक्ष्मी चन्द, वेदव्रत शर्मा मांगेराम आर्य लाजपतराय विरूावन, एडवोकेट सोमनाथ मरवाह, सरदारी लाल वर्मा राजसिंह भल्ला, रोशनलाल गुप्ता आदि आर्य नेता व गणमान्य अधिकारी जुलूस मे चल रहे थे। खारी बावली, नया बांस, लालकुआं चावड़ी बाजार नई सडक, चांदनी चौक व दरीबा होता हुआ यह जलूस दस किलो मीटर मार्ग तय कर लाल किला मैदान मे श्रद्धान्जलि सभा मे परिवर्तित हो गया।

कड़ाके की सर्दी के बावजूद मार्ग में खड़े लोगों ने स्थान-स्थान पर आर्य नेताओं का माल्यार्पण व पुष्प द्वारा अभिनन्दन किया। इस वर्ष आर्य वीर दल की विभिन्न शाखाओं के सैकडो आर्य वीरो ने उत्साह पूर्वक भाग लेते हुए पी० टी०, लाठी, भाले आदि का भी सुन्दर प्रदर्शन किया। जुलूस मे शामिल हजारो आर्य नारी व स्कूली बच्चे "अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द की जय," स्वामी दयानन्द की जय, आर्य समाज अमर रहे" के नारे लगाते जा रहे थे।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की मांग पर सरकार द्वारा गो वंश का लदान बन्द

नई दिल्ली सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती एवं न्याय सभा के संयोजक श्री विमल वधावन ने कृषि मन्त्री श्री बलराम जाखड़ को एक भेंट में बताया कि ८ दिसम्बर १९९१ को जालन्धर से ६३ बोगियों मे बछड़ों व बैलो का लदान करके कलकत्ते रवाना किया गया है और अनुरोध किया कि इसे रुकवाने के तुरन्त आदेश जारी कराये जायें। इस पर श्री जाखड़ ने मुगलसराय रेलवे स्टेशन अधिकारियो को आदेश जारी किये कि लदान जालन्धर वापस भेज दिया जाए। साथ ही हरियाणा पंजाब, राजस्थान व उत्तर प्रदेश सरकारों को भी आदेश दिए कि भविष्य में कलकत्ता के लिए ऐसे लदान न किये जायें। उल्लेखनीय है कि यह जानकारी बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री बटुकृष्ण वर्मन तथा आर्य समाज बड़ा बाजार कलकत्ता ने प्रात २-३० बजे टेलीफोन पर सभा को दी थी तथा लदान की बिल्टियो के नम्बर भी बताये थे।

ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व भी प्रधानमन्त्री स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी ने भी स्वामी जी की मांग पर ऐसे ही आदेश उत्तर भारत की सभी सरकारो को जारी किए थे परन्तु रेलवे अधिकारियो की मिली भगत के कारण गोवंश का लदान कलकत्ता के लिए किया जाता रहा।

अत स्वामी जी ने समस्त गोभक्तो से अपील करते हुए कहा है कि गोवंश की रक्षा के लिए आर्य समाज का साथ दें और बछड़ों के लदान होने पर विरोधात्मक कार्यवाही करें।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
महामन्त्री सार्वदेशिक सभा

परामर्श—डा० धर्मपाल | प्रो० सम्पादक—सूर्यदेव | सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

शारीरिक-आत्मिक उन्नति बिना सामाजिक न्याय नहीं मिलेगा

—डा० नरेन्द्र कुमार

महर्षि दयानन्द सरस्वती के समक्ष तमाम चुनौतियां थीं। इन चुनौतियों का उन्होंने डटकर मुकाबला किया। उसमे उन्हें सफलता भी मिली। समाज को उन्होंने अच्छी तरह से खुले किताब की तरह पढा था। अतः उनके द्वारा बनाए गए आर्य समाज के नियम समाज से अछूते कैसे रह सकते थे? आज समाज के न्याय की बात की जाती है। पिछड़े वर्ग को ऊंचा उठाने पर बल दिया जाता है। लेकिन उनका स्तर सुधारने मे कौन कौन से साधन उपयोगी हो सकते है? उनके सर्वांगीण विकास में आने वाली मूलभूत बाधाएं, समस्यायें कौन सी हैं? इन पर चर्चायें होती ही नहीं।

समाज का प्रत्येक मनुष्य सर्वांगीण विकास करे, यह कामना सबकी होनी चाहिए। महर्षि दयानन्द के शब्दो मे—ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। नियम को गौर से देखे, तो स्पष्ट होगा कि ससार में प्रत्येक मनुष्य को उन्नति का अधिकार है। चाहे वह किसी भी वर्ण का क्यो न हो। वर्ण-विभाजन करके वर्ण विशेष को उन्नति के अधिकार से वंचित करना अनुचित है।

यह भी स्पष्ट है कि आर्य वह है, जो ससार के सभी लोगो का भला चाहता है। आर्य के हृदय मे सब के लिए सम्मान होता है। वह वर्ण, स्थान, काल आदि से ऊपर उठकर सबके हित की बात सोचता है।

ससार मे दो प्रकार के व्यक्ति होते हैं। एक तो वे लोग हैं जो उपकार करने में समर्थ हैं। दूसरे वे लोग है जिन्हे कुछ लोगो की सहायता की जरूरत है। इस वर्ग पर समाज का साधन सम्पन्न वर्ग उपकार कर सकता है अर्थात् जो अमीर हैं, साधन-सम्पन्न हैं—वे गरीब और साधन-विहीन लोगो की सहायता कर सकते हैं। एक धनी, गरीब को धन से सहायता कर, उसे धनी बना सकता है। धनी न भी बनाए, फिर भी इतना तो कर ही सकता है कि गरीब आदमी दो वक्त की रोटी तो खा ले। सामाजिक न्याय से पहले दो और पीढ़ियां हैं—शारीरिक और आत्मिक।

शारीरिक उन्नति का अभिप्राय है समाज का प्रत्येक आदमी स्वस्थ रहे। उसे शरीर निर्वाह हेतु भोजन मिले। तभी तो वह हृष्ट-पुष्ट होगा। मजदूर दिन भर कड़ी मेहनत करता है। फिर भी उसे भरपेट भोजन नही मिलता। उसका शरीर स्वस्थ कैसे रह सकता है? वह शारीरिक उन्नति कैसे करेगा? होगा यह कि वह एक दिन मौत के मुंह मे समा जाएगा।

दो वक्त की रोटी सबको मिलनी चाहिए। यह सरकार का दायित्व है। है। प्रत्येक आदमी देश की उन्नति मे कुछ न कुछ किसी न किसी रूप मे योगदान करता है। एक मजदूर खेत मे मेहनत कर, अनाज पैदा करता है। उस अनाज को सभी देशवासी खाते है।

स्वस्थ होने पर ही मनुष्य स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकता है। अस्वस्थ मनुष्य स्वयं को समाज व परिवार का बोझ समझता है। उसका मानसिक व शारीरिक बल क्षीण हो जाता है। मजदूर आन्दोलन के पीछे एक कारण यह है कि मालिक उन्हे अपना सहयोगी नही समझते। जब वे अपना हक मागते है, तो मालिक उन्हें खरी-खोटी सुनाते हैं। गावों में मजदूरों को भोजन के नाम पर दो-चार सूखी-रूखी रोटियां मिलती हैं। पगार मागने पर मालिक की मार पडती है। शारीरिक यातनाएं मिलती हैं। फिर मजदूर वर्ग मालिक से नफरत करता है, घृणा से देखता है।

भूखा आदमी आत्मिक उन्नति कैसे करेगा? भूख से बिलबिलाता आदमी भगवान् को क्या याद करेगा? आत्मिक उन्नति के लिए शारीरिक उन्नति आवश्यक है। जिसे दिन-रात मेहनत-मजदूरी से फुर्सत न मिले वह प्रभु में अपना मन कैसे लगाएगा। आत्मिक उन्नति कोई बच्चे का झुनझुना, खिलौना नही कि बाजार मे गए और पैसे देकर खरीद लाए। इसके लिए स्वाध्याय, जप, तप की जरूरत है। ये हैं नही, तो आत्मिक उन्नति कैसी? गावों मे जमींदारो के पास हजारो बीघे जमीन है। व्यापार है, अच्छा कारोबार है। बेशुमार धन-दौलत है। धन-दौलत से किसे द्वेष है। पर उन पिछड़े तबको का भी ध्यान रखना चाहिए। उन्ही की बदौलत से जमींदार बना जाता है। उन्हीं के परिश्रम से बड़ी-बड़ी कोठियाँ, फैक्ट्रियां खड़ी होती है। किसी के पास इतनी खेती है कि वह संभाल नहीं पाता। कुछ ऐसे भी हैं जिनके पास एक बीघे भी जमीन नहीं है। यह असमानता ही भेदभाव पैदा करती है। ऐसी व्यवस्था हो जिससे कि सबके पास थोडी-बहुत जमीन हो जाए।

कुछ लोग गरीबी और अमीरी को भगवान् के साथ जोडते हैं। भाग्य को कोसते हैं। पर यह उचित नही। क्योंकि परमात्मा ने किसी को न अमीर बनाया न ही गरीब। उसकी नजर मे सब समान है। गरीबी-अमीरी समाज की देन है। परमात्मा ने सबको समान रूप से ज्ञानेन्द्रियां कर्मेन्द्रियां प्रदान की हैं। कोई शारीरिक दृष्टि से अक्षम है तो उसमे माता-पिता का दोष है। अनुवांशिकता कारण हो सकती है और भी तमाम कारण हो सकते हैं। फिर प्रत्येक जीव के शुभाशुभ कर्म भी है।

यदि वही सबको अमीर-गरीब बनाता है तो यहा ससार में आने के बाद किसी को कुछ भी करने की जरूरत ही नहीं होगी। इतना सारा परिश्रम मनुष्य क्यों करता है? सच्चाई यह है कि परमात्मा अपनी ओर से न्याय ही करता है। उसने जो चीजें दी हैं व सबके लिए समान हैं। सूर्य, चन्द्रमा, तारे, पेड-पौधे, पहाड़, सागर, नदियां आदि का उपयोग सभी करते हैं। परमात्मा की कोई टोकाटोकी नही है। अपनी कमजोरियो को परमात्मा पर आरोपित कर, स्वयं को दरकिनार रखना यह आम बात हो गई है। धनी कहते हैं—यह परमात्मा की व्यवस्था है।

हमारी व्यवस्था ऐसी है कि एक आदमी निरन्तर धनी बनता जा रहा है। ताकि भोलीभाली गरीब पिछडी जनता उनके खिलाफ आवाज न उठा सके। कुछ स्वार्थी तत्त्व बड़े आदमियों की जी-हुजूरी मे लगे रहते हैं। कहते हैं, यह सब परमात्मा का खेल है। वह जिसे चाहे अमीर और गरीब बना दे। इनसे यह पूछा जाए यदि यह परमात्मा के हाथ मे ही है, तो जब किसी अमीर परिवार मे बच्चा पैदा होता है उसकी खाली मुट्ठी बन्द क्यो रहती है। उसके हाथो में धन दौलत क्यो नहीं होती?

सामाजिक व्यवस्था के लिए परमात्मा दोषी नही है। बल्कि सारा दोष समाज का है। समाज के प्रत्येक प्राणी को भोजन की आवश्यकता है। सतुलित भोजन से शरीर का विकास होता है। शारीरिक विकास होने पर ही मनुष्य मानसिक विकास की ओर बढता है। स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मन रह सकता है। शरीर की सुरक्षा के लिए रोटी की आवश्यकता है ही। साथ में शरीर को सर्दी गर्मी बरसात से बचाने के लिए सिर छुपाने की जगह भी चाहिए। देश के करोड़ो नागरिक, मासूम बच्चे बेघर हैं। किसी के पास बडी-बडी कोठियां हैं पर उनमे रहने वाला कोई नही है। जहां रहने वाले हैं, वहां मकान नही हैं।

परिवार के सदस्यो के आधार पर घर बनाने के लिए जमीन देनी चाहिए। एक सीमित दायरे तक घर बनाने मे रुपया खर्च होना चाहिए। एक आदमी कोठी बनाने में लाखो रुपया लगा देता है। ये रुपए कहा से आए? स्पष्ट है कि उसने ये रुपए किसी न किसी रूप मे समाज से ही प्राप्त किए हैं। फिर वह समाज के हित की बात क्यो भूल जाता है। सरकार भी दोषी है। शहरों के आधुनिकीकरण के लिए करोड़ो रुपए खर्च कर देती है। पर गांवों के लिए पर्याप्त राशि खर्च नहीं की जाती। कहीं, गांव में सड़कें तक नहीं हैं। गांव और शहर मे भेदभाव क्यो बरता जाता है।

ध्यान रहे, जब तक एक तरफ कोठियां बनती रहेंगी और दूसरी ओर झुग्गी-झोपड़ियां पड़ेंगी, तब तक सामाजिक न्याय की कहावत बेकार है। शरीर ही सुरक्षित नहीं है, तो उसके विकास की क्या गारंटी है।

इसलिए सरकार को चाहिए कि गाव और शहर मे बरते जा रहे भेदभाव को बन्द करे। यदि गांव मे अधिक धन लगे, तो उनकी बहुत उन्नति हो सकती है। शरीर रक्षा के लिए अगली आवश्यकता है—औषधि, उपचार। आज के भौतिकवादी युग मे खान-पान, रहन सहन सब बदल रहा है। प्राय हर घर में एक न एक रोगी होती ही है। शहरों मे तो चिकित्सालय उपचार आदि व्यवस्थाएं हैं। लेकिन गांवो मे ये सुविधाएं कहां? गरीब पिछड़ा वर्ग को कोई महत्त्व (क्रमशः)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

अन्ध विश्वास एवं कुरीतियों के उन्मूलन के लिए आर्य-समाज की प्रतिबद्धता



इस वर्ष के राष्ट्रीय निर्वाचन मे भारतीय जनता पार्टी कांग्रेस के बाद दूसरे नम्बर की पार्टी के रूप में उभर कर आयी है। भारतीय जनता पार्टी के विषय में सामान्यत यह धारणा है कि वह भारतीय अस्मिता की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध है। देश की जनता ने भारतीय जनता पार्टी की ओर विश्वास की दृष्टि से देखा तथा उसे समर्थन भी दिया था।

आशा थी कि भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रहित व भारतीय संस्कृति की रक्षा जैसे मूल्यो को प्राथमिकता देगी। लेकिन भारी व पीडित हृदय से आपको सूचित कर रहा हू कि इस समय हमारी जन-भावनाओं पर भारतीय जनता पार्टी ने झाडू लगाया है। जनसत्ता ;१२ दिसम्बर के प्रमुख पृष्ठ पर नीचे 'जय श्री राम' के नारो के बीच एकता यात्रा की शुरुआत ;आलोक तोमर, विशेष संवाददाता की रिपोट पढने का कष्ट करें। इस पृष्ठ पर छपे रिपोर्ट की अन्तिम दो पंक्तियां पढें, लिखा है—"सुहागनो की पूजा की गई और एक पशु की बलि भी दी गई।"

यह समाचार पढ कर हृदय को गहरा धक्का लगा। जो पार्टी भारतीय संस्कृति की रक्षक बनने का स्वाग करे और ऋषि दयानन्द व वैदिक संस्कृति के के प्रतिकूल पशु बलि जैसे कुकृत्य कर्म करे क्या यह उचित है। स्मरणीय है पार्टी अध्यक्ष डा० मुरली मनोहर जोशी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भौतिक शास्त्र के जाने-माने प्रोफेसर हैं। उनसे ऐसे वीभत्स कर्म की कतई उम्मीद नही थी। कहा तो पार्टी अन्धविश्वास व कुरीतियों से लडने का दावा करती है और कहा खोखली एकता यात्रा के लिए पशु की बलि देती है।

इसी के आगे लिखा है—इस पशु का बलिदान राष्ट्रीय एकता के लिए स्मरणीय माना जाना चाहिए—(जनसत्ता पृष्ठ ५, १२ दिसम्बर ९१)। महर्षि दयानन्द ने यज्ञ मे पशु बलि को वेद के प्रतिकूल माना है। विरोध किया है। 'सत्यार्थ प्रकाश' के ग्यारहवें समुल्लास मे उन्होने शतपथ के राष्ट्र वा अश्वमेध अन्न ७ हि गो। अग्निर्वा अश्व। आज्य मेघ वचनो को स्पष्ट करते हुए स्वामी जी लिखते हैं—घोडे, गाय आदि पशु तथा मनुष्य मार के होम करना कही नही लिखा—देखो! राजा न्याय धर्म से प्रजा का पालन करे आदि।

अत स्पष्ट है कि पशु बलि वैदिक सिद्धान्त, ऋषि दयानन्द की विचारानुरूप बनी आर्य समाज के सर्वथा सर्वदा विरुद्ध है। भाजपा का यह कार्य सर्वथा निन्दनीय है।

हमारा ध्यान आर्य समाज के अनेक कार्यकर्त्ताओं ने इस ओर दिलाया है। अनेक समाचार पत्रो के फोन भी आए कि आर्य समाज इस दिशा मे मौन क्यो है? हिन्दुस्तान टाइम्स समाचार पत्र समूह मे कार्यरत डा० नरेन्द्र कुमार जी सजग पत्रकार हैं। वे गुरुकुल कांगडी के सुयोग्य स्नातक हैं। वे आर्य समाज के दायित्व के सम्बन्ध में समय-समय पर लिखते भी रहते हैं। उन्होंने भी इस विषय में लिखे, अपने लेखो की प्रतियां हमे भेजी।

आर्य समाज के सभी नेताओं तथा कार्यकर्ताओं का यह दायित्व है कि वे इस प्रकार अन्ध विश्वास के विरुद्ध आवाज उठाए। हमे भाजपा को भी बाध्य करना चाहिए कि वे कोई भी कार्य वेद विरुद्ध न करें।

—डा० धर्मपाल

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय सम्पादक जी, सादर सप्रेम नमस्ते।

अत्र कुशल तत्रास्तु। 'आर्य सन्देश' के प्रत्येक विशेषांक, दुर्लभ वृत्त सजोए होने के कारण, अत्यन्त महत्व की उपादेयता सिद्ध करने मे समर्थ होते हैं, एतदर्थ आप सबके इस समवेत पुरुषार्थ को हार्दिक धन्यवाद देते हुए, इस सम्मानित साप्ताहिक पत्र की सफलता हेतु प्रभु से कामना करता हू।

—प० रामाज्ञा 'आर्य पुत्र'
बौद्धिकाध्यक्ष आर्य वीर दल पूर्वी (उ० प्र०)

मान्यवर अध्यक्ष महोदय, सादर नमस्ते।

मेरे ४-१२-९१ के पत्र के अनुसार आपका भेजा हुआ विशेषांक प्राप्त हुआ बहुत-बहुत धन्यवाद, आप सज्जनो के द्वारा वास्तविक आर्य समाज का प्रचार अति प्रशसनीय है।

सोहनपाल गोएल
कनवरी गज, अलीगढ़

श्री सम्पादक जी,

आर्य सन्देश महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एव आर्य समाज मन्दिर सयुक्तांक प्राप्त हुआ। यह विशेषांक काफी सुन्दर ढग से प्रकाशित किया गया है। इसमे अच्छे लेखो का सग्रह है। छपाई कवर आकर्षक है। यह विशेषांक प्रत्येक आर्य परिवार के लिए सग्रह के योग्य है।

मैं आपको इस विशेषांक के कुशल सम्पादन के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हू।

—पद्मश्री डा० कपिलदेव द्विवेदी
ज्ञानपुर, वाराणसी

भारतीय भाषाओं की लिपि देवनागरी में तैयार करने की मांग

हैदराबाद २२ दिसम्बर। केन्द्रीय मानव ससाधन विकास मन्त्री श्री अर्जुन सिंह ने आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश की ओर से आयोजित भारतीय भाषा सम्मेलन मे बोलते हुए कहा कि किसी भी भाषा को एक दूसरे से नफरत की दृष्टि से नही देखना चाहिए, बल्कि एक दूसरे के साथ सहयोग की भावना से उसके विकास मे सहयोग करना चाहिए, तभी राष्ट्र प्रगति कर सकता है। भाषाए एक दूसरे को जोडने के लिए होती हैं, तोडने के लिए नहीं। जिस प्रकार धर्म सब को समानता और एक दूसरे के प्रति प्रेम के व्यवहार का सन्देश देता है, उसी प्रकार भाषाये भी प्रेम और समानता के व्यवहार के लिए होती हैं। श्री सिंह ने घोषणा की कि हैदराबाद स्थित केन्द्रीय हिन्दी सस्थान को हैदराबाद हिन्दी केन्द्रीय सस्थान के रूप मे परिवर्तित किया जायेगा।

हैदराबाद के भारतीय विद्या भवन मे आयोजित इस सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव, श्री गोपालराव, ससदीय हिन्दी कमेटी के अध्यक्ष और ससद सदस्य डा० शकरदयाल सिंह, आन्ध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश डा० पाण्डुरग, श्री बृजकिशोर शर्मा आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियो ने भी सम्मेलन को सम्बोधित किया।

भारतीय भाषा सम्मेलन मे एक प्रस्ताव पारित कर इस बात पर जोर दिया गया कि प्रत्येक राज्य सरकार अपने राज्य की भाषा को सरकारी भाषा के रूप मे अपने यहा मान्यता दे और केन्द्र मे एक भारतीय भाषा अकादमी स्थापित की जावे, जिसमें भाषा का अनुसधान तथा शिक्षण की व्यवस्था हो। सम्मेलन में एक केन्द्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना करके राष्ट्रीय स्तर पर सभी भारतीय भाषाओं की लिपि देवनागरी में तैयार करने की माग भी की गई।

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

पं० नरेन्द्र भूषण आचार्य सम्मानित

महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार निधि न्यास, आर्य समाज फुलेरा, जयपुर द्वारा स्वामी दयानन्द के १०८वें निर्वाण दिवस पर श्रीमती परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्वावधान मे १६ नवम्बर, ९१ को आयोजित एक समारोह मे पडित नरेन्द्र भूषण आचार्य को पाच हजार रुपये की सम्मान राशि, दयानन्द स्वर्ण पदक, उत्तरीय एव प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। प० नरेन्द्र भूषण के अस्वस्थ होने के कारण यह पुरस्कार स्वामी सवदानन्द जी के कर कमलो से प० भूषण जी के सुपुत्र श्री वेद प्रकाश ने ग्रहण किया।

२२ मई, १९३९ को केरल मे जन्मे प० नरेन्द्र भूषण एक भाषाविद् ममज्ञ विद्वान्, सिद्धहस्त लेखक व कवि हैं। आप एक श्रेष्ठ दुभाषिये, अनुवादक व उच्च कोटि के पत्रकार भी हैं। आपका शुद्धि काय आर्य समाज के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो मे अकित रहेगा।

राहत सहायता

आर्य समाज, आजमगढ, उ० प्रदेश ने उत्तरकाशी के भूकम्प पीडितों के लिए पाच हजार की सहायता राशि का ड्राफ्ट ३ दिसम्बर को सार्वदेशिक सभा को भेजा।

शताब्दी समारोह सम्पन्न

आर्य समाज खडवा, मध्य प्रदेश का शताब्दी समारोह १७ से २४ नवम्बर, ९१ तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। विधान सभा अध्यक्ष श्री बृजमोहन मिश्र ने ध्वजारोहण किया। समारोह मे विश्व शान्ति, गायत्री महायज्ञ एव हिन्दी सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, अग्रेजी हटाओ—भारतीय भाषा लाओ सम्मेलन आदि अनेक भव्य कार्यक्रम आयोजित किये गए। सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, श्री बाल दिवाकर जी हस, श्री राजेन्द्र जिज्ञासु, डा० प्रशान्त वेदालकार, स्वामी धर्मानन्द जी आमसेना, उडीसा आदि ने आर्यजनो को सम्बोधित किया।

२३ नवम्बर को विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। २४ को समापन समारोह मे शिक्षा राज्य मत्री श्री किशोरीलाल वर्मा को म० प्र० शासन द्वारा गोवध की हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए सम्मानित किया गया।

लक्ष्मी नारायण शास्त्री,
आर्य समाज खडवा, म० प्र०

चुनाव सम्पन्न

१८ नवम्बर, ९१ को सम्पन्न हुए आर्य समाज शान्ति नगर सोनीपत हरियाणा के चुनाव मे प्रधान—श्री खानचन्द मुजाल, मत्री—श्री राजकुमार, प्रचार मत्री—श्री बलवीर सिंह आय एव कोषाध्यक्ष—श्री सूरज प्रकाश तनेजा निर्वाचित हुए।

आर्य समाज, लाजपत नगर नई दिल्ली के १९९१ ९२ के निर्वाचन मे प्रधान—श्री बलदेव कृष्ण पिपलानी, मत्री—श्री सुरेन्द्र कुमार शास्त्री, प्रचार मत्री—श्री सोमनाथ कपूर एव कोषाध्यक्ष—श्री शादीलाल गेरा चुने गए।

साहित्य प्रचार वाहन का अभिनव उपक्रम

आज के मशीनी युग के व्यस्त जीवन मे सुसाहित्य को खोजने, खरीदने व पढ़ने के लिए मनुष्य को समय निकाल पाना कठिन है। इस तथ्य को ध्यान मे रखते हुए आर्य समाज फोर्ट, बम्बई मे दानवीर स्व० मेघजी भाई नेनशी के सुपुत्र श्री कनशी भाई से प्राप्त सहायता राशि से एक साहित्य प्रचार वाहन क्रय किया जिसका २६ नवम्बर, ९१ को गणमान्य आर्यजनो की उपस्थिति में श्री कनशी जी ने उद्घाटन किया।

समारोह मे सवश्री डा० सोमदेव शास्त्री, डा० वागीश शर्मा, प्रताप भी भाई एव सत्यप्रकाश जी आय ने अच्छे साहित्य की आवश्यकता व प्रचार-प्रसार पर विचार व्यक्त किए। इस सुन्दर कायक्रम का सचालन व सयोजन भी कैप्टन देवरत्न जी आय ने किया तथा समाज के प्रधान श्री रामरिछपाल अग्रवाल ने अध्यक्षता की। महामत्री श्री जगन्नाथ एन० शेट्टी ने धन्यवाद व्यक्त किया।

श्री जिज्ञासु स्मारक पाणिनी कन्या महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव

कन्याओ के लिए आर्ष ग्रन्थो के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण केन्द्र जिज्ञासु स्मारक पाणिनी कन्या महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव ३ अप्रैल से ५ अप्रैल १९९२ तक वाराणसी मे समारोह पूवक मनाया जाएगा। इस त्रिदिवसीय महोत्सव में ४ अप्रैल को पाणिनी मन्दिरम्' का शिलान्यास सम्पन्न होगा। अपनी किस्म के इस अनोखे मन्दिर मे पत्थरो पर अष्टाध्यायी के सभी सूत्रो को अकित किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि १४ अक्तूबर १९९२ से १४ अक्तूबर, १९९३ तक प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु की जन्मशती वष मे अनेक महत्वपूर्ण कायक्रम आयोजित किए जावेंगे। इस शती वष मे श्री जिज्ञासु के सम्बन्ध में एक ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है। अत सभी विद्वान् लेखकों से अनुरोध है कि वे श्री जिज्ञासु जी से सम्बद्ध लेख, घटना, सस्मरण महत्वपूर्ण पत्रादि महाविद्यालय को भेजने का कष्ट करें। सभी प्रयजन महोत्सव मे आमन्त्रित हैं और उनके बहुमूल्य सुझावो की प्रतीक्षा रहेगी।

सुश्री प्रज्ञादेवी
पाणिनी कन्या महाविद्यालय, तुलसीपुर, वाराणसी-१०

आचार्य दत्तात्रेय जी आर्य प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज, अजमेर के १५ दिसम्बर, ९१ को सम्पन्न हुए १०८वें वार्षिक अधिवेशन मे आचार्य दत्तात्रेय जी आय सवसम्मति से प्रधान निर्वाचित हुए। कार्यकारिणी का गठन इस प्रकार हुआ—

प्रधान—आचाय दत्तात्रेय आर्य, मत्री—श्री वेदरत्न आर्य, उपप्रधान—श्री कृष्णराव बावले एव सासद श्री रासासिंह, सयुक्त मत्री—आचार्य गोविन्द सिंह, उपमत्री—श्री शिवचन्द सिंह व श्रीमती शान्ति शास्त्री तथा कोषाध्यक्ष—श्री किशनलाल शर्मा।

विभागीय प्रतिनिधि, न्याय सभा, साहित्य प्रकाशन समिति और धर्म शिक्षा समितियों का भी सर्वसम्मति से निर्माण किया गया।

उल्लेखनीय है कि समाज व उसकी शिक्षण सस्थाओ का लगभग डेढ़ करोड़ का बजट है तथा दस हजार विद्यार्थी व ५०० अध्यापक/अध्यापिकाए हैं। पुष्कर मे दयानन्द मार्ग का उद्घाटन एव अजमेर विश्वविद्यालय का नाम दयानन्द विश्वविद्यालय आदि समाज की प्रमुख उपलब्धियां हैं।

विश्व वेद परिवार संघ

सघ के महामन्त्री प० ब्रह्म प्रकाश शास्त्री की प्रेरणा से डी ए वी पब्लिक स्कूल वृज विहार, गाजियाबाद मे विश्व वेद परिवार सघ की स्थापना की गई है।

आचाय श्री यशपाल वर्मा-अध्यक्ष, मन्त्री-सुश्री पुनीता व सुश्री करुणा-धर्माचार्य नियुक्त किये गए।

कार्यवाहक अध्यक्ष, श्री वेदानन्द वैदिक,
पश्चिम आकाश नगर दिल्ली-५१

महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास, अजमेर

अजमेर—तेरी इच्छा पूर्ण हो' कहकर युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने दीपावली के दिन अजमेर स्थित भिनाय कोठी में अपनी नश्वर देह त्यागी थी। स्वामी जी के व्यक्तित्व व कृतित्व के अनुरूप उसे भव्य रूप प्रदान करने के लिए आर्य जगत् के वीतरागी सन्यासी मण्डल के अध्यक्ष पूज्य सर्वानन्द जी महाराज, दीना नगर, ने सभी आर्यजनो व दानी महानुभावों से मुक्त हस्त से दान देने की अपील की है ताकि निर्वाणस्थली को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का दर्शनीय-स्थल बनाया जा सके।

योजनाए—१ महर्षि दयानन्द स्तूप, २ विशाल सत्सग भवन, ३. मृत्युञ्जय हाल सौन्दर्यीकरण, ४ महर्षि दयानन्द चित्रावली, ५. विशाल आकर्षक द्वार, ६ अतिथि गृह, ७ पूरे भवन में सगमरमर के फर्श, ८ शोचन कक्ष व भोजन व्यवस्था, ९ यज्ञशाला का विकास, १० प्रकाश व सगीत माध्यम से दयानन्द जीवन चरित का दिग्दर्शन।

परिस्रुत हो जाओ

—भगवानदेव "चैतन्य"

ओ३म् आ पवस्व दिशापते आर्जीकाव सोम मीढ्व ।
ऋतवाकेन सत्येन श्रद्धया तपसा सुत' इन्द्रायेन्दो परिस्रव ॥ (ऋ०९-११३-२)

हे परम तृप्तिमय सोम, हे नित्य प्रजा के पालक ।
हे कृपा सिन्धु भगवन, हे सब दिशाओ के सचालक ।।
हमे अपनी करूणामयी आभा से सींचने वाले ।
पल भर में ही पाप पक से, हे ऊपर खीचने वाले ।।

तुम अब सरलतामय लोक से अवतरित हो जाओ ।
हमारे लिए पिता चारों ओर से क्षरित हो जाओ ।।
अब नही तुम्हारे बिन सुख-सम्पदा भी भाती है ।
यह भौतिकता अब मुझे नही शान्ति दे पाती हैं ॥

तुम्हे प्रसन्न करने योग्य, शरीर को कर रहा हू ।
सद्गुणो से अब मैं इस देह सदन को भर रहा हू ।।
अब तो एक भी कलुषता रहने न पायेगी यहा ।
प्रभु अब पवित्रता ही पवित्रता आएगी यहा ।।

सत्य वचन कहने का अब मैं सकल्पी हो चुका हू ।
सत्य व्यवहार करने का अब विकल्पी हो चुका हू ।।
अब मेरा यह जीवन श्रद्धामय बन चुका है पिता ।
अब मेरा यह जीवन तपोमय बन चुका है पिता ।।

तुम प्रकट होते हो सत्य वचन व सत्य व्यवहार मे ।
तपोमय जीवन और श्रद्धामय पावन उद्गार में ।
अब तो हे सोम आत्मा के लिए परिस्रुत हो जाओ ।
इसकी प्यास बुझाने को प्रभु प्रस्तुत हो जाओ ।।

नव वर्ष शुभ हो

—आर्येन्दु द्विवेदी

शुभ कामनाओं के
पुष्पों से सजा
नया वर्ष थाल
आपका जीवन महकाए
सारे साल
दैहिक दैविक, भौतिक
दु खो की न हो कुदृष्टि
सुख समृद्धि
पग पखारे
रुके नही कीर्ति रथ
पहुच दिशाओ के पार

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

आर्य केन्द्रीय सभा गुडगावा के तत्वावधान मे २१ दिसम्बर को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आ० सा० शामनगर से दोपहर १ बजे एक विशाल शोभा यात्रा आरम्भ हुई। जलूस में गुडगावा नगर की सभी पुरुष व स्त्री आर्य समाजो के नर-नारी, मेवात के ग्राम बन्धु, आ० सा० सोहना, मेहरोली, गुरुकुल जसाट, लोहा कलां की ब्रह्मचारिणियां, गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी एव शिक्षण सस्थाओं के विद्यार्थी भी शामिल हुए। बच्चों व आर्य वीरों ने डम्बल, खेल, व्यायाम, आसन, तलवार, भाला आदि के आकर्षक प्रदर्शन कर सभी को मन्त्र मुग्ध कर दिया ।

रामलीला मैदान गुडगांवा छावनी में साय ३ से ५ बजे श्रद्धांजलि सभा में प्रो० बलराज मधोक, डा० महेश विद्यालकार आदि ने स्वामी जी की बहुमूल्य सेवाओं का स्मरण कर श्रद्धासुमन अर्पित किये। समारोह डा० विद्या भूषण जी सनेजा की अध्यक्षता मे हुआ एवं श्री सतीश जैन मुख्य अतिथि थे ।

—ओमप्रकाश आर्य, महामन्त्री

आर्य समाज लन्दन के कर्मठ कार्यकर्ता—

श्री प्रेमस्वरुप जी तलवार का दुखद निधन

आर्य समाज लन्दन के सस्थापको एव सरक्षण मण्डल के एक सदस्य श्री प्रेमस्वरूप तलवार का दु खद एव असामयिक निधन लन्दन के एक अस्पताल मे ५ सितम्बर १९९१ को हो गया ।

उनके परिवार मे एक बहन और छ भाईयो मे सबसे छोटा होने के कारण तथा उनकी ५४ वर्ष की अल्प आयु मे मृत्यु से सभी पर वज्रपात हो गया वे अपने पीछे पत्नी, पुत्र, ऋषी और पुत्री मिनाक्षी को पीछे छोड गये हैं । उनका जन्म १९३७ मे पजाब के गुरदासपुर नगर मे हुआ । डी ए वी स्कूल गुरदासपुर से उन्होने मैट्रिक की परीक्षा पास की और जब वे डी ए वी कालेज जालन्धर मे एम ए द्वितीय वर्ष मे पढ रहे थे तो १९६२ मे अपनी बहन के पास लन्दन चले गये और वही के हो गए १९६९ मे उनका विवाह श्रीमती रोमिला से हुआ ।

लन्दन मे उनकी बहन श्रीमती सावित्री कोहली वहा की हिन्दू सैन्ट्री की मन्त्री थीं । भाई भी उसमे सक्रिय भाग लेने लग गये फिर जब आर्य समाज ल दन की स्थापना हुई तो वे न केवल स्वय उसके सरक्षण मण्डल के सदस्य बने अपितु अपनी पूज्य माता श्रीमती कमदेवी तथा पूज्य पिता श्री लाला राम तलवार की सदस्यता शुल्क देकर उनका नाम सरक्षक मण्डल मे अ कित कराया । सेवा के क्षेत्र में उनके प्रेरणा स्रोत अखिल भारतीय दयानन्द सात्व मिशन के सस्थापक महात्मा देवीचन्द जी थे जो कि प्रेमस्वरूप के पिता जी के सगे मामा थे जिनके चरणो मे एक बार बैठने का उन्हे सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

श्री प्रेम जी की तबीयत खराब होने का समाचार पाकर दिल्ली से उनके डाक्टर भाई, डा० कर्नल जगदीश तलवार लन्दन पहुच गये उनकी डाक्टर भतीजी अपने पति के साथ अमरीका से लन्दन आ गई । उनकी अपनी पुत्री लन्दन विश्वविद्यालय मे तृतीय वर्ष मे पढ़ रही थी वह भी अपने पिता के पास आ गई लेकिन विधि की विडम्बना के आगे किसी की न चली । अन्तिम शोक सभा १४ सितम्बर मे आर्य समाज लन्दन मे और दिल्ली में पजाबी बाग स्थित उनके बड़े भाई प्रि० ओमप्रकाश तलवार के मकान मे सम्पन्न हुई । जिसमे अनेक विद्वानो ने अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की ।

—डा० धर्मपाल

श्री रामशरण दास आहूजा नहीं रहे

एक कर्मनिष्ठ आर्य समाजी श्री रामशरणदास आहूजा का १० दिसम्बर १९९१ को निधन हो गया । वे ७५ वर्ष के थे ।

२३ नवम्बर, १९१६ को सरगोधा (पाकिस्तान) में एक जमींदार परिवार मे जन्मे श्री आहूजा पुरानी पीढ़ी के मिशनरी विचारों के आर्य समाजी थे । सन् १९७४ मे इस्पात मन्त्रालय से राजपत्रित अधिकारी पद से सेवा निवृत्त हुए ।

श्री आहूजा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के ट्रस्टी, टकारा समिति दिल्ली के मन्त्री, भारतीय हिन्दु महासभा न्यास के मन्त्री आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग के सह मन्त्री एव अनेक आर्य सस्थाओं से जुडे थे ।

—श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टकारा के सव प्रथम प्रबन्धक श्री अम्बालाल पटेल (जेतपुर) का देहावसान हो गया है ।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दोनो दिवगत आत्मा को शान्ति व शोक सतप्त परिवारो को दारूण दु ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें ।

मानव कल्याण आश्रम

१४ जनवरी ९२ (मकर सक्राति) से एक यजुर्वेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ होगा जिसकी पूर्णाहुति १९ जनवरी, ९२ को पूर्णिमा को होगी । इस अवसर पर एक अनाथालय, निरन्तर ऋषि लगर (सदाव्रत) एव भक्त पूरणमल (विधा) सरोवर के शिलान्यास कार्यक्रमो का शुभारम्भ भी होगा । दानी महानुभाव मुक्त हस्त से दान दें ।

सचालक—मानव कल्याण आश्रम
बिजोराबास, तहसील-बहरोड जिला—अलवर

२९ दिसम्बर को पुण्य तिथि पर :

पण्डित देवप्रकाश अमृतसरी

—आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन'

आपका जन्म पंजाब प्रदेश के गुरदासपुर जिले के धर्मकोट बग्गा नामक ग्राम में सन् १८८९ में हुआ था। सन् १९१२ में आपका आर्य समाज के सुधारवादी आन्दोलन से सम्पर्क हुआ था और तब से ही आप उससे सक्रिय रूप से सम्बद्ध हो गये थे। अपनी छात्रावस्था से ही आपकी रूचि इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त करने की ओर थी। आपने स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती द्वारा लिखित ट्रैक्टों को पढ़ कर वैदिक धर्म की उपादेयता और इस्लाम धर्म के खोखलेपन का अच्छा परिचय प्राप्त कर लिया था। अपने परिवार के भरण पोषण के लिए आप जब अमृतसर के लाला मुन्शीराम सर्राफ की दुकान पर आकर आभूषण बनाने का कार्य सीख रहे थे, उन्हीं दिनों आपका वास्तविक कार्मिक जीवन प्रारम्भ हुआ था। वहां रहते हुए आपने लोहागढ़ में 'आर्य युवक समाज' की स्थापना करके अपने समाज सुधार का कार्य प्रारम्भ कर दिया था।

आपकी यह सुधारवादी प्रवृत्ति तब और भी अधिक बढ़ी जब आपने सन् १९२३ में स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हंसराज जी आदि पंजाब के शीर्षस्थ नेताओं की प्रेरणा पर अखिल भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा आगरा के कार्यों में रूचि लेना प्रारम्भ किया और आपने उसके प्रधान मन्त्री का कार्य भार सम्भाला था। आपने अपने स्वाध्याय के बल पर 'मुस्लिम धर्म' के सभी सिद्धान्तों का इतनी गम्भीरता से पारायण कर लिया था कि आप उसमें पूर्णत पारंगत हो गए थे। इस सभा के माध्यम से आपने हजारों राजपूत मुसलमानों को पुन हिन्दू धर्म में दीक्षित किया, जो कभी बलात् मुसलमान बना लिए गए थे। मालाबार के मोपला काण्ड के समय भी आपने वहां की जनता की उल्लेखनीय सेवा की थी।

आपने मध्य प्रदेश के रतलाम के समीपवर्ती पिछड़े हुए क्षेत्रों में रह कर आदिवासियों के सुधार तथा उद्धार का कार्य किया था वह भी आपकी कर्मठता का ज्वलन्त साक्षी हैं। आपने वहां के आदिवासियों के सुधार के लिए पाठशालाओं, औषधालयों और छात्रावासों की स्थापना करके वहां के निवासियों को ईसाई तथा मुसलमान बनने से बचाने का जो प्रशंसनीय कार्य किया था उससे आपकी कर्मठता का परिचय मिलता है। आपकी यह दृढ़ मान्यता थी कि जब तक हिन्दू युवक अरबी तथा फारसी का विधिवत् अध्ययन करके मुस्लिम धर्म' के ग्रन्थ कुरान का बारीकी से स्वाध्याय नहीं करेंगे तब तक वे मुस्लिम धर्म की कमियों को जनता के समक्ष उजागर न कर सकेंगे। फलस्वरूप आपने अमृतसर के पास 'गण्डासिंह वाला नामक स्थान में अरबी और फारसी का अध्ययन कराने की दृष्टि से एक विद्यालय की स्थापना की थी। जब रामलाल कपूर ट्रस्ट की ओर से लाहौर के पास रावी तट पर शाहदरा में पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु ने आर्य पद्धति पर संस्कृत वाङ्मय का सक्रिय और प्रवीण ज्ञान कराने की दृष्टि से एक विद्यालय की स्थापना की थी। तब आपने उस कार्य में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान किया था। आप जहां अच्छे प्रचारक, कुशल संगठक और अरबी तथा फारसी के गम्भीर विद्वान थे वहां आपने हिन्दी में ऐसी अनेक पुस्तकों की रचना की थी जिनके स्वाध्याय से हमारे देश की नई पीढ़ी का मार्ग प्रदर्शन हो सकता है। आपके द्वारा लिखित ग्रन्थों में 'कुरान परिचय', 'ख्वाजा हसन निजामी का वास्तविक रूप', 'आस्तिक विचार', 'इंजीलों में परस्पर विरोधी कल्पनाएं अर्थात् ईसाई मत का वास्तविक स्वरूप' 'घोर आक्रमण', 'यथार्थ दर्शन' 'बाहाई मत समीक्षा' और आर्य समाज के विशिष्ट आर्यजनों का जीवन परिचय' आदि प्रमुख रूप में उल्लेखनीय है। आपकी समाज सेवा की 'हीरक जयन्ती' के अवसर पर २९ अक्तूबर, सन् १९७२ को अमृतसर की आर्यसमाज लोहागढ़ की ओर से महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती के कर कमलों द्वारा आपको एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया था।

आपका निधन २९ दिसम्बर सन् १९८० को दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब) में हुआ था।

तमिलनाडु में हिन्दी की स्थिति

(श्री के० चन्द्रशेखरन, शिक्षा व कानून मन्त्री, केरल सरकार द्वारा दिनांक १६-२-१९९१ को दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के दीक्षान्त समारोह में दिये गए भाषण के कुछेक अंश)

महात्मा गांधी के द्वारा संस्थापित इस महान् राष्ट्रीय शिक्षा संस्था के इस महत्त्वपूर्ण दीक्षान्त समारोह में भाग लेने में मैं बड़े गर्व और सन्तोष का अनुभव कर रहा हूं।

विविध भाषा-भाषी भारतीय जनता को राष्ट्रभाषा के सूत्र में पिरोकर एक बनाये रखने के महान् उद्देश्य को लेकर महात्मा गांधी ने इस संस्था का आरंभ किया था।

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, डा० सी०पी०रामास्वामी अय्यर, रामस्वामी नायक्कर जैसे नेताओं और विद्वानों का सहयोग पाकर यह संस्था पल्लवित और पुष्पित हो गई। आज दक्षिण के चारों प्रान्तों में इसकी शाखायें हैं। एक करोड़ लोगों को इसने हिन्दी का ज्ञान प्रदान किया है।

पर इतना सब होते हुए भी आज तमिलनाडु को हिन्दी विरोधी बतलाया जा रहा है। क्यों? आज तमिलनाडु के स्कूलों में हिन्दी अनिवार्य विषय नहीं। क्या यह स्थिति तमिलनाडु की नई पीढ़ी के लिए हितकर है या अहितकर? क्या राष्ट्रीय जीवन की मुख्य धारा में प्रमुख स्थान पाने के लिए हिन्दी के अलावा और कोई माध्यम है?

हिन्दी के उत्तम साहित्य का अनुवाद दक्षिण की भाषाओं में करें। मलयालम, तमिल, तेलुगू कन्नड आदि भारतीय भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य का अनुवाद हिन्दी में प्रस्तुत करें। हिन्दी में मौलिक साहित्य का भी सृजन करें। तभी हिन्दी को हम भारत का सामाजिक संस्कृति का प्रतिबिम्ब बना सकेंगे। तमिलनाडु का जीवन जब हिन्दी में प्रतिबिम्बित होगा तब हिन्दी तमिलनाडु की भी होकर रहेगी।

तमिलनाडु किसी भी हालत में भारतीय गणराज्य से अलग रहना नहीं चाहेगा। यदि इने-गिने अलगाव वृत्ति के पोषक दिखाई पड़े तो उनके प्रति हमारे मन में सिर्फ सहानुभूति ही उमड़ती है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता पर आस्था रखने वाले कोई भी देश के विघटन की बात नहीं सोचेंगे। भारत में अधिकांश लोग हिन्दी भाषा या उससे सम्बन्धित बोली से परिचित हैं। यही नहीं, गत २५ वर्षों से जो युवा पीढ़ी अन्यान्य क्षेत्रों में उभरकर आई है, वह अखिल भारतीय मंच पर माध्यम के रूप में हिन्दी को स्वीकारते दिखाई दे रहे हैं। ऐसी स्थिति में यदि किसी एक प्रान्त से जाने वाला हिन्दी को अछूत वस्तु मानकर दूर रहेगा तो इससे हानि स्वयं उसकी होगी, न दूसरों की।

मैं यह जानना चाहता हूं क्या तमिलनाडु की साधारण जनता हिन्दी के खिलाफ है? नहीं है, यह मेरा वैयक्तिक अनुभव है। टैक्सी चालक, रिक्शा व आटो चालक, कुलीगण, भोजनालयों के कर्मचारी, व्यापारीगण, तीर्थ स्थानों में रहने वाले पुजारी आदि सब हिन्दी के माध्यम से अपनी रोजी-रोटी हासिल करते यहां दिखाई देते हैं। सभा की विभिन्न परीक्षाओं के लिए अपने बच्चों को बिठाने में मां बाप हिचकते दिखाई नहीं देते।

हिन्दी प्रदेशों में जाकर बसने वाले तमिलनाडु के परिवार बहुत जल्दी ऐसी हिन्दी बोलने लग जाते हैं कि सुनने वाले के मन में शंका नहीं होती है कि वह अहिन्दी भाषा-भाषी है। तमिलनाडु के बुद्धिजीवी एवं राष्ट्रीय विचार वाले हमेशा हिन्दी प्रचार सभा के कार्यों की श्रीवृद्धि के लिए सहयोग प्रदान करते आ रहे हैं। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की चारों प्रान्तीय शाखाओं ने अपनी विभिन्न हिन्दी प्रचार योजनाओं के लिए केन्द्र सरकार की परिसीमित सहायता प्राप्त करके इस आन्दोलन को आगे बढ़ा रही है।

—'भेरूल ज्योति' के मार्च, १९९१ अंक से साभार

गुरुकुल प्रभात आश्रम

मकर संक्रान्ति के अवसर पर १४ जनवरी, १९९२ को गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव सोल्लास पूर्वक मनाया जा रहा है। १३ जनवरी को "वैदिक अर्थ व्यवस्था—वर्तमान परिप्रेक्ष्य में" विषय पर एक विद्वत शोध गोष्ठी आयोजित की जायेगी। धर्म प्रेमी आर्य जनता सादर आमन्त्रित हैं।

—आचार्य, गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव

१, २ व ३ मार्च, १९९२ को महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्मस्थली टंकारा में शिवरात्रि के अवसर पर एक भव्य ऋषि मेला समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। सभी आर्यजन सादर आमन्त्रित हैं। आवास व भोजन का प्रबन्ध ट्रस्ट की ओर से नि:शुल्क होगा।

—रामनाथ सहगल

मन्त्री, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट

निबन्ध प्रतियोगिता

आर्य धर्मार्थ न्यास (पंजीकृत) द्वारा सुप्रसिद्ध समाज सेवी स्व० इकबाल राय वेदी (गुरुजी) की स्मृति में हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता ९१ आयोजित की गई है। विवरण इस प्रकार है—

विषय	शब्द	आयु वर्ग
१—धर्म का राजनीति मे स्थान	१५००	२० वर्ष तक
२— " "	१०००	२०-४० वर्ष

लिफाफे पर "वार्षिक निबन्ध प्रतियोगिता—९१" अंकित, कर एवं डबल स्पेस मे टाइप किया हुआ या स्पष्ट शब्दो मे लिखा निबन्ध ३१ जनवरी, १९९२ तक पहुंचना चाहिए। दोनों वर्गों में १०० रुपए ५०० रुपये तक के कुल ८ नकद पुरस्कार हैं।

—मन्त्री, आर्य कुमार सभा, किंग्जवे कैम्प

ब्लाक १ डबल स्टोरी विजय नगर दिल्ली ९

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387 77 Posted at N D P S O. on 2-3-12-1992 Licence to post without prepayment, Licence No. U 199

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५९ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३९/८५

साप्ताहिक "आर्यसन्देश' ५ जनवरी १९९२

आर्य राष्ट्रीय मंच

मंच की कार्यकारिणी की बैठक में निर्णय लिया गया है कि उत्तर काशी में अनाथ बच्चों व निराश्रित स्त्री-पुरुषों के रहने के लिए एक आश्रम की स्थापना की जाये। मंच के अध्यक्ष ने उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री को भूमि प्रदान करने के के लिए एक पत्र लिखा है। जमीन मिलते ही स्थापना कार्य शुरू कर दिया जायेगा।

आश्रम स्थापना के लिए तन, मन धन की अपील है तथा क्षेत्र में रह कर आश्रम विकास में सहयोग के लिए आर्य जन आमन्त्रित हैं।

अध्यक्ष डा० प्रशान्त वेदालंकार

आर्य युवक सभा, पंजाब

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आर्य युवक सभा का दो दिवसीय आर्य युवा चरित्र निर्माण शिविर १६ व १७ नवम्बर, ९१ को आर्य समाज, नंगल टाउनशिप में सम्पन्न हुआ।

शिविर का उद्घाटन पंजाब सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने किया व अध्यक्षता नंगल समाज के प्रधान श्री सुरेन्द्र पाल खन्ना ने की। इस अवसर पर युवक सभा की ओर से श्री वीरेन्द्र जी को महर्षि दयानन्द सरस्वती का सुन्दर चित्र घड़ी के साथ फ्रेम किया हुआ भेंट कर सम्मानित किया गया। समापन समारोह लाला लाजपतराय के बलिदान दिवस के रूप में श्री रोशन लाल जी आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज रोहतास नगर (शिवाजी पार्क), शाहदरा का २५वां (रजत जयन्ती) वार्षिकोत्सव १८ से २४ नवम्बर ९१ तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ एवं वेद प्रवचन हुए। २३ नवम्बर को महिला सम्मेलन आयोजित किया गया।

श्रीमती शान्ति अग्निहोत्री ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को को शील्ड, वैदिक साहित्य पैन, आदि प्रदान किये। प्रधान श्री सुशील कुमार ने धन्यवाद व्यक्त किया।

—श्री खिलारी राम, मन्त्री

आवश्यक सूचना

निर्णय के तट पर (प्राचीन शास्त्रार्थ संग्रह) भाग ५ का प्रकाशन कार्य आरम्भ है। सभी आर्य भाइयों से अनुरोध है कि पूर्व की भांति इस भाग ५ के मात्र बीस रुपया भेज कर अग्रिम ग्राहक बनें, शेष अस्सी रुपये पुस्तक प्राप्त होने पर लिए जावेंगे। इस ग्रन्थ का मूल्य भी छपने के बाद दो सौ रुपये होगा, अतः अग्रिम ग्राहक बन कर विशेष छूट का लाभ उठावें।

पूर्ण जानकारी के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें।

पता—अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८ विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद २०१००१ (उ० प्र०)

सेवा में—

व्यवस्थापक जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
गुरुकुल फार्मेसी हरिद्वार (उ प्र)

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली ११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ फोन-३१०१५ के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (सी० ७५९)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५, अंक १० | रविवार, १२ जनवरी, १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

राष्ट्र के हित में बलिदान का संकल्प लें

—डा० धर्मपाल

आर्य समाज सरस्वती विहार, दिल्ली के तत्वावधान में २६ दिसम्बर को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर अध्यक्षीय भाषण में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने कहा कि अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने प्राणों का बलिदान देकर एक नया इतिहास रचा है। उन्होंने ऋग्वेद के 'वय बलिहृत स्याम' मन्त्र का हवाला देते हुए कहा कि राष्ट्रीय एकता के लिए पशु बलि देने की अपेक्षा हमें स्वयं अपना बलिदान देने का सकल्प लेना चाहिए।

डा० धर्मपाल ने आगे कहा कि महान् शिक्षा शास्त्री स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगडी उनका एक महान् कीर्ति स्तम्भ है। वे एक आदर्श आचार्य थे और छात्रों को अपने पुत्रों के समान प्यार करते थे।

स्वामी श्रद्धानन्द को स्वतन्त्रता सग्राम का एक महान् योद्धा बताते हुए डा० धर्मपाल ने कहा कि जब जलियांवाला काण्ड के बाद पंजाब में कोई भी नेता कांग्रेस का अधिवेशन बुलाने का साहस नहीं जुटा पा रहा था तब निर्भीक श्रद्धानन्द ने सन् १९१९ में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी अमृतसर में अधिवेशन का आयोजन कर एक नई जागृति पैदा की थी। कांग्रेस के इतिहास में स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वागताध्यक्ष के रूप में पहली बार हिन्दी में भाषण देकर एक मिसाल कायम की थी। महान् दलितोद्धार स्वामी जी को दीन-दुखियों से भी असीम प्यार था।

डा० धर्मपाल ने यह भी बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द एक आदर्श पत्रकार थे। वे अपने पत्र 'सद्धर्म प्रचारक' में कभी किसी की बुराई नहीं करते थे जबकि आज समाजों के अधिकारी एक दूसरे पर छींटाकशी करते रहते हैं।

समारोह के मुख्य अतिथि सांसद श्री बैकुण्ठ लाल शर्मा ने स्वामी श्रद्धानन्द को एक युग पुरुष बताते हुए समाज व राष्ट्र के प्रति स्वामी जी की बहुमूल्य सेवाओं का स्मरण कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डा० रघुवीर वेदालंकार ने भी अमरहुतात्मा श्रद्धानन्द को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री श्यामलाल, प्रचार मन्त्री श्री बिशनदास गंभीर, श्री कृष्णदेव ने कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष सहयोग दिया। प्रधान श्री वेदप्रकाश बसल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

आर्य लेखक संघ की स्थापना

आर्य समाज के इतिहास में प्रथम बार ३० नवम्बर एवं १ दिसम्बर ९१ को कोटा में आर्य लेखक सम्मेलन आहूत किया गया। सम्मेलन में पधारे आर्य लेखकों ने सर्वसम्मति से सम्मेलन के अन्त में डा० भवानीलाल भारतीय की अध्यक्षता में आर्य लेखक संघ की स्थापना की। जिसमें निम्नलिखित कार्यकारिणी का गठन हुआ। अध्यक्ष—डा० भवानीलाल भारतीय (जोधपुर), उपाध्यक्ष—स्वामी जगदीश्वरानन्द (दिल्ली), मन्त्री—वेदप्रिय शास्त्री (सीताबाडी-कोटा), उपमन्त्री—प्रो० कुशलदेव शास्त्री (नांदेड), कोषाध्यक्ष—डा० रामकृष्ण आर्य (कोटा), कार्यकारिणी सदस्य—सर्वश्री डा० प्रशस्यमित्र शास्त्री (रायबरेली) डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री (अमेठी) डा० रूपकिशोर शास्त्री (दिल्ली), डा० धर्मवीर (अजमेर), गजानन्द आर्य (कलकत्ता) एवं डा० ओ३म् प्रकाश ब्रह्मचारी (मुजफ्फरपुर बिहार) विशेष आमन्त्रित डा० सुधीर कुमार गुप्त (जयपुर), प० अभिविनय भारती (दिल्ली), डा० जयदत्त उप्रेती (अलमोडा) एवं डा० प्रशान्त कुमार वेदालंकार (दिल्ली) नियुक्त किये गए।

ज्ञात रहे, आर्य परिवार संस्था, कोटा ने श्री वेदप्रिय शास्त्री के संयोजन एवं डा० भवानी लाल भारतीय की अध्यक्षता में यह सम्मेलन बुलाया गया था। सम्मेलन में चार गोष्ठियां सम्पन्न हुईं। यथा—डा० प्रशान्त कुमार की अध्यक्षता में और डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री के संयोजन में आर्य लेखक एवं आर्य लेखन की समस्याएं डा० उप्रेती (अलमोडा) की अध्यक्षता में और डा० प्रशस्य मित्र शास्त्री के संयोजन में आर्य लेखन का स्वरूप और प्रक्रिया, डा० भवानी लाल भारतीय की अध्यक्षता और कुशलदेव शास्त्री के संयोजन में साहित्य में दयानन्द और आर्य समाज की अभिव्यक्ति एवं डा० वेद प्रताप वैदिक (दिल्ली) की अध्यक्षता और डा० धर्मवीर (अजमेर) के संयोजन में आर्य समाज और पत्रकारिता विषयक गोष्ठियां सम्पन्न हुईं जिसमें सम्मिलित ३५ आर्य लेखकों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

१ दिसम्बर को प्रातः १०.३० से २ बजे तक डा० वेद प्रताप वैदिक (दिल्ली) के कर कमलों से राजस्थान के प्रसिद्ध आर्य कार्यकर्ता कोटा के डा० रामकृष्ण आर्य के पी-एच डी शोध ग्रन्थ "स्वामी दयानन्द का आर्थिक चिन्तन" का विमोचन सम्पन्न हुआ। समारोह का पुरोवाक् डा० भारतीय और संयोजन वेदप्रिय शास्त्री और अध्यक्षता स्वामी जगदीश्वरानन्द ने की।

विमोचन करते हुए डा० वैदिक ने कहा कि आज तक स्वामी दयानन्द सरस्वती के समाज सुधार और धार्मिक विचार तथा वैदिक भाष्य की चर्चा ज्यादा हुई डा० रामकृष्ण आर्य ने पहली बार स्वामी दयानन्द के आर्थिक चिन्तन पर ग्रन्थ तैयार कर स्वामी दयानन्द को एक अर्थशास्त्री के रूप में संसार के सामने प्रस्तुत करने की नींव रख दी है। शोध ग्रन्थ के निर्देशक डा० भवानी लाल भारतीय की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि एक ओर भारत के प्रोफेसर ४० वर्ष में ४० पंक्ति भी नहीं लिखते और दूसरी ओर डा० भवानी लाल भारतीय ने १० वर्षों में दयानन्द शोध पी० पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में २८ मौलिक शोध ग्रन्थ तैयार कर डा० आर्य जैसे २८ शोध छात्रों को डाक्टर आफ फिलासफी की उपाधि दिलवाई। समारोह में प्रथम वेदप्रिय शास्त्री एवं डा० भारतीय ने डा० रामकृष्ण आर्य के शोध ग्रन्थ की प्रशंसा करते हुए कहा कि श्रीराम फर्टिलाइजर्स कोटा में श्रमिक रहते हुए डा० आर्य ने आर्य समाज के ११६ वर्ष के इतिहास में पहली बार इस विषय पर एक मौलिक ग्रन्थ की रचना कर आर्य जगत् को गौरवान्वित किया है। प० वेद बन्धु अभिविनय भारती ने सभा में घोषणा की कि डा० रामकृष्ण आर्य का मार्च ९२ में दिल्ली की आर्य समाजों की ओर से सार्वजनिक अभिनन्दन कर उन्हें थैली भेंट की जाएगी।

३० नव० को सम्मेलन का उद्घाटन श्री श्याम विद्यार्थी सहायक केन्द्र निर्देशक आकाशवाणी कोटा, स्वागत भाषण—राजेन्द्र कुमार आर्य ठेकेदार तथा अध्यक्षीय भाषण डा० भवानी लाल भारतीय ने दिया। सम्मेलन को सफल बनाने में आर्य समाज काकरिया अहमदाबाद, आर्य समाज भुज (कच्छ) तथा विभिन्न दानियों ने व्यक्तिगत दान देकर सहयोग किया।

वेद प्रिय शास्त्री, मन्त्री
आर्य लेखक संघ

परामर्श—डा० धर्मपाल   सम्पादक—प्रो० सूर्यदेव   सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा   व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

शारीरिक-आत्मिक उन्नति बिना सामाजिक न्याय नहीं मिलेगा

(५-१-१९९२ अंक से आगे) —डा० नरेन्द्र कुमार

बीमार पड़ता है, तो उसे कोसों चलकर शहर जाना पड़ता है। फिर जाकर उसे दवाएं मिलती हैं। दवायें प्रतिदिन महगी होती जा रही हैं। इस पर रोक लगाना आवश्यक है।

शरीर की अगली आवश्यकता है। खान-पान। खान पान का स्तर गरीबो का बहुत पिछड़ा है। उनकी इतनी आमदनी नही होती कि वह एक वक्त दाल भी खा सके। नमक, रोटी खाते हैं। खेत मे कड़ी मेहनत करते हैं। पीने को साफ पानी तक नही मिलता। नहाने की बात तो दूर है। कपडे होते ही नहीं हैं शरीर पर। पहने क्या ? फटे-पुराने कपडे पहनकर वे जीवन गुजार देते हैं, जबकि शहर और कस्बो मे स्टैण्डर्ड सुधारने के लिए लोग तरह-तरह से रुपये कमाने के नये नये हथकडे अपनाते हैं।

इसलिये गावो और जगलो मे रहने वाले नागरिको को दो जून की रोटी, रहने को घर, दवा, खान-पान, वस्त्र आदि के साथ-साथ वे तमाम चीजें मिलनी जरूरी है। जिनसे उनका शरीर स्वस्थ रहे और निरन्तर विकास की ओर बढे। इसके लिये सरकार को आगे आना पडेगा। सबसे पहले उन्हे खेत मुहैया कराये। उनकी सुरक्षा का पूरा बन्दोबस्त करे। रहने के लिए मकान की सुविधा प्रदान करे। जब सरकार भारत-उत्सव, जर्मन उत्सव आदि न जाने कितने कार्यक्रमो के लिए अरबो रुपया खर्च कर सकती है, तो उन गरीबो पर पर्याप्त राशि क्यों खर्च नही कर सकती।

समाज में रहने वाले उच्च वर्ग का भी ध्यान इस ओर जाना चाहिए। जैसे उन्हे भूख लगती है, शरीर को ठण्ड लगती है, बीमार पडने पर दवाओ की आवश्यकता होती है, वैसे ही गरीब एव पिछडे लोगो को भी इन चीजो की आवश्यकता है। उन्हे उदारता का परिचय देते हुए इस ओर कदम बढाना चाहिए। मन्दिरो के नाम पर खूब पैसा खर्च कर सकते हैं। लेकिन गरीबो के भले के लिए कुछ नही करते। जबकि कहा जाता है—नर सेवा नारायण सेवा। अत उनका भी ध्यान रखते हुए जितना हो सके उनकी मदद करनी चाहिए। उन्हे नियति के सहारे छोडना उचित नही।

शारीरिक उन्नति के बाद आत्मिक उन्नति है। आत्मिक उन्नति का अभिप्राय है—आत्मा सम्बन्धी बातो को जानना। आत्मा, परमात्मा, सृष्टि आदि वस्तुओ को समझने की ओर बढना। शरीर को चलाने के लिए रोटी चाहिए। आत्मा के लिए स्वास्थ्य की जरूरत है। जप, तप, आसन, प्राणायाम से आत्मा की उन्नति होगी। आजकल उपासना के नाम पर अनेक प्रकार की भ्रान्तियां फैली हैं। उन्हें स्वाध्याय के द्वारा दूर किया जा सकता है। आत्मा के विकास के लिए अध्यात्म का सहारा लेना पडेगा। शरीर और आत्मा मे तालमेल आवश्यक है। आत्मिक उन्नति जीवन भर चलती है जबकि शारीरिक उन्नति अवस्था विशेष होने पर आकर रुक जाती है।

आत्मिक उन्नति के लिए आत्मिक भोजन मिलना चाहिए और यह भोजन स्वाध्याय, सत्सग, साधु-सन्यासी के सत्योपदेश से मिल सकता है। लोग कहते हैं कि समय ही नही है इन कामो के लिए। कारण वे इन कामो को जीवन का महत्वपूर्ण अग नहीं मानते। जैसे शरीर को रोटी की आवश्यकता है, वैसे ही आत्मा को परमात्मा और ज्ञान आदि की नितान्त आवश्यकता है। यही आत्मिक उन्नति धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की ओर अग्रसर करती हैं। बिना आत्मिक उन्नति के मनुष्य का जीवन पशु है, अधूरा है।

मनुष्य दिन-रात सासारिकता मे फसा रहता है, उसके लिए ठहराव भी जरूरी है। वह ठहराव परमात्मा दे सकता है, आध्यात्मिक चर्चाओ से मिल सकता है। आत्मिक उन्नति से मनुष्य मे आत्मिक बल बढता है। उसे सुख-दुख की चिन्ता नहीं रहती। शरीर की परवाह कम आत्मा की चिन्ता ज्यादा रहती है। आत्मिक पुरुष ससार की तमाम बाधाओ का विजेता बन जाता है। बाधाएं आती हैं, लेकिन उस आत्मिक विजेता पुरुष से टकरा कर चली जाती है। आत्मिक पुरुष स्वय उन्नति के साथ-साथ समाज की उन्नति करता है। परोपकार की भावना उदित होती है। सकीर्णताएं दूर होती है। उसका मन-मस्तिष्क खुली किताब की तरह हो जाता है जो चाहे वह पढ सकता है। समाज में ऐसे ही पुरुषों की आवश्यकता होती है तभी छल, झूठ, फरेब दूर हो सकते है।

आत्मिक उन्नति से व्यक्ति सबको अपना बना लेता है। वह अकेला अपना रास्ता बनाकर चल पडता है। सामान्य लोग उसके पीछे हो जाते हैं। बडे-बडे महापुरुषो का चरित्र हमारे सामने उपस्थित है।

ऋषि दयानन्द को जगन्नाथ ने जहर पिलाया। इससे उनकी शारीरिक मौत तो हुई लेकिन आत्मिक उन्नति को वह नही मार सका। ऐसे ही तमाम उदाहरण हैं। शारीरिक बल बहुतो के पास होता है। लेकिन आत्मिक बल महापुरुषो के पास ही होता है।

आत्मबली सारे ससार को झुका सकता है। पर वह स्वय परमात्मा के अलावा किसी के आगे नही झुक सकता। इसका अभिप्राय यह नही कि वह अहकारी और घमण्डी हो जाता है। पहलवान भी आत्मिक शक्ति के अभाव मे लोगो से डर कर भाग जाता है। शारीरिक शक्ति वजन से तोल सकते है। पर आत्मिक बल तो दिखाई नही देता।

आत्मबली बनने के लिए सस्कारी होना आवश्यक है। आज समाज से सस्कारो का लोप हो रहा है। विवाहोत्सव एव मृत्यु पर ही सस्कारों के दर्शन होते हैं। समाज मे सस्कारो को पुन प्रचलित करना चाहिए। स्वाध्याय परम आवश्यक है। ज्ञान-विज्ञान की बातें जानने से आत्मा विकसित होती है। मनुष्य का ज्ञान बढता है।

आत्मिक उन्नति मनुष्य मात्र के लिए आवश्यक है। उसे इस भौतिक युग मे नकारा नहीं जा सकता। मशीनी युग मे उसे अध्यात्मिकता ही ठहराव प्रदान कर सकती है। साम्यवाद मे रोजी-रोटी का चिन्तन है, पर उसके आगे की वस्तु आत्मा की चर्चा नहीं है। आखिर आदमी रोटी खाता रहेगा और क्या यू ही दुनिया से चला जाएगा। क्या रोटी खाना ही उसके जीवन का लक्ष्य है। नहीं, रोटी के साथ ही आत्मिक सुख भी जरूरी है।

शारीरिक रोग डक्टर ठीक करते हैं। आध्यात्मिकता के लिए साधु सन्यासियो की शरण मे जाना है। जप तप, स्वाध्याय आदि का सहारा लेना पडता है। भारतीय दर्शन टिका हा उसी बात पर है जो यह कहता है कि दुनिया मे रोटा स आगे भी कोई चीज है, वह है—परमात्मा और आत्मा। इनका चिन्तन और मनन जरूरी है।

इस प्रकार आत्मिक उन्नति मे भागीदार हो सकती है। वह आज बढ रहे पाखण्डो को रोक। अध्यात्मिकता को राजनैतिक रग देने वाले नेताओ से सख्ती से निपटे, साधु-महात्माओ को सम्मान दे।

हर मनुष्य को शरीर की उन्नति के साथ आत्मिक उन्नति की ओर निरतर अग्रसर होने की जरूरत है। समय रहते यह होना चाहिए। इसे बुढापे की चीज समझकर युवावस्था मे भटकना खतरनाक है। अध्यात्मिकता के रग मे रगा व्यक्ति तमाम बुराइयो से अपने आप दूर हो जाएगा।

सरकार मद्य निषेध, धूम्रपान आदि करन पर प्रतिबन्ध लगाए। ये आध्यात्मिक विकास मे बाधक हैं। सरकार की दलील रहती है कि इससे उसे भारी नुकसान उठाना पडेगा। लेकिन यह तर्कसगत नही। कोई आदमी शराब पीकर मारपीट, गाली-गलौज करता है, तो उनसे सरकार को क्या मिला, कहने के लिए सरकार को आमदनी हो जाती है, पर उस आमदनी से क्या फायदा जिससे घर-परिवार, समाज और देश का सुख-चैन भी नष्ट होने लगे।

मास भक्षण पर रोक लगे। कारण, 'आहार शुद्धौ सत्व शुद्धि'। आहार शुद्ध हो तो मन स्वत सात्विक रहता है। सात्विक व्यक्ति का रहन-सहन, आचार-विचार एक सुखद समाज की रचना में सहायक है।

धूम्रपान, मद्य सेवन, से व्यक्ति रोगी हो जाता है। बाहर से देखने मे हट्टा-कट्टा जरूर दीखता है, पर अन्दर से उसे कई रोग घुन की तरह चाटते रहते हैं। रोगी होने पर उसे दवाएं चाहिए। इलाज पर खूब पैसा खर्च होता है। पैसा समाज से वसूला जाता है और पैसा जाता है तो एक डाक्टर की जेब में।

(क्रमश)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्यसन्देश

सम्पादकीय

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

भारतवर्ष मे स्वामी विवेकानन्द सरस्वती का जन्म दिन युवा दिवस के रूप मे मनाया जाता है। स्वामी विवेकानन्द का जन्म १२ जनवरी १८६२ को हुआ था। उन्हे केवल ३९ वर्ष की अल्पायु ही प्राप्त हुई पर तु वे भारतवर्ष के पुनर्जागरण काल के चार पुरोधाओ मे अपना स्थान बना गए। तीन वर्ष पूर्व दिल्ली के तीनमूर्ति भवन मे भारतीय इतिहास, सस्कृति एव स्वाधीनता आन्दोलन का परिचय देने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की एक प्रदर्शिनी लगी थी। उसने भारत के पुनर्जागरण काल के चार पुरोधाओ के चित्र तथा सक्षिप्त जीवन परिचय दिये गए थे—राजा राम मोहनराय, महर्षि दयानन्द सरस्वती श्री रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द सरस्वती। स्वामी विवेकानन्द सरस्वती का निधन ४ जुलाई १९०२ को हुआ था।

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती ने सत्य को जानने अपनाने तथा प्रसारित करने मे अपना सारा जीवन लगा दिया। उस युवा नरेन्द्र के सामने स्नातक बनने के पश्चात् सबसे पहले जो प्रश्न खडे हुए, वे थे—जीवन की प्रकृति, मृत्यु, मानव चेतना क्या है? वास्तव मे ये ऐसे प्रश्न हैं जो हर उस युवा को व्याकुल कर देते हैं, जो अपने मे हटकर कुछ मानव कल्याण के लिए करना चाहता है। स्वामी विवेकानन्द ब्रह्मसमाज के सम्पर्क मे आए। उनका परिचय महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर और श्री केशवचन्द्र सेन से हुआ। पर ये उस प्यासे युवा को शाति न दे सके। १८८२ मे उनका परिचय श्री रामकृष्ण से हुआ। उन्होने युवा नरेन्द्र को आत्म-साधना तथा लोकाहित का मार्ग दिखाया। वे सम्पूर्ण उत्तर भारत मे कई वर्षों तक प्रचार-प्रसार मे सलग्न रहे। १८९३ मे उन्हें शिकागो अमेरिका मे धर्मससद मे भाग लेने का अवसर श्री जे० एच० राइट के सौजन्य से प्राप्त हुआ। यहा से तो उनकी दुनिया ही बदल गई। उन्हे अप्रतिम ख्याति मिली। विश्व भर मे उनकी शिष्य परम्परा बन गई। उनका दृष्टिकोण सार्वभौमिक हो गया। उनकी मित्रता मैक्समूलर और पाल रासन जैसी विश्व प्रसिद्ध विभूतियो से हो गई।

भारत लौटकर उन्होने बेलूर मठ तथा मायावती मठ की स्थापना की। आज उनके अनुयायी सम्पूर्ण विश्व मे फैले हैं। भारत के सुदूर दक्षिण में तीन महा सागरो के मिलन स्थल कन्याकुमारी मे स्वामी विवेकानन्द का भव्य स्मारक युगो तक उनके सदेश का निदृण करता रहेगा।

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती ने अल्पायु मे ही देश-विदेश का भ्रमण करने के साथ विभिन्न विषयो मे अपने विचारो को लिपिबद्ध भी किया। उनके सभी प्रसिद्ध ग्रन्थ—'स्वामी विवेकानन्द रचनावली' के नाम से हिन्दी और अग्रेजी तथा अन्य भाषाओ मे ११ खण्डो मे उपलब्ध है। उन्होने ज्ञानयोग, कर्म योग, प्रेम योग, भक्ति योग तथा जाति, सस्कृति और समाजवाद व्यावहारिक जीवन मे वेदान्त आदि विषयो पर अपने मौलिक विचार व्यक्त किए।

उनके ग्रन्थों का अध्ययन करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि उनके कर्तृत्व पर महर्षि दयानन्द सरस्वती का व्यापक प्रभाव था। उन्होने महर्षि दयानन्द सरस्वती की भाति ही सत्यधर्म के स्थापन को अपना लक्ष्य बनाया। वे केवल ऋषियो के प्रवर्तित मार्ग पर चलने के पक्षधर थे वे लोक मगल के लिए स्वहित के त्याग के लिए तत्पर थे। वे मानते थे कि सत्ययुग की स्थापना के लिए एक जाति, एक वेद, शान्ति और एकता को कायम करना होगा। उन्होने भी ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नाम ओ३म् स्वीकार किया। वे सहशिक्षा के विरोधी थे। वे नारी जाति को वेदाधिकार देने के पक्षधर थे। वे पश्चिम के अन्धानुकरण का भी विरोध करते थे।

आज आवश्यकता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारो के अनुसार, स्वामी विवेकानन्द सरस्वती के लोकहित के लिए किये गए कार्यों को स्मरण करे तथा उन्हे आगे बढाए।

—डा० धर्मपाल

सम्पादक के नाम पत्र

सम्पादक जी, सादर नमस्ते।

आर्य सन्देश का मन्दिर अक एक मित्र से लेकर पढा। दिल्ली के आर्य समाज मन्दिरो पर विवरण आपने बहुत परिश्रम से प्रस्तुत किया है, बधाई स्वीकार कीजिएगा। दीवानहाल, हनुमान रोड मन्दिर मार्ग आदि कई आर्य समाजो का विवरण विस्तार से है और शेष का सक्षेप मे। सम्भवत दिल्ली के मन्दिरो का ऐतिहासिक विवरण प्रथम बार प्रकाशित हुआ है। कृपया और परिश्रम कर पुस्तक रूप मे छपवायें तो ठीक रहेगा। सुरेश शर्मा

सी १२/१४९, यमुना विहार दिल्ली ५३

मान्यवर श्री सम्पादक जी, सादर नमस्ते।

'आर्य सदेश' का सयुक्ताक मिला। आभारी हू। इस अक का प्रत्येक पृष्ठ सम्पादकगणो की निष्ठा लगनशीलता और परिश्रम का जीवन्त प्रमाण है। इस 'अ क' की सबसे बडी उपलब्धि इसका पृष्टपेषित सामग्री से बचना है। अक की सभी रचनाए नई जानकारी देने वाली हैं। 'आर्य सदेश' परिवार व उसके सभी लेखको को मेरी शुभेच्छाए।

जिन दिनो मैं आर्य सन्देश' मे 'लोक चिन्तन' कालम लिखा करता था, उस समय मैंने एक लेख मे लिखा था कि आर्य समाज की अधिकतर पत्र-पत्रिकाओ मे एक तरह की सामग्री वरसो से छप रही है। नयेपन के अभाव मे विरक्त होकर लोगो ने इनको पढना बन्द कर दिया है। "आर्य जगत्" अपवाद है। इसी मे नयापन मिल पाता है।

आज 'आर्य सदेश का यह विशेषाक भी अपवाद सिद्ध हुआ। बधाई कोटिश। आशा है सानन्द होगे। एक बार प० क्षितीश जी से मिलने मन्दिर मार्ग गया था तो वहा कुछ पलो के लिए आपके दर्शन हुए थे। योग्य सेवा के लिए सदा प्रस्तुत। डा० विजय द्विवेदी

हिन्दी विभागाध्यक्ष, एम पी सी कालेज-बारिपदा (उडीसा)

श्रीमान् सम्पादक जी,प्रभु कृपा से दीर्घायु हो।

आपके भेजे १५ दिसम्बर, ९१ अक की प्रति मिली। त्रिधाखन के बाद १५ जुलाई, १९७५ को स्थापित दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की रिपोर्ट का पूर्ण विवरण प्रकाशित किया बधाई के पात्र हैं। आशा ही नहीं और विश्वास है कि भविष्य मे अन्य सहयोगियो के साथ इस पत्रिका को और अच्छा प्रकाशित करते रहगे। प० दीपचन्द शर्मा, पूर्व कार्यालयाध्यक्ष

भारतीय हिन्दू सभा, दिल्ली

श्रीमती प्रभात शोभा पण्डिता को भगिनी शोक

वैदिक विद्वान् प० बुद्धदेव विद्यालकार की सुपुत्री श्रीमती अपराजिता मल्ल धर्मपत्नी श्री बलभद्र मल्ला का पिछले दिनो जयपुर मे निधन हो गया। वे स्वतन्त्रता सग्राम की सेनानी थी। १९४२ के भारत छोडो आन्दोलन में उन्होने बढ चढकर भाग लिया था। १९२३ मे जन्मी श्रीमती अपराजिता, श्रीमती प्रभात शोभा पण्डिता की बडी बहन थी। वैदिक धर्म एव सस्कृति के सस्कार उन्हे घुट्टी मे मिले थे। देश जाति पर बलिदान होने की भावना उनमे कूट-कूटकर भरी थी। वे अनेक स्वय सेवी सस्थाओ से जुडी थी। वे सहृदय कवयित्री थी। जन-जन के दु ख को बाटने और उनके जीवन को सवारने की, सवेदनाए उनकी अपनी निजी थाती थी।

शोक सन्तप्त परिवार के लिए हमारी हार्दिक सवेदनाए। परम पिता परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा दुखी परिवार को इस दारुण दु ख को सहन करने का सामर्थ्य प्रदान करे। आर्य सन्देश परिवार उनके दु ख मे अपने आपको विह्वल पाता है। —डा० धर्मपाल

डाक टिकटों में योगासन

—विमलकान्त शर्मा

भारतीय डाक विभाग द्वारा ३० दिसम्बर, १९९१ को योगासन पर चार स्मारक डाक टिकट जारी किए गये हैं। २०० रुपये, ५०० रुपये ६५० रुपये एव १००० रुपए के चार बहुरंगी टिकटों पर क्रमश भुजंगासन, धनुरासन, उष्ट्रासन व उत्थित त्रिकोणासन नामक चार आसनों को चित्रित किया गया है। डाक टिकटों के साथ-साथ प्रथम दिवस आवरण एवं विवरणिका (फोल्डर) भी जारी किए गए हैं। मुद्रित डाक टिकटों की संख्या दस है। विश्व में किसी भी देश द्वारा पहली बार इस प्रकार योगासन चित्रित करते हुए डाक टिकट जारी किए गये हैं।

विवरणिका में दिया विवरण अविकल रूप मे प्रस्तुत है—

योगासन

योग स्कूल आफ फिलोसफि के सस्थापक महर्षि पतंजलि ने योगसूत्र में योग को "मानसिक अस्थिरता पर सयम' की संज्ञा दी है। इसी सयम से योग के लक्ष्य—आध्यात्मिक मुक्ति की प्राप्ति होती है। आध्यात्मिक मुक्ति पाने के लिए पतंजलि ने "अष्टांग-योग" या अष्ट गुण मार्ग निर्धारित किया है। योगासन अष्टांग-योग का तीसरा पक्ष है। यदि योग सही ढंग से और परिश्रम पूर्वक किया जाए तो इससे महत्त्वपूर्ण शारीरिक व मानसिक परिवर्तन होते हैं।

डाक टिकटों पर निम्नलिखित चार आसनों को चित्रित किया गया है—

(१) भुजंगासन—यह आसन कशेरुका के छोटे-छोटे सरकाव को ठीक करता है तथा मेरुदण्ड व धड़ को सहारा देने वाली अन्दरूनी मांसपेशियों को क्रियाशील रखता है तथा इनकी शक्ति बढाता है।

(२) धनुरासन—यह आसन पूरे मेरुदण्ड को तानता है, पेट के भीतरी हिस्से पर विशेष दबाव डालता है, पेट की अंतड़ियो विशेषकर पेट के निचले हिस्से मे ताजा रक्त का संचार करता है और गर्दन, बांह, कंधा पीठ पैर तथा टखने को क्रियाशील रखता है।

(३) उष्ट्रासन—यह आसन मेरुदण्ड को तानता है, शिथिलता दूर करता है, कशेरु की के दबाव को कम करता है मेरुदण्डीय परिसंचरण को बढ़ाता है और मूत्रजनन मांसपेशियों को मजबूत बनाता है।

(४) उत्थित त्रिकोणासन—यह आसन जघा और पिण्डली की मांसपेशिया को मजबूत बनाता है तथा कब्ज, बदहजमी और उदर-वायु दूर करता है। यह आसन कमर की स्पान्डिलाइटिस और मोटापन के उपचार मे लाभप्रद है।

पद्मासन एक आदर्श ध्यानस्थ मुद्रा है। यह पीठ को अधिकतम दृढ़ता प्रदान करता है, सामान्य लचीलापन बनाए रखता है और विशेष रूप से हाथ-पांव के निचले हिस्से की सभी महत्त्वपूर्ण मांसपेशियों, स्नायु और नसों का उपचार करता है। यह पेट और जनन तन्त्र के आस-पास रक्त परिसंचरण तेज करता है।

त्रिकोणासन कमर के लचीलेपन को बढ़ाता है, नितम्ब को क्रियाशील रखता है बांह और पैर की मांसपेशियों मे फैलाव लाता है, घुटने के पीछे की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है और आन्तरिक उदरीय दबाव द्वारा मुद्रा की दोषपूर्ण आदतों को दूर करता है।

शीर्षासन सम्पूर्ण शारीरिक प्रणालियों—परिसंचारी, पाचन, श्वसन स्नायु और उत्सर्जन तन्त्रों को शक्तिशाली बनता है। तथापि यह मस्तिष्क के लिए सर्वाधिक लाभप्रद है क्योंकि यह इसकी सभी कोशिकाओं और ऊतकों में रक्त परिसंचरण का अधोवतन कर इनका पोषण करता है। यह आसन बाल को समय से पहले सफेद होने से बचाता है, त्वचा को चमकीला और चिकना तथा चेहरे को कान्तिमय बनाता है।

नवासन जंघा और पट की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है तथा मस्तिष्क की एकाग्रता और दृढ़ता मे वृद्धि करता है। यह आसन मधुमेह और मोटापन के रोगियों के लिए लाभप्रद है।

अर्द्धमत्स्येन्द्रासन मेरुदण्ड की पार्श्व वक्रता को दूर करने मे सहायता करता है, पेट के आस-पास शिरीय परिसंचरण में वृद्धि करता है तथा यकृत, प्लीहा और अग्न्याशय की शक्ति बढ़ाता है। यह आसन आमाशय स्राव को बढ़ाता है तथा भूख जगाता है।

धनुरासन मेरुदण्ड को पूर्ण रूप से क्रियाशील रखता है और इसे लचीला बनाता है। यह गुर्दे को लाभ पहुंचाता है और सम्पूर्ण पाचन तन्त्र को तान कर पट की गड़बड़ी को दूर करने मे सहायक होता है। यह गर्दन, पसलियों और फेफड़ों को क्रियाशील रखता है, हृदय को मजबूत बनाता है और मोटापन दूर करता है।

ऊर्ध्व धनुरासन विशेष रूप से मेरुदण्ड के रोगों को दूर करने मे लाभप्रद है। दमा और श्वास सम्बन्धी अन्य रोगों के योगात्मक उपचार मे भी यह आसन प्रयुक्त होता है।

सर्वांगासन मस्तिष्क के परिसंचरण मे वृद्धि करता है, ग्रन्थीय प्रणाली विशेषकर थाइराइड को लाभ पहुंचाता है और पेट तथा पेडू के आस-पास के रक्तावरोध से राहत पहुंचाता है। यह आसन कब्ज, बदहजमी और तान्त्रिकावसाद से पीड़ित रोगियों के लिए लाभप्रद है।

नव वर्ष की पूर्व संध्या पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने गरीबों को कम्बल बांटे

३१ दिसम्बर, ९१ को जब नई दिल्ली के पांच तारा होटलों मे देश के नव धनाढ्य राष्ट्र की गरीबी का पूरी बेशर्मी से मखौल उड़ाते हुए विदेशी शराब के जाम छलका रहे थे तो उस समय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और दिल्ली आर्य वीर दल के महासचिव अपने साथियों के साथ गगनचुम्बी अट्टालिकाओं के साए और फुटपाथों पर फटी बोरियों और चिथड़ों मे लिपटे बेसहारा गरीबों के बीच कम्बल बांट रहे थे।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सरकार और देश के धनवानों से कहा कि गरीबी और मुफलिसी के मारे ये निर्धन लोग भारत की असली तसवीर हैं कोई भी इन दीन-दुखियों की हालत देख कर देश के हालातों का अन्दाजा लगा सकता है। सरकार और देश के धनवानों के लिए ही नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिए यह एक चुनौती है। सरकार और लक्ष्मी पुत्रों को इन बेआसरा लोगों के लिए पुनर्वास की पूरी व्यवस्था करनी चाहिए और कम से कम इस कड़ाके की ठण्ड में जबकि लोग अपने आलीशान बंगलों के एयरकण्डीशन कमरों में मौज से रात गुजारते हैं और अन्धाधुन्ध रंगरलियों मे धन बर्बाद करते हैं तब कम से कम इन मजबूर लोगों के लिए "रैन बसेरा' तो पूरी तादाद में मुहैया कराए जाए।

दिल्ली की आलीशान होटलों मे नव वर्ष की पूर्व सन्ध्या पर आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के आर्य वीरों ने ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य के नेतृत्व में प्रदर्शन किए। तथा होटलों और सरकार से मांग की कि नववर्ष के आगमन के हंगामे मे करोड़ों रुपये की बर्बादी पर तुरन्त रोक लगाई जाए तथा बेघर लोगों के रहने खाने के ठीक बन्दोबस्त किए जाय। इस प्रदर्शन मे श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल महाविद्यालय खेड़ा खुर्द के ब्रह्मचारियों के अतिरिक्त दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों की आर्य वीर दल शाखाओं के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। श्री सुरेन्द्रसिंह आजाद, श्री रणजीत सिंह राणा तथा श्री हरीसिंह प्रदर्शनकारियों का नेतृत्व कर रहे थे। सभी युवा आर्य वीर, आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड मे एकत्रित हुए। प्रारम्भ मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव और महामन्त्री डा० धर्मपाल ने अपनी शुभ कामनायें व्यक्त की।

जयप्रकाश आर्य बन्धु
प्रेस एवं सूचना सचिव
आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश

भारतीय भाषाओं के विकास के लिए पारित प्रस्ताव

भारतीय भाषा सम्मेलन, भाग्य नगर मे २१-२२ दिसम्बर ९१ के समापन समारोह मे सर्वसम्मति से पारित प्रस्तावों को सम्मेलन के सयोजक डा० शलीम् वेंकटेश्वर राव ने प्रस्तुत किया और तुमुल करतल ध्वनि के साथ मुख्य अतिथि केन्द्रीय मानव ससाधन मन्त्री श्री अर्जुन सिंह जी को भेंट किए।

भारतीय भाषाओं को अपने-अपने राज्य के प्रशासन की माध्यम भाषा बनाया जाए

प्रस्ताव (१)—"भारतीय भाषा सम्मेलन" भारत सरकार और राज्य सरकारों से अनुरोध करता है कि अपने-अपने राज्यो की भाषा अथवा हिन्दी को प्रशासन का माध्यम बनाया जाए। जिन राज्यो मे अंग्रेजी प्रशासन की माध्यम भाषा है, वहा उस राज्य की भाषा अथवा हिन्दी को प्रशासन की माध्यम भाषा बनाया जाए। इसका पालन कड़ाई मे किया जाए।

प्रस्ताव (२)—एक भारतीय भाषा अकादमी" की भी स्थापना की जाए जो भारत की विभिन्न भाषाओ म शोध, शिक्षण और प्रशिक्षण को दिशा एव गति प्रदान करे। विभिन्न भाषाओं में लिखे जाने वाले साहित्य को भाषान्तर एव प्रकाशन द्वारा परस्पर निकट लाने का काय करे। इस व्यवस्था मे हिन्दी समारोधन गृह (क्लियरेन्स हाउस) की भूमिका निभाए।

प्रस्ताव (३)—भारतीय सविधान के अनुच्छेद ३४३ के अन्तगत घोषित सघ की राज भाषा हिन्दी तथा प्रदेशो द्वारा घोषित राज्य भाषाओ में निकटता का सम्बन्ध स्थापित किया जाना चाहिए। इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए सम्मेलन का यह अनुरोध है कि राष्ट्रीय स्तर की एक "नियामक-समिति" गठित की जाए जिसमे प्रदेश सरकारो के प्रतिनिधि शामिल हो।

शिक्षा का माध्यम विश्वविद्यालय स्तर तक मातृभाषा हो

प्रस्ताव (४)—देश आजाद हुए ४४ वर्ष हो चुके हैं, किन्तु शिक्षा के क्षेत्र मे भारतीय भाषाओ को जो महत्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिए था, वह आज तक नही मिल सका।

अतएव "भारतीय भाषा सम्मेलन" भारत सरकार एव राज्य सरकारो से अनुरोध करता है कि प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय मे उच्चतम स्तर तक शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाओ को बनाया जाए। इस प्रकार की सिफारिशें १९४८ में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग ने भी की थी जिसके अध्यक्ष सवपल्ली डा० राधाकृष्णन थे।

संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं का माध्यम भारतीय भाषाएं हो

प्रस्ताव (५)—गणतन्त्र को सफल बनाने हेतु भारतीय भाषा सम्मेलन' यह अनुरोध करता है कि भारत की ससद के १९६८ के और १९९१ के सकल्प का अनुसरण करते हुए सघ लोक सेवा आयोग एव राज्यो के लोक सेवा आयोगो की परीक्षाओ का माध्यम भारतीय भाषाओ को बनाया जाए।

राज्यो मे दूसरी भाषा हिन्दी या भारतीय भाषाओ की शोचनीय स्थिति

प्रस्ताव (६)—वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत हिन्दीतर राज्यो के विद्यालयो म अंग्रेजी पाचवी कक्षा से पढाई जाती है जब कि दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी या भारतीय भाषाओ को छठा या सातवी कक्षा से प्रारम्भ किया जाता है। 'भारतीय भाषा सम्मेलन' सरकार से यह अनुरोध करता है कि हिन्दी अथवा भारतीय भाषाओ को विद्यालयो मे तीसरी कक्षा से प्रारम्भ किया जाए।

भाषा सम्बन्धी दोहरी नीति समाप्त की जाए

प्रस्ताव (७)—हिन्दीतर भाषी राज्यो मे एस० एस० सी० बोर्ड परीक्षा मे उत्तीर्ण होने के लिए मापदड मे असमानता है। अंग्रेजी मे उत्तीर्ण होने के लिए ३५ अक प्राप्त करना अनिवार्य है जब कि द्वितीय भाषा के रूप मे हिन्दी या अन्य भारतीय भाषा मे २० अक प्राप्त करने होते हैं। इसके अतिरिक्त द्वितीय भाषा के इन अको को कुल योग मे सम्मिलित नहीं किया जाता। यह दोहरी नीति समाप्त की जाए और हिन्दी या भारतीय भाषाओं को भी अन्य विषयो के समान प्रमुख स्थान दिया जाए और उन्हे कुल योग में सम्मिलित किया जाए।

देवनागरी लिपि को अतिरिक्त राष्ट्रीय लिपि के रूप मे विकसित किया जाए

प्रस्ताव (८)—प्रत्येक भारतीय भाषा की अपनी-अपनी विशिष्ट लिपि विद्यमान है, परन्तु लिपियो की भिन्नता राष्ट्रीय एकता एव बन्धुता मे एक दीवार है।

अतएव 'भारतीय भाषा सम्मेलन' अनुरोध करता है कि विशिष्ट लिपियो के साथ-साथ राष्ट्रीय लिपि के रूप मे एक सामान्य लिपि देवनागरी सबको सिखाई जाए।

दोहरी शिक्षा नीति समाप्त हो

प्रस्ताव (९)—भारत में प्रचलित दोहरी शिक्षा नीति समाजवादी समाज के लिए एक कलक है। यह शिक्षा प्रणाली समाज मे वर्ग वैषम्य पैदा कर रही है जो शीघ्र समाप्त होनी चाहिए।

"भारतीय भाषा सम्मेलन" सरकार से यह अनुरोध करता है कि—

१ राष्ट्र की शिक्षा नीति और प्रणाली एक हो।

२ विश्वविद्यालयो की और समस्त तकनीकी शिक्षा निशुल्क कर दी जाए।

३ प्रतिभावान छात्रो को छात्रवृत्तिया दी जाए।

४ ऐसी व्यवस्था हो कि रोजगार प्रधान शिक्षा प्रदान की जाए ताकि कोई भी स्नातक बेकार न रहने पायें, नवयुवकों के हर हाथ को काम दिया जाए और नव भारत का निर्माण किया जाए।

५ देश की प्रतिभा जो पलायन करती जा रही है, उस प्रवृत्ति को रोका जाए। उस प्रतिभा को राष्ट्र की अभिवृद्धि मे लगाने के उपाय किए जाये।

प्रस्ताव (१०)—भारतीय सविधान के अनुच्छेद ३५१ मे हिन्दी के स्वरूप की परिकल्पना की गई थी। हिन्दी का प्रचार-प्रसार इस प्रकार हो कि वह भारत की सामाजिक सस्कृति को अभिव्यक्त कर सके। यह सम्मेलन प्रस्ताव प्रस्तुत करता है कि भारतीय भाषाओ की विशिष्टताओ से समन्वित हिन्दी का एक कोश बनाया जाए और प्रकाशित कराया जाए।

प्रस्ताव (११)—सम्मेलन यह भी अनुरोध करता है कि "भारत देश के जिन विश्वविद्यालयो मे स्नातकोत्तर स्तर का हिन्दी विभाग नही है उन विश्वविद्यालयो मे स्नातकोत्तर स्तर के हिन्दी विभाग खोले जाए।

प्रत्येक राज्य मे प्रादेशिक भाषा अकादमी के साथ-साथ हिन्दी अकादमी की भी स्थापना हो

प्रस्ताव (१२)—भारतीय भाषा सम्मेलन अनुरोध करता है कि प्रादेशिक भाषाओ और सम्पर्क भाषा हिन्दी के बीच परस्पर आदान-प्रदान एव सौहार्द की भावना के विकास हेतु प्रत्येक राज्य में प्रादेशिक अकादमी के साथ-साथ हिन्दी अकादमी की भी स्थापना की जाए।

जिन राज्यो मे इस प्रकार की अकादमियां पहले से ही स्थापित है, उन राज्यो की सरकारो को यह सम्मेलन धन्यवाद ज्ञापित करता है।

प्रस्ताव (१३)—भारत की कई भाषाओं की अपनी लिपि नहीं है। इस सम्बन्ध में सम्मेलन सरकार से यह अनुरोध करता है कि इन भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाए।

प्रस्ताव १४—भारत मे भाषाओं के नाम से तेलुगु विश्वविद्यालय, तमिल विश्वविद्यालय और पजाबी विश्वविद्यालय स्थापित हैं। इसी सदर्भ में सम्मेलन भारत सरकार से अनुरोध करता है कि केन्द्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना की जाए और यह विश्वविद्यालय हैदराबाद में स्थापित किया जाए।

भवानी दयाल सन्यासी जन्म शताब्दी समारोह

अजमेर की विभूति भवानी दयाल सन्यासी की वर्ष १९९२ म जन्म शति मनायी जा रही है। विदेशो मे विशेष रूप से दक्षिण अफ्रिका मे समाज सुधार एव आर्य समाज के प्रचार-प्रसार का काय करते रहे। आर्य समाज के माध्यम से आपने समाज सेवा के साथ, शिक्षा के प्रचार का, विशेष रूप से स्त्री शिक्षा क्षेत्र मे अमूल्य योगदान दिया। वहा पर राजनीति के क्षेत्र में भी अमिट प्रभाव है। आप भारतीय समाज सुधार का दक्षिण अफ्रिका मे अपना विशिष्ट स्थान रखते थे। प्रवासी भारतीयो के हितो की रक्षा के लिए आपने अथक कार्य किया जिसके कारण वहा के लोग आपका आदर से स्मरण करते हैं। आप एक उच्चकोटी के वक्ता, पत्रकार एव अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों के लेखक थे।

भवानी दयाल सन्यासी अजमेर मे प्रवासी शब्द से पहचाने जाते हैं। ऐसी विभूति का उनके जन्म शताब्दि वष के अवसर पर स्मरण करना न केवल इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठो का सिहावलोकन होगा अपितु उनके कार्य और निष्ठा से आने वाली पीढी को ध्येय प्राप्ति के लिए प्रेरणा भी प्राप्त होगी।

परोपकारिणी सभा के सयुक्त मन्त्री डा० धर्मवीर ने बताया कि इस समारोह का आयोजन परोपकारिणी सभा एव आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रिका के सयुक्त तत्वावधान मे सम्पन्न होगा। उन्होंने कहा कि इस अवसर पर परोपकारी मासिक पत्र का विशाल कार्य स्मृति विशेषाक प्रकाशित होगा। जिसमे भवानी दयाल सन्यासी का जीवन सस्मरण उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व से सम्बन्धित सामग्री होगी मुख्य समारोह पृथक् परोपकारिणी सभा की ओर से अजमेर मे तथा दूसरा समारोह दक्षिण अफ्रीका मे सम्पन्न होगा।

इस आयोजन को सफल एव सार्थक बनाने के लिए अपने लेख, सस्मरण तथा आर्थिक सहयोग परोपकारिणी सभा को उदारता से प्रदान करने की कृपा करें।

अंग्रेजी के प्रयोग पर प्रतिबन्ध और हमारा कर्त्तव्य

समाचार पत्रो मे छपी सूचना के अनुसार उत्तर प्रदेश सरकार के वित्त एव सिचाई विभाग के मन्त्री श्री आर० गुप्ता ने कडे आदेश दिए हैं कि सभी सरकारी कार्य केवल हिन्दी मे किया जाए और अग्रेजी का प्रयोग न किया जाए। उन्होंने मुख्य सचिव को कहा है कि अभी भी अनेक कार्यालयो मे अग्रेजी का प्रयोग हो रहा है जिसे रोका जाना चाहिए। तदनुसार सभी सचिवो विभागाध्यक्षो कार्यालय प्रमुखों, आयुक्तो और जिला अधिकारियो, और सार्वजनिक उपक्रमो के अध्यक्षो आदि को आदेश दे दिये गये है कि वे भविष्य मे केवल हिन्दी का प्रयोग करे। यदि अग्रेजी का प्रयोग किया गया तो उनके विरुद्ध विभागीय कार्यवाई की जायेगी।

कुछ समय पूर्व ऐसे हा कडे आदेश हिमाचल प्रदेश के मुख्य मन्त्री ने भी जारी किए थे। समय समय पर अन्य हिन्दी भाषी राज्यो के भी ऐसे ही आदेश निकलते रहे है फिर भी इन आदेशो का उल्लघन होता रहता है। अत अनुरोध है कि जब-जब भी आदेशो के उलघन के उदाहरण दृष्टि मे आए तो सम्बन्धित कार्यालयो के अध्यक्षो को पत्र लिखे जाए यदि फिर भी सुधार न हो तो सम्बन्धित राज्य के मुख्य मन्त्री को पत्र भिजवाये जायें ताकि दोषी अधिकारियो के विरुद्ध कार्यवाही की जा सके

केन्द्रीय सरकार की भी यह नीति है कि हिन्दी भाषा क्षेत्रो मे स्थित उनके कार्यालयो मे प्राय सभी काय हिन्दी म हो। ऐसी स्थिति मे हम सब का कर्तव्य यह है कि राज्य सरकार और केन्द्रीय सरकार के कार्यालयो के साथ पत्राचार हिन्दी मे ही करे। यह भी आवश्यक है कि हम सब अपने व्यावसायिक और अन्य निजि कार्यो मे हिन्दी का प्रयोग कर इस प्रकार जनता और सरकार के परस्पर के सहयोग से हिन्दी का प्रयोग सुनिश्चित किया जा सकेगा। सभी स्वाधीन देश अपनी-अपनी भाषा मे अपना सरकारी और नीजी काय करते हैं तब भारत ही अपवाद क्यो ?

हिन्दी दिवस

केन्द्रीय कपास प्रोद्योगिकी अनुसधान सस्थान, एडनवाला रोड, माटुगा, बम्बई म दिनाक १ स १५ सितम्बर, १९९१ तक हिन्दी दिवस मनाया गया जिसके दौरान काव्य लेखन, निब ध लखन, टिप्पण और आलेखन, वाक और तात्कालिक भाषण प्रतियोगिताए की गई। इन प्रतियोगिताओ मे लगभग ८० कर्मचारियो ने भाग लिया। तात्कालिक भाषण को नई प्रतियोगिता के रूप मे समारोह में शामिल किया गया जिसमे आशातीत सफलता मिली।

'आए स्वर्णिम नवल प्रभात'

—राधेश्याम 'आर्य

सत्य धर्म की विजय पताका, पुन धारित्री पर लहरे।
शान्ति सफलता समरसता का ध्वज भूमण्डल पर फहरे।
मृदुल सरोवर मे जगती के खिले मनुजता का जलजात।
आए स्वर्णिम नवल प्रभात॥

द्वेष ईर्ष्या हिंसा का तम, यथा शीघ्र हो क्षत विक्षत।
फैले नव आलोक धरा पर ज्ञान हमारा हो अक्षत।
कटुता कल्मष तथा घृणा की दनुजता पर हो बज्र निपात।
आए स्वर्णिम नवल प्रभात॥

शोषण उत्पीडन धरती का हो समाप्त, अन्याय अनय।
नई दिशा फिर हमें प्राप्त हो, हो भू पर मनुजत्व विजय।
सारे मानव इस धरती के सत्कर्मों में हो निष्णात।
आए स्वर्णिम नवल प्रभात॥

सौम्य सुखों का तथा समृद्धि को निमित हो मगल सी आशा।
जगे जवानों के अन्तर मे परहित करने की अभिलाषा।
हर्षित हो फिर वसुन्धरा यह पुलकित हो जन जन का गात।
आए स्वर्णिम नवल प्रभात॥

शोक समाचार

श्री जयनारायण शर्मा को पितृ शोक

सार्वदेशिक सभा मे कार्यरत श्री जयनारायण शर्मा के पिता श्री बाबूलाल शर्मा का १७ दिसम्बर को प्रात ३ २५ पर हृदय गति रुक जाने के कारण अलीगढ़ मे स्वर्गवास हो गया। वे ७६ वर्ष के थे। वे एक अच्छे भजनोपदेशक थे। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड गये हैं। २९ दिसम्बर को शान्ति यज्ञ हुआ।

निशुल्क शिक्षा

महाशय हीरालाल गुरुकुल किशनगढ घरोडा में भूकम्प पीडित क्षेत्र से सम्बन्धित पाच पाच होनहार बच्चो को कक्षा ६ व ७ मे निशुल्क शिक्षा दी जायेगी। उनके आवास व भोजन की व्यवस्था भी गुरुकुल की तरफ से होगी। निम्न पते पर सम्पर्क करे—

मन्त्री महाशय हीरालाल गुरुकुल किशनगढ घरोडा
डा० बीकानेर जिला रिवाडी हरियाणा

साक्षरता अभियान

आर्यवीरो द्वारा सैनी धर्मशाला विशन विहार (अम्बाला रोड) मे प्रतिदिन साय ५से७ बजे तक लगभग ५०-५० निरक्षर व्यक्तियो को साक्षर बनाने का अभियान चलाया जा रहा है। साक्षरता में वैदिक ज्ञान भी दिया जाता है। शिक्षण व पाठन सामग्री निशुल्क दी जाती है।

श्री जगदीश चन्द्र आर्य के नेतृत्व मे चलाये जा रहे इस अभियान मे सवश्री लक्षमण यादव, कृपालु आर्य डा० सुजीत सिंह, धर्मवीर आर्य श्याम एव महेन्द्र विशेष सहयोग दे रहे है।

गर्म कपड़े वितरित

२७ दिसम्बर-९१ को दयानन्द बाल सदन व आर्य समाज अजमेर के प्रधान तथा रेडक्रास समिति के चेयरमैन श्री दत्तात्रेय जी वाब्ले की अध्यक्षता मे आयोजित एक समारोह मे मुख्य अतिथि अजमेर विश्वविद्यालय की कुलपति श्रीमती कान्ता आहूजा के कर कमलो द्वारा दयानन्द बाल सदन के १२५ बालक बालिकाओ तथा ५० अन्य व्यक्तियो को गर्म स्वेटर तथा अन्य ऊनी वस्त्र वितरित किय गय। ये वस्त्र आचार्य वाब्ले जी की अमेरिका निवासी पुत्री द्वारा भेंट मे प्राप्त हुए थे।

मन्त्री, आर्यसमाज अजमेर

नैतिक शिक्षा पहली कक्षा से देना शुरु करें

लुधियाना, २३ दिसम्बर, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे अमर हुतात्मा श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ किया गया, समारोह की अध्यक्षता श्री देवराज आर्य ने की।

समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री रोशन लाल आर्य ने कहा कि हमे स्वामी जी द्वारा बताए मार्ग पर चलते हुए जात-पात को मिटाने पिछडे वर्ग को ऊपर उठाने, देश की एकता और अखडता को बनाए रखने का व्रत लेना चाहिए। उन्होंने मांग की कि सरकार युवको को चरित्रवान् देश भक्त, ईमानदार नागरिक बनाने के लिए दूरदर्शन पर अश्लील एव हिंसात्मक प्रदर्शन बन्द करके महापुरुषो के जीवन से सम्बन्धित घटनाओ और ब्रह्मचर्य की शिक्षा दे।

सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव मे माग की गई कि शिक्षा पद्धति मे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आरम्भ करके सभी को शिक्षा के समान अवसर प्रदान किए जाए। नैतिक शिक्षा का समावेश पाठ्यक्रम मे पहली कक्षा से ही किया जाए। इस समारोह के मुख्य वक्ता आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महोपदेशक प० निरजन देव इतिहास केसरी थे।

ललित जसनाल महामन्त्री

वेद प्रचार मंडल दिल्ली देहात

मडल का १३वा वार्षिकोत्सव ११ से १३ जनवरी तक समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर देव यज्ञ, सास्कृतिक कार्यक्रम, योग प्रदर्शन, धर्म सम्मेलन, अखण्ड भारत सम्मेलन आदि अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं।

कार्यक्रम

११ जनवरी १९९२—डेरा आर्य समाज, महरोली

१२ जनवरी १९९२—आर्य समाज, पालम गाव

१३ जनवरी १९९२—आर० जेड०-२५ डाब्डी एक्सटेन्शन

इस उत्सव मे उच्च कोटि के भजनोपदेशक विद्वान व सन्त महात्मा पधार कर जनता का मार्ग दर्शन करेगे।

मानव धर्म-यज्ञ

पश्चिम दिल्ली की आर्य समाजों की तरफ से आर्य समाज बिन्दापुर के तत्वावधान मे चाणक्य प्लेस मेन रोड पर २३ फरवरी, ९२ को एक विशाल मानव धर्म यज्ञ एव राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। पहले यह कार्यक्रम १९ जनवरी को होना निश्चित हुआ था।

मन्त्री प० अशोक कुमार

सस्कृत के मेधावी छात्र पुरस्कृत

दिल्ली प्रशासन की सस्कृत अकादमी द्वारा ३ जनवरी को फिक्की सभागार मे आयोजित एक समारोह मे दिल्ली विश्वविद्यालय सस्कृत विश्वविद्यालय एव माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के मेधावी छात्र-छात्राओ को पुरस्कृत किया गया। दिल्ली प्रशासन के वित्त आयुक्त श्री सेवाराम शर्मा ने २१० विद्यार्थियों को ५० हजार रुपए की सम्मान राशि, प्रतीक चिन्ह व प्रमाण पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर श्री शर्मा ने पुरस्कृत विद्यार्थियो को बधाई देते हुए आशा व्यक्त की कि वे सस्कृत के प्रति अपनी रुचि बढायेंगे और अन्य छात्र भी उनसे प्रेरणा लेंगे।

अकादमी के सचिव श्री कृष्ण सेमवाल ने बताया कि ५ वर्ष पूर्व स्थापित अकादमी द्वारा अब तक ५४० प्रतिभाशाली विद्यार्थियो को पुरस्कृत किया जा चुका है।

आवश्यक सूचना

निर्णय के तट पर (प्राचीन शास्त्रार्थ सग्रह) भाग ५ का प्रकाशन कार्य आरम्भ है। सभी आर्य भाइयो से अनुरोध है कि पूर्व की भाति इस भाग ५ के मात्र बीस रुपया भेज कर अग्रिम ग्राहक बनें, शेष अस्सी रुपये पुस्तक प्राप्त होने पर लिए जावेंगे। इस ग्रन्थ का मूल्य भी छपने के बाद दो सौ रुपये होगा, अतः अग्रिम ग्राहक बन कर विशेष छूट का लाभ उठावें।

पूर्ण जानकारी के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें।

पता—अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद २०१००१ (उ०प्र०)

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R.N No. 32387/77 Posted at N D P S O. on 9 10-12-1992 Licence to post without prepayment, Licence No. U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३९/८५

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश ने उड़ीसा वनवासियो के लिए एक ट्रक कम्बल और गर्म कपड़े भिजवाए

३१ दिसम्बर (नई दिल्ली) आर्य वीर दल दिल्ली प्रदश के महामचिव ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य ने एक ट्रक गर्म कपडे और कम्बल उडीसा के वनवासियो के लिए सुदर गढ पानपोस और बोकारों मे भेजी सहायता सामग्री स्वामी विवेकानन्द सरस्वती उडीसा लेकर गये हैं। स्वामी विवेकानन्द सरस्वती उडीसा के आदिवासियों मे वर्षों से कार्यरत है।

दिल्ली आर्य वीर दल, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के मार्ग दर्शन मे उत्तरकाशी के भूकम्प ग्रस्त क्षेत्रो मे अब तक एक करोड रुपये की राहत सामग्री बाट चुका है। उत्तरकाशी मे दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रो मे गरीब बच्चो की शिक्षा के लिए तीन छाटे बडे स्कूल भी हमने बनाना तय किया है, जिनका निर्माण कार्य चल रहा है।

उत्तरकाशी मे आर्य समाज के सहायता शिविर का कार्य सुचारु रूप से कार्य कर रहा है। शीघ्र ही एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मण्डल उत्तरकाशी का दौरा करेगा और इसकी जाच करेगा कि और कौन से काम हैं जो यहा की जनता के लिए अविलम्ब शुरू किए जाए और यहा के लोग अमन की जिन्दगी जी सकें। इस तरह आवश्यक कार्यों की समीक्षा करके उन कार्यो को तुरन्त वहा शुरू किया जायेगा।

जयप्रकाश आर्य, प्रेस एव सूचना सचिव
आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश

मिशनरियों का धर्म परिवतन की कार्यवाही पर रोक लगाई जाए

अखिल भारतीय वनवासी कल्याण परिषद् के मन्त्री श्री के० भास्कर राव ने माग की है कि विदेशी धन व सहायता से मिशनरियो द्वारा चलाया जा रहा धर्म परिवर्तन की कार्यवाही पर रोक लगाई जाये। उन्होने आगे कहा है कि ऐसे तत्व वनवासियो को आर्थिक मदद कर वनवासी व गैर वनवासी के बीच मतभेद पैदा कर रहे हैं और उनका धर्म परिवर्तन कर रहे हैं।

निधनों को लिहाफ वितरण

आर्य समाज अमरोहा द्वारा २४ दिसम्बर को गाधी आश्रम के ४० लिहाफ निर्धनो को एक समारोह में वितरित किए गए। स्मरणीय है कि गत १० वर्षों में अब तक २५०० लिहाफ वितरित किए जा चुके हैं।

—वीरेन्द्र कुमार

महात्मा हंसराज जन्म दिवस

महान शिक्षा शास्त्री व डी० ए० वी० के संस्थापक महात्मा हंसराज का जन्म दिवस १९ अप्रैल, ९२ को प्रात ९ से १ बजे तक तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली में समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। समस्त आर्य जनता से अनुरोध है कि वे उस दिन कार्यक्रम मे पहुचने की कृपा करें।

—मन्त्री, रामनाथ सहगल

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा मनवद प्रेस पटोदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली ११०००१ फोन ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५ अंक ११ रविवार १९ जनवरी १९९२ विक्रमी सम्वत् २०४८ दयानन्दाब्द १६६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक—२५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

१२ फरवरी को महर्षि दयानन्द का जन्म दिवस धूमधाम से मनाया जाये व सरकारी अवकाश की मांग की जाये

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने १ जनवरी के एक परिपत्र द्वारा सभी आर्य समाजों को निर्देश दिये हैं कि वे युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती का १६८वां जन्म दिवस १२ फरवरी १९९२ को धूमधाम से मनावें। एक सप्ताह पूर्व निम्न कार्यक्रम आयोजित करें—

(१) प्रात नगर प्रभात फेरियां (२) यजुर्वेद पारायण यज्ञ (३) आर्य समाजों आर्य सभाओं संस्थाओं व आर्य जनों के भवनों पर ओ३म् ध्वज फहराया जावे। (४) वैदिक विद्वानों के प्रवचन (५) वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार हेतु साहित्य वितरण (६) सार्वजनिक सभाओं का आयोजन (७) महर्षि के जन्म से लेकर अब तक आर्य समाज द्वारा धर्म जाति व राष्ट्र रक्षा व एकता के लिए किए गये कार्यों का विवरण जन साधारण तक पहुंचाना आदि।

१२ फरवरी को पूर्णाहुति समारोह पूर्वक की जाये तथा सार्वजनिक सभाओं का आयोजन कर भारत सरकार से मांग की जाये कि अन्य धार्मिक महापुरुषों की तरह महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस को भी सरकारी अवकाश घोषित किया जाये।

धारावाहिक चाणक्य प्राचीन संस्कृति का प्रतीक है, बन्द किया गया तो आन्दोलन होगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने सूचना व प्रसारण मन्त्रालय द्वारा दूरदर्शन अधिकारियों को दिए गये इस आदेश पर गहरा खेद प्रकट किया है कि रविवार को दूरदर्शन पर दिखाये जा रहे 'चाणक्य' धारावाहिक की २५ कड़ियों के बाद प्रसारण बन्द कर दिया जाये। स्वामी जी ने कहा कि सरकार द्वारा दिए गये [illegible] निर्णय के बारे में उन्हें पता चला है।

स्वामी आनन्दबोध जी ने कहा कि चाणक्य धारावाहिक स्वतन्त्र राष्ट्र की प्राचीन संस्कृति [illegible] है [illegible] किसी [illegible] के लिए इसे बन्द नहीं किया जाना चाहिये। स्वामी जी ने आगे कहा कि प्रसारण अधिकारियों की यह शिकायत ठीक नहीं है कि इस धारावाहिक में दिखाये जा रहे केसरिया झण्डे यज्ञ तथा हर हर महादेव के [illegible] आदि के दृश्यों से हिन्दुत्व की भावनाओं को बढ़ावा देने में सहायता मिलेगी।

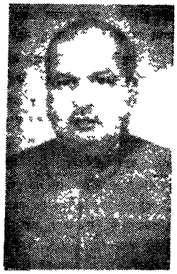
स्वामी आनन्दबोध जी ने स्पष्ट किया कि हर हर महादेव का नारा तो भारतीय सेना का जंगी नारा है जो युद्ध के लिए जवानों में जोश पैदा करता है। अंग्रेजी राज्य में भी भारतीय सेना [illegible] नारे का प्रयोग करती थी और अब भी करती है। युद्ध के मैदानों में सदा यह नारा लगता रहा है।

स्वामी आनन्दबोध जी ने आकाशवाणी व दूरदर्शन की पक्षपातपूर्ण प्रसारण नीतियों पर दुःख प्रकट करते हुए कहा कि २३ दिसम्बर ९१ को स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर श्रद्धानन्द मार्ग से लाल किले तक प्रात १० से ३ बजे तक निकले विशाल व भव्य जलूस को दूरदर्शन कैमरा टीम [illegible] कवर करने के बावजूद भी जान बूझ कर प्रसारित होने से रोका गया जबकि इस्लाम [illegible] व ईसा मसीह के कार्यक्रमों का लगातार तीन दिन तक प्रसारण होता रहा। स्वामी जी ने आश्चर्य व्यक्त किया कि केवल हिन्दुओं के कार्यक्रमों के प्रसारण में ही अधिकारियों को साम्प्रदायिकता की गन्ध आती है।

स्वामी जी ने इस सम्बन्ध में कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि देशवासी आकाशवाणी व दूरदर्शन की इन गलत व भेदभावपूर्ण नीतियों का कड़ा विरोध करेंगे और साथ ही उन्होंने सभी धार्मिक व राजनैतिक संगठनों से अपील की कि वे भारत के प्राचीन इतिहास को बदलने के दुष्प्रयासों को नाकाम करने के लिए भी एक जुट हो प्रबल आन्दोलन करें।

आर्य जगत विजय जी का ऋणी रहेगा

वैदिक साहित्य के प्रमुख प्रचारक प्रकाशक व गोविन्दराम हासानन्द के संस्थापक श्री विजय कुमार जी का मंगलवार ३० दिसम्बर १९९१ को सायं ४ बजे दिल का दौरा पड़ने से एस्कार्ट अस्पताल में निधन हो गया। वे ६० वर्ष के थे।



अनेक वर्षों से आर्य समाज की गतिविधियों से जुड़े विजय कुमार जी का अन्तिम संस्कार ३१ दिसम्बर को दयानन्द श्मशान घाट लोदी रोड नई दिल्ली में अपराह्न १.३० बजे पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

अन्त्येष्टि के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य प्रादेशिक सभा आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, विभिन्न आर्य संस्थाओं व आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने बड़ी संख्या में उपस्थित हो वैदिक विद्वान् को श्रद्धासुमन अर्पित किए। उनके शोक संतप्त परिवार में दो पुत्र व दो पुत्रियां हैं।

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश में ३१ दिसम्बर को अपराह्न ३ बजे शान्ति यज्ञ व शोक सभा हुई। जिसमें अनेक आर्य समाजों के अधिकारियों विभिन्न संस्थाओं के प्रमुखों जाने माने पत्रकारों लेखकों विद्वानों आदि ने विजय जी के व्यक्तित्व कृतित्व का पुण्य स्मरण कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

विजय जी को वैदिक साहित्य के प्रचार प्रसार व प्रकाशन के संस्कार अपने कर्मयोगी पिता श्री गोविन्द राम जी से घुट्टी में मिले थे। श्री गोविन्दराम ने धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन में अनेक कीर्तिमान स्थापित किए थे। उनके दादा श्री हासानन्द जी एक सच्चे गो भक्त थे। जिन्होंने अपनी [illegible] बेच कर मथुरा वृन्दावन मार्ग पर हासानन्द वर्मा गोचर भूमि ट्रस्ट की स्थापना की। गोशाला में अनेक पशु हैं।

श्री विजय जी एक कुशल सम्पादक भी थे। उनके सम्पादकत्व में हिन्दी मासिक वेद प्रकाश के अनेक संग्रह योग्य विशेषांक प्रकाशित हुए हैं।

श्री विजय जी ने सुबोध पाकेट बुक्स एव पुस्तकायन [illegible] की भी स्थापना की [illegible] सरल सुबोध भाषा में लिखी महात्मा आनन्द स्वामी की पुस्तकें अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द डा० ए० वी० आन्दोलन के संस्थापक महात्मा हंसराज की ग्रन्थावलियां प्रख्यात वैदिक विद्वानों के ग्रन्थों प्राचीन धार्मिक कृतियों आदि का प्रकाशन प्रचार व प्रसार कर श्री विजय जी ने जो [illegible] सेवा की है उसके लिए हिन्दी व आर्य जगत सदैव ऋणी रहेगा [illegible] शत शत प्रणाम।

परामर्श—डा० धर्मपाल सम्पादक—प्रो० सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा व्यवस्थापक [illegible] हिन्दी

शारीरिक-आत्मिक उन्नति बिना सामाजिक न्याय नहीं मिलेगा

(१२-१-१९९२ गताक से आगे) —डा० नरेन्द्र कुमार

समाज पर बुरा असर पडता है। बच्चो मे कुसस्कार आते हैं। ताडी, गाजा, भाग, अफीम चरस आदि जैसी नशीली वस्तुओ का सेवन बढता जा रहा है। पिछडा वर्ग इससे काफी प्रभावित है। पिछडे वग को इनका सेवन ब द कर देना चाहिए। इनके सेवन से उसकी आर्थिक स्थिति डावाडोल होती है। उच्च वग के पास पैसा है इसलिए उनमे कुछ लोग स्टैंडर्ड बनाने के लिए इन चीजो का सेवन करते है। लेकिन समाज का पिछडा व गरीब वग उनकी देखादेखी नशीली चीजो का सेवन करने लगता है। आमदनी उतनी होती नही उनकी फिर चोरी, छीना-झपटी जैसी बुराइया उनमे आ जाती है।

अत इन चीजो का सेवन बन्द होना चाहिए। समाज का प्रत्येक प्राणी इस बात को गभीरता से ले। क्योकि हर आदमी का समाज पर किसी न किसी तरह प्रभाव पडता ही है।

आध्यात्मिक व्यक्ति झूठी शान शौकत, तडक-भडक, आडम्बर नशीली चीजो के सेवन जैसी बुराइया से कोसो दूर रहता है। एसी स्थिति मे सुखदायी समाज की स्थापना हो सकती है।

इसलिए आध्यात्मिक उन्नति करना जरूरी है। आदर्श सास्कृतिक गतिविधिया आध्यात्मिक उन्नति में सहायक होती हैं। टेलीविजन एव अन्य सचार माध्यमो से सरकारी व सास्कृतिक कायक्रम प्रदर्शित हो। अश्लील चलचित्र, विज्ञापन, सगीत और गीत समाज मे आध्यात्मिक वातावरण की सृष्टि नही होने देते। गो-वध जैसी घातक प्रवृत्ति रोकी जानी चाहिए।

आध्यात्मिकता का निर्माण थोडे समय मे नही होता। बल्कि इसमे समय अधिक लगता है।

स्पष्ट है कि सबके लिए आध्यात्मिक उन्नति का होना जरूरी है। आध्यात्मिक उन्नति का असर समाज के हर वग पर पडेगा। इससे सबके जीवन का स्तर सुधरेगा। काम कठिन जरूर है, लेकिन असमव नहीं। खेद है, नेताओ का ध्यान इन बातो पर जाता ही नही।

महर्षि दयान द समझते थे कि एक व्यक्ति जब तक पूर्ण रूप से शारीरिक व आत्मिक उन्नति नही कर लेता तब तक वह सामाजिक उन्नति नही कर सकता। इसी बात को उन्होने आय समाज के छठे नियम मे दर्शाया है। जिसने अपना ही उन्नति नही की वह दूसरे व्यक्ति की उन्नति म कैसे सहा क हो सकता है? समाज की उन्नति तो बहुत दूर की बात है।

शारीरिक और आत्मिक उन्नति के बाद सामाजिक उन्नति की बारी आता है। समाज के प्रत्येक प्राणी का पूणत विकास हो। समाज का बच्चा बच्चा लगा रहे बहुमुखी उन्नति के माध्न सबको उपलब्ध हो। यह समाजिक उन्नति की प्रथम आवश्यकता है। समाज स सबधित तमाम उन्नतिया हो सकता है। किसी को नोकरी म उन्नति करनी है कोई धन बढाना चाहता है किसी को ज्ञान बटना है किसी को अपना राजनतिक आधार पुख्ता करना है। ऐसी कई प्रकार की उन्नतिया है। शिक्षा का व्यापक प्रचार प्रसार हो। पिछडे वग पर विशेष ध्यन देना पडेगा। समाज का प्रत्येक सदस्य उन्नति करे ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए।

आरक्षण के नाम पर राजनैतिक दाव पच लगाना उचित नही। जो पिछडा है उसे स्थान मिलने चाहिए। लेकिन इस बात की समीक्षा की जानी चाहिए कि कही समाज के दूसरे वर्ग के साथ अन्याय तो नही हो रहा है।

सामाजिक न्याय के नाम पर दूसरे के साथ अन्याय करना न्याय के नाम पर कलक है। आरक्षण का एक कारण है लोगो का पिछडापन। इस पिछडेपन को दूर कैसे किया जा सकता है, इस बात पर ध्यान देना है। उन्हे आर्थिक सुविधाए मिले। स्वरोजगार के अधिकाधिक अवसर मिल। सरकारी नौकरिया कम हैं बेरोजगार ज्यादा हैं इसलिए खानापूर्ति के लिए आरक्षण करना उचित नही। आरक्षण अवधि की सीमा होनी चाहिए। उस सीमा को पार करने पर आरक्षण की सुविधा समाप्त करने का प्रावधान जरूरी है। जो समाज के पिछडे वर्ग के साथ प्रतिस्पर्धा कर सके उस परिवार को आरक्षण की क्या आवश्यकता है। ऐसे परिवार को आरक्षण का लाभ कैसे मिल पाएगा। पिछडे वर्ग को ही आगे बढने का मौका नही मिलेगा। इसके साथ ही अनुसूचित जाति, जनजाति के आरक्षण अनुपात मे सामजस्य आवश्यक है।

प्राचीन काल मे चार वण थे—ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। पहले गुण-कर्म-स्वभाव पर वर्ण के विभाजन को अधिक मान्यता थी। काला तर मे जन्म के आधार पर वण व्यवस्था का विस्तार हुआ। व्यक्तिगत स्वार्थों के वशीभूत होकर कुछ लोगो ने अपने को श्रेष्ठ और दूसरे को नीच कहना प्रारम्भ कर दिया। इससे शूद्र वग की स्थिति सबसे बदतर होती गई। उन्हे वह सम्मान न मिला जो मिलना चाहिए। परिणाम यह हुआ कि छूआछूत, ऊच नीच जात पात जैसी समाज को तोडने वाला घातक प्रवृत्तिया पैदा हुई। समाज बिखर गया।

विदेशी आए। उन्होने भी इसका भरपूर फायदा उठाया। वर्षों हम गुलाम रहे। यह हमारी बिगडी वण-व्यवस्था का ही दोष है। गुण कम-स्वभाव पर यह व्यवस्था होती तो शायद यह स्थान इतना न बिखरता।

जो हो गया उसे ज्यादा सोचने से विशेष फायदा होने वाला नही है। हा, उन भूलो से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। इसी भूल को महर्षि दयानन्द ने समझा था। उसे सुधारने की कोशिश में ही आर्य समाज के सातवें नियम मे उन्होने लिखा—'सबसे प्रीतिपूवक धर्मानुसार, यथायोग्य बर्तना चाहिए।' अर्थात् समाज मे सब सदस्यो मे एक दूसरे के प्रति प्रीति होनी चाहिए। एक दूसरे का आचरण धर्मानुसार होना चाहिए। यहा धर्म का अभिप्राय आचार विचार रहन सहन व वेदानुसार उपासना से है। यथायोग्य का अभिप्राय है जो जैसा है, उसके अनुकूल हमे उससे व्यवहार करना चाहिए। इसका मतलब यह नही कि शराबी के साथ हम भी शराबी बन जाए। चोर के साथ चोरी पर निकल पडें। इसलिए महर्षि दयान द ने प्रीतिपूर्वक एव धर्मानुसार इन दो शब्दो से तमाम अनैतिक कामो को परे धकेल दिया है।

एक योग्य व्यक्ति को वह स्थान मिलना चाहिए जिसके लिए वह योग्य है। चाहे वह किसी वर्ण का क्यो न हो। यहा यह ध्यान देने योग्य बात है कि महर्षि दयान द ने सातवे नियम मे 'सबसे' शब्द का प्रयोग किया है। वण विशेष और सम्प्रदाय विशेष और का उल्लेख नहीं है। आशय यह है कि यदि एक शूद्र गुण कम स्वभाव मे उन्नति कर रहा है, तो उन्नति को सुअवसर उसे मिले। उसकी उन्नति में बाधक न बन। उसकी बाधाओ को भी दूर करने का प्रयास करे।

यदि वह ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र मे उन्नति कर रहा है तो वह ब्राह्मण वण म मिले अस्त्र शस्त्र रक्षा सुरक्षा के दायित्व को निभाए तो क्षत्रिय। धन कमाए तो वैश्य कहने म हिचकना नही चाहिए। इसके विपरीत कोई उच्च वर्ग अपन दूसरे वण के काम करें तो उसे दूसरे वण को माने।

इस म समाज के पिछडे वग को आगे आने का मौका मिलेगा। उच्च वग को अपने आदश से हटने का भयानक परिणाम (वण परिवर्तन) का ध्यान रहेगा। इसस समाज के प्रत्येक सदस्य पर अकुश रहेगा।

एक व्यक्ति उन्नति कर ले, तो उसे आराम नही करना चाहिए। बल्कि महर्षि दयान द के शब्दो मे—"प्रत्येक को अपनी ही उन्नति मे सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति मे अपना उन्नति समझनी चाहिए। का ध्यान रखना जरूरी है। स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द ने सभी वर्णो को एक दृष्टि से देखा था। वण विशेष के लिए उनके मन में कोई लगाव या दुराव नहीं था।

हम कह सकते हैं कि समाज के प्रत्येक सदस्य को उन्नति का अवसर मिले। महर्षि दयानन्द के शब्दो मे कह सकते हैं—"सब मनुष्यो को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

व्यक्ति को समाज के हित के लिए अपना व्यक्तिगत हित त्यागने को तैयार रहना चाहिए। तभी महर्षि दयान द के सपनो का पूरा कर सकेंगे तथा सम्मान मिल सकेगा। ●

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्यसन्देश



धारावाहिक चाणक्य

आचार्य चाणक्य नामक एक धारावाहिक दिल्ली दूरदर्शन पर प्रत्येक रविवार को प्रात ९ से १० तक प्रसारित किया जाता है। रविवार को ही इससे पहले रामायण और महा भारत नामक धारावाहिक भी प्रसारित किए थे। सर्वत्र इन धारावाहिको का स्वागत भी कियाग या था। जिस समय इन धारावाहिको का प्रसारण होता था, उस समय साधारण जनता अपने सारे काय व्यापार रोक कर दूरदशन के सामने बैठ जाती थी। सड़कें सुनसान हो जाती थी। केवल विशिष्ट लोग ही जि हे अन्य अनेक सुविधाएं प्राप्त हैं या जिन्हें बहुत ही अपरिहार्य कार्य होते थे, वे घर से बाहर निकलते थे। यहा तक कि आय समाजो के साप्ताहिक सत्सगो की उपस्थिति पर इसका प्रभाव पडा था। यही बात 'चाणक्य' के विषय मे भी उतनी ही सही है। चाणक्य इतिहास पुरुष हैं। उन्होने अपने युग को एक नई दिशा दी थी। उन्होने आक्रमणकारी विदेशियो के विरुद्ध भारत की जनता को सगठित किया था तथा रजवाडो को बाध्य किया था कि वे अपनी मातृभूमि के लिए अपने को न्यौछावर करने के लिए तैयार हो जाय। युवा चन्द्रगुप्त मे उ हे राजा के सभी गुण दिखाई दिए थे। आगे चल कर वही राजा बना।

जिन्होने वास्तव मे इस धारावाहिक को देखा है, वे पायेगे कि इसमें धर्म की नही, बल्कि धम की बात कही गई है। इसमे मानव धर्म की बात कही गई है। इसमे वेद की बात कही गई है। चाणक्य के युग मे भारत मे न ईसाई थे, न मुसलमान, न सिक्ख न अन्य धर्मावलम्बी। यहाँ पर तो सभी आय थे। वे वेद को मानने वाले थे। वे सभी अपने राष्ट्र के विषय मे सोचने वाले थे। कुछ राजाओ मे पृथक्करण का भाव अवश्य आ गया। इसी कारण वे पराजित भी हो रहे थे। चाणक्य ने साहसिक काय किया। सभी को सगठित किया

आज यदि इसमे कोई सकीर्णता अथवा साम्प्रदायिकता की गध अनुभव करे तो हम तो इसे उसकी मनोवृत्ति का दोष ही मानेगे। तत्कालीन सामाजिक राजनैतिक परिस्थितियो का इसमे सुन्दर चित्रण है। इसमें गुरुकुलो का महत्व प्रतिपादित किया गया है। ब्राह्मण की श्रेष्ठता, निर्भयता तथा त्याग की प्रवृत्ति को चित्रित किया गया है। केसरिया रग तो वनमन मरकार के ध्वज मे भी है। यह हमारे त्याग का ही तो प्रतीक है। इसमे सम्प्रदायिकता कहा से आ गई।

हमारे यहा ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध हैं जिनमे 'ओ३म् ध्वज को किसी भी प्रकार की भेद भाव की स्थिति से ऊपर सभी के लिए समान रूप मे महत्वपूर्ण माना गया था। प० जगदेव सिद्धान्ती की ज प पर लगा 'ओ३म् ध्वज किसी भी प्रकार के विवाद से ऊपर माना गया था।

आज सरकार यदि 'चाणक्य' के प्रसारण पर रोक लगाता है तो यह सभी का दुर्भाग्य होगा। जो राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और भ्रातृत्व का पाठ पढा रहा है क्या यह गलत काय है?

निश्चय ही हमे सरकार के द्वारा प्रसारण रोकने के निणय का पूरी शान्ति से इसका विरोध करना चाहिए। —डा० धर्मपाल

श्री शेखावत द्वारा नौलखा महल का निरीक्षण

राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री भैरोसिंह शेखावत १२ दिसम्बर १९९१ को राजस्थान के उदयपुर नगरी मे शेखावत गुलाब बाग स्थित नौलखा महल को देखने गए थे, जहा पर आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की थी। राज्य सरकार ने इस भवन को राजकीय स्मारक बनाने का निणय लिया है। मुख्यमन्त्री जी ने आर्य समाज के स्थानीय प्रतिनिधियो से बातचीत की और उनके द्वारा वांछित नौलखा भवन शीघ्र उपलब्ध कराने का उन्हे आश्वासन दिया। (दैनिक प्रात काल १३-१२-९१से)

सम्पादक के नाम पत्र

आर्य समाज मन्दिर विशेषांक एक अनुपम कृति

आर्य सन्देश का 'आय समाज मन्दिर विशेषाक' अपने आप मे अनुपम कृति है जिसमे दिल्ली के मन्दिरो की सक्षिप्त गतिविधिया छपी हैं। यह आपका अदम्य साहस ही है कि आप सग्रह योग्य विशेषाक प्रकाशित करते आ रहे हैं। बहुत बहुत बधाई। डा० जसबीर आर्य

अध्यक्ष, युवा विकास परिषद दिल्ली

मान्यवर डा० साहब, सप्रेम नमस्ते।

आयदेश का विशेषाक मिला, इसकी सफलता के लिए आपको बधाई। आचार्य रामदेव जी के सम्बन्ध मे उपयुक्त तथा प्रेरणाप्रद लेख, अक की शोभा हैं आर्य सन्देश विशेष अको के सम्पादन तथा आर्यों के इतिहास को पुन हमारे सामने लाने मे अपना विशेष स्थान रखता है। श्रद्धेय आचार्य रामदेव जी के दर्शनो का सौभाग्य मुझे भी मिला है। काश। उनकी मस्ती तथा लग्न का कुछ भाग हमें भी प्राप्त हो पाता। उत्तम शर्मा

देश की भाषा तो संस्कृत ही है

"भारत के अन्दर भाषा कभी भी टकराव की चीज नही रही। आप अपने इतिहास को देखे क्या कभी तमिल, तेलगू कन्नड मलयालम और सस्कृत में टकराव हुआ? आदि भाषा तो सस्कृत ही है।' ये उद्गार केन्द्रीय मानव ससाधन मन्त्री श्र अर्जुनसिंह ने हैदराबाद मे २२ दिसम्बर, १९९१ को सम्पन्न हुए भारतीय भाषा सम्मेलन मे व्यक्त किए। उन्होने आगे कहा कि भाषाए एक दूसरे के परिपक्व भण्डार से भरी पडी है और भाषा का टकराव हमारी विकृत आधुनिकता का अग है। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामीआनन्द बोध सरस्वती ने की। इस अवसर पर सभा के वरिष्ठ उपप्रधान वन्दे मातरम रामचन्द्र राव, सासद डा० शकरदयाल सिंह आदि गणमान्य महानुभाव भी उपस्थित थे।

श्री अर्जुन ने आगे कहा कि भाषा केवल बोलने की चीज नही है भाषा विचारो की वाहिनी है और जब विचार शुद्ध होगे तो निर्माण होगा, जो आप कर रहे हैं। ऐसे लोगो के द्वारा होगा जो राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत है। विध्वस उनके माध्यम से होगा जो अपने को ही ऊपर रखकर दूसरो को गौण समझते हैं और यह भाग भारत को बनाने का नही बल्कि विनाश के रास्ते पर ले जाने का है। इसलिए माननीय स्वामी आनन्द बोध सरस्वती व प० व देमातरम् जी का जिसके मैं शायद अधिकारी नहीं हू, केवल अपनी ओर से नही बल्कि कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से आभारी हू।

धम के सम्बन्ध मे अपने विचार व्यक्त करते हुए मानव ससाधन म त्री ने कहा कि इतिहास साक्षी है कि दुनिया मे जो सबसे अधिक कत्लेआम हुए हैं जितने नरसहार हुए है वे सब धर्म को लेकर हुए हैं। ऐसा क्यो? जबकि धम हमे आपस मे प्रेम करना सिखाता है, सबका सम्मान करने की बात करता है व ईश्वर के पास पहुचने का रास्ता दिखाता है फिर नर सहार क्यो? वचस्व की भावना ही इसका कारण है। जब हम यह साबित करना चाहते है कि हमारा धम आपसे धम से ज्यादा अच्छा है, इसमे ज्यादा अच्छाइयाँ हैं, तब टकराव होता है।

लेखकों से अनुरोध

आय सन्देश के पाठको, लेखको से अनुरोध है कि अपना वैज्ञानिक खोज-पूर्ण, धार्मिक तथा सामाजिक एव ज्ञानप्रद शोधपूर्ण लेख एव कविता उचित समय पर सुन्दर साफ एव स्पष्ट अक्षरो मे पृष्ठ के एक ओर लिखकर प्रकाशन समय से २० दिन पूर्व भेजने का कष्ट करें। ताकि हम आपके लेख कविता व समाचारो को प्राथमिकता दे सकें।

समय समय पर प्रकाशित होने वाले विशेषाक हेतु भी विद्वानो के लेख आमन्त्रित हैं, कृपया लेख के साथ अपना पासपोर्ट साइज का श्यामश्वेत छायाचित्र तथा नाम व पता अवश्य भेजें। प्रकाशित होने वाले विशेषाको की सूची आगामी अक मे प्रकाशित की जाएगी। धन्यवाद।

निवेदक : सम्पादक 'आय सन्देश

महर्षि का सच्चा स्मारक-आर्यसमाज

—यशपाल आर्य बन्धु

मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह अपने प्रिय की स्मृति को चिरस्थाई बनाये रखने का प्रयत्न करता है। वह उसकी स्मृति मे पुस्तक, स्मारिका, स्तूप, मठ आदि बनवाता है। वह ऐसा स्मारक चाहता है जो शानदार भी हो और सरल भी। किसी की स्मृति मे स्मारिका या पुस्तक प्रकाशित करा देना अपेक्षाकृत सरल तो है पर स्थूल दृष्टि से उतना शानदार नही जितना कि ताजमहल जैसा कोई स्मारक। इसी प्रकार ताजमहल आदि बनवा देना शानदार तो हो सकता है पर वैसा सरल नही। साधारण मनुष्य मध्यमार्ग खोजता है। परिणाम स्वरूप भवन, मन्दिर, विद्यालय आदि की स्थापना की जाती है कि जो कुछ अश तक सरल भी होते हैं और स्थूल दृष्टि से कुछ शानदार भी। दयानन्द विद्यालय, दयानन्द मठ, दयानन्द भवन, दयानन्द सस्थान, दयानन्द पीठ दयानन्द मार्ग आदि के पीछे यही भावना काम करती दृष्टिगोचर होती है।

वस्तुत स्थूलदर्शी पुरुषो ने ससार के इतिहास मे स्थूल वस्तुए स्मारक समझी हैं। जैसे मुसलमान मदीने को अपने पूर्वज का स्मारक समझते है। ईसाई लोग सलीब सूली के चिन्ह को अपने गुरु का स्मारक बतलाते हैं। बौद्ध लोग बुद्ध की मूर्ति उसका स्मारक ठहराते है। "(देखें महर्षि स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र, ले० प० लेखराम आर्य मुसाफिर पृष्ठ ९७३) पर महर्षि अपनी स्मृति मे किसी भी ऐसे स्थूल स्मारक बनाये जाने के सर्वथा विरुद्ध थे और सत्य तो यह है कि स्थूल स्मारक वास्तविक होते ही नही। वास्तविक स्मारक तो वही हो सकता है जो स्मरणीय के उद्देश्यो एव कर्त्तव्यो के प्रचार मे सहायक सिद्ध होने के साथ-साथ उसकी स्मृति भी दिला सके। यही कारण है कि सूक्ष्म दृष्टि वाले तत्वदर्शी लोग किसी सरल शानदार स्थूल स्मारक की अपेक्षा यह देखते है कि वह स्मारक स्मरणीय की भावनाओ के अनुकूल भी है कि नही ? दयानन्द की स्मृति मे उसकी मूर्ति स्थापित करना दयानन्द की भावनाओ के सर्वथा विपरीत कृत्य होगा। इसी प्रकार कोई समाधि आदि बनवा देना श्री महर्षि की इच्छा के विरुद्ध है।

महर्षि ने उदयपुर मे कविराज श्यामलदास से स्पष्ट कहा था कि "मेरे मरने के पश्चात् मेरी अस्थियो को किसी खेत मे डाल देना कोई समाधि या कोई चिन्ह कदापि न बनाना।" इस पर पण्डित इन्द्र ने ठीक ही लिखा है—'यदि आर्य जनता ऋषि की यादगार मे कोई स्तूप या मकबरा बना देती तो आज हिन्दू स्त्रिया उस पर फूल बताशे चढा कर अपने जीवन को सफल मान रही होती'।' [आर्य समाज का इतिहास, प्रथम भाग पृष्ठ १५१] वस्तुत ईट-पत्थर के स्मारक वास्तविक स्मारक नही हो सकते। स्मरणीय के उद्देश्यो और मन्तव्यो का प्रचारक ही सच्चा स्मारक होता है। पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी अपने व्याख्यानो मे कहा करते थे कि—"ईट पत्थर पर किसी ऋषि का नाम खुदवा देने से ऋषि का स्मारक नही बनता प्रत्युत यदि ऋषि का स्मारक स्थापित करना चाहते हो तो उन सिद्धान्तो का प्रचार करके दिखाओ कि जिन सिद्धान्तो का प्रचार स्वय ऋषि करते रहे हैं। स्वामी दयानन्द का स्मारक यही है कि वेद के सिद्धान्तो का ससार मे प्रचार हो जाय।' [महर्षि स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र, ले० पण्डित लेखराम जी आर्य मुसाफिर, पृष्ठ ९७५।]

आर्य समाज ही महर्षि का सच्चा स्मारक है—

आर्य समाज पर चूकि महर्षि के सिद्धान्तो के प्रचार का पूर्ण उत्तरदायित्व है एव गत शताब्दी से वह महर्षि के सिद्धान्तो का सफलता पूर्वक प्रचार भी कर रहा है। अत आर्य समाज ही महर्षि का वास्तविक स्मारक कहा जा सकता है।

प० इन्द्र जी ने ठीक ही लिखा है कि 'आर्य समाज महर्षि का स्मारक ही नही ऋषि का प्रतिनिधि भी है। ग्रन्थो की, सिद्धान्तों की और वस्तुत वेदो की रक्षा का बोझ आर्य पर है।' (आर्य समाज का इतिहास प्रथम भाग पृष्ठ ११२) जो वस्तु किसी के नाम का स्मरण करा सके और उसके उद्देश्यो का प्रचार भी कर सके वही उसकी वास्तविक स्मारक समझी जाती है। इन अर्थों मे आर्य समाज से बढ कर दूसरा स्वामी दयानन्द का स्मारक नही हो सकता।

आर्य समाज महर्षि का ऐसा स्मारक है कि जिसकी नींव का पत्थर भी स्वय महर्षि ने ही अपने हाथो से रखा था। यह ऐसा शुभ स्मारक है कि जिसके साथ महर्षि का नाम न जुड़ा होने पर भी उसके नाम के साथ महर्षि का भी स्मरण हो आता है। प० लेखराम आर्य मुसाफिर कृत महर्षि स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र पृष्ठ ९७२ पर क्या सुन्दर लिखा है—"मुसलमान, नास्तिक, जैनी, पौराणिक आदि किसी भी पुरुष के सामने आप आर्य समाज का नाम कह दो वह सुनते ही आप को दयानन्द का नाम सुना देगा। यदि आर्य समाज का नाम लेते ही स्वामी दयानन्द सरस्वती का स्मरण हो जाता है तो वास्तव मे आर्य समाज से बढ कर कोई स्वामी जी का स्मारक नही हो सकता। अमरीका सरीखे दूर देशो मे चले जाओ, वहा भी आर्य समाज के साथ स्वामी दयानन्द और स्वामी दयानन्द के साथ आर्य समाज का नाम बधा हुआ पाओगे। अमरीका के विद्वान डेविस अपने लेख मे स्वामी दयानन्द से आर्य समाज को पृथक् नही कर सकते। जहां वह स्वामी दयानन्द जी को शुद्ध अग्नि को प्रज्वलित करने वाला-यह गौरवपूर्ण नाम लेते हैं, वहा वह आर्यसमाज को उस अग्नि की भट्टी बतलाते हैं। मैक्समूलर अपनी पुस्तक 'बायोग्राफिकल' मे स्वय प्रश्न उठाता है कि दयानन्द सरस्वती कौन था ? और फिर स्वय ही उत्तर देता है कि दयानन्द आर्यसमाज का सस्थापक और नेता है।"

महर्षि स्वय भी आर्य समाज को ही अपना स्मारक मानते थे। उनका स्वय का कथन है—"मेरे शिष्य सभी आर्यसामाजिक हैं वे ही मेरे विश्वास और भरोसे के भव्य भवन हैं। उन्हीं के पुरुषार्थ पर मेरे कार्यों की पूर्ति और मनोरथो की सफलता अवलम्बित है।

अत आर्यसमाज ही महर्षि दयानन्द का सच्चा और वास्तविक स्मारक है। आज इस स्मारक की कीर्ति धूमिल हो रही है। आवश्यकता इस बात की है कि हम आर्यजन अपने ऋषि के इस स्मारक की धवल कीर्ति पर किसी प्रकार की आच न आने देवें। यही हम सबका पुरुषार्थ होना चाहिए। आज हम आर्यों को यही व्रत लेना है।

'अमर रहे गणतन्त्र हमारा'

—राधेश्याम 'आर्य विद्यावाचस्पति

जिसके लिए दिया वीरो ने, अपने प्राणो का बलिदान।
बलिदानो से वही विमण्डित, अपना है गणतन्त्र महान।।
आज हिमालय के शिखरो से, फिर हमने है ललकारा।
अमर रहे गणतन्त्र हमारा।।

भगत सुभाष शिवा राणा ने, जिसको शोणित दान दिया।
बिस्मिल ने, अशफाक सदृश ने, त्यागो से सम्मान किया।
भारत मा का यह गौरव है, हमको यह प्राणो से प्यारा।
अमर रहे गणतन्त्र हमारा।।

जन-जन की आशा का प्रतिफल, यह समता का वाहक है।
ऊच नीच का छुआछूत का, यह गणतन्त्र विनाशक।।
इसकी रक्षा हित यह भारत, कटि बांधे तत्पर है सारा।
अमर रहे गणतन्त्र हमारा।

इसे समृद्ध बनाएगे हम, दूर गरीबी महगाई कर।
ज्योतिमय होगा यह भारत, निकलेगी नव रश्मि प्रखर।
सर्वोपरि होगा वसुधा पर, देश हमारा यह न्यारा।
अमर रहे गणतन्त्र हमारा।।

भूल सुधार

१२ जनवरी के अक मे पृष्ठ ४ पर प्रकाशित डाक टिकटो मे योगासन लेख के प्रथम अनुच्छेद मे कृपया 'मुद्रित डाक टिकटों की सख्या दस लाख है' पढ़ा जाये मुद्रण की भूल के कारण 'लाख' छपने से रह गया है।

—सम्पादक

"महर्षि के शिष्य सहजानन्द"

—धर्माचार्य दिनेश चन्द्र शास्त्री

एक दिन सवेरे, एक काषायाम्बरधारी, बिहारी ब्राह्मण दण्ड-कमण्डलु लिए नौलखा उद्यान मे आ निकला। उसने दूर से देखा कि कोई महात्मा पद्मासन रमाये ध्यान मे लीन हैं। वह और निकट आकर महामुनि जी की माधुरी और मनोहारिणी मूर्ति को एक टक, लालायित लोचनो से निहारने लगा। उदयकाल के सूर्य के समान रक्त वर्ण, अनुपम, आनन्दमयी मुस्कराहट खेल रही थी। उसे ऐसा प्रतीत होता था कि इस सर्वांग सुन्दर, सुवर्ण प्रतिमा के चहु ओर, प्रकाशपुंज का एक चक्र सा बना हुआ है। उस महापुरुष ने कोई एक मुहूर्त के पश्चात् अपनी चित्तवृत्ति को समाधि की उच्च भूमि से नीचे उतारा और नेत्र खोलकर 'ओ३म्, नाम का बार बार सुरीले स्वर से गायन किया। उसी समय आगन्तुक ने उनके चरणो पर अपना सिर रखकर नमस्कार किया। दो-चार बातो से ही अतिथि को ज्ञात हो गया कि "यही भगवान् दयानन्द है"।

उसने निवेदन किया 'भगवन्! मैं बिहार देश का रहने वाला ब्राह्मण हूं। मैंने व्याकरण और दर्शन शास्त्रो का अनुशीलन किया है। विशेषता से वेदान्त शास्त्र को अधिक परिश्रम से पढा है। मैं वैराग्यवश गृह परित्याग कर पर्यटन कर रहा हू मेरा वेश तो सन्यासियो का सा है और नाम भी मेरा सहजानन्द है, परन्तु मैंने विधि पूर्वक सन्यास नही लिया।

'मैं आपकी विमल कीर्ति सुनकर, सुदूर देश से चलकर यहा आया हू। अपनी अद्वितीय दयालुता से मुझे सन्यास देकर निज जनो की पंक्ति मे मिला लीजिए।" भगवान् दयानन्द ने अपने द्युतिमान् दाहिने हाथ से, सहजानन्द जी के पृष्ठ प्रदेश को प्रकाशित करते हुए कहा— 'वत्स! यदि आपकी ऐसी ही भावना है और आप सार्वजनिक जीवन की जड को अपने पुरुषार्थ के पानी से सींचना चाहते हैं तो चलिए हमारे डेरे पर ही विश्राम कीजिए। देश काल मिलने पर सन्यास की बार्ता भी विचार ली जाएगी।"

सहजानन्द जी श्री महाराज के पास रहने लगे। श्री महाराज ने सुयोग्य व्यक्ति जानकर उनको अपने सेवक समूह मे मिला लिया। 'भगवान् दयानन्द श्री महाराज ने सहजानन्द जी को उपदेश दिया, 'सन्यासी को सदा परमात्मा पर ही निर्भर करना चाहिए। आप नित्य प्रति प्रातः-सायं समय प्रणव पवित्र का जप और आराधना किया करें। यही हम लोगो का आश्रय और आधार है। इसके चिन्तन से चित्त की चञ्चलता दूर हो जाती है। पाप पंक को धोने के लिए इससे बढ़कर दूसरा साधन नही है। महा मुनिजन इसी महामन्त्र से मन्मथोन्मथन करके परमानन्द मे निमग्न रहा करते हैं। लक्ष्य को बेधने के समय, जैसे वीर धनुर्धर टकटकी लगाकर केवल लक्ष्य ही को देखता है, इसी प्रकार मनोवृत्तियो को एकाग्र कर प्रणव-ओंकार पाठ जपने से कल्पनातीत परिणाम प्राप्त होता है। जब तुम चिरकाल पर्यन्त इस भक्ति योग को करते रहोगे तो समाधि के मधुमय, स्वादु फल का आप ही आस्वाद करने लगोगे। उस समय आपकी सब वासनायें शान्त हो जायेंगी। कामनायें परा तृप्ति को प्राप्त कर लेगा।

सहजानन्द जी को श्री महाराज ने दस लक्षण युक्त धर्म का पालन करने की आज्ञा दी। श्री महाराज ने अपने ग्रन्थो मे लिखा भी है—सन्यासियो का मुख्य धर्म यही है कि गृहस्थादि सब आश्रमो को सब प्रकार के सच्चे व्यवहारो का निश्चय करायें। उनसे अधर्म कर्म छुडा दे। उनके संशय छेदन कर उनको धर्मयुक्त व्यवहारों मे प्रवृत्त करे। जो सन्यासीजन सत्योपदेश नही देते और वेदादि सत्य शास्त्रो का विचार तथा प्रचार नही करते वे भी जगत् मे व्यर्थ भार रूप है।" श्री महाराज ने अपने नूतन शिष्य सहजानन्द को प्रचार के कार्य के लिए उत्तेजित किया। उसको कहा, 'आप पर्याप्त पठित हैं। सुयोग्य और समझ विचार वाले हैं। आपको अवकाश भी बहुत है। कटिबद्ध होकर आर्य समाजों मे पर्यटन कीजिए और स्थान-स्थान पर उपदेश देने मे प्रवृत्त हो जाइये। सहजानन्द ने सिर झुकाकर श्री वचनो को स्वीकार कर लिया।

रात दिन महाराज के पास निवास करते हुए सहजानन्द ने देखा कि वह रात के समय केवल चार घण्टे भर विश्राम लेते हैं और फिर उठकर ध्यानारूढ़ हो जाते हैं। किसी निर्जन वन स्थान या एकान्त उद्यान मे भी, प्रतिदिन सूर्योदय के समय, एक घण्टा भर के लिए ध्यानारूढ़ हुआ करते हैं। एक दिन सहजानन्द ने देखा कि ऋषिवर योगिराज जल पर पद्मासन लगाये हैं, योग मुद्रा ने उनके मन मे एक गहरा भक्ति-भाव उत्पन्न कर दिया। योग मुद्रा मे कमलदल की भांति विराजमान हैं। गुरुदेव की इस मनोहर योग मुद्रा ने सहजानन्द के मन मे एक गहरा भक्ति-भाव उत्पन्न कर दिया। श्री महाराज कभी-कभी लम्बी समाधि भी लिया करते थे। उदयपुर मे एक बार, श्री महाराज ने श्वास-प्रश्वास तक की क्रिया को रोककर निरन्तर चौबीस घण्टे की समाधि ली थी। गुरुदेव ने अपने नवीन शिष्य को यह भेद एक दिन पहले ही बता दिया था और कह दिया था कि आप चाहे तो चुपचाप मौन भाव से खिडकी विशेष द्वारा देख सकते हैं। श्री महाराज के आदेश को पाकर श्री सहजानन्द जी महाराज ने तुर्यावस्था अवस्थित और असम्प्रज्ञात समाधिगत गुरु महाराज के उस दिन रात मे कई बार दर्शन किये। उस समय महाराज की काया अकम्प और अचल थी। वे सौन्दर्य समुच्चय प्रतीत होते थे। उनके मस्तक का तेज, मुद्रा की शोभा, देह की दीप्ति अद्भुत तथा अनुपम दीख पडती थी। श्री महाराज के चारो ओर शान्ति बरस रही थी। महाराज का हृदय स्फटिक के सदृश था।

श्री महाराज के जीवन से और उपदेशो से प्रभावित होकर सहजानन्द जी उदयपुर से ही महाराज के आदेशानुसार उपदेश कार्य के लिये समुद्यत होकर चल पडे और नगर नगर मे विचरने लगे। एक बार दो साधु श्री महाराज से मिलने आये ज्ञान चर्चा चलती रही, जब वे चलने लगे तो सहजानन्द जी श्री महाराज से बोले— 'भगवन्! आप अधिकारीजन को ही उपदेश दिया करें। जो लोग आपके सत्संगो मे आते है वे सब ही अधिकारी नही होते। आपके खण्डन मण्डन विषयक व्याख्यानो के तो बिरले-जन ही अधिकारी होगे।' महर्षि ने कहा —"धर्मोपदेश मे अधिकारानधिकार का प्रश्न उठाना व्यर्थ है। इसका अधिकारी मनुष्य मात्र है। कोई भी बालक औषध आप ही आप नही खाता किन्तु उसके बन्धु उसे विवश करके खिलाते हैं। हमारा कुरीति खण्डन भी एक कडवा क्वाथ है। साधारणजन धर्म-अधर्म के बोध और सत्यासत्य के विवेक से विवर्जित है। उनको तो यह कटु क्वाथ बलपूर्वक ही से पिलाना पडेगा।

एक दिन श्री राणा जी सज्जनसिंह और सहजानन्द जी आदि सज्जन ऋषिवर के पास बैठे हुए थे। श्री महाराज ने श्री राणा जी से कहा, पण्डित सुन्दरलाल जी आ रहे है। राजा जी ने निवेदन किया, 'भगवन्! अब भी यान भेजा जा सकता है।" इस पर स्वामी जी ने कहा— अब तो वह बैल गाड़ी मे आ रहे है। उसका एक बैल शुक्ल वर्ण और दूसरे के तन पर लाल धवल धब्बे हैं। वे कल यहां पहुंच जायेगे। श्री महाराज ऋषिवर देव दयानन्द का कथन अगले दिन अक्षरशः सत्य सिद्ध हुआ। ऐसे अद्भुत गुरु के आदर्श शिष्य ग्राम-ग्राम और नगर-नगर मे वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने मे संलग्न सहजानन्द जी योगाभ्यासी थे। महर्षि के शिष्य सहजानन्द जी बने श्री महाराज के उपदेश का पालन किया।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का ६५वां बलिदान दिवस महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर द्वारा २५ दिसम्बर को आर्य समाज पाली के प्रधान श्री नरदेव आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। समारोह मे सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० भवानी लाल जी भारतीय ने कहा—हिन्दु, मुस्लिम, सिख सभी को एकता के प्रतीक स्वामी श्रद्धानन्द का कृतज्ञ होना चाहिए क्योंकि स्वामी जी ने सभी की भलाई के अद्वितीय कार्य किए हैं। उनके मार्ग पर चलना ही स्वामी जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। नगर सुधार न्यास जोधपुर के अध्यक्ष श्री चम्पालाल जी श्री रामनारायणसिंह जी शास्त्री आदि ने भी स्वामी श्रद्धानन्द की सेवाओं का स्मरण कर उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित की। संचालन श्री क्षेमेन्द्र जी स्नातक तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री रमेश चन्द भाटिया ने किया।

आर्य समाज सेक्टर-२२-ए चण्डीगढ़ द्वारा २२ दिसम्बर को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस स्वामी जगदीश्वरानन्द जी के सभापतित्व मे मनाया गया।

२३ जनवरी को जन्म दिवस पर—

तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा

सुभाष चन्द्र बोस अद्भुत प्रतिभा के धनी थे। वे 'नेताजी' के नाम से विख्यात थे। देश की आजादी के लिए भारत मा के इस सपूत के त्याग व बलिदान इतिहास मे सदैव स्वर्ण अक्षरो मे अकित रहेगे।

सुभाष चन्द्र बोस का जन्म २३ जनवरी सन् १८९७ को उडीसा के कटक नगर मे हुआ था। उनके पिता श्री जानकीनाथ बोस एक प्रसिद्ध वकील थे।

सुभाष मे त्याग व निःस्वार्थ सेवा की भावना कूट-कूट कर भरी थी। १२ वर्ष की अल्पायु मे उन्होने अद्भुत लग्न से हैजा पीडितो की सेवा की थी।

सुभाष चन्द्र बोस एक अत्यन्त मेधावी छात्र थे। बी ए की परीक्षा प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण की थी। केवल आठ मास के अध्ययन से ही उन्होने आई सी एस की परीक्षा चौथा स्थान प्राप्त कर पास की।

सुभाष के हृदय में देश प्रेम की ज्वाला धधक रही थी। इसलिए उन्होने धन, वैभव व प्रतिष्ठा की सरकारी नौकरी स्वीकार नही की और भारत आकर आजादी के सघर्ष मे कूद पडे।

सुभाष मे गजब की सगठन शक्ति थी। उन्होने स्वराज्य दल का गठन किया। सन् १९१८ मे वे कलकत्ता नगर निगम के चुनाव मे कार्यपालक अधिकारी निर्वाचित हुए।

सन् १९१८ व १९३९ मे कांग्रेस के अध्यक्ष भी निर्वाचित हुए। परन्तु गांधी जी से मतभेद के कारण वे अलग हो गये और उन्होने फारवर्ड ब्लाक की स्थापना की।

सुभाष चन्द्र बोस एक ओजस्वी वक्ता विद्वान् लेखक व एक प्रसिद्ध पत्रकार भी थे। उन्होने बांगलार-कथा एव 'फारवर्ड' नामक दो पत्र का कुशल सम्पादन भी किया।

देश की आजादी के लिए नेताजी अनेक वर्षों अग्रेजो की जेलो मे भीषण कष्ट सहते रहे। सन् १९४१ मे वे जेल से भागकर जापान जा पहुचे। भारत को आजाद कराने के लिए उन्होने विदेश मे आजाद हिन्द फौज का गठन किया। विश्व इतिहास की यह एक अनोखी घटना है।

'जय हिन्द' उनका अभिवादन था।

'दिल्ली चलो' उनका नारा था।

'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूगा।' यह उनकी अपील थी।

'लाल किले' पर तिरगा लहराना उनकी तमन्ना थी।

देश को आजाद कराना उनका लक्ष्य था।

नेताजी की पुकार पर लाखो प्रवासी भारतीय आजाद हिन्द फौज में भरती होकर अग्रेजो से लडने लगे। सन् १९४३ मे १९४५ तक वे अग्रेजों को युद्ध मे हराते रहे। वे लडते लडते वर्मा तक आ पहुचे और भारत की सीमा मे तिरगा झडा फहरा दिया।

१९४५ मे द्वितीय विश्व युद्ध मे लडाई का पासा पलट गया। इसलिए नेताजी को पीछे हटना पडा। कहा जाता है कि १८ अगस्त १९४५ मे एक हवाई जहाज दुर्घटना मे इस अमर सतान का निधन हो गया।

नेताजी स्वतन्त्रता वीरता, त्याग व बलिदान के प्रतीक थे। आज राष्ट्र-द्रोहियो की आजादी खतरे मे पड गई है। अत आज नेताजी के जन्म-दिवस पर हमारी सच्ची श्रद्धाजलि यही है कि हम सब प्राण देकर भी एकता व अखण्डता की रक्षा का सकल्प ले।

—ऋषि शर्मा
कक्षा नवम-बी
राजकीय आदर्श विद्यालय सिविल लाइन्स, दिल्ली ५४

श्री चोपड़ा डी०ए०वी० समिति के अध्यक्ष निर्वाचित

श्री ज्ञानप्रकाश चोपडा डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। २८ दिसम्बर, १९९१ को समिति की सम्पन्न हुई बैठक मे सर्वसम्मति से निर्वाचन के बाद श्री चोपडा को शेष कार्यकारिणी के गठन के पूर्ण अधिकार दिये गए।

तपस्वी सन्यासी स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज

—विमलकान्त शर्मा—

त्याग, तपस्या की मूर्ति आदर्श सन्यासी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज का जन्म लुधियाना के मोही नामक गाव मे एक सिख परिवार मे हुआ था। अल्पायु में माता का देहान्त हो गया था और नानी ने इनका पालन-पोषण किया। पिता सरदार केहरसिंह अपने पुत्र को ऊची शिक्षा देना चाहते थे परन्तु महात्मा बिशनदास के सत्सग का ऐसा प्रभाव पडा कि वे घर छोडकर वैरागी हो गए।

घर मे गुरुवाणी के पाठ का तो उनके मन पर प्रभाव था ही बाद मे गीता का भी अध्ययन किया, परन्तु जब महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के सम्पर्क में आए तो तन मन-धन से आर्य समाज के सम्पर्क मे आर्य समाज के ही होकर रह गए।

लाहौर मे दयानन्द उपदेशक विद्यालय में अनेक वर्षों तक उन्होने आचार्य के रूप मे सेवा की। ब्रह्मचारियो को सन्तान की तरह प्यार करते थे। एक बार मलेरिया के प्रकोप मे विद्यालय के छात्र अपने रोगी साथियो की सेवा मे जुटे थे। स्वामी जी ने आकर जब देखा कि कई रोगी छात्रो के जूठे बर्तन रखे हुए हैं और उनके साथियो ने आदेशानुसार साफ नही किए तो वे सारे बर्तन चुपचाप उठा लाये और साफ करके यथास्थान रख दिए। स्वामी जी ने किसी को कुछ नही कहा पर इसका जादू-सा प्रभाव पडा और फिर ऐसा कभी नही हुआ।

स्वामी जी मे आर्य समाज के प्रचार के लिए गजब की तडप थी। जहा कही से भी निमन्त्रण आता वे उसे अवश्य पूरा करने का प्रयास करते। भारत के कौने कौने मे ही नहीं अपितु मोरिशस, दक्षिण अफ्रीका, मलाया, जावा, सिंगापुर, हांगकांग, फिलपाईन आदि अनेक देशो मे जाकर दयानन्द व आर्य समाज का डका बजाया। इस सम्बन्ध मे एक बात विशेष उल्लेखनीय है। दोपहर को १२ बजे भोजन करने का स्वामीजी का नियम था। कई बार तीन-तीन व चार-चार दिन तक भोजन न मिला पर ऋषि के दीवाने सन्यासी के चेहरे पर कोई शिकन नही आया और न ही उन्होने वेद प्रचार में कोई व्यवधान आने दिया। ऐसे उदाहरण दुर्लभ हैं।

स्वामी जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के कार्यकर्त्ता प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के वेद प्रचार अधिष्ठाता, पजाब आर्य वीर दल के नेता आदि पदो पर रहते हुए अनेक वर्षों तक निःस्वार्थ भाव से सेवा की। महान् देशभक्त स्वामी स्वतन्त्रतानन्द ने स्वाधीनता सग्राम के दौरान लाहौर के शाही में जेल काटी थी। १९३९ के हैदराबाद सत्याग्रह में स्वामी जी ने फील्ड मार्शल के रूप मे महात्मा नारायण स्वामी के आदेशानुसार कार्य कर इस आन्दोलन को सफल बनाने में अपूर्व योगदान दिया।

एक बार लोहारू स्टेट मे धर्म प्रचार पर प्रतिबन्ध लगाया गया तो स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी ने वहा जाकर सत्याग्रह किया। गुण्डो ने हमला कर उन्हे लहूलुहान कर दिया पर वे अपने उद्देश्य से टस से मस न हुए। स्वामी जी ने लाहौर, पठानकोट व सोनीपत मे समानता के बूचडखाने को बन्द करवाने मे भी अद्भुत योगदान दिया।

ऐसे वीर तपस्वी महात्मा का ३ अप्रैल १९५५ को कैंसर के कारण बम्बई मे निधन हो गया। स्वामी जी का जन्म पौष मास की पूर्णिमा को विक्रमी सवत् १९३४ मे हुआ था १९ जनवरी को जन्म दिवस पर त्यागमूर्ति को शत शत प्रणाम।

श्री निश्शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या की अपील

श्री निश्शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या फैजाबाद उ० प्र० वर्ष १९२५ से निरन्तर निर्धन एव असहाय विद्यार्थियो के लिए आवास, भोजन एव उत्तम शिक्षा की व्यवस्था कर रहा है। वर्तमान समय में लगभग १२५ छात्र नियमित अध्ययन कर रहे हैं।

अत दानी महानुभावो से विनम्र अपील है कि गुरुकुल की आवश्यकताओ को अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर यश एव पुण्य के भागी बनें।

रामजी शुक्ल (मुख्याधिष्ठाता)
श्री निश्शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या, (उ० प्र०)

आर्य युवा विकास परिषद् दिल्ली

समाज व राष्ट्र का सर्वांगीण विकास करना तथा मानव मात्र का कल्याण करना आर्य समाज का प्रमुख लक्ष्य है। अदम्य साहस का प्रतीक युवा शक्ति को इस ओर मोडना व जोडना अत्यन्त सूझ बूझ व कौशल महत्वपूर्ण कार्य है। इसी उद्देश्य को लेकर एक क्रान्तिकारी, युवा सगठन आर्य विकास परिषद्' की विधिवत स्थापना आर्य सन्यासी स्वामी शकर मुनी के कर कमलों द्वारा २६ जुलाई, १६६० को आर्य समाज पालम कालोनी, नई दिल्ली मे की गई थी।

राष्ट्रीय अस्मिता, धार्मिक महानता सामाजिक समरसता, शैक्षिक उत्थान, शारीरिक बलिष्ठता के लिए परिषद् द्वारा सचालित प्रमुख गतिविधिया इस प्रकार है।—

१—आर्य युवको हेतु कक्षा १० से बी० ए०, बी० काम, बी० एस० सी० के समस्त विषयो की पढाई की व्यवस्था।

२—धार्मिक परीक्षाओ का सचालन।

३—बी-एड० एम० ए०, एम-एड, चिकित्सा, अभियान्त्रिक, सिविल सेवा व कानून पाठ्यक्रम आदि की तैयारी व उसमें शामिल होने हेतु जानकारी देना।

४ प्राइवेट व सरकारी नौकरियो से सम्बन्धित फार्म उपलब्ध कराना।

५—सस्कृत व अग्रेजी का अध्ययन।

६—युवको के स्वाध्याय के लिए वैदिक साहित्य, आर्य समाज की पत्र पत्रिकाओ का सग्रह।

७—परिषद् के विभिन्न मडलो मे युवको को पी टी, परेड, सैनिक शिक्षा, वेट लिफ्टिग, फुटबाल, वाली वाल, जुडो कराटे आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है।

८—युवको को सध्या, हवन, आदि का ज्ञान कराया जाता है।

६—झुग्गी झोपडी ग्रामीण क्षेत्र मे ईसाई मिशनरियो का प्रतिकार कर वैदिक ज्ञान देने हेतु परिषद् युद्ध स्तर पर काय कर रहा है।

जो भी युवक महर्षि दयानन्द के मतव्यो को पूरा करना चाहता हो वह इसकी सदस्यता ग्रहण कर सकता है सदस्य बनने के बाद परिषद् युवक के सुख-दुख व भविष्य निर्माण हेतु सचेष्ट रहती है।

दिल्ली मे यदि किसी आर्य भाई बहिन को कोई आततायी असमाजिक तत्व डराता, धमकाता या परेशान करता है तो परिषद तुरन्त कार्यवाही कर उस की मदद करती है साथ ही समाजो के उत्सव, कार्यक्रम आदि मे परिषद सुरक्षा व्यवस्था व सहाय प्रदान करती है।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted at N D P S O. on 16 17-1-1992 Licence to post without prepayment, Licence No U 139/८५
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल-११०२४/९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३९/८५
साप्ताहिक 'आर्यसन्देश' १९ जनवरी, १९९२

आर्यसमाज कानपुर का ११२वा वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मेस्टन रोड कानपुर का ११२वा वार्षिकोत्सव मन्दिर प्रागण एव श्रद्धानन्द पार्क मे शिवरात्रि के पावन पर्व पर २८ फरवरी से २ मार्च तक समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि १७ नवम्बर, १८७७ को स्थापित इस मन्दिर मे शिवरात्रि को ही वार्षिकोत्सव होता आ रहा है।

समारोह मे सर्वश्री प्रो० रत्नसिह जी एम० एस० सी०, प्रो० उत्तमचन्द शरर कु० महिपाल सिह, प० आशानन्द, डा० वेदपाल सिह, प० देवीप्रसाद आर्य आदि पधार रहे हैं।

यज्ञशाला का उदघाटन व वार्षिकोत्सव कार्यक्रम

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी, नई दिल्ली की नव निर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन समारोह रविवार १९ जनवरी को सम्पन्न होगा।

महात्मा रामकिशोर जी वैद्य के ब्रह्मत्व मे १९ जनवरी से १६ फरवरी तक प्रात व साय चतुर्वेद पारायण महायज्ञ होगा। १२ फरवरी से १५ फरवरी तक प्रतिदिन साय आचार्य पुरुषोत्तम जी एव डा० महेश चन्द्र विद्यालकार के मनोहर वेद कथा तथा गीताचार्य श्री गुलाबसिह राघव के भजनोपदेश होगे।

१६ फरवरी को वार्षिकोत्सव के अवसर पर यज्ञ को पूर्णाहुति ध्वजारोहण एव प्रो० रत्नसिह, सासद उमा भारती, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल आदि के उद्बोधन होगे।

आर्य समाज डा० मुखर्जी नगर (ईस्ट)

आर्य समाज डा० मुखर्जी नगर (ईस्ट), दिल्ली-९, द्वारा पजाब से आये विस्थापितो एव उत्तरकाशी भूकम्प पीडितो को वस्त्रादि से सहायता प्रदान की गयी। इस आर्य समाज की स्थापना आचार्य रविदत्त गौतम की प्रेरणा व श्री ठाकुरदास जी सपडा के प्रयासो से २ अक्तूबर, १९९० को डा० मुखर्जी नगर में हुई थी। ३ मार्च १९९१ को वेद प्रचार के एक विशेष कार्यक्रम मे यज्ञ, पडित गुलाब सिह राघव के भजन आचार्य यशपाल सुधाशु जी के प्रवचन हुए और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन प्रधान डा० धर्मपाल ने उद्बोधन द्वारा मार्ग-दर्शन किया। समारोह के अध्यक्ष महाशय रामविलास खुराना ने ५१०० रुपये की राशि भवन निर्माण हेतु दान दी।

उल्लेखनीय है कि इन्दिरा विहार, भाई परमानन्द कालोनी, ढका गाव निरकारी कालोनी, धीरपुर, गाधी विहार, सन्त नगर, इन्दिरा विकास कालोनी, गोपालपुर, नेहरू विहार आदि ११ कालोनियो मे कोई भी आर्य समाज मन्दिर नही है। अत डा० मुखर्जी नगर समाज के अधिकारी वेद प्रचार कार्य के लिए भूखड प्राप्ति, समाज सत्सग भवन औषधालय, पुस्तकालय व वाचनालय, व्यायाम-शाला आदि के निर्माण हेतु आर्य जनता से मुक्त हाथ से दान देने की अपील करते है।

सेवा में—

2367 श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उ प्र)

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस पटोदी हाउस दरियागज नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली ११०००१ फोन ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी०(सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५, अंक १२ रविवार, २६ जनवरी, १९९२ विक्रमी सम्वत् २०४८ दयानन्दाब्द १६६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक—२५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

बौद्धिक जगत् को एक महान क्षति : पं० पृथ्वीराज का निधन

१५ जनवरी, दिल्ली



दिल्ली के प्रसिद्ध समाज सेवी और चारो वेदो के प्रकाण्ड विद्वान प० पृथ्वीराज शास्त्री का १४ जनवरी को ७३ वर्ष की आयु मे कालरा नर्सिगहोम मे निधन हो गया है। निधन से एक घण्टा पूर्व ही सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और वरिष्ठ उप प्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी उनसे मिले थे। उस समय वह बहुत अच्छे थे और अच्छी तरह बातचीत कर रहे थे।

शास्त्री जी के निधन से आर्य समाज को गहरा आघात पहुचा है। वह कई वर्षों से सार्वदेशिक सभा के अधिकारी भी थे। इस समय वह अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ के महामन्त्री थे। लगभग १४ वर्ष पूर्व सभा के भूतपूर्व मन्त्री स्व० श्री ओमप्रकाश जी त्यागी की प्रेरणा पर शास्त्री जी ने रिजर्व बैंक की सेवा से मुक्त होने पर आर्य समाज के लिए जीवनदान देना स्वीकार किया था। तब से शास्त्री जी ने नागालैण्ड के दीमापुर, आसाम के बोकाजान, डीफू, झोपडाजान, मध्य प्रदेश के झाबुआ रतलाम और राजस्थान के बांसवाडा और कुशलगढ मे कई स्थानो पर दयानन्द सेवाश्रम सघ के केन्द्रो का सचालन करके उन्हे स्वावलम्बी बनाने का प्रयत्न किया था। शास्त्री जी को यज्ञ, दक्षिणा तथा भेंट आदि के रूप मे जो भी राशि उन्हे मिलती थी, वह सब आर्य समाज को अर्पित कर देते थे।

शास्त्री जी वैदिक सिद्धातों के मर्मज्ञ, यज्ञ प्रिय, स्वाध्यायशील, अनुशासन प्रिय, व्यवहार कुशल, मृदुभाषी और शान्त तथा गम्भीर प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उन्होने दैनिक सन्ध्या से ब्रह्मयात्रा और सन्ध्या-यज्ञ और आर्य समाज का परिचय नामक दो आध्यात्मिक ग्रन्थों की रचना की थी।

१५ जनवरी को प्रात काल रानीबाग स्थित, शवदाहगृह मे उनका अन्तिम सस्कार किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, दक्षिण भारत के आर्य नेता प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव तथा आर्य समाजों व अनेक सस्थाओ की ओर से भारी सख्या मे लोगों ने दिवगत को अन्तिम श्रद्धाजलि अर्पित की।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे रानी बाग मे १७ जनवरी को एक शोक सभा हुई। श्रद्धाजलि सभा मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल, वैदिक विद्वान प० यशपाल सुधासु, डा० महेश विद्यालकार, श्री प्रेमचन्द श्रीधर, श्री जैमिनी शास्त्री एव अनेक सभाओ व समाजो के अधिकारियो ने श्री शास्त्री जी को भावभीनि श्रद्धाजलि अर्पित की।

मृदुभाषी, शात, गम्भीर दिवगत श्री पृथ्वीराज शास्त्री को शत शत प्रणाम।

कर्मयोगी पं० पृथ्वीराज शास्त्री की स्मृति को प्रणाम

श्रद्धेय श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री आज हमारे बीच मे नही हैं। उनका असमय ही उठ जाना आर्य जगत की ही नही अपितु बौद्धिक जगत की भी महान क्षति है। उन्हीं की प्रेरणा से मुझे आर्य समाज मे आकर उनके साथ कार्य करने का गौरव प्राप्त हुआ है। स्व० शास्त्री जी आर्य समाज मे अपने पदार्पण की कहानी बताते हुए कहते थे—१९५४ मे जब उन्होने रानीबाग (शकूरबस्ती) दिल्ली मे अपने निवास की व्यवस्था की थी तो यहा पर आर्य समाज की स्थापना स्व० प० देवीदयाल जी के प्रयत्नो से हो चुकी थी। शास्त्री जी आर्य समाज के कार्य कलापो तथा गतिविधियो से अनभिज्ञ होते हुए भी आर्य समाज के सदस्य बन गए और यथाशीघ्र सक्रिय रूप से प्रवचन आदि करके अपनी विद्वता से सबको प्रभावित करने लग गए। उसके कुछ समय बाद स्व० देवीदयाल जी ने श्री शास्त्री जी को ही आर्य समाज रानीबाग की बागडोर सभाल दी। शास्त्री जी ने आर्य समाज की पद्धतियो को न जानते हुए भी उनके अनुरोध को आदर के साथ स्वीकार कर लिया। जैसा कि शास्त्री जी बताया करते थे कि उनके मन मे ग्लानि उत्पन्न होती थी वह आर्य समाज के सिद्धातो के बारे मे कुछ जानते ही नही तो सचालन किस प्रकार करेगे। परन्तु प्रभु कृपा और ऋषि के आशीर्वाद से उन्होंने सिद्धातो के अध्ययन के साथ साथ वेदो, उपनिषदो आदि ग्रन्थो का भी गूढ अध्ययन किया और उनमें पारगता प्राप्त की।

आर्य समाज के कार्य के साथ साथ स्व० पृथ्वीराज शास्त्री जी ने अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम सघ की बागडोर ऐसे समय में अपने हाथ मे ली जब सघ के सामने विकट वित्तीय और विरोधियो के षडयन्त्र थे। सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री स्व० ओमप्रकाश त्यागी की प्रेरणा और अनुरोध पर स्व० शास्त्री जी ने सघ के कार्य को हाथ मे लिया था। जिस समय अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम आर्थिक दबावो से घिरा हुआ था, यह शास्त्री जी की ही शक्ति थी कि उन्होंने न केवल सघ को इस स्थिति से उबारा अपितु सघ के लिए कई लाख रुपयो का स्थिर कोष भी बना गए हैं, ताकि भविष्य मे सघ की गतिविधियो मे किसी प्रकार की रुकावट न आने पावे। उन्होने अपने समस्त कार्यक्रमों से जो भी दान, दक्षिणा आदि उन्हे मिली सब सघ के कोष में जमा कराते रहे। किराया वह अपनी जेब से ही देते थे।

शास्त्री जी ने आर्य समाज के रचनात्मक कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान किया है। बाढ पीडितो मे सेवा कार्य हो, अथवा सूखा पीडितो मे, वह इनके लिए सदैव शक्ति और साधन जुटाते रहे। ईसाई प्रचार को रोकने के लिए उन्ही के प्रयासो से मध्य प्रदेश के रतलाम तथा झाबुआ क्षेत्रो मे इस समय कई बालवाडिया चलाई जा रही हैं। जिनका सचालन उनकी समाज सेवी धर्म पत्नी माता प्रेमलता जी कर रही है। माता प्रेमलता जी सदैव समाज के कार्यों मे शास्त्री जी को प्रेरणा देती रही है। हम परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना करते हैं, स्व० शास्त्री जी के कार्यों को पूर्ण करने की उनको शक्ति देवे।

—वेदव्रत मेहता

सम्पादक—प्रो० सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

त्याग और श्रद्धा का अनुपम उदाहरण

—गजानन्द आर्य

इस बार परोपकारिणी सभा के ऋषि मेले पर एक ऐसे व्यक्ति के दर्शन हुए जिनके त्याग और श्रद्धा के स्वरूप को जानकर मैं आदर से नत-मस्तक हो गया। प० आशानन्द भजनीक की चर्चा करना चाहता हू। ९१ वर्षीय इस वृद्ध भजनोपदेशक मे आज भी ऋषिभक्ति का सागर उमड पडता था जब अपनी बुलन्द आवाज मे श्रोताओ को ऋषि जीवनी की पवित्र धारा मे स्नान कराते थे। उनकी मस्ती मे बकलोपन की बू नही थी बल्कि बडा पवित्र लगा वह व्यक्ति जब उनको ऋषि उद्यान की ऊबड-खाबड और काटे भरी भूमि में नगे पाव घूमते देखा। मैंने उनसे नगे पाव चलने का कारण पूछा तब मेरी ऋषि भक्ति बहुत छोटा लगने लगी कहने लगे बेटा! इस भूमि पर मेरे ऋषि की अस्थिया बिखरी पडी है, अत इस पर जूते पहन कर चलना मुझे अच्छा नही लगता। श्रद्धा से ओतप्रोत यह भावना सचमुच मे त्याग सिखाती है। ऋषि के गीत गा-गाकर, जीवन को तपस्वी व मितव्ययी बनाकर इस मानव ने एक लाख रुपयो की पूजी एकत्र की। इस पूजी को भी समर्पित कर दिया ऋषि की उत्तराधिकारिणी सभा को। इदन्नमम के उदाहरण से आहुति देने वाले हम आप लोग जरा कल्पना तो करे इस त्याग की।

सभा को प्राप्त इस सात्विक दान से ऋषि उद्यान का प्रवेश द्वार निर्मित होगा। प्रवेशद्वार निर्माण की परिकल्पना तथा प० आशानन्द जी को सभा के दान के लिए दान की प्रेरणा में सभा के प्रधान श्रद्धेय स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का महत्त्वपूर्ण योगदान है। द्वार की भव्यता के लिए स्वामीजी महाराज की विशेष रुचि है। निश्चय ही प्रवेश द्वार सुन्दर बनाया जायेगा। किन्तु सुन्दर बनाने मे एक लाख रुपये राशि पर्याप्त नहीं है। कुछ और धन इस कार्य के लिए जुटाना होगा। इस के लिए धन जुटाना बहुत अधिक कठिन नहीं है। जहा धनी-मानी सज्जनो से उद्यान मे कमरे बनाने के लिए आश्वासन मिला है, वहा द्वार निर्माण में भी सहयोग मिल सकते हैं। किन्तु हम चाहते हैं कि प० आशानन्द जी जैसे त्यागी, तपस्वी, श्रद्धालुजनो की पवित्र कमाई का अंशदान द्वार निर्माण के लिए मिल जाए ताकि महाभारत के नेवले की तरह हमारा यह द्वार आधा ही स्वर्णिम न होकर पूरा सुनहरा लगे।

दृष्टान्त : सर्वोत्तम यज्ञ का—

महाभारत के चक्रवर्ती सम्राट् महाराज युधिष्ठिर ने एक राजसूय यज्ञ किया। वह बृहद् यज्ञ सम्भवत उस समय अनुपम था। देश-देशान्तरो मे उस यज्ञ की बहुत चर्चा थी। यज्ञकर्ताओ को अपनी दानशीलता पर अभिमान न आ जाय इसके लिए एक कहानी महाभारत मे आती है—

एक नेवला था। उसका आधा अग सुनहरा था और आधा बदरग था। महाभारत के यज्ञ से कीचड भरी मिट्टी मे वह नेवला लोटपोट हो रहा था। किसी ने इस नेवले से लोटपोट होने का कारण पूछा। नेवले ने उत्तर दिया कि मैं एक यज्ञ मैं लोटपोट होकर आया हू वहा का कीचड इतना कम था कि पूरे शरीर मे नही लग सका किन्तु जितना चिपटा उतना यह शरीर सुनहरा हो गया है। बल्कि मेरा यह आधा शरीर ज्यो का त्यो है। उस जैसी यज्ञीय मिट्टी की तलाश में मैं यहां आया था सुना था बहुत बडा यज्ञ हुआ है अवश्य ही मैं सुनहरा हो जाऊगा। किन्तु ऐसा कुछ नही हुआ।

पूछने वाले ने आश्चर्य चकित होकर महाभारत से भी महान् यज्ञ को जानने की इच्छा व्यक्त की, तब नेवले ने बताया—किसी गाव मे एक निर्धन ब्राह्मण परिवार रहता था। कई-कई दिन तक भरपेट भोजन की व्यवस्था इस परिवार को नही होती। ब्राह्मण ब्राह्मणी और एक पुत्र और पुत्रवधू चार प्राणियो के इस परिवार को एक दिन कुछ भोजन प्राप्त हुआ। हाथ मुह धोकर यह परिवार भोजनार्थ बैठा ही था कि एक अतिथि आ पहुचा। भूखे अतिथि के सत्कार मे ब्राह्मण ने अपना भोजन अतिथि देवता को समर्पित कर दिया। भूखे अतिथि की भूख शान्त न होने पर ब्राह्मणी ने अपना अश अतिथि को भेंट कर दिया। अतिथि फिर भी भूखा रहा तब छोटे से ब्राह्मण पुत्र और पुत्रवधू ने भी अपना हिस्सा समर्पित कर दिया। अतिथि की भूख शान्त हुई। आशीर्वाद देकर विदा हुआ। बहुत दिनो से भूखा ब्राह्मण परिवार जल आचमन करके सो गया। अतिथि और आतिथेय द्वारा गीली जमीन पर मैं जब लोटा तब मेरा यह शरीर सोने जैसा हो गया। बाकी का यह शरीर उस जैसे सर्वत्यागी यज्ञ की धूलि से ही सुनहरा बनेगा। यह किसी ने बताया है और मैं उस यज्ञ की तलाश में घूमता फिरता रहता हू।

सर्वत्यागी यज्ञ की तुलना मे महाभारत का वह बृहद् यज्ञ छोटा प्रतीत होने लगा। —मन्त्री श्रीमती परोपकारिणी, सभा अजमेर,

प्रभु भक्ति की महत्ता

—नारायण दास नागपाल

परमपिता परमेश्वर को कई नामो से पुकारा जाता है। परमपिता परमेश्वर के सैकडो नाम हैं परन्तु प्रमुख वैदिक नाम 'ओ३म्' है यानि कि परमात्मा। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने निम्न नामो से सम्बोधित किया है जो कि इस प्रकार है—ईश्वर, सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार सर्व-शक्तिमान, न्यायकारी, दयालु अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्याम अजर अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। आर्य समाज की मान्यता है कि उसी की उपासना करनी योग्य है। प्रभु तो प्रकाश स्वरूप भी है और सूर्य देवता ने सारा प्रकाश फैला रखा है। सूर्य अपने प्रकाश किरणों से प्रकृति पर कृपा किये हुए हैं और अपनी किरणो की कृपा से सबको सुख प्रदान करते हैं। यह कभी नहीं देखते कि दुष्ट पर कृपा नहीं करनी है, लगातार करते रहते हैं, कभी कोई अवकाश नही करते, कभी भी आकस्मिक अवकाश या अर्जित अवकाश नही लेते हैं, अपने काम मे कभी भी शिथिलता नही लाते। हमे भी ज्ञान का प्रकाश फैलाना चाहिए और लगातार कार्यरत रहना चाहिए और कभी भी कर्म की चोरी नही करनी चाहिए।

जैसा कि ऊपर बताया गया है ईश्वर तो सच्चिदानन्द स्वरूप है आनन्द के देने वाले है, सर्व शक्तिमान हैं, न्यायकारी हैं, दयालु हैं, सब पर दया करने वाले हैं, अजन्मा है, अनादि है, सृष्टि के आरम्भ से ही हैं, अनन्त है, कभी उनका अन्त नहीं होता। अनुपम हैं, उनसे किसी की तुलना नहीं की जा सकती है निर्विकार हैं, विकार से रहित हैं, सर्वाधार हैं कि सबके आधार वही हैं, आकाश, पृथ्वी, पाताल, नदी, नाले, वन-सम्पदा, वायु, पानी आदि सबके वही आधार हैं। सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी हैं, सबकी दिल की बात जानते है सर्वव्यापक हैं, सब जगह व्याप्त है अजर हैं, कभी बीमार नही पडते हैं वह तो अमर हैं। वह तो अभय है, किसी का उनको कोई भय नही। नित्य है वह सृष्टिकर्ता हैं, उत्पादक हैं, प्रकाशक, इसलिए तो श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने अपनी गुरुवानी मे बताया है कि 'अष्ट पहर निर्मित रहू गुरु चरणो की ओर।'

जब हमारा मन ध्यान प्रभु की तरफ रहेगा तो परमपिता परमेश्वर जरूर हमारे ऊपर कृपा की वर्षा करेंगे क्योंकि वह तो दाता हैं विधाता है कृपालु हैं, दुख भजक है। परन्तु प्रभु के ध्यानमात्र से काम बनने वाला नही। भक्ति ध्यान के साथ साथ पुरुषार्थ परिश्रम करना पडेगा घोर परिश्रम। काम मे पूरी लग्न, क्योंकि धर्म को कर्म मे उडेलना पडेगा।

एक बहुत बडा रोग, दोष हमने अपने मन में पाल रखा है। वह है नफरत का दोष, नफरत का कूडा करकट और आपस मे बदले की भावना का गन्दा कूडा करकट, जब तक हम इस गन्दगी (नफरत) को उठाकर बाहर नहीं फेंकते और बदले की भावना का गन्दा विचार बाहर नही निकाल फेंकते, कल्याण होने वाला नहीं। कलह क्लेश होता रहेगा, मन को शान्ति नहीं मिलेगी और मन परेशान रहेगा चिन्ता सताती रहेगी केवल एक मिनट के लिए जब हम नफरत, बदले की भावना का भूत, नीच विचार बाहर फेंक देंगे अनुभव करके देख लें असीम शान्ति अनुभव होगा। दोनों पक्ष खुश हो जायेंगे और सब भेद भाव मिट जायेंगे बिगडे काम सुलभ हो जायेंगे चिन्ता मुक्त महसूस करेंगे, महसूस करने लग जायेंगे। लेकिन दुख की बात यह है कि नफरत को हमने अपने अन्दर स्थाई रूप से बैठा रखा है। उसको भगाने का, फेंकने का भूलने का कोई भी प्रबन्ध नहीं किया और परेशान रहते हैं। न ही कभी समर्पण करके देखा न ही भूलना सीखा, बस केवल नफरत को पकडे हुए हैं।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

साप्ताहिक ओ३म् आर्य सन्देश

भारत एक स्वतन्त्र राष्ट्र है :

सम्पादकीय

भारत एक स्वतन्त्र राष्ट्र है। यह स्वाधीनता हमने दीर्घकालीन संघर्ष के बाद प्राप्त की है। स्वाधीनता आन्दोलन मे निश्चय ही आर्य समाज का भी सक्रिय एवं उल्लेखनीय योगदान रहा है। आज भी किसी भी आर्य समाज का वार्षिकोत्सव 'राष्ट्र रक्षा सम्मेलन' के बिना अधूरा ही रहता है। हमारा राष्ट्र गणतन्त्रात्मक है। २६ जनवरी १६५ को हमने अपना स्वयं का संविधान अपने ऊपर लागू किया था। प्रति वर्ष राष्ट्रपति भवन से लेकर लालकिला मैदान तक गणतन्त्र दिवस परेड का भी आयोजन किया जाता है। लालकिला हमारी राष्ट्रीयता का प्रतीक है। यह एक महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे स्वाधीनता सेनानी सदैव यही व्रत लिया करते थे कि लालकिले पर स्वतन्त्र राष्ट्र का ध्वज फहरायेंगे। प्रति वर्ष यहीं पर प्रधानमन्त्री राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं तथा राष्ट्र के नाम अपना सन्देश देते हैं। किसी भी महान व्यक्ति का नागरिक अभिनन्दन करना हो, यहीं पर किया जाता है। यहां तक कि महत्वपूर्ण व्यक्तियों के ऊपर अभियोग की अदालती कार्यवाही भी यहीं पर होती रही है, अस्तु। राष्ट्रपति भवन से चली यह परेड सम्पूर्ण राष्ट्र को स्वाधीनता का सन्देश देती है तथा हमे एकता एवं अखण्डता के मन्त्र को अपनाने के लिए प्रेरणा देती है।

हम अपने राष्ट्र को किस प्रकार उन्नत बनायें। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद मे राष्ट्र को ऊंचा उठाने के लिए भी आदेश प्राप्य हैं।

श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्त ऋते श्रिता ।। (अथर्व—१२।५।१)

प्रभु मनुष्य मात्र को आज्ञा देते है कि तुम सब सदा श्रम से (श्रमेण) तथा तपस्या से धर्म पालन और संयम से (तपसा) संयुक्त रहो (सृष्टा) परम विश्वास और विज्ञान से भी उन्नत होते हुए (ब्रह्मणा), पक्षपात रहित और न्याय पूर्वक (ऋते), धनादि भोग पदार्थों की प्राप्ति में (वित्ते), सदा चलने वाले बने रहो (श्रिता)।

इस वेद मन्त्र मे राष्ट्रोत्थान का मूल मन्त्र समझाया गया है। मानव समाज की वास्तविक उन्नति और सुख-शान्ति की प्राप्ति मनुष्य मात्र को तदनुरूप आचरण करने से प्राप्त हो सकती है। राष्ट्र केवल ईट गारे का नहीं होता, यह तो मनुष्यों के समूह का होता है। राष्ट्र के तीन प्रमुख तत्व हैं—भूभाग, जन और संस्कृति। ये तीनों ही निश्चय ही मनुष्य पर आधारित है। वहाँ के वासी ही अपने भूभाग और संस्कृति की रक्षा करते हुए, अपने राष्ट्र को समुन्नत करेंगे। अतः मनुष्यों का निर्माण एवं उत्थान ही राष्ट्रत्व की भी प्रथम एवं महत्वपूर्ण अनिवार्यता है।

इस वेद मन्त्र मे सबसे पहली बात कही गई है कि राष्ट्रत्व के उत्थान के लिए मनुष्य परिश्रमी हो। उद्यमेनैव हि सिध्यन्ति कर्माणि नतु मनोरथैः। जिस देश के लोग उद्यम एवं परिश्रम से कतरायेंगे, वह देश सदा ही पिछड़ा हुआ रहेगा। हमारा राष्ट्र स्वतन्त्र है। होना तो यह चाहिए था कि सभी लोग उद्यमी और परिश्रमी होकर राष्ट्र निर्माण मे जुट जाते, पर यहां ऐसा हुआ नहीं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् लोग कर्त्तव्य को भूल गए और अपने अधिकारों के लिए लड़ने लगे। सभी वेतन और भत्ते बढ़वाना चाहते हैं। काम कोई नहीं करना चाहता। कार्यालय का समय प्रातः ६- बजे से ५ बजे। आयेंगे ११ बजे और जायेंगे पन्द्रह मिनट पहले। स्वतन्त्रता का यही अर्थ लिया गया है। यजुर्वेद का एक अन्य मन्त्र हमारा सहायक है—'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः' मनुष्य कर्म करता हुआ सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे। यहां पर इच्छा होती है कि बिना कर्म किए ही, सभी सुख सुविधाएं मिल जाएं। अधिकांश लोग आज बीमार हैं, क्योंकि वे कर्म नहीं करना चाहते। इस गणतन्त्र दिवस पर हमें प्रण करना चाहिए कि हम सतत परिश्रम करेंगे। यदि हम पुरुषार्थी होंगे तो निश्चय ही हमे सफलता भी मिलेगी।

इस मन्त्र के दूसरे भाग मे यह कहा गया है कि मनुष्य को तपस्वी होना चाहिए। तप की अनेक परिभाषाएं हैं, पर उन सभी का मूल भाव यह है कि हम सभी परिस्थितियों मे सद्भाव अपनाएं। भगवान श्री कृष्ण का समत्व का उपदेश भी यही बात कहता है। सुख दुख, सर्दी गर्मी, हानि-लाभ। अनुकूलता मे हम विचलित न हों। जय-पराजय मे हम समान भाव रखते हुए, अपने कर्म से विरक्त न हो। आज कल चाणक्य सीरियल चल रहा है। चाणक्य ने भी यही कहा है—तप सार इन्द्रिय निग्रह—तपस्या का सार जितेन्द्रियता है। जो जितेन्द्रिय है, वही अपने उद्देश्यों एवं आदर्शों के अनुरूप कार्य कर सकेगा। जो प्रलोभनों के वशीभूत हो जाएगा, वह अपने कर्त्तव्यों से विमुख हो जाएगा और वह अपने अन्तिम अभीष्ट को प्राप्त नहीं कर सकेगा। वे ही नागरिक राष्ट्र को उन्नत करते हैं, जो कर्त्तव्य विमुख नहीं होते। अनेक वीर राजपूतों की कहानियां हमने पढ़ी हैं जो राष्ट्र के ऊपर विपत्ति आने पर विवाह की वेदी से उठ कर युद्ध भूमि मे चले गये।

इस मन्त्र मे तीसरे क्रम मे ब्राह्मण' कार्य करने की बात कही गई है। इस से तात्पर्य है कि सभी नागरिक आस्तिक हो वे परमात्मा मे विश्वास रखें। जो जानता है कि किए कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है वही दुष्कर्मों से दूर रह सकता है। भ्रष्टाचार राष्ट्र को पतन के गहरे गर्त में गिराता है। जो आस्तिक हैं जो कर्म फल सिद्धान्त मे विश्वास करते हैं वे ही पाप से विरक्त हो सकते है। अतः राष्ट्र की उन्नति के लिए आस्तिक होना ही चाहिए।

इस मन्त्र की चौथी बात है—वित्त ऋते श्रिता हम भोग्य पदार्थों का न्याय पूर्वक उपार्जन करें। हमारी कमाई ईमानदारी की होनी चाहिए। हमारी कमाई पसीने की होनी चाहिए। हम न्याय पूर्वक कमाएं तथा न्याय पूर्वक ही भोग करें।

आओ, हम गणतन्त्र दिवस पर प्रतिज्ञा करें कि हम उद्यमी, तपस्वी और आस्तिक बनेंगे तथा हम न्यायपूर्वक कमाई करेंगे तथा उसका उपयोग करेंगे। तभी हम राष्ट्र को समुन्नत कर सकेंगे। —डा० धर्मपाल

सम्पादक के नाम पत्र

—आचार्य रामदेव एवं स्वामी श्रद्धानन्द संयुक्तांक प्राप्त हुआ, धन्यवाद। अंक मे सामग्री तो अत्यधिक उपयोगी है ही साथ ही बाह्य कलेवर साज सज्जा भी चित्ताकर्षक है। यह भव्य अंक वस्तुतः प्रशंसनीय है। रामदेव जी के बारे मे पुष्कल सामग्री देने का अच्छा प्रयास किया गया है। स्वामी जी के बारे मे सामग्री कुछ कम है। इस प्रकार के अंकों का मर्मी पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। इसके लिए मेरी अनुशंसा स्वीकार करें। —रघुवीर वेदालंकार

—१ दिसम्बर के साप्ताहिक आर्य सन्देश मे छपा आपका 'आर्य समाज और दृश्य-श्रव्य साधन' बहुत ही आवश्यक व उपयुक्त है। जैसे 'शंकराचार्य' फिल्म संस्कृत मे बनी प्रथम फिल्म होने पर सर्वश्रेष्ठ फिल्मों मे गणना हुई वैसे ही यदि स्वामी दयानन्द सरस्वती पर भी कई फिल्में बनाई जाए तो वे पुरस्कृत हो सकती हैं। इस पर लगभग एक करोड़ रुपया खर्च हो सकता है। इस फिल्म को सभी भारतीय भाषाओं मे डब करना होगा। इसके बाद फिर स्वामी श्रद्धानन्द पर फिल्म बनाई जानी चाहिए। छोटी छोटी वीडियो फिल्में महात्मा हंसराज, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी आदि पर भी बनाई जा सकती हैं।

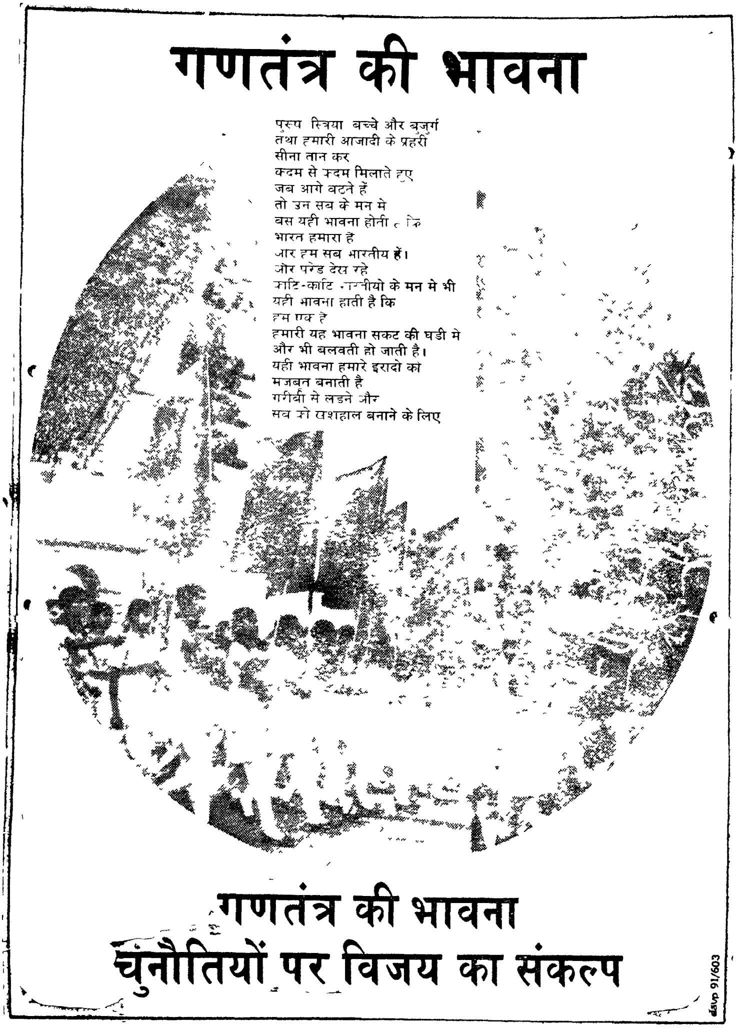
गंगा प्रसाद विद्यार्थी, एम ए पी एच डी
१७५, जय नगर, जबलपुर, म० प्र०

सम्पादक जी सादर नमस्ते।

आर्य संदेश के अंकों मे नयापन व निखार आता जा रहा है। आप बहुत परिश्रम से इसका सम्पादन कर रहे है। सम्पादक मंडल को मेरी हार्दिक बधाई।

यदि स्वास्थ्य, बच्चों, महिलाओं आदि पर कुछ नये नियमित कालम शुरू कर सकें तो मेरे विचार से अच्छा रहेगा। अविनाश कपूर,

बी-१/७४, डी डी ए फ्लैट्स, ईस्ट आफ कैलाश


गणतंत्र की भावना
पुरुष स्त्रिया बच्चे और बुजुर्ग
तथा हमारी आजादी के प्रहरी
सीना तान कर
कदम से कदम मिलाते हुए
जब आगे बढ़ते हैं
तो उन सब के मन मे
बस यही भावना होती है कि
भारत हमारा है
और हम सब भारतीय हैं।
और परेड देख रहे
कोटि-कोटि भारतीयो के मन मे भी
यही भावना होती है कि
हम एक हैं
हमारी यह भावना संकट की घडी मे
और भी बलवती हो जाती है।
यही भावना हमारे इरादो को
मजबूत बनाती है
गरीबी से लड़ने और
सब को खुशहाल बनाने के लिए
गणतंत्र की भावना
चुनौतियों पर विजय का संकल्प
davp 91/603

एम. बी. बी. एस. की प्रवेश परीक्षा के लिए हिन्दी माध्यम को स्वीकृति

इस वर्ष से अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान द्वारा सचालित सस्थान की एम० बी०बी० एस० की होने वाली प्रवेश परीक्षा अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी माध्यम से भी दी जा सकेगी।

अखिल भारतीय भाषा सरक्षण सगठन के अनुसार केन्द्रीय स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मन्त्रालय ने इस आशय की जानकारी एक पत्र में दी है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान सस्थान की १९९२ की प्रवेश परीक्षा विवरणिका मे भी भी इसका उल्लेख है। ज्ञातव्य है कि भाषा सरक्षण सगठन सरकारी सेवाओ व परीक्षण सस्थाओ की प्रवेश परीक्षायें भारतीय भाषाओं मे कराने की माग को लेकर एक अर्से से आन्दोलन करता आ रहा है।

सगठन ने आगे कहा है कि आयुर्वेद सस्थान ने प्रवेश परीक्षा का माध्यम तो हिन्दी बना दिया है परन्तु हिन्दी भाषी क्षेत्र मे कही भी परीक्षा केन्द्र स्थापित नहीं किया है। साथ ही उन्होने यह माग भी दोहराई है कि प्रवेश परीक्षा के लिए अन्य भारतीय भाषाओं को भी माध्यम बनाया जाये।

हिन्दी ही राष्ट्र की आम भाषा बन सकती है

केन्द्रीय सूचना व प्रसारण मन्त्री श्री अजीत कुमार पाजा ने कहा कि हिन्दी ही मात्र एक ऐसी भाषा है जो भारत भर मे आसानी से बोली जा सकती है, एव समझी जा सकती है। अत हिन्दी ही राष्ट्र की आम भाषा बन सकती है। ये विचार श्री पाजा ने विगत दिनो २२वें तमिलनाडु हिन्दी प्रचारक व प्रसार सम्मेलन मे व्यक्त किए।

इस अवसर पर पूर्व सासद श्री रमन पलनिवाडि ने बताया कि आजकल तमिलनाडू के लगभग सभी लोग हिन्दी का अध्ययन कर रहे हैं और उत्तर भारत के लोगो से अच्छी हिन्दी बोलते हैं। यहा तक कि उत्तर वाले भी उनकी हिन्दी सुन कर हैरान हो जाते हैं।

सभा के प्रधान सचिव श्री ए० राम स्वामी ने कहा कि सभा पिछले दस वर्षों से निस्वार्थ हिन्दी प्रचारक तैयार कर रही है और सभी प्रचारक हिन्दी के प्रचार के लिए किसी भी तरह का कष्ट सहने को तैयार हैं।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास के उच्च शिक्षा व शोध सस्थान के सचिव श्री वि० एस० राधाकृष्णन ने कहा कि आज हिन्दी का विरोध राजनीतिज्ञो की वजह से ही है वास्तव मे हिन्दी तो देश की सस्कृति का प्रतीक है।

भारतीय स्टेट बैंक आफ बंगाल में हिन्दी राजभाषा थी

भारतीय स्टेट बैंक, राजभाषा विभाग, केन्द्रीय कार्यालय, बम्बई की पुरस्कृत निबन्ध सग्रह १९९०" मे निम्न समाचार प्रकाशित हुआ है—

"हिन्दी के राजभाषा बनने के बाद इसके प्रयोग सम्बन्धी अनेक नियम बने किन्तु विश्वास कीजिए कि सन् १८९६ मे बैंक आफ बगाल मे बोर्ड आफ डायरेक्टर्स ने एक प्रस्ताव पारित करके यह अनिवार्य कर दिया था कि बैंक के सभी कनिष्ठ अधिकारियों को हिन्दी की परीक्षा अनिवार्यत पास होना चाहिए।"

इसी पुस्तक मे बैंक आफ बगाल की जो मोहर छापी गई है उसमे हिन्दी मे भी बैंक का नाम है। इससे प्रतीत होता है कि जब अहिन्दी भाषी क्षेत्र बगाल में १८९६ मे ही बैंको मे हिन्दी का राजभाषा के रूप मे प्रयोग हो रहा था तब निश्चित रूप से उत्तर भारत के अन्य बैंको मे भी हिन्दी का प्रयोग हो रहा होगा।

संस्कृत एकता दिवस सम्पन्न

विश्व वेद परिवार सघ की ओर से राव मानसिंह पब्लिक स्कूल, नजफगढ़, नई दिल्ली मे १२ जनवरी को एकता दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राज्य शैक्षिक अनुसधान की उपसचिव श्रीमती शशि प्रभा ने की। छात्र-छात्राओ द्वारा श्लोकोच्चार एव सस्कृत भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी। प्रदेशीय अध्यक्ष प० कमल नयन शास्त्री ने इस अवसर पर बताया कि दिल्ली देहात के विद्यार्थी सस्कृत पढ़ने में विशेष रूचि ले रहे हैं।

अंग्रेजी अलगाव की भाषा

भारत में अनेक भाषाए बोली जाती हैं, उन भाषाओं के बीच मे अंग्रेजी कैसे सम्पर्क भाषा बन सकती है? क्या दिल्ली से हैदराबाद का रास्ता लन्दन से होकर गुजरता है? अंग्रेजी अलगाव पैदा करती है—जनता और नेता के बीच राजा और प्रजा के बीच। अंग्रेजी हटेगी तो उत्तर भारत के लोग भी दक्षिण की भाषाए सीखेंगे। हिन्दी को अंग्रेजी का स्थान लेना है, प्रादेशिक भाषाओ का स्थान नहीं। 'हिन्दी बढ़ेगी तो अन्य भारतीय भाषाए घटेंगी,' यह ठीक नहीं है। "हिन्दी बढ़ेगी तो अंग्रेजी घटेगी या हटेगी" यह ठीक है।

आलफस वास वेल, हालैंड

(भारतीय स्टेट बैंक, राजभाषा विभाग, केन्द्रीय कार्यालय, बम्बई के "पुरस्कृत निबन्ध सग्रह, १९९१" से साभार)।

जगन्नाथ सयोजक, राजभाषा कार्य
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद
एक्स वाई ६८, सरोजनी नगर, नई दिल्ली-२३

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल

मडल के तत्वावधान मे अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का ६५वा बलिदान दिवस आर्य समाज लोधी रोड (जोर बाग) नई दिल्ली मे ५ जनवरी को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री की अध्यक्षता मे अत्यन्त समारोह पूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर दैनिक वीर अर्जुन व प्रताप के प्रधान सम्पादक श्री के० नरेन्द्र, सासद श्री बैकुण्ठलाल शर्मा, सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री पूर्व सासद श्री विजय कुमार मल्होत्रा, श्री प्रेमचन्द श्रीधर, मोरिशस के आर्य नेता श्री हरि जी आदि ने युग पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा दलितोद्धार, शिक्षा, स्वाधीनता सग्राम, हिन्दु मुस्लिम सिख एकता आदि के बारे मे विभिन्न क्षेत्रों मे की बहुमूल्य सेवाओ का स्मरण कर उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। सभी वक्ताओ ने स्वामी जी के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन मे आर्यत्व लाने का अनुरोध किया। खचाखच भरे हाल के बाहर भी जनता सारा समय वक्ताओ के विचारो को शाति पूर्वक सुनती रही। समापन के बाद ऋषि लगर मे आय महानुभाव शामिल हुए। कार्यक्रम को सफल बनाने मे श्री रामशरण दास आर्य ने विशेष योगदान दिया। ज्ञातव्य है कि वेद प्रचार, आर्य पर्वो के आयोजन, राहत कार्य, निशुल्क साहित्य वितरण आदि में दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मडल उल्लेखनीय काम करता आ रहा है।

संस्कृत हिन्दी भाषण प्रतियोगिता

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी), भोला झाल, मेरठ के ब्रह्मचारी विद्यानन्द एव सत्यदेव ने २२-२३ दिसम्बर को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित सस्कृत-हिन्दी भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर चल विजयोपहार जीते।

आर्य वीर का निधन

जेठाराम जागिड (राजु) सुपुत्र श्री भवरलाल जागिड, उम्र १८ वर्ष, सुथारो का मगरा पूजला जोधपुर का २ जनवरी को तीव्र बुखार के कारण निधन हो गया। जोधपुर स्थित आर्य वीर दल का तीनो शाखाओं द्वारा दिवगत आर्य वीर श्री जेठाराम को श्रद्धाजलि दी गयी व शोक सतप्त परिवार को सवेदना सन्देश भेजे गए।

चुनाव समाचार

आर्य समाज मोडल बस्ती, शीदीपुरा, का दिनांक २२ दिसम्बर, ९१ को सम्पन्न हुए वार्षिक चुनाव मे प्रधान श्री चुन्नीलाल विज, उप-प्रधान श्री लाला इन्द्रराज सिंह, एव श्री जितेन्द्र आर्य, मन्त्री श्री अमरनाथ, कोषाध्यक्ष—श्री विजय दास, प्रचार मन्त्री—श्री जगदीश आर्य तथा लेखा निरीक्षक श्री जोगराज सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

—आर्य समाज बढेडी (नागल), सहारनपुर के २२ दिसम्बर को श्री भोलू सिंह की अध्यक्षता मे हुए निर्वाचन मे श्री चन्द किरण आर्य प्रधान, श्री विजय पाल आर्य मन्त्री, श्री धमपाल सिंह—उपमन्त्री, श्री पूर्ण सिंह कार्याध्यक्ष तथा ब० विनोद आर्य पुस्तकाध्यक्ष चुने गये।

श्रेष्ठ विरासत के धनी स्मृति शेष विजयकुमार

१९९१ का वर्ष जाते-जाते अपनी लपेट में प्रकाशन जगत के मूर्धन्य विजय कुमार को ६० वर्ष की आयु में हिन्दी पाठकों से दूर अनन्त में छीन ले गया (३० दिसम्बर)। वे पचास वर्ष से अधिक पुराने गोविन्दराम हासानन्द सुबोध पाकेट बुक्स और सर्वप्रिय प्रकाशन से जुड़े रहे और स्वत्वाधिकारी तथा वेदप्रकाश, सर्वप्रिय मासिक पत्रों के प्रकाशन में लगे रहे।

मैंने विजय कुमार जी को लगभग १५ वर्ष की आयु में उस समय देखा जब वे स्कूल में पढ़ रहे थे। अत्यन्त विनम्र और शान्त, गोविन्दराम हासानन्द दुकान पर वे यदा कदा अपने पिताजी के पास आते तभी भेंट होती और मैं उनकी पढ़ाई व भावी योजना के बारे में पूछताछ कर लेता। वह प्रियदर्शन अल्पभाषी थे। बड़े होने के साथ अपने पिता जी के व्यवसाय को वे सूक्ष्मता से देखते और काम में सहायता भी कर देते थे। बाद में पुस्तक प्रकाशन और विक्रय का कार्य उन्होंने बड़ी दक्षता से आगे बढ़ाया और अब अपने पुत्रों की सहायता से इस हेतु अनेक प्रतिष्ठानों का सचालन वे सफलतापूर्वक कर रहे थे।

पारिवारिक परम्परा प्रशस्त की इन पिछले वर्षों में श्री विजय कुमार का स्वास्थ्य बहुत पुष्ट नहीं रहता था। इस हेतु वे आवश्यक चिकित्सा जांच कराते भी रहते थे, परन्तु थकान की छाया उभरती हुई देखकर उनको काम हल्के करने के लिए मैं कहता रहता और वे उसे सहज गम्भीरता से सुन भर लेते थे। व्यवसाय परिवार व समाज के निर्माण में उनकी आस्था प्रयत्न बराबर चलते थे। अपना पारिवारिक उत्तरदायित्व अपनी बहनें बहनोई पुत्र पुत्री इन सभी को वे पूरा ध्यान यावज्जीवन देते रहे। अपनी बड़ी बहन सुभद्रा व बहनोई प्रो० नित्यानन्द पटेल के निधन एव माता का चला जाना उनमें अकेलापन जगाने लगा था। एक आर्य विद्वान् ने विश्वास अर्जित करके उनका निवास खाली न करके भी धक्का लगाया था। उनकी सज्जनता ने यह दण्ड भोगा।

मुझे गत वर्ष अपनी पुस्तक हैदराबाद (आ०स०) सत्याग्रह पर प्रामाणिक दस्तावेज के प्रकाशन में उन्होंने अपने सुझाव बराबर दिये। हाल ही में अपनी मूल प्रकाशन सस्था गोविन्दराम हासानन्द के सचालन को बन्द या कम करके नये व्यवसाय की ओर वे उन्मुख रहते थे। ऐसे में मैंने अपने पिता व दादा के नाम से जुड़े प्रतिष्ठान को उन्हें आगे बढ़ाते रहने की प्रेरणा दी थी। वसीयत के अनुसार स्वामी दयानन्द सरस्वतीकृत ग्रन्थों को प्रकाशित करने का अधिकार परोपकारिणी सभा अजमेर को था। सभा ने सत्यार्थप्रकाश का मूल्य कभी एक रुपये से कम नहीं किया था, जिससे प्रचार में बाधा होती थी। गोविन्दराम हासानन्द के मालिक गोविन्दराम जी ने बहुत व्यय करके १९३३ में दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर सत्यार्थ प्रकाश एव सस्कार विधि के सस्ते सस्करणों को प्रकाशित करके अभूतपूर्व काम किया था। बाल सत्यार्थ प्रकाश और चित्रमय दयानन्द जैसी नयनाभिराम रचनाएं इससे पूर्व कलकत्ता से प्रकाशित कर चुके थे। —ब्रह्मदत्त स्नातक

७०वा वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज कवारी (हिसार) का ७०वा वार्षिकोत्सव ३ से ५ जनवरी ९२ तक धूमधाम से मनाया गया। समारोह में स्वामी सर्वदानन्द जी प० रामस्वरूप जी ... आचार्या ... स्वतन्त्रता सेनानी भगत ... दास जी आर्य आदि ने गौ रक्षा हिन्दी वेद शिक्षा नारी शिक्षा मद्यपान, धूम्रपान आदि के सम्बन्ध में प्रेरक उद्बोधन द्वारा आर्य जगत् का मार्ग दर्शन किया।

इस अवसर पर आर्य भजनोपदेशक प० चिरजीलाल तथा प० ... जी का प्रधान श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने शाल ओढ़ाकर व वैदिक साहित्य भेंट कर सम्मानित किया। भयानक सर्दी के बावजूद गांव व आसपास के क्षेत्रों के नर नारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

टकारा चलो

ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर १, २ व ३ मार्च ९२ को महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म-भूमि टंकारा के लिए आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से २८ फरवरी को अपराह्न ३.०० बजे बस चलेगी। किराया प्रति व्यक्ति ७८५ रु० है। उदयपुर द्वारका व ओखा पोरबन्दर चित्तौड़गढ़ माऊंट आबू, अजमेर के दर्शनीय स्थानों को देखते हुए ७ मार्च रात्रि दिल्ली वापिसी है। इच्छुक आर्य बन्धु मन्दिर मार्ग आर्य समाज दूरभाष ३४३७१८ ३१२११० अथवा श्री रामचन्द्र आर्य ४६६ माल ... गुड़गांव से सम्पर्क करें।

तिजारा में विद्वद्गोष्ठी

वैदिकाश्रम तिजारा, अलवर राजस्थान में २ फरवरी को एक विशाल विद्वद्गोष्ठी आयोजित की जा रही है। राजार्य सभा व अखिल भारतीय गो रक्षा राष्ट्र-रक्षा सघर्ष समिति के अध्यक्ष आचार्य सत्यप्रिय के सयोजकत्व में हो रही इस गोष्ठी का विषय है—आर्य समाज और गो राष्ट्र उन्नयार्थ ससार के श्रेष्ठ पुरुषो एक हो जाओ। दिल्ली से तिजारा बस हर घण्टे बाद जाती है।

आर्य समाज पीपाड़ नगर (राजस्थान)

राजस्थान आर्य वीर दल का प्रान्तीय स्तर का शिविर २२ दिसम्बर से ३० दिसम्बर ९१ तक पीपाड़ शहर जोधपुर में सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक डा० देवव्रत आचार्य के नेतृत्व में आयोजित किया गया। इस नौ दिवसीय शिविर में प्रान्त के २० जिलों के १३५ आर्यवीरों को शारीरिक बौद्धिक व आध्यात्मिक उन्नति का प्रशिक्षण दिया गया। उल्लेखनीय है कि शिविर में ३५ से अधिक आर्यवीर सरकारी सेवा में व्याख्यानदाता, अध्यापक इन्जीनियर या स्नातक आदि उच्च शिक्षित थे।

२८ दिसम्बर को डा० देवव्रत आचार्य की अध्यक्षता में आर्यवीर दल की एक आवश्यक बैठक हुई। २९ दिसम्बर को सम्पन्न हुए आर्य वीर महासम्मेलन में दल के निवर्तमान प्रधान सचालक प० बाल दिवाकर जी हस का अभिनन्दन किया गया।

आर्य समाज पीपाड नगर के ६६वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर शहर में एक भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। जिसका सचालन स्वामी दीक्षानन्द जी ने किया। ३० दिसम्बर को समापन समारोह में आर्य वीरों ने लाठी, भाला, पी टी, आसन मलखम्भ आदि का शानदार सामूहिक प्रदर्शन किया गया। आधुनिक भीम उदयवीर आर्य ने प्राणयाम व योग शक्ति के द्वारा पीतल की थाली को हाथ से चीर, लोहे की मोटी सकल को कमर से तोड तथा १६ हॉर्स पावर की कार को रोक कर आश्चर्यजनक करतबों द्वारा हजारों दर्शकों को हैरत में डाल दिया।

वीर पर्वोत्सव

आर्यवीर दल बेल्पुरा रोड का वीर पर्वोत्सव २९ दिसम्बर, ९१ को धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का सचालन ब्र० नरेन्द्र लाल आर्य ने किया। बौद्धिकाध्यक्ष श्री रामाज्ञा पुत्र, समाज के प्रधान श्री देवव्रत आदि ने आर्यवीरों का मार्ग दर्शन किया।

आर्य समाज द्वारा चाणक्य सीरियल पर प्रतिबन्ध का विरोध

कानपुर। आर्य समाज गोविन्द नगर के तत्वावधान में आयोजित सभा में भारत सरकार द्वारा चाणक्य सीरियल के प्रस्तावित प्रतिबन्ध का प्रबल विरोध किया गया। प्रस्ताव में कहा गया कि भगवा ध्वज तथा हर हर महादेव के नारे से इसलिए भयभीत हो रही है क्योंकि सरकार मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति को अपना रही है। यद्यपि टीपू सुल्तान सीरियल में अल्लाह अकबर के नारों तथा हरे ध्वज को स्वीकृति दी गई थी।

प्रस्ताव में सरकार से माग की गई है कि चाणक्य सीरियल पर प्रतिबन्ध लगाने के इरादे को छोड दे। सभा की अध्यक्षता आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने की तथा सर्वश्री जातिभूषण, शुभकुमार वोहरा, श्रीमती दर्शना कपूर आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

शराबबन्दी अभियान

आर्य समाज के वयोवृद्ध सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने दिन-प्रतिदिन शराब से बढती सामाजिक बुराई पर चिन्ता प्रकट करते हुए सरकार व जनता को सचेत किया है कि यदि प्रदेश में नशा ... गई तो हरियाणा की वैदिक सस्कृति व आर्थिक ढांचा नष्ट हो जाएगा ... नशाबन्दी करनी आवश्यक है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, शराब छोड़ो शिविरों का आयोजन कर रही है। इसमें शराब पीने वाले जो शराब छोड़ना चाहते हैं, उनके लिए निःशुल्क भोजन, आवास तथा दवाइयां उपलब्ध कराई जायेंगी। दयानन्द मठ, रोहतक में पहले शिविर के बाद जिला भिवानी में भी ऐसे शिविर लगाये जायगे।

दयानन्द कालेज में एक करोड़ की शारीरिक शिक्षा आरम्भ करने हेतु हाईकोर्ट का राज्य सरकार को आदेश

दयानन्द कालेज अजमेर के निदेशक आचार्य दत्तात्रेय बाव्ले द्वारा प्रस्तुत एक याचिका स्वीकार करते हुए राजस्थान हाईकोर्ट ने तारीख ९ जनवरी १९९२ को राज्य सरकार को आदेश दिया है कि इस महाविद्यालय मे शारीरिक शिक्षा में डिग्री पाठयक्रम प्रारम्भ करने के लिए दिया गया जो आवेदन लम्बे समय से विचाराधीन है उसे अपनी सहमति सहित अजमेर विश्वविद्यालय को दो महीने के अन्दर अग्रेषित कर द साथ ही अजमेर विश्वविद्यालय को भी यह आदेश दिया गया है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने दयान द कालेज को लगभग एक करोड़ रुपए का अनुदान स्वीकार करके जो पाठयक्रम प्रारम्भ करने की स्वीकृति दी है उसे मान्यता प्रदान करें।

यह उल्लेखनीय है कि अभी तक राजस्थान म पी० टी० आई० अर्थात् व्यायाम शिक्षको के लिए केवल छ माह का सर्टिफिकेट या डिप्लोमा पाठयक्रम ही उपलब्ध है जिसका सचालन भी महाविद्यालय या विश्वविद्यालय द्वारा न होकर शिक्षा विभाग द्वारा किया जाता है जबकि अनुदान आयोग द्वारा तीन वर्ष का यह डिग्री पाठयक्रम बिना किसी आर्थिक भार क राज्य के एक प्रमुख और पुराने कालेज को प्रस्तुत किया जा रहा था जिसके परिणामस्वरूप यहा के नवयुवकों के लिए अधिक ऊचे पदो पर सेवा के नये अवसर उपलब्ध होते जिसका राज्य सरकार को स्वागत करना चाहिए था कि तु अनेक स्मरण पत्रो तथा स्वय मुख्य मन्त्री महोदय के आश्वासनो के उपरा त भी वाछित स्वीकृति प्राप्त नही हो सकी। परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दयान द महाविद्यालय को दी जाने वाली यह बडी राशि खटाई मे पडने की आशका उत्प न हो गई थी अत विवश होकर उपरोक्त तथ्यो के आधार पर महाविद्यालय को न्यायालय की शरण लेनी पडी।

आचार्य गोवि दसिह
सयुक्त मन्त्री आर्य समाज अजमेर

पृष्ठ २ का शेष)

इन सबका इलाज निदान तब होगा जब हम अपने प्रभु से बातचीत करेंगे अपना सखा स्वामी समझकर अपनी बात उसके सामने रखेंगे अर्थात् उससे कृपा की याचना करगे। उसकी उपासना स्तुति प्राथना करेंगे। उपासना के माने है प्रभु के पास जाना पास बैठना। अपनी कडी मेहनत शुद्ध मन के साथ क्योंकि स त कबीर ने भी कहा है कि भक्ति आत्मिक होती है और कम किये बिना गति नही होती।

भगवान् के सर्वव्यापक रूप को हमेशा हमे अपने सामने रखना होगा क्योंकि जब हम यह सोचत हैं कि भगवान् सर्वव्यापक हैं तो हम किसी भी प्रकार के पाप करन मे बचे रहेंगे और परमात्मा का सामिप्य भी अनुभव करते रहेंगे। यजुर्वेद का मह म त्र गायत्री मन्त्र भी यह चेतावनी देत है ऐ मानव सावधान! प्रभु सर्वव्यापक है तुम ग दे अशुभ विचार अपन अन्दर मत जाने दो। जैसे कि ओ३म् भू हैं सब जगह व्याप्त हैं प्र णप्रिय है। गायत्री म त्र के उच्चारण करते ही मन म यह विचार आ जाता है और प्रभु की स्तुति करते हुए उ हे हम भू के नाम से पुकारते हैं इस प्रकार भगवान् की भक्ति भी हो जाती है परमात्मा तो त्रिलोकी नाथ हैं जगदीश्वर हैं

ऋग्वेद क बहुत सु दर म त्र है जिसमे प मे वर को ज तवेदस नाम से पुकारा गया है जिसके अर्थ है सब कुछ जानने वाला जातवेदसे फिर प्रभु अन्तर्यामी तो हैं ही वह विश्वपति हैं। शरण मे आ के तो देखो! प्रभू का एक नाम कल्याण करने वाला है। स त तुलसीदास जी अपने महाकाव्य रामचरित मानस मे भी ऐसी ही प्राथना प्रभु के चरणो मे बड ही श्रद्धाभाव से करते हुए कहत हैं—

रघुवर राखो मेरी लाज प्रभवर तुमको मेरी लाज,
सदा सदा मैं चरण तुम्हारी तुम हो मेरी लाज
तुम हो गरीब नवाज तुम हो मेरी लाज।
द स पर कृपा करियो भक्ति दान दियो उपहार।
शरण में हे नाथ बार बार प्राथना की है
सुमरिन कर ले हे मना तरी जाती उमर भक्ति बिना।

इसलिए मेरा यह विचार है कि अकर्मण्यता को भगाकर श्रम करते हुए प्रभु चि तन मे हमेशा लीन रहे।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R.N No 32387/77 Posted at N D P S O. on 23 24-1-1992 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डा० (एल-११०२४/९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) १३९/९१
साप्ताहिक "आर्यसन्देश २६ जनवरी, १९९२

लेखको से निवेदन

—सामयिक लेख त्योहारो व पर्वो से सम्बन्धित रचनायें कृपया अंक प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवाय।

—आर्य समाजो आर्य शिक्षण सस्थाओ आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमों के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

—सभी रचनाये अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री डबल स्पेस मे टाइप की हुई अथवा कागज के एक ओर साफ साफ लिखी होनी चाहिए।

—अस्पष्ट लिखी अथवा देर से प्राप्त सामग्री का उपयोग करना सम्भव न हो सकेगा।

—पता बदलने अथवा गलत या अधूरा पता होने की स्थिति मे ग्राहक सख्या उल्लेख करते हुए पिन कोड नम्बर का भी उल्लेख अवश्य करें।

—आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ६५ रुपए तथा आजीवन शुल्क २५० रुपये है। आजीवन ग्राहक बनने वालों को ५० रुपए मूल्य के आर्य सन्देश के पुराने विशेषांक नि शुल्क उपहार स्वरूप दिए जायेंगे। स्टाक सीमित है।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

—सभी पाठको के सुझाव व प्रतिक्रिया आमन्त्रित हैं।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

—सम्पादक

श्री वन्देमातरम् द्वारा पंजाब के शरणार्थी कैम्पों का दौरा

१५ जनवरी १९९२ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव तथा सार्वदेशिक न्याय सभा के सयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट ने लाल किले के पीछे स्थित उन कैम्पो का दौरा किया जिनमें पंजाब से पलायन करके आये लगभग ५०० परिवार रह रहे हैं। श्री वन्देमातरम् ने इस दौरे के दौरान यह महसूस किया कि इनके लिए राशन व्यवस्था सरकार की तरफ से कराए जाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए।

इसी परिप्रेक्ष्य मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव तथा श्री विमल वधावन ने १६ जनवरी को केन्द्रीय खाद्य एव आपूर्ति मन्त्री श्री कमालुद्दीन अहमद से भेंट करके उन्हें पंजाब से पलायन करके आये हुए परिवारों की समस्याओं से अवगत कराया। इन नेताओ के कहने पर केन्द्रीय मन्त्री ने दिल्ली प्रशासन के मुख्य सचिव को यह आदेश जारी किया कि लालकिले के पीछे कैम्पो में रह रहे लगभग ५०० परिवारो के लिए तत्काल राशन आदि उपलब्ध कराया जाय। इसके लिए श्री कमालुद्दीन अहमद द्वारा अपने आदेश में यह भी कहा गया है कि समस्त परिवारो के फूड कार्ड (अस्थाई राशन कार्ड) भी तुरन्त बनाये जायें।

उल्लेखनीय है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा पहले भी दो बार इन परिवारों के लिए कुछ दिनों के लिये राशन की व्यवस्था की गई थी। अब तक इन शरणार्थियों की राशन व्यवस्था का प्रबन्ध सामाजिक सस्थाओ और दानी महानुभावो के सहयोग से ही होता रहा है।

—मन्त्री-सभा

सेवा में—

2367 श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ प्र)

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी०(एल०-११०२४/९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५, अंक १३ | रविवार, २ फरवरी, १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

धारावाहिक चाणक्य प्राचीन संस्कृति का प्रतीक है, इसे बन्द नहीं होने दिया जायेगा

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

रविवार को दूरदर्शन पर दिखाये जा रहे लोकप्रिय धारावाहिक 'चाणक्य' को ५२ के स्थान पर २६ कड़ियों में समेटने के आदेश डा० चन्द्रप्रकाश द्विवेदी को दूरदर्शन की तरफ से मिल चुके है। डा० द्विवेदी इस धारावाहिक के लेखक-निदेशक हैं। साथ ही भगवे झंडे, हर हर महादेव के नारे, शान्ति पाठ व वैदिक ऋचाओं के उच्चारण, गुरुकुलों के दृश्यों के फिल्मांकन पर भी आपत्ति की गई है। इसीलिए डा० द्विवेदी को मजबूरन १३वें एपिसोड से ही काट-छांट करनी पड़ी है जबकि उन्होंने शुरू में ही ३३ एपिसोड का स्क्रिप्ट जब दूरदर्शन को प्रस्तुत की थी तो उसमें हर छोटी से छोटी बात का भी उल्लेख कर दिया था। दूरदर्शन ने इस पर स्वीकृति दे दी थी। इन तथ्यों की पुष्टि 'राष्ट्रीय सहारा' में २४ जनवरी तथा 'जनसत्ता' में २५ जनवरी को डा० द्विवेदी के प्रकाशित साक्षात्कारों से होती है।

भगवे ध्वज के बारे में चाणक्य के सहायक कास्ट्यूम्स डिजाइनर का कहना है कि काला रंग मातम का प्रतीक है, हरा रंग पाकिस्तान की ओर संकेत करता है और पीला रंग रोग का चिन्ह है यदि झंडे में लाल रंग का प्रयोग किया जाता तो चाणक्य पर साम्यवाद का आरोप लगता। इसलिए इतिहास व परम्परा का निर्वाह करते हुए भगवे रंग का प्रयोग किया गया है। डा० द्विवेदी ने तो यह भी बताया कि प्रमाणिकता से हटकर भगवे झंडे के दृश्यों को काटना पड़ा और बाद में तो पताका शब्द तक का प्रयोग बन्द कर दिया।

हर हर महादेव के नारे के प्रयोग के बारे में निदेशक डा० चन्द्रप्रकाश का कहना है कि यह नारा तो अन्य कई धारावाहिकों में भी प्रयुक्त हुआ है। जहां तक शान्ति पाठ, ओम तमसो मा सद्गमय आदि का प्रश्न है, इन्हें केवल इसलिए गलत नहीं माना जा सकता है कि वे वैदिक काल के हैं। डा० द्विवेदी का कथन है कि मानवता की बात करना हिन्दुत्व को बढ़ावा देना नहीं है। गुरुकुलों के बारे में लेखक निदेशक का कहना है कि आज भी ब्रह्मचारी छात्रों में मुण्डन परम्परा देखी जा सकती है।

चाणक्य धारावाहिक के 'हिम द्रि तु [illegible] प्रबुद्ध शुद्ध भारती [illegible] गीत को सैंसर द्वारा काटा जा चुका है। यह [illegible] यशस्कर प्रसाद द्वारा रचित चन्द्रगुप्त नाटक का प्रमाण गीत है। डा० द्विवेदी का कहना है कि यदि दूरदर्शन को किसी भी बात पर आपत्ति थी तो उन्हें प्रारम्भ में अर्थात् अप्रैल मई ९१ में ही बता दिया जाता।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती का इस संदर्भ में कहना है कि वस्तुतः धारावाहिक चाणक्य स्वाधीन भारत की प्राचीन संस्कृति व अस्मिता का प्रतीक है। हर हर महादेव का नारा तो भारतीय सेना का जंगी नारा रहा है। पाकिस्तान से युद्ध में सेना ने इसका प्रयोग किया था। अंग्रेजों के समय में भी सेना यह नारा लगाती थी और आज भी इसका प्रयोग करती है। इस नारे से सेना में जोश आता है और इसमें कुछ भी गलत नहीं है। भगवा ध्वज त्याग, बलिदान आदि का प्रतीक है। शान्ति पाठ आदि वेदों की ऋचायें हैं जो ईश्वरीय ज्ञान है और वेद प्रेम, शान्ति, भाईचारे व मानवता का सन्देश देते हैं। गुरुकुल के बारे में स्वामी जी का कहना है कि ये प्राचीन भारतीय संस्कृति के गौरवशाली प्रतीक हैं। अतः इस लोकप्रिय धारावाहिक में काट-छांट व इसे कम करना सहन नहीं किया जाएगा। इस बारे में आगे की नीति तय की जाएगी।

उल्लेखनीय है कि १९ जनवरी को पहले ही आर्य समाज दीवान हाल में दिल्ली की विभिन्न धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं की एक आवश्यक बैठक इस पर विचार विमर्श के लिए हुई थी। बैठक में सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित हुआ –

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता में आर्य समाज दीवान हाल में आज (१९ जनवरी) को राजधानी के अनेक धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के प्रमुख अधिकारियों की बैठक में यह जोरदार मांग की गई कि दूरदर्शन पर दिखाये जा रहे लोकप्रिय धारावाहिक 'चाणक्य' की सम्पूर्ण ५२ कड़ियों को बिना काट छांट के प्रसारित किया जाए। यदि इसकी पूर्व निर्धारित कड़ियों को दूरदर्शन पर कम करके दिखाया गया तो इसकी देशव्यापी प्रतिक्रिया होगी। हठधर्मी से यदि दूरदर्शन ने कतिपय कड़ियों को काटने का दुःसाहस किया तो राजधानी में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण देश में प्रचण्ड आन्दोलन से उत्पन्न होने वाली किसी भी स्थिति की पूरी जिम्मेदारी केन्द्र सरकार और सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय की होगी।"

ज्ञातव्य है कि इस बैठक में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, अखिल भारतीय सनातन धर्म सभा, अखिल भारतीय हिन्दू महासभा, सनातन धर्म महासभा (दिल्ली), आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली प्रान्तीय आर्य महिला सभा, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ, वृज-समिति आदि संस्थाओं के अधिकारियों ने भाग लिया था। इनमें सर्वश्री रम [illegible] त गोस्वामी, प्रेमचन्द गुप्त सूर्यदेव महाशय धर्मपाल, डा० शिवकुमार शास्त्री, डा० धर्मपाल, श्रीमती कृष्णा चड्ढा, श्री रामसिंह सांसद, श्री शिवसरन जी प्रधान, अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के श्री विमल कान्त शर्मा, मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

लाल चौक पर जोशी जी ने तिरंगा फहराया

२६ जनवरी। ४३वें गणतन्त्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति श्री आर वेंकटरामन ने परम्परागत हर्षोल्लास के बीच राजपथ पर जहां राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया और परेड की सलामी ली वहां दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री मुरली मनोहर जोशी ने आज श्रीनगर के लाल चौक पर कड़ी सुरक्षा के बीच वह तिरंगा ध्वज फहराया जो उन्हें कन्याकुमारी में शहीद अब्दुल हमीद के बेटे और राजगुरु व भगतसिंह के परिवार ने ४६ दिन पूर्व ११ दिसम्बर, ९१ को सौंपा था। प्रातः लगभग ८.१० बजे जब श्री जोशी राष्ट्रीय ध्वज फहरा रहे थे तो आतंकवादी हवा में गोली चला रहे थे और ऐसा लग रहा था कि वे तिरंगे को सलामी दे रहे हों। कर्फ्यू, सुरक्षा आदि के कारण उस समय कुछ पत्रकारों सहित लगभग १०० भाजपा नेता ही उपस्थित थे। 'वन्दे मातरम्' व भारत माता की जय के नारों से लाल चौक गूंज उठा और सुरक्षा बलों ने भी जयघोष [illegible]। ध्वजारोहण के बाद श्री जोशी ने कहा कि कश्मीर भारत की एकता का [illegible] है और दुनिया की कोई ताकत उसे नहीं छीन सकती है।

[illegible] तीन दिन पूर्व सुरक्षा व्यवस्था के लिए [illegible] [illegible] गया था और आतंकवादी रात भर [illegible] [illegible] रहते [illegible] [illegible] कुछ समय पूर्व उन्होंने तीन [illegible] रॉकेट छोड़े परन्तु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नुकसान नहीं हुआ। [illegible] २० मिनट [illegible] कार्यक्रम [illegible] श्री जोशी व अन्य लोग हवाई जहाज द्वारा जम्मू लौट आए।

सम्पादक—प्रो० सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

सन्ध्या—एक चिन्तन

—देव नारायण भारद्वाज

आर्य सन्देश के इस अंक से श्री देवनारायण भारद्वाज की 'सन्ध्या पथ' लेखमाला प्रारम्भ की जा रही है। विद्वान लेखक ने स्वामी समर्पणानन्द, पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय, महात्मा नारायण स्वामी आदि विद्वानों के साहित्य के स्वाध्याय एवं स्वयं के स्वतन्त्र चिन्तन के बाद यह लेख तैयार किया है। प्रथम कड़ी में आप पढ़ेंगे—'सन्ध्या एक चिन्तन'।

—सम्पादक

वैदिक जीवन पद्धति में पंच महायज्ञों का पालन अनिवार्य है। उनमें से सर्वप्रथम महायज्ञ को ब्रह्मयज्ञ कहते हैं। यज्ञ आयोजन में अग्नि समिधा और हवि की आवश्यकता होती है। हृदय रूपी समिधा में प्रज्वलित अग्नि परम ब्रह्मरूपी अग्नि में आत्मारूपी हवि की आहुति-अर्पण ही ब्रह्म यज्ञ है। इसी प्रकार शास्त्ररूपी समिधा से प्रकट शब्द ब्रह्मरूपी अग्नि में बुद्धिरूपी हवि की आहुति अर्पण भी ब्रह्म यज्ञ है अर्थात् शब्द ब्रह्म को पकड़कर परमब्रह्म तक पहुंचने की सारी प्रणाली ब्रह्म-यज्ञ है। अधिक स्पष्टता की दृष्टि से कहा जा सकता है कि स्वाध्याय और सन्ध्या दोनों ही ब्रह्मयज्ञ के अन्तर्गत आते हैं। सन्ध्या शब्द किन्हीं दो वस्तुओं में सन्धि या एकता होना भी इंगित करता है। पुस्तकों के शब्दों में संचित ज्ञान राशि से हमारी बुद्धि की सन्धि होना जहां एक ओर स्वाध्याय है, वहीं समस्त ज्ञान के स्रोत परमपिता परमात्मा से आत्मा की सन्धि होना सन्ध्या कहलाता है। सन्ध्या कब होती है जब दिन चलते-चलते रात्रि के समीप आ जाता है, उससे मिलने लगता है—वे ही मनोरम क्षण सन्ध्या कहलाते हैं। इसी प्रकार जब रात्रि बढ़ते बढ़ते दिवस की ओर पहुंचने लगती है, इसी मिलन को भी सन्ध्या कहते हैं।

सायंकालीन सन्ध्या, सन्ध्या ही रह जाती है, क्योंकि उसके उपरान्त अंधेरा घिरने लगता है, जबकि प्रातःकालीन सन्ध्या को एक दूसरा चमकता नाम मिल जाता है, उषा, क्योंकि अन्धकार सिमटकर प्रकाश के लिए मार्ग प्रशस्त कर देता है। इन दोनों ही अवसरों पर लगभग एक समान ही मनोहारी रमणीक दृश्य दिखाई देने लगते हैं। सूर्योदय के समय जो दिनकर अपनी अरुणिम आभा से प्रकट होता है, सूर्यास्त के समय भी वह अरुणिम आभा के साथ विदाई लेता है। दोनों ही समय की अरुणाभ तरंगें सम्पूर्ण प्रकृति को जहां सौंदर्य प्रदान कर देती हैं वहीं उसे शान्ति सौम्यता का वरदान भी दे देती हैं। प्रकृति ही क्या प्राणी मात्र मानव, पशु पक्षी, वृक्ष वनस्पति सभी अपने अन्तस्तल में विश्रान्ति और शान्ति का अनुभव करते हैं। इसलिए यह सन्धि काल आत्मा का परमात्मा में विलय के लिए आत्म-परमात्म मिलन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होता है। मानव के हृदय स्थल में परमात्मा-आत्मा सदैव मिलते रहते हैं प्रत्युत परमात्मा की गोद में आत्मा अथवा आत्मा के सूक्ष्म कलेवर में परमात्मा के अति सूक्ष्म अस्तित्व का प्रकाश होता है। आवश्यकता इस मिलन की अनुभूति की है। इसी अनुभूति का माध्यम सन्ध्या है।

'सन्ध्या, अपने शाब्दिक परिवेश में सम्यक् ध्यान की ओर संकेत करती है। अपने हृदय में स्थित आत्मा में सन्निविष्ट परमात्मा का ध्यान करना ही सन्ध्या है। अपने शरीर के अंग-प्रत्यंग का ध्यान सृष्टि के अंग-उपांग का ध्यान, प्राणी-मात्र के संग एवं ढंग का ध्यान करते हुए अपने सम्पूर्ण ध्यान को इन सबके निर्माता विधाता प्रभु पर केन्द्रित करना ही सम्यक् ध्यान है। कोई भी आस्तिक मानव ज्ञान, कर्म और उपासना की जिक्र के बिना नहीं रह सकता है। उसे यह तीनों किसी न किसी रूप में करने ही पड़ते हैं। आत्मा की सन्धि ज्ञान से हो जाये, ज्ञान कर्म मिलकर उग्र उदण्ड न हो जाए, इसीलिए इनकी सन्धि भी उपासना से हो जाए—यही तो सन्ध्या है। स्वाध्याय केवल अध्ययन मात्र न रह जाये पुस्तकीय ज्ञान मात्र न रह जाये। इसमें 'स्व' का अध्ययन भी हो। यह 'स्व' जो सृष्टि से लेता है, केवल लेता ही नहीं, देता भी है सृष्टि को, यह 'स्व' समाज से लेता है, केवल लेता ही नहीं, इसे कुछ देना भी है। समाज के इस सबका अध्ययन हो तो स्वाध्याय है। 'स्व' की सृष्टि समाज से सन्धि और 'स्व' की 'सर्वस्व' प्रभु से सन्धि हो तो सही रूप में सन्ध्या है।

सृष्टि में 'सब' है किन्तु उसमें तेजस्व कहां है? 'तेजस्व' तो सर्वस्व' में ही है। इसी 'सर्व' के सहारे से 'स्व' का 'सर्वस्व' में विलीनीकरण ही सन्ध्या है। सर्वस्व में ही तेजस्व है, तेजस्व में ही वर्चस्व है, यही तेज एवं वर्चस्व का कृतित्व में ढल जाना ही सन्ध्या का सुफल है। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में हमें ऐसी ही दिशा दृष्टि मिलती है।

> यन्मनसा ध्यायति तद्वाचा वदति, यद्वाचा वदति तत् कर्मणा करोति,
> यत् कर्मणा करोति तदभिसम्पद्यते ॥

जीव जिसका मन से ध्यान करता है, उसको वाणी से बोलता है, जिसको वाणी से बोलता है, उसको कर्म से करता है, जिसको कर्म से करता है उसी को प्राप्त होता है। 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' यह तैत्तिरीयोपनिषद का वचन है। जो पदार्थ है उनको सत कहते हैं उनमें साधु होने से परमेश्वर का नाम 'सत्य' है। जो जानने वाला है, इससे परमेश्वर का नाम ज्ञान है। जिसका अन्त अवधि मर्यादा अर्थात् इतना लम्बा चौड़ा, छोटा बड़ा ऐसा परिमाण नहीं है इसलिए परमेश्वर के नाम सत्, ज्ञान और अनन्त है। यही ब्रह्म है और इसी में आत्मा को मिलन सन्ध्या है। लोहा अग्नि में पड़कर न केवल रंग रूप में अग्नि सदृश हो जाता है प्रत्युत उसमें अग्नि की ऊष्मा एवं ऊर्जा भी तो आ जाती है। यह लौह पुरुष उस अग्नि पुरुष से मिलकर ऐसी ही एकरूपता स्थापित कर लेता है

> यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वाघा स्या अहम्।
> स्युष्टे सत्या इहाशिषः । ऋ० ८, ४४, २३ ॥

हे (अग्ने) प्रकाश स्वरूप (तत् अहम् त्वं स्याम्) जब मैं तू हो जाऊं (वाघ) अथवा (त्वं अहं स्या) तू मैं हो जाये तो (ते इह आशिषः) तेरे इस संसार के वे सब आशीर्वाद (सत्या स्युः) सत्य सफल हो जायें।

स्वयं अध्ययन करना ही स्वाध्याय है इन्द्रिय संयम, चित्त की एकाग्रता बुद्धि वृद्धि, लोकोपकार तथा यश प्राप्ति आदि जीवन की सफलता के सभी सूत्र इस स्वाध्याय से जुड़ जाते हैं। सूर्य का गमनागमन चन्द्रमा का अनुक्रमण नक्षत्रों का परिक्रमण, सरिताओं का प्रवहन जिस प्रकार नित्य नियमित चलता है, उसी प्रकार स्वाध्याय नित्य नियमित निश्चित रूपेण चलना चाहिए। इसके लिए कोई एक सद्ग्रन्थ ही नहीं, उसके एक शब्द का चिन्तन भी कम नहीं है। स्वाध्याय से भव और शर्व दोनों की समझ आती है। अपने 'स्व' को दोनों की ही आवश्यकता है।

> नमः सायं नमः प्रातर्नमो रात्र्या नमो दिवा।
> भवाय च शर्वाय चोभाभ्यामकरं नमः ॥ अथर्व ११ २-१६ ॥

सायंकाल, प्रातःकाल की सन्ध्या स्वाध्याय से और रात्रि-दिन में इसके उपयोग से शर्व दुःख नाशक प्रभु और भव सुखदायक सृष्टि दोनों का हम सम्पादन करते हैं। पहले जो सबस्व का भव था—वह अब शर्व के रूप में मुखर हो उठा है। भव और शर्व-(शिव) दोनों मिलकर तो २४ घंटे चिन्तन का विषय हो सकते हैं, किन्तु कोई एक नहीं और शर्व तो बिल्कुल नहीं। जैसे प्रातः सायं थोड़ी-थोड़ी देर के लिए हम आहार करते हैं किन्तु उसका शरीर के लिए उपकार और समाज के लिए व्यवहार शेष समस्त समय के लिए चलता है, किन्तु हम निरन्तर २४ घंटे खाते ही रहें तो वह हमारे लिए संहार बन जाता है। स्वाध्याय सन्ध्या का अल्प-कालिक चिन्तन-मनन-ध्यान सम्पूर्ण रात्रि दिवस के आचार-व्यवहार का आधार बना रहता है, यदि हम उसे प्रयोग में न लाकर केवल चिन्तन ही करते रहे, तो यह भी हमारे लिए संहार का कारण बन सकता है। सन्ध्या-स्वाध्याय के इस ब्रह्मयज्ञ की तैयारी ब्रह्मचर्य के साथ ब्रह्ममुहूर्त में करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि ब्रह्म में विचरण के लिए शरीर को संयमित रखते हुए सूर्य के निकल आने पर हमें शर्व से भव के भण्डार की पालना भी तो करनी है। इस प्रकार समय न होने की कोई समस्या ही शेष नहीं रह सकेगी।

हम सन्ध्या से सम्यक रूपेण ध्यान लगाने चले हैं, फिर कोई बाधा भी तो नहीं आनी चाहिए। यही एक बाधा क्या कम है, जो हमारे शिर के केश बिखर रहे हैं तथा शिखर पर स्थित शिखा भी उछल कूद कर रही है। हमारी एक शिखा के मूल में सैंकड़ों बाल जुड़े रहते हैं, यह भी तो हमारे विचारों एवं भावनाओं के प्रतीक हैं यदि यही विचार अव्यवस्थित रहें तो हमारा सम्यक् ध्यान कहां सम्भव है। इसलिए गुरुमन्त्र गायत्री पढ़कर इन शिखा की शिखाओं को ग्रन्थित कर दो। शिर-शिखा के बाल गुंथ जाने पर जहां एक ओर व्यवस्था एवं सुन्दरता हमें प्रदान कर देते हैं, वहीं दूसरी ओर आन्तरिक शान्ति सम्पन्नता की ओर बढ़ने का संकेत भी हमें देते हैं। जिसके खल्वाट शिर पर इन बालों का हवाला नहीं है, उसे फिर ऊपर की क्या चिन्ता, पर आन्तरिक विचार-बन्धन तो उसके लिए भी आवश्यक है।

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

क्या श्रद्धानन्द को भी सम्मानित किया जाएगा ?



इस वर्ष श्री जे आर डी टाटा नेता जी सुभाष च द्र बोस और मौलाना अब्दुल कलाम आजादको राष्ट्र का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' प्रदान किया गया है। श्री टाटा एक सुप्रसिद्ध उद्योगपति हैं। बाकी दोनो स्वाधीनता सेनानियो को मरणोपरान्त यह सम्मान दिया गया है। निश्चय ही इन दोनो महानुभावो ने भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन मे सराहनीय भूमिका निभाई। उनके कर्त्तव्य की जनमानस के हृदय पर अमिट छाप पडी थी। मौलाना अब्दुल कलाम आजाद भारत के स्वतन्त्र होने के बाद कुछ समय तक जीवित रहे तथा स्वतन्त्र राष्ट्र के निर्माण मे उन्होने विशेष योगदान दिया, परन्तु नेता जी सुभाषचन्द्र ने आजाद भारत को नही देखा। वे भारत के स्वाधीनता प्राप्त करने के पहले ही कराल काल ने हम से छीन लिए। इन दोनो महान आत्माओ का यद्यपि अन्तिम लक्ष्य तो एक ही था परन्तु उनके काय करने के माग भिन्न थे बिलकुल भिन्न थे, कहिए कि एक दूसरे के विपरित थे। नेता जी ने स्वाधीनता प्राप्ति का वह मार्ग अपनाया जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्य प्रणाली से भिन्न था। नेता जी विद्रोही हो गए थे, और वे सच्चे अर्थों मे क्रातिकारी हो गए थे। पर चाहे उनकी काय प्रणाली की कितनी भी आलोचना की जाये, भविष्य की पीढिया उसे सदैव एक निर्भीक देश भक्त और अगुआ के रूप मे याद करेगी। उसी के नेतृत्व का यह सुपरिणाम था कि इण्डियन नेशनल आर्मी आइ० एन० ए० ने देश भक्ति और साहस का प्रदर्शन किया और जो त्याग किया, बलिदान दिया, उसके ऊपर हमारा राष्ट्र सदैव गव करता रहेगा।

नेता जी को कांग्रेस में घुटन महसूस हुई असुविधा की अनुभूति हुई, इस लिए उन्होने दूसरा माग अपनाया। जबकि मौलाना आजाद अन्त तक कांग्रेस मे बने रहे, पर यह निश्चित है कि वे भारत के विभाजन के लिए अपना को कभी भी तैयार नही कर पाये। उन्होने अपने आपको कभी माफ नही किया और अपने साथियो को भी कभी माफ नही किया। उन मुश्किल दिनो मे उन्हाने पार्टी का नेतृत्व किया और सत्ता के स्थानान्तरण मे सक्रिय एव महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

इसमें कोई दो राय नही हो सकती कि उन्हे सम्मानित क्यो किया गया या क्यो नही किया गया उनका कार्य सम्माननीय था पर यह निश्चय ही विचारणीय है कि आखिर इतने दिन बाद उन्हे क्यो सम्मानित किया गया। पिछले दिनों सरदार वल्लभभाई पटेल को यह सम्मान मरणोपरान्त दिया गया, श्री राजीव गांधी को भी मरणोपरान्त दिया गया। इससे कुछ पहले श्री बी० आर० अम्बेडकर को भी दिया गया था। खान अब्दुल गफ्फार खां को भी यह सम्मान दिया जा चुका है। निश्चय ही इस परम्परा से एक मार्ग तो खुल ही जाता है कि हम अपने उन पूर्वजो को भी यह सम्मान दे सकें जो बहुत पहले हो चुके हैं। सम्भवत किसी दिन राणाप्रताप, वीर शिवाजी, पृथ्वीराज चौहान, चन्द्रगुप्त और चाणक्य के नाम पर भी विचार किया जा सके। सम्भवत यह बात दूर की हो सकती है पर निश्चय ही बाल गगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, शहीद भगतसिंह लाला लाजपतराय, अरविन्द घोष, शहीद ऊधमसिंह कम्बोज हकीम अजमल खा, स्वामी श्रद्धानन्द आदि के नामों पर तो विचार किया ही जाना चाहिए जिन्होने आजादी की लडाई में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने महात्मा गांधी को अत्यधिक प्रभावित किया था। महात्मा गांधी अफ्रीका से लौटने के बाद उनसे मिलने गुरुकुल कांगडी गए थे। वे दिल्ली को श्रद्धानन्द की नगरी कहा करते थे। स्वामी श्रद्धानन्द दिल्ली के बेताज बादशाह थे। उन्होने अंग्रेज सिपाहियो की संगीनो के सामने घण्टाघर के पास अपना सीना खोल कर कहा था कि गोलियां यहा चलाओ और सैनिको की संगीनें झुक गई थी। यही स्वामी श्रद्धानन्द थे जिन्होने जामा मसजिद की मिम्बर से भाषण किया था। हिन्दू, मुसलमान, सिख सभी उनके अनुयायी थे। वे जातीय एव धार्मिक साम्प्रदायिक संकीर्णता से ऊपर थे। वे तो सबके लिए थे।

उन्होंने जलियां वाला बाग के ऐतिहासिक काण्ड के बाद अमृतसर में ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वार्षिक महाअधिवेशन को आयोजित करने मे विशिष्ट भूमिका निभाई थी। वे इस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष थे। प्रति वर्ष दूरदर्शन एव समाचार पत्रो में एक चित्र प्रसारित प्रकाशित होता है जिसमे मोतीलाल नेहरू, एनीबेसेन्ट मदनमोहन मालवीय, स्वामी श्रद्धानन्द आदि कुर्सियो पर बैठे है और प० जवाहरलाल नेहरू सामने जमीन पर बैठे हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम मे एक विशिष्ट राष्ट्रीय भूमिका निभाई थी। उन्हें राष्ट्र पुरुष का सम्मान मिलना ही चाहिए। यह सम्मान सारे राष्ट्र का सम्मान होगा।

—डा० धर्मपाल

सम्पादक के नाम पत्र

—आर्य सन्देश साप्ताहिक के सभी विशेषाक सुरक्षित रख रहा हू। स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस और आचार्य रामदेव संयुक्ताक' बहुत ही सुन्दर व आकर्षक है और सबसे बडी विशेषता यह है कि आपके विशेषाको से उन महापुरुषो की स्मृति जो धुधली पड रही होती है जाग जाती है और श्री प० इन्द्र विद्या-वाचस्पति, आचार्य रामदेव जैसे आदर्श पुरुषो के प्रति श्रद्धा-आदर और प्रेमोन्माद जागृत हो जाता है। उनका जीवन व काय, हमारी वास्तविक स्थिति का भी मोल करा देते हैं। इस अक मे प० क्षितीश वेदालंकार श्री रामनाथ जी आचार्य के प्रति उद्गार बहुत अच्छे लगे। डा० धमपाल के लेख भी प्रेरक होते है। आर्य समाज मे बहुमुखी प्रतिभा वाले वि. , लेखक धीरे धीरे कम होते जा रहे हैं, यह चिन्ता की बात है। क्या आर्य समाज इस कमी को पूरा करेगा ?

सुरेश वेदालकार,
एम १/६१, राप्ती नगर कालोनी, आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर २७३००१

—आर्य सन्देश का २२ दिसम्बर, ९१ का अक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एव आचार्य रामदेव संयुक्ताक प्राप्त हुआ। इस अक का कलेवर अत्यन्त चित्ताकर्षक होने के साथ-साथ भीतर के सभी लेख गुरुकुल कांगडी एव आर्य समाज सम्बन्धी ऐतिहासिक सामग्री पूर्ण एव ज्ञानवर्धक है। तदर्थ बधाई स्वीकार कर। भविष्य मे भी ऐसी उच्च स्तर की सामग्री देते रहेगे। ग्राहक शुल्क भेज रहा हू, प्राप्त होने पर स्वीकृति भेजियगा।

एक आर्य बन्धु
नाम—अस्पष्ट

आचार्य रामदेव स्मृति अंक ऐतिहासिक सामग्री संजोए है

आर्य सन्देश का स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान तथा आचार्य रामदेव स्मृति संयुक्ताक प्राप्त हुआ, धन्यवाद।

विशेषाको की परम्परा मे आर्य सन्देश ने एक और ऐतिहासिक सामग्री युक्त आकर्षक एव भव्य विशेषांक प्रदान कर अपनी परम्परा की अक्षुणता दी है। ऐसे विशेषाक आर्य जगत के लिए बहुत उपयोगी है। सम्पादक मण्डल को लाख २ बधाई।

यशपाल आर्य बन्धु
आर्य निवास चन्द्र नगर, मुरादनगर

—१९ जनवरी के अक मे स्वामी सहजानन्द जी पर श्री दिनेशचन्द्र शास्त्री का लेख नई पढी के लिए जानकारी पूर्ण है। इसमे उनके किसान आन्दोलन का इतिहास जोड कर उस काल के राजनैतिक अभ्युदय का चित्र समेटा जाना चाहिए। लेखक को बधाई।

नेता जी पर छात्र का लेख देकर नवयुवको के लिए खिडकी खुला है। दक्षिणी अफ्रीका का आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रथम प्रधान स्वामी भवानी दयाल संयासी की जन्म शती पर २-३ लेख देना, अच्छा रहेगा।

ब्रह्मदत्त स्नातक
सी-४ बी, ३३२ जनकपुरी, दिल्ली-५८

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस समारोह १२ फरवरी ९२ को मनाया जायेगा

उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा मुख्य अतिथि होंगे

दिल्ली २७ जनवरी। सार्वदेशिक सभा में जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि आर्यसमाज के संस्थापक और भारतीय सांस्कृतिक और सामाजिक उत्थान के अग्रदूत स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की ओर से आगामी १२ फरवरी १९९२ को नई दिल्ली के हिमाचल भवन के सभागार में सायंकाल ३ बजे से समारोह पूर्वक आयोजित किया जायेगा। समारोह की अध्यक्षता सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करेंगे और भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम डा० शंकरदयाल शर्मा इसके मुख्य अतिथि होंगे।

अनेक केन्द्रीय मन्त्री व सांसद भी इस अवसर पर महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करेंगे। सभी प्रान्तीय सभाएं भी महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस १२ फरवरी १९९२ को समारोह पूर्वक आयोजित करेंगी। सार्वदेशिक सभा से सभी प्रतिनिधि सभाओं और आर्य समाजों को तत्सम्बन्धी आदेश जारी किया जा चुका है।

—प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा

॥ ओ३म् ॥ दूरभाष ३४३७१८ ३१२११०

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला--राजकोट-३६३६५० (गुजरात), उप कार्यालय आर्य समाज, 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण

एवं

आर्थिक सहायता की अपील

मान्यवर सादर नमस्ते!

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव १ से ३ मार्च १९९२ तदनुसार रवि सोम मंगल को ऋषि जन्म स्थली टंकारा में भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर एक सप्ताह तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा। देश देशान्तर से पधारे ऋषि भक्त आर्य विद्वान तथा कलाकार इस सुअवसर पर ऋषि के चरणों में अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करेंगे इस वर्ष आर्य वानप्रस्थाश्रम के अध्यक्ष महात्मा आर्य भिक्षु जी आचार्य यशपाल सुधांशु एम ए आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार श्री ओमप्रकाश वर्मा भजनोपदेशक यमुना नगर पधार रहे हैं कन्या गुरुकुल वनौदा पोरबन्दर तथा जामनगर की कन्याएं टंकारा उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थी घ्रावकार दल ध्रागध्रा एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली तथा अन्य संस्थाओं के युवक समारोह में कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे। पधारने वालों के आवास भोजन का पूर्ण प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क होगा किन्तु बाहर से पधारने वाले सज्जन ऋतु अनुकूल अपने अपने बिस्तर अवश्य साथ लायें।

इस समय टंकारा ट्रस्ट के अधीन निम्न कार्य चल रहे हैं

(१) अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय (२) दिव्य दयानन्द दर्शन चित्रगृह
(३) आर्ष साहित्य प्रचार केन्द्र (४) गो संवर्धन केन्द्र (गौशाला)
(५) अतिथि गृह (६) वेद प्रचार
(७) पुस्तकालय तथा सार्वजनिक वाचनालय

ऋषि जन्म स्थली टंकारा में अभी और भी अनेक विशेष करणीय कार्य हैं जैसे ऋषि जन्म गृह के मुख्य भाग को अपने अधिकार में लेना टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा जन्म स्थली को दर्शनीय बनाना टंकारा ट्रस्ट के अधिकारी जनता जनार्दन के सहयोग से टंकारा उत्सव की सफलता टंकारा की संस्थाओं का विकास तथा अन्यान्य कठिनाइयों को दूर करने का प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं। इन सब कार्यों के लिए कम से कम ८ १० लाख रुपए की और आवश्यकता है।

टंकारा की गौशाला में आजकल २१ से अधिक गायें हैं इस गौशाला से विद्यार्थियों को शुद्ध दूध मिलता है। परन्तु हर वर्ष इस गौशाला में घाटा हो जाता है यह घाटा ऋषि भक्तों और गोभक्तों के दान से ही पूरा होता है।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि ऋषि बोधोत्सव पर अपने इष्ट मित्रों सहित टंकारा पधारिये और इस महान कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनिए। यह दान राशि आप क्रास चैक ड्राफ्ट अथवा मनिआर्डर से महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के नाम से इसके दिल्ली कार्यालय आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली १ के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

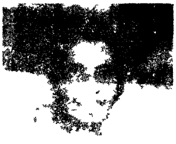
आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी ओर से अपनी आर्य समाज अपनी शिक्षण संस्था तथा अन्य सम्बन्धित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भेजकर ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बनिए।

विशेष सूचना—टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि पर आय कर की छूट है।

निवेदक —

ओंकारनाथ	**शान्ति प्रकाश बहल**	**रामनाथ सहगल**
मैनेजिंग ट्रस्टी	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री

श्री आदर्श कुमारी का दुःखद निधन



स्वनामधन्य श्रीमती आदर्श कुमारी का १६ जनवरी १९९२ को प्रात ७.३० बजे सर गंगाराम अस्पताल, नई दिल्ली में हृदय गति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया। वे ५८ वर्ष की थी। मृदुभाषी, सरल व सोम्यता की देवी श्रीमती आदर्श कुमारी प्रिंसिपल ओम प्रकाश तलवार, पूर्व महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य की धमपत्नी थी।

१९ जनवरी को अपराह्न ३ बजे आर्य समाज पंजाबी बाग मे एक शोक सभा हुई। श्रद्धाञ्जलि सभा मे राजधानी की आर्य समाजो, आर्य समाजो व संस्थाओ से प्रमुख अधिकारियों ने स्व आदर्श आर्य देवी के व्यक्तित्व व कृतित्व का स्मरण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

१४ सितम्बर १९३३ को श्री ... अमृतसर मे उनका जन्म हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा आर्य पुत्री पाठशाला गुरुदासपुर मे हुई और ८ वर्ष की आयु मे वैदिक विद्वान् प० ... जी जिज्ञासु द्वारा उनका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। २८ दिसम्बर, १९५२ को श्री ओमप्रकाश तलवार से उनका विवाह हुआ था। कुछ दिन पूर्व ही उन्होने ४०वी विवाह वर्षगांठ मनाई थी।

श्रीमती आदर्श कुमारी लगभग दस वर्ष तक आर्य समाज पंजाबी बाग की ... रही और १५ वर्ष से पंजाबी बाग आर्य समाज की मन्त्राणी पद पर थी। उनके घर दैनिक यज्ञ व वेद स्वाध्याय होता था। वर्षो तक सास ससुर की सेवा करती रही। आर्य बहिनो से मिलकर प्रतिवर्ष आर्य संस्थाओं व दीन दुखियो की लगभग २० हजार रुपये की राशि द्वारा सहायता करती रही थी। ऐसी सती साध्वी, आर्यदेवी आदर्श कुमारी को शत शत प्रणाम।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी नहीं रहे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के उपप्रधान एवं दयानन्द मठ रोहतक के मन्त्री महाशय भरतसिंह का १६ जनवरी १९९२ को अपराह्न ४ बजे दयानन्द मठ में हृदय गति बन्द हो जाने से निधन हो गया। वे ८१ वर्ष के थे। उनकी स्मृति में सभा कार्यालय बन्द कर दिया गया। महाशय भरतसिंह एक स्वतन्त्रता सेनानी ही नहीं थे—अपितु उन्होने आर्य समाज द्वारा चलाये गए हिन्दी आन्दोलन, गौ रक्षा आन्दोलन, शराब बन्दी आन्दोलन आदि मे बढ़-चढ़कर भाग लिया था। आर्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भी सदस्य रहे तथा अनेक आर्य व सामाजिक संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे।

१९ जनवरी को दोपहर २ बजे दयानन्द मठ मे शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया। सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने कहा कि महाशय भरतसिंह आर्य समाज के लिए यथासम्भव समय दिया करते थे। वे एक व्यक्ति ही नही अपितु एक संस्थापक थे। इस अवसर पर अनेक सभाओ, गुरुकुलो समाजो के अधिकारियो ने बहुमुखी प्रतिभा के धनी महाशय भरतसिंह जी की सेवाओ का स्मरण कर उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित की। ऐसे लगनशील, आर्य नेता, स्वाध्यायशील यज्ञ प्रेमी, समाज सुधारक व निर्भीक वक्ता महाशय भरतसिंह जी को शत शत प्रणाम।

आर्य समाज बिन्दापुर

आर्य समाज बिन्दापुर मण्डल के तत्वावधान मे पश्चिमी दिल्ली की समस्त आर्य समाजो व धार्मिक संस्थाओ के सहयोग से पंखा रोड, सी-१, जनकपुरी नई दिल्ली मे २३ फरवरी को प्रात ८ से ११ बजे तक मानक कल्याण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती समारोह के मुख्य अतिथि होगे सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, महामन्त्री डा० धर्मपाल पूर्व सांसद श्री रामचन्द्र विकल, आचार्य प्रियव्रत शास्त्री आदि आर्य जनता को सम्बोधित करेंगे।

बा० नवनीतलाल एडवोकेट नहीं रहे

दिल्ली के कर्मठ आर्य समाजी बाबू नवनीतलाल जी एडवोकेट का २४ जनवरी को रात ११ बजे निधन हो गया है।

बा० नवनीतलाल जी एडवोकेट पहले आर्य समाज दीवानहाल मे ही रहते थे वह उसके कई वर्षों तक अन्तरग सदस्य, पदाधिकारी रहे थे। वह दोनो पति पत्नी प्रारम्भ से ही आर्य समाज के प्रति निष्ठावान थे और जीवन पर्यन्त आर्य समाज के काम मे ही लगे रहे। प्रमुख विधिवेत्ताओ मे वह अपना स्थान रखते थे। स्व० श्री एन०सी० चटर्जी प्रधान हिन्दू महासभा और स्व० चरणदास पुरी आदि प्रमुख एडवोकेटो से उनका प्रगाढ सम्पर्क था। बा० नवनीतलाल जी आर्यसमाज सम्बन्धी किसी भी केस को बिना फीस लिए लड़ते थे। कुछ वर्ष पूर्व उनके बाह का आपरेशन हुआ था, उसमे उनका हाथ काटना पडा था। इसके बावजूद वह कभी निरुत्साहित नही हुए। उनका उत्साह बराबर बना रहा। इस समय उन्होने लोदी रोड स्थित दयानन्द शमशान घाट के लिए काय हाथ मे लिया हुआ था, वह अपने मित्रो से दान लेकर इस घाट की व्यवस्था को सुधारने मे अन्त तक लगे रहे। गत वर्ष आर्य सत्याग्रह अर्द्ध शताब्दी समारोह मे भाग लेने जब वह हैदराबाद पहुचे तो उन्होने वहा जोरदार भाषण दिया था जिससे जनता बहुत प्रभावित हुई थी।

स्व० नवनीतलाल जी अनेक ट्रस्टो के ट्रस्टी, स्कूलो पदाधिकारी भी थे जिनमे श्रद्धानन्द सेवा संघ, महाशय कृष्णलाल, दयानन्द शमशान घाट और आर्य अनाथालय पटौदी हाउस मुख्य हैं। अपनी स्व० पत्नी की स्मृति मे भी गरीबो की सहायता के लिए उन्होंने एक ट्रस्ट स्थापित किया हुआ था। वह स्वय भी बड़े दानी थे और दूसरो से भी दान लेने मे आगे रहते थे।

उनके निधन से आर्यसमाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। सार्वदेशिक सभा तथा समूचा आर्य जगत् उनके निधन पर गहरा दुख प्रकट करता है और प्रभु से दिवगत आत्मा की सद्गति की कामना करते हुए शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
सभा प्रधान

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्योहारो व पर्वो से सम्बन्धित रचनायें कृपया अंक प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें।

—आर्य समाजो आर्य शिक्षण संस्थाओ आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री डबल स्पेस मे टाइप की हुई अथवा कागज के एक ओर साफ साफ लिखी होनी चाहिए।

—अस्पष्ट लिखी अथवा देर से प्राप्त सामग्री का उपयोग करना सम्भव न हो सकेगा।

—समीक्षा के लिए पुस्तको, पत्र-पत्रिकाओ के विशेषांको की कम से कम दो प्रतियां भिजवायें।

—पता बदलने अथवा गलत या अधूरा पता होने की स्थिति मे ग्राहक संख्या उल्लेख करते हुए पिन कोड नम्बर का भी उल्लेख अवश्य करें।

—आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क ६५ रुपए तथा आजीवन शुल्क २५० रुपये है। आजीवन ग्राहक बनने वालो को ५० रुपए मूल्य के आर्य सन्देश के पुराने विशेषांक नि शुल्क उपहार स्वरूप दिए जायेंगे। स्टाक सीमित है।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

—सभी पाठको के सुझाव व प्रतिक्रिया आमन्त्रित हैं।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

—सम्पादक

धारावाहिक चाणक्य बन्द न करें

१७.१.९२—आज आर्य राष्ट्रीय मंच की तात्कालिक बैठक में इस बात पर चिन्ता व्यक्त की गई कि 'चाणक्य' धारावाहिक के विरुद्ध कुछ वामपंथी और तथाकथित धर्मनिरपेक्ष ताकतें सूचना व प्रसारण मन्त्रालय पर दबाव डाल कर उसे समाप्त करने अथवा उसके कुछ धारावाहिक प्रकरणों को कम करने का प्रयत्न कर रही हैं। इस बात पर दुःख प्रकट किया गया है कि सूचना और प्रसारण मन्त्रालय भी उनके दबाव में आ रहा है।

आर्य राष्ट्रीय मंच यह अनुभव करता है कि 'चाणक्य' धारावाहिक भारतीय इतिहास की गौरवपूर्ण घटनाओं को प्रदर्शित करता है और इस देश के महान राजनीतिज्ञ चाणक्य के उज्ज्वल चरित्र को प्रकट करता है। चाणक्य धारावाहिक द्वारा देश की एकता प्रकट हुई है। देश के निर्माण में भारतीय शिक्षा पद्धति व शिक्षकों की जो महान् भूमिका रही है, उसे भी यह धारावाहिक उजागर करता है।

मंच की भावनाओं को देख कर मंच के अध्यक्ष डा० प्रशान्त वेदालंकार ने एक पत्र सूचना व प्रसारण मन्त्री श्री अजीत को लिख कर कहा है कि वे किसी के दबाव में आकर उसे बन्द करने अथवा उसके कुछ प्रकरणों को बन्द करने का निर्णय न लें।

भूकम्प पीड़ित बालिकाओं को गुरुकुल में प्रवेश

गत वर्ष गढ़वाल में आये भूकम्प से जन, धन आदि की अपार क्षति हुई है। आर्य समाज द्वारा भूकम्प पीड़ितों की हर प्रकार से उल्लेखनीय सेवा की गयी है। राहत कार्य जारी है। इसी क्रम में मातृ कन्या गुरुकुल वाराणसी ने भी भूकम्प पीड़ित बच्चों में कुछ मेधावी बालिकाओं को प्रवेश देने का निर्णय लिया है। इसका व्यय गुरुकुल द्वारा किया जायेगा। इच्छुक बन्धु सम्पर्क करें—

सुश्री पुष्पलता
अध्यक्षा, मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल
डी० ४५/१२६ नई बस्ती, रामपुरा, वाराणसी १११०१०

पुष्कर श्रद्धालुओं पर यात्री-कर

राजस्थान में पुष्कर जाने वाले प्रत्येक श्रद्धालु से यात्री कर के रूप में एक रुपया वसूला जाता है जबकि ख्वाजा साहब की दरगाह जाने वालों से कोई कर नहीं लिया जाता है। साथ ही ख्वाजा साहब की दरगाह विकास के लिए राज्य सरकार ने साढ़े सात करोड़ रुपये की एक योजना तैयार की है परन्तु पुष्कर तीर्थ के लिए ५ लाख रुपये स्वीकृत करने में सरकार को जोर पड़ रहा है। शिव सेना के प्रदेश प्रमुख श्री हरीश शर्मा ने यह जानकारी अजमेर में सम्वाददाताओं से बात करते हुए दी। इस आशय की खबर राजधानी से प्रकाशित 'जनसत्ता' के २६ जनवरी के अंक में छपी है। श्री शर्मा ने कहा कि ऐसा तुष्टीकरण की नीति के कारण हो रहा है और यदि ६ फरवरी तक यह यात्री-कर नहीं हटाया गया तो इसके लिए संघर्ष छेड़ा जाएगा।

इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सन् १८६५ व १८७८ में कई बार पुष्कर की यात्रा वैदिक मान्यताओं के प्रचारार्थ की थी। पुष्कर जिस मार्ग से स्वामी दयानन्द जी का आवागमन हुआ था अर्थात् वैदिक सत्संग आश्रम से नायक कालोनी हेलोज रोड तक के मार्ग का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती मार्ग नवम्बर, १९९१ को आयोजित एक समारोह में रखा गया था।

राजस्थान में आर्यवीर दल के बढ़ते कदम

पीपाड़ शहर ३१ दिसम्बर। दिनांक २२ से ३० दिसम्बर, १९९१ तक लगे प्रान्तीय शिविर में २० जिलों के चुने हुए आर्यवीरों को सघन प्रशिक्षण योग्य प्रशिक्षकों द्वारा दिया गया। आर्यवीरों को दीक्षित किया गया उन्होंने स्थान-स्थान पर नई शाखाएं स्थापित करने का संकल्प लिया। इस शुभावसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के अधिकारियों ने ग्रीष्म काल में लगाए जाने वाले शिविर का समस्त व्यय भार सभा द्वारा वहन करने की घोषणा की। प्रान्त में विभिन्न स्थानों पर शाखाओं का निरीक्षण करने के लिए सार्वदेशिक आर्यवीर दल के शिक्षकों का कार्यक्रम निम्न प्रकार बनाया गया—

मदनपाल राठी—कोटा संभाग, हरिसिंह आर्य—सुजानगढ़, सुमेरपुर, नाणा (पाली) अजमेर आदि अजीतसिंह आर्य—पीपाड़, अलवर, खैरथल, चांदपुर, गंगापुर सिटी।

—डा० देवव्रत आचार्य
प्रधान संचालक सार्व० आर्य वीर

चुनाव समाचार

आर्य समाज महरौली

१९ जनवरी ९१ को सम्पन्न हुए आर्य समाज महरौली के वार्षिक निर्वाचन में श्री सुभाष जी कुमार—प्रधान, श्री पुरुषोत्तम दास मुखी—मन्त्री, श्री मदन लाल मुखी एवं श्री इन्द्र कुमार—उपमन्त्री, श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य—प्रचार मन्त्री, श्री रविकुमार—कोषाध्यक्ष, श्री पतिराम आर्य—पुस्तकालयाध्यक्ष तथा श्री प्रेम चौधरी—लेखा परीक्षक निर्वाचित हुए।

आर्य युवक परिषद्

१२ जनवरी को आर्य युवक परिषद् के वार्षिक चुनाव में प्रधान—श्री बी० सी० सिंगल, उपप्रधान—श्री सुरेन्द्र हिन्दा, मन्त्री—श्री ओमप्रकाश, उपमन्त्री—श्री मूलचन्द गुप्त, परीक्षा मन्त्री—श्री चमन लाल, प्रचार मन्त्री—श्री तिलकराज कोहली, कोषाध्यक्ष—श्री होशियार सिंह तथा लेखा परीक्षक—श्री रोशन लाल गुप्ता निर्वाचित हुए।

आर्य समाज चौक प्रयाग

आर्य समाज चौक प्रयाग इलाहाबाद के निर्वाचन में प्रधान—श्री पन्नालाल गुप्ता, एडवोकेट, मन्त्री—श्री मूलचन्द अवस्थी एवं कोषाध्यक्ष—श्री खजान सिंह चुने गये।

वायु प्रदूषण विनाशक यज्ञ

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी द्वारा आज कल वायु प्रदूषण विनाशक घर घर हवन प्रचार सेवा प्रारम्भ की गयी है। साथ ही अलग ववाद की प्रवृत्तियों के शमन के लिए सामवेद पारायण यज्ञ भी हो रहा है। गुरुकुल की छात्राएं एवं श्रद्धालु सहयोगी इसमें उत्साह पूर्वक भाग ले रहे हैं। इस पुनीत कार्य में सहयोग के लिए प्रातः १० से १२ बजे तक सम्पर्क करें—

योग शिविर

श्री स्वामी सत्यपति जी महाराज की अध्यक्षता में आर्ष वन रोजड़, पत्रालय सागरपुर में २६ मार्च से ४ अप्रैल, ९२ तक एक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। उत्सव ५ अप्रैल को होगा।

शिविरार्थी १५ वर्ष से ज्यादा आयु का हो शिक्षा ८वीं कक्षा या अधिक, धूम्रपान आदि व्यसनों से रहित हो तथा अति वृद्ध या रोगी न हो। शिविर शुल्क २०० रुपए (दो सौ रुपए)। क्रियात्मक रूप से योगसाधना सीखने में रुचि रखने वाले स्त्री पुरुष अपनी योग्यता, व्यवसाय आदि के विवरण सहित शीघ्र आवेदन करें।

आचार्य, दर्शन योग महाविद्यालय आर्ष वन रोजड़ पत्रालय सागरपुर
जिला साबरकाठा (गुजरात) ३८३३०७

संस्कृत में काव्य पाठ

श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर नई दिल्ली में मंगलवार २१ जनवरी, ९२, को एक संस्कृत काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों से आये संस्कृत कवियों ने कविता पाठ किया। इस का आयोजन दिल्ली प्रशासन की अकादमी ने नेता जी सुभाषचन्द्र बोस की ९५वीं जयन्ती पर किया था।

समारोह के मुख्य अतिथि वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री मन्मथनाथ गुप्त, अध्यक्ष श्री शीलभद्रयाजी, पूर्व सांसद श्री रामचन्द्र विकल आदि ने सुभाषचन्द्र बोस के त्याग, बलिदान, अनुशासन आदि का जिक्र कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

आर्य समाज विनय नगर

आर्य समाज विनय नगर, नई दिल्ली का ४ वां वार्षिकोत्सव ६ से ९ फरवरी, ९२ तक समाज मन्दिर, बाई ब्लाक सरोजिनी नगर में धूमधाम से मनाया जा रहा है। प्रति दिन प्रातः ७ से ८ बजे तक भजन व वेद कथा होगी।

८ फरवरी को १० से १२ बजे तक धर्मवीर हकीकतराय बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में बच्चों का भाषण व गायन प्रतियोगिता होगी। ९ फरवरी को समापन के दिन यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद प्रातः १० से १२ बजे तक दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्वावधान में राष्ट्रीय एकता सम्मेलन होगा और १.१० बजे ऋषि लंगर। सभी सादर आमन्त्रित हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य

१	नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम, द्वितीय) प्रत्येक		१ ५०
२	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२ ००
३	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ से नवम) प्रत्येक		३ ००
४	नैतिक शिक्षा (भाग दशम, एकादश) प्रत्येक		४ ००
५	नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)		५ ००
६	धर्मवीर हकीकत राय	(वैद्य गुरुदत्त)	५ ००
७	फ्लैश आफ ट्रूथ	(डा० सत्यकाम वर्मा)	२ ००
८	सत्यार्थ प्रकाश सन्देश	,, ,,	२ ००
९	एनोटामी आफ वेदान्त	(स्वामी विद्यानन्द सरस्वती)	५ ००
१०	आर्यों का आदि देश	,, ,,	२ ००
११	प्रस्थानत्रयी और अद्वैतवाद	,, ,,	२५ ००
१२	दी ओरीजन होम आफ आयन्स	,, ,,	२ ००
१३	चत्वारो वै वेदा	,, ,,	५ ००
१४	द्वैतसिद्धि	,, ,,	५ ००
१५	आर्यसमाज आज के सन्दर्भ मे	(डा० [illegible], डा० गोयनका)	२० ००
१६	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	(डा० सच्चिदानन्द शास्त्री)	५ ००
१७	हसता चल, हसाता चल	(स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती)	६ ५०
१८	दयानन्द एण्ड दा वेदाज (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकडा
१९	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकडा
२०	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकडा
२१	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकडा
२२	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या)	(डा० रघुवीर)	५० रु० सैकडा

नोट उपरोक्त सभी पुस्तको पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तको की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक व्यय पथक नही लिया जाएगा।

पुस्तक प्राप्ति स्थान **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R.N No 32387/77 Posted at N D P S O on 30 31 1 1992 Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/92
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल ११०२४/९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) १३९/९२
साप्ताहिक आर्यसन्देश २ फरवरी १९९२

भूकम्प पीड़ितो मे आर्य समाज का सेवा कार्य जारी रहेगा

दिल्ली १५ जनवरी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज एक विज्ञप्ति में बताया कि आर्य समाज गढ़वाल के भूकम्प पीडितो मे अपना सेवा सहायता कार्य बराबर जारी रखेगा। उन्होने बताया कि इस भयकर ठण्ड के मौसम मे भी वहा दर्जनों आर्य वीर उत्तरकाशी स्थित आर्यसमाज के सेवा केन्द्र के माध्यम से पीडितो की सहायता मे लगे हुए है। स्वामी जी ने बताया कि दो दिन पूर्व ही लोहे की चादरो का एक ट्रक भरकर वहा और भिजवाया गया है। अब तक कम्बल लोहे की चादर तिरपाल, वस्त्र तथा अन्न आदि के रूप मे वहां लगभग १ करोड रुपए की सामग्री आर्य समाज के राहत केन्द्र के माध्यम से वितरित की जा चुकी है

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
सभा मन्त्री

१०वां विश्व पुस्तक मेला

नई दिल्ली स्थित प्रगति मैदान मे १०वा विश्व पुस्तक मेला १ फरवरी से ९ फरवरी तक लग रहा है। गत पुस्तक मेलो की भाति इस मेले में भी कई आर्य प्रकाशक अपने पुस्तक स्टाल लगा रहे है। जिनमे वैदिक साहित्य विक्रयार्थ उपलब्ध रहेगा।

क्या आप जानते हैं ?

१—राजभाषा अधिनियम १९६३ के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा १९७६ मे बनाये गए राजभाषा कानून के अनुसार दिल्ली क श्रेणी के क्षेत्र मे आता है। दिल्ली प्रशासन की राजभाषा भी हिन्दी है। यदि केन्द्र सरकार या दिल्ली प्रशासन के किसी भी कार्यालय से आप हिन्दी मे पत्र व्यवहार करते हैं तो नियमानुसार उन्हे पत्र की भाषा मे ही उत्तर भिजवाना होगा।

२—गुजराती मातृभाषी एव सस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित होते हुए भी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपना अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी मे ही लिखा था।

३—सन् १८७४ मे महर्षि दयानन्द ने ब्रह्म समाज के नेता प० केशवचन्द्र सेन के सुझाव पर हिन्दी मे भाषण देना प्रारम्भ कर दिया था।

४—सन् १८७५ में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा आर्य समाज के उपनियमो में प्रत्येक आर्यसमाजी के लिए हिन्दी व सस्कृत पढना अनिवार्य कर दिया था।

५—सन् १९१९ मे अमृतसर मे हुए कांग्रेस अधिवेशन मे स्वामी श्रद्धानन्द ने कांग्रेस के इतिहास में पहली बार अपना स्वागत भाषण हिन्दी मे पढा था।

५—सन् १९०६ मे स्वामी श्रद्धानन्द ने महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पत्र सम्पादित कर पुस्तक रूप मे छपवाये थे। हिन्दी साहित्य के इतिहास मे पहली बार इस प्रकार किसी के पत्र प्रकाशित हुए थे। पुस्तक रूप में ये पत्र गुरुकुल कांगडी ने प्रकाशित कराये थे।

सेवा में—

श्री पुस्तकाध्यक्ष मन्दिर
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ प्र)

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सवदेशिक प्रेस पटौदी हाउस दरियागज नई दिल्ली ११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली ११०००१ फोन ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी०(एल०-११०२४/९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५ अंक १४ | रविवार, ९ फरवरी, १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

चाणक्य धारावाहिक की सम्पूर्ण ५२ कड़ियां दिखाई जायेंगी

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

प्रधानमन्त्री श्री पी०वी० नरसिह राव के हस्तक्षेप से चाणक्य धारावाहिक की सम्पूर्ण ५२ कडियो को बिना किसी काट छाट के दूरदर्शन पर दिखाने का निर्णय लिया गया है।

प्रधानमन्त्री ने सूचना एव प्रसारण मन्त्रालय को यह निर्देश दिये हैं कि राष्ट्र के चरित्र निर्माता चाणक्य की जीवन चर्या को प्रदर्शित करने वाले धारावाहिक को किसी भी रूप मे कम न किया जाय। इस आशय का बयान सूचना एव प्रसारण राज्यमन्त्री श्रीमती गिरिजा व्यास द्वारा भी जारी किया गया है।

उल्लेखनीय है कि इस धारावाहिक की काट-छाट सम्बन्धी सूचना मिलते ही अखिल भारतीय हिन्दू सस्थाओ के मुख्य प्रतिनिधियो की एक बैठक दिल्ली के आर्य समाज दीवानहाल मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे बुलाई गई थी। जिसमे सरकार को यह चेतावनी दी गई थी कि समस्त हिन्दू सगठनो द्वारा इस धारावाहिक को पूरा न दिखाये जाने पर आन्दोलन किया जायेगा।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने इन प्रस्तावो सहित कडे शब्दो मे सूचना एव प्रसारण मन्त्रालय के निर्णय पर रोश प्रकट करते हुये प्रधानमन्त्री तथा अन्य केन्द्रीय मन्त्रियो को पत्र लिखे थे।

प्रधानमन्त्री के इस दूरदर्शिता पूर्ण निर्णय पर समस्त देशवासियो ने सन्तोष प्रकट किया है।

पी० वी० नरसिह राव की सरकार द्वारा इज़्राइल के साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित करने पर आर्य समाज द्वारा स्वागत

दिल्ली ३० जनवरी।

भारत सरकार द्वारा वर्षों की प्रतीक्षा के बाद,इज्राइल के साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित करने पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने प्रधान मन्त्री श्री पी० वी० नरसिंह राव और उनकी सरकार को बधाई देते हुए कहा, यद्यपि यह निर्णय देर से लिया गया है, परन्तु भारत की राष्ट्रीय अखण्डता और प्रभुसत्ता लिए यह महत्वपूर्ण कदम है। इससे देश की अनेक समस्याओ का समाधान होगा। पूरा आर्य जगत इसका स्वागत करता है।

स्वामीजी ने कहा वह जब लोकसभा के सदस्य थे,तो उस समय भी उन्होने इज्राइल के साथ राजनयिक सम्बन्ध जोडने की माग रखी थी और स्व० प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी और स्व० राजीव गाधी से भी यह बात कई बार कही थी। उन्होने कहा कि प्रधानमन्त्री श्री पी०वी० नरसिह राव ने यह बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया है। पूरा देश इस निर्णय का स्वागत करता है।

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

गाय बची तो देश बचेगा

गाधी जी के लिए हिन्दू धर्म का मूल तत्व गोरक्षा है। 'मेरे लिए गोरक्षा का विचार मानवता के विकास क्रम मे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कदम है। यह मनुष्य को अपनी जातीय परिधि से बाहर ले जाता है। गाय मे मैं समस्त मानवेतर प्राणियो के दर्शन करता हू। मनुष्य से यह अपेक्षा की जाती है कि गाय के माध्यम से वह समस्त प्राणी जगत् के साथ तादात्म्य का अनुभव करे। और गाय को ही पूजा के लिए क्यो चुना गया, यह मै स्पष्ट देख सकता हू। भारत मे गाय मनुष्य की सबसे अच्छी साथी थी। वह समृद्धि का स्रोत थी। गाय करुणा का काव्य है। इस निरीह प्राणी मे करुणा के दर्शन होते है। वह करोडो भारतीयो की मा है। गोरक्षा का मतलब है, ईश्वर की सृष्टि के समस्त मूक प्राणियो की रक्षा। प्राचीन ऋषियो ने, वे जो भी रहे हो, मनुष्य के दया-भाव को मानव जाति की परिधि से निकाल कर सृष्टि भर मे फैलाने का काम गाय से ही शुरू किया। मानवेतर प्राणियो के प्रति करुणा रखने की आवश्यकता इस कारण और भी बढ जाती है कि वे मूक है। गोरक्षा विश्व को हिन्दू धर्म की देन है और जब तक गोरक्षा करने वाले हिन्दू दुनिया मे मौजूद है तब तक हिन्दू धर्म भी जीवित रहेगा।' (वाङमय २१/२४८-९)

गाधी के अनुसार 'सच्चे हिन्दू की पहचान तिलक नही है, मन्त्रो का सही उच्चारण नही है, तीर्थाटन नही है और न जाति-पात के नियमो और बन्धनो का सूक्ष्म पालन ही है। उसकी पहचान तो उसकी गोरक्षा की क्षमता है। गोरक्षा के धर्म को स्वीकार करते हुए भी हमने गौओ और उनकी सन्तानो को दासत्व की स्थिति मे पहुचा दिया है, और परिणामत हम स्वय भी दास बन गए है।'

—महात्मा गाधी

सम्पादक—प्रो० सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

सन्ध्या—एक चिन्तन—२

—देव नारायण भारद्वाज

सन्ध्या का सबसे प्रथम मन्त्र आचमन मन्त्र है। इस मन्त्र का प्रथम शब्द भी शम' है और सन्ध्या के अन्तिम नमस्कार मन्त्र में तो 'शम-शिवम्' का ही साम्राज्य है। इसका आशय यही है कि शान्ति के साथ सन्ध्या को प्रारम्भ करें और समाप्ति पर शान्ति में बहुगुणित वृद्धि हो जाए। मन मे स्थापित यह शान्ति प्रभु-दर्शन के साथ-साथ जगत् के कार्यों में भी शक्ति एवं सम्बल प्रदान करे। आइये सब प्रथम मन्त्रार्थ पर विचार कर लिया जाए।

ओ३म्। शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः ॥ यजु० ३६/१२, अथर्व० १-६-१॥

अर्थ—यह आप। जल के समान सब मंगल कामनाओं को प्राप्त कराने वाली (देवी) दिव्य प्रभु शक्ति (नः) हम सबके लिए (अभीष्टये) अभीष्ट सिद्धि के लिए और (पीतये) परम रस का पान करने के लिए (शम्) शान्ति दायक (भवन्तु) होवे और (शंयो) सुख को (अभिस्रवन्तु) सब ओर से बरसाये।

मन्त्र का देवता (विषय) आपः अर्थात् जल है, यहां पर यह बहुवचन स्त्रीलिंग है और प्रभु शक्ति 'देवी' के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है। आचमन भी तीन बार जल से ही किया जाता है। वैसे तो हथेली मे स्वनिर्मित तालाब बनाकर उतने ही मात्रा मे जल का पान करते हैं जो गले को तर करता हुआ—हृदय तक ही जाए, इससे अधिक न हो। इससे गले मे एकत्र कफ की निवृत्ति हो जाए। ऋषि ने तो यह भी स्पष्ट कर दिया कि यदि जल न हो या कफ आदि की निवृत्ति भी न करनी हो, तो इस आचमन की क्या आवश्यकता। पर मन्त्र की, अर्थ की और उसके आदर्श-आचरण की आवश्यकता तो रहेगी ही। बहुत ही मोटे रूप मे जल को सम्बोधित करते हुए हम कह सकते हैं कि जल के रस से परिपूर्ण दिव्य प्रभु शक्ति, हमे तू अभीष्ट रूप व मात्रा में प्राप्त हो, हम तेरा पान करके तृप्त होते रहें। हे मातृ जल प्रभु शक्ति हम अकेले ही तृप्त न हों हे जल तू कूप, तड़ाग नदी एवं सागर में ही सीमित मत रह जाए जो तुझे प्राप्त करने के लिए नाना प्रकार के साधन हमे जुटाने पड़े। कुछ लोग जुटा सकते हैं वे अवश्य जुटा लें, पर कोई ऐसा भी होगा, वह शायद न जुटा पाए, तो तू ऐसी कृपा कर कि सभी ओर से जल की वर्षा करके हमे तृप्त कर दे जिससे कोई भी अतृप्त न रहने पाए। प्यासे को तो सदैव कुए के पास जाना ही पड़ता है किन्तु हे दिव्य प्रभु शक्ति यदि तू कृपा का भण्डार खोल दे तो कुआ क्या सागर भी चलकर प्यासे के पास आ सकता है। हे देवी माता—यह वर्षा आपकी वहां दिव्य शक्ति है जो सागर के जल को प्यासे के पास लाकर वर्षा देती है। समीपवर्ती निवासी या यात्री को छोड़कर कितने होंगे जो सागर का दर्शन भी कर सकें, पर यह वर्षा ही तो है जो अथाह सागर की जल राशि को कुटी-महल खेत उद्यान, तालाब झील तक पहुंचा देती है और विशेषता यह कि सागर के कटु खारेपन को हाथ भी नहीं लगाती है, जल को अति शुद्ध पवित्र, मधुर बनाकर हमे प्रदान कर देती है।

आचमन में जो जल हमने पान किया—वह शान्ति शीतलता एवं शक्ति का संगम है। इससे प्रथम हम अपने शरीर को शान्ति शीतलता प्रदान कर देते हैं। जहाँ हम बैठकर सन्ध्या कर रहे हैं—वहां सामने सरित प्रवाह है, झील, झरना या तालाब ही है, कोई कूप है और कुछ नहीं तो किसी पात्र—आचमनी मे ही जल हमारे सम्मुख है। इस जल की थोड़ी सी मात्रा को पीकर हम अपने शान्ति के अंकुर जगाना चाहते हैं तो बाहर भी यह सम्मुख की जल राशि वातावरण में शान्ति का संग्रह कर रही है। ऋषियों ने इसीलिए तो सन्ध्या स्थल का निर्धारण निम्नवत किया है —

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत ॥साम० १४३॥

पर्वतों की गुफाओं मे और नदियों के संगम पर मानव विशेष बुद्धि से मेधावी बनता है। इसी का अनुमोदन मनु जी 'अपां समीपे नियतो नैत्यिक विधिमास्थित अर्थात् नित्य कर्म जल के समीप, पवित्र स्थान मे करना चाहिए। जल से उठने वाली तरल तरंगें प्रकृति-प्राणी सभी को हर्ष प्रदान करती हैं। जल यहां पर अप्रासंगिक नहीं लगता है क्योंकि आगे भी शरीर को सबल एवं शुद्ध बनाने की बात कही है, जिसके लिए जल एक आवश्यक उपादान है। जल प्रतीक से ठीक-ठीक बोध प्राप्त करने के लिए आचमन मन्त्र के अन्य शब्दों से भी हमें सहायता लेनी चाहिए। अभिष्टये', 'पीतये एवं शम्' इन तीनों शब्दों से हमें सुन्दर संकेत मिलता है। अभिष्टये मनोवांछित, आनन्द की ओर हमें अग्रसर करता है, जो हमें उचित ज्ञान से ही प्राप्त होगा। पीतये—अभीष्ट ज्ञान को कर्म मे परिणित करके ही हम पूर्णानन्द की लब्धि कर सकते हैं। यह दोनो मिलकर ही हमारे लिए 'शम' शान्तिदायक या कल्याणकारी हो सकते हैं, अकेले नहीं। ज्ञान कर्म का परिणाम यही शम्-शान्ति है हमारे अकेले को प्राप्त शान्ति से काम नहीं चलने वाला है, क्योंकि समाज में कहीं भी उपद्रव होते है, कहीं हत्या, अपहरण, लूट-मार होती है, तो उनके समाचार ही हमारी शान्ति को भंग कर सकते हैं इससे बढ़कर भुक्तभोगी की चीत्कारें जो वातावरण मे गूंज जाएगी, वे भी जल से उठने वाली शान्त तरंगों का रंग भंग कर देती हैं। इसलिए भक्त की प्रार्थना है कि ज्ञान+कर्म की सुपरिणामी शान्ति की सर्वत्र वर्षा हो जाए।

अभीष्ट ज्ञान को सुखपूर्वक व्यवहार में लाकर स्वतः शान्ति प्राप्त होती है कोई भी व्यक्ति अध्यापक, उपदेशक अभियन्ता चिकित्सक या अधिकारी बनना चाहता है, तो वह उसी के अनुकूल ज्ञान का अर्जन करता है यदि उस ज्ञान के कार्य प्रयोग मे सुख मिलता है तो यही शान्ति का साधन बन जाएगा। यदि कार्य मे ही सुख नहीं है तो शान्ति बहुत दूर है। जिसका मन जिस काम मे लक्ष्य में लग जाता है—उसे भूख भी याद नहीं रहती है। मन उसी कार्य मे मगन हो जाता है और कार्य की पूर्णता के बाद उसके फल मे भी सुख और भूख तो भोजन के स्वाद एवं संतृप्ति मे ही बदल जाती है। अभिष्टये हमे भौतिक अभ्युदय की ओर सरकाता है। तो पीतये' निःश्रेयस मे निष्णात करके शम् पर स्थापित कर देता है।

मनुष्यधर्मा—प्राणी के चार ही तो पुरुषार्थ होते हैं, जो उसके जीवन के साधन एवं लक्ष्य बन जाते हैं। जिन्हे हम धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के नाम से जानते हैं। इन चारों को हम दो वर्गों मे समूहबद्ध कर सकते हैं। धर्म, अर्थ, काम, यह तीन मिलकर एक समूह हुआ और अकेला मोक्ष, दूसरा समूह है। पहले तीनों पुरुषार्थों का उद्देश्य तो मोक्ष ही है। यह भी कह सकते हैं कि प्रथम तीन साधन हैं तो चौथा साध्य है। मन्त्र के अभिष्टय के अन्तर्गत धर्म, अर्थ, काम निहित हो गया और पीतये मे मोक्ष संनिहित हो गया। हम यों भी कह सकते है कि बिना अर्थ के कोई काम नहीं होता—तो अर्थ हो किन्तु धर्म से नियन्त्रित, सृष्टि सचालन के लिए काम भी वाछनीय है, यदि वह धर्म अर्थ से नियन्त्रित है तो सुखदायक अन्यथा दुःखदायक। आशय यह है कि धर्म पूर्वक अर्थ का अर्जन हो, धर्म अर्थ दोनों के नियन्त्रण मे काम-कामनाओं का सृजन हो तो हमे बन्धन मे न पड़कर मुक्तानुभूति मिलेगी अन्यथा तो बन्धन ही बन्धन है। जिस मोक्ष मुक्ति आनन्द के लक्ष्य को लेकर हम मानव योनि के पड़ाव तक आ गए हैं, वह हमे-हमारी आत्मा को प्राप्त करना है, किन्तु प्राप्त करना होगा इसी शरीर मे-ऐसा न हो कि शरीर त्यागकर पृथक् आत्मा को सहसा ही यह लक्ष्य मिल जाए, इसलिए आत्मा की आनन्दानुभूति के लिए शरीर की स्वस्थानुभूति भी अनुपेक्षणीय है।

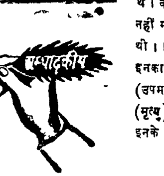
शम्—शान्ति आनन्द के लक्ष्य की यात्रा है तो मात्र पांच कोस (कोष) की, किन्तु कोई इन कोषों को छोटा कर लेता है, कोई इतना लम्बा कि एक कोष से ही पार निकलना कठिन हो जाता है ये पांच कोष बहुप्रचलित हैं—(१) अन्नमय कोष, (२) प्राणमय कोष, (३) मनोमय कोष, (४) विज्ञानमय कोष, (५) आनन्दमय कोष। आचमन का यह मन्त्र हमे इन कोषों से लक्ष्य प्राप्ति के प्रकरण की ओर भी तो मोड़ देता है।

शुभ लाभ के लिए दो व्यापारी व्यापार करते हैं। आज की भांति नहीं कि जहां लाभ ही लाभ का लक्ष्य है चाहे वह काला ही क्यों न हो। पर नहीं लाभ तो हो किन्तु वह शुभ हो अर्थात् 'शम्' हो। एक व्यापारी ने अपना 'अभिष्टये' लगाया और दूसरे ने 'पीतये' लगाया, तब उसने 'शम्' का लाभ कमाया। बाजार यह सारा संसार है और व्यापार प्रतिष्ठान यह देह स्थान है। इसी मे वे दोनों व्यापारी बैठते हैं—परमात्मा और जीवात्मा। परमात्मा सृष्टि की वस्तुओं को

(शेष पृष्ठ ७ पर)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्यसन्देश

महर्षि दयानन्द सरस्वती



महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस समारोह सम्पूर्ण भारतवर्ष में तथा देश विदेश मे १२ फरवरी १९९२ को मनाया जा रहा है। नई दिल्ली मे यह समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता मे हिमाचल भवन के विशाल सभागार मे अपराह्न ३-०० बजे आयोजित किया गया है। यह हमारा सौभाग्य है कि इस अवसर पर भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम डा० शकर दयाल शर्मा मुख्य अतिथि होगे। वे आर्य जनता को सम्बोधित करेंगे तथा राष्ट्र निर्माता स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करेंगे। इस अवसर पर अन्य गणमान्य राष्ट्रीय नेता आर्य समाज के नेता तथा भारत सस्कृति के सवाहक, समारोह मे सम्मिलत होंगे तथा उस राष्ट्र नायक के प्रति अपने उद्गार व्यक्त करेगे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम राष्ट्र निर्माताओं मे सदैव आदर पूर्वक लिया जाएगा। उन्होंने आध्यात्मिक धार्मिक एव सामाजिक क्षेत्र मे जागृति का शखनाद तो फूका ही था, उन्होने देशवासियो को स्वराज्य के महत्व से भी अवगत कराया था। उस समय की राजनैतिक दासता की स्थिति के कारण उनका हृदय विह्वल था। उन्होने अपने अमर ग्रथ सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास मे लिखा है—

'अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य प्रमाद, परस्पर विरोध से अन्य देशो के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी, किन्तु आर्यवर्त मे भी आर्यो का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय, राज्य इस समय नही है। जो कुछ भी है सो भी विदेशियो से पादाक्रान्त हो रहा है। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियो को अनेक प्रकार का दुख भोगना पडता है। कोई कितना भी करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित, माता पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियो का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नही है। परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा पृथक पृथक शिक्षा अलग-अलग व्यवहार का छूटना अति दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है।'

महर्षि दयानन्द सरस्वती के हृदय मे भारत को स्वाधीन कराने की इच्छा उत्कृष्टतम रूप मे थी। 'स्वराज्य' की उनकी अवधारणा नितान्त मौलिक थी। वे आपसी वैमनस्य को समाप्त करने समान पूजा पद्धति, समान शिक्षा और एक भाषा का पक्षधर थे। आर्य समाज ने उनके सन्देश का निवहन किया एक शताब्दी से अधिक समय हो चुका है, परन्तु समाज मे उसी प्रकार की कुरीतिया आज भी विद्यमान हैं। बल्कि समाज और भी ज्यादा टुकडो मे बट गया है। यहा पर आए दिन प्रान्तीयता, क्षेत्रीयता, जातीयता, भाषा, समुदाय के नाम पर झगडे होते रहते हैं। कभी-कभी तो आर्य समाज, जो एक सार्वभौम वैदिक सिद्धान्तो के प्रतिपादन के लिए कार्यरत है, उस पर भी साम्प्रदायिक होने के आरोप लगाये जाते है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के निधन पर, अलीगढ मुसलिम, यूनीवर्सिटी के सस्थापक सर सैय्यद अहमद खा के शब्द ध्यान देने योग्य है। इनके शब्दो से उन लोगो की आखें खुल जानी चाहिए, जो उन्हें मुसलमानो का शत्रु समझते थे। महर्षि दयानन्द का व्यक्तित्व एव कर्तृत्व बहुत ही ऊचो कोटि का था। वे कर्मयोगी एव महान सुधारक थे। उन्होने जाति भेद और अस्पृश्यता की बुराईयो को दूर करने के लिए घोर परिश्रम किया था। उनमे साम्प्रदायिक द्वेष अथवा सकीर्णता का तो लेशमात्र भी न था। सर सैयद अहमद खा के अलीगढ इन्स्टीट्यूट मैगजीन, ९ नवम्बर १८८३, में प्रकाशित विचार इस प्रकार हैं—

निहायत अफसोस की बात है कि स्वामी दयानन्द साहेब ने जो सस्कृत के बडे आलम (विद्वान) और वेद के बडे मुहक्किल (समर्थक) थे ३० अक्तूबर १८८३ को ७ बजे शाम को अजमेर मे इन्तकाल किया। वे इलावा इलमो फजल (उत्तम विद्या के अतिरिक्त) निहायत नेक और दरवेश सिफत (साधु स्वभाव) आदमी थे। इनके मोहत किद (अनुयायी) इनको देवता मानते थे। और बेशक वे इसी लायक थे। वे सिर्फ ज्योति स्वरूप निराकार के सिवाय, दूसरे की पूजा जायज (विहित) नहीं मानते थे। हम से और स्वामी दयानन्द मरहूम (स्वर्गीय) से बहुत मुलाकात थी। हम हमेशा इनका निहायत अदब (आदर) करते थे कि हरेक मजहब वाले को इनका अदब लाजिमी (आवश्यक) था। बहरहाल वे ऐसे शख्स थे, जिनका मसल (उपमा) इस वक्त हिन्दुस्तान में नही है। और हरेक शख्स को उनकी वफात (मृत्यु) का गम (शोक) करना लाजिमी है कि ऐसा बेनजीर शख्स (अनुपम मनुष्य) इनके दरमियान से जाता रहा।

(अलीगढ इन्स्टीट्यूट, ६-११-८३)

महर्षि दयानन्द सरस्वती युगप्रवर्त्तक महापुरुष थे। उन्होने भारत के शक्ति शून्य शरीर मे अपनी अजेय शक्ति, अविचल कर्मण्यता, तथा सिंह के समान पराक्रम फूक दिए। जगविख्यात विचारक श्री रोम्या रोला ने रामकृष्ण की जीवनी के पृष्ठ १४६ पर ठीक ही लिखा है—

'अर्थात् ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्ति शून्य शरीर मे अपनी अजेय शक्ति, अविचल कर्मण्यता तथा सिंह के समान पराक्रम फूक दिया। स्वामी दयानन्द उच्चतम व्यक्तित्व सम्पन्न पुरुष थे। कर्मयोगी विचारक और नेता के उपयुक्त प्रतिभा ये सभी प्रकार के दुर्लभ गुण उनमे विद्यमान थे। यह सिंह समान व्यक्तियो मे से एक हैं। यूरोप, भारत के विषय मे निर्णय करते हुए सम्भवत भारत को तो भूल जाए, पर शायद उसे याद करने को बाध्य होना पडेगा, क्योकि उसमे प्रतिभाशाली नेतृत्व समन्वित कर्मशील विचारण का अद्भुत सगम था। स्वामी दयानन्द ने अस्पृश्यता के अन्याय को भी सहन नही किया। उनसे अधिक अस्पृश्यों के अपहृत अधिकारो का उत्साही समर्थक दूसरा कोई नही हुआ।

भारत मे स्त्रियो की शोचनीय दशा को सुधारने मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बडी उदारता एव साहस से काम लिया। ऋषि के आगमन से पूर्व 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयताम्'' अर्थात् स्त्री और शूद्र पढने के अधिकारी नही हैं, इस विचारधारा का प्रचार था। ऋषिवर ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास मे लिखा— 'राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पाचवें अथवा आठवे वर्ष से आगे कोई अपने लडको और लडकियो को घर में न रख सके, पाठशाला मे अवश्य भेज देवे, जो न भेजे वह दण्डनीय हो।' महर्षि के इस मन्तव्य का हिन्दुओ ने कडा विरोध प्रकट किया। आर्य समाज ने कन्या पाठशालाए खोली। आज सर्वत्र कन्याओ को पढने की सुविधा मिल चुकी है और महिलाए विभिन्न क्षेत्रो मे सराहनीय योगदान कर रही हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पुरातन वर्णाश्रम व्यवस्था का प्रतिपादन किया। वास्तव मे अमर्यादित वर्ण व्यवस्था ने हिन्दू धर्म को खोखला कर रखा था। यह वर्ण व्यवस्था जन्म पर आश्रित हो गई थी। इस व्यवस्था मे दलित वर्ग का स्थान बहुत ही नीच बन चुका था। सवर्ण लोग हरिजनो की छाया मात्र से मलिन हो जाते थे। महर्षि दयानन्द ने सभी को 'आर्य' नाम से पुकारा। सभी को एक समान स्थान दिया। आर्य समाज का सदस्य बनने का अधिकार मानव-मात्र को दिया। महात्मा गाधी ने आर्य समाज से प्रभावित होकर हरिजनोद्धार का कार्यक्रम बनाया। ऋषिवर ने शुद्धि कार्यक्रमो को प्रारम्भ करने पर भी बल दिया। उसने मानव-मात्र को आर्य बनाने का सदेश दिया। बन्द दरवाजो को, विधर्मियो के लिए, अपने मूल धर्म मे लौट आने के लिए खोल दिया। महर्षि का यह कार्य बडा क्रान्तिकारी रहा। आज तो हमारे सनातन धर्मी भाइयो ने भी इसे अपना लिया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद को ही परम प्रमाण माना। वेद स्वत प्रमाण है। महर्षि ने वेदो के उद्धार के लिए अत्यधिक परिश्रम किया। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। उनमे कोई बात ईश्वर के गुण, कर्म स्वभाव से विपरीत नही है। कोई बात सृष्टि क्रम के विपरीत नही है। वेद का ज्ञान परमात्मा ने मनुष्यो को उन्नति करने मे सहायता देने के लिए दिया है। वेद का अर्थ प्रत्यक्ष, अनुमान आदि प्रमाणो के अनुकूल होना चाहिए। वेद में सभी सत्य विद्या, विज्ञानो का वर्णन है। महर्षि के प्रभाव के परिणामस्वरूप आज वेदो का अध्ययन भारत मे ही नही, विश्व के अनेक देशो मे किया जा रहा है। साथ ही वर्तमान वेद भाष्य ऋषि दयानन्द सरस्वती की भाष्य-शैली से प्रभावित एव अनुप्राणित है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

—यशपाल आर्य बन्धु

प्रत्येक युग का कोई न कोई प्रवर्त्तक होता है जो अपने युग को नई दिशा प्रदान करे, उसे नया मोड देवे उसे ही युगप्रवर्त्तक कहा जाता है। महर्षि दयानन्द भी अपने युग क प्रवत्तक थे। उन्होने युग को नई दिशा प्रदान की थी, उसे एक नवीन मोड दिया था, इसी लिए वे युगप्रवर्त्तक कहलाए। वस्तुत महापुरुष युग की मांग हुआ करते है, युग की पुकार पर ही मानो व जन्म लिया करते हैं। महर्षि दयानन्द भी अपने युग की मांग थे, उसकी पुकार तथा आवश्यकता थे। वे युग को एक नवीन दिशा एक नया मोड देने आये थे और अपने इस कार्य मे वे पूणतया सफल भी हुए।

युग परिवतन का भाव तथा नव जागृति का सन्देश लिए जब युग पुरुष दयानन्द धर्म सस्थान एव समाज-सशोधन हेतु कार्य क्षेत्र मे अवतीण हुए तो तब लोगो ने उन्हें पहचाना ही नही। धम के नाम पर पाखण्ड की जब उन्होने धज्जिया उडानी प्रारम्भ की तो तब कोई तो उन्हे नास्तिक कहने लग पडा तो कोई ईसाइयो का गुप्त एजेण्ट। कोई कुछ, तो कोई कुछ। कि तु दुख है कि उनका वास्तविक स्वरूप ससार समझ ही नही पाया। जब कि वास्तविकता यह है कि महर्षि उन महापुरुषो में से एक थे, जो कभी युगो के पीछे उत्पन्न हुआ करते हैं। महर्षि के समकालीन अन्य सुधारक, सुधारक मात्र ही थे, किन्तु महर्षि क्रान्ति के वेग से आये। स्मरण रहे कि परिवतन जब धीरे-धीरे आता है, तो उसे सुधार कहते है, किन्तु वही जब तीव्र गति से तूफान उपस्थित होता है तब उसे परिवतन नहीं क्रान्ति कहते हैं। महर्षि ने युग को क्रान्तिकारी मोड दिया था। देखते ही देखते वे जन-नायक बन गये।

महर्षि दयानन्द के आगमन के समय देश गहरी नीद मे सोया हुआ था और स्थिति यह थी कि—'मायावाद जन्य निष्क्रियता के कारण सवत्र प्रलय कालीन "प्रसुप्तमिव सर्वत' की सी स्थिति थी। निवृत्तिवादी विचारधारा ने ढाई हजार वर्षों मे भारत को कृतयुग से चरम पतन के कलियुग तक पहुचा दिया था। वैदिक काल का 'तमसो मा ज्योतिगमय' का आदश निवृत्तिवाद के कारण 'ज्योतिषा मा तमो गमय" मे परिवर्तित हो गया था। प्रकाश से अन्धकार की ओर बढ़ने की इस करुण कहानी को देख कर फ्रेंच लेखक वाल्टेयर ने लिखा था—'उनका (भारतीयो का) मुख्य सिद्धान्त यह है कि चलने की अपक्षा बैठना अच्छा है, और बैठने की अपेक्षा लेटना तथा लेटने की अपेक्षा सोना और सोने की अपक्षा मरना अच्छा है। (द्रष्टव्य—डा० चन्द्रभानु सोनवणे विद्यालंकार रचित हिन्दी गद्य साहित्य, पृष्ठ २८) इतना ही नही—'इस मरणसम दशा के कारण भारतवासी लगातार ठोकरें खाने पर भी मुर्दों की तरह निश्चिल पडे रहे। इतना ही नही वे गुलामी की ठोकर को वरदान समझने लगे।' (भारतेन्दु के विचार—एक पुनर्विचार, लेखक वही, पृष्ठ ४)

भारतवासी अपनी प्राचीन मर्यादा, आदश सस्कृति सभ्यता, यहा तक कि धर्म और दर्शन तक को सवथा भूल चुके थे। आलस्य, प्रमाद, अविद्या और अज्ञान के कारण समाज रूढ़िग्रस्त हो चुका था। सवत्र घोर निराशा का प्रबल साम्राज्य था। समाज दु खी और पीडित था। परस्पर फूट, ऊच नीच के भेद भाव, दलितो तथा विधवाओ की दयनीय दशा आदि कतिपय ऐसे भयकर रोग थे, जो समाज के सम्पूण ढाचे को ही खोखला किए जा रहे थे। पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति इस सम्बन्ध मे यथार्थ लिखते हैं कि—"आय जाति की दशा उस समय मुक्त कण्ठ से चिल्ला-चिल्ला कर कह रही थी कि मुझे एक वैद्य की जरूरत है। आय जाति की दुदशा इस समय एक सुधारक को बुला रही थी—एक ऐसे परखैये को बुला रही थी जो उसके पीडित अगो पर शान्ति देने वाला हाथ रख सके।" (द्रष्टव्य-आय समाज का इतिहास, प्रथम भाग पृष्ठ ५५)

युग पुरुष दयानन्द का आगमन इसी पुकार पर हुआ था। अत वे युग की पुकार थे। उसकी मांग एव आवश्यकता थे। महर्षि दयानन्द ने भी तत्कालीन सारी परिस्थिति का बडी सूक्ष्मता से अध्ययन किया था और फिर बडी सोच-विचार एव तैयारी के साथ काय क्षेत्र में उतरे थे। इस सम्बन्ध में डा० विजेन्द्र-पाल सिंह का कथन है कि—"तीक्षण दृष्टि से परिस्थिति को हृदयगम कर दयानद न धार्मिक सास्कृतिक पुनर्जागरण का प्रण किया और उद्देश्य पूरयर्थ आय समाज की स्थापना की। (द्रष्टव्य भारतीय राष्ट्रवाद और आर्य समाज आन्दोलन, पृष्ठ २७-२८) वस्तुत "दूरदर्शी महर्षि उस दिव्य-दृष्टि से विभूषित थे, जो बहुत थोडे व्यक्तियो मे पाई जाती है।" (वही, पृष्ठ २८)।

महर्षि के आगमन के समय भारतवर्ष मे युग की दो प्रबलतम मागे अथवा आवश्यकताये अनुभव की जा रही थी। वे थीं—'पुनर्जागरण" और 'सुधार"। युगदृष्टा उस महर्षि ने युग की इन दोनो आवश्यकताओ को ठीक ही पहचाना था और फिर अच्छी तरह समझ कर उन्हे अपने कार्यक्रमो का प्रमुख अग बनाया था। उस समय के इतिहास पर निष्पक्ष कि तु सूक्ष्म दृष्टि डालने पर हर कोई इसी परिणाम पर पहुचेगा कि महर्षि ने युग की आवश्यकताओ को पहचानने मे कोई भूल नही की थी। जन जागरण तथा सुधार उस समय युग की दो प्रबलतम मागें अथवा आवश्यकतायें थी और आवश्यकतायें भी ऐसी कि जिनका समाधान तुरन्त अपेक्षित था। जनजागरण और सुधार—यह दोनो ही कार्य अत्यन्त कठिन कटु तथा अप्रिय होते हैं। यही कारण है कि सामान्यत सुधारकगण इसे सरलता से अगीकार नही करते। और यदि वे इस कार्य मे प्रवृत्त होते भी हैं तो सर्वथा बेमन से। प्राय जन आक्रोश का सामना करने का साहस वे नही जुटा पाते। मान-अपमान की चिन्ता न करने वाला, यहा तक कि प्राणो की भी चिन्ता न करने वाला कोई दयानन्द सरीखा दृढ-निश्चयी, वीर पुरुष ही इस कार्य मे प्रवृत्त हो सकता है। जैसे सोये हुए बालक को हठात् जगाने से वह अपनी अप्रसन्नता प्रकट करता ही है। और मचलता एव रोता भी है, वैसे ही जन जागरण मे भी लोग अपनी मोहनिद्रा और प्रमाद को त्यागने के लिए उद्यत नही होते। सुधार का कार्य तो और भी कठिन होता है क्योकि उनमें परम्पराओ एव रूढियो की परतें छोडनी पडती हैं, जिसके लिए समाज तैयार नही होता। वह अपनी उन्ही पुरानी घिसी-पिटी रूढिवादी परम्पराओ से चिपटा रहना चाहता है। अत सुधारक और उसके काय का विरोध होने लगता है। प्राय ऐसा समझा जाता है कि वह उन्हे भ्रष्ट एव गुमराह करना चाहता है। उस सुधारक के हृदय में छिपी सुधार की तीव्रतर भावना को लोग समझ नही पाते और विरोध करने लग जाते है।

सुधार की वाणी सदा कठोर लगा करती है, यद्यपि वह कठोर होती नहीं। जागृति के सदेशवाहक किसी भी सुधारक को हृदय मे करुणा रखते हुए उसे वाणी म कठोरता तो रखनी ही पडती है। इसके बिना उसका काय चल ही नहीं सकता। महर्षि दयानन्द म वणी, लेखनी आदि अभिव्यक्ति के माध्यमो मे कठोर लगते थे किन्तु वे अपने अन्त करण मे अपार करुणा समेटे एक ऐसे सहृदय महा-मानव थे कि जिनका एक-एक शब्द सुधार की दिशा मे उद्बोधक नही, युग-प्रवत्तक बन गया। नवजागरण एव सुधार के कार्यों मे महर्षि को कुछ कठोरता से काम लेना पडा। यह आवश्यक भी था। कबीर आदि सुधारको की वाणी को देखें तो उनमे भी हमे उसी कठोरता के दशन होते हैं, जो महर्षि की वाणी में दृष्टिगोचर होती है।

महर्षि को कठोरता क्यो अपनानी पडी इस सम्बन्ध मे उन्हीं के विचार देख। महर्षि का कथन है कि—"भारतवासी लम्बी तान कर ऐसी गहरी नीद सो रहे हैं कि मीठे शब्दों से तो आंख तक खोलने को समुद्यत नही होते। सुधार का तो यह नाम तक नही लेते। कुरीतियो और कुनीतियो के खण्डन रूप तडातड़ ध्वनि से भी यदि यह जग जायें तो ईश्वर का कोटि-कोटि धन्यवाद करूगा" (द्रष्टव्य-श्रीमद्दयानन्द प्रकाश, पृष्ठ ५१) जब विधर्मी लुटेरे घर में घुस-घुस कर जाति को लूट रहे हो तो फिर जाति को झकझोर कर जगाने के अतिरिक्त और चारा ही क्या है। महर्षि तो यहा तक कहते हैं कि—"ऐसे समय तो अपने सधर्म बन्धुओ को कडे हाथ से उनकी चोटिया पकड भी जगाना होगा।" (श्रीमद्दयानन्द प्रकाश ५११)।

फिर महर्षि ने यह कटु कार्य अपने किसी स्वार्थ की सिद्धि के लिए तो किया नहीं था। स्वजाति एव स्वदेश-प्रेम की उत्कट भावनाओ से ही प्रेरित होकर महर्षि ने यह अप्रिय काय अपने हाथ में लिया था। सत्य तो यह है कि महर्षि को इसका बडा मूल्य भी चुकाना पडा था। उसमें उनका अपना कथन है

(शेष पृष्ठ ५ पर)

जब-सच बोलना अपराध माना गया

—ऋषि शर्मा

हकीकत राय निडरता व बलिदान के प्रतीक थे। उन्होंने हिन्दू धर्म के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर एक नया इतिहास रचा। हकीकत राय की अमरगाथा हमारे इतिहास की एक अनमोल धरोहर है।

मुगलकाल की बात है, स्यालकोट में भागमल नामक एक व्यापारी रहता था। उसने अपने पुत्र हकीकत राय को एक मुल्ला के पास पढ़ने भेजा। हकीकत की बुद्धि बहुत तीव्र थी इसलिए उसके मुसलमान साथी उससे कुछ ईर्ष्या करते थे।

एक दिन हकीकत राय बैठा पढ़ रहा था और साथी बाहर खेल रहे थे। वे उसे जबरदस्ती बाहर खेलने के लिए ले जाने लगे परन्तु हकीकत ने कहा कि मुझे पढ़ने दो। तंग आकर बालक हकीकत राय ने कहा कि मुझे पढ़ने दो, वरना मां दुर्गा की कसम मैं मुल्ला जी को सारी बात बताकर शिकायत कर दूंगा। इस पर उसके साथियों ने दुर्गा मां को भद्दी-भद्दी गाली दी।

दुर्गा, हकीकत राय की पूज्य देवी थी। इसलिए उसे क्रोध आ गया। हकीकत राय बालक ही था गुस्से में उसने भी फातिमा को वैसी ही गालियां दी। फातिमा मुसलमानों की कोई देवी नहीं है। फिर भी उन बच्चों ने हकीकत राय की खूब पिटाई की और मुल्ला जी के आने पर उसकी शिकायत भी की। हकीकत राय ने सब बात सच सच बता दी। परन्तु इसे इस्लाम का अपमान माना गया और कहा गया कि हकीकत राय ने घोर अपराध किया है।

केस पहले काजी के पास गया और फिर लाहौर के सूबेदार के पास गया। उसने ग्यारह वर्ष के बालक हकीकत राय को मृत्यु दण्ड की सजा दी और कहा कि यदि हकीकत राय मुसलमान बन जाए तो उसके प्राण बच सकते हैं और उसे काफी सुविधाएं भी मिलेंगी।

हकीकत राय को बहुत दुःख हुआ। पहल हकीकत राय के साथियों ने की थी और उसकी पिटाई भी की। साथ ही उसका कोई कसूर भी नहीं था पर फिर भी उसको मृत्यु दण्ड की सजा दी गई। यह घोर अपराध था।

हकीकत राय धर्मात्मा बालक था। वह जानता था कि आत्मा अमर है उसे कोई मार नहीं सकता। परमात्मा पर उसका अटूट विश्वास था इसलिए वह निडर था। वह यह भी जानता था कि हिन्दू धर्म सर्वश्रेष्ठ है और हिन्दू विचार धारा सबसे अच्छी है। इसलिए उसने हिन्दू धर्म छोड़ना स्वीकार नहीं किया। दूसरे यह भी जानता था कि यदि मैं मुसलमान भी बन जाऊं तो भी मुझे एक दिन आखिर मरना ही पड़ेगा तो फिर मैं अपना धर्म क्यों छोड़ूं। इसलिए हकीकत राय ने सर झुकाना स्वीकार नहीं किया और सर कटाना ही मंजूर किया। हिन्दू धर्म की आन बान और शान के लिए ग्यारह वर्ष का छोटा सा बालक हकीकत हंसते हंसते अपना सर कटा गया उसने एक नया इतिहास लिखकर इतिहास को अमर कर दिया।

आज से लगभग २२५ वर्ष पूर्व बसंत पंचमी के दिन रावी नदी के तट पर वीर बालक का सर कलम किया गया था इसीलिए वहां आजादी मिलने तक हर वर्ष मेला लगा रहता था और लगता है।

धन्य है वह माता पिता जिन्होंने वीर हकीकत राय को जन्म दिया। हकीकत राय का बलिदान हम लोगों के लिए आंखें खोलने वाला है। जो थोड़े से लोभ के लिए या भय के कारण अपना धर्म छोड़ देते हैं, व जातियां मिट जाती हैं जो अपने शहीदों को याद नहीं रखती। अतः उस वीर पुण्यात्मा के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि है कि हम उसके आदर्शों पर चलते रहें। जब तक सूरज, चांद रहेगा, हकीकत राय का नाम अमर रहेगा। ●

बसन्त मेला

गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम (कोटद्वार) में ९ से ११ फरवरी, ९२ तक बसन्त मेला धूमधाम से मनाया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि महर्षि कण्व की तपोस्थली 'भरत' की जन्म-भूमि है जिसके नाम पर भारतवर्ष नाम पड़ा है। समारोह की अध्यक्षता श्री सत्यदेव जी भारद्वाज करेंगे।

समारोह में राष्ट्र भृत्यज्ञ राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, आर्य सम्मेलन आदि कार्यक्रम होंगे जिसमें अन्य गणमान्य आर्य नेता, विद्वान् आदि पधार रहे हैं भोजन व आवास की निःशुल्क व्यवस्था गुरुकुल की ओर से है।

बच्चों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन

अरुणोदय बाल संस्था द्वारा मार्च, १९९२ के अन्तिम सप्ताह में बच्चों के लिए चित्रकला, गायन, वादन, वाद विवाद, सुलेख, कविता पाठ आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं। विस्तृत जानकारी के लिए १५ फरवरी के प्रातः १० से ११ बजे व सायं ६ से ७ बजे तक संचालिका श्रीमती उज्जवला वर्मा से फोन नं० ५५०१८१७ या ५५६४३४६५ पर सम्पर्क करें। विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि बच्चों में देश, धर्म, संस्कृति के प्रति प्रेम एवं निर्धन व विकलांग बच्चों की सहायता के लिए इस संस्था की १८ नवम्बर, १९९० को स्थापना की गई थी। इस पुनीत कार्य में सभी आर्य महानुभावों से सहयोग अपेक्षित है।

पता—श्रीमती उज्जवला वर्मा, बी० बी० ब्लाक जनकपुरी (मीरा मण्डल स्कूल के पास), नई दिल्ली ५८।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, जहांगीरपुरी (बी ब्लाक पार्क) द्वारा आयोजित १५०० मीटर दौड़ प्रतियोगिता में श्री जसबीर सिंह (राजेन्द्र नगर) नरेन्द्र आर्य (पालम गांव) व शैलेन्द्र त्रिवेदी क्रमशः प्रथम द्वितीय व तृतीय आए। बाल वर्ग में २०० मीटर की दौड़ में गंगाराम, मौ० आबू, सुरेन्द्र जोशी तथा १०० मीटर में सुरेन्द्र अमर राजेन्द्र क्रमशः विजयी रहे। विजेताओं को श्री ठाकुर दास सपरा ने पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।

आर्य समाज बांकनेर

आर्य समाज बांकनेर दिल्ली-४० का ४१वां वार्षिकोत्सव निम्न प्रकार हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है —

शनिवार, २९ फरवरी, ९२—प्रातः ८ से १० बजे यज्ञोपदेश।

१० से ११ बजे निबन्ध प्रतियोगिता, (विषय स्वामी दयानन्द सरस्वती)

११ से ५ बजे कबड्डी (राष्ट्रीय), कुश्ती, दौड़, बालीबाल।

रात्रि—८ से १० बजे भजनोपदेश, भाषण प्रतियोगिता (आर्य समाज की प्रासंगिता)।

रविवार १ मार्च, ९२—प्रातः ८ से १० बजे यज्ञोपदेश।

१० से ३ बजे खेल प्रतियोगिता।

दोपहर ३ से ६—आर्य युवक सम्मेलन तथा पुरस्कार वितरण।

(पृष्ठ ४ का शेष)

कि— भाई। यह कटु कर्त्तव्य, मैं कोई अपने स्वार्थ के लिए तो पालन नहीं कर रहा हूं। मुझे तो इसके कारण अवहेलना, निन्दा कुवचन, ईंट पत्थर और विष ही स्थान स्थान पर मिला है। परन्तु बन्धु वात्सल्य की भावना मुझे विपत्तियों के विकट और जटिल जाल से भी समाज सुधार के लिए प्रोत्साहित कर रही है।" (द्रष्टव्य-श्रीमद्दयानन्द प्रकाश, पृष्ठ ५११)

यद्यपि महर्षि दयानन्द से पूर्व भी कई सुधारक जागृति का सन्देश लेकर आये थे, किन्तु महर्षि की बात ही कुछ और थी। उसके जागरण का स्वर ही कुछ और था। वस्तुतः वे पुनर्जागरण के परोधा और अग्रदूत थे। वे केवल एक सुधारक ही नहीं थे, युगप्रवर्त्तक थे। उन्नीसवीं शती के अन्य सुधारक, सुधारक ही थे, युगप्रवर्त्तक नहीं। यह इसलिए कि वे केवल युग-सन्धि के द्वार तक ही पहुंच कर रह गये, वास्तविक संक्रमण वे नहीं करा पाये। वास्तविक संक्रमण तो महर्षि दयानन्द द्वारा ही सम्भव हो सका। इसलिए वे युग प्रवर्त्तक कहलाए। जैसा कि डा० चन्द्रभानु सोनवणे विद्यालंकार का कथन है कि—"समाज-सुधार कार्य की दृष्टि से यह युग स्वामी दयानन्द का युग है।" (भारतेन्दु के विचार एक पुनर्विचार पृष्ठ ५२) तभी वे युग पुरुष के नाम से याद किए जाते हैं। वस्तुतः वे युग-द्रष्टा भी थे। वे सामान्य सुधारक नहीं, क्रान्तिकारी सुधारक थे। वे केवल सन्त ही नहीं, वीर योद्धा भी थे। इन्हीं कारणों से उनका व्यक्तित्व आधुनिक काल में सर्वथा अकेला, अतुल्य एवं अनुपम है। काश! हम उनके जीवन तथा उपदेशों से कोई प्रेरणा और उद्बोधन ले सकें। ●

भूकम्प पीड़ित दान सूची

श्री सौरमामण्डारी	५१)
स्त्री आर्य समाज बहावलपुर राजेन्द्र नगर	१,०००)
आर्य माडल पब्लिक स्कूल तिमारपुर	२६५)
श्री वीर सिंह	५०१)
आर्य समाज शादी खामपुर	५६१)
आर्य समाज करोल बाग	५,१००)
आर्य समाज जनकपुरी सी	४०१)
श्रीमती तारा शर्मा	२५१)
श्री सुभाष हाण्डा	१०१)
श्री सूरज प्रकाश महाजन	२०)
श्री सुरेन्द्र हाण्डा	२०)
श्री ओमप्रकाश आर्य	२१)
श्री अशीश कुमार आर्य	१२)
कपूर टिम्बर ट्रेडर्स	१०१)
श्रीमती हीराबाली बत्रा	२००)
आर्य समाज सुभाष नगर	२,६००)
श्रीमती सुशीला सूरी	१५०)
श्री रामसरण दास मलिक	१००)
श्री विजय कुमार मलिक	१०१)
श्री अनिल कुमार मलिक	१०१)
श्री रामप्रकाश मलिक	१००)
आर्य समाज कस्तूरबा नगर	३,५६६)
जन सेवक कोआपरेटिव अरबन थ्रिफ्ट सोसाईटी	५००)
श्री रतिराम वैद्य	५१)
श्री महेन्द्र हुरजाई	१०१)
आर्य समाज उत्तम नगर	१,०००)
आर्य समाज साकेत	२,९०६)
मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल	५००)
श्री चावला	५०)
श्री राजेन्द्रनाथ गोटे वाले	५०)
श्री अशोक	५०)
लाला जी टैन्ट वाले	३०)
श्री विजय कुमार गोयल	२५)
आर्य समाज डिफेंस कालौनी	१०,६०१)

विश्व शान्ति गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार, (दाल बाजार) लुधियाना, द्वारा वार्षिकोत्सव के अवसर पर १४ से १९ जनवरी, ९२ तक गायत्री महायज्ञ महात्मा सुमना यति की अध्यक्षता मे धूमधाम से सम्पन्न हुआ। हरिद्वार, योगधाम के अध्यक्ष, स्वामी दिव्यानन्द ने भी भाव प्रेरक उद्बोधन दिया।

मानव कल्याण महायज्ञ

आर्य समाज विदापुर मण्डल के तत्वावधान में २३-२-१९९२ को पश्चिम की समस्त आर्य समाजो के सहयोग से सी १ जनकपुरी पखा रोड दिल्ली निकट मेन रोड चाणक्य प्लेस मे मानव कल्याण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती सहित अनेको गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं। अधिक से अधिक सख्या मे पहुचकर आयोजन को सफल बनायें। —प० अशोक कुमार

आर्य युवक सभा पंजाब

आर्य युवक सभा, पजाब द्वारा २३ जनवरी ९२ को स्वामी सुमनायति की अध्यक्षता मे नेता जी सुभाष चन्द्र बोष की जयन्ती पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया। युवक सभा के प्रधान श्री रोशन लाल आर्य ने कहा कि प्रत्येक नागरिक को निजी स्वार्थ त्याग कर राष्ट्र निर्माण मे योगदान देना चाहिए और साथ ही सत्यमेव जयते के अनुसार सच्चाई को जीवन मे धारण करना चाहिए।

॥ बसन्त ॥

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

आया ऋतुराज बसन्त—ले करके छटा निराली।
पचम स्वर लागिनी कोयल ने आवाज लगाई।
मृदुतर वाणी बोल बोल कर देने लगी बधाई॥
चहुक उठी चचल चिड़ियाये होकर के मतवाली।
पतझड़ वृक्षो मे फिर से आने लगी हरियाली॥
हो गया विदा हेमन्त—लेकरके छटा निराली॥ १॥
जौ गेहू और मटर चना अरहर लिये तरुणाई।
पीली पीली सरसो फूली खेत रहे लहराई॥
मखमल सा हरियाली का भूपर बिछ रहा बिछौना।
उगल रहा हीरे मोती भारत का कौना कौना॥
हो रहा शीत का अन्त—ले करके छटा निराली॥ २॥
शीतल मलय बयार सुगन्धित आया मस्त महीना।
आलू बैंगन मेथी गोभी खड़े तान कर सीना॥
लाल लाल फूलो से सैमल ढाक लदे छविछाई।
सुख शृगार बहार प्यार का मौसम है सुखदाई॥
ऋतुराज बसन्त महन्त—ले करके छटा निराली॥ ३॥
मौसम मन भावन फागुन का सुखद महीना आया।
बजे ढोल डफ ढोलक चिमटा उर आनन्द समाया॥
छै ऋतुओं राजा लाया नूतन शान निराली।
कहे स्वरूपानन्द हो रही घर घर मे खुशहाली॥
गाये प्रभु गुण साधु सन्त—लेकर के छटा निराली।
आया ऋतुराज बसन्त—ले करके छटा निराली॥

शोक समाचार

कर्मठ कार्यकर्त्ता एव दानवीर श्री चन्द्रप्रकाश घई का विगत मास दु खद निधन हो गया। श्री घई का स्वभाव बहुत मधुर व मिलनसार था। तन, मन, धन से आर्य समाज के उत्थान के लिए समर्पित श्री घई ने आर्य समाज मन्दिर, पालम कालौनी का सत्सग घर बनवाया था। समाज मन्दिर में २६ जनवरी, ९२, को आयोजित श्रद्धाजलि सभा मे श्री घई की सेवाओ का स्मरण कर उनकी दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई।

—गुरुकुल भैंसवाल के आचार्य महामुनि का कुलभूमि मे १९ दिसम्बर को स्वर्गवास हो गया। वे ८२ वर्ष के थे। आचार्य जी भक्त फूलसिंह के मानस पुत्र थे और उन्होने आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए गुरुकुल भैंसवाल की समर्पित भाव से सेवा की।

२९ दिसम्बर को गुरुकुल की यज्ञशाला मे स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता मे शान्ति यज्ञ आयोजित किया गया। बाद में एक शोक सभा मे आचार्य जी को भाव-भीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

—सिगरौली वालरी आर्य समाज के मन्त्री व कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री वेद प्रकाश आर्य का ७ जनवरी, १९९२ को निधन हो गया है। महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी, व शिक्षाविद् श्री वेदप्रकाश जी आर्य बहुत लोकप्रिय थे। अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। श्री आर्य ७५ वर्ष के थे। ८ जनवरी को पूर्ण वैदिक रीति से चटका नाला श्मशान घाट पर अन्तिम सस्कार हुआ। १० जनवरी को दोपहर ३ बजे डा० राकेश आर्य के निवास पर शान्ति यज्ञ व शोक सभा हुई।

कला व विधि महाविद्यालय के प्राचार्य श्री बी० पी० पाण्डेय, आर्य समाज सिगरौली के प्रधान सेठ माता प्रसाद, प० बिन्दा प्रसाद चतुर्वेदी, केन्द्रीय अस्पताल अनेक सस्थाओ के गणमान्य महानुभावो ने श्री आर्य जी की सेवाओ का स्मरण कर उन्हे श्रद्धाजलि अर्पित की।

शुद्धि समाचार

आर्य समाज पोरबन्दर द्वारा सुश्री एशिया बेगम सुपुत्री श्री मोहम्मद, को प० वैरागी तिवारी के पौरोहित्य मे २१ जनवरी, ९२ को सम्पन्न हुए शुद्धि संस्कार मे वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। 'राधिका' नाम रखा गया। तत्पश्चात श्री जगदीश भाई सुपुत्र श्री लक्ष्मण भाई, आयु २९, के साथ विवाह सम्पन्न हुआ।

(पृष्ठ २ का शेष)

सन्ध्या एक चिन्तन (२)

सग्रह करके देह मे रख देता है और आत्मा उनका सदुपयोग करके उनसे लाभ प्राप्त कर लेता है। जीवात्मा ने भूमि से अन्न उत्पन्न कर लिया किन्तु वह वायु या प्राण उत्पन्न नही कर सकता है वह उसे परमात्मा की सहायता से मिलता है। इस प्रकार अन्नमय एव प्राणमय दो कोषो से भौतिक शरीर गठित हो जाता है। जीवात्मा अपने मन को जगाता है तो परमात्मा उस मन में अपना विज्ञान मिला देता है। इस प्रकार मनोमय एव विज्ञानमय कोष से आध्यात्मिक शरीर सगठित हो गया। स्थूल और सूक्ष्म दोनो सत्ताओ के सक्रिय योगदान से आनन्दमय कोष मे जीवात्मा की गति हो गई, क्योकि परमात्मा तो वहा पहले ही से था। जीवात्मा ने उससे साझा ही इसलिए किया था कि जो लाभ उसके पास है वह मुझे भी मिल जाए। 'अभीष्टये' चू कि भौतिक अश है जिसमे अन्नमय एव प्राणमय कोष आते हैं, जैसा कि ऊपर कहा है कि इसमे भी दोनो का साझा है। बिना परमात्मा के भौतिक पदार्थों का अस्तित्व भी असम्भव है। पीतये मे आध्यात्मिक अश है— जिसमे मनोमय एव विज्ञानमय कोष आते हैं, इसमें भी जीवात्मा एव परमात्मा दोनो का ही साझा है। मन्त्र का 'शम्' शब्द जीवात्मा को इन कोषों के पार जाकर आनन्दमय कोष में पहुंचने की बात कहता है।

हमने ऊपर बहुतायत मे जल' शब्द का प्रयोग किया है। इसे मात्र जल— यह भौतिक जल जो सदा ऊपर से नीचे की ओर स्वय बहता है, उसी पर सीमित मत हो जाना। आप नाम जल का है तो आप नाम प्रभु का भी है। 'ता आप स प्रजापति' (यजु० ३२) सब शान्ति कामनाओ को प्राप्त कराने वाले वह प्रभु ही हैं। यह गुण जल में भी है। तो हाथ मे जल आये गले मे जल जाये किन्तु मन में ध्यान प्रभु का आये, क्योकि मौलिक शान्ति तो उसी मे है। यहा पर जल के विनियोग का सावधानी से लाभ लेना चाहिए। प्रभु के पीछे जल है न कि जल के पीछे प्रभु है। जैसे किसी ने कोई सुन्दर वस्त्र धारण किया और कुछ काल बाद शरीर स्थूल हो गया तो उस सुन्दर वस्त्र को धारित रखने के लिए क्या शरीर की छटाई कर दी जाए। शरीर के पीछे वस्त्र है न कि वस्त्र के पीछे शरीर है। सभी कामनाओ की पूर्ति कराने वाली प्रभु की करुणा धारा-स्नेहधारा-वात्सल्यधारा निर्झर झील, सरिता, कूप मे है क्या, पत्ते पत्ते और कण कण मे नही है? अवश्य है। इसीलिए तो हम इस ब्रह्मयज्ञ की यात्रा पर प्रस्थान से पूर्व मां जगदम्बा का आशीर्वाद लेकर आगे बढ रहे हैं। यही भौतिक एव आध्यात्मिक शान्ति तो हमारा लक्ष्य है। (क्रमश)

(पृष्ठ ३ का शेष)

महर्षि दयानन्द सरस्वती

सुप्रसिद्ध योगी श्री अरविन्द ने महर्षि का चरित्र चित्रण इस प्रकार किया है—

'दयानन्द दिव्य ज्ञान का सच्चा सैनिक तथा विश्व को प्रभु की शरण में लाने वाला योद्धा था। वह मनुष्यो और सस्थाओ का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा आत्मा के मार्ग मे उपस्थित की जाने वाली बाधाओ का वीर विजेता था। उसके व्यक्तित्व की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है—

एक मनुष्य जिसकी आत्मा में परमात्मा है चक्षुओं मे दिव्य तेज है और हाथों मे इतनी शक्ति है कि जीवन तत्त्व मे से अभीष्ट स्वरूप वाली मूर्ति गढ़ सके तथा कल्पना को क्रिया मे परिणत कर सके। वे स्वय एक दृढ चट्टान थे। उनमे ऐसी दृढ़ शक्ति थी कि चट्टान पर घन चलाकर पदार्थों को सुदृढ और सुडौल बना सके।'

महर्षि दयानन्द की यह धारणा कि वेद मे धर्म और विज्ञान दोनो की सच्चाइया पाई जाती हैं कोई उपहासास्पद अथवा कल्पित बात नही है। वैदिक व्याख्या के विषय म मेरा यह विश्वास है कि वेदो की सम्पूर्ण अन्तिम व्याख्या कोई भी हो महर्षि दयानन्द का यथार्थ निर्देशों के प्रथम आविर्भाविक के रूप मे सदा मान किया जाएगा। पुराने अज्ञान और पुराने युग की मिथ्याज्ञान की अव्यवस्था और अस्पष्टता के बीच में यह उसकी ऋषि दृष्टि थी कि जिसने सच्चाई को निकाल लिया और उसे वास्तविकता के साथ बाध दिया। समय ने जिन द्वारों को बन्द कर रखा था उनकी चाबियों को उसने पा लिया और बन्द पड़े हुए स्रोत की मुहरो को उसी ने तोडकर परे फेंक दिया।

सुप्रसिद्ध योगी श्री अरविन्द जी के ये विचार निश्चय ही ऋषिवर के जीवन को स्पष्ट एव मूर्त्त विचारणा विच्छित्ति प्रदान करते हैं। धार्मिक नेता के रूप मे उभरे ऋषिवर ने सामाजिक, राजनैतिक एव आर्थिक सभी क्षेत्रो मे अपनी अमिट छाप छोडी। शिक्षा और सत्य धर्म के लिए उन्होने अपनी मौलिक व्याख्या प्रदान की। जिन्होने उनका घोर विरोध किया था, वे भी भले ही शब्दो मे उनका आभार न माने पर कार्य रूप मे उनका अनुसरण कर रहे हैं। अनेक सामाजिक, राजनैतिक कार्यक्रम इसके स्पष्ट एव सबल प्रमाण हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मोत्सव पर हमारे विनत श्रद्धा सुमन।

—डा० धर्मपाल

आर्यसन्देश–दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 6 / 2-1992 Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल-११०२४/९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) १३९/९१
साप्ताहिक "आर्यसन्देश" ९ फरवरी, १९९२

श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ विश्व हिन्दी सम्मान से अलकृत

नई दिल्ली। मोरीशस के प्रधान मत्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ को पचम अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सगोष्ठी मे विश्व हिन्दी सम्मान से अलकृत किया गया। यह तीन दिवसीय कार्यक्रम विश्व साहित्य सस्थान द्वारा २८ से ३ जनवरी ९२ तक आयोजित किया गया था। इस अवसर पर ब्रिटेन के श्री अशोक प्रियदर्शी, जमन के डा० सत्यनारायण शर्मा एव इण्डोनेशिया के श्री धमयश को भी विश्व हिन्दी सम्मान' से अलकृत किया गया। सगोष्ठी का उद्घाटन केन्द्रीय मानव ससाधन मन्त्री श्री अर्जुन सिंह ने किया।

रेल मन्त्रालय राजभाषा विभाग के निदेशक श्री विजय कुमार मल्होत्रने। सगोष्ठी मे अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सरकार को कम्प्यूटर मे हिन्दी के प्रयोग की व्यवस्था सुनिश्चित करनी चाहिए।

उल्लेखनीय है कि विश्व साहित्य सस्कृति सस्थान द्वारा सन् १९८७ मे प्रथम हालैण्ड की राजधानी हेग मे द्वितीय तथा दिल्ली मे तृतीय व चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सगोष्ठिया आजोजित की जा चुकी है। आगामी छठी सगोष्ठी मोरीशस मे होगी।

सस्कृत भारतीय सस्कृति का अभिन्न अग है

सस्कृत अकादमी द्वारा २९ जनवरी ९२ को प्यारलाल भवन नई दिल्ली मे गणतत्र दिवस के उपलक्ष्य मे एक अखिल भारतीय सस्कृत कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन मे दिल्ली असम बगाल महाराष्ट्र तमिलनाडू कर्नाटक, करल,पजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि स्थानो के कवियो ने काव्य पाठ मे भाग लिया।

दिल्ली के उपराज्यपाल श्री मार्कण्डेय सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप मे अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि विभिन्न धर्मों, सस्कृतियो, परम्पराओ के बावजूद भारत अनेकता मे एकता का देश है। कवि युगद्रष्टा होता है तथा समाज का प्रहरी है।

इस अवसर पर दिल्ली प्रशासन के वित्त आयुक्त श्री सेवाराम शर्मा ने कहा कि सस्कृत भारतीय सस्कृति का अभिन्न अग है और सस्कृत कविता पाठ युवको मे देश प्रेम का उत्साह जागृत करता है। उन्होने आगे कहा कि सस्कृत केवल एक भाषा ही नही अपितु अमृत है।

अकादमी के सचिव श्रीकृष्ण सेमवाल ने कवि सम्मेलन का सचालन किया।

संस्कृत को १२वीं तक जरूरी विषय बनाए

दिल्ली। सम्पूर्णानन्द विश्व विद्यालय के पूर्व कुलपति डा० राजदेव मिश्र ने २७ फरवरी को आयोजित सस्कृत प्रचारक सम्मेलन मे कहा कि सस्कृत की पढाई को १२वी कक्षा तक जरूरी विषय बनाने के लिए अखिल भारतीय सस्कृत महा-सम्मेलन सरकार से शीघ्र बात करेगा। डा० मिश्र सस्कृत महासम्मेलन के अध्यक्ष हैं। उन्होने आगे कहा कि संस्कृत शिक्षा से ही सभी सामाजिक समस्याओं का हल निकल सकता है।

प० विमलदेव भारद्वाज ने कानपुर, फतेहपुर, कश्मीर आदि से पधारे प्रतिनिधियो का स्वागत किया। उन्होने कहा कि सहयोग की भावना से सस्कृत को सम्मानजनक स्थान दिलाया जाना चाहिए।

सेवा में—

2367 श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ प्र)

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी०(एल०-११०२४/९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५ अंक १५ | रविवार १६ फरवरी १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्य के शोधक और साधक थे —डा० शंकरदयाल शर्मा

महर्षि के जन्म दिवस पर सरकारी अवकाश की मांग

दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस समारोह सम्पन्न

दिल्ली १२ फरवरी। नई दिल्ली के हिमाचल भवन के सभागार में दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की ओर से आयोजित महर्षि दयानन्द जन्म दिवस पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए महामहिम डा० शंकर दयाल शर्मा उपराष्ट्रपति भारत सरकार ने कहा कि महर्षि दयानन्द सत्य के शोधक और साधक थे। उन्होंने खोये हुए सत्य की खोज और सत्य के अनुकूल जीवन में आचरण का भारत में ही नहीं अपितु विश्व के सामने वैदिक जीवन का सच्चा आदर्श प्रस्तुत किया था। उनका यह सत्य केवल दार्शनिक और आध्यात्मिक ही नहीं अपितु व्यावहारिक भी था। गुजराती भाषी होते हुए भी उन्होंने अपने विचारों के प्रचार माध्यम के लिए हिन्दी को चुना और हिन्दी को ही राष्ट्र भाषा के रूप में प्रतिष्ठित कराने का प्रयास किया। स्वामी जी ने सत्य अहिंसा और करुणा को धर्म का सही रूप माना था बिना इन्हें अपनाए कोई भी व्यक्ति समाज या राष्ट्र कभी उन्नति नहीं कर सकता। स्वामी जी ने स्वस्थ एवं प्रगतिशील समाज की स्थापना के उद्देश्य से ही १८७५ में सर्व प्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी उस युगपुरुष दयानन्द के १६८वें जन्म दिवस पर मैं उन्हें हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए राष्ट्रवासियों से उनके आदर्शों और सिद्धान्तों पर आचरण करने की अपील करता हूं।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि स्वामी दयानन्द का जन्म दिन आज पूरे विश्व की आर्य समाज मना रही हैं। उस महापुरुष का १८५७ के स्वतन्त्रता आन्दोलन में बड़ा भारी योगदान रहा था। वह चाहते थे कि भारत राष्ट्र अलग अलग खण्डों में न रह कर कन्याकुमारी से कश्मीर तक अखण्ड रूप में रहे और राष्ट्रवासी सगठित रहकर इसको शक्ति दें। स्वामी जी ने भारत सरकार से अपील करते हुए कहा कि अन्य महापुरुषों की तरह महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस पर भी सरकार अवकाश घोषित करे।

इस अवसर पर भारत सरकार के ग्रामीण विकास मन्त्री श्री जी० वंकट स्वामी पूर्व सांसद श्री रामचन्द्र विकल अखिल भारतीय सनातन धर्म सभा के महामन्त्री श्री रमाकान्त गोस्वामी प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प्रो० उत्तमचन्द शरर और आचार्य यशपाल सुधांशु ने भी महर्षि दयानन्द के प्रति अपने अपने विचार व्यक्त किए।

समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सूर्यदेव मन्त्री डा० धर्मपाल आर्य केन्द्रीय सभा के डा० शिवकुमार शास्त्री प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रमनाथ सहगल माता सरला मेहता तथा अन्य अनेक विद्वतजन उपस्थित थे।

—सच्चिदानन्द शास्त्री (मन्त्री सभा)

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत के तत्वावधान में—

(सिंहस्थ) कुम्भ मेला उज्जैन में विशाल महायज्ञ एवं वैदिक धर्म प्रचार का भव्य आयोजन

(१७ अप्रैल १९९२ से १६ मई १९९२ तक)

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत के तत्वावधान में उज्जैन सिंहस्थ मेले के अवसर पर १७ अप्रैल से १६ मई १९९२ तक एक विशाल धर्म प्रचार का शिविर लगाया जायेगा। जिसमें निरन्तर एक महीने तक प्रातः सायं चारों वेदों का पारायण यज्ञ नेत्र चिकित्सा शिविर गोरक्षा सम्मेलन राष्ट्रीय एकता सम्मेलन वेद सम्मेलन राष्ट्रीय भाषा सम्मेलन आदि का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर देश के सुप्रसिद्ध सन्यासी वेदोपदेशक धर्म उपदेशक भजनोपदेशक एवं देश विदेश के अनेक नेताओं को आमन्त्रित किया गया है।

इस समारोह के आयोजन में निरन्तर एक महीने तक निःशुल्क ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई है। जिसके लिए श्री सेवाराम जी आर्य के सद्प्रयासों से २५० कुन्तल गेहूं अब तक एकत्रित किया जा चुका है। देश की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं आर्य समाजों शिक्षण संस्थाओं एवं सभी दानी महानुभावों से अपील है कि इस धार्मिक महान् समारोह की सफलता हेतु अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर १२ वर्षों के पश्चात् होने वाले इस महान् यज्ञ को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग करें।

—सत्यानन्द प्रधान

सम्पादक—प्रो० सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

सन्ध्या से हो अन्नमय कोष का पोष—३

—देव नारायण भारद्वाज

(अंग स्पर्श प्रक्रिया)

आचमन के बाद सन्ध्या का दूसरा प्रकरण आता है, अंग स्पर्श। आचमन मे जहा जल को पीते हुए—उदरस्थ या कण्ठगत करते हुए प्रभु से प्रार्थना की थी कि वह हमें जल के सदृश शान्ति या शीतलता प्रदान करे। अंग स्पर्श में जल को पीते नहीं हैं, अपितु ऊपर से ही अंगो का जल स्पर्श कराते हैं। इसका आशय यह तो हो नहीं सकता है कि जल से शरीर को स्वच्छ किया जाए। यह तो हम पहले ही भरपूर स्नान कर चुके हैं। यहा तो जल को प्रतीक मानकर शरीर के अंगो की बाहरी एव भीतरी शक्ति की प्रभु से प्रार्थना की गई है। इसके लिए विनियुक्त मन्त्र का अध्ययन करें।

ओ३म् वाक् वाक। ओ३म् प्राण प्राण। ओ३म् चक्षु चक्ष। ओ३म् श्रो३म् श्रोत्रम्। ओ३म् नाभि। ओ३म् हृदयम्। ओ३म् कण्ठ। ओ३म् शिर। ओ३म् बाहुभ्या यशोबलम्। ओ३म् करतल कर पृष्ठे।

अर्थ–हे प्रभु हमारे उपरोक्त अंगो के माध्यम से सम्पूर्ण शरीर को बल और इस बल से हमें यश प्राप्त होवे। आइए इस प्रकरण पर आगे विचार करें। जैसे कोई व्यवसायी प्रात को अपना प्रतिष्ठान खोलता है अथवा सायकाल को बढाता है अर्थात् बन्द करता है, तो अपनी सम्पदा की समीक्षा करता है और उसे बढाते रहना अथवा सुदृढ करते रहना ही उसका ध्येय होता है। दुकान को बन्द करने के लिए इसीलिए बढ़ाना शब्द कहा जाता है, बन्द करना नही कहा जाता है। वैसे ही उपासक को अपने शरीर के स्वास्थ्य एव शौर्य की समीक्षा कर लेनी चाहिए और इस शरीर को सम्पुष्ट करना ही प्रेय है। जीवात्मा ही तो इन्द्र है इन्द्र के जो शारीरिक साधन हैं वही इन्द्रिया है। यहा पर यह सभी अंग इन्द्रियो के रूढ अर्थ मे नही यौगिक अर्थ मे प्रयुक्त हुए हैं। ईश्वर की दी हुई जो ज्ञान की सूचक सुख दुःख की बोधिका है–वही तो इन्द्रिया हैं। इनमें उस प्रभु की ही शक्ति कार्य करती है। उसी प्रभु से प्रार्थना की जाती है कि वह इन इन्द्रियो की शक्ति को सक्रियता प्रदान करता रहे। इन अंग इन्द्रियो के दो भाग होते हैं—एक उसके आकार-प्रकार के ऊपरी गोलक जो स्थूल और ऊपर से दिखाई देते हैं, दूसरा भाग है उनकी शक्ति स्वरूपी सूक्ष्मेन्द्रिय। इन मन्त्रों मे दोनो भागो के बलवान होने की प्रार्थना की गई है और केवल बलवान ही नही उन्हे यशवान भी बनाना है।

वैसे भी उपरोक्त अंगो के स्पष्ट रूप से दो कार्य होते है, जो निम्न तालिका मे सूचीबद्ध किए जाते हैं—

वाक् वाक्—प्रथम कार्य वाणी	द्वितीय कार्य—रसना केन्द्र
प्राण प्राण —प्रथम कार्य श्वास	द्वितीय कार्य—उच्छवास
चक्षु चक्षु —प्रथम कार्य दृष्टि	द्वितीय कार्य—अन्तर्दृष्टि
श्रोत्रम् श्रोत्रम्—प्रथम कार्य श्रवण	द्वितीय कार्य—अन्तर्ध्वनि
नाभि —प्रथम कार्य प्रजनन	द्वितीय कार्य—कर्मेन्द्रिय केन्द्र
हृदयम्—प्रथम कार्य—रक्त सचार	द्वितीय कार्य—ज्ञानेन्द्रिय केन्द्र
कण्ठः—प्रथम कार्य रस ग्रहण	द्वितीय कार्य—रसीले शब्दोच्चारण
शिर –प्रथम कार्य बुद्धि	द्वितीय कार्य–ज्ञानेन्द्रिय एव कर्मेन्द्रिय के मूल केन्द्र
बाहुभ्याम्—प्रथम कार्य यश	द्वितीय कार्य—बल
करतल कर पृष्ठे—प्रथम कार्य सम्पन्नता	द्वितीय कार्य—दानशीलता

इस प्रकार प्रभु से प्रार्थना के साथ-साथ हमारा प्रयत्न भी होना चाहिए जिससे इन अंगो मे पर्याप्त शक्ति रहे जिससे यह दोनो कार्य करती रहे। शरीर मे कुछ अंग तो दो-दो हैं, कुछ अकेले ही हैं, जो ऊपर के सम्बोधन से स्पष्ट है। अंग स्पर्श का क्रम भी एक विचित्र उद्बोधन देता है। वाक् वाक् से ऊपर उठकर प्राण प्राण पर आयें, प्राण प्राण से चक्षु चक्षु पर आय, चक्षु चक्षु से ऊपर श्रोत्रम् श्रोत्रम पर आ जाय। इस क्रम मे हमे ऊपर ही ऊपर उठना है—प्रगति करना है गिरना नही है। जो वाणी और रसना के सयम से काम लेगा, वही प्राणवान हो जाएगा। यह प्राणवान व्यक्ति ससार की वस्तुओ को ऊपर से तो देखे, किन्तु उनकी आन्तरिक स्थिति को भी परखे, तभी सफल होगा। देखने मे तो प्राकृतिक फूलो से प्लास्टिक के फूल कम सुन्दर नही लगते हैं, किन्तु उनमें सुगन्ध कहा। देखने मे मिट्टी के फल कम आकर्षक नही लगते, किन्तु उन्हे खाया नही जा सकता है। इसीलिए देखने वाले को सुनना भी चाहिए। देखने का भ्रम किसी से पूछकर उसके उत्तर को सुनकर ही दूर हो सकता है। केवल बकवाद ही न करो, प्राणो का सचय भी करो, प्राणवान बनकर उद्दण्ड न हो जाओ, ससार की समीक्षा भी करो केवल अपनी दृष्टि—समीक्षा पर ही न निर्भर रहो, किसी अनुभवी की सुन भी लो, तभी उच्चता प्राप्त होगी। आचमन मन्त्र मे जो अभिष्टये शब्द है अर्थात् इष्टानन्द का ज्ञान हम इन्ही चार अंगो से कर सकते हैं। इसीलिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु हमें आपने इन अंगो को तो प्रदान किया है इनमे अपनी शक्ति भी दी है, उस शक्ति को बनाये रखना प्रभु! अपवाद यह भी हो सकता है कि इनमे से किसी इन्द्रिय से प्रभु ने हमे वचित कर दिया हो—हमारे कर्मों के फल के कारण तो प्रभु उसकी शक्ति से तो वचित मत कर देना।

यह ज्ञान चतुष्टय की बात हुई। अब कर्म चतुष्टय पर ध्यान दिया जाए। यहा भी ऊपर ही उठने का क्रम है—नीचे गिरने का कदापि नही। नाभि से हृदय, हृदय से कण्ठ, कण्ठ से सिर तक एक-एक सोपान चढकर हम उच्च बन जाये। नाभि प्रजनन मे सहायक तो हो, किन्तु गर्भ धारण या अंकुरण से ही हमारे पोषण मे भी सहायक बनी रहे। जननी मा एव धरती मा इस नाभि नाल से ही भ्रूण को पोषण देना आरम्भ कर देती है। यह कर्मेन्द्रियो का केन्द्र होने के कारण–यदि जरा भी नाभि अपने आसन से डोल जाती है तो शरीर के समस्त कार्यों मे व्यवधान आ जाता है। हमारा हृदय जो तीन अक्षरो का सकुल है। हृ+द+य–हृ हरण करना, द=दान करना, य=यान करना अर्थात् शरीर के रक्त को अपनी ओर खींच ले, फेफड़ो मे शुद्धिकरण के बाद वापिस दान भी कर दे वही नही जहां-जहा से खींचा था, वहा वहा पहुचाने के लिए यान का काम भी करता रहे। ज्ञानेन्द्रियो एव कर्मेन्द्रियो की क्षमता में हृदय का अपूर्व योगदान है, हे प्रभु आप बनाए रखें। हृदय से ऊपर उठकर अगले सोपान कण्ठ पर आ जावें। मुख से जो पदार्थ हमने खाये हैं–उनका रस उदर भण्डार मे भेजने की प्रणाली हमारा कंठ है। इन्ही पदार्थों से ही तो रक्त बनता है। हे प्रभु! यह प्रणाली ही हमारी अवरुद्ध न हो जाए, स्वच्छ एव स्वस्थ रहते हुए यह अपना कार्य करती रहे। फिर शब्दो का उच्चारण भी बिना कण्ठ की सहायता के कहा सम्भव है, अस्तु इससे मधुर रस का ग्रहण ही नहीं, मधुर शब्दो का उच्चारण भी होता रहे। कंठ से ऊपर अगले सोपान सिर पर हम पहुच गए। कण्ठ एव सिर के बीच में जो अंग हैं उनका वर्णन तो पहले ही हो चुका है। सिर पर सुदृढ ढक्कन चढा है, जिसके अन्दर बुद्धि तथा ज्ञान कर्मेन्द्रियो के मूल तन्तु भी सकलित हैं। यही तो ज्ञानेन्द्रियो द्वारा भेजी गई सूचनाओ के आधार पर कर्मेन्द्रियो को आदेश दिया जाता है। हे प्रभु! यह शिर हमारा स्वस्थ एव कार्यशील बना रहे। स्कूटर पर यात्री ने हेलमेट लगाकर यात्रा आरम्भ की है, यह तो कभी न कभी छूट भी सकता है। हे प्रभु! तू ही हमारा हेलमेट है तो इसकी रक्षा एव कार्यशीलता के लिए आपके अतिरिक्त हम किस पर निर्भर रह सकते है। आचमन मन्त्र के 'पीतये' शब्द के प्रतीक रूप मे ही तो यह चारो अंग उपस्थित होते हैं। इष्टानन्द का भान या ज्ञान या चयन जो हमने पहले चार अंगो मे कर लिया था, अब इन चार अंगों से हम उस आनन्द का पान करते हैं। नाभि भी भ्रूण को रस का पान कराती है, हृदय भी शरीर को पवन एव प्राण वायु का पान कराता है, कण्ठ तो प्रत्यक्ष रूप से समस्त रसो को उदर भण्डार मे पहुचाते हुए दिखाई ही देता है। सिर मे स्थित आज्ञा चक्र से सम्पूर्ण शरीर को सभी प्रकार मधुपान प्राप्त होता है।

इस प्रकार पहले चार अभीष्टये ज्ञान सूचक हैं, दूसरे चार पीतये' सुख पूर्वक कर्म कारक हैं। शेष दो शम् इन दोनो के परिणाम प्रतीक हैं। 'बाहुभ्याम् यशोबलम्' उपरोक्त सभी अंगो में सृजित बल का प्रदर्शन या प्रयोग हमारी बाहुओ से होता है। हम जो करते है जैसे लिखना भोजन बनाना, मकान बनाना यन्त्र बनाना, कहा तक लिखे—सभी कार्य इन्हीं से करते हैं। हे प्रभु! हमारी भुजाओ मे पर्याप्त बल बना रहे, बल के प्रयोग से हमें निरन्तर यश प्राप्त हो। बल तो ऐसे

(शेष पृष्ठ ७ पर

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

वैदिक धर्म एवं संस्कृति की संवाहक पत्र-पत्रिकाएं



महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना करके जाति पर महान उपकार किया है। उन्होंने वेदादि शास्त्रों के पठन पाठन पर बल दिया तथा सभी मनुष्यों से अपेक्षा की कि वे तदनुसार ही आचरण करें। जीवन में अनेक संघर्ष हैं, अनेक आपदाएं हैं, इनसे छुटकारा पाने का एक मात्र उपाय है वेद आज्ञा के अनुसार जीवन यापन। इसके अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग है भी नहीं। बस यही एक रास्ता है। मनुष्य यदि सच्चा मनुष्य बन जाए, तभी उसका स्वयं का, परिवार का, समाज का तथा राष्ट्र का कल्याण है, अन्यथा नहीं। वेद का आदेश है कि तुम मनुष्य बनो, श्रेष्ठ बनो, आर्य बनो तथा सभी को आर्य बनाओ। आर्य समाज के व्याख्याता, भजनोपदेशक निरन्तर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं। साहित्य के माध्यम से भी यह कार्य सुचारू रूप से किया जा रहा है। पिछले दिनों कुछ वैदिक पत्रिकाएं पढ़ने का सुअवसर मिला, उनका संक्षिप्त विवरण यहां पर दिया जा रहा है।

वेद ज्योति :

पिछले दिनों वेद ज्योति (ज्ञान ज्योति) त्रैमासिक पत्रिका के दो अंक प्राप्त हुए। वर्ष ३ के अंक २ और ३ सावन से पौष मास संवत् २०४८ के हैं। नेपाली भाषा के माध्यम से वैदिक धार्मिक साहित्यिक ज्ञान विज्ञान का प्रचार-प्रसार करने के लिए इस पत्रिका के संस्थापक—व्यवस्थापक श्री मेघप्रसाद उपाध्याय दाहाल प्रशंसा एवं अभिनन्दन के पात्र हैं। वैदिक धर्म का प्रभाव क्षेत्र किसी एक स्थान विशेष तक सीमित नहीं किया जा सकता। परमात्मा का यह ज्ञान सार्वभौमिक, सार्वकालिक एवं सार्वजनिक है। इन अंकों में ऋग्वेद के मन्त्रों का सरस सरल भाषा में शब्दार्थ भावार्थ एवं व्याख्या दी गई है। मनुष्य के जीवन का अन्तिम ध्येय इस जीवन में मनुष्य बनना है। ये वेद मन्त्र निश्चय ही उसे सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाने में सहायक होंगे। इन अंकों में श्री मेघप्रसाद उपाध्याय दाहाल के अतिरिक्त सुश्री रमा दाहाल, प० छविलाल पोखरेल, श्री ठाकुरप्रसाद कोइराला, डा० स्वामी प्रपन्नाचार्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती श्री धर्मदेव सिद्धान्तालंकार के सामयिक लेख संकलित हैं। डा० जयदत्त उप्रेती का लेख ऋग्वेद में राष्ट्रीयता का भाव एक नई ऊर्जा प्रदान करता है। इस पत्रिका में सम्पादक के नाम पत्रों को भी स्थान दिया गया है। इस पत्रिका का मूल्य है सदस्य बनना और सदस्य बनाना। निश्चय ही वेद प्रचार के इस सारस्वत अनुष्ठान को दानी महानुभावों के सहयोग से ही पूरा किया जा सकता है। अतः सुधी विद्वानों का कर्त्तव्य है कि वे इस पत्रिका के लिए अपने लेख भेजें तथा दानदाताओं का कर्त्तव्य है कि वे इस पत्रिका के सम्पादक को दान भेज कर यश के भागी बनें। पत्रिका का पता इस प्रकार है—श्री मेघप्रसाद उपाध्याय दाहाल, संस्थापक एवं व्यवस्थापक, वेद ज्योति (ज्ञान ज्योति) विराट नगर-१६, पाचाली, नेपाल।

तपोभूमि :

तपोभूमि पत्रिका का वर्ष ३१ का अंक १, दिसम्बर १९९२, पौष २०४८ अंक स्वामी सत्यानन्द जन्म शताब्दी समारोह की सूचना दे रहा है। आचार्य प्रेम भिक्षु जी का उद्बोधन है—हमारी झोली भर दीजिए। भारत मां के प्यारो, मानवता के दुलारो, रामकृष्ण की संस्कृति के पहरेदारो, प्यारे ऋषि भक्तो! सावधान, उठो, जागो! और याद रखो—भारत का उद्धार और विश्व का कल्याण मात्र वेद की शरण में ही होगा। इसके लिए, आर्य विद्या प्रचार व वैदिक विद्वानों—मिशनरियों के निर्माणार्थ वैदिक साहित्य के निर्माण प्रकाशन प्रचार-प्रसार के लिए, ग्राम प्रचार, गोरक्षा हिन्दी रक्षा, नैतिक जागरण के लिए, स्वामी सत्यानन्द स्मारक निधि में अपनी पवित्र कमाई में से खुल कर दान दें। समारोह का आयोजन ७ से ९ फरवरी तक श्री विरजानन्द साधनाश्रम, वेद मन्दिर मथुरा में किया जा रहा है। समारोह में परिवार व मित्रों सहित पधारें, सादर स्वागत है।

आचार्यवर श्री प्रेम भिक्षु जी का यह आमन्त्रण सभी के लिए है। हम सभी का कर्त्तव्य है कि इस पवित्र अनुष्ठान में यथाशक्ति तन, मन, धन से सहयोग दें और दिलाएं। कार्य का विस्तृत विवरण भी इस अंक में दिया गया है।

सदा की भांति इस अंक में भी आचार्य प्रेम भिक्षु जी के उद्बोधक गीत एवं प्रेरक लेख हमें वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की प्रेरणा देते हैं। वैदिक ऋचाओं की व्याख्या सामयिक है। श्री श्याम बहादुर गुप्त का लेख—सावधान, उठो, जागो हमारी आज तक की भूलों का लेखा जोखा प्रस्तुत करने के साथ-साथ एक ऐसा क्रान्तिकारी कार्यक्रम भी प्रस्तुत कर सकता है जिससे हमें सुख समृद्धि तथा सम्मरस्य प्राप्त हो सकता है। इसके लिए उन्होंने पांच साधन बताए हैं—राष्ट्रभाषा, भोजन भजन, भावना, भावना, भेष। लेखक ने बताया है कि इन साधनों को अपना कर मनुष्य शारीरिक आत्मिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक उन्नति कर सकता है।

इस अंक में प्रकाशित चाणक्य धारावाहिक और एकता यात्रा, पशुबलि आदि लेख पठनीय हैं। पत्रिका का पता इस प्रकार है—आचार्य प्रेम भिक्षु, सम्पादक तपोभूमि, वैदिक प्रेस, सत्य प्रकाशन, वेद मन्दिर मथुरा उत्तर प्रदेश—मूल्य—वार्षिक बीस रुपये मात्र।

मित्र संगम :

यह पत्रिका अति लघु पत्रिका है। इसमें दिया गया एक-एक शब्द 'सूत्र' के समान है, गागर में सागर है। प्रत्येक अंक के प्रथम पृष्ठ पर कुछ ऐसी पंक्तियां दी होती हैं जो विश्व को कल्याण के मार्ग पर अग्रसर करती हैं। फरवरी १९९२ के प्रथम पृष्ठ पर हजरत मुहम्मद के शब्द हैं—'मानव जाति को सत्कार्यों की ओर प्रेरित करने के लिए तुम्हारा प्रयास दान है, निषिद्ध कार्यों को न करना दान है।' निश्चय ही ये शब्द 'भानो भद्रा क्रतवो यन्तु' को चरितार्थ करने में सहायक हैं। श्री प्रेम वोहरा का सम्पादकीय 'सर्वे सन्तु निरामयाः' भी विश्व कल्याण की ही भावना लिए है। 'समाज विधान और नारी' में आज की महिलाओं की दशा का सुन्दर चित्रण है। साथ ही नारियों के लिए उठ खड़े होने का आह्वान भी।' छोटी छोटी कहानियां—लकीर, बिके हुए लोग हमें सावधान कर रही हैं।

बीस दिन में संस्कृत सीखने के लिए निमन्त्रण भी दिया गया है। पत्रिका का मूल्य है, बीस रुपए वार्षिक और सम्पर्क सूत्र—श्री प्रेम वोहरा, सम्पादक, मित्र संगम पत्रिका, ३५-बी, पुराना गुप्ता कालोनी, दिल्ली-११०००९।

आरोग्य

फोटो कम्पोजिंग और आफ सेट प्रिंटिंग की आभा लिए जनवरी १९९२ का आरोग्य पत्रिका का अंक 'जीवन और सुख' के रहस्य पाठकों के सम्मुख उद्घाटित करता है। 'निर्माणकारी विचार' 'मिथ्यागव' जीवन चर्या को संचालित करने की पद्धति हमें बताते हैं। यह स्वाभाविक ही है कि इस पत्रिका के सभी लेख 'उपचार' की बात कम करते हैं, आचरण पद्धति में सुधार की बात ज्यादा करते प्रतीत होते हैं? लेखकों ने अपनी बात को आयुर्वेद तथा अन्य धार्मिक एवं आर्ष ग्रन्थों से प्रमाण देकर पुष्ट किया है। बच्चों को प्रारम्भ से ही किस प्रकार खिलाए पिलाए, पढ़ाए—आदि का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी इन लेखों में प्राप्य है। पत्रिका प्राप्ति के लिए सम्पर्क सूत्र—श्री विट्ठल दास मोदी, प्रधान सम्पादक, आरोग्य कार्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश।

नागरी संगम .

आचार्य विनोबा भावे की सद्प्रेरणा से स्थापित नागरी लिपि परिषद्, राजघाट नई दिल्ली की त्रैमासिक पत्रिका नागरी संगम के प्रबन्ध सम्पादन का कार्यभार इस समय डा० परमानन्द पांचाल ने सम्भाल लिया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती की इच्छा थी—'दयानन्द के नेत्र तो वह दिन देखना चाहते हैं कि काश्मीर से कन्याकुमारी तक और अटक से कटक तक नागरी अक्षरों का ही प्रयोग होगा। मैंने आर्यावर्त्त भर में भाषा का ऐक्य सम्पादन करने के लिए ही, अपने सकल ग्रंथ आर्य भाषा में लिखे और प्रकाशित किए हैं।' उन्होंने यह भी कहा था—'अपनी

भाषा मे वार्तालाप करना ही उत्तम है। स्वदेशिया मे बैठ कर विदेशी भाषा बोलने में लग जाना' भला प्रतीत नही होना, प्रत्युत ऐसा करना भद्दा लगता है और इसमे घमण्ड भी प्रतीत होता है।'

आर्य समाज की अनेक सस्थाए हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार के लिए रात दिन सलग्न है। यह पत्रिका नागरी सगम भी इसी पवित्र कार्य को आगे बढ़ा रही है। काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने १ दिसम्बर १९०५ को लिपि विस्तार परिषद् का आयोजन किया था। इस परिषद के अध्यक्ष प्रख्यात विद्वान तथा राष्ट्र पुरुष श्री रमेशचन्द्र दत्त थे। इस परिषद के प्रमुख वक्ता थे—

दीवान बहादुर अबादास शकरलाल तथा लोकमान्य तिलक। लोकमान्य तिलक ने प्राचीन ताम्र पत्र तथा हस्त लिखित ग्रन्थो मे नागरी लिपि के प्रयोग का उल्लेख करते हुए भाषा शास्त्र की दृष्टि से उसका प्रतिपादन किया। लोकमान्य तिलक के इन विचारो का समथन तथा प्रतिपादन २९ दिसम्बर १९१० मे आयोजित अधिवेशन मे भी हुआ। इस सम्मेलन के अध्यक्ष थे मद्रास के न्यायमूर्ति श्री कृष्ण स्वामी अय्यर। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तो बहुत पहले ही हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि की बात कही थी।

इस पत्रिका मे एक समाचार है—'रोमन लिपि थोपने का षडयन्त्र'। प्रकाशित हुआ है। बम्बई में चतुर्थ रोमनलिपि सम्मेलन मे यह विचार किया जाना है कि भारतीय भाषाओ के लिए रोमन लिपि का उपयोग किया जाए। तर्क यह दिया गया है कि रोमन लिपि में कम अक्षर है, यह अन्तर्राष्ट्रीय है तथा ब्रिटिश शासन काल मे भी हिन्दी और भारतीय भाषाओ के लिए रोमन लिपि का प्रयोग किया गया था।' यह प्रस्ताव पूर्णत विपथगामी और अमान्य है। श्री जे० आर० गुप्त के लेख का हम समर्थन करते है। भारतीय भाषाओ के लिए मात्र देवनागरी लिपि को ही अपनाया जाना चाहिए।

इस पत्रिका मे नागरी लिपि के इतिहास और विकास तथा सवर्धन के लिए किए जा रहे उपायों का सुन्दर विवरण दिया गया है। सम्पर्क सूत्र—डा० परमानन्द पांचाल, प्रबन्ध सम्पादक, नागरी सगम, नागरी लिपि परिषद, १९ गांधी स्मारक निधि, राजघाट, नई दिल्ली-२, वार्षिक मूल्य बीस रुपये।

रजत जयन्ती स्मारिका :

आर्य समाज ए/सी ब्लाक टैगोर गार्डन नई दिल्ली ११००२७ की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर स्थापना के पच्चीस वर्ष पूरे हो जाने पर, श्रीमती शशिप्रभा गोयल, प्रवाचिका एव उपसचिव राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एव प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली के सम्पादकत्व में रजत जयन्ती स्मारिका' का प्रकाशन किया गया है। स्मारिकाओ के प्रकाशन के दो उद्देश्य होते हैं—पूर्ववृत्त की जानकारी तथा सिद्धान्तो का प्रचार प्रसार। इन दोनों उद्देश्यों की दृष्टि से यह पत्रिका सफल है। इस पत्रिका मे आर्य समाज टैगोर गार्डन की विकास यात्रा का विवरण स्वय सम्पादिका ने दिया है। आर्य समाज परिवार के सभी सदस्यो का परिचय दिया गया है। स्त्री आर्य समाज की प्रमुख गतिविधियो का परिचय श्रीमति कौशल्या आहुजा ने दिया है। आर्य समाज के वर्तमान प्रधान श्री कुवर लाजपत राय मन्त्री श्री अमरनाथ वधवा ने सभी के सहयोग के लिए धन्यवाद किया है तथा आगामी कार्यक्रमो की रूप रेखा प्रस्तुत की है। कविवर श्री रामधारी सिंह दिनकर का ऐतिहासिक लेख इस पत्रिका को सज्जित कर रहा है। आर्य नेताओ तथा विद्वानो के शुभ कामना सन्देश तथा लेख भी इस पत्रिका को गरिमा प्रदान करते हैं। आर्य समाज के अधिकारी इस सराहनीय कार्य के लिए अभिनन्दनीय है?

वैदिक डंका :

श्री टी० सूर्य नारायण राव द्वारा सम्पादित तथा आर्य युवक परिषद् १२-१०-५८८/६ व्यास वैदिक सेवा समाज, व्यास नगर, सीताफल मण्डी, सिकन्दराबाद—५००१६१, आन्ध्र प्रदेश की ओर से डा० के० सुब्बा राव, गायत्री आश्रम द्वारा मुद्रित एव प्रकाशित वैदिक डका' का जनवरी १९९२ का दूसरे सख्या-६ अक अपने मे एक विशिष्ट दीप्ति सजोये हुए है।

इस अक में २१ २२ दिसम्बर को भारतीय विद्या भवन हैदराबाद में आयोजित 'भारतीय भाषा सम्मेलन' का विवरण दिया गया है। इस ऐतिहासिक सम्मेलन की स्वागत समिति के अध्यक्ष थे—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान, हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के अमर सेनानी, जीवित हुतात्मा, प्राणधन्य प० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव। उनके सहयोगियो मे श्री कान्तिकुमार कोरटकर तथा अन्य अनेक सुधी महानुभाव थे। इस समारोह की परिकल्पना, सयोजना तथा सफलता के लिए प० जी का हार्दिक धन्यवाद एव अभिनन्दन। अग्रेजी की दासता से मुक्त करके भारतीय भाषाओ को समुचित तथा सम्मानीय स्थान दिलाने के लिए आर्य समाज निरन्तर प्रयत्नशील है। सन् १९७३ मे धर्म-भवन मे 'निज भाषा उन्नति' नाम से एक सगोष्ठी की गई थी। उसमे श्रीमती कमलारत्नम् डा० रघुवीर सिंह शास्त्री, डा० वेद प्रकाश वैदिक, डा० धर्मपाल, श्री महेन्द्र महर्षि तथा तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओ के हिन्दी प्रेमी सम्मिलित हुए थे। सभी का उस समय एक ही स्वर था—अग्रेजी हटाओ, भारतीय भाषाए लाओ।

इस सम्मेलन के सयोजक सुप्रसिद्ध भाषाविद डा० कृष्णकुमार गोस्वामी थे। इस सम्मेलन को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, महामहिम राज्यपाल श्री कृष्णकान्त, भाषा आयोग के अध्यक्ष डा० शकरदयाल सिंह, सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री आई पाण्डरगराव, श्री अरविदाक्षन, श्री मौहम्मद कुज, श्री भीमसेन, श्री कुट्टम पिल्लई, श्री ब्रजकिशोर शर्मा आदि महानुभावो ने भी सम्बोधित किया।

भारत सरकार के केन्द्रीय मत्री (मानव ससाधन और विकास) श्री अर्जुन सिंह जी ने अपने भावपूर्ण भाषण में श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव को बधाई देते हुए इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि हिन्दी को राजभाषा बनाने के लिए यह प्रयास दक्षिण से प्रारम्भ हो रहा है।

केन्द्रीय विश्वविद्यालय, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, तेलुगु विश्वविद्यालय तथा उसमानिया विश्वविद्यालय के कुलपतियो ने भी श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव के इन प्रयत्नों की मुक्तकण्ठ से प्रशसा की।

इस सम्मेलन में पारित किये गए नौ प्रस्ताव भी इस पत्रिका की श्रीवृद्धि कर रहे है। हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि हम इन प्रस्तावों को कार्यरूप में परिणत करे। एक बार पुन प० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव तथा उनके सहयोगियों का हार्दिक अभिनन्दन।

आर्य वन्दना .

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का यह मासिक मुखपत्र श्री भगवानदेव चैतन्य द्वारा सम्पादित है। इस दिसम्बर अक में सम्पादकीय--'युवा वर्ग अपनी शक्ति पहचाने' एक नया सन्देश और ऊर्जा प्रदान करता है। युवावर्ग मे एक जोश होता है और एक ऐसी ऊर्जा होती है जो अपने आप मे असीमित शक्ति रखती है। मगर उसे दिशा देने की आवश्यकता होती है। वह दिशा अन्तत अपने आस-पास के परिवेश से ही प्राप्त होती है। आज आर्य समाज को भी युवाशक्ति को आगे लाने की आवश्यकता है। उद्यम, मनस्विता और तपस्विता—ये तीन गुण किसी भी राष्ट्र, सस्था और व्यक्ति को उठाने के लिए आवश्यक हैं। युवाशक्ति मे उद्यम की भावना तो है, पर उसे नियन्त्रित करने की आवश्यकता है। यह कार्य मनस्वी नेता, साधु-महात्मा, विद्वान् ही कर सकते हैं। कई बार छोटा बालक माता पिता की बात नही मानता और अपनी अध्यापिका की सारी बातें मान लेता है। इसी प्रकार यहा पर भी मनस्वी गुरु और विद्वान् ही एक नया रास्ता दे सकते हैं। तीसरी बात है तपस्वी की। भगवान् कृष्ण का उपदेश हानि लाभ, यश अपयश, जय-पराजय में जो विचलित नही होता, वही सही तपस्वी है। यह बात युवको को तो समझ नहीं आएगी। वे तो करना जानते हैं। उन्हे धैर्य से क्या लेना-देना ? यह ठीक है कि धर्म का पहला लक्षण ही 'धृति' है। पर वे इसे न मानते हैं और न मानने को तैयार हैं। बस यही तो उनकी विशिष्टता है। यदि वे धीर गभीर हो जाए, तो युवा थोड़े ही रहेगे। वे तो बड़े हो जाएगे। बड़ों के लिए उचित है कि वे युवाशक्ति की अधीरता का भी सम्मान करें और उन्हें समय पर नियंत्रित करें। श्री भगवानदेव चैतन्य ने इस अक को इसी 'जोश' को समर्पित किया है। सम्पर्क सूत्र—श्री भगवानदेव चैतन्य, सम्पादक, आर्य वन्दना, १९०/एस-३, बी एस एल कालोनी सुन्दर नगर, हिमाचल प्रदेश, मूल्य—बीस रुपये वार्षिक।

मधुर-लोक

आर्य भद्रसेन एक योगनिष्ठ, अनुभवी प्रकाण्ड वैदिक विद्वान् थे। उन्होने सारा जीवन वैदिक आध्यात्मवाद का प्रचार किया। यह प्रसन्नता की बात है कि मधुर प्रकाशन आचार्य भद्रसेन की जीवनी और विचार प्रदर्शन पर पाठको को एक नया ग्रन्थ भेंट कर रहा है।

मधुर लोक, मधुर प्रकाशन की ही मासिक पत्रिका है। श्री राजपाल सिंह शास्त्री इसके सचालक एव सम्पादक है। जब से प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु का नाम इस पत्रिका के साथ जुडा है, इसकी माग बढ गई है। यह निश्चय ही प्रो० जिज्ञासु की इतिहास-दृष्टि के कारण हुआ है। पिछले दिनो दिल्ली मे एतिहासिक लाल किला के महाद्वार पर आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से प्रो० जिज्ञासु का सम्मान किया गया। प्रो० जिज्ञासु आर्य समाज की एक अमूल्य धरोहर हैं। वे लिखते हैं, तो इतिहास बोलता है। इस अक मे स्वास्थ्य सम्बन्धी कई लेख दिये गए हैं ? स्वामी स्वतत्रानद जी पर दो लेख हैं। बस यही कहना होगा कि ये लेख अद्भुत हैं। यह पत्रिका निरन्तर आर्य समाज और वैदिक धर्म के प्रचार-पसार मे सलग्न है। इस अक मे वैदिक सस्कृति पर चोट करने वाले कृत्यो का पर्दा-फाश भी किया गया है। सम्पादक मण्डल को हमारी शुभकामनाए। सम्पर्क सूत्र—श्री राजपाल सिंह शास्त्री सचालक एव सम्पादक, मधुर लोक, २८०४, आर्य समाज मदिर सीताराम बाजार, दिल्ली-६, वार्षिक मूल्य ५० रुपये।

योग मंजरी :

'योग, जनसाधारण के लिए अब कोई नया अथवा अपरिचित नाम नहीं है। भौतिक विकास की चकाचौंध ने व्यक्ति के शरीर को जर्जर और मन को अशान्त बनाकर रख दिया है। ऐसे अस्थिर और भटके हुए मन के फलस्वरूप उसका सम्पर्क मस्तिष्क के उन चेतना केन्द्रो से कट जाता है, जो मनुष्य को सही दिशा देने के लिए वरदान के रूप मे प्राप्य है। चारो ओर फैली विषमता और द्वन्द्व के ऐसे धूमिल वातावरण में योगसाधना मनुष्य के लिए नवयुग की आशा की किरण सिद्ध हुई है ?' इस मासिक पत्रिका में योग तथा इसके चमत्कारी प्रभाव को प्रतिपादित करने वाले अधिकारी विद्वानो के लेख प्रकाशित किये गए हैं। योग मनुष्य की चित्तवृत्तियों को सन्मार्ग पर लाने मे सहायक है। योग साधक का सम्पूर्ण जीवन कर्मयोग की गगा के रूप मे परिवर्तित हो जाता है जिसका परम धर्म दूसरो का परिष्कार और उद्गार करना है। यही आधार शिला साधना की है और यही उस दिव्य शक्ति की आराधना भी।

इस अक (अक्तूबर, नवम्बर, दिसम्बर १९९१) के सभी लेख पठनीय है तथा व्यवहार्य है। सम्पर्क सूत्र—श्री युधिष्ठिर पाल, सम्पादक योग मजरी, भारतीय योग सस्थान, ए डी २४, शालीमार बाग, दिल्ली-५२, वार्षिक मूल्य—बीस रुपये।

आर्य मार्तण्ड

आर्य मार्तण्ड के १ फरवरी १९९१ के अक मे १२ फरवरी, १९९२ को महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव धूमधाम से मनाने का निर्देश दिया गया है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने विश्व की सभी सभाओ, सस्थाओ और आर्य समाजो को आदेश दिया है कि वे यह समारोह धूमधाम से मनाए। 'आर्यमार्तण्ड' आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र है तथा सभा उपप्रधान श्री जेठमल आर्य द्वारा सपादित है। इस अक मे डा० भवानीलाल भारतीय का प्रथम राष्ट्रीय आर्य लेखक सम्मेलन कोटा के अध्यक्ष पद से दिया गया अभिभाषण भी सम्मिलित किया गया है। आर्य लेखको को सगठित करके, वैदिक धर्म तथा आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की योजना निश्चय ही एक महत्त्वाकांक्षी योजना है। यदि डा० भवानीलाल भारतीय इस योजना को क्रियान्वित कर सके, तो यह आर्य समाज का सौभाग्य होगा। स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती का लेख आर्यजनो का आह्वान करता है कि वे आगे आएगे तथा इस नैया को पार लगाए। मानव समाज घोर अन्धकार तथा पाखण्ड में फसा हुआ है। इसे रास्ता दिखाने का कार्य आर्य समाज ही कर सकता है। आर्य सन्देश के सम्पादक श्री विमलकान्त शर्मा का लेख स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज के जीवन के प्रेरक प्रसगो को व्याख्यायित करता है। सपर्क सूत्र—श्री जेठमल आर्य, प्रधान सम्पादक, आर्यमार्तण्ड, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, कार्यालय, आर्य समाज आदर्श नगर, जयपुर (राजस्थान), वार्षिक मूल्य २० रुपय।

लोक शिक्षक :

लोक शिक्षक के गणतन्त्र तथा शहीद दिवस विशेषाक में प्रथम पृष्ठ पर 'महात्मा गांधी सरस्वती की शिक्षा' तथा 'वेदो मे राष्ट्रपति का स्वरूप' प्रकाशित किया गया है। राष्ट्रपति प्रजा का कल्याण करने वाला तथा राष्ट्र घातक आसुरी शक्तियों को नष्ट करने वाला, देशद्रोहियो को कुचलने वाला, विद्वानों तथा धर्मात्माओ की रक्षा करने वाला राष्ट्र की प्रजा को आत्मदान देने वाला होना चाहिए। यह आज के भारत के सन्दर्भ मे नितान्त वाछनीय है। हमारा देश ऐसी ही समस्याओ से ग्रस्त है। गाधी ने भी कहा है कि जो अपने से पहले राष्ट्र को समझेगा, वही हमारे स्थान की रिक्तता को पूरा कर पायेगा। निश्चय ही समष्टि के ऊपर व्यष्टि को न्यौछावर करने की आवश्यकता है। प्रो० मोहन रायजादा का लेख—'गणतन्त्र दिवस की गरिमा सामयिक है। प्रो० चिन्तामणि शुक्ल ने भारत से ब्रिटिश साम्राज्यवाद को उखाडने के लिए २६ जनवरी सन १९४२ को आजादी के दीवाने एव जयहिन्द के उद्बोधक नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के बर्लिन रेडियो जर्मनी से भारतीयो को अनुप्राणित करने वाले शब्द उद्धृत किए हैं—मैं सुभाष चन्द्र बोस बोल रहा हू। भारतीयो को मैं बता रहा हु कि यदि हमारा कोई शत्रु है तो केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद है जो सैकडो वर्षों से हमारा शोषण कर रहा है।' हमारे देश का शोषण तो आज भी हो रहा है। यह पत्रिका पठनीय है। सम्पर्क सूत्र—श्री युगल किशोर चतुर्वेदी, सम्पादक लोक शिक्षक, प्रियवदा सदन, अशोक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर (राजस्थान) वार्षिक मूल्य—दस रुपये।

महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट-सन्देश .

आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान, अनेक शिक्षण सस्थाओ के सस्थापक अनेक आर्य समाज मन्दिरो के निर्माण तथा जीर्णोद्धार में सहायक, मानवतावादी, सहृदय, उदार, प्रसन्न वदन श्री महाशय धर्मपाल जी इस पत्रिका के प्रधान सपादक हैं। इस पत्रिका मे उनके व्यायिक सस्थान एम० डी० एच० (प्रा०) लिमिटेड के समाचारों तथा विज्ञापनो के अतिरिक्त जो सामग्री होती है वह मनुष्य को यदि वह आचरण करे तो सही मायनो मे मनुष्य बना सकती है। इस पत्रिका मे धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक राजनैतिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने वाले लेख होते हैं। यह था पराक्रम हमारे पूर्वजो का धर्म निरपेक्षता, धर्म विहीनता नहीं, सत्य के अनुयायी कभी पराजित नहीं होते, इसी श्रेणी तथा परम्परा के लेख हैं। 'एक बहुमुखी सफल व्यक्तित्व' धारावाहित जीवन चरित है। जो भी पढ़ेगा, वह सोचेगा कि मनुष्य पुरुषार्थ से कितना ऊपर उठ सकता है। यह प्रेरक है। यह साक्षात प्रेरणा है। श्री रामचन्द्र सैंदा की कलम मे जादू है जो सिर पर चढ़ कर बोलता है। 'जो रब की मर्जी है, वो हस कर गुजार दे।' पाचन तन्त्र के रोगों की उत्पत्ति एव चिकित्सा पठनीय है। यह पत्रिका पिछले पाच वर्षों से नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है। इसमें विवाह समाचारो का प्रकाशन भी होता है। सम्पर्क सूत्र—श्री महाशय धर्मपाल, प्रधान सम्पादक, सन्देश एम० डी० एच० (प्रा०) लिमिटेड, ९/४४ कीर्ति नगर इण्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-११००१५, निःशुल्क—सीमित वितरण के लिए।

जीवन सचेतना

आध्यात्मिक जागरण की सन्देश वाहक मासिक पत्रिका का सम्पादन कर रहे हैं वैदिक विद्वान, अन्तर्राष्ट्रीय कथाकार आचार्य यशपाल सुधाशु। नवम्बर दिसम्बर १९९१ के अक मे ऐसे अनेक लेख हैं जो मनुष्य की जीवन धारा को मोड कर सही प्रशस्त मार्ग पर ला पाने मे सक्षम हैं तथा पत्रिका के जीवन सचेतना नाम को सार्थक करते हैं। मनुष्य के मनोभावो का चित्रण एक कठिन कार्य है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के 'चिन्तामणि भाग-१ और दो' की परम्परा मे लिखे गए लेख—'परमधन, दृढ सकल्प, सहनशीलता और मृदता, अपने ऊपर अविश्वास, तज दे वचन कठोर, निश्चय ही मनुष्य जीवन को नया मोड देते हैं। पहला ही लेख—'सुखी घर परिवार' आचरणीय है। यदि जीवन मे अपना लिया तो समझो सब कुछ पा लिया। सुन्दर लेखो का चयन सम्पादन मण्डल की प्रतिभा तथा विवेकी क्षमता का परिचायक है। सम्पर्क सूत्र—आचार्य यशपाल सुधाशु, प्रधान सम्पादक, जीवन सचेतना, पता—बी० डब्ल्यू०-८७ डी० शालीमार बाग, दिल्ली-११००५२

—डा० धर्मपाल

धरती के स्वर्ग को दूसरा स्थान

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल आर्य समाज राजौरी गार्डन के विद्यार्थियों ने वर्ष १९९२ की गणतन्त्र परेड मे उत्साहपूर्वक भाग लिया और पर्यावरण प्रदूषण से सम्बन्धित "धरती का स्वर्ग" एक अत्यन्त आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस मनोहारी कार्यक्रम की प्रस्तुति के लिए उन्होने द्वितीय स्थान पर आने का गौरव प्राप्त किया। समस्त आर्य जगत की ओर से हार्दिक बधाई।

सम्पादक के नाम पत्र

आर्य सन्देश एक श्रेष्ठ पत्रिका है

आर्य समाज मन्दिर विशेषांक के बाद आचार्य रामदेव विशेषांक प्राप्त हुआ। सच तो यह है कि विशेषांक तो मुझे प्राप्त होता है किन्तु मैं लगभग महीनों तक उसे पढने से वंचित रह जाता हू। मेरे आर्य मित्र, आर्य सन्देश के शिक्षाप्रद ऐतिहासिक लेखों से प्रभावित हैं। उनके अवलोकन के बाद ही मैं पढ पाता हू। जितनी प्रशंसा इस पत्र की, की जाए उतनी ही कम है।

मेरे ज्येष्ठ भ्राता श्री ललन शर्मा आर्य, आर्य समाज कानपुर के उपमन्त्री रहे हैं। आर्य सन्देश के अंक व विशेषांकों का आद्योपान्त अध्ययन करके अनायास कह बैठे कि आर्य सन्देश ही आर्य जगत की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है। इसके सम्पादक मण्डल के अधिकारी वास्तव मे आर्य व दृढव्रती हैं। बधाई स्वीकार करें।

लालमनि शर्मा आर्य

ग्राम पड़री, बलिया

आपके इस जनप्रिय आर्य सन्देश को बहुत ही रूचि एव लग्न से पढता हू। इसके विशेषांक काफी अच्छे निकलते हैं परन्तु ५ जनवरी का जो आर्य सन्देश था उसमे ईसाई नव वर्ष से सम्बन्धित एक कविता पढ कर दु ख हुआ। यदि हम आर्य लोग भी ईसा जन्म दिवस को नव वर्ष मानेंगे तो औरो का क्या कहना।

अखिलेश शास्त्री, सोनीपत

(हम लेखक की भावनाओ का सम्मान करते हैं। वैसे ईसा मसीह का जन्म दिन २५ दिसम्बर को होता है, न कि १ जनवरी को। भविष्य मे इसका ध्यान रखा जायेगा —सम्पादक

आर्य महापुरुषों पर विशेषांक निकाले

आर्य सन्देश ने विशेषांकों की जो परम्परा प्रारम्भ की है, वह निरन्तर जारी रहेगी, ऐसी आशा है। वर्ष १९९२ मे अन्य आर्य महापुरुषो पर भी ऐसी ही उपयोगी जानकारी दी जानी चाहिए अथवा इन्हीं महापुरुषो पर नई जानकारी दी जानी चाहिए। इससे साहित्य तथा सुरक्षा की दिशा मे आपका बहुमूल्य योगदान हो सकेगा।

प्रकाश देव आर्य

आर्य स्टोर (फोन २४), कटरा बाजार,

हिण्डौन सिटी (राज) ३२२२३०

विशेषांक राष्ट्र के चरित्र निर्माण में सहायक

आपका आर्य सन्देश बहुत अच्छा है, उसे और भी सुन्दर बनाने के प्रयत्न होना चाहिए। विशेषांकों में तो आप अद्वितीय हैं। गोरखपुर का कल्याण भी श्री पू० भाई जी के समय अत्यन्त उत्कृष्ट था। पर आर्य सन्देश, विशेषकर आपके विशेषांक पठनीय और राष्ट्र के चरित्र निर्माण मे सहायक हैं।

सुरेशचन्द्र वेदालंकार

एफ १/६६, गांधी नगर कालोनी आरोग्य मन्दिर गोरखपुर

आर्य समाज मन्दिर विशेषांक

आर्य समाज मन्दिर विशेषांक आपका बहुत अच्छा प्रयास है, सम्पादक मण्डल को कोटि कोटि धन्यवाद। मैं अपने मित्रो व आर्य समासदो को आर्य सन्देश व विशेषांक प्रचारार्थ पढ़ने को देकर वापस ले लेता हू। परमात्मा करे आर्य सन्देश दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करे।

रोशनलाल शर्मा

प्रधान, आर्य समाज, तिहाड़ नई दिल्ली-१८

अद्वितीय विशेषांक

पिछले दिनो आर्य सन्देश के 'आर्य समाज मन्दिर' एव स्वामी श्रद्धानन्द व प० रामदेव विशेषांक ने विशेषांकों की शृंखला में पुन कीर्तिमान स्थापित किए हैं। विषयानुरूप पाठ्य सामग्री, साज-सज्जा की दृष्टि से सभी विशेषांक अनुपमेय एव अद्वितीय रहे, बधाई।

मनोहर कुमार आर्य

१६६ ब्लाक II, चुक्खूवाला, देहरादून, २४८००१

हिन्दूवाद राष्ट्रीयता का प्रतीक है

पिछले लगभग दो मास से आर्य सन्देश साप्ताहिक का अवलोकन कर रहा हू। वस्तुत यह पत्रिका पाठकों मे देश प्रेम, भारतीय प्राचीन सभ्यता व संस्कृति के प्रति आस्था जागृत करने मे प्रयासशील है। असल मे हिन्दूवाद राष्ट्रीयता एव आपसी भाई चारे का प्रतीक है। पत्रिका में ऐसी लाभदायक सामग्री बहुत होती है। २ फरवरी के अंक में प्रथम पेज पर चाणक्य धारावाहिक के बारे मे तथा डा० जोशी द्वारा ध्वज लहराये जाने का विवरण बहुत प्रभावोत्पादक था इससे पूर्व आर्य समाज मन्दिर विशेषांक मे तो बहुत उपयोगी जानकारी दी गई है। कृपया इसमे प्रेरक प्रसंग, धार्मिक लघु कथायें स्वास्थ, बच्चो व महिलाओ के बारे मे भी सामग्री लेने एव पेज बढाने पर भी विचार करें। सम्पादक मण्डल के सभी बन्धुओ को बहुत बधाई।

जे० एन० शर्मा

४४१, लासर्ज रोड, (निकट माल रोड) दिल्ली-५४

चुनाव समाचार

आर्य केन्द्रीय सभा, गुड़गाव के निर्वाचन मे श्री ओमप्रकाश आर्य—प्रधान, म० चन्दनसिंह—उपप्रधान, श्री ओमप्रकाश—महामन्त्री, श्री जगदीश चन्द्र आर्य—मन्त्री, श्री श्याम सुन्दर आर्य—कोषाध्यक्ष तथा श्री जवाहर आर्य—लेखा परीक्षक निर्वाचित हुए।

—आर्य समाज मन्दिर मुरैना (म० प्र०) के १९९२ के वार्षिक चुनाव में प्रधान—श्री विद्या व्रताय नैष्ठिक, श्री नवल सिंह—उपप्रधान, श्री वीरेन्द्रसिंह—मन्त्री, श्री विवेकानन्द—कोषाध्यक्ष, श्री बाबूलाल जी यज्ञप्रिय—पुस्तकालयाध्यक्ष, एव श्री रामबाबू आर्य—आर्य प्रतिनिधि चुने गए।

आर्य समाज बीकानेर गगायचा अहीर के १९ जनवरी, ९२ को हुए वार्षिक चुनाव में प्रधान—मा० राममेहर सिंह आर्य, उपप्रधान—मा० सत्यपाल आर्य, मन्त्री—मा० दयाराम आर्य, उप मन्त्री—नरेश कुमार आर्य, प्रचार मन्त्री—मा० जयप्रकाश एव कोषाध्यक्ष ज्ञानचन्द आर्य सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

सम्पूर्ण राष्ट्र में शराबबन्दी लागू करें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के २ फरवरी, ९२ को सम्पन्न हुये वार्षिक साधारण अधिवेशन मे निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ—

यह सभा हरयाणा सरकार द्वारा शराब जैसे मादक द्रव्यो के प्रोत्साहन और फैलाव की घोर निन्दा करती है। आश्चर्य है कि एक ओर तो खाद बीज आदि पर दी जाने वाली सब्सिडी (सहायता) समाप्त करने की बात की जा रही है। और दूसरी ओर शराब के लिए पचायतो को सब्सिडी (सहायता) दी जा रही है। शराब के फैलाव से महिलाओं और बच्चो का जीवन नरक बन कर रह गया है और दूसरी ओर सुरा तथा जहरीली शराब सस्ते दामो पर मिलने के कारण किसान और मजदूर हजारो की सख्या मे मरते हैं और अन्धे हो जाते हैं।

यह सभा भारत सरकार से मांग करती है कि राजस्व की हानि का ५० प्रतिशत देकर सम्पूर्ण राष्ट्र मे शराबबन्दी लागू करे और हरयाणा सरकार अपने प्रदेश मे पूर्ण नशाबन्दी लागू करे।

यह सभा हरयाणा की जनता से अपील करती है कि अपने-अपने बच्चो और महिलाओ के कल्याण के लिए शराबबन्दी आन्दोलन को तेज करें और शराब को हरयाणा मे से निकाल कर ही दम लें।

दयानन्द बाल सदन अजमेर का वार्षिक अधिवेशन

सन् १८९४ में स्थापित अजमेर की प्रसिद्ध और पुरानी बाल कल्याण संस्था दयानन्द बाल सदन का वार्षिक अधिवेशन रविवार दि० १९ जनवरी, ९२ को सदन के प्रधान श्री दत्तात्रेय जी वावले की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार सदन में १२५ आवासी, बालक, बालिकाए जिनके नि शुल्क भोजन, वस्त्र के अतिरिक्त हस्तकला और शिक्षा की व्यवस्था सदन की ओर से की जाती है। इस पूरी शिक्षा के अतिरिक्त ६ आवासी छात्र बी०ए० और एम०ए० में तथा ५ छात्राए बी०एड० में अध्ययनरत हैं।

इस वर्ष दीवानचन्द ट्रस्ट देहली की एक लाख रुपए तथा श्री भीमसेन जी शर्मा द्वारा प्रदत्त ४०,०००/- (रुपए चालीस हजार) के दानरूप कन्या विभाग में २ नवीन कक्ष आदिवासी छात्राओं के लिए निर्मित किये गए।

लगभग ६ लाख रुपये का आय-व्यय का जांचा हुआ हिसाब स्वीकार किया गया। आगामी वर्ष के लिए आचार्य दत्तात्रेय जी वावले प्रधान, तथा श्री देवदत्त सक्सेना—मन्त्री, संतद राजसिंह जी उप-प्रधान और तीन महिला सदस्यो सहित १९ अन्तरग सदस्य चुने गए।

(पृष्ठ २ का शेष)

कामो मे भी प्रयुक्त हो सकता है जो हमे घृणा का पात्र बना दे। हमे कही कोई आतकवादी, उग्रवादी, हत्यारा, डाकू, चोर भ्रष्टाचारी या व्यभिचारी न कहने लगे। हमारे बल से अज्ञान अन्याय अभाव निवारण के कार्यों में योगदान हो, जिस से हमे अपयश के स्थान पर यश प्राप्त हो। बल एव यश दोनों ही तो ज्ञान कर्म समुच्चय के परिणाम हैं यदि गहराई से सोचे तो पता लगेगा कि इनका परिणाम तो बल ही है, यश तो बल का ही फल है। यह दोनो हमे प्राप्त कैसे हो इसका भी तो भेद खुलना चाहिए। जैसे गर्म करने पर दूध के ऊपर मलाई की पर्तें जमने लगती हैं, वैसे ही ज्ञान से कर्म को मिलाने से दुग्ध के समान हमे बल मिलता है और इसी बल के सयम से तपाते पर यश अपने आप ऊपर आ जाता है।

इस यश को प्राप्त करने का मौलिक सूत्र है करतल कर पृष्ठे—हमारी भुजाओ में जिस बल का सग्रह होता है वह हमारे हाथ के इन्ही दोनो भागों—करतल एव कर पृष्ठ के द्वारा ही क्रिया शील होता है। आप या हम फावडा लेखनी, खुर्पी तलवार या अन्य कोई भी अस्त्र-शस्त्र चलाना चाहते हैं, वह भुजा के इसी भाग से चला सकते हैं। कधे मे बल है किन्तु इसका प्रयोग कन्धा नहीं कर सकता, प्रयोग तो हाथ की हथेली को ही करना पडगा। हथेली में गहराई है जो कहती है कि हमे अपने परिश्रम से पुरुषार्थ से भरते रहे—भर कर लाओ, भण्डार मे उलट दो। हमें भरी हथेली मे वह वस्तु दिखाई देगी—हथेली नहीं, किन्तु जब हम उसे पलटेंगे तो कर पृष्ठ दिखाई देगा वस्तु नही। जैसे हवा आती है हमे प्राण प्रदान कर आगे बढ़ जाती है, रुकन पर वही पीडा जनक हो जाती है वैसे ही इस हथेली से कमाया गया—यह धन प्रवाहवान बना रहे। रुके पानी की भांति सडाध न उत्पन्न करने लगे। तो हाथ के सबसे ऊपर का भाग कौन सा हुआ—यह कर पृष्ठ। करतल आदान का कर पृष्ठ प्रदान का प्रतीक है। दान के लिए आदान यही यश का स्थाई सूत्र है। यद्यपि इसका रूप स्वत आदान के लिए दान बन जाएगा। पर इस पर भरोसा चाहिए। जैसे अभिष्टये' के चारों चरण हमें ऊपर प्रगति की ओर ले गए जैसे पीतये के चारो चरण हमे उससे भी ऊपर ले गये, पहले हम वाक से ओज की ऊचाई पर आए फिर नाभि से सिर की ऊचाई पर आये, किन्तु शम' के यह चार चरण हमे और उत्कृष्ट ऊचाई पर ले जाते हैं। दोनो भुजाओ के दो करतल और दो कर पृष्ठ यही तो चार हैं, जो दूध की मलाई की भांति हमे कर्मों की मलाई से सर्वाधिक ऊचाई पर पहुचा देते हैं।

इस प्रसग पर विचार कर और पूछें कि शरीर का सबसे ऊचा अग कौन है, यदि आप सिर कहने जा रहे हो तो रुक जाइए और अपने हाथो को ऊपर उठा दीजिए तो आप पायेंगे कि हाथ तो सिर से ऊपर—बहुत ऊपर चले गए। सिर तो ज्ञान कर्म इन्द्रियो का मूल कार्यालय है इन हाथो के प्रयोग से ही हम धन और यश की ऊचाई पर पहुच जाते हैं। हर समय हम हाथ ऊपर नही रख सकते हैं क्योंकि इन्हें कर्म मे प्रयोग भी करना है इन्हे नीचे रखे। हमे ऊचाई देने वाले यह हाथ नीचे बैठे रहते हैं। यह इस बात का सकेत है कि हमारी उपलब्धिया गर्व-गुमान का कारण न बन जाये प्रत्युत नम्रता उदारता का स्रोत बनी रहे। कविवर रहीम के उठे हुए हाथो को देख कर किसी कवि ने उनसे पूछ लिया—

सीखे कहा रहीम जू ऐसी देनी देन।
ज्यों ज्यों कर ऊपर करो त्यों त्यों नाचे नैन॥

अधिकाधिक दान प्रक्रिया में अपने उठे हुए हाथो को नीचे करते हुए रहीम जी ने अपनी अपार उदारता एव नम्रता का परिचय दे दिया—

देन हार कोई और है देत रहत जो दिन रैन।
लोग भरम हम पर करें ताते नीचे नैन॥

इन्द्रिया हमारी हैं इनमे शक्ति देन वाला कोई और परमात्मा है। कही भ्रमवश इसका आधार हम स्वय को न समझने लगे। इसे ईश्वर की देन समझ कर इस प्रकार उसी से शक्तिवान बनाये रखने की प्रार्थना करें। प्रार्थना के अनुसार पुरुषार्थ करें। पुरुषार्थ के फल को स्वार्थ मे ही नही परमार्थ मे भी दान करें तभी तो हमारी यश रूपी ऊचाई स्थिर होगी। लम्बे हाथो या आजानु बाहु वाले पुरुष इसी लिए भाग्यशाली कहे जाते हैं—क्योंकि ज्ञान कर्म और यश परिणाम से अपनी ऊचाई बढाने में वे समर्थ होते है। (क्रमश)

आधुनिक भीम द्वारा शक्ति प्रदर्शन

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एव महर्षि दयानन्द की पवित्र स्मृति मे आर्य समाज मन्दिर अशोक नगर मे दिनांक १२ १ ९२ को आधुनिक भीम द्वारा शक्ति प्रदर्शन का कार्यक्रम रखा गया। इस कार्यक्रम में लोहे की जजीर तोडना थाली के टुकड टुकडे करना सीने पर पत्थर की शिला तुडवाना तथा कार रोकना जैसे आश्चर्य चकित कर देने वाले करतब आधुनिक भीम द्वारा दिखाए गये कार्यक्रम को हजारो व्यक्तियो ने देखकर योग के प्रति अपना विश्वास व्यक्त किया। —भगत राम आर्य, प्रधान

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 13 14 2-1992 Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल-११०२४/९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) १३९/९२
साप्ताहिक "आर्यसन्देश" १६ फरवरी, १९९२

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख त्योहारो व पर्वो से सम्बन्धित रचनायें कृपया अक प्रकाशन से एक मास पूव भिजवायें।

—आय समाजो आय शिक्षण सस्थाओ आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

—सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री डबल स्पेस मे टाइप की हुई अथवा कागज के एक ओर साफ साफ लिखी होनी चाहिए।

—अस्पष्ट लिखी अथवा देर से प्राप्त सामग्री का उपयोग करना सम्भव न हो सकेगा।

—समीक्षा के लिए पुस्तको, पत्र-पत्रिकाओ के विशेषाको की कम से कम दो प्रतियां भिजवायें।

—पता बदलने अथवा गलत या अधूरा पता होने की स्थिति मे ग्राहक सख्या उल्लेख करते हुए पिन कोड नम्बर का भी उल्लेख अवश्य करे।

—आय सन्देश का वार्षिक शुल्क २५ रुपए तथा आजीवन शुल्क २५० रुपये है। आजीवन ग्राहक बनने वालो को ५० रुपए मूल्य का साहित्य/विशेषाक नि शुल्क उपहार स्वरूप दिए जायेंगे। स्टाक सीमित है।

—आय सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

—सभी पाठको के सुझाव व प्रतिक्रिया आमन्त्रित हैं।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

—सम्पादक

भूल सुधार—आय सन्देश के २६ जनवरी व २ फरवरी के अक म लेखको से निवेदन के अन्तगत पत्रिका का वार्षिक ग्राहक शुल्क २५ रुपये के स्थान पर ६५ रु० मुद्रण की भूल के कारण छप गया। —सम्पादक

ऋषि बोधोत्सव

२ मार्च १९९२, सोमवार

मावलंकर हाल, रफी मार्ग, नई दिल्ली

प्रात. ८ से सायं ४ बजे तक

युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का बोध दिवस महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर दिल्ली के समस्त आय समाजो की ओर से आय केन्द्रीय सभा के तत्वावधान मे सोमवार २ मार्च ९२ को प्रात. ८ से साय ४ बजे तक मावलकर हाल मे ऋषि मेला के रूप में समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। इस शुभावसर पर आप सब सपरिवार एव इष्ट मित्रो सहित सादर आमन्त्रित हैं।

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य

१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
दूरभाष—३१०१५०, ३११२८०८

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

—आर्य समाज बकेवर इटावा का वार्षिकोत्सव २० से २२ दिसम्बर तक धूमधाम के साथ मनाया गया। उक्त समारोह मे आर्य जगत के मूधन्य विद्वानो तथा धर्मोपदेशको ने पधार कर जनता जनार्दन को उपदेशामृत का पान कराया उत्सव अत्यन्त सफल रहा।



सेवा में—

2367 श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उ प्र)

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
हरिद्वार

की औषधियों का
सेवन करें।

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६ फोन २६१८७१

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस,दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी०(एल ११०२४/१-०९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५, अंक १७ | रविवार, १५, मार्च १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द · १६८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष · ३१०१५०

आर्य समाज के सिद्धान्तों को चारों तरफ फैला दें तो कोई देश को नहीं तोड़ सकता :

—श्री ज्ञानी जैल सिंह

नई दिल्ली पूर्व राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह ने कहा कि आज यदि आर्य समाज अपने विचार व सिद्धान्त पूरे भारत में फैला दें तो दुनिया की कोई ताकत देश को तोड नहीं सकती। ये विचार ज्ञानी जैल सिंह ने दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, आर्य शिक्षण सस्थाओ व आय सस्थाओं की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान मे महाशिव रात्रि के अवसर पर २ मार्च १९९१ को मावलकर हाल, रफी माग, नई दिल्ली मे आयोजित एक समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे करतल ध्वनि के बीच खचाखच भरे हाल मे व्यक्त किए।

श्री ज्ञानी जैलसिंह ने कहा कि मुझे आर्य समाज के उत्सवो में आकर बहुत प्रसन्नता होती है। किसी को आर्य समाज के सिद्धान्तों से मतभेद हो सकता है परन्तु भारत में छूआछूत अन्धविश्वास व पाखण्ड मिटाने, नारी शिक्षा के प्रसार एव स्वतन्त्रता आन्दोलन मे आर्य समाज के महत्वपूण योगदान को सभी स्वीकार करते हैं। श्री ज्ञानी जैल सिंह जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने तो देश की आजादी के लिए सब से पहले आवाज बुलन्द की थी और कहा था कि पराधीनता सबसे बडा पाप है।

पूव राष्ट्रपति ने आगे कहा कि और देश विनाशकारी ऐटमी शक्ति के मालिक हैं परन्तु भारत क पास आत्मिक बल है। आज देश को भगवान राम व भगवान कृष्ण तथा दयानन्द जैसे ऋषियो की जरूरत है और ससार की कोई ताकत देश को विभाजित नही कर सकती।

श्री ज्ञानी जैलसिंह ने कहा कि सविधान की आठवी सूची मे १५ भाषाए हैं, हिन्दी राष्ट्र भाषा व राज भाषा है और अंग्रेजी का कोई स्थान नहीं है, परन्तु आश्चर्य है कि सरकार का अंग्रेजी के बिना काम नही चल पाता है। उन्होने बताया कि भारत मे सन् १९४१ की जनगणना के अनुसार १ प्रतिशत लोग अंग्रेजी जानने वाले थे और सन् १९९१ मे यह सख्या बढ कर लगभग ४ प्रतिशत हो गई है। आजादी के बाद काम काज मे अंग्रेजी को मदद के तौर पर रखा गया था परन्तु आज यह भाषा मालकिन बन कर बैठ गई है। यह तो इसी प्रकार हुआ कि जसे कोई स्त्री घर में आग लेने आई हो परन्तु घर की रानी बन कर बैठ जाए। उन्होंने बताया कि दक्षिण मे लोग हिन्दी जानते है, पढते हैं और बोलते हैं परन्तु हिन्दी का विरोध केवल राजनैतिक कारणो की वजह है। ज्ञानी जी ने कहा कि आय समाज ने हिन्दी के उत्थान के लिए बहुत काम किया है और देश की एकता की रक्षा के लिए आज भी इसके प्रसार के लिए आगे बढ़ कर काम करते रहना चाहिए। उन्होंने सभी भाषाओ की जननी सस्कृत के प्रचार प्रसार की आवश्यकता पर भी बल दिया।

पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी ने कहा कि सन् १९४८ से १९८७ तक किसी न किसी रूप में, हुकूमत में रहा और मैंने देखा कि आर्य समाज काम करता है, ठीक बात कहता है और कोई सत्ता नही मानता परन्तु उसकी बात नही सुनी जाती। अत सरकार को आर्य समाज की बात अवश्य ध्यान से सुननी चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के व० उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि ऋषि दयानन्द ने मानव के सर्वांगीण विकास के लिए क्रान्तिकारी आन्दोलन आर्य समाज की स्थापना की थी और कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उद्घोष किया था। बोधोत्सव हमारे लिए आत्म निरीक्षण का दिन है और हमें चिन्तन करना चाहिए कि आर्य समाज के काम को आगे बढाने के लिए हमारा क्या योगदान रहा है और हमे क्या करना है। पडित वन्देमातरम् ने आगे कहा कि स्वार्थ के कारण कुछ लोग भ्रम फैलाते हैं, अत हमे उनसे सचेत रहना चाहिए हम प्रतिज्ञा करें कि सगठित व अनुशासित होकर काम करते रहेंगे।

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् स्वामी दीक्षानन्द ने ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ११वे समुल्लास मे आपसी फूट को महारोग बताया है। अत हम ओम सगच्छध्व सवदध्व स वो मनासि जानताम' ऋग्वेद के मन्त्र को आचरण मे लाकर ऋषि को सच्ची श्रद्धाजलि दे सकते हैं।

हरियाणा के कृषि मन्त्री श्री बच्चनसिंह आर्य ने कहा कि हरयाणा मे ३६५ अहातो (बार रूम) में शराबबन्दी आगामी १ अप्रैल को लागू कराने में उल्लेनीय काय किया गया है जबकि सरकार को इससे ८५ लाख रुपये राजस्व की हानि होगी। उन्होने बताया मैं सभी कार्यों को स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तो पर तोल कर करता हू।

इस अवसर पर डा० (श्रीमती) उषा शास्त्री, आचार्य रविदत्त गोत्तम, डा० रामकृष्ण आर्य ने भी प्रेरक विचार रखे। आर्य वीर दल के महामन्त्री श्री राजसिंह आर्य ने गढवाल भूकम्प पीडितों के लिए किए गए सहायता कार्यों की जानकारी दी और युवाओ को आर्य समाज में आगे बढ कर काम करने का आह्वान किया।

सम्मान

समारोह मे श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती को, श्रीमती प्रीतम चोपडा, आचार्य रविदत्त गोतम को, श्री बिहारी लाल भाटिया तथा डा० रामकृष्ण आर्य को आर्य लेखक सघ की ओर से वैदिक विद्वान पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

यज्ञ का शुभारम्भ प्रात यज्ञ से हुआ। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने करतल ध्वनि के बीच ओ३म् ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए श्री सूर्यदेव ने कहा कि ओ३म् का ध्वज किसी वर्ग, जाति, समाज व देश का ही नही है बल्कि पूरे विश्व की शान का प्रतीक है। इस सम्बन्ध मे उन्होने पूव सासद श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती के मामले मे न्यायालय द्वारा दिए गये उस निर्णय का भी जिक्र किया जहा ओ३म् ध्वज को साम्प्रदायिक नही माना गया है। इस कार्यक्रम मे श्री गुलाबसिंह राघव के भजन, क्रीडा व भाषण प्रतियोगिताए व व्यायाम प्रदर्शन का भी आयोजन किया गया।

इससे पूव दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव महामन्त्री डा० धमपाल, केन्द्रीय सभा की महामन्त्री श्रीमती कृष्णा चड्ढा, श्रीमती सरला मेहता, आदि ने पूव राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह मुख्य अतिथि का माल्यापण द्वारा स्वागत किया।

विमलकान्त शर्मा, मन्त्री

सम्पादक—प्रो० सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

सन्ध्या से हो निर्दोष अन्नमय कोष (अंग मार्जन प्रक्रिया)—४

—देव नारायण भारद्वाज

जैसा कि अग स्पर्श के मन्त्रानुष्ठान से हम वाक शक्ति, प्राण शक्ति दृष्टि शक्ति, श्रोत्र शक्ति, जन शक्ति हृद शक्ति, कण्ठ शक्ति मस्तिष्क शक्ति एव भुज शक्ति सभी तो शक्तियो का आह्वान करते हैं। इनसे ही हमारे करतल समृद्ध होते हैं और कर पृष्ठ भी सम्पुष्ट होते हैं। क्या पुष्ट ही पुष्ट होना पर्याप्त है। इस पुष्टि मे सृष्टि की सुख सन्तुष्टि भी तो होनी चाहिए। महाबलवान होकर कहीं हम निबलो की पीडा के कारण न बन जायें तो बल के साथ सुयश का सबल भी जुड जायेगा। भारत इतिहास मे कितने ऐसे पुरुष हो गए हैं जिन्होने अपने बल वैभव के घमण्ड मे दीन-दुखियो को प्रताडित कर सहार किया है और अन्त में किसी महापुरुष के हाथों मृत्यु के घाट उतर गये। उस महाबली को इतना अपयश मिला कि आज तक वह घृणा का पात्र बना हुआ है, दूसरी ओर जिन पुरुषों ने अपने बल वैभव का दुखियो की रक्षा में प्रयोग किया है, वे आज भी महापुरुषो के रूप मे वन्दनीय है।

ताम्र पात्र—एक मैला है, दूसरा माज कर—रगड कर स्वच्छ किया गया है और चमक रहा है। भले ही दानो में जल हो, किन्तु सभी का हाथ चमकदार पात्र की ओर ही बढ़ेगा। यह शरीर भी तो एक पात्र है—इसे कुपात्र सुपात्र बनाना है। इसके लिए मार्जन मत्र हमारा मार्ग दर्शन करते हैं। जैसे बतन को मू ज के जूने से माजा या रगडा जाता है तब उसमे चमक आती है, वैसे ही शरीर के इस पुरुष को भी अपनी रगडाई, प्रभु से करनी है, जिससे उसे चमक का सौन्दय प्राप्त हो।

ओ३म् भू पुनातु शिरसि। ओ भुव पुनातु नेत्रयो। ओ स्व पुनातु कण्ठे। ओ मह पुनातु हृदये। ओ जन पुनातु नाभ्याम्। ओं तप पुनातु पादयो। ओं सत्यम्पुनातु पुन शिरसि। ओं ख ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।

अर्थात्—(भू) पृथ्वी सबकी उत्पत्ति स्थल के रूप में विराजमान प्रभु मेरे (शिरसि से) सिर में (पुनातु) पवित्रता करे। (भुव) अन्तरिक्ष—उत्पत्ति का साधन प्रभु मेरे नेत्रो में (पुनातु) पवित्रता करे। (स्व) द्यौ-सुख स्वरूप प्रभु मेरे हृदय में पवित्रता करे। (जन) जनक प्रभु मेरी नाभि मे पवित्रता करे। (तप) तपोमय प्रभु मेरे पैरो में पवित्रता करे। (सत्य) सत्यशील प्रभु फिर मेरे सिर में पवित्रता करे। (ख) आकाश की भाति व्यापक (ब्रह्म) सबसे महान प्रभु (सवत्र) मुझे सर्वत्र पवित्र करे।

यहा पर परम पिता परमात्मा के एक-एक गुण का स्मरण और उसका ध्यान करते हुए पहले प्रमुख सात अगो को पवित्र करने की बात कही गई है, और अन्त मे सबसे बडे सव व्यापक ब्रह्म से पूरे शरीर को ही शुद्ध पवित्र करने की प्राथना कर दी गई है। हमारे शरीर के समस्त क्रिया कलाप का जन्म सिर मे ही होता है, और भूमि में भी सकल पदार्थों की उत्पत्ति होती है। इसलिए भू रूप प्रभु से यह प्राथना कर दी गई है। शिर के द्वारा उक्त कायकलाप कराने मे सहायक हमारी ज्ञानेन्द्रिया होती हैं, अस्तु नेत्रो के उपलक्षण से सभी ज्ञानेन्द्रियो की पवित्रता माग ली गई है। इन्द्रियों के साधन सकत स सिर ने जो योजना बनाई उसका प्रकटीकरण शारीरिक रूप मे कण्ठ से होता है। आप यह कह सकते हैं कि हम लिख कर भी उन निणयो का प्रकटीकरण कर सकते हैं, किन्तु लिखने के बाद भी जहा उसका पालन होगा तब तो बोलना ही पडेगा। इन्द्रियो के आग्रह पर सिर ने भवन का एक मानचित्र बनाया, अब मानचित्र के आधार पर इच्छित सामग्री के द्वारा कारीगर श्रमिक को बनाने का निर्देश तो देना ही होगा अस्तु प्रकटाकरण का माध्यम कण्ठ है। इसको सुख स्वरूप प्रभु से पवित्र करने की प्राथना की गई है—यद्यपि प्रकट हम वाणी से करेगे, किन्तु वाणी का उद्गम तो कण्ठ से ही होगा। उदर में ग्रहण करने वाली वस्तुओ को भीतर ले जाने वाली प्रणाली भी कण्ठ है, भीतर ले जाते समय भी सुख हो। अन्दर से बाहर शब्दों के प्रस्तुतीकरण का माध्यम भी कण्ठ है जो शब्द प्रकट है। वे भी सुखकारी हो।

यह वाणी सुखकारी तभी होगी, जब मधुरता के साथ प्रकट होगी यह मधुरता तभी आयेगी जब हमारा हृदय पवित्र होगा। आकार प्रकार से सभी का हृदय विशाल कहा जाता है। एक बस मे यात्रा करते समय देखा गया कि ठसाठस भरी बस मे सवारियां न केवल बैठी हैं, प्रत्युत खचाखच खडी भी है। एक बैठे यात्री को पडोस मे खडे यात्री का हाथ प्राय लग जाता था। इससे उसे आपत्ति होती थी, जब कि एक बैठे यात्री ने पास में खडी बूढ़ा माता को स्वय खडे होकर अपना स्थान दे दिया और उप माता ने पास खडी एक अ य महिला को भी अपने साथ बैठा लिया। विशाल हृदय होने पर वाणी मधुर हो ही जायेगी।

हमारा हृदय विशाल कैसे होगा, वह होगा नाभि को पवित्र रखने से। यहा पर नाभि से जो दो अथ लिए गए हैं प्रासगिक हैं—जिस उदर पर नाभि स्थापित है उसका पाचन सस्थान सही काम करे और प्रजनन में वीर्य साधन है—इसकी भी रक्षा हो अर्थात ब्रह्मचर्य एव पाचन प्रक्रिया का अनुपालन करके हम अपनी नाभि की पवित्रता निश्चित करते है। यह पाचन शक्ति कैसे ठीक रह सकती है। इसके लिए हमे अपने पैरो को पवित्र रखना होगा जो तप से ठीक रह सकते हैं। तप अर्थात्—पुरुषाथ परिश्रम से। पैर शरीर के नींव की भांति हैं। भवन की आधार शिला यदि कमजोर है तो भवन टिक नही सकता। इसी प्रकार शारीरिक श्रम करते रहने से हमारा पाचन तन्त्र भी ठीक रहेगा और हम सृजन भी उत्तम कर सकेंगे। मानव के चलने फिरने से यात्रा सत्सग करने से न केवल शरीर स्वस्थ रहता है, प्रत्युत उसके सिर में ज्ञान का भण्डार बढता जाता है, इस प्रकार सभी योजनाओ की जन्म भूमि सिर दिनो दिन पवित्र होता जाता है। यह ज्ञान की ज्योति केवल मधुर ही न हो सत्य भी होनी चाहिए। न्याय का व्यवहार होना चाहिए अन्याय का नही। सिर की सत्य रूपी पवित्रता भी सम्पूर्ण शरीर के साथ तथा सम्पूण समाज जगत के साथ न्याय पूर्वक व्यवहार करने से आएगी। जैसे हम अपने शरीर के किसी अग के साथ पक्षपात नही करते हैं—सम्पूर्ण शरीर को स्वस्थ रखना चाहते हैं—जैसे प्रभु सब से बडा सर्वव्यापक होकर समस्त ससार का यथोचित पालन करता है वैसे ही हमें भी अपने न्याय व्यवहार से अपने शरीर एव समाज दोनो की पवित्रता बनाये रखनी होगी।

मुख्य रूप से तीन लोक बताये जाते हैं। (भू) पृथ्वी (भुव) अन्तरिक्ष (स्व) द्यौ। इन्ही का सूक्ष्म विभाजन करने पर लोकों की सख्या सात हो जाती है। भू, भुव, स्व, मह, जन, तप, सत्यम्। इन्ही सभी लोको में ख ब्रह्म व्यापक रहता है। इसलिए एक-एक लोक शक्ति से एक-एक अग, फिर सर्वव्यापक प्रभु के गुण धारण से सम्पूण शरीर को शुद्ध रखने की बात कही गई है। मार्जन=माजना जैसे बर्तन को मू ज के जूने से—राख से रगड-रगड कर माजा जाता है—तब वह चमक उठता है। वैसे ही अपने शरीर को ही नहीं, अपने समस्त कार्य व्यवहार की मजाई करके अपने जीवन में चमक लानी है। जब हम स्नान करते हैं, तब भी साबुन का प्रयोग करते हैं—कोई कोई मुल्तानी मिट्टी का प्रयोग करता है। नहाते समय जल सिर के ऊपर डाला जाता है, वह ऊपर से मैल का परिष्कार करते हुए नीचे आ जाता है और सारा मैल अपने साथ लेकर अपने साथ बहाते हुए चला जाता है। सृष्टि मे भी तो ऐसा ही होता है। पर्वत से नदियो में जल ऊपर से चलता हुआ नीचे नीचे और नीचे चला जाता है। मार्ग का खारापन लेजाकर समुद्र मे छोड देता है। फिर वही जल मेघ-मण्डल द्वारा उठा लिया जाता है—और 'ख' ब्रह्म की भांति आवश्यकतानुसार सर्वत्र वर्षा कर देता है।

शरीर के अगो की गणना १ से ६ तक ऊपर से नीचे को करते हैं, किन्तु उन्हें पवित्र करने वाले लोक या प्रभु गुण की गणना १ से ६ तक नीचे से ऊपर को होती जाती है। सातवी लोक 'सत्य' जो सबसे उच्च है—उससे दुबारा सबसे उच्च अग सिर की शुद्धता की सम्पुष्टि कर दी गई है। सिर ऊचा है—वह ऊचा ही ऊचा न रहे जिससे हम धरती पर पैर रखना ही भूल जायें—इसलिये गर्वनाश हेतु यह आवश्यक है कि हम निगाह नीचे धरना पर रखें। अन्तरिक्ष—एक खुलेपन का उपलक्षण है, हमारे नेत्र भी खुले रहें अर्थात् इन्द्रियां संयम से व्यवहार कर। सिर एव ज्ञानेन्द्रियो से जो भी हम प्रकट करें वह स्व सुखदायक हो। हम ससार में सुखदायक तभी होगे जब हमारा हृदय विशाल होगा, यह विशालता उदर मे सग्रह नहीं वितरण से आयेगा और सम्पूण शरीर की आधार शिला तप परिश्रम से ही सुदृढ होगी, सिर की नम्रता ऐसी भी न हो जाये कि वह अपने अपनो का पक्षपात।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

विश्व महिला दिवस



विभिन्न विषयों को लेकर समय-समय प्र विभिन्न सगठवो द्वारा विश्व-व्यापी अभियान चलाए जाते हैं। इसी सप्ताह ८ मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व महिला दिवस का आयोजन किया गया। दिल्ली भारत की राजधानी है। वह स्वाभाविक ही है कि यहां पर भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित किये जाए। इस कार्यक्रम को राष्ट्र तथा सरकार की मान्यता है। अत यह भी सुनिश्चित ही है कि इस अवसर पर विभिन्न समाचार पत्रो, पत्रिकाओ मे, लेखादि तथा आकाशवाणी और दूरदर्शन पर ऐसे कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाए जिनसे महिलाओं की वर्तमान सुधरती स्थिति का पता लग सके तथा विभिन्न सगठनो की कारगुजारियों का पता लग सके।

यह अच्छे लक्षण हैं कि अब यहा पर अमीना बनने से रोकने के लिए कुछ स्वैच्छिक सगठन मुस्तैदी से सामने आ रहे हैं। पर आज भी समाचार-पत्र बलात्कार तथा वधुओं को जलाने के समाचारो से भरे होते हैं। कानून के रखवारे कानून की धज्जिया उड़ाते नजर आते हैं। केवल आडिटोरियम मे कार्यक्रम करने से तो महिलाओ का कल्याण नहीं हो जाएगा। महिलाओ का कल्याण तब होगा जब घर-घर में मा, बहन, बेटी, बहू को सम्मान्य मिलेगा। दुनिया भर मे हो रहे जुल्मों के खिलाफ आवाज को बुलन्द किया जाये तथा सघर्षों को तेज किया जाए।

कुछ दिन पहले की बात है कि दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० मुनीस रजा, एक इसी प्रकार के समारोह में बोल रहे थे। उनका एक वाक्य था—यदि आपके घर में वाशिंग मशीन (कपडे धोने का यन्त्र) नहीं है तो इसका मतलब है कि आप अपनी पत्नी से प्यार नहीं करते। इस वाक्य का विभिन्न पक्षों से विश्लेषण करने को आवश्यकता है। इस वाक्य से यह अर्थ स्पष्ट ही ग्रहण किया जाएगा कि कपडे धोने की जिम्मेदारी पत्नी की है। घर का काम करने की जिम्मेदारी पत्नी की है। पति-पत्नी दोनों नौकरी करते है। दोनो की नौकरी समान है, फिर भी घर जाते ही चाय बनाने का काम पत्नी के जिम्मे। ऐसा होता रहेगा तो महिला कल्याण कहा से होगा? सभी चाहते हैं कि महिला भी गृह-कल्याण में समभागी हो, पर उसे समानता नही दी जाती।

वैदिक धर्म के अनुयायी नारी को समान स्थान देते हैं—यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता.। वेदो मे अनेक सूक्त हैं जिनमे नारी को जीवन व्यवहार के निर्देश दिये गए हैं—

अध पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर।
मा ते कशप्लकौ दृशन स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ॥

— ऋग्वेद—८-३३-१९

तेरा प्रत्येक पग नपा तुला सोच-विचार से रखा जाये, ऐसा न हो कि तेरे किसी गलत पग से तुझ पर सब ओर से थू-थू होने लगे।

मनुस्मृति में मनु महाराज का कथन है—

पितृभि भ्रा तृभ श्चैता पतिभि देवरै यथा।
पूज्याभुषयितव्याश्च बहु कल्याण मीप्सुभि॥

पिता, भ्राता, पति और देवर को योग्य है कि वे अपनी पुत्री, बहन, पत्नी और भोजाई आदि स्त्रियो की सदा पूजा अर्थात् आदर सत्कार करे। उन्हे यथा-योग्य सम्मान दें। जो अपने घर का कल्याण चाहते हैं, उन्हें स्त्रियो को कभी क्लेश नहीं देना चाहिए।

आशा है कि विश्व महिला दिवस के अवसर पर जनता में ये भावनाए जन्म लेंगी।

—डा० धर्मपाल

सम्पादक के नाम पत्र

दोनो सहजानन्द सन्यासी भिन्न-भिन्न थे

आर्य सन्देश का सम्पादन आप विशेष मनोयोग तथा अध्यवसाय पूर्वक कर रहे हैं, एतदर्थ बधाई। आर्य स देश के विशेषाकों ने विशिष्ट ख्याति तथा लोक-प्रियता अर्जित की है। २ फरवरी के अक में प० ब्रह्मदत्त स्नातक का लेख स्वामी सहजानन्द के विषय में छपा था। इस सम्बन्ध मे यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि आर्य सदेश के १९ जनवरी, ९२ अक मे प्रकाशित लेख उन स्वामी सहजानन्द के सम्बन्ध मे था जो ऋषि दयानन्द के प्रत्यक्ष शिष्य तथा समकालीन थे। स्नातक जी ने जिनकी चर्चा की है, वे सहजानन्द बिहार के किसान नेता थे और उनका आर्य समाज से कोई विशेष सम्बन्ध नही था। दो सन्यासी एक ही नाम के, किन्तु भिन्न थे।

प्रो० भवानीलाल भारतीय
नन्दन वन, जोधपुर

मान्यवर, आपका आर्य सन्देश प्रति सप्ताह मिलता रहता है। डाक के कारण कभी लेट मिलता है, परन्तु मिलता अवश्य है और अक भी जो सुन्दर निकले हैं उनके आकर्षण से मन प्रसन्न हो उठता है।

पृथ्वीराज, जलाली

मन्दिर अंक

आपके पत्राक २१३१ के उत्तर में निवेदन है कि आर्य समाज मन्दिर अक प्राप्त हुआ। साज-सज्जा आकर्षक और सामग्री उपयोगी रही।

डा० राजेन्द्र प्रसाद आर्य
ग्राहक सख्या २७८३, मत्री आर्य समाज, फूलपुर, आजमगढ, उ० प्र०

आर्य समाज सरोजिनी नगर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नई दिल्ली। आर्य समाज सरोजिनी नगर का ४१वा वार्षिकोत्सव ८ व ९ फरवरी, ९२ को समारोहपूर्वक मनाया गया। धर्मवीर हकीकतराय बलिदान दिवस के उपलक्ष मे ८ फरवरी को बच्चो के लिए भाषण, गायन, चित्रकला आदि प्रतियोगिताओ का आयोजन किया और सभी प्रतियोगी बच्चों को पुरस्कार दिये गए।

९ फरवरी को समाज मन्दिर मे राष्ट्रीय एकता सम्मेलन व महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव कार्यक्रम श्री रतनलाल सहदेव की अध्यक्षता में मनाया गया। इस कार्यक्रम मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामत्री डा० धर्मपाल, दिल्ली आर्य महिला प्रान्तीय महिला सभा की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला आर्य, दिल्ली प्रदेश भाजपा के महामत्री श्री राममत्र, वैदिक विद्वान् श्री क्षितीश वेदालकार, श्री रविदत्त गौतम व श्री प्रकाशचन्द्र शास्त्री ने प्रेरक उद्बोधन द्वारा आर्य जनता का मार्ग दर्शन किया।

इससे पूर्व प्रात रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के बच्चो ने वीर हकीकत राय के जीवन पर एक सुन्दर नाटिका एव आकर्षक सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। ६ फरवरी से प्रारम्भ हुये यज्ञ की भी पूर्णाहूति दी गई।

सम्मान

समारोह मे प्रख्यात वैदिक विद्वान् व आर्य जगत् के सम्पादक प० क्षितीश वेदालकार को शाल, नारियल व सम्मान राशि भेंट कर सम्मानित किया गया।

आर्य समाज पालम कालोनी

आर्य समाज पालम कालोनी का १९वा वार्षिकोत्सव विगत माम समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सर्वश्री वेदपाल शास्त्री, डा प्रशान्त वेदालकार, प्रो० कृष्ण माधव आर्य, डा० जसबीर सिंह आर्य स्वामी स्वरूपानन्द आदि ने युवको के चरित्र निर्माण एव आर्य समाज के उन्नति के प्रेरक विचार प्रस्तुत किये।

आर्य युवा विकास परिषद् की खेल मत्री श्री सन्तोष कुमार की देख-रेख में युवको द्वारा व्यायाम प्रदशन का रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

आर्य समाज छातापुर, मथुरा

आर्य समाज छातापुर, मथुरा का २३वा वार्षिकोत्सव ९ व १० फरवरी को धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम में सवश्री आचार्य प्रेम भिक्षु वेद मन्दिर मथुरा, ब्र० सत्यप्रकाश तपोवन आश्रम देहरादून, सूरज प्रकाश वानप्रस्थी विरजानन्द ट्रस्ट सत्यदेव पांडेय आदि ने विभिन्न क्षेत्रो मे आर्य समाज द्वारा की गई सेवाओं का जिक्र कर आर्य जनता को उद्बोधन दिया। समाज प्रधान श्री नत्थीलाल महाशय एव मत्री श्री चन्द्र प्रकाश आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कर्म साधक : श्री रामनाथ सहगल

—डा० हीरालाल गुप्त

धनवान ईश्वर का मन्दिर बनवाते है, पर मैं तो निर्धन हू। मेरे पैर ही मेरे स्तम्भ हैं, शरीर देव मन्दिर है सिर सोने का कलश है। एक स्थान पर स्थापित मन्दिर को लोग एक बारगी विस्मृत कर सकते हैं पर चलता फिरता मन्दिर सदा पवित्र और महत्वपूर्ण होता है। —सत बसवेश्वर

कर्मशील मानव मानवता की अमूल्य थाती हुआ करते हैं। आज के टूट-फूट भरे युग मे सच्चे इसानो का अकाल पड गया है, हमारे चारो ओर स्वार्थ प्रेरित अपने लिए जीने वाले इसानो की अच्छी-खासी भीड है पर दूसरो के लिए जीने वाले त्यागी एक अदद साबुत इसान की बडी भारी कमी है। अच्छा कर्मशील इसान बिना किसी लोभ-लालच के नीव के पत्थर की तरह समूची इसानियत के लिए दृढ आधार बना करता है। श्री रामनाथ सहगल कुछ ऐसे ही इसान हैं जो समूचे आर्य जगत् के उत्थान के लिए रात दिन किसी न किसी कार्य मे जुटे रहते हैं। परोपकार, सेवा और सरलता के त्रिकोण मे यदि प्रेम उदारता और निश्छलता के रग भर दें तो श्री रामनाथ सहगल का व्यक्तित्व दूसरो के उत्थान के लिए अनेक रग उछालता मूर्तिमन्द होने लगता है। यह एक ऐसा व्यक्तित्व है जो कदली-वृक्ष की तरह बिना किसी दुराव-छिपाव के सीधी सपाट तहो से बना है, अब चाहे उसम आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्तृ सभा, अनारकली आर्य समाज, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, वेद प्रतिष्ठान, अन्तर्राष्ट्रीय आर्यन लीग, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्रीमती परोपकारिणी सभा, 'आर्य जगत्' और 'शुद्धि समाचार', अनेकानेक डी ए.वी स्कूलो और आर्यसमाजो के मत्री, कोषाध्यक्ष, सयोजक, प्रबन्धक, मुद्रक आदि पदो का समवाय कर दें तो वे ऊपर से आरोपित लगते हैं, वास्तविकता तो यह है कि सहगल जी पदो की चिन्ता न करके काम करने पर विश्वास करते हैं और अहर्निश काम करना ही उनकी एक मात्र पूजी है।

मानव-सेवा डी ए वी आन्दोलन की अकली धरोहर है। इस आन्दोलन ने शिक्षा के द्वारा, नारी उत्थान के द्वारा, बच्चो की शिक्षा के द्वारा और दीन दुखियो की सेवा के द्वारा मनुष्य को मनुष्य के रूप मे पहचानने की सफल प्रचेष्टा की है। मनुष्य को मनुष्य के रूप मे पहचानना आज के युग का सबसे बडा अध्यात्म शास्त्र है और इसी में छिपा है आर्य जगत् का भूत, वर्तमान और आगामी भविष्य। वेद व्यास ने "महाभारत" में मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ इसी अर्थ मे कहा है और आर्य समाज ने मनुष्य को ऊचा उठाने मे, मनुष्य को अन्धविश्वास से मुक्त करने मे जीवन की सच्ची राह दिखाने में, वैदिक ज्ञान का अमित प्रकाश जीवन के दायरे मे चारों ओर बिखरने मे जो अकथनीय कार्य किया है उसे मापने मे समय का दायरा फटने लगेगा, हर पैमाना उसे मापने मे छोटा पड जाएगा, वह खुद-ब-खुद देश काल की सीमा से बाहर समाज को अमरत्व प्रदान करता आया है और करता रहेगा। सेवा, त्याग, परोपकार और प्रेम के चतुष्कोण मे महात्मा हसराज ने समाज के उत्थान मे, गरीबो के विकास मे, असहाय लोगो को टूटने से बचाने मे जो विविध कार्य किए हैं वे ही जीवन की सच्ची 'रामायण' हैं। वर्तमान में उनकी इसी सेवा-भावना का अनुकरण करते हुए डी ए वी प्रबन्धकर्तृ सभा, नई दिल्ली के अध्यक्ष प्राचार्य श्री जी पी चोपडा, सगठन सचिव श्री दरबारी लाल एव अनारकली आर्य समाज के मत्री श्री रामनाथ सहगल अतिवृष्टि, अनावृष्टि वाले क्षेत्रो मे सहयोग के लिए, पजाब और जम्मू-काश्मीर के विस्थापितो को बसाने के उद्देश्य से एव भारत के किसी कोने मे विपदाग्रस्त लोगो को सकट मुक्त करने के लिए अन्न, वस्त्र, दवा एव अन्याय उपयोग की वस्तुए सहायतापेक्षी लोगों तक पहुचाने मे किसी तरह की कोर-कसर नही रखते हैं। 'आर्य जगत्' मे इस तरह के कामों के लिए धन की अपील करते ही चहुओर से धन आने लगता है और ये लोग सेवा-कार्य को और भी सफलता से परिपूर्ण करते हैं। अभी पिछले दिनो उत्तरकाशी में भूकम्प आने पर डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्तृ सभा और अनारकली आर्य समाज, नई दिल्ली ने सहायतापेक्षी लोगो को ५ हजार कम्बल, २ ट्रक टीन की चादरें, १ ट्रक त्रिपाल, खाद्यान्न, अनेक अनाथ बच्चो को अपने अनाथालयो मे लाकर अभूतपूर्व सहयोग दिया है और इस तरह के समग्र कार्यों मे सहगल जी की कर्त्तव्य-परायणता देखने को बनती है। अनारकली आर्य समाज मे कपड, खाद्यान्न, दवा तथा अन्यान्य वस्तुए आने पर उनकी क्रियाशीलता उन्हे सहायतापेक्षी लोगों तक पहुचाने में गुणात्मक हो जाती है। कुछ दिन पूर्व कार्यवश मैं उनके कार्यालय गया और यह देखकर आश्चर्य चकित हो गया कि भारी काम के मध्य उत्तरकाशी को जाने वाली वस्त्रो की भारी-भारी गठरियो के मध्य एक शाल पडा था और सहगल जी वहा कार्यरत कर्मचारी को समझाते हुए कह रहे थे कि पहले उस शाल को उठाकर गठरी मे बाधो, कही ऐसा न हो कि वह बाहर पडा मैला हो जाए और दान मे लेने वालो को ही सही मैली चीज देना कोई अच्छी बात तो नहीं है। जो इसान इतनी बारीकी से इतनी दूर जाकर सोचता है और काम के अथाह अम्बार के बीच मे भी दीन दुखियो को अपने स्तर पर रखकर व्यवहार करता है वह एक बडा इसान है और इस तरह की इसानियत हर इसान के लिए स्पर्धा की वस्तु होनी चाहिए। हमारे शास्त्रो मे 'क पुनर' कहकर सुख के बढाने वाले को ही नर की सज्ञा प्रदान की गई है और इस रूप मे सहगल जी सुमित्रा नन्दन पत की 'सुन्दर हैं विहग, सुमन सुन्दर, मानव तुम सबसे सुन्दरतर" वाली उक्ति को "पर-दुख-कातरता' वाली भावना के आधार पर पूर्ण चरितार्थ करते हैं।

आज से लगभग सात दशक पूर्व सरगोधा जिले के राझियावाला ग्राम (अब पाकिस्तान) मे इस अनन्य समाज सेवक का जन्म हुआ था और अपनी धुन' के महाधनी इस स्वाध्यायशील, सरल और सत्यवादी इसान ने अपने गुरु श्री पिथोरीलाल जी प्रेम के समक्ष गुरू दक्षिणा के रूप मे यह सौगध ली थी कि वे पचास वर्ष की आयु तक सेवा के क्षेत्र मे पदाधिकारी नहीं बनेंगे। तब से आज तक बिना किसी पद का लालच किये वे हमेशा धरातलीय कार्य मे जुटे रहते हैं, वही उनका अधिकार है और वही उनकी साधना है। आज ऐसे इसानों का बडा अभाव है जो अपने काम को बडी तत्परता से उसे अपनी साधना विचार कर रात-दिन करते रहे। ६ वर्ष पूर्व बैंक की सेवा से कार्य मुक्त होने पर इन्होने डी ए वी को अपना परिवार बनाकर अनथक कार्य का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए १९८३ मे अजमेर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शती का कुशल सयोजन करके भारत की तात्कालिक प्रधान मत्री की प्रशसा प्राप्त की। इस आयोजन मे सारे भारतवर्ष से लगभग ५ लाख आर्यजन भाग लेने अजमेर पहुचे, इतने लोगो की आवास और भोजन की व्यवस्था करना एक दुष्कर कार्य था, जिसे सहगल जी ने अकेले चुनौती मानकर बहुत अच्छे ढग से निभाया। महात्मा हसराज दिवस पर तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली मे हजारो दर्शको और श्रोताओ के मध्य मे सहगल जी आदर्श पूर्ण ढग से मच का सचालन करते हैं। वर्ष १९७३-७५ के मध्य इन्होंने मेरठ, कानपुर, वाराणसी, यमुना नगर, बम्बई, अम्बाला दिल्ली आदि शहरो मे आर्य समाज शती समारोहो का कुशलतापूर्वक सयोजन किया और इन अवसरो पर भारत के उप-राष्ट्रपति और राष्ट्रपति की प्रशसा के अधिकारी बने अपनी कुशल व्यवस्था को लेकर। सहगल जी का निरभिमानी स्वभाव एक प्रकार की चुम्बकीय शक्ति रखता है तभी तो उनके साथ कार्य करने वाले हर काम मे बेझिझक उनके साथ जुट जाते हैं और सफलता को उनकी कार्य पद्धति की अतिम परिणति बना देते हैं। इनके प्रबन्धकत्व मे जितने भी डी ए वी स्कूल है वे निरन्तर प्रगति करने में विश्वास करते हैं।

सहगल जी की शिक्षा कालेज या विश्वविद्यालय में नहीं हुई है, फिर भी उनके व्यक्तित्व मे एक सतुलन है और वह स्वय प्रभूत है। मुझे अच्छी तरह याद है कि वे प्रो० वेदव्यास जी के साथ डी० ए० वी० के प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य रूप मे सन् १९८७ मे मारीशस गए थे और वहा भारतीय हाईकमीशन मे प्रथम सचिव (शिक्षा और सस्कृति) के रूप में मैंने इन लोगो के जनता के मध्य में कई व्याख्यान कराए। सहगल जी ने वहा भावावेश मे बोलते हुए कभी कोई ऐसी बात नहीं कही जो इनके अधिकार क्षेत्र मे न आती हो। उनका स्वभाव खुली पुस्तक की तरह है—जिस बात पर इनका अधिकार नहीं है उसके लिए ये स्पष्ट मना कर देते हैं एव जिस बात को ये कर सकते हैं उसके लिए बगैर कहे एडी-चोटी का पसीना बहाने को इन्हें आप हमेशा तैयार पायगे। तभी तो लदन और नैरोबी के आर्य सम्मेलनो में सौ सौ लोगों का प्रतिनिधित्व करते हुए इन्होंने किसी भी

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्रथम पुण्य तिथि ११ मार्च पर—

अनन्य वैदिक विद्वान पं० विश्वनाथ विद्यालंकार

—मनमोहन कुमार आर्य

आर्य समाज का मूलाधार वेद है। प० विश्वनाथ विद्यालकार आजीवन आर्य समाज के तीसरे नियम 'वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है, वेद का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है, के अनुसार अथर्ववेद सामवेद भाष्य एव वेदो के सरल सुबोध लेखन मे समर्पित रहे।

प० विश्वनाथ जी ने सम्पूर्ण अथर्ववेद एव सामवेद का ऋषि की वेदार्थ-प्रक्रिया का अनुसरण कर भाष्य किया है। इस भाष्य की विशेषता का अनुमान तो पाठक इन्हे पढ कर ही लगा सकते हैं तथापि इस सम्बन्ध मे प्रसिद्ध वैदिक विद्वान प० युधिष्ठर मीमांसक जी की टिप्पणी यथार्थ होने के कारण प्रस्तुत है। वह लिखते हैं—' वेद विद्या-विचक्षण वेद माता के आराधन मे उत्सर्गीकृत श्री प० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड के नाम से सभी वदमक्त आर्य बन्धु परिचित हैं। आपने करनाल निवासी श्री माननीय चौधरी प्रतापसिंह जी की प्रेरणा और सहायता से सन् १९७१ मे अथर्ववेद भाष्य लिखना आरम्भ किया था। उस समय आपकी अवस्था ८२ वर्ष थी। श्री माननीय पडित जी सम्प्रति ९९ वर्ष के हो चुके हैं (यह लेख जून १९८७ मे लिखा गया) हाथ कापते है। दृष्टि भी मन्द हो गई है तथापि आप आतशी शीशे की सहायता से अथर्ववेद भाष्य के पूर्ण करने मे जुटे हैं। ऐसे वेद कनिष्ठ विद्वान के घोर परिश्रम से लिखे गये भाष्य का यदि प्रकाशन न हो तो यह आर्य समाज के लिए अत्यन्त निन्दाजनक होगा। इसी दृष्टि से रामलाल कपूर ट्रस्ट ने साधन न होते हुए भी इस कार्य को पूरा करने का विचार किया है। आप वेद रूपी दिव्य सरस्वती की आराधना में सर्वात्मा सलग्न हैं। मैं समझता हू यह सरस्वती की आराधना के कारण सरस्वती का विशेष वरदान है।" स्व० श्री प्रताप सिंह चौधरी के शब्दो में, "श्री प० विश्वनाथ जी का वेद का स्वाध्याय तथा चिन्तन जहां गम्भीर है, वहा आप वेदोद्धारक ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वेदार्थ-प्रक्रिया के अनुगामी हैं।"

ऋषि दयानन्द ने पूर्ण यजुर्वेद एव ऋग्वेद (मण्डल ७ के सूक्त ६२ मन्त्र २ तक) का ही भाष्य किया है। अत ऋषि शैली पर ही शेष वेदो का भाष्य पडित विश्वनाथ जी की विशेषता है जिसके लिए वह आर्य जनता के सदैव सम्मान के पात्र है। वेद भाष्य के अतिरिक्त ही वेदो पर पण्डित जी ने कई अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थ भी लिखे हैं। उनके द्वारा लिखित एव प्रकाशित साहित्य का लम्बी श्रृंखला है। इनके ग्रन्थो मे अथर्व वेद भाष्य (सम्पूर्ण), सामवेद का आध्यात्मिक भाष्य, अथर्ववेद परिचय, ऋग्वेद परिचय यजुर्वेद स्वाध्याय तथा पशु यज्ञ समीक्षा, शतपथ ब्राह्मणस्थ अग्निचयन समीक्षा, वैदिक जीवन, वैदिक गृहस्थाश्रम सन्ध्या रहस्य, वैदिक पशुयज्ञ समीक्षा, बाल सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का सरल अध्ययन, वीर माता का उपदेश प्रमुख हैं। इनमे से अधिकांश ग्रन्थ रामलाल कपूर ट्रस्ट से विक्रयार्थ उपलब्ध हैं।

पण्डित जी का जन्म वजीराबाद (गुजरावाला पाकिस्तान) मे १०४ वर्ष पूर्व सन १८८८ मे हुआ था। पण्डित जी को अपनी सही जन्म तिथि का ज्ञान नही था। मृत्यु से पूर्व उन्होंने अनेक बार अपनी आयु १०३ वर्ष बताई थी। इसी आधार पर उनके जन्म वर्ष १८८८ की गणना की गई है। मृत्यु से ३ वर्ष पूर्व शतवर्षीय होने पर उन्होने देहरादून स्थित अपने निवास स्थान पर वेद पारायण यज्ञ भी किया था। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य समाज के महोपदेशक प० रुद्रदत्त शास्त्री थे। पण्डित जी सपत्नीक यजमान की वेदि पर पूर्ण समय तक उपस्थित रहते थे। यह दृश्य अत्यन्त दर्शनीय था।

प० जी के पिता श्री प्रीतमदास गुजरांवाला मे आर्य समाज के प्रधान थे। उन्होने अपने जीवन काल में स्वामी दयानन्द जी के दर्शन किए थे। आर्य समाज के सिद्धान्तों मे दृढ़ता के कारण ही उन्होने विश्वनाथ जी को गुजरांवाला मे गुरुकुल मे प्रविष्ट कराया था। जब स्वामी श्रद्धानन्द जी गुरुकुल को गुजरांवाला से कांगड़ी (हरिद्वार) लाये तो विश्वनाथ जी भी ब्रह्मदत्त जी के साथ कांगड़ी आ गए। जालन्धर से स्वामी श्रद्धानन्द जी के दोनो सुपुत्र हरिश्चन्द्र एव इन्द्र जी भी साथ हो लिए थे। गुरुकुल कांगड़ी से ही सन १९१४ मे पण्डित जी स्नातक बने थे। आप विश्वविद्यालय की विद्यालकार उपाधि तथा विद्यामार्तण्ड की मानोपाधि से विभूषित थे। सन् १९१४ के दीक्षान्त समारोह मे आप प्रथम विभाग में सवप्रथम रहे। वैदिक साहित्य, सस्कृत साहित्य दर्शन साहित्य, दर्शन शास्त्र और रसायन शास्त्र मे तथा सर्वयोग में प्रथम रहने के कारण आपको ४ सुवर्णपदक एव १ रजत-पदक प्राप्त हुआ था। पण्डित जी सन् १९१४ मे ही गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर पद पर नियुक्त हुए। गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय मे समय-समय पर आप रसायन, दर्शन शास्त्र और वैदिक साहित्य पढ़ाते रहे और सन् १९४२ मार्च में वहा से सेवामुक्त हुए। कालान्तर मे आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के वैदिक अनुसधान विभाग के अध्यक्ष भी रहे।

पण्डित जी को अपनी रचनाओ पर भी सम्मानित किया गया है। उन्हे प्राप्त सवप्रथम पुरस्कार आर्य समाज, सान्ताक्रुज द्वारा प्रदत्त वेद-वेदाग पुरस्कार है जो उन्हे सन् १९८७ मे मिला। एतदर्थ कैप्टन देवरत्न जी आर्य भी समस्त आर्यों की ओर से प्रशसा के पात्र हैं जो इस पुरस्कार के प्राण हैं। वेद-वेदाग पुरस्कार के अतिरिक्त पण्डित जी को १९८३ मे प० गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार, सन् १९७९ मे अथर्ववेद भाष्य काण्ड १८-१९-२० पर गगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार एव यजुर्वेद स्वाध्याय एव पशु यज्ञ समीक्षा एवं अथर्ववेद भाष्य काण्ड १४ १७ एव ११-१३ पर उ० प्र० सस्कृत अकादमी द्वारा प्रदत्त पुरस्कार हैं। पण्डित जी के दिवगत होने से ४-५ वर्ष पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के मन्त्री श्री धर्मेन्द्र सिंह आर्य द्वारा गठित समिति की ओर से भी आपको सम्मानित किया गया था।

पण्डित जी के अधिकांश ग्रन्थो के प्रकाशन का श्रेय जहा रायबहादुर स्व० चौधरी प्रताप सिंह एव प० युधिष्ठर मीमासक जी को है वहीं रामलाल कपूर ट्रस्ट के प्रबन्धक श्री जीवन लाल भी पण्डित जी के ग्रन्थो के प्रकाशन में विशेष रुचि लेते हैं। उन्ही की प्रेरणा से इन पक्तियो के लेखक ने पण्डित जी के अथर्ववेद भाष्य काण्ड १-३ की पाण्डुलिपि प्राप्त कर रामलाल कपूर ट्रस्ट को प्रकाशनार्थ उपलब्ध कराई। मृत्यु से पूर्व पण्डित जी ने एकाधिक बार चौधरी प्रतापसिंह को स्मरण कर उनकी वैदिक साहित्य के प्रकाशन को प्रोत्साहन एव दान की प्रवृत्ति की प्रशसा की थी एव आर्यों में स्वाध्याय के प्रति बढ़ती निष्क्रियता एव प्रलोभन वृत्ति के कारण प्रकाशन आदि मे उत्पन्न बाधाओ पर दु ख व्यक्त किया था।

पण्डित जी का जीवन सादगी एव सरलता मे व्यतीत हुआ। वह सदैव खादी के वस्त्र ही प्रयोग करते थे जिसका मुख्य कारण वेदाज्ञा (अथर्ववेद १४ १ ४५) हो सकती है। इसके अतिरिक्त पण्डित जी अन्तिम दिनो तक आगत अतिथियों का स्वागत सत्कार करना नही भूलते थे। जब भी कोई उनसे मिलने आता था तो बिना जलपान किये वह नही आने देते थे। यह भी दुखद समाचार है कि जीवन के अन्तिम क्षणो मे रचा गया उनका अथर्ववेद भाष्य काण्ड १-३ सम्प्रति छप रहा है जो शीघ्र ही प्रकाशित होकर सुलभ होगा। समाप्ती से पूर्व हम उनके शिष्य डा० सुरेश चन्द्र विद्यालकार की निम्न पक्तियां प्रस्तुत कर लेख को विराम देते हैं, "आज पण्डित जी के न रहने पर भी हम उनके ज्ञान की, उनके वेद की रक्षा मे यथा सामर्थ्य लगे हुये हैं। श्री प० रामनाथ वेदालकार उनके शिष्य हैं, क्या वे वेद रक्षा मे तत्पर नही? श्री सत्यभूषण वेदालकार और श्री क्षितीश वेदालकार श्री हरिदत्त वेदालकार उनकी शिक्षाओ के अनुरूप वेद के प्रचार और प्रसार मे लगे हुए हैं। मेरा तो कोई हस्ती नही पर इतना अवश्य कहूगा कि उनकी आज्ञा का पालन करने के लिये अपने हास्य व्यग लेखो की रचना छोड़कर वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रन्थ, कल्पसूत्र और निरुक्त आदि के अध्ययन और लेखन मे लगा रहकर अब जीवन की सांध्य वेला मे पहुच रहा हू। लक्ष्मीपति व्यापारी और दिल्ली के निवासी मनोहर विद्यालकार के वेदाध्ययन को देखकर लक्ष्मी और विद्या का मेल दिखाई देता है। यह भी उनके ही शिष्य हैं।

अंग्रेजी का प्रभुत्व समाप्त करें

—ज्ञानी जैल सिंह

"आज देश मे केवल चार प्रतिशत अंग्रेजी जानने वाले लोग देश की ९६ प्रतिशत जनता पर अपनी मर्जी लाद रहे हैं। देशवासियो को इस दु:खद स्थिति को उलट देना चाहिए।" ये उद्‌गार पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने आर्य समाज सान्ताक्रुज (पश्चिमी) बम्बई द्वारा आयोजित ४८वें वार्षिकोत्सव के समापन समारोह के अवसर पर २ फरवरी, ९२ को आर्य विद्या मन्दिर सभागार सेंट सिरिल रोड बान्द्रा (पश्चिम) मे व्यक्त किये। श्री ज्ञानी जैलसिंह जी मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे।

ज्ञानी जैलसिंह जी ने आगे कहा कि राष्ट्र-भाषा हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओ के समर्थन को अंग्रेजी का विरोध माना जाना गलत है। प्रमुखता तो अपनी भाषाओ को ही मिलनी चाहिए, अंग्रेजी का स्थान तो गौण है। उन्होने आगे कहा कि अंग्रेजी नौकरशाहो की प्रेमिका की तरह है, इसलिए वे इसका वियोग नही सहन कर पाते हैं। उन्होने उपस्थित विशाल जनसमुदाय की हंसी के बीच कहा कि जो भाषा हमारे संविधान मे ही नहीं है, सरकार का उससे कोई काम नही।

श्री ज्ञानी जैलसिंह ने कहा कि आत्मिक शक्ति ही सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र मे पिरो सकती है। वेदादि शास्त्र आत्मिक शक्ति के स्रोत हैं, इसलिए वेदो का जनभाषा हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में सरल व सुबोध अनुवाद किया जाना चाहिए ताकि गूढ तत्व जनसाधारण आसानी से समझ सके।

समारोह की अध्यक्षता पूर्व सासद श्री रामचन्द्र विकल ने की। श्री विकल ने आर्य समाज द्वारा स्वतन्त्रता आन्दोलन, नारी शिक्षा, दलितोद्धार आदि क्षेत्रो में की गई बहुमूल्य सेवाओं का जिकर किया।

वेद वेदाग एवं वेदोपदेशक पुरस्कार

समारोह में आर्य जगत् के प्रकाण्ड पण्डित विशुद्धानन्द जी मिश्र को २१,००० रुपये की सम्मान राशि अभिनन्दन पत्र, रजत ट्राफी, शाल एव श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि श्री मिश्र जी को पहले भी अन्य पुरस्कार प्रदान किये जा चुके है।

अपने सम्मान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र ने कहा कि वेद, उपनिषद् आदि शास्त्रों का ज्ञान विश्व साहित्य की अनमोल धरोहर है।

इस अवसर पर केरल के आचार्य नरेन्द्र भूषण को ग्यारह हजार रुपये की सम्मानित राशि प्रदान कर वेदोपदेशक पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। उन्होंने भी अभिनन्दन पत्र, रजत ट्राफी, शाल व श्रीफल सम्मान स्वरूप भेंट किये गए। श्री नरेन्द्र भूषण जी ने आभार व्यक्त करते हुए केरल में वेद गुरुकुल स्थापित किये जाने की योजना पर प्रकाश डाला।

आर्य समाज सान्ताक्रुज के प्रधान एवं वेद वेदाग पुरस्कार समिति के संयोजक कैप्टन देवरत्न आर्य ने इन पुरस्कारो का विवरण दिया। उन्होने बताया कि इससे पूर्व वेद वेदाग पुरस्कार श्री उदयवीर जी शास्त्री, श्री विश्वनाथ जी, विद्या मार्तण्ड, डा० रामनाथ जी वेदालकार, आचार्य प्रियव्रत जी शास्त्री, पण्डित हरिशरण जी सिद्धान्तालकार एवं स्वामी विद्यानन्द सरस्वती तथा वेदोपदेशक पुरस्कार पण्डित शान्ति प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी, पन्नालाल पीयूष व श्री ओम प्रकाश जी वर्मा को प्रदान कर सम्मानित किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त महामहोपाध्याय पण्डित युधिष्ठिर मीमासक ७१०००/- रुपये एवं पण्डित सत्यकाम विद्यालकार को ५१००० रुपये की विशेष सम्मान राशि प्रदान कर भी सम्मानित किया जा चुका है।

उल्लेखनीय है कि मुख्य समारोह से पूर्व २६ जनवरी से प्रतिदिन प्रातः श्री प० वागीश जी शर्मा के ब्रह्मत्व मे यजुर्वेद महायज्ञ होता रहा जिसकी पूर्णाहुति २ फरवरी को हुई। इस वार्षिकोत्सव में २६ जनवरी को आर्य युवा सम्मेलन एव २७ को महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया।

नैतिक शिक्षा, बौद्धिक विकास, स्मरण शक्ति के विकास आदि के लिए इस वार्षिकोत्सव में १४ से १८ वर्ष की आयु के बच्चों का एक किशोर शिविर भी लगाया गया। साथ ही विभिन्न स्कूलो के बच्चों के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिताए भी आयोजित की गई।

८ दिन के उत्साहपूर्वक मनाये गये इस भव्य वार्षिकोत्सव समारोह में आर्य जगत् के अनेक मानवीय सन्यासी, महात्मा, विद्वान् व भजनोपदेशकों ने आर्यजनता का प्रेरक उद्‌बोधनों द्वारा मार्ग-दर्शन किया।

नई दिल्ली के प्रगति मैदान मे १ फरवरी से शुरू हुआ दसवा विश्व पुस्तक मेला ९ फरवरीको समाप्त हो गया। दो साल मे एक बार आने वाला यह अब तक का सबसे बड़ा पुस्तक मेला था। पहला पुस्तक मेला होटल जनपथ, नई दिल्ली में लगा था। इस मेले में भारत व विदेशो के ८०० से अधिक प्रकाशको व पुस्तक विक्रेताओं द्वारा विभिन्न भाषाओ में दस लाख से भी अधिक पुस्तकें प्रदर्शित की गई। इस मेले का आयोजन नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया ने किया था तथा अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ फेडरेशन आफ एजुकेशनल पब्लिशर्स आदि ने मेले के आयोजन में सहयोग प्रदान किया।

नौ दिन तक चले इस पुस्तक मेले को लगभग सवा चार लाख लोगो ने देखा। भारत में अंग्रेजी पढे लिखे लगभग चार प्रतिशत लोग ही हैं परन्तु उनके लिए अंग्रेजी पुस्तको की भरमार थी। अंग्रेजी पुस्तको की तुलना मे हिन्दी की पुस्तकें बहुत कम थी। अन्य भारतीय भाषाओ के स्टाल में भीड नहीं थी।

इस पुस्तक मेले मे आर्य साहित्य प्रकाशक व विक्रेताओ ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। हाल न० १५ में ऐसोसिएशन आफ इण्डियन यूनिवर्सिटिज के स्टाल न० ४५ पर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार का भी अच्छा साहित्य था। हाल न० ६ मे आर्य प्रकाशन, अजमेरी गेट, दिल्ली एव मधुर प्रकाशन सीताराम बाजार के स्टालो पर रखे वैदिक साहित्य में सम्पूर्ण वेद भाष्य (१० भाग) भी लोग खरीद रहे थे। मैसर्स सरस्वती सदन के स्टाल पर आर्य समाज के इतिहास के सम्पूर्ण ७ खण्डों के साथ-साथ डा० सत्यकेतु विद्यालकार की पुस्तकें भी क्रय की जा रही थीं। इसके अतिरिक्त किताब घर, दिल्ली, गोविन्दराम हासानन्द, आर्य पथ, कृष्णा नगर, विश्व अनुसधान परिषद् ज्ञानपुर वाराणसी के स्टालो पर भी वैदिक साहित्य खरीदा जा रहा था। आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली के स्टालों पर सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि आदि भी क्रय की जा रही थी। इसके अलावा हिन्दी पुस्तको के अन्य स्टालो मे भी महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द आदि की पुस्तकें प्रदर्शित की गयी। अन्य धार्मिक पुस्तको के स्टालों में गीता प्रेस गोरखपुर की पुस्तकें सस्ती होने के कारण लोगों ने काफी क्रय कीं। कुल मिला कर यह दसवा विश्व पुस्तक मेला सफल रहा और आर्य पुस्तक विक्रेता व प्रकाशक सतुष्ट थे।

(पृष्ठ २ का शेष)

करने लगे, परन्तु उसमे सत्य न्याय का समावेश होना चाहिए। फिर तो शरीर ही क्या, सारा हमारा ससार ही श्रेष्ठ हो जायेगा।

अग स्पर्श मे जहा एक ओर हमने अपने अग-प्रत्यग में बल की प्रभु से प्रार्थना की थी और बल भी हमे यशदायक हो, यह भी आग्रह किया था, आगे मार्जन में अग-दर अग की पवित्रता हेतु प्रभु से प्रार्थना करते हुए अपने बल एव यश को शान्ति प्रदायक बनाये रखने का आग्रह किया है। इसके लिये हमें स्वयं भी प्रयत्न करना होगा। बल की चमक यश मे है—यश की चमक 'शम' में है। यही तो सध्या का अन्तिम लक्ष्य है। बल प्राप्त कर अन्याय करने वाले को यश कहां ? बल प्राप्त कर अन्याय-निवारण के काय करने वाले का यश सुरक्षित है। कहीं यह यश बाहर ही बाहर तो नही दिखाई पड रहा है, इसके पीछे कोई प्रच्छन्न स्वार्थ तो नहीं है, तब वह यश स्थाई कहां रहने वाला है ? ससार मे हमारा यश दिखाई देता है। परिवार मे नही, तो भी यह यश-यश नहीं शम है। एक महाविद्यालय के प्राचार्य जी बाजार मे निकलते समय सब्जी बेचने वाले, मोची या अन्य किसी अति साधारण व्यक्ति को भी नमस्ते स्वीकार कर लेते थे। उनका कुशल क्षेम भी पूछ लेते थे। आप इन्हे यशस्वी समझ सकते हैं, किन्तु अपने सहयोगी शिक्षको को सामने पाते ही गर्दन फुला लेते थे, उनकी कुशलता पूछना तो दूर, नमस्ते का उत्तर भी फूली गर्दन को हिला डुलाकर देते थे। प्राचार्य जी का जहाँ बाजार मे यश था—वही महाविद्यालय म अपयश, जो एक दिन उनके प्रति विद्रोह का कारण बना और उन्हें पदच्युत तक होना पड़ा। यश में शम यही है कि उससे हमें शान्ति प्राप्त हो और जो अन्ततोगत्वा प्रभु मिलन का आधार बन जाये।

श्री विमलकान्त शर्मा को पितृशोक

आर्य समाज तिमारपुर दिल्ली के पूर्व प्रधान एवं निष्ठावान आर्य समाजी श्री चिरञ्जीलाल शर्मा का १२ फरवरी ९२, को निधन हो गया। वे ८१ वर्ष के थे। वे आर्य सन्देश के सह सम्पादक व आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री श्री विमल कान्त शर्मा के पूज्य पिता थे।



श्री शर्मा का अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से निगम बोध घाट पर किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री प्रियतम दास रसवन्त आर्य नेता चौधरी लक्ष्मीचन्द एवं आर्य समाजों व अनेक संस्थाओं की ओर से भारी संख्या में लोगों ने अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री शर्मा के शोक संतप्त परिवार में उनकी धर्म पत्नी श्री लज्यावती, चार पुत्र व तीन पुत्रियां हैं।

आर्य समाज मन्दिर तिमारपुर में १५ फरवरी को डा० सत्यकाम विद्यालंकार के पुरोहित्य में शान्ति यज्ञ व रस्म पगड़ी हुई। शोक सभा में श्री शर्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

श्री चिरञ्जीलाल शर्मा का जन्म ३० अप्रैल, सन् १९११ को गांव नगड़ा, जिला ऊना होशियारपुर में हुआ था। वहीं डी० ए० वी० स्कूल में प्राप्त शिक्षा के फलस्वरूप कट्टर आर्य समाजी बन गए। सन् १९६९ में टेलीफोन रेवेन्यू विभाग दिल्ली से सेवा निवृत्त हुए थे। वर्षों तक आर्य समाज तिमारपुर में महत्त्वपूर्ण पदों पर रहते हुए सेवा की। सन् १९८९ में आर्य समाज तिमारपुर में आयोजित एक समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने उन्हें सम्मानित किया था। सरल, शान्त, गम्भीर, मिलनसार, समय के पाबन्द, सच्चाई ईमानदारी व आचरण की पवित्रता पर बल देते हुए वे आयु पर्यन्त समाज सेवा में संलग्न रहे। ऐसे पुण्यात्मा को शत शत प्रणाम।

श्री रणजीत सिंह आर्य नहीं रहे

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के महामन्त्री श्री राजसिंह आर्य के पिता श्री रणजीत सिंह जी आयु का ११ फरवरी को हृदय की गति रुक जाने से देहान्त हो गया। बुधवार १२ फरवरी ९२ को निगम बोध घाट पर दाह संस्कार के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल आदि ने अन्तिम श्रद्धांजलि दी। रस्म पगड़ी व श्रद्धांजलि सभा २१ फरवरी को गुप्ता कालोनी (निकट राणा प्रताप बाग) में हुई। जिसमें अनेक समाजों समाजों व संस्थाओं के अधिकारियों ने भावभीनी श्रद्धांजलि दी। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को दुःख सहने की शक्ति एवं दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

—आर्य समाज बड़ही (नागल, जिला सहारनपुर के संस्थापक श्री ओमप्रकाश आर्य का लम्बी बीमारी के बाद ७ फरवरी को निधन हो गया। उनके परिवार में उनकी पत्नी, दो पुत्र व दो पुत्रियां हैं। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं शोक संतप्त परिवार को शांति प्रदान करें।

(पृष्ठ ४ का शेष)

सदस्य को शिकायत का मौका नहीं दिया। वैदिक ... सभा के प्रधान महाशय (मैं वाणी से मधुर बोलूं) तथा भूयास ... गणमान्य अधिकारी व महानुभाव जाऊं) आदि शाश्वत वाक्यों का निर्माण के लिए उदारतापूर्वक दान दिया। किया था।

...शाला का उद्घाटन

सर्वप्रिय सहगल जी जैसा व्यक्तित्व हमारी उदारमना प्रभु ... भाग बन कर सदियों में कभी एक बार आता है और आकर अपने निश्छल ... और विश्चल मनन से जीवन के हर कोने को भर देता है। ऐसा व्यक्तित्व सार्वदेशिक और सार्वकालिक बन कर अपने भोलेपन में सबको आकृष्ट करता है और अपने प्रभाव से मार्गदर्शी 'उजास' फेंक कर सबको कर्म के उत्तुंग शिखरों की ओर बढ़ने को उत्प्रेरित करता है। अन्त में अपने दो शब्दों के द्वारा इस कर्मविष्ठ व्यक्तित्व की मैं अनुशंसा करता हूं—

इस जीवन का दीप जलेगा, उसको तो जलना जो है।
जीवन पांखी और उड़ेगा, द्वारा नम उसका जो है।।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 12 13-3-1992 Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल ११०२४/९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) १११/९१
साप्ताहिक "आर्यसन्देश" १५ मार्च, १९९२

मानव सेवा ही ईश्वर की सच्ची पूजा है

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने ६ मार्च को आर्य समाज मन्दिर राधेश्याम भवन, बुराड़ी, दिल्ली में निशुल्क नेत्र जांच व्यवस्था का उद्घाटन किया। इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए स्वामी जी ने कहा कि मानव सेवा ही ईश्वर की सच्ची पूजा है और आर्य समाज ने प्रारम्भ से ही जन कल्याण कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया व समाज सेवा की है। नेत्र मानव शरीर के अनमोल अंग हैं। अत हमें इन्हें स्वस्थ व निरोग रखना चाहिए। स्वामी जी ने आशा व्यक्त की कि इस निशुल्क नेत्र जांच व्यवस्था से स्थानीय जनता व आस-पास के क्षेत्रों के लोग लाभ उठायेंगे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने बताया कि सभा के तत्वावधान में यहां एक वर्ष पूर्व आर्य धर्मार्थ औषधालय की स्थापना भी की गई और उसी क्रम में आज यहां यह निशुल्क नेत्र जांच व्यवस्था शुरू की जा रही है। श्री सूर्यदेव ने आगे बताया कि वेणु नेत्र संस्थान, नई दिल्ली के सहयोग से सोमवार व शुक्रवार को सप्ताह में दो निशुल्क नेत्र परीक्षण, आपरेशन, ऐनकें व दवाइयाँ देने की व्यवस्था की गई है।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने इस योजना का प्रारूप एवं सभा द्वारा की जा रही समाज सेवा की गतिविधियों की जानकारी दी।

श्री वैद्य प्रह्लाद दत्त जी का ९८वां जन्मोत्सव मनाया गया

सुप्रसिद्ध समाज सेवी स्व० श्री वैद्य प्रह्लाद दत्त का ९८वां जन्म दिवस आर्य पब्लिक स्कूल, बांसलोई, नई दिल्ली में समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन ७ मार्च, ९२ को विद्यालय परिसर में किया।

इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा कि चाहे गो रक्षा का प्रश्न हो, या हिन्दी के प्रचार-प्रसार का अथवा शुद्धि या स्वदेशी आन्दोलन का अथवा वेद प्रचार या हिन्दू (आर्य) हितों का मामला हो, स्व० श्री वैद्य प्रह्लाद दत्त जी ने सदैव आगे बढ़ कर सब में सक्रिय भाग लिया व सहयोग दिया था। आर्य समाज दीवान हाल से संचालित आन्दोलनों में तो उनकी भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है। उनका कर्मठ जीवन प्रेरणा स्रोत रहेगा।

कार्यक्रम में प्रि० चन्द्रदेव, श्री बी० देव, वैद्य महावीर, विद्यालय के प्रबन्धक श्री आदित्य आर्य आदि ने भी स्व० वैद्य जी द्वारा आर्य जाति, धर्म समाज आदि के लिए की गई बहुमूल्य सेवाओं का स्मरण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी और युवा पीढ़ी को उनसे प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ राजेन्द्र नगर आर्य कन्या गुरुकुल की कन्याओं द्वारा यज्ञ व मधुर भजनों द्वारा हुआ। विद्यालय के प्रबन्धक श्री आदित्य आर्य ने कार्यक्रम के आयोजन संचालन आदि में उल्लेखनीय योगदान दिया। प्रसाद वितरण व शान्ति पाठ से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सेवा में—

2367 श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उ प्र)

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी०(एल११०२४/१-९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५, अंक १८ | रविवार, २२, मार्च १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द · १६८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष · ३३०१५०

महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का नियमित स्वाध्याय करें

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

आर्य समाज ईंट व पत्थर के भवन का नाम नहीं है अपितु कर्मठ व श्रेष्ठ व्यक्तियों के संगठन का नाम ही आर्य समाज है। ये उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध ने ८ मार्च को आर्य समाज मन्दिर पश्चिमपुरी नई दिल्ली में यज्ञशाला का शिलान्यास करते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर स्वामी दिव्यानन्द जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ एवं मन्त्रोच्चारण साथ शिलान्यास के समय चारों वेद, अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि ग्रन्थ रखे गये।

स्वामी आनन्द बोध जी ने समारोह में भारी संख्या में उपस्थित नर-नारियों को यह संकल्प लेने का आह्वान किया कि वे महर्षि दयानन्द के ग्रंथों का नियमित स्वाध्याय करें और आर्य समाज के विचारों को घर घर पहुंचाने का कार्य करते रहें। समारोह के विशिष्ट अतिथि सांसद श्री सज्जन कुमार ने यज्ञ में अग्न्याधान किया। श्री सज्जन कुमार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पूज्य स्वामी आनन्द बोध के नेतृत्व ने आर्य समाज को एक नई दिशा दी है। उन्होंने कहा कि देश व समाज के उत्थान के लिए आर्य समाज का योगदान इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा।

कार्यक्रम से पूर्व सांसद श्री रामचन्द्र विकल ने ओ३म् ध्वजारोहण किया। श्री विकल ने हर प्रकार की उन्नति के लिए शरीर को स्वस्थ व निरोग रखने पर बल दिया और योगाभ्यास के महत्व पर प्रकाश डाला।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन

इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने की। अपने उद्गार व्यक्त करते हुए श्री सूर्यदेव ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने सबसे पहले स्वराज्य का उद्घोष किया था और आर्य समाज ने देश की आजादी के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आर्य समाज राष्ट्र रक्षा को सर्वोपरि महत्व देता रहा है। देश की एकता व अखण्डता की रक्षा के लिए आर्य जनों को अपनी श्रेष्ठ परम्परा के अनुसार हर प्रकार का त्याग करने के लिए सदैव उद्यत रहना चाहिए।

समारोह में दिल्ली प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यदि राष्ट्र सुरक्षित व अखण्ड है तो हम भी सुरक्षित हैं। राष्ट्र के हित सबसे पहले आते हैं और कोई भी चीज उसके बाद। अतः राष्ट्र रक्षा ही हमारा सबसे बड़ा धर्म है। राष्ट्र की उन्नति के लिए काम करना आपसी भाई चारा व सद्भावना बनाये रखने के लिए हमें सदैव प्रयासशील रहना चाहिए।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रान्तीय महिला सभा की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला आर्या, दिल्ली प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री, दिल्ली महानगर परिषद् के पूर्व मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री केदारनाथ साहनी, वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालंकार आदि वक्ताओं ने भी राष्ट्र की स्वतन्त्रता व रक्षा में आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका की सराहना की एवं आज की परिस्थितियों में संगठित हो कार्य करते रहने का आह्वान किया।

उल्लेखनीय है कि कार्यक्रमों में दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल सहित दिल्ली आर्य समाजों के अनेक गणमान्य अधिकारी व महानुभाव उपस्थित थे और उन्होंने यज्ञशाला के निर्माण के लिए उदारतापूर्वक दान दिया।

मालवीय नगर आर्य समाज मन्दिर में यज्ञशाला का उद्घाटन

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में ८ मार्च को आर्यसमाज मन्दिर मालवीय नगर, नई दिल्ली में महाशिव रात्रि पर्व बोधोत्सव के रूप में धूम धाम से मनाया गया।

इस कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने मालवीय नगर समाज मन्दिर का नव निर्मित यज्ञशाला का भी उद्घाटन किया। विभिन्न आर्य समाजों व आर्य संस्थाओं के गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त समारोह में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मन्त्री श्री अर्जुन सिंह भी उपस्थित थे और उन्होंने यज्ञ की पूर्णाहुति में श्रद्धापूर्वक आहुतियां दीं।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि आज सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि हम संगठित एवं अनुशासित हो युगपुरुष दयानन्द सरस्वती के मार्ग पर चलते हुए आर्य समाज के मिशन को आगे बढ़ाते रहें।

स्वामी जी ने आगे कहा कि बोधोत्सव के पावन दिन पर हमें महर्षि की अन्तिम इच्छा का सम्मान करते हुए वैदिक धर्म व मानवता की सेवा का संकल्प लेना चाहिए।

श्री अर्जुनसिंह ने महर्षि दयानन्द को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी जी सत्य के सच्चे उपासक थे। वेद मार्ग ही सच्चा रास्ता है। और इसी से मानव मात्र का कल्याण सम्भव है, अतः हमें स्वामी दयानन्द के बताये रास्ते पर चलते रहना चाहिए। इससे पूर्व श्री अर्जुनसिंह को शाल ओढ़ा कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्री प्रेमचन्द श्रीधर आदि वक्ताओं ने भी अपने प्रेरक विचार रखे।

विकलांग शिविर का उद्घाटन

वैदिक सेवाश्रम कस्बा बाजना जिला मथुरा द्वारा विकलांग दिवस पर १४ मार्च को आयोजित 'विकलांग शिविर' का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उद्घाटन किया। इस अवसर पर भारत सरकार के कल्याण मन्त्रालय द्वारा भेजे गए रिक्शा साइकिल एवं लाखों रुपए की अन्य सामग्री भी विकलांगों को वितरित की गई।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामी आनन्द बोध ने कहा कि हमारा यह परम कर्त्तव्य है कि अपंगों को अपने पैरों पर खड़े होने व उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में हर प्रकार की मदद करें। स्वामी जी ने आगे कहा कि इस प्रकार समाज सेवा के कार्यों से ईसाई मिशनरियों द्वारा चलाई जा रही निर्धन हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन की गतिविधियों पर अंकुश लग सकेगा।

उल्लेखनीय है कि वैदिक सेवाश्रम गत १० वर्ष से इस प्रकार के जन कल्याणकारी कार्यों में संलग्न है। स्वामी आनन्दबोध ने आचार्य प्रेम भिक्षु, स्वामी भोलानन्द, आदि को इस सुन्दर आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

सम्पादक—प्रो० सूर्यदेव   सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

सन्ध्या से होता प्राणमय कोष का परिपोष

(प्राणायाम प्रक्रिया)—५

—देव नारायण भारद्वाज

अन्नादि पार्थिव पदार्थों से निर्मित हमारा अन्नमय कोष अर्थात् शरीर स्वस्थ दीर्घायु एवं शान्तिदायक हो—अभी पीछे इसी पर विचार किया था। इस स्थूल देह मात्र से ही तो सब कुछ नहीं होने वाला है, इसके लिए प्राण शक्ति की अपरिहार्य आवश्यकता है। हम जिस वाहन पर बैठकर दूर सुदूर की यात्रा करते हैं वह रबड़ के बने हुए सुदृढ़ टायर-ट्यूब के ऊपर चलती है। ट्यूब एक पतला-सा थैला मात्र होता है उसकी सुरक्षा के लिए एक मोटा टायर उसके ऊपर रहता है। इसी ट्यूब में हवा भरी जाती है जो वाहन को चलाने में सहायक होती है। हवा के निकल जाने पर जहां एक ओर टायर ट्यूब निरर्थक हो जाते हैं, वहीं वह वाहन भी जहां का तहां खड़ा हो जाता है। यही स्थिति हमारे शरीररूपी वाहन की है। इसकी प्राण शक्ति ही, इसके सारे कार्य-कलाप के लिए उत्तरदायी होती है। मस्तिष्क जो आदेष्टा है तो प्राण शरीर की चेष्टा है। प्राण जिधर जाते हैं, मन उधर जाता है, जिधर मन जाता है—इन्द्रियां भी उधर ही चल देती हैं। तो प्रश्न यह उपस्थित होता है कि पहले प्राण को ही अपने नियन्त्रण में कर लिया जाए। प्राणायाम से अन्दर से श्वास को बाहर एवं बाहर के श्वास को अन्दर रोकने का अभ्यास ही तो हम करते हैं। व्यायाम से शरीर में जहां अतिरिक्त भण्डारित वसा आदि को शारीरिक श्रम करके व्यय कर देते हैं वहीं प्राणायाम के अभ्यास से शरीर में प्राण-शक्ति का संचार करते हैं। मार्जन मन्त्रों के केन्द्र बिन्दु सार शब्दों की पुनरावृत्ति प्राणायाम के समय की जाती है। स्थूल शरीर के लिए विस्तृत स्थूल मन्त्र है—उससे सूक्ष्म प्राणमय कोष के लिए सूक्ष्म मन्त्र ही चाहिए। जिससे हमारा ध्यान शनैः शनैः स्थूल से सूक्ष्म पर होता चला जाये और अन्त में सबसे हटकर प्रभु पर केन्द्रित हो जाये। आइये प्राणायाम मन्त्र देखें—ओ३म् भूः। ओ३म् भुवः। ओ३म् स्वः। ओ३म् महः। ओ३म् जनः। ओ३म् तपः। ओ३म् सत्यम्।

इस मन्त्र और इसके अवयवों का अर्थ पिछले अध्याय में कर दिया गया है। यहां पर तो इनके प्रयोग की बात है। जैसे-जैसे हम प्राण वायु का आहरण घ्राणेन्द्रिय के द्वारा अपने भीतर करें अथवा भीतर से बाहर निष्कासन करें, वैसे वैसे इस मन्त्र के अवयवों का जाप करते हुए परमात्मा की इन्हीं शक्तियों या गुणों पर ध्यान लगायें। यहां पर दिये गए एक एक शब्द के ध्यान मात्र से परमात्मा के उससे सम्बन्धित गुण या कार्यकलाप का स्मरण हो जाये और वही शक्ति हम स्वयं में रक्षित कर सकें—यही तो इसका प्रयोजन है। जैसे ओ३म् शब्द मात्र से परमात्मा के सृजन, पालन एवं संहार सम्बन्धी सभी गुणों एवं स्वभावों का चित्र हमारे सामने खिंच जाता है, वैसे भूः से ईश्वर सत्ता का, भुवः से उसका चेतना का, स्वः से प्रभु के आनन्द गुण का, महः से उसकी महानता का, जनः से प्रभु की रचनात्मकता का, तपः से प्रभु की उद्यमशीलता का और सत्यम् प्रभु की न्याय-प्रियता का पता चलता है। इनमें से तीन महाव्याहृतियां हैं—शेष सभी व्याहृतियां हैं, इसके सन्धि विच्छेद से बनता है—वि+आ+हृ+ति अर्थात् विशिष्ट रूपेण सभी ओर से स्थित का हरण करके कहीं एकत्र कर दे—यह कार्य कौन करता है, कोई शब्द या बात। प्रभु के गुणों का इन शब्दों के चिन्तन द्वारा हमारे मन में प्रभु की धारणा बन जाती है। मार्जन प्रक्रिया में हमने इन शब्दों के साथ क्रमशः सिर, नेत्र, कण्ठ, हृदय, नाभि, पैर एवं पुनः सिर को जोड़ा था। वहां भी यदि हम एक-एक अंग पर इन शब्दों को रखते जायें और विचारते जायें—तो इन अंगों के कार्यों से प्रभु के दर्शन होने लगते हैं। कोई भव्य भवन हम देखते हैं—तो उस भवन को देखने मात्र से उस भवन के पीछे छिपे सारे इतिहास को हम जानना चाहते हैं। प्राचीन काल के विशाल मन्दिर, किले, मीनार, ताजमहल आदि हम जब देखने जाते हैं, देखने मात्र से सन्तोष नहीं हो जाता है हम यह भी जानना चाहते हैं कि इसका निर्माता कौन है। यह अंग-प्रत्यंग भी इसी प्रकार उसके निर्माता की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कर देते हैं। एक बार नेत्र कष्ट के निदान के लिए, नेत्र चिकित्सक ने कहा, अपने मूत्र, रक्त, शर्करा का परीक्षण कराइये। बड़े घबड़ाते हुए इन पदार्थों के नमूने लेकर परीक्षक के पास गये। जिस समय परीक्षक से हमें वह परिणाम प्राप्त हुआ और उसमें कोई दोष नहीं निकला, तो मेरे मन ने सबसे पहले अपने पिता का स्मरण किया, उसका आभार माना, उन्हें नत-मस्तक हुआ। मैंने विचार किया कि हमारी इस देह की यह जो आरोग्यता है—वह हमें अपने पिता से ही मिली है, क्योंकि वे अति संयमी और स्वस्थ रहे, अन्यथा हमने तो इसकी दीवालों को उठाने के स्थान पर गिराने का ही काम किया है। इस प्रकार इन सभी अंग अंग पर आविष्ट इस एक एक शब्द से प्रभु एवं उसकी परम प्रभुता का ध्यान हो जाता है।

प्राणायाम से ब्रह्माण्ड के सप्त लोकों की शक्तियों को भक्त अपने अन्दर लाने का प्रयत्न करता है। ब्रह्माण्ड के तीन प्रमुख लोक—भूः भुवः, स्वः अर्थात् पृथ्वी, अन्तरिक्ष एवं द्यौ लोक हैं। इन तीनों का अभिभाजन करने के बाद, इन लोकों की संख्या सात हो जाती है। भूः के दो लोक बन जाते हैं—१ भूरग्नये स्वाहा, २ भूरग्नये प्राणाय स्वाहा, ३ भुवर्वायवे स्वाहा, ४ भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा हो जाते हैं। ५ स्वरादित्याये स्वाहा, ६ स्वारदित्याय व्यानाय स्वाहा। इस प्रकार यह छः लोक हो गए और सातवां लोक सत्यम्। यदि मोटे तौर से विचार किया जाये तो पता चलता है कि भूः लोक पृथ्वी से हमें—१ अग्नि, २ प्राण भुवः लोक अन्तरिक्ष से हमें—३ वायु (विद्युत), ४ अपान, स्वः लोक-द्यौ से हमें—५ आदित्य, ६ व्यान तथा सर्वोच्च सत्य लोक से हमें सत्यरूपी शक्ति प्राप्त होती है।

प्रत्येक काम के बाद हम शान्ति पाठ करते हैं। इसमें सात लोक स्पष्ट दिखाई देते हैं। १ द्यौ, २ अन्तरिक्ष, ३ पृथ्वी, ४ आप, ५ ओषधि, ६ वनस्पति, ७ विश्वेदेवा, इन सभी लोकों को महाव्याहृतियों से जोड़ देने पर प्रसंग अधिक मुखर उठता है—१ स्वः, २ भुवः, ३ भूः, ४ महः, ५ जनः ६ तपः, ७ सत्यम्, जो परमपिता के विशिष्ट गुण हैं, जिनका ध्यान कर हम इन शक्तियों का आह्वान करते हैं। ऊपर व्यक्त ब्रह्माण्ड के सात लोकों के सूक्ष्मांश प्रतीक रूप में हमारे इस देह रूपी पिण्ड में भी बैठे हुए हैं, जिनका वर्णन मार्जन मन्त्रों में किया गया है स्वः कण्ठ, भुवः नेत्र, भूः-सिर, महः हृदय, जनः-नाभि, तपः पैर तथा सत्यम्-पुनः सिर या सर्वांग देह। ब्रह्माण्ड के इन्हीं लोकों की शक्ति प्राणायाम के द्वारा ध्यान पूर्वक खींचकर हम अपने पिण्ड के इन्हीं लोकों में भर लेना चाहते हैं। आशय यह है कि ब्रह्माण्ड की परम शक्ति से अपने पिण्ड की अल्प शक्ति को परिवेष्टित करना चाहते हैं, जैसे कोई बैटरी चार्ज की जाती है। पिण्ड की शक्तियां या ब्रह्माण्ड की शक्तियां देखने में पृथक् पृथक् लगती हैं, उनके कार्य भी भिन्न लगते हैं, किन्तु वे सभी शक्तियां परम प्रभु की महाशक्ति से ही संचालित होती हैं। उपनिषद् की वह कथा इस सम्बन्ध में अच्छा प्रकाश डालती है जिसमें कहा गया है कि देवासुर संग्राम में देवताओं के विजयी हो जाने पर उन्हें घमण्ड हो गया। ब्रह्मा ने उन्हें शिक्षा देने के लिए बुलाया। देवता लोग अग्नि देवता को आगे कर ब्रह्मा जी के पास पहुंचे। उन्होंने एक तिनका दिया और अग्नि से कहा कि इसे जलाओ—उसने जलाने का पूर्ण प्रयास किया, किन्तु वह जला नहीं पाए। ब्रह्मा ने वायु देव से कहा, आप इस तिनके को उड़ाओ। उन्होंने भी पूरा जोर लगा दिया किन्तु वह तिनका टस से मस न हुआ। सभी देवताओं की गर्दन नीची हो गई तब ब्रह्मा जी ने कहा कि आप लोग जिस शक्ति से कार्य कर लेते हैं—वह आपकी नहीं—ब्रह्म की है।

मनु महाराज का कथन है कि जैसे वैसे अग्नि में तपाने से स्वर्ण आदि धातुओं का मल नष्ट होकर वे शुद्ध हो जाती हैं, वैसे ही प्राणायाम करके मन आदि इन्द्रियों के दोष क्षीण होकर वे निर्मल हो जाती हैं। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में महर्षि ने उल्लेख किया है कि बारम्बार अभ्यास करने से प्राण उपासक के वश में हो जाता है। प्राण के स्थिर होने से मन, मन के स्थिर होने से आत्मा भी स्थिर हो जाता। इन तीनों के स्थिर होने के समय अपने आत्मा के बीच में, जो आनन्द स्वरूप अन्तर्यामी परमेश्वर है, उसके स्वरूप में मग्न हो जाना चाहिए।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

आग्नेय शहीद भगत सिंह



२३ मार्च १९३१ का प्रभात। लाहौर सेन्ट्रल जेल मे जब भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू को फासी स्तम्भ पर ले जाने के लिए पुकारा गया, तो इस प्रकार उल्लसित थे, मानो कि मा की गोद मे जाने के लिय लालायित हो। सही भी यही है कि वे मा को परतन्त्रता की बेडियों से मुक्त कराने के लिये ही तो सघर्षशील थे। भगतसिंह ने हसते हुए कहा था—'फासी की रस्सियो को तनिक खीच लो। कही ऐसा न हो कि इस शुभ घडी मे ये ढीले पड जाए।' अग्नेयव्रती भगतसिंह फासी स्तम्भ की ओर ऐसी छलागें लगाते हुये बढा मानो गगा की लहरे महासागर की उत्ताल तरगो में विलीन होने के लिये तडप रही हो।

उस दिन भगतसिंह ने नश्वर शरीर त्याग दिया। उसकी जीवन ज्योति बुझ गई, पर वह असख्य हृदयो मे स्वतन्त्रता की लगन और तडप जगा गई। देश को एसे अमर शहीदो पर गर्व है। ऐसे ही बलिदानों के लिए कहा गया है—

शहीदो की चिताओ पर लगेगे, हर बरस मेले।
वतन पर मिटने वालो का यही बाकी निशा होगा।

भारत को स्वाधीन कराने में क्रान्तिकारी वीरो का अमूल्य योगदान है। भगतसिंह का नाम इन वीरो की पक्ति मे अग्रणी है। इनका जन्म अश्विन शुक्ला १३, सवत् १९६४ मे लायलपुर मे ख्याति प्राप्त राष्ट्र भक्त आर्य परिवार मे हुआ था। इनके पिता किशनसिंह, चाचा अजीतसिंह तथा स्वर्णसिंह ब्रिटिश गुलामी के खिलाफ स्वातन्त्र्य योद्धा थे। इनका परिवार आर्यसमाजी था। इनके मन में आर्य समाज के सिद्धान्तो के अनुकूल कुछ ठोस काय कर गुजरने की इच्छा थी। उन्होने मैट्रिक की परीक्षा डी०ए०वी० स्कूल लाहौर से पास की थी। डी०ए०वी० की आर्यसमाजी शिक्षा-प्रणाली ने इन्हे निष्टावान देश भक्त बनने मे मदद की थी। इन्ही दिनो पूरे देश मे असहयोग आन्दोलन की लहर दौड रही थी। उसी समय भगतसिंह का परिचय सुखदेव, भगवतीचरण और यशपाल आदि से हुआ था।

भगतसिह ने पत्रकारिता के क्षेत्र मे भी अमूल्य योगदान दिया था। दिल्ली मे 'सत्यवादी' मे तथा कानपुर मे 'प्रताप' मे उन्होने पत्रकारिता का कार्य किया। आगे चलकर वे क्रान्तिकारी सगठन में भर्ती हो गए। उन्होने 'नौजवान भारत सभा, का गठन किया। बाद मे वे इसी प्रकार की सुखदेव द्वारा लाहौर म चलाई जा रही सस्था मे सम्मिलित हो गए।

१९२८ मे लाहौर मे साइमन कमीशन के विरोध मे लाला लाजपत राय के नेतृत्व मे एक जुलूस निकाला गया था। पुलिस ने जुलूस पर लाठी चार्ज किया। मि० स्काट ने इस महान् नेता को इतना पीटा कि १७ नवम्बर को पजाब के इस महान् नेता की मृत्यु हो गई। अग्रेजो के इस अत्याचार को भगतसिह कैसे सहन कर सकते थे। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि वे स्काट को मृत्यु के घाट उतारेंगे। किन्तु गलत शिनाख्त के कारण उन्होने सैंडस पर धडाधड गोलिया चलाई। अप्रैल १९२९ में उन्होंने असैम्बली में बम फेंका और पुकारा—'इन्कलाब जिन्दाबाद'। वे भागे नही। उस वीर ने तो देश भक्ति के लिए तथा साम्राज्यवाद की समाप्ति के लिए यह मार्ग चुना था। आगे उन पर मुकदमा चला तथा लाहौर जेल में फासी पर लटका दिया गया।

वह वीर आज हमारे बीच मे नही है, पर उसका सारा सदेश हमारे साथ है। हमे उस वीर पर गर्व है। आओ इस अवसर पर प्रण करे कि हम हर अन्याय का साहसपूर्वक मुकाबला करेंगे।

—डा० धर्मपाल

सम्पादक के नाम पत्र

मान्यवर महोदय, सादर नमस्ते।

—आपके द्वारा प्रेषित आर्य सन्देश का ऋषि बोधोत्सव एव स्वामी दयानन्द सरस्वती सयुक्ताक प्राप्त हुआ विशेष धन्यवाद। इससे पूर्व भी सभी विशेषाक प्राप्त हुए हैं। एक से एक सुन्दर विशेषाक है। मन प्रसन्न हो जाता है। अब आपके विशेषाक अच्छे स्तर की सामग्री लिए होते है तथा बाह्य कवर भी आकर्षक होता है।

राजबीर सिंह आर्य
कवि नगर गाजियाबाद

आदरणीय डा० साहब, सादर नमस्ते।

—आपके आर्य सन्देश का ऋषि बोधोत्सव एव स्वामी दयानन्द सरस्वती विशेषाक प्राप्त हुआ, तदर्थ बहुत-बहुत धन्यवाद।

इस अक मे आपको महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के विषय मे कुछ अधिक सामग्री प्रकाशित करनी थी, सम्भवत साधारण अक मे पठन मनन हेतु मिले।

सोहनपाल सीऐल
कनवरी गज अलीगढ

प्रिय बधु डा० धर्मपाल जी, नमस्ते।

—दिल्ली सभा के महामन्त्री निर्वाचित होने के उपलक्ष्य मे बधाई स्वीकार करे। आर्य सन्देश बहुत अच्छा निकल रहा है। विशेषतया इसके विशेषाको ने आर्य समाज की पत्रकारिता में नवीन मापदण्ड स्थापित किए हैं।

डा० भवानीलाल भारतीय
रत्नाकर सदन ८/४२३ नन्दन वन जोधपुर राजस्थान

स्वस्ति यज्ञ

बी०के० आर्या पब्लिक स्कूल पश्चिम विहार मे १५ मार्च को स्वस्ति यज्ञ का आयोजन किया गया। यह यज्ञ स्कूल समिति की अध्यक्षा श्रीमती प्रकाश आर्या के जन्म दिवस के उपलक्ष मे सुश्री आशारानी के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने श्रीमती आर्या के स्वस्थ निरोग व दीर्घायु होने की कामना करते हुए उन्हें आशीर्वाद दिया।

स्वामी जी के श्रीमती आर्या द्वारा किये जा रहे जन कल्याणकारी कार्यों की सराहना की और आशा व्यक्त की कि वे भविष्य मे भी इसी प्रकार समाज सेवा के कार्यों मे सलग्न रहेंगी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामत्री डा० धर्मपाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

गायत्री मन्त्र लिखावट बारे विश्व रिकार्ड स्थापित किया जसवन्त सिह गुप्ता ने

चरखी दादरी (नि० स०) भारत साधु सतो, भगवान भक्तो विद्वानो की बहुसख्या वाली भूमि है इसी भूमि पर भगवान रामचन्द्र, कृष्ण, महावीर, महर्षि दयानन्द आदि अनेक विभूतियो ने जन्म लिया व मानव जाति को उपदेश दिया चरखी दादरी मे भी एक इसी श्रृखला मे कीर्तिमान स्थापित किया वह पूरे विश्व मे एक अनूठी मिसाल है वह यह की यहा के आर्य समाजी विचारक श्री जसवन्त सिह गुप्ता ने पिछले १८ सालो से लगातार गायत्री मन्त्र को लिखित अपने हाथ से पाच लाख मन्त्र लिख कर नया कीर्तिमान स्थापित किया है एक कापी मे उन्होने पाँच हजार मन्त्र लिखे है एक सौ कापियो मे लिखे मन्त्र को उन्होंने एक पूरी अलमारी मे सजोय कर रखा है ३६ साल की आयु मे ही उन्हे देश के प्रमुख ट्रासपोट क० के सस्थापक व आर्य समाज के प्रमुख स्व० लालमन जी आर्य के सुपुत्र स्व० बिरजानन्द आर्य की प्रेरणा से ही इस गायत्री मन्त्र के लिखने व इसका सग्रह की शुरुआत की थी पता चला है कि विश्व रिकार्ड कायम 'ग्रोनीज बुक' मे उक्त सग्रह का नाम शीघ्र दर्ज हो जाये श्री गुप्ता जी द्वारा लिखित यह गायत्री मन्त्र का विशाल लेखन एक सुनहरी दस्तावेज ही नही बल्कि आज के युग में समाज के सामने एक बहुत बडा उदाहरण है इस कार्य लेखन की पूरे देश के विभिन्न भागो में गुप्ता जी की प्रशसा की जा रही है।

१८ मार्च पुण्य तिथि पर विशेष—

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी : आर्य समाज का जाज्वल्यमान नक्षत्र

डा० धर्मपाल, मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,

मानवता की सेवा के लिए, मानव मूल्यो की स्थापना के लिए, सत्य के प्रचार के लिए तथा असत्य के विनाश के लिये इस पृथ्वी पर अनेक महापुरुषो ने सत्यकार्य किया। यह नियम है जब जब सामाजिक जीवन मे विकृति आ जाती है उसकी निष्कृति के लिए सदात्मा पुरुष के मन म हूक सी उठती है और वह मैदान मे कूद पडता है। यह नियम सृष्टि के आदि से है। प्रारम्भिक युग के ऋषियो मुनियो ने सासारिक सुख भोगो को त्यागकर, निरन्तर तपस्या के बल पर एसी शक्ति अर्जित की जिससे वे ससार के सभी प्राणियो के कल्याण के लिए कार्य कर सके। ऐसे महापुरुषो को अपने जीवन म अभावो का सामना करना पडा विरोध भी सहन पडे, जीवित रहते डण्डे भी सहने पडे और कभी कभी तो किसी आततायी के हाथो बलिदान भी होना पडा। परन्तु उन लोगो की वाणी कभी नही मरती, जो केवल अपने लिए जीवित नही रहते, बल्कि दूसरो के लिए जीते है, जो लोग केवल अपनी उन्नति मे सन्तुष्ट नही रहते अपितु दूसरो की उन्नति मे अपनी उन्नति मानते है ऐसे महापुरुषो की गणना करने लगे तो अनेक पृष्ठ लिखे जायेगे।

यहा पर एक ऐसे महामना महानुभाव के कृतित्व का विश्लेषण अपक्षित है जो मात्र छब्बीस वर्ष की आयु मे ऐसे महत् कार्य कर गया, जिन्हे कोई विलक्षण मेधा का व्यक्ति ही कर सकता है। बीस इक्कीस वर्ष की आयु तो अल्हडता तथा अबोधता की आयु ही मानी जाती है। इस महापुरुष को मात्र पाच-छ या अधिकतम सात वर्ष ही मिले काम करने के लिए। इन स्वल्प वर्षों मे ही, वह अपने जीवन को पूर्णता की कोटि तक समुन्नत कर गया। एक 'लिली' का फूल केवल एक दिन के लिए खिलता है तथा उसी दिन मुरझा जाता है, परन्तु दुनिया उसे याद करती है। दूसरी ओर 'ओक' का वृक्ष तीन सौ वर्ष तक रहता है, पर क्या कोई उसे प्रशसा की दृष्टि से देखता है। वह तो मात्र ईधन या अधिक हुआ तो इमारती लकडी के रूप मे ही प्रयोग लाया जाता है। मनुष्य के जीवन की पूर्णता का आकलन भी इसी प्रकार दिनो की सख्या से नही, अपितु उसके जीवन लक्ष्यो तथा उपलब्धियो से किया जाता है।

प० गुरुदत्त विद्यार्थी मात्र १९ वर्ष की आयु मे आर्य समाज बच्छो वाली लाहौर के प्रतिनिधि बनकर लाला जीवनदास के साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती के पास उन दिनो गयेथ,जब वे मृत्यु शैया पर थे। उनका सारा शरीर फफोलो से सूजा था, पर फिर भी उनका मुख मण्डल शान्त एव प्रसन्न मुद्रा मे था। उस समय गुरुदत्त के ऊपर जो प्रभाव पडा, बस वह उत्तरोत्तर बढता ही गया। विज्ञान का तार्किक छात्र गुरुदत्त उस दिन अविचल ईश्वर भक्त बन गया। वह प्रभुनिष्ठ हो गया। वह प्रभुमय हो गया। ऋषिवर दयानन्द के अन्तिम शब्द—'हे दयामय ! हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर ! तेरा यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो ! अहा तूने अच्छी लीला की !" आजीवन उस भक्त गुरुदत्त के कानो मे गूजती रही।

गुरुदत्त ने अजमेर से लौटकर लाहौर मे डी०ए०वी० स्कूल की स्थापना मे प्राणपन से योगदान किया। उनकी इच्छा वेद, वैदिक साहित्य और सस्कृत साहित्य को शिक्षा प्रणाली मे सदैव वरीयता देने की रही थी। पर वह ऋषिवर दयानन्द का शिष्य वैदिक धर्म का अनुयायी, यही तक न रुका। उसने अपनी सारी शक्ति वेद प्रचार, आर्य पद्धति से सस्कृत शिक्षण तथा वेद के वैज्ञानिक अर्थ करने पर केन्द्रित कर दी। वे कहा करते थे कि मैं ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र लिख रहा हू। जब कुछ मित्र पूछते कि कहा लिख रहे हो, तो उन्हे उत्तर मिलता—"अपने जीवन मे उसे क्रियात्मक रूप मे लिख रहा हू।" सचमुच वैदिक धर्म के प्रचार और ऋषिऋण से मुक्त होने के लिए वाणी और लेखनी से अनवरत परिश्रम करना उसने प्रारम्भ कर दिया था। जिन लोगो ने उस ज्ञानी आत्मा का सान्निध्य प्राप्त किया है, उनका कहना है कि जब वे 'वैदिक मैगजीन' को लिखने बैठते थे तो कई दिन तक वे घर से बाहर भी न निकलते थे। जब वे पढने लगते तो बिना विश्राम किए, बिना सोए कई कई दिन पढते रहते थे।

पण्डित जी ने वैदिक शब्दो की जो वैज्ञानिक व्याख्या का रूप तैयार किया था उसे आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की पाठ्य पुस्तको मे सम्मिलित किए जाने का गौरव मिला था। टर्मिनोलोजी आफ वेदाज ने ब्रिटेन और जर्मनी के भाष्यकारो को चकित कर दिया था। दो उपनिषदो का उन्होने ऐसा मार्मिक अनुवाद किया था, जिसे उनकी मृत्यु के बाद विश्व धर्म सम्मेलन मे पढा गया। वैदिक तथा विज्ञान शीर्षक लेख आर्य पत्रिका मे धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ था, जो बाद मे पुस्तक रूप मे प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक का समर्पण भाव उनके दयानन्द निष्ठ होने का कितना सुन्दर उदाहरण है।

वह वीर बालक वैदिक धर्म के लिए, वैदिक मान्यताओ के लिए अपने को बलिदान कर गया। उसके बलिदान दिवस पर हमारा कर्तव्य है कि वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए हम अपने को इसी प्रकार समर्पित करने का व्रत लें।

होली का त्यौहार मनाएं

—राधेश्याम 'आर्य', सुलतानपुर

बढनी है अब वृत्ति आसुरी,
बढना है अन्याय अनय।
साहस शौर्य हुआ कुठित है,
बढता जन-जन मे है भय।।

जले आज होली फिर ऐसी,
मन की राक्षस वृत्ति जलाए।
होली का त्योहार मनाए।।

दया-प्रेम के भाव मधुरमय,
जानें कैसे हुए तिरोहित !
मानव मन से दूर हुआ है
मानवता का सचित हित।।

सहिष्णुता की, सद्भावो की,
आभा उर मे आज जगाए।
होली का त्योहार मनाए।।

स्वार्थ परायण हुआ मनुज है,
दुखी हुआ है अब प्रहलाद।
सत्य बहाता है अब आसू,
मना रही होलिका हलाद।।

पावन है यह पर्व हमारा,
इसकी गरिमा आज बचाए।
होली का त्योहार मनाए।।

वैद्य प्रह्लाद दत्त जी

—विमलकान्त शर्मा

जीने को तो सभी जीते है पर जीना उसी का सफल होता है जो देश धर्म, जाति, व समाज के हित के लिए जीते हैं और उसकी उन्नति के लिए सदैव प्रयासशील रहते हैं। अपने पीछे छोड जाते हैं अपने सद्कर्मो की यशगाथा। ऐसी ही विभूति थे प्रह्लाद दत्त जी वैद्य। वैद्य जी का जन्म फाल्गुन मास की पूर्णिमा होली को सन् १८९५ मे हुआ था। रोहतक में हाई स्कूल की परीक्षा पास करने के उपरान्त गुरुकुल झज्जर से आयुर्वेद की विशेष शिक्षा प्राप्त की। समाज सेवा की भावना प्रारम्भ से ही थी। एक वर्ष तक वे अपने गाव से पैदल आकर गुरुकुल मे नि शुल्क अध्यापन कार्य करते रहे। तत्पश्चात् दिल्ली आकर आयुर्वेद की प्रेक्टिस करने लगे।

देश प्रेम की भावना तो प्रह्लाद दत्त जी मे कूट कूट कर भरी थी। वे स्वतन्त्रता आन्दोलन की गतिविधियो म भा लेने लगे। आर्य समाज के हैदराबाद सत्याग्रह मे तो उन्होने उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। आर्य समाज दीवान हाल से सचालित इस सत्याग्रह के लिए अथक काम किया।

हिन्दी को देश को एक सूत्र म पिरोने की कडी मानते थे। सन् १९५७ के हिन्दी सत्याग्रह मे भी उन्होने महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसी प्रकार १९६७ के गो रक्षा आन्दोलन मे उन्होने बढ चढ कर भाग लिया था। स्वदेश आन्दोलन हो य शुद्धि आन्दोलन या हिन्दु (आर्य) हितो से जुडा और कोई आन्दोलन रहा हो वैद्य जी ने हरेक मे आगे बढ कर काम किया।

ऋषि दयानन्द के तो वे अनन्य भक्त थे। वेद प्रचार कार्य मे वे सदैव सलग्न रहते थे। उन्होने अनेक शास्त्रार्थ का आयोजन किया। शास्त्रार्थ महारथी प० रामचन्द्र जी देहलवी प्रतिदिन शाम के समय सदर बाजार स्थित उनकी दुकान पर आया करते थे और धर्म चर्चा होती थी व यज्ञ प्रेमी थे और उनके परिवार मे आज भी दैनिक यज्ञ होता है। सन १९८७ मे केन्द्रीय आर्य सभा दिल्ली द्वारा २५ दिसम्बर १९८६ को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर वैद्य जी को सम्मानित किया गया था।

वैद्य जी समाज व राष्ट्र की उन्नति के लिए शिक्षा के प्रचार व प्रसार पर विशेष बल देते थे और सदैव निर्धन व मेधावी विद्यार्थियो की यथा सम्भव सहायता करते थे। उन्होने आर्य पब्लिक स्कूल नागलोई की स्थापना की और अनेक अन्य शिक्षण सस्थाओ की भी स्थापना मे सहयोग दिया।

वैद्य प्रह्लाद दत्त जी राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के भी कर्मठ व समर्पित कार्यकर्ता थे और उसके कार्यक्रमो मे तो अग्रिम पक्ति मे रह कर कार्य किया। सघ के शिविरो मे तो एक-एक मास तक रह कर नि शुल्क चिकित्सा सेवा करते रहे।

ऐसे सुप्रसिद्ध समाज सेवी का १९ मार्च १९८८ को दिल्ली मे निधन हो गया। उनकी स्मृति मे १३ जनवरी १९८९ को सदर बाजार स्थित उनके निवास स्थान को जाने वाले मार्ग का नाम वैद्य प्रह्लाद दत्त मार्ग दिल्ली नगर निगम द्वारा आयोजित एक समारोह मे रखा गया। उनकी स्मृति को चिर स्थाई बनाने के लिए दस हजार रुपये की एक स्थिर निधि स्थापित की गई है जिसके ब्याज से निधन व मेधावी छात्रो एव अन्य जरूरतमन्दो की मदद की जाती है। ऐसे समाज सेवी के जन्म दिन पर हमारी विनत श्रद्धाजलि।

महात्मा हंसराज दिवस समारोह

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी ए वी सस्थाओ के सयुक्त तत्वावधान मे "महात्मा हसराज दिवस समारोह" रविवार दिनाक १९ अप्रैल १९९२ को प्रात ९ बजे से १ बजे तक तालकटोरा गार्डन इनडोर स्टेडियम (नजदीक बिरला मन्दिर) नई दिल्ली मे समारोहपूर्वक मनाया जायेगा।

समस्त आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो, डी ए वी सस्थाओ, आर्य शिक्षण सस्थाओं एव समस्त आर्य जगत से प्रार्थना है कि यह तिथि अभी से अकित कर लेवें और उस दिन कोई कार्यक्रम न रखकर इस समारोह मे उपस्थित होने की कृपा करें। —रामनाथ सहगल, मन्त्री

सामवेदी ब्र० गोपाल सम्मानित

गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी), भोल झाल मेरठ के ब्र० गोपाल को सामवेद कण्ठस्थीकरण के उपलक्ष्य मे एक शाल उत्तरीय दो धौत वस्त्र, अभिनन्दन पत्र एव १५००/- रुपये सम्मान राशि प्रदान कर प्रयाग म आयोजित एक समारोह मे सम्मानित किया। कार्यक्रम का आयोजन विश्व हिन्दू परिषद् की प्रेरणा से 'भारत सस्कृत परिषद्' द्वारा विश्व वेद सम्मेलन एव वेदज्ञाभिनन्दन समारोह के अवसर पर किया गया था।

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व श्री ब्र० गोपाल को श्री गुरु विरजानन्द स्मारक ट्रस्ट करतारपुर द्वारा विभूषित किया जा चुका है।

वीर पर्व

आर्य वीर दल मछलीशहर, कोपगज, गोंडा, बस्ती, कप्तानगज, खलिलाबाद फूलपुर, रानी की सराय व आजमगढ द्वारा विगत मास आर्य वीर पर्व समारोहपूर्वक मनाया गया।

(पृष्ठ २ का शेष)

यहा पर हमारा प्राणायाम के विधि-विधान एव प्रक्रिया के वर्णन का प्रयोजन नहीं है। हमारा तो यहा पर वर्णन करने का केवल इतना प्रयोजन है कि प्राणायाम एव इसके मन्त्रो से हमे क्या लाभ प्राप्त होता है और इससे हम अपने प्राणायाम कोष का किस प्रकार परिपोष कर सकते है अपने हाथो से जब हम कोई भारी वस्तु ऊपर उठाते हैं, तो हमे अपने शरीर के अन्दर स्थित प्राण को केन्द्रीभूत करके बल लगाना पडता है। ब्रह्मचारी इसी प्राणायाम के द्वारा—सरिया मोडने छाती के ऊपर पत्थर तुडाने आदि के करतब दिखाते है। प्राणायाम से हमे मन की एकाग्रता प्राप्त होती है। यही हमारी उपलब्धि नही है। उपलब्धि है कि एकाग्र मन को प्रभु चिन्तन मे लगा देना। आपने घण्टा बजाई सेवक उपस्थित हो गया, उसे बताने के लिए आपके पास कोई नही है वह चला जायगा। मन रूपी सेवक आ गया है तो उसे प्रभु की ओर लगा दिया जाये। मन की एकाग्रता कोई अनहोनी वस्तु नही है तीरदाज हो, बन्दूकबाज हो, अन्यथा अन्य कोई भी कार्य करने वाला व्यक्ति हो—वह कार्य तभी कर पाता है, जब अपने मन को एकाग्र करके उस कार्य मे प्रवृत्त कर देता है—चिडीमार भी यही करता है। इस लिए मन की एकाग्रता मे अधिक महत्वपूर्ण है एकाग्र मन से लिया जाने वाला कार्य।

अब तक हमने अन्नमय कोष और उसके अन्दर सन्निहित प्राणमय कोष को अपने पिण्ड मे—ब्रह्माण्ड की शक्तियो के द्वारा परिपुष्ट करने का यत्न किया है। हमने पहले जो टायर ट्यूब मे हवा भर कर वाहन चलाने का उदाहरण दिया था, हाड मास का स्थूल शरीर अन्नमय कोष है—यह हम जान ही गए हैं। उसमें जो रक्त सचार एव वायु का प्रचलन है, वही प्राणमय कोष है। प्राण अपान उदान, समान एव व्यान यह प्राण के पाच रूप हैं—पाच उप प्राण भी है। अधिक वर्गीकरण कर इनकी सख्या ४९ पवन तक ले जाई जाती देखी गई हैं। ब्रह्माण्ड या पिण्ड के भिन्न भिन्न अगो में जो प्राण की क्रिया होती है—उसी के अनुसार उनका पृथक नामकरण कर दिया जाता है किसी का कार्य ओषजन (आक्सीजन) का एकत्रीकरण होता है। किसी का शरीर के मूल पदार्थों को खिसका कर नीचे लाते हुए मल द्वार या मूत्र द्वार से बाहर निकालने का कार्य होता है। किसी का कार्य समान रूप से रक्त सचार करते रहने का होता है—और किसी का कार्य ग्रीवा से ऊपर रक्त प्रवाह करने का होता है। रक्त के साथ आक्सीजन को शरीर के सभी अगो मे भेज कर सम्पूर्ण शरीर को स्वस्थ रखने का प्रयत्न ही प्राणमय कोष का कार्य है।

प्राणायाम के नियम शरीर मे प्राणो के सुगम आहरण मे सहायक हैं। शौच शुद्ध होने पर ही करें, भोजन के तुरन्त बाद न करें प्राणो के आहरण एव विसर्जन की क्रिया बहुत धीरे धीरे करें, तथा प्राण को बाहर या भीतर उतनी ही देर रोकें जितनी देर सुख पूर्वक रोक सकें और इस प्रकार वायु की आक्सीजन प्रत्यक्ष या रक्त के माध्यम से शरीर के सभी अगो मे पहुचती रहे।

राम व कृष्ण भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने दिल्ली आर्य प्रान्तीय महिला सभा की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला आर्य की पुस्तक 'एक प्रेरक व्यक्तित्व श्री राजेश्वर राव' का २९ फरवरी को कान्स्टीट्यूशन क्लब मे आयोजित एक समारोह मे विमोचन किया। भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम एव योगेश्वर कृष्ण' दो अन्य पुस्तको का लोकार्पण किया।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम व योगेश्वर कृष्ण भारतीय सस्कृति के प्रतीक है और आशा व्यक्त की कि पाठक इन प्रेरणादायक ग्रन्थो से प्रेरणा लेंगे। श्री वाजपेयी ने भगवान् कृष्ण पर बना धारावाहिक दूरदर्शन पर न दिखाये जाने की आलोचना की। श्री वाजपेयी ने बताया कि बचपन मे वे आर्य कुमार सभा के सदस्य थे और आर्य समाज के प० बुद्धदेव विद्यालकार की प्रेरणा से जीवन मे आगे बढे हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने कहा कि भगवान् राम व कृष्ण का आदर्श जीवन सदियो से भारतीय जन मानस का मार्ग-दर्शन करता रहा है।

इस अवसर पर सासद श्री बैकुण्ठ लाल 'प्रेम', पूर्व सासद श्री विजय कुमार मल्होत्रा, सर्वश्री केदार नाथ साहनी, ओमप्रकाश कोहली, सुरेश वाजपेयी, डा० शिवकुमार शास्त्री, फिल्म अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा आदि सभी ने लेखिका को बधाई दी। आर्य समाज के प्रधान श्री अजय भल्ला ने कुशल मच सचालन किया।

चुनाव समाचार

आर्य समाज प्रशान्त विहार, दिल्ली के वार्षिक चुनाव मे श्री धर्मपाल परमार प्रधान, श्री बी डी नारग व श्री सतीश मोहन गुप्ता—उपप्रधान, श्री डी पी कालडा—मत्री, श्री बी डी गुप्ता—प्रचार मत्री एव श्री हसराज डुडेजा—कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

—आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का अधिवेशन ९ फरवरी, ९२ को आर्य समाज सुन्दर नगर कालोनी मे सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्न पदाधिकारी चुने गए—

प्रधान—श्री सुमेधानन्द उपप्रधान—श्री रोशनलाल, श्री प० विद्याधर, श्रीमती चाद रानी, मत्री—श्री कृष्णचन्द्र आर्य वेद प्रचार अधिष्ठता एव सयुक्त सचिव—श्री भगवान देव चैतन्य, कोषाध्यक्ष—श्री अरुणेश सूद एव लेखा निरीक्षक—श्री करतारनाथ गण्डोतरा। अन्तरग सभा के २० सदस्य तथा पाच प्रतिष्ठित सदस्य भी मनोनीत किये गए।

आर्य वन्दना पत्रिका के लिए सम्पादक मण्डल का गठन इस प्रकार किया गया—सम्पादक—श्री भगवान देव 'चैतन्य', सह-सम्पादक—सर्वश्री कृष्णचन्द्र आर्य आचार्य रामानन्द, डा० कर्मसिह आर्य।

पुरोहित की आवश्यकता

एक सुयोग्य वैदिक ढग से सस्कार कराने व प्रवचन करने मे दक्ष प्रौढ़ावस्था अथवा परिवार वाले को प्राथमिकता वेतन व आवास की सुविधा तुरन्त मिले—मन्त्री आर्य समाज श्री निवासपुरी नई दिल्ली ६५

सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज हनुमान रोड को एक ऐसे योग्य पुरोहित की आवश्यकता है जो यज्ञों, सस्कारो एव प्रवचनादि मे प्रवीण हो। सगीत ज्ञान रखने वालो को वरीयता दी जायेगी। आवासीय सुविधाओ के साथ वेतन योग्यतानुसार दिया जायेगा। पूर्ण विवरण के साथ मिलें। अथवा निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें—

मन्त्री

आर्य समाज, १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

१० लाख रुपए की 'स्वामी सत्यानन्द समारोह निधि की स्थापना

स्वामी सत्यानन्द शती समारोह ७ से ९ फरवरी, ९२ तक देव दयानन्द दीक्षा भूमि मथुरा मे धूमधाम से सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने प्रेरक उद्बोधन दिया। राजस्थान के पूर्व वित्त मन्त्री मास्टर आदित्येन्द्र ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर १० लाख रुपए से 'स्वामी सत्यानन्द स्मारक निधि' की स्थापना की घोषणा की गई जिससे आर्य विद्या प्रचार, वैदिक विद्वानो के निर्माण वेद व साहित्य प्रचार किया जाएगा। ८ फरवरी को प्रो० भारतभूषण मोहन मनीषी की अध्यक्षता मे एक राष्ट्रीय कवि सम्मेलन भी हुआ।

जिजीविषा

जिजीविषा सस्था का अर्द्धवार्षिक सम्मेलन १८ फरवरी को आचार्य नरेश की अध्यक्षता मे दिल्ली मे सम्पन्न हुआ। अध्यक्षा डा० सरोज दीक्षा ने सस्था के उद्देश्यो पर प्रकाश डालते हुए बताया कि जिनमें जीने की इच्छा है पर वे जी नहीं रहे हैं, यह सस्था उनके लिए समर्पित है। अभी तक ऐसे दो बच्चो को कागडी मे अध्ययन के लिए भेजा जा चुका है। इस अवसर पर समाज सेवा करने वाली हालेण्ड की श्रीमती अर्चना भारद्वाज, जर्मनी की श्रीमती सुलक्षणा, एव बिरला लाइन आर्य महिला समाज की प्रधाना श्रीमती सुशीला सेठी को भी सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय गोष्ठी

श्री विद्वद वैद्य परिषद् द्वारा नई दिल्ली मे १ मार्च को आयोजित राष्ट्रीय सगोष्टी मे बोलते हुए पूर्व रक्षा मन्त्री श्री कृष्ण चन्द्र पत ने कहा कि आयुर्वेदिक फार्मूलो का दुरुपयोग करने वालो अथवा अशास्त्रीय प्रयोग करने वालो को प्रशासन द्वारा कडा दण्ड दिया जाना चाहिए। गोष्ठी मे देश भर के लगभग १०० वैद्यों ने भाग लिया।

सचिव, श्री विद्वद वैद्य परिषद्
बी—IV, कृष्ण नगर, दिल्ली-५१

छपरौली मे वेद प्रचार की धूम

विश्व वेद परिवार सघ के सस्थापक व महामन्त्री श्री ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्री ने १६ फरवरी को छपरोली मे एक जन सभा मे कहा कि आर्य समाज ही देश मे फैली कुरीतियो व भ्रष्टाचार को मिटाने में समक्ष, अत वेद प्रचार कार्य को तीव्र किया जाए।

परिणोत्सव

आर्य विद्वान् एव सुप्रसिद्ध आर्य लेखक श्री देवनारायण भारद्वाज की सुपुत्री सौ० का० प्रतिमा का शुभ विवाह दैनिक हिन्दुस्तान के प० अयोध्या प्रसाद वशिष्ठ के सुपुत्र चि० कुमुद के साथ ५ मार्च, ९२ को सम्पन्न हुआ। वर वधु के दीर्घ व सुखद जीवन की आर्य सन्देश परिवार की ओर से मगल कामनायें।

होली मिलन

—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

जो होली सो होली भुलादो उसे, आज मिलने मिलाने का त्योहार है।
त्याग दो छल कपट द्वेष की भावना, प्रेम गगा बहाने का त्योहार है॥
न कीचड उछालो न गाली बको, यह कुप्रथा बन्द करने मे आनन्द है
स्वर्ग सम शुद्ध वातावरण हो यहा, आज होली मनाने का त्योहार है।
ये हीरे से बढकर है इन्सा का तन, व्यर्थ मे ना गवाना जरा ध्यान दो
बाट दो ज्ञान गीता का श्रीकृष्ण सम, प्रेमबन्सी बजाने का त्योहार है।
लोग श्रद्धा से जिसका करें अनुकरण, ऐसा आदर्श जीवन बनाओ सभी
पाप अन्याय उत्पात बढने न दें, विघ्न सकट मिटाने का त्योहार है।
कर रहे जो अनाचार पीकर यहा, ये अहकार मदिरा भरी प्यालिया
ये सफल होगी होली तभी बन्धुओ, वेदाऽमृत पिलाने का त्योहार है।
ये विरह ये मिलन काव्य शृगार रस, गीत भद्दे व गन्दे सुनाई न दें
डालदें जो कि मुर्दों में भी जान को, गीत ऐसे सुनाने का त्योहार है॥
सभी मनुष्यो मे हो प्रेम वातावरण है सभी भाईभाई न झूठा कथन।
राघव' हो सगठित करे हृदय मिलन, जीवन ज्योति जगाने का त्योहार है॥

फार्म-४

१ प्रकाशन का स्थान	[१५ हनुमान रोड
२ प्रकाशन अवधि	साप्ताहिक
३ मुद्रक का नाम	सूयदेव
क्या भारत का नागरिक है	भारतीय
(या विदेशी है तो) मूल देश	भारतीय
पता	आ य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १
४ प्रकाशक का नाम	सूयदेव
(क्या भारत का नागरिक है)	भारतीय
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	भारतीय
पता	आ य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १
५ सम्पादक का नाम	सूयदेव
क्या भारत का नागरिक है	भारतीय
(यदि विदेशी है तो मुल देश)	भारतीय
पता	आय प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली १
६ उन व्यक्तियो के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हो।	आय प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-१

मै सूयदेव एतद् द्वारा घोषित करता हू कि मेरी अधिकतम जानकारी एव विश्वास के अनुसार उपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

सूर्यदेव
प्रकाशक के हस्ताक्षर

आर्यसन्देश–दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 19 20 3 1992 Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/९२
दिल्ली पास्टल रजि० न० डो० (एल ११०२४/९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) १३९/९२
साप्ताहिक आर्यसन्देश २२ मार्च, १९९२

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली का

१०७वां वार्षिकोत्सव

२७, २८, २९, मार्च १९९२ को लालकिला मैदान में

बडे समारोह पूर्वक मनाया जायेगा

इस उपलक्ष्य में २१ मार्च से २६ मार्च तक

आर्य समाज दीवान हाल मे रात्रि ८ बजे से ९ बजे तक

वैदिक विद्वान् पं० नेत्रपाल जी शास्त्री

द्वारा वेद प्रवचन होगा ।

प्रवचन से पूर्व प० गुलाबसिंह 'राघव' के मधुर भजन होंगे ।

मूलचन्द गुप्त प्रधान — आर्य समाज दीवान हाल

सूर्यदेव मन्त्री — आर्य समाज दीवान हाल

सेवा में—

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित । रजि० न० डी०(एल१०२४/१–०९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५ अंक २० रविवार, १२ अप्रैल १९९२ विक्रमी सम्वत् २०४९ दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक—२५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

११७वां आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न

देव दयानन्द ने ज्ञान की गंगा बहायी है

—डा० रामप्रकाश

नई दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्वावधान में आर्य समाज का ११७वां स्थापना दिवस राजधानी की समस्त आर्य समाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से हिमाचल भवन मण्डी हाऊस नई दिल्ली में ४ अप्रैल को समारोह पूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर अपने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए समारोह के मुख्य अतिथि डा० रामप्रकाश, विज्ञान व तकनीकी शिक्षा मन्त्री हरियाणा ने कहा कि स्वामी दयानन्द की सोच बहुत गहरी तीखी व पैनी थी और उन्होंने पाखण्डों के अन्धकार को दूर करने के लिए घोर संघर्ष किये। दयानन्द का व्यक्तित्व व चिन्तन इतना विशाल है कि उसे पूरी तरह समझ पाना कठिन है और ऐसे व्यक्ति धराधाम पर सदियों बाद ही पैदा होते हैं। डा० रामप्रकाश ने आगे कहा कि योगी राज अरविन्द ने कहा था कि दयानन्द अपने आप में इतने महान हैं कि उनके साथ कोई विशेषण लगाने की आवश्यकता नहीं है। महान मनीषी पं० गुरुदत्त ने जब दयानन्द की मृत्यु का दृश्य देखा तो वे नास्तिक से आस्तिक बन गए और उन पर इतना दीवानापन छा गया कि घर आकर आर्य समाज के दस नियम कपड़े पर लिखवा कर अपनी छाती व पीठ पर डाल कर वेद प्रचार को निकल पड़े।

डा० रामप्रकाश ने आगे कहा कि स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र लिखने वाले बंगाल के देवेन्द्र बाबू ने लिखा है कि पृथ्वी पर बहने वाली गंगा नदी में नहाने या उसका कोसों दूर से नाम लेने से पौराणिकों के कथनानुसार पाप तो नहीं कटते हैं परन्तु दयानन्द जी की टंकारा से अजमेर तक गयी ज्ञान की गंगा में नहाने से तो निश्चित रूप से कल्याण होता है। डा० रामप्रकाश ने कहा कि कवि के शब्दों में ऐसे ऋषिराज दयानन्द पर हजारों ऋषियों को वारा जा सकता है। सत्य के प्रचार के लिए दयानन्द को अनेक बार जहर पीना पड़ा और एक बार कुछ भक्तों ने दुःखी होकर बताया कि स्वामी जी आज लोगों ने एक आदमी का काला मुंह कर जूतों की माला डाल व गधे पर बैठा कर यह कह कर जलूस निकाला है कि ये दयानन्द हैं। जन कल्याण के लिए हर प्रकार का कष्ट सहने वाले दयानन्द ने हंसते हुए जवाब दिया कि असली दयानन्द तो तुम्हारे सामने बैठा है और नकली दयानन्द का यही हाल होगा।

डा० रामप्रकाश ने कहा कि सत्य का उद्घाटन करने वाला देवनागरी हिन्दी में लिखा दयानन्द का अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश आज घर घर में पढ़ा जाता है। उन्होंने कहा कि चुनौतियों का सामना करने के लिए आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक सभा को सुदृढ़ करने के लिए आर्य जनों व समाज के पवित्र दिन संकल्प लेना चाहिए। उल्लेखनीय है कि गणमान्य श्रोताओं ने ओजस्वी वक्ता डा० रामप्रकाश के उद्गारों की अनेक बार करतल ध्वनि से हर्ष व्यक्त करते हुए सराहना की।

सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान व सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी पण्डित रामचन्द्र राव वन्देमातरम् ने कहा कि आज देश में बढ़ रहे नास्तिकवाद को दूर करने एवं ईश्वर के अस्तित्व के प्रचार के लिए हमें कार्य करना चाहिए।

सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि ऋषि दयानन्द ने सदैव निडरता पूर्वक मूर्ति पूजा व पाखण्डों का खण्डन किया और विश्व कल्याण के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी।

लब्ध प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान् डा० भवानीलाल जी भारतीय ने स्वामी दयानन्द जी द्वारा स्थापित क्रान्तिकारी आन्दोलन आर्य समाज की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि का विवेचन करते हुए आर्य जनों को कल्याणकारी वेदवाणी के प्रचार व प्रसार के लिए व्रत लेने का आह्वान किया।

दिल्ली आर्य प्रान्तीय महिला सभा की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला आर्या ने स्वामी दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए नारी उद्धारक व नारी को गरिमा प्रदान करने वाले ऋषि को एक महान युग सृष्टा बताया। उन्होंने कहा कि यह बहुत दुःख की बात है कि आजादी के ४४ वर्ष बाद भी आज बच्चों को गलत इतिहास पढ़ाया जा रहा है कि आर्य लोग भारत में बाहर से आये थे।

श्री जयन्त कुमार आर्य ने देश में बढ़ रहे धर्मान्तरण पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि निष्ठावान व समर्पित कार्यकर्त्ता ही इस समस्या से जूझ सकते हैं उन्होंने विस्तार से ईसाई मिशनरियों की कार्य प्रणाली का जिक्र किया और कहा कि धर्म परिवर्तन राष्ट्रीय एकता के लिए एक बड़ा खतरा है क्योंकि धर्मान्तरण से लोगों की देश के प्रति निष्ठा भी बदल जाती है। उन्होंने कहा कि यदि हम अब भी नहीं जागे तो भावी पीढ़ियां हमें कभी माफ नहीं करेंगी।

श्री प्रेमचन्द श्रीधर सम्मानित

कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री प्रेमचन्द श्रीधर को डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने शाल ओढ़ा कर आर्य श्रेष्ठी श्री सत्यानन्द ने स्मृति चिह्न पण्डित वन्देमातरम् ने सम्मान राशि तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने प्रशस्ति पत्र भेंट कर श्री लालमन आर्य वैदिक विद्वान् पुरस्कार से सम्मानित किया। श्रीधर ने अपने सम्मान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे सदैव समर्पित भाव से आर्य समाज की सेवा करते रहेंगे।

आर्य अनाथालय के प्रवीण कुमार पुरस्कृत

समारोह में आर्य अनाथालय के ११वीं कक्षा के मेधावी छात्र प्रवीण कुमार को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के व० उपप्रधान पं० रामचन्द्रराव वन्देमातरम् ने स्वर्ण पदक प्रदान कर डा० (मेजर) अश्विनी कुमार कण्व शौर्य पुरस्कार से सम्मानित किया। इस अवसर पर अन्य दस प्रतिभावान छात्र छात्राओं को भी इसी प्रकार स्वर्ण पदक प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।

इस कार्यक्रम में प्रख्यात वैदिक विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय ने २ मार्च ९२ को बोधोत्सव पर सम्पन्न हुई प्रतियोगिताओं के ४४ विजेताओं को भी पुरस्कृत किया।

विशेषांक का विमोचन

इस कार्यक्रम में स्वतन्त्रता सेनानी पं० वन्देमातरम् ने हिन्दी साप्ताहिक आर्य सन्देश के आर्य समाज स्थापना दिवस व स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती संयुक्तांक का करतल ध्वनि के बीच विमोचन किया।

इससे पूर्व संगीताचार्य श्री गुलाबसिंह जी राघव ने मधुर भजन प्रस्तुत किए। इस अवसर पर केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल महामन्त्री श्रीमती चड्ढा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव दीवान हाल आर्य समाज के प्रधान श्री मूलचन्द गुप्त चौ० लक्ष्मी श्री रामनाथ सहगल श्री दरबारीलाल श्री आर्य मन्त्री आदि महानुभावों ने भी अतिथियों का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। कार्यक्रम में सार्वदेशिक सभा आर्य केन्द्रीय सभा व दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार सभा द्वारा नव वर्ष बधाई कार्ड वितरित किए गए।

इस कार्यक्रम का कुशल संचालन सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री डा० शिव कुमार शास्त्री ने करते हुए देव दयानन्द को भी श्रद्धांजलि दी।

प्रस्तुति मन्त्री विमल कान्त शर्मा

सम्पादक—प्रो० सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

सन्ध्या से मनोमय कोष में प्रवेश (अघमर्षण मन्त्र) ६

—देव नारायण भारद्वाज

अंग स्पर्श-मार्जन मन्त्रों में हमने अपने स्थूल शरीर को सशक्त एवं पवित्र कर लिया, इसको बलशाली, यशस्वी और तेजस्वी (शम्) भी बना लिया। हमने प्राणायाम मन्त्रों एवं उसकी प्रक्रिया में शरीर में प्राण संचार लिया। हमने शरीर से बाहर स्थित ब्रह्माण्ड के लोकों की शक्तियां अपने अन्दर समेटने का यत्न किया। प्राणों को अन्दर ही तो लिया जाता है, बाहर से अन्दर लेने की क्षमता ही विकसित करना पर्याप्त नहीं, प्रत्युत अन्दर से बाहर जाने की प्रक्रिया भी हम आनी चाहिए। अपने जीवन में हम, शरीर से बाहर मन के द्वारा चले जाते हैं। प्राणों के द्वारा जहां हम ब्रह्माण्ड की शक्ति पिण्ड में ले आते हैं, वहीं मन के द्वारा हम स्वयं को पिण्ड से निकाल कर ब्रह्माण्ड में ले जाते हैं। पिण्ड की अधिष्ठात्री हमारी यह आत्मा है और ब्रह्माण्ड की परम अधिष्ठात्री वह जगदम्बा है—वह परमात्मा है। आप कहेंगे कि इस पिण्ड के हृदय स्थल में बैठी आत्मा में ही परमात्मा भी रहता है तो दूर जाने की आवश्यकता क्यों? दूर जाना इसलिए है कि—ब्रह्माण्ड के कण कण में प्रभु का निवास ही नहीं कारीगरी भी है। जब उसकी कारीगरी देखकर हमें उसकी स्मृति आने लगेगी तो मन सृष्टि दर्शन से छककर हृदय में स्वयं लौट आयेगा और उसका गुणगान भी करने लगेगा। भीतर भी तू—बाहर भी तू सब ओर समाया तू ही तू! इस प्रकार से मिलन का आनन्द बढ़ सकेगा। मन की मलिनता-पाप वृत्ति प्रभु दर्शन में बाधक है यही यदि दूर हो गई, तब तो दर्शन में कोई अवरोध नहीं। जैसे पट हटा देने से बाहर वाला भीतर और भीतर वाला बाहर देखने लगता है, वैसे ही मन की पाप वृत्ति को हटा देने से बाहर-भीतर सर्वत्र प्रभु की मनोहर सत्ता स्थापित हो जाती है। तो आइये। इस शरीर से बाहर निकल कर कुछ ब्रह्माण्ड में विचरण कर लिया जाये।

ओम-ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥ समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्ष मथो स्वः ॥ ऋ० म० १०।१९०।१३॥

अर्थात्—(ऋतम्)=सृष्टि के सार्वभौम नियमया कारण रूप प्रकृति या वेदज्ञान (च)=और

(सत्यम्)=कार्य रूप प्रकृति जिसका अस्तित्व स्थूल इन्द्रियों से दिखाई देता है।

(अभीद्धात्)= अति प्रकाशित

(तपस)= तप-अनन्त सामर्थ्य से (अजायता)= उत्पन्न

(ततो)= उसी ईश्वर के सामर्थ्य से (समुद्र)= पृथ्वी और मेघ मण्डल में जो महासमुद्र है (अर्णव) लहरों वाला, उत्पन्न हुआ। इसी (अर्णवात)= लहराते हुए (समुद्र)= समुद्र से (अधि=ऊपर (पश्चात्) (संवत्सर)=उत्पन्न होने वाले जगत का योनिरूप-महद अण्ड क्षण, मुहूर्त, प्रहर आदि काल (अजायत=उत्पन्न हुआ। इस प्रकार (अहोरात्राणि)=जगत के रात दिन (विश्वस्य=सम्पूर्ण (मिषत=निमेषोन्मेष या हरकत करने वाले को (वशी) वश में करने वाले प्रभु ने (विदधत=बनाया (धाता=सब जगत के धारण और पोषण करने वाले ने (सूर्याचन्द्रमसौ=सूर्य और चन्द्र को (दिवम् द्यौ को (च= और (पृथिवी)= पृथ्वी को (अथो)= और (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष को (यथापूर्वम्) पूर्व सृष्टि की भांति (अकल्पयत्) बनाया।

भावार्थ—सम्पूर्ण चेतन निमेषोन्मेष अर्थात् हरकत करने वालों को वश में रखने वाले धाता परमेश्वर के देदीप्यमान तप-प्रताप से यथार्थ ज्ञान वेद और त्रिगुणात्मक प्रकृति कार्यरूप में पूर्व की भांति उत्पन्न हुए। उससे ही लहराता हुआ जल का समुद्र और मेघ उत्पन्न हुआ। लहर युक्त समुद्र के (ऊपर) बाद ब्रह्माण्ड के अण्डाकार लोक उत्पन्न हुए जिनके कारण काल की गति-सम्वत्सर उत्पन्न हुआ। सम्वत्सर (सम+वत्सर) समतल बसाने वाले लोक बन गए। तदन्तर उस विधाता ने पहले सृष्टि चक्रों की भांति सूर्य चन्द्र की रचना की, और इस जंगम गतिशील विश्व के लिए दिन-रात्रि की रचना की। इस प्रकार उसने सुखरूप द्युलोक, पृथिवी लोक अन्तरिक्ष लोक को बनाया।

सन्ध्या के इस भाग को अघमर्षण कहते हैं। कोई इसका अर्थ लगा बैठता है कि इस प्रक्रिया से एक व्यक्ति अपने किए हुए पापों को भीज देता है, नष्ट कर देता है। प्रभु के विधि विधान में यह तो सम्भव है ही नहीं, हम जो करेंगे-वह भरेंगे। इससे बच नहीं सकते। तो इसका अर्थ हुआ पाप के परिणाम को सहन करना। सहने के बाद उससे मुक्ति पाना और आगे के लिए स्वयं को स्वच्छ बना लेना। संसार में मनुष्य अपने मन वचन और देह से असंख्य प्रकार के पाप करता है। इन सभी पापों को मनीषियों ने दो वर्गों में रख दिया है—(१) अभिमान जन्य पाप (२) अवसाद जन्य पाप। जब उसको उपलब्धियां होती हैं, उसके पास शारीरिक बल धन बल, वाक बल, अधिकाधिक होती है वह सबको पीछे छोड़ कर आगे निकल जाना चाहता है, तब वह नियम-उपनियम की चिन्ता किए बगैर भाँति भांति के अन्याय कर बैठता है। उसका अभिमानी स्वर न जाने कितने दीनों को प्रताड़ित कर बैठता है। इसके विपरीत यदि मनुष्य को जीवन में असफलता पर असफलता मिलती है तब वह अवसाद ग्रस्त होकर पाप करने को उद्यत हो बैठता है। ऐसी स्थिति में वह आत्म हत्या से भी बाज नहीं आता है। अभिमान में जहां वह हत्या पर उतर आता है तो अवसाद में वह आत्महत्या तक गिर जाता है। यह दोनों ही भयंकर पाप के रूप हैं।

सन्ध्या के इन अघमर्षण मन्त्रों में दोनों प्रकार के पापों के फल को सहन करके उनसे पाप निकलने के उपाय सन्निहित हैं। वेद ने अभिमान को भस्म करने के लिए प्रलय, और अवसाद को हटाने के लिए सृष्टि रचना का चित्र मनुष्य के सामने प्रस्तुत कर दिया है। यदि उसके मन में अभिमान-अहंकार की हुंकार जोर मारने लगे तो वह यह सोच ले कि जिस प्रभु के क्षणिक संकेत मात्र से यह विराट ब्रह्माण्ड बुलबुले की भांति पल भर में विलीन हो जाता, उसके सामने तेरी गणना क्या है, चल अपने अहंकार को ठण्डा करके नम्र हो जा। यदि मनुष्य को अवसाद आकर घेर ले-वह निराश कूप में डूब रहा हो, तब वह यह विचार करके कि प्रलय के बाद इस अदृष्ट प्रकृति-जहां कुछ प्रतीति न थी उससे परमात्मा अपने सामर्थ्य से इतना विशाल ब्रह्माण्ड उत्पन्न कर देता है—उसमें समुद्र, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, वृक्ष वनस्पति सभी कुछ वही प्रकट कर देता है। ऐसे विश्वकर्मा के आदेश में चलकर हम अपने जीवन का उद्धार भला क्यों नहीं कर सकते हैं। यह प्रभु पर उसकी दृढ़ आस्था उसे अवसाद से ऊपर उठा सकती है। उसकी दुर्गति-उसके बिगड़े जीवन को सुधार सकती है। वह अच्छे आचरण और प्रभु भक्ति से पुनर्जीवन प्राप्त कर सकता है।

पिण्ड से बाहर ब्रह्माण्ड में आनन्द की धारायें बहती हैं। किसी को एक कोठरी में सारी सुविधाओं के साथ रख दिया जाये। खाने-पीने-रहने सोने-नहाने-धोने आदि सभी के साधन दे दिए जायें तो भी आप उसमें ही रहना पर्याप्त नहीं समझेंगे। वह रेडियो ट्रांजिस्टर-दूरदर्शन यन्त्रों की मांग करेगा उसे यह सब भी दे दिया जाये तब भी उसको चैन नहीं मिलेगा-यह सब रहते हुए भी वह बाहर निकल कर ही चैन की सांस लेगा। हमारा शरीर आश्रित है भूमि आश्रित है-सौर्य मण्डल के सौयमण्डल आश्रित है ब्रह्माण्ड के ब्रह्माण्ड आश्रित है ब्रह्म के हमारा पिण्ड हमारा निकटतम साधन है—इसी से प्रारम्भ करके ब्रह्माण्ड को समझा जा सकता है। ब्रह्माण्ड के ज्ञान से पिण्ड का समन्वय जा सकता है। जिस प्रकार जीवात्मा जब बैठना चाहता है, बैठ जाता है, जब खड़ा होना चाहता है तो खड़ा हो जाता है। शरीर के अन्दर जीवात्मा की इच्छा मात्र से सभी कार्य होते हैं। जीवात्मा को किसी अन्य साधन की आवश्यकता नहीं इसी प्रकार ब्रह्माण्ड में व्यापक परमात्मा सृष्टि की रचना करता है। वह किसी साधन विशेष के बिना ईक्षण मात्र से सृष्टि की रचना कर देता है।

यदि कोई कारीगर आभूषण बनाना चाहता है तो उसे तीन वस्तुएं चाहिए। सोना चाहिए, बनाने की विधि चाहिए और बनाने के लिए समय चाहिए। ऐसे ही प्रभु ने प्रकृति, वेद ज्ञान और काल से सृष्टि की रचना की। इस प्रकार हमको प्रभु के वेद ज्ञान, प्रभु की प्रकृति और काम को समझना होगा। इन अघमर्षण मन्त्रों में इन्हीं तीनों की चर्चा है। हम कोई वस्तु बनाना चाहते हैं, तो वह एक

(शेष पृष्ठ ७ पर)

साप्ताहिक ओ३म् आर्य सन्देश कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य समाज के गौरव: पं० गुरुदत्त विद्यार्थी



'किसी होनहार युवक की मृत्यु पर लोगो को जैसा दुःख होता है, उसका अनुमान लगाना भी कठिन है। ऐसे युवक का निधन निश्चय ही कष्टदायक होता है, जिससे मानव जाति के सामान्यत और किसी राष्ट्र या किसी जाति के विशेषतः हित साधन की आशा हो। हमारा दुःख उस समय और भी बढ़ जाता है, जब हम देखते हैं कि उस दिवगत व्यक्ति ने अपने गुणो के कारण अपने देश का गौरव बढ़ाया है। पं० विद्यार्थी भी इसी कोटि के पुरुष थे। यूरोपीय विज्ञान तथा साहित्य मे उन्हें योग्यता प्राप्त थी। वे संस्कृत के प्रखर विद्वान थे तथा अंग्रेजी भाषा के महान् वक्ता। उनके अंग्रेजी व्याख्यानो को सुन कर लोग आश्चर्य चकित रह जाते थे। यदि वे कुछ दिन और जीवित रहते तो देश के प्रसिद्ध वक्ता के रूप में ख्याति अर्जित करते। वे आर्यसमाज लाहौर के प्रतिष्ठित सदस्य थे। सर्वोपरि बात तो यह थी कि उन्होने अन्य कार्यों से अपने आपको पूर्णतया पृथक कर, स्वयं को सर्वात्मना आर्य समाज के लिए ही समर्पित कर दिया था। उन्हे उच्च एव सम्मान जनक पदो पर नियुक्त किए जाने के अनेक सन्देश मिले, किन्तु उन्होंने इन प्रस्तावो को स्वीकार नही किया। आर्यसमाज को प्रगति पथ पर ले जाना ही उनके जीवन का लक्ष्य था। उनके अनेक गुणो मे यही एक गुण प्रधान और पर्याप्त कहा जा सकता है। कितने शोक की बात है कि ऐसा व्यक्ति केवल २६ वर्ष की आयु मे रोग का शिकार होकर १९ मार्च १८९० को दिवगत हो गया। हजारों लोगों ने उनकी मृत्यु का शोक मनाया और दिवगत को श्रद्धांजलि अर्पित की। किन्तु गुरुदत्त के वियोग से जो राष्ट्र की हानि हुई, खास तौर से आर्य समाज की हानि हुई, उसकी तो क्षति पूर्ति नही हो सकती। हमारे विचार मे किसी भी देश या धर्म के किसी महापुरुष की मृत्यु को मानव जाति पर आई विपत्ति ही माना जाना चाहिए। इसके लिए सभी को शोक व्यक्त करना चाहिए।'

यह शोक सवेदना पूर्ण लेख सर सैयद अहमद खां द्वारा स्थापित 'एंग्लो मोहम्मडन कालेज अलीगढ़' के मुख पत्र 'अलीगढ इन्स्टीट्यूट गजट में २१ मार्च १८९० को प्रकाशित किया गया था। यह लेख इस बात का परिचायक है कि महान पुरुष किसी विशेष देश, धर्म अथवा जाति के लिए नहीं होते, वे तो सम्पूर्ण मानवता के लिए होते हैं। वे मानव मात्र का कल्याण चाहने वाले होते है। आर्य समाज का दसवा नियम इसी का उद्घोष करता है कि हमे सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिए।

आर्य समाज का वह जाज्वल्यमान नक्षत्र पं० गुरुदत्त विद्यार्थी मानवता की सेवा के लिए, मानव मूल्यो की स्थापना के लिए, सत्य को स्थापित करने के लिए तथा असत्य का विनाश करने के लिए आजीवन सघर्ष करता रहा। जीवन तो उसे थोड़ा मिला पर इस जीवन मे वह जो कार्य कर गया, वह सदैव रहेगा। उन लोगो की वाणी नही मरती जो केवल अपने लिए जीवित नहीं रहते, बल्कि दूसरो के लिए जीवित रहते हैं। जो केवल अपनी उन्नति मे सन्तुष्ट नही रहते, अपितु दूसरो की उन्नति मे अपनी उन्नति मानते हैं।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म पंजाब के मुलतान नगर मे, फारसी के स्वनामधन्य पंडित और सुयोग्य अध्यापक लाला रामकृष्ण सरदाना के घर में २६ अप्रैल १८६४ को हुआ था। उनकी शिक्षा दीक्षा मुलतान, झंग और लाहौर में हुई। वे एफ० ए० मे विश्वविद्यालय मे प्रथम रहे, बी० ए० मे प्रथम रहे एम० ए० मे न केवल प्रथम रहे, बल्कि इतने प्रतिशत अंक प्राप्त किये, जितने आज तक किसी ने प्राप्त न किये थे। वे गवर्नमेंट कालेज लाहौर मे साइन्स के प्रोफेसर नियुक्त किये गए। वहां पर भी उनकी श्रेष्ठता का केतु लहराता रहा, पर वह तो आर्य समाज के लिए समर्पित था, उसने यह नौकरी छोड़ दी।

पं० गुरुदत्त मात्र १९ वर्ष की आयु मे आर्य समाज के नेता माने जाने लगे थे। २० जून १८८० को आर्यसमाज लाहौर मे प्रविष्ट इस युवक को ज्ञान, अनुभव एवं वक्तृता शक्ति के बल पर, लाला जीवनदास के साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती के सेवा करने के लिए अजमेर भेजा गया। मृत्यु शैया पर लेटे ऋषिवर का परमात्मा से साक्षात्कार, वार्तालाप सुन कर, इस असह्य पीड़ा मे भी ऋषि के मुख मंडल की अद्भुत आभा एव प्रसन्नता की अद्भुत छटा देख कर, वह युवक अत्यधिक प्रभावित हुआ। उसके मन के सभी वैज्ञानिक संशय मिट गए। वह दयानन्द-ज्ञान मय हो गया। वह आर्य समाज और वैदिक धर्म के प्रति समर्पित हो गया।

पं० गुरुदत्त ने लाहौर आकर डी० ए० वी० कालेज की स्थापना मे सराहनीय सहयोग दिया। विद्वता के क्षेत्र मे पं० गुरुदत्त द्वारा स्थापित कीर्तिमानो को सदैव याद किया जाएगा। उन्होने वेदो का स्थान आधुनिक विज्ञान की अपेक्षा उच्चतर प्रमाणित किया। उन्होने सायण महीधर और मैक्समूलर के वेदभाष्यों का गम्भीर अध्ययन किया और पाया कि वे सभी भाष्य निरुक्त की प्रक्रिया पर खरे नहीं उतरते। 'वैदिक संज्ञा विज्ञान' पर उन्होंने कई सारगर्भित लेख लिखे। वे योग मे रुचि और प्राणायाम के सतत् अभ्यास के कारण, मन को एकाग्र करने मे एक साधक की भांति सफल हुए। पर इस साधना ने उन्हे शारीरिक रूप से खोखला कर दिए। वे जो काम हाथ मे ले लेते थे, जब तक वह पूरा न हो जाए, न सोते थे और न खाते थे, चाहे दो या तीन दिन भी क्यो न हो जाए।

पण्डित जी ने वैदिक शब्दो की वैज्ञानिक व्याख्या का जो कोष तैयार किया था, उसे आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की पाठ्य पुस्तको मे सम्मिलित किए जाने का गौरव मिला। टर्मिनालोजी आफ वेदाज ने ब्रिटेन और जर्मनी के भाष्यकारों को चकित कर दिया था। पण्डित जी ने अनेक ग्रन्थो का मानक प्रणयन किया। उन्होने अनेक लेख लिखे उन्होने अनेक भाषण दिए। सबका स्वर एक ही था कि वेद ज्ञान सर्वोपरि है।

उस वीर की बलिदान शताब्दी पर अनेक आयोजन किए गए। उनकी स्मृति में नई संस्थाओं का भी गठन किया गया। मधुर प्रकाशन, आर्य प्रकाशन ने पं० गुरुदत्त के जीवन एव कर्त्तव्य के सम्बन्ध मे पुस्तकें प्रकाशित की। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य सन्देश का विशेषांक निकाला तथा एक विशाल व भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया था। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ने एक भव्य आयोजन किया। दूरदर्शन ने भी समुचित स्थान दिया। आर्य केन्द्रीय सभा चण्डीगढ़ ने स्मारिका प्रकाशित की तथा एक भव्य आयोजन किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अपने मुखपत्र 'आर्य मर्यादा' का विशेषांक निकाल रही है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एक विशाल आयोजन भी आगामी मास कर रही है। सभी को मेरी शुभकामनाएं एवं अभिनन्दन। आओ हम इसी प्रकार वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पण व्रती हों।

डा० धर्मपाल

मां-बाप को भूलो नहीं

भूलो सभी को तुम मगर मां बाप को भूलो नही,
उपकार अगणित हैं कभी इस बात को भूलो नही।
क्या क्या नही किया तुम्हारे जन्म की खातिर अरे
पत्थर न बनों मा बाप की छाती को कुचलो नहीं।
मुख का निवाला दे अरे जिसने तुम्हें मोटा किया,
अमृत दिया तुमको जहर उनके लिये उगलो नहीं।
लाखो कमाये हो भले, मा बाप से ज्यादा नहीं,
सेवा बिना सब राख है मद मे कभी फूलो नही।
सन्तान की सेवा मिले सन्तान बन सेवा करो,
जैसा करो वैसा भरो इस सत्य को भूलो नहीं।
जो स्वयं गीले में सो, सुलाती थी तुम्हे सूखी जगह,
मा की बरसती भावना को तुम कभी कुचलो नहीं।
जिसने बिछाये फूल हर कदम तुम्हारी राह में,
उस राहपर के प्राण को कटक बन कुचलो नहीं।
धन तो मिलेगा फिर, मगर मां बाप क्या मिल पायेंगे,
उनके चरण की धूल लेना, तुम कभी भूलो नहीं।

'ग्रामवासी' लखनऊ से साभार

डायमण्ड कामिक्स महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायी— में त्रुटियों और विसंगतियों का विवरण

—डा० भवानीलाल भारतीय

आज कल बच्चों के लिए कामिक्स पुस्तकों का चलन बहुत बढ गया है। प्रत्येक इन मनोरञ्जक पुस्तको को पढ़ने के लिए लालायित रहता है। इस युग के बच्चो का जैसा चाकलेट से प्यार है वैसा ही कामिक्स से। "स्वामी दयानन्द और उनके अनुयायी" शीर्षक कामिक्स को डायमण्ड कामिक्स सिरीज मे प्रकाशित किया गया है। यह कामिक्स लाखोमें छपता है और लाखो वयस्को और बच्चो द्वारा पढा जाता है। ऋषि दयानन्द और उनके अनुयायी शीर्षक स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, प० गुरुदत्त, प० लेखराम, लाला लाजपतराय तथा प० रामचन्द्र देहलवी के जीवन वृत्त और क्रियाकलाप का चित्रात्मक विवरण देने वाला यह कामिक्स ऐतिहासिक भूलो अक्षम्य त्रुटियो तथा नाना विसगतियो का ऐसा पुज है जिसे पढ कर हैरानी होती है कि क्या महर्षि दयानन्द और उनके भक्तो के बारे में ऐसी ही त्रुटिपूर्ण जानकारी पाठकों को दी जानी चाहिए? यदि किसी अन्य मत के प्रवर्तक या पैगम्बर के जीवन का ऐसा त्रुटित और गलत विवरण दिया जाता तो स्थिति इतनी विस्फोटात्मक हो जाती जिसके फलस्वरूप प्रकाशक और आलेख लेखक को लेने के देने पड जाते और वे करबद्ध होकर क्षमा याचना करते फिरते। किन्तु आर्य समाज तो कुछ नहीं कहता।

मैं निम्न पक्तियों मे इस कामिक्स कथा कि कुछ ऐसी ही भूलों की ओर सावधान पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हू। कई पाठक जहा मेरी ऐसी चौकसता के प्रशसक हैं वहा अनेक एसे मित्र भी हैं जो इसे व्यर्थ समझते है और मुझे दोष देते हैं कि भारतीय जी का तो यह स्वभाव ही बन गया है और वे बिना मीन मेख निकाले नही रहते। जहां तक मेरा सवाल है, मैं ऋषि दयानन्द विषयक किसी गलत बयानी को अनुचित समझता हू और उसका प्रतिवाद करना अपना विलक धर्म समझता हूं। अब हम डायमण्ड कामिक्स की पुस्तक महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायी की कुछ अक्षम्य भूलो को दिखाते हैं। इस पुस्तक में तथ्य (विषय) विषयक भूलें भी हैं और भाषा विषयक भयकर अशुद्धिया। स्वामी दयानन्द के विवरण मे कुल ३२ गलतिया इस प्रकार हैं—

१ स्वामी जी की माता का नाम यशोदा बाई था। वास्तविक नाम था अमृत बेन। (पृष्ठ ६)

२ नवजात बालक की जिह्वा पर सोने की शलाका से ओम् लिखना और कान मे वेदोऽसि का पिता द्वारा उच्चारण करना सर्वथा काल्पनिक है। बालक मूलशकर के पिता के जमाने में सस्कार विधि के अनुकूल जात कर्म सस्कार विधान का प्रचलन नहीं था। (पृष्ठ ६)

३ मूलशकर ने शिवरात्रि की रात्रि को ही मूर्ति पूजा विषयक अपनी शका पिता के समक्ष रक्खी थी दूसरे दिन नही। उसी रात को उनका पिता से एतद् विषयक वार्तालाप हुआ था। (पृ० ४)

४ सिद्धपुर मे जब पिता ने दयानन्द को पकड़ा तो वे उसे अपने घर नही लाये और न उसे पीटा। उस समय तो स्वामी जी की आयु २३ वर्ष की थी। अत कमिक्स के पृष्ठ ८ का विवरण अत्यन्त आपत्तिजनक है। पिता ने तो सिद्धपुर मे ही उन्हे पहरेदारो की सुरक्षा मे रक्खा था जहा से वे मौका देख कर भाग निकले।

५ स्वामी जी द्वारिका कभी नही गये और कासाश्रम वहा नही है। अत पृष्ठ १० पर का यह उल्लेख इतिहास विरुद्ध है।

६ स्वामी विरजानन्द का शिक्षा तथा अन्तिम आदेश मे आर्ष ग्रन्थो के पुन प्रचार का उल्लेख ही नहीं है जब कि दण्डी जी की यही सर्वप्रमुख शिक्षा थी। पृ १४

७ प० अम्बादत्त पर्वती ने वैदिक धर्म स्वीकार नहीं किया अत। पृष्ठ १६ का यह उल्लेख गलत है।

८ पृष्ठ १७ पर वेद पूजा प्रयोग गलत है।

९ स्वामी दयानन्द न कभी सिंध गये और न कन्याकुमारी। उन्होने न तो काश्मीर मे प्रचार किया और न आसाम मे। स्वामी जी के देश भ्रमण का वास्तविक वृत्तान्त जीवनी ग्रन्थों मे लिखा है। पृष्ठ २०

१० प० विशुद्धानन्द नहीं स्वामी विशुद्धानन्द लिखना चाहिए। पृ०२३

११ १८६९ के काशी शास्त्रार्थ के सन् १८६७ का उल्लेख कालविपर्यय दोष है। नाना साहब से स्वामी जी की भेंट अनैतिहासिक तथा तथ्य विरुद्ध है। पृष्ठ २३

१२ आर्य समाज बम्बई की स्थापना डा० माणेक जी पारसी की वाटिका मे हुई न कि माणिकचाव की वाटिका मे। पृ० २४

१३ आर्य समाज के तीसरे नियम में सत्य विद्याओं का पुस्तक यह शुद्ध है इसे पुस्तक नहीं लिखना चाहिए। पृ० २४

१४ सातवा नियम अधूरा ही दिया है। "सब काम" इसे छोड़ दिया है।

१५ दसवें नियम में प्रत्येक शब्द को नही लिखा। पृष्ठ २४

१६ "माख्यान" के स्थान पर 'व्याख्यान" होना चाहिए। पृ० २४

१७, शाहपुर अशुद्ध है—वास्तविक नाम शाहपुरा है। पृ० २५

१८ मैया फैजुल्ला खा किसी इस्लामी सस्था का महामन्त्री नही था। वह महाराजा जसवन्तसिंह का विश्वास पात्र मन्त्री था। पृ० २६

१९ नन्ही भगतन न तो मुसलमान थी और न नगर की जानी मानी वैश्या जैसा कि पृष्ठ २७ पर अकित है। वह महाराजा की प्रेयसी (रखेल) थी जिसे मारवाड में पासवान कहते हैं। उसके ठाट-बाट रानियो जैसे थे और वह पर्दे मे रहती थी।

२० महाराजा द्वारा न नी का पालकी को कधा देने का प्रवाद किंवदन्ती मात्र है। इसमें लेश मात्र भी सत्यता नही है। पृष्ठ २७

२१ स्वामी को विष देने वाला धौड मिश्र था न कि जगन्नाथ।

२२ दूध मे सखिया डाला गया न कि पिसा हुआ काच। पृ० ३१

२३ अलीमर्दान न तो महाराजा प्रतापसिंह का निजी डाक्टर था और न बहुत योग्य जैसा कि पृ० ३३ पर लिखा है।

२४ जो कथन पृ० ३४ पर अलीमर्दान द्वारा कहलाया गया है वह तो अजमेर के पीर इमामअली का था। अलीमर्दान ने तो औषधि मे कैलोमल नामक पदार्थ डाल कर स्वामी जी की अधिक हानि की।

२५ विषदाता का पश्चाताप और स्वामी जी द्वारा उसे नेपाल जाने के लिए कहना किंवदन्ती मात्र है। विष देने की घटना बहुत गोपनीय रही और इसे तत्कालीन लोग भी नहीं जान सके। पृ० ३५

२६ स्वामी जी के निधन के सवत (१८४० वि०) तथा मगलवार का तो उल्लेख पृ० ३७ पर है किन्तु तिथि का उल्लेख नही है। अब इस प्रकरण को भाषा विषयक त्रुटियों को देखें—

२७, सहस्रनाम को सहस्रनाम तथा स्तोत्र का स्त्रोत लिखा है। पृ० ६

२८ निरुक्त के स्थान निरुक्ति पृ० ६

२९ दयलु को दयालू लिखा है। पृ० १७

३० पृ० ८५ पर सत्योपदेश को अधूरा छापा है।

३१ निसकोच को निसकोच (पृ० ३८) लिखा है।

३३ स्वयमेव को 'स्वमेव" लिखना अशुद्ध है। पृ० २१

स्वामी दयानन्द की ही भांति उनके अनुयायियो की चित्र कथाओं से भी निम्न त्रुटियां लक्षित होती है। उदाहरणार्थ—

१ लाला मुन्शीराम के पिता पुलिस कोतवाल नानकचन्द जी को टाई पहने दिखलाना पृ० ६९) अनुचित है। वे आजकल के पुलिस अफसर नही थे। उनका कार्यकाल १५० वर्ष पुराना था।

२ रेमजे मैकडानल स्वतन्त्र रूप से गुरुकुल कांगड़ी को देखने के लिए आये थे न कि ब्रिटिश पार्लियामेंट ने उन्हें किसी प्रतिनिधि मण्डल का अध्यक्ष बना कर भेजा था। पृ० ४५

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य समाज दीवानहाल का १०७वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

भारत की अखण्डता के लिए विघटनकारी ताकतों को सख्ती से कुचला जाए

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

नई दिल्ली। राजधानी के ऐतिहासिक लालकिला मैदान में आर्य समाज दीवान हाल का १०७ वां वार्षिकोत्सव २७ से २९ मार्च तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस त्रिदिवसीय भव्य उत्सव में अनेक सम्मेलनों का आयोजन किया गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में २९ मार्च को 'भारत की अखण्डता व आर्य समाज' सम्मेलन आयोजित किया गया। स्वामी जी राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को सुदृढ़ करने में आर्य समाज के महत्वपूर्ण योगदान की चर्चा करते हुए भारत सरकार से जोरदार मांग मांग की कि पंजाब व काश्मीर के साथ लगे पाकिस्तान के सीमाक्षेत्र में एक सुरक्षापट्टी का निर्माण किया जाए व आधुनिक हथियार देकर वहां पर भू०पू० सैनिकों को बसाया जाए ताकि अलगाववादी व विघटन कारी तत्वों को गड़बड़ी करने से रोका जा सके।

प्रस्ताव

इस अवसर पर पं० राजगुरु शर्मा द्वारा प्रस्तुत यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ कि साम्प्रदायिक, आतंकवादी आदि गतिविधियों की यह सभा भर्त्सना करती है, सभी आर्यजन संकल्प लेते हैं कि संकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठकर देश की अखण्डता व सांस्कृतिक एकता की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध रहेंगे। यह सभा सरकार से यह भी मांग करती है कि विघटनकारी ताकतों को सख्ती से कुचला जाए तथा अखण्डता को स्थापित करने वाली प्रवृत्तियों को संरक्षण दिया जाए। साथ ही सरकार से यह भी मांग करती है कि जम्मू व काश्मीर से आए तीन लाख परिवारों की सरकार रक्षा करे उन्हें पुनः अपने घरों में बसाया जाए और सेवानिवृत सैनिक परिवारों को काश्मीर की गाजा पट्टी में बसाकर, वहां चुनाव कराए जायें।

ऋषि दयानन्द ने राष्ट्र को नई दिशा व शक्ति दी—पाटिल

सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल ने महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा—स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना करके समाज और राष्ट्र को नई शक्ति दी है। उन्होंने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को वेद के दर्शन कराये। स्वामी दयानन्द ने मानव समाज के समक्ष यह स्पष्ट किया था कि संसार का मूल तत्व सब प्राणियों में एक है, यानि ईश्वर सर्वव्यापक और एक है। जिस प्रकार युग पुरुष कृष्ण ने मानव समाज को अंधविश्वास, अत्याचार और उत्पीड़न से मुक्त कराने के लिए संघर्ष किया था, उसी प्रकार स्वामी दयानन्द ने मानव जाति को कुरीतियों, अंधविश्वासों और विभिन्न प्रकार के शोषणों से मुक्त कराने के लिए काम किया था।

सम्मेलन में पारित प्रस्ताव की चर्चा करते हुए लोकसभा अध्यक्ष ने राष्ट्र की ओर से देशवासियों को आश्वासन दिया कि पंजाब व जम्मू काश्मीर के विस्थापितों को सरकार सम्मान के साथ उनके पूर्व स्थानों पर बसाने का प्रयत्न करेगी। जब तक ऐसा नहीं हो जाता तब तक सभी विस्थापितों को राष्ट्रवासी इस कुशल क्षेम के साथ सहयोग करें जैसे कि एक लड़की अपनी मां के संरक्षण में सुरक्षित रहती है।

केन्द्रीय कृषि मन्त्री डा० बलरामजाखड़ ने सम्मेलन में उपस्थित न हो पाने के कारण अपने लिखित सन्देश में कहा—स्वामी दयानन्द ने पराधीन भारतीयों में स्वाधीनता की भावना जागृत की।

इस अवसर पर प्रख्यात वैदिक विद्वान डा० वाचस्पति उपाध्याय ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य समाज ने सदैव देश को जोड़ने की बात की है न कि तोड़ने की। उन्होंने स्वभाषा, स्वसंस्कृति आदि को राष्ट्रीय एकता व अखण्डता का आधार बताया। अखिल भारतीय सनातन धर्म महासम्मेलन के महामन्त्री व सुप्रसिद्ध पत्रकार पं० रमाकान्त गोस्वामी ने कहा कि देश पर जब भी संकट आया है तो इसी दीवानहाल आर्य समाज से आवाज उठी है और आन्दोलन शुरू हुए हैं तथा आज भी भावनात्मक व सांस्कृतिक अखण्डता को सुदृढ़ करने के लिए हमें संस्कृत की रक्षा व प्रचार प्रसार करना चाहिए। उन्होंने आर्य समाज की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए कहा कि यदि क्रान्तिकारी आन्दोलन आर्यसमाज न होता तो आज सनातन धर्म जीवित न होता।

इस समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री व पं० राजगुरु शर्मा ने भी प्रेरक विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम का सं[illegible] दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्र[illegible] श्री सूर्यदेव ने किया।

काव्य सम्मेलन

शुक्रवार २७ मार्च रात्रि को लाल किला मैदान में पद्मश्री क्षेमचन्द्र सुमन' की अध्यक्षता में एक भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसके संयोजक थे डा० सारस्वत मोहन मनीषी। इस कवि सम्मेलन में श्री बिहारीलाल जी भारती सोनीपत गीतकार श्री जयसिंह जय आर्य श्री पुरुषोत्तम व्रज श्री यूसुफ भारद्वाज श्री इन्द्र श्री प्रराग प्रदीप डा० ध्रुवेन्द्र स्दोनिया श्री जगदीश आर्य पं० राजगुरु शर्मा आदि कवियों ने देश भक्ति की ऋषि दयानन्द की स्तुति में कवितायें पढ़ीं।



लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल उद्घाटन भाषण देते हुए। साथ में सार्व० [illegible] सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पं० राजगुरु जी तथा श्री लक्ष्मीचन्द्र जी

यज्ञ प्राणिमात्र के कल्याण का प्रतीक है —माखनलाल फोतेदार

इससे पूर्व आज प्रातः केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री श्री माखनलाल फोतेदार ने यजुर्वेदीय पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति देने के बाद कहा कि आर्यसमाज यज्ञों के प्रचार प्रसार के द्वारा न केवल पर्यावरण शुद्धि के लिए सराहनीय कार्य कर रहा है अपितु इनसे प्राणिमात्र का भी कल्याण होता है। उन्होंने आर्यसमाज को परिवार नियोजन कार्य में भी सहयोग देने की अपील की। यज्ञ के ब्रह्मा प० राजगुरु शर्मा ने सभा को आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा कि राष्ट्र में आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो ब्रह्मचर्य एवं चरित्रनिर्माण द्वारा जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगाने का संदेश देती है और उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र सरकार ने इस दिशा में आर्यसमाज से सहयोग लिया है। प्रख्यात वैदिक विद्वान व आर्य सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने यज्ञ को विश्व शान्ति का प्रतीक बताया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने इस अवसर पर अग्निहोत्र के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी बताया कि सभा के द्वारा दिल्ली के गाजीपुर क्षेत्र में साढ़े बारह एकड़ भूमि में स्थापित गो-संरक्षण केन्द्र में एक लाख गऊएं रखने का लक्ष्य है और इससे श्वेतक्रान्ति आयेगी। आचार्य रामकिशोर वानप्रस्थ के वेदोपदेश की भी सभी ने सराहना की।

वेद सम्मेलन

सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री के संयोजकत्व में वेद सम्मेलन का आयोजन भी किया गया। डा० शास्त्री ने इस अवसर पर कहा कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और अपनी शक्ति से स्वतः प्रमाण है परन्तु आज डी० ए० वी० के प्रो० वेद व्यास कहते हैं कि वेद ईश्वरीय ज्ञान नहीं है और वैदिक हेरिटेज पत्रिका के माध्यम से दयानन्द के सिद्धान्तों को फिर चुनौती दी जा रही है। वैदिक विद्वान प० श्री प्रेमचन्द्र श्रीधर ने भी कहा कि यह दुःख की बात है कि डी ए वी के बन्धु आज कह रहे हैं कि आर्य बाहर से आये थे और वे मांस खाते थे। इस अवसर पर प० शिवकान्त उपाध्याय ने समय २ पर वैदिक संगोष्ठियां करते रहने की बात कही। प० प्रकाशचन्द जी शास्त्री, डा० वसुमित्र ने भी प्रेरक विचार प्रस्तुत किये।

स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि विश्व की प्रतिष्ठा धर्म से है। जगत का मूल धर्म है, धर्म का मूल वेद है और वेदों का मूल ईश्वर है, इसलिए हमें ईश्वर की वाणी वेदों का स्वाध्याय करना चाहिए।

भाषण प्रतियोगिता

वार्षिकोत्सव के प्रथम दिन २७ मार्च को स्कूली बच्चों के लिए 'राष्ट्रीय एकता के लिए समान आचार संहिता' भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी तथा कालेज स्तर के लिए विषय था आरक्षण के दूरगामी प्रमाण। देश के भावी कर्णधार बच्चों ने दोनों विषयों पर अपने विचार रखे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने एकता के लिए आचार संहिता विषय का प्रतिपादन करते हुये वेद मन्त्र सत्यं बृहद् ऋतं उग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ पृथिवी धारयन्ति की सुन्दर विवेचना की।

'आरक्षण के दूरगामी प्रमाण' विषय का प्रतिपादन वैदिक विद्वान प० नेत्रपाल शास्त्री ने करते हुये कहा कि आर्य समाज कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था को मानता है न कि जन्म के आधार पर जाति को। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो०डा० कमलकिशोर गोयन्का ने कहा कि आरक्षण की गलत नीति के कारण ही आज योग्यता दलित व अयोग्यता पुरस्कृत हो रही है और आरक्षण नीति के कारण देश जातियों में पुनः विभाजित हो रहा है।

आर्य श्रेष्ठी श्री दयानन्द आर्य ने विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किये। पुरस्कृत छात्र, स्कूल स्तर—कु० दमयन्ती राजपाल—प्रथम, कु० ममता द्वितीय, आशु वर्मा तृतीय, प्रोत्साहन पुरस्कार रक्षत कपूर कु० अम्बिका, रमणदीपसिंह, ज्ञानेन्द्र कुमार त्रिवेदी व वरुण चतुर्वेदी। शील्ड सहदेव आर्य पब्लिक स्कूल पंजाब बाग को प्रदान की गयी। कालेज स्तर स्तर में कु० स्वतन्त्र रत्न पुरस्कृत की गयी। प्रत्येक विजेता को पुरस्कार राशि, वैदिक साहित्य व प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया। निर्णायक मंडल में थे—डा सत्यकाम वेदालंकार डा कमलकिशोर, गोयन्का एवं श्री विजयपाल।

आर्य महिला सम्मेलन

२८ मार्च को श्रीमती सरला मेहता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुये आर्य महिला



आर्य समाज दीवान हाल के वार्षिकोत्सव पर स्वास्थ्य मन्त्री श्री माखनलाल फोतेदार यज्ञ में आहुति देते हुए। साथ में श्री विमल वधावन तथा उनकी पत्नी श्रीमती पूनम वधावन। पीछे खड़े हुए श्री सूर्यदेव जी तथा श्री लक्ष्मीचन्द्र जी। मंच पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा स्वामी दीक्षानन्द जी विराजमान हैं।

सम्मेलन में श्रीमती शकुन्तला आर्य श्रीमती कृष्णा चड्ढा, श्रीमती ऊषा शास्त्री श्रीमती सुशीला आनन्द श्रीमती सुधारानी, श्रीमती प्रेमशील महेन्द्र आदि ने अपने विचार प्रकट किये। सभी वक्ताओं के उद्गारों का मूल स्वर यह था कि ऋषि दयानन्द ने दलित व अबला समझी जाने वाली नारी को सम्मान व गरिमा प्रदान करायी तथा बाल विवाह, वृद्ध विवाह के विरुद्ध संघर्ष चलाया, विधवा विवाह का प्रचलन कराया, एवं नारी के लिए शिक्षा व वेदाध्ययन पर विशेष बल दिया।

सामाजिक व्यवस्था सम्मेलन

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान आचार्य यशपाल सुधांसु जी की अध्यक्षता में २८ मार्च रात्रि को महर्षि दयानन्द का सामाजिक चिन्तन विषय पर एक सम्मेलन हुआ। प० सुधांसु ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि दयानन्द राजनीति के चाणक्य नीति में कृष्ण व मर्यादा में राम थे और उनके द्वारा प्रस्तुत वैदिक सामाजिक व्यवस्था से परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था तथा दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ग्रंथों के स्वाध्याय से ही सर्वश्रेष्ठ सामाजिक व्यवस्था बनाई जा सकती है। प्रख्यात वैदिक विद्वान व मूर्धन्य पत्रकार प० क्षितीश जी वेदालंकार ने अस्वस्थता के कारण संक्षिप्त भाषण में कहा कि आप्त पुरुष दयानन्द के अमर वाक्य (आर्य समाज नियम) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न होकर सभी की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए—का अनुपालन करना चाहिए ताकि सच्ची सामाजिक व्यवस्था कायम हो सके। डा० महेश विद्यालंकार ने धर्मानुसार यथायोग्य प्रीतिपूर्वक व्यवहार को सच्ची सामाजिक व्यवस्था का मूलाधार बताया।

इससे पूर्व १३ से २६ मार्च तक प्रतिदिन रात्रि में समाज मन्दिर में वैदिक विद्वान प० नेत्रपाल शास्त्री के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर प्रवचन होते रहे। सभी कार्यक्रमों में संगीताचार्य श्री गुलाबसिंह राघव ने मधुर भजनों द्वारा श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

सम्मेलन के समापन पर प० राजगुरु शर्मा ने आर्य समाज 'दीवानहाल के प्रधान श्री मूलचन्द गुप्त मन्त्री श्री सूर्यदेव, आर्य समाज के जागरूक कार्यकर्ता चौ० लक्ष्मीचन्द तथा अन्य समस्त पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं का धन्यवाद किया।

विद्वानों का सम्मान

दीवानहाल वार्षिकोत्सव पर श्री क्षितीश जी वेदलंकार एवं पद्मश्री क्षेमचन्द्र जी सुमन को सम्मानित किया गया, विस्तृत समाचार अगले अंक में।

(पृष्ठ २ का शेष)

दम नही बन सकती है। इसके लिए कच्चा पदार्थ निर्माण विधि के साथ साथ कुछ समय भी चाहिए। धान बोने के बाद तुरन्त फसल नही काटी जा सकती है। विधि के साथ सिंचाई-बिराई गुडाई करने के बाद भी कुछ महीने चाहिए जिनसे अंकुरण हो पौधे बड़े हों उनमें बालियाँ लगें परिपक्व हों तब धान हमें प्राप्त होगा। ऐसे ही पाप वृत्ति को निवारण हेतु पहले सकल्प चाहिए फिर धीरे धीरे उसका अभ्यास करते हुए पापाचार पर नियन्त्रण किया जा सकता है। ऐसे नहीं अघमर्षण मन्त्रो का जाप करने मात्र से पाप नष्ट हो जावेंगे। प्रत्युत इसका अर्थ यह है कि इन मन्त्रों का अनुष्ठान करने वाले पाप करने से बचे रहते हैं। इन मन्त्रों से पाप की वृत्ति का मर्षन होता है।

इन मन्त्रो मे पृथिवी अन्तरिक्ष द्यौ तीनो लोको से बढ़कर चौथे स्व लोक का भी वर्णन है यह वही लोक है, जो पहले सभी तीनो लोको से पार जाकर सुख की स्थिति है। हम किसी लोक में भी रहे किन्तु सुखी रहे तो हम स्वर्गलोक में ही रहेगे। सन्ध्या मे हमने अब तक अपने स्थूल मास पिण्ड उसको सूक्ष्म प्राण परिवेश, और इससे भी सूक्ष्म मनोभूमि के अध्ययन के माध्यम से अपना आत्म निरीक्षण किया है। मन को अपने शरीर के अन्दर और बाहर सभी स्थानो पर पहुचाते हुए उस परमात्मा की लीला का अवलोकन कर लिया है। प्रभु मिलन की चाह मे और आगे चलने से पूर्व पुन तीन बार आचमन करने का विधान है। वही आचमन मन्त्र का पाठ हमने किया।

यहा पर आचमन मन्त्र के तीन शब्द स्मरण कर ले तो अग स्पर्श, मार्जन प्राणायाम अघमर्षण के अभ्यास से इनके प्रतीक परिवर्तित से प्रतीत होते हैं। अभिष्टये से अभिप्राय है कि ईश्वर ने सभी प्रकार के पदार्थों की रचना कर दी है इन्हे रचकर हमारे सामने आना उसका काम है। हम मानव देह की जीवात्मा 'पीतये के प्रयोजनानुसार उन वस्तुओ के उचित उपयोग रूपी अपना अंशदान— तभी उसको शम् शान्ति व सन्तोष प्राप्त होगा। उदाहरणार्थ—प्रभु ने हमारे लिए सूर्य का उदय कर दिया है किन्तु हम अपनी आखो को बन्द किए हुए सोते रहेगे—तो उस सूर्योदय का हमारे लिए क्या लाभ। प्रभु के उपकार हमारे चारो ओर बिखरे पड़े हैं हम कहीं उनको विकृत करके अपकार का कार्य तो नहीं देते हैं।

इस समय के शन्नोदेवीरभिष्टये मन्त्र का पठन हमे यही पाठ पढाता है कि अपने पिण्ड और ब्रह्माण्ड के सभी क्रिया कलाप हमे प्रभु की निष्ठा के लिए प्रेरित करने वाले होकर हमने जो धर्म-अर्थ काम मोक्ष का लक्ष्य अपनाया है—उसकी सिद्धि मे सहायता हो जायें।

(पृष्ठ ४ का शेष)

३ पटियाला का अभियोग १९०६ मे नहीं अपितु १९०८ मे दायर किया गया। पृ० ४५

४ स्वामी श्रद्धानन्द ने वेद मन्त्रो का उच्चारण कर जामा मस्जिद दिल्ली में भाषण दिया न कि किसी मुस्लिम बहुल क्षेत्र मे। पृष्ठ ४७

५ महात्मा हसराज की चित्रकथा पृ० ५९ पर आध्यात्म का प्रयोग अशुद्ध है। अध्यात्म शुद्ध है।

६ लाला लाजपतराय का जन्म ढुडि के ग्राम में हुआ न कि ढोडी ग्राम में। 'पैतृक अशुद्ध है पैतृक होना चाहिए। पृ० ६८

७ पजाब और कलकत्ता दोनो विश्वविद्यालय से लाला जी का मैट्रिक करना तथ्य विरुद्ध है। पृ० ६३

८ क्या लाला लाजपतराय ने कई वर्षों तक डा० ए० वी० कालेज लाहौर में इतिहास और राजनीति पढाई थी। (पृ० ६४)

९ फिरोजपुर अनाथालय का स्थापना बहुत पहले स्वामी दयानन्द के जीवन काल मे हो गई थी उसे लाला जी ने स्थापित नही किया पृ०६६

१० १८८५ मे जो काग्रेस का प्रथम अधिवेशन बम्बई मे हुआ था उसमें सरसैय्यद द्वारा कांग्रेस का विरोध इतिहास के विरुद्ध है। काग्रेस का विरोध उन्होने बाद मे किया न कि काग्रेस के मच से। पृ० ६७

११ महात्मा गाधी ने असहयोग आन्दोलन १९२० मे चलाय न कि १९१९ मे पृ० ६९

१२ मिर्जा गुलाम अहमद की पुस्तक का नाम बुरहाने अहमदिया है न कि कुरहाने अहमदिया। पृ० ७५

१३ प० लेखराम का अन्तिम सन्देश था आर्य समाज मे तहरीर (लेखन) और तकरीर (भाषण) काम जारी रहे। मात्र लेख के काम का उल्लेख अधूरा है। पृ० ८९

१४ प० रामचन्द्र देहलवी की कथा पुस्तक के अन्त मे आनी चाहिए। कालक्रम प० गुरुदत्त उनसे पहले हुए।

१५ देहलवी जी का जन्म नीमच छावनी मे हुआ। मालवा की छावनी लिखना भ्रम पैदा करता है पृ० ८६

१६ प० गुरुदत्त का निधन १९ मार्च १८९० को हुआ न कि १८८९ मे। पृष्ठ ८९

मेरा निवेदन इतना है कि आगामी सस्करण में इन भूलो का सुधार कर लिया जाये। दोष दर्शन मेरा स्वभाव नहीं है किन्तु इतिहास को यथाशक्य शुद्ध रूप से लिखा जाना चाहिए यही मेरा अभिप्राय है।

आर्यसन्देश–दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 9 10 4-1992 Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल ११०२४/९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) १३९/९२
साप्ताहिक "आर्यसन्देश" १२ अप्रैल, १९९२

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल जी

महाशय धर्मपाल जी के नाम से दिल्ली ही नहीं अपितु दिल्ली से बाहर भी सभी परिचित हैं। उनका हसता हुआ चेहरा तथा मानवता के पथ पर अग्रसर



श्री महाशय धर्मपाल जी
प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा

सभी मानववादियो तथा जरूरतमदो की सहायता के लिए उठे हुए उनके हाथ शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में की गई उनकी अनुपम सेवा तथा प्रतिदिन प्रात साय एम० डी० एच० के सत्सग भवन मे उनका सदुपदेश—यही सब मिल कर उनको एक कर्मयोगी की सज्ञा से अभिहित करने के लिए बरबस प्रेरित करते हैं।

श्री महाशय धर्मपाल जी का का जन्म १७ मार्च १९२३ को स्यालकोट में हुआ था। उनके पिता श्री चुन्नीलाल जी उन्हे उगली पकड कर आर्य समाज मन्दिर ले जाते थे। उन्हें आर्य समाज के संस्कार घुटटी मे मिले थे। उनका सरल सहज स्वभाव हसता मुस्कराता चेहरा साधारण परिधान नम्र एव उदार व्यवहार बरबस अपनी ओर आकर्षित करता है वे दान और सेवा करने वाले ईश्वर भक्त हैं।

श्री महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका सन्देश में उनका, श्री रामचन्द्र सैदा द्वारा लिखित जीवन वृत्त 'एक बहुमुखी सफल व्यक्तित्व प्रकाशित हो रहा है। इसमें उनके जीवन की सफलताओं और असफल का सुन्दर चित्रण किया गया है। लेखनी श्री सैदा की किचार श्री महाशय धर्मपाल के और अनुभूतियाँ सम्पूर्ण परिचित आर्य जगत की, और एक प्रेरक व्यक्तित्व सोपान पर सोपान चढ़ता आगे बढ़ता जा रहा है—

लोग काटों से बचके चलते हैं,
मैंने फूलों से जख्म खाये है।

आप ही देखिए बेगानो को छोडिये अपनो ने कितने कष्ट दिए होंगे।

श्री महाशय धर्मपाल जी का ६९वां जन्मोत्सव समारोह पूर्वक २७ मार्च १९९२ को एम० डी० एच० के विशाल सभागार में मनाया गया। श्री महाशय जी को आशीर्वाद और शुभ कामनाए देने वाले—पूज्य श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प० जैमिनी शास्त्री श्री सूर्यदेव डा० धर्मपाल श्री रामचन्द्र सैदा और डा० शिवकुमार शास्त्री के अतिरिक्त सम्पूर्ण दिल्ली की ओर से उनके चाहने वाले अनेक लोग जो दूर दूर से आये थे।

श्री महाशय जी के लिए आर्य सन्देश परिवार की ओर से यशस्वी जीवन की शुभकामनाए। वे स्वस्थ और नीरोग रहते हुए सौ वर्ष जीए और उससे आगे जीए तथा हमारा मार्गदर्शन करते रहें।

सेवा में—

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली ११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ फोन ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी०(एल१०२४/१-०९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५, अंक २१ | रविवार, १९, अप्रैल १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

५१०० वनवासी ईसाइयों ने क्रास उतार यज्ञोपवीत धारण किये

तृतीय वनवासी आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

नई दिल्ली सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध की अध्यक्षता में कोटवा (रायगढ़) में ४ व ५ अप्रैल, ९२ को तृतीय वनवासी आर्य महासम्मेलन धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

सभा द्वारा जारी एक प्रैस विज्ञप्ति के अनुसार ४ व ५ अप्रैल को जब स्वामी जी रायगढ से ८२ कि० मी० दूर कोटवा ग्राम पहुचे तो हजारो वनवासी स्वामी जी के आशीर्वाद के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। कोटवा ग्राम मे आयोजित यजुर्वेदीय यज्ञ मे सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी जी ने जल छिड़क कर "पुनन्तु माम देवजना पुनन्तु मनसा धिया" मन्त्रोच्चारण के साथ ईसाई वनवासियो को वैदिक धर्म मे दीक्षित किया। दो दिन तक चले इस यज्ञ मे ५१४० ईसाईयों ने स्वेच्छा से क्रास उतार कर फैंक दिये और यज्ञोपवीत धारण कर लिए तथा श्रद्धापूर्वक जब आहुतिया दी तो वैदिक धर्म की जय, के नारो से वातावरण गूज उठा।

इस शुद्धि सम्मेलन में उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, मध्य प्रदेश विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव, गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली के आचार्य हरिदेव के अतिरिक्त अनेक गणमान्य सन्यासी, नेता, विद्वान आर्य महानुभाव आदि भी सम्मिलित थे।

स्थान २ पर गुरुकुल खोले जायेंगे . वनवासी बच्चो को निःशुल्क शिक्षा

इससे पूर्व स्वामी जी वनवासी व आदिवासी क्षेत्रो का दौरा करने के बाद ३ अप्रैल को जब लैलूगा क्षेत्र में पहुचे तो सम्पूर्ण वनवासी क्षेत्र श्रद्धापूर्वक उनके स्वागत के लिए उमड़ पड़ा। उल्लेखनीय है कि आज मे लगभग दो पूर्व स्वामी जी ने इस क्षेत्र मे गुरुकुल की नींव रखी थी और आज ८५ एकड़ भूखड पर जब गुरुकुल का भवन तैयार हो गया तो स्वामी जी ने बहुत प्रसन्नता व्यक्त की। सौ से अधिक वनवासी बच्चे इस समय इस गुरुकुल मे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

स्वामी जी ने करतल ध्वनि के बीच यह बताया कि आर्य समाज की ओर से देश भर मे स्थान-२ पर ऐसे गुरुकुल खोले जायेंगे और इन गुरुकुलो मे विशेषकर वनवासी, आदिवासी व निर्धन वर्ग के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दी जायेगी। भोजन आवास, वस्त्र आदि की भी निःशुल्क व्यवस्था होगी।

ईसाई पादरियों से देश की अखण्डता को गम्भीर खतरा

इस सम्मेलन मे स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भारत सरकार से यह जोरदार माग की कि विदेशी पादरियो को देश से तुरन्त निकलने के आदेश जारी किये जाबें क्योकि वे भोले भाले व निर्धन आदिवासियो का लोभ व भय से धर्म परिवर्तन कर रहे हैं। ईसाई मिशनरियो द्वारा इस प्रकार किये जा रहे धर्मान्तरण से राष्ट्र की एकता व अखण्डता को गम्भीर खतरा पैदा हो रहा है क्योकि ईसाईयों द्वारा ऐसे धर्म परिवर्तन से देश के प्रति उनकी निष्ठा मे भी बदलाव आ जाता है। स्वामी जी ने विशाल जन समूह को सम्बोधित करते हुये आगे कहा कि आर्य समाज व अन्य राष्ट्रवादी संस्थाओं के जरिए निर्धन वनवासी व आदिवासी लोगो की उन्नति के लिए लगातार जनकल्याणकारी कार्य किये जाते रहने चाहिए।

आर्य समाज द्वारा अद्भुत सेवा कार्य

स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने यह भी बताया कि पिछले ३० वर्षों से आर्य समाज देश के विभिन्न भागो मे समाज सेवा के अद्भुत कार्य कर रहा है। आर्य समाज ने बाढ़, भूकम्प, अकाल, सूखा आदि प्राकृतिक विपदाओ के समय भी दयानन्द सेवा आश्रम आर्य वीर दल एव अन्य आर्य संस्थाओ के माध्यम से उल्लेखनीय राहत कार्य किये हैं। स्वामी जी ने आगे बताया कि असम, नागालैंड, बिहार के रांची क्षेत्र उड़ीसा, महाराष्ट्र, राजस्थान के वनवासी, आदिवासी इलाको मे स्कूल, गुरुकुल, औषधालय, बालवाड़ियो छात्रावासो आदि के माध्यम से भी विशाल स्तर पर महत्त्वपूर्ण कार्य किये जा रहे हैं।

कुम्भ मेले मे प्रचार कार्य

स्वामी आनन्दबोध जी ने यह भी जानकारी दी कि उज्जैन में आगामी दिनो होने जा रहे सिंहस्थ (कुम्भ मेले) मे भी आर्य समाज द्वारा अनेक प्रकार के ठोस व रचनात्मक कार्यक्रम किये जायेंगे।

पंजाब को सेना के हवाले किया जाए

राष्ट्र निर्माण सम्मेलन में आर्य समाज की मांग

आर्य समाज शालीमार बाग की ओर से क्षितीश वेदालंकार का सम्मान

दिल्ली २२ मार्च। आर्य समाज शालीमार बाग (दिल्ली) के वार्षिकोत्सव पर "राष्ट्र निर्माण सम्मेलन" की अध्यक्षता करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि पंजाब में गत दिनो चुनाव होने पर मैंने प्रधानमन्त्री को बधाई सन्देश दिया था और मुझे आशा थी कि चुनाव के बाद पंजाब मे आतकवाद समाप्त होगा, किन्तु पंजाब मे आतंकवादियों ने बेअन्तसिंह की सरकार को गिराने के लिए लुधियाना और संगरूर मे बार बार भयकर हत्याकाण्ड किए हैं। अत पंजाब समस्या का समाधान करने के लिए अत्यन्त आवश्यक है कि सरकार समूचे पंजाब को सेना के हवाले करे, इसके अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प नहीं है। यह मांग आर्य समाज पिछले काफी समय से करते आ रहा है।

इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् श्री क्षितीश वेदालकार को आर्य समाज शालीमार बाग की ओर से स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने एक शाल और ११०० रुपए की नकद राशि देकर सम्मानित किया। श्री क्षितीश वेदालकार ने अश्रुपूरित नेत्रो से भाव विभोर होकर आर्य जनता का धन्यवाद किया।

इस सम्मेलन मे राजसिंह आर्य, आचार्य यशपाल सुधांशु, श्री सूर्यदेव, डा० शिवकुमार शास्त्री तथा डा० धर्मपाल आदि महानुभावो ने जन समूह को सम्बोधित किया। इसके उपरान्त ऋषि लंगर का आयोजन भी किया गया।

सम्पादक—प्रो० सूर्यदेव   सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

विज्ञान मय कोष में प्रयाण (७)

—देव नारायण भारद्वाज

हमने अपने शरीर एवं शरीर से बाहर की सृष्टि के अवलोकन से प्रभु दर्शन का प्रयास किया। पर यह सफल तभी हो सकता है, जब हम इस सृष्टि के चेतन-तन्त्र से भी समन्वय कर सकें। मान लिया हम किसी वन-पर्वत शृंखला, अथवा अन्य किसी मनोरम स्थान के भ्रमण पर जाते हैं हम उसके आकर्षण को देख कर वाह-वाह कर उठते है हम उसके सृष्टि सुख को अपने में समेट लेना चाहते हैं, हम उसके वर्णन को सुन कर अथवा सुना कर आगे भी सुख अनुभव करते हैं। इसका आशय यह हुआ कि अन्य साथी भी होने चाहिए—जो इस सुख में भाग लेकर उसको बता सकें। जब साथियो का साथ मिलता है, तो हम उनसे राग द्वेष में फस जाते हैं इस प्रकार या तो हम पक्षपात करने लगते हैं—या घृणा। यह स्थिति न केवल हमारी प्रगति मे बाधक हो जाती है, प्रत्युत एक उपासक के रूप मे प्रभु मिलन के मार्ग में अवरोध खड़ा कर देती है। हम जब आंख बन्द करके प्रभु का ध्यान या गुणगान ही करना चाहते हैं तो यह प्रेम घृणा के दृश्य सामने आकर हमारे मन को उद्वेलित करने लगते हैं। इसलिए पिछले अध्याय में जो मनोमय कोष को हमने पवित्र करने की चेष्टा की थी, अब उसे प्रभु मिलन की राह मे दृढ़ता पूर्वक लगाने की आवश्यकता है।

आगे बढ़ने से पहले विज्ञान मय कोष पर विचार कर लिया जाए। सृष्टि का जितना विस्तार है ज्ञान का उससे कहीं अधिक विस्तार है। यह सम्पूर्ण सृष्टि के ज्ञान का जो अंश हमारे लिए उपयोगी है, उसको क्रमबद्ध ढंग से मन मे संचित करके उसका उपयोग करना यही विज्ञान है। यह देह स्थूल है जो अन्नमय कोष कहलाती है, इसमें स्थित प्राणमय कोष उससे सूक्ष्म है। प्राणमय कोष से भी सूक्ष्म है—मनोमय कोष और इससे भी सूक्ष्म है विज्ञान मय कोष। उदाहरण से इस बात को स्पष्ट किया जाये। अभी लखनऊ स्थित अन्तरिक्ष केन्द्र के अवलोकन का शुभावसर हमें प्राप्त हुआ। वहां पर अन्तरिक्ष में छोड़े गए उपग्रहों द्वारा भेजे गये पृथ्वी के चित्रो का अध्ययन किया जाता है। उपग्रह से पृथ्वी के निश्चित भाग के बहुत बड़े क्षेत्र का चित्र हैदराबाद स्थित अन्तरिक्ष विज्ञान केन्द्र पर प्राप्त होता है, जो पारदर्शी फिल्म पर अंकित होता जाता है और उसी फिल्म के चित्रण का अध्ययन लखनऊ में दूर संवेदन (रिमोट सेन्सिंग) विधि द्वारा किया जाता है। यह उपग्रह भ्रमण करते हुए कुछ ही दिन मे सम्पूर्ण पृथ्वी का चित्र खींच लेते हैं। हम दूरदर्शन के कार्यक्रम भी इन्हीं के माध्यम से देखते हैं। उस आधा इंच चौड़ी फिल्म की साधारण तवे के बराबर चक्री मे हमारे देश-प्रदेश के अनेक जिले समा जाते हैं। अध्ययन से भूमि की वनस्पति, कृषि खाली भूमि, ऊसर भूमि, नदी-नाले आदि सभी का ज्ञान हमे प्राप्त हो सकता है। इस सम्पूर्ण मे से जो हमारे उपयोग का है, हमे केवल उतना मात्र प्राप्त कर उसका मानचित्र बनाना है और उसी के सर्वेक्षण से उसके उपयोग का मार्ग प्रशस्त करना है। इसी प्रकार सृष्टि मे अनेक रूप मे ज्ञान है, किन्तु जितना हमारे उपयोग का है, उसी को नियमो के अनुसार प्राप्त करना हमारे मन बुद्धि का कार्य है।

ज्ञान के विशेष भाग का विधि पूर्वक व्यवहार में लाना ही विज्ञान है। हम कुम्भ मेला, रेलवे स्टेशन या कहीं बाजार मे जाते हैं, वहां पर हजारों व्यक्ति मिलते हैं जो हम से अधिक या कम आकर्षक, बलवान, धनवान या अन्य किसी प्रकार से गुणवान हो सकते हैं, किन्तु उन्हे देखते हुए हम आगे बढ जाते हैं। पर यकायक हमें अपना कोई परिचित मिलता है—उसे मिल कर हमे प्रसन्नता होती है। वही यदि साथ रहने लगता है तो उससे अधिक प्रेम, अनुराग या द्वेष हो जाता है। मन को अनुराग द्वेष से स्वच्छ करके न्याय की भूमि पर ले आना ही हमारा विज्ञान मय कोष में प्रवेश है। मनसा परिक्रमा के इन मन्त्रो में हमें इसी का मार्ग दर्शन मिलता है। आइये पहले मन्त्रो का अध्ययन किया जाये।

१—ओं प्राची दिगग्निरधिपति रसितो रक्षितादित्या इषव ।
(२) दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपति स्तिराश्चराजी रक्षिता पितर इषव
(३) प्रतीची दिग्वरूणाऽधिपति पृदाकू रक्षिताऽन्न मिषव ।
(४) उदीची दिक् सोमोऽधिपति स्वजो रक्षिताऽशनिरिषव ।
(५) ध्रुवा दिग्विष्णु रधिपति स्वजो रक्षिता वोरुध इषव ।
(६) ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पति रधिपति श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषव । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम ऐभ्यो अस्तु। योऽस्मान्-द्वेष्टि य वय द्विष्मस्त वो जम्भे दध्म ॥ अथर्व० का० ३ सू० २७ मन्त्र १ से ६।

अर्थ—प्रत्येक मन्त्र के तीन भाग हैं। पहला भाग वह है जो १ से ६ तक की संख्या से दर्शाया गया है, इसका अर्थ बाद मे करेंगे। शेष दो भाग जो प्रत्येक मन्त्र मे बाद मे आते हैं—उनका अर्थ करते हैं, क्योंकि यह सभी मन्त्रो में समान है।

(तेभ्योनम.) उस परमेश्वर को नमस्कार। (अधिपतिभ्य नम) रक्षक गुणो को नमस्कार (इषुभ्यो नम) इच्छापूर्ति करने वाले बाण रूप को नमस्कार (एभ्य अस्तु) इन सबको नमस्कार होवे (य) जो (अस्मान) हमको (द्वेष्टि) द्वेष करता है (य) जिसको (वय) हम (द्विष्म.) द्वेष करते हैं (त) उसे (व) आपके (जम्भे) न्याय रूप दाढ मे (दध्म) रखते हैं। अब पहले भाग का अर्थ समझें।

दिक	अधिपति	रक्षिता	इषु
१—प्राची पूर्व	अग्नि-अग्रणी प्रभु	असित-बन्धन काटने का गुण रक्षक है।	आदित्य विद्वान
२—दक्षिणा-दक्षिण	इन्द्र-परमैश्वर्यवान प्रभु	तिरश्चिराजी-कुटिल चाल से चलने वाले से बचाने वाला	वृद्ध विद्वान
३—प्रतीची-पश्चिम	वरुण वरणशील प्रभु	पृदाकू-छिप कर घात करने वाले	अन्न-भौतिक शक्ति वाले
४—उदीची-उत्तर	सोम.-सोमरूप प्रभु	स्वज -स्वय उत्पन्न होकर	विद्युत बिजली
५—ध्रुवा नीचे	विष्णु-व्यापक प्रभु	कल्माषग्रीवा-रंग बिरंगी वनस्पति जिनकी ग्रीवा है	वीरुध - वनस्पति
६—ऊर्ध्वा-ऊपर	बृहस्पति-बडे-बड़ों से भी बडा	श्वित्र -जो कि श्वेत शुभ्र ज्योतिर्मय है	वर्षम्-वर्षा

दिशा बोध—

दिशायें—दिशाओ से ही आशाए है। सर्वाआशा मम् मित्रम भवन्तु' सभी दिशायें मेरी मित्र हो जावें यही दिशा के लिए आशा व्यक्त आया है। पूर्व, दक्षिण उत्तर, पश्चिम, नीचे ऊपर यह छ दिशाए इन मन्त्रो में हमें क्या संकेत करती है—देखें पूर्व ज्ञान की दिशा है, दक्षिण ज्ञान म दक्षता लाने की दिशा है, पश्चिम—पीछे देख कर सभी से रक्षा करने की दिशा है। उत्तर—उत से उत्तर अर्थात् वर्तमान स्थिति से शनै शनै ऊपर उठने की दिशा है। ध्रुवा—दृढता लाने का दिशा है और ऊर्ध्वा—ऊपर प्रगति के उच्च शिखर पर पहुचने की दिशा है।

सामने प्रकाश है दाहिनी ओर बल है पीछे बल की वरीयता या परख है, बायें श्रम है नीचे व्यवहार का धरातल है तब ऊपर महानता की ऊंचाई है। सामने ताप है, दाहिने अग्नि से प्राप्त ऐश्वर्य है, पीछे ऐश्वर्य से प्राप्त लोकप्रियता है, बायें लोक प्रियता की मूल मधुरता है, नीचे, मधुरता—लोचकता से प्राप्त व्यापक स्थिरता है, इसी स्थिरता से स्थापित ऊपर की उच्चता है। सामने नेत्र—ज्ञानेन्द्रियों की शक्ति है, दाहिने भुजा—कामेन्द्रियो का बल है, पीछे सुषुम्ना—सवेदन शीलता है बाये हृदय की सौम्यता है, नीचे पैरो की गतिशीलता है, तीन पग में ही तो विष्णु ने सारी सृष्टि को नाप लिया था और ऊपर मस्तिष्क की समग्र नियन्त्रण की महनीयता है।

अधिपति बोध—इन सभी छहों दिशाओ मे परमात्मा के गुणबोधक प्रमुख एक-एक नाम, उनका पृथक-पृथक अधिपति घोषित किया गया है। सामने अग्नि है वही ज्ञान-प्रकाश-ताप-तथा नेत्र का स्रोत है। दाहिने इन्द्र है, वही दक्षता, बल, ऐश्वर्य एवं भुजाओं की शक्ति है। पीछे वरुण है, वही समीक्षा, वरियता, लोक प्रियता एव संवेदनशीलता की क्षमता है। बायें सोम है, वही शनै शनै सृजन शीलता नम्रता, मधुरता, और सौम्यता का सामर्थ्य है। ऊपर बृहस्पति है, (क्रमशः)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

त्यागी, तपस्वी, दृढ़व्रती महात्मा हंसराज

सम्पादकीय

देश धर्म की रक्षा के लिए भारत मा के अनेक सपूतो ने हसते हसते अपने जीवन को राष्ट्र मा की बलि वेदी पर न्योछावर कर दिया। इसी प्रकार जातीय उत्थान, धर्म प्रचार तथा सत्य शिक्षा के प्रसार हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त एव अनुयायी महात्मा हसराज ने अपना जीवन आर्य समाज को अर्पण कर दिया था। वह समय था जब हम पराधीन थे, वेद ज्ञान का सूर्य अज्ञानान्धकार से आवृत्त था, भारत मा की सन्तानें भटक कर धर्म परिवर्तन कर रही थीं, भारतीयता तथा राष्ट्रीय भावना की प्रेरणा देन वाली शिक्षा का भी अभाव था, इस समय ऋषिवर दयानन्द ने सत्यार्थ का आलोक फैलाया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के सन्देश और विचारधारा को दिग-दिगन्त तक फैलाने का व्रत लेने वाले प्रारम्भिक शिष्य थे—स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हसराज प० लेखराम और प० गुरुदत्त विद्यार्थी। इन मा भारती के सपूतो ने अपने त्याग और तपस्या के बल पर वेद प्रचार, शुद्धि सगठन और शास्त्रार्थों के द्वारा जनता को सन्मार्ग दिखाया। इसके अतिरिक्त इन्होंने एक और महान काय किया और वह था शिक्षा के माध्यम से देश भक्ति और धर्म के प्रति श्रद्धा-आस्था और निष्ठा का सचार। अग्रेज शासको द्वारा दी जा रही शिक्षा, हमारे नवयुवको को देश और धम तथा मानव मूल्यो से दूर ले जा रही थी। इस घृणित एव विषैली शिक्षा प्रणाली से छुटकारा दिलाने के लिए आर्य समाज के गौरव महात्मा हसराज ने किसी भी बडी नौकरी का प्रलोभन ठुकरा कर डी० ए० वी० आन्दोलन की नीव डाली। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों के अनुरूप देश और जाति को ऊचा उठाने वाली, धर्म मे आस्था उत्पन्न करने वाली शिक्षा का सूत्रपात किया। जब महात्मा जी ने अपना मन्तव्य एव उद्देश्य देवता स्वरूप भाई मुलखराज के सामने प्रकट किया तो वे भाई की ऐसी त्यागमयी पवित्र भावना को देख कर भावाभिभूत हो गए। उन्होंने सहर्ष कहा—'वह अपने वेतन मे से आधी राशि उनके निर्वाह के लिए दे दिया करेंगे।' धन्य है वह भाई जिसने भाई को ऐसा प्रोत्साहन दिया। धन्य है वह भाई जिसने त्याग और तपस्या का मार्ग चुना। धन्य हैं वे डी० ए० वी० के सचालक जिन्होंने महात्मा जी की लक्ष्यपूर्ति में पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

महात्मा जी के साथी अध्यापको ने भी इसी प्रकार के नि स्वार्थ, तप और त्याग का परिचय दिया। वह छोटा सा पौधा आज विशाल वट वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। हमारी इन्ही सस्थाओ ने शहीद भगत सिंह और रामप्रसाद बिस्मिल जैसे युवको का निर्माण किया।

महात्मा हसराज के सुपुत्र श्री बलराज को देश की स्वतन्त्रता से सम्बन्धित गतिविधियो के कारण, अग्रेज सरकार ने मृत्यु दण्ड दिया था। महात्मा हसराज एक बार गवर्नर को कहते, तो सब माफ हो जाता, पर वह सच्चरित्रता और स्वाभिमान का धनी उस दिन डी० ए० वी० कालेज भी न गया जब गवर्नर स्वय वहाँ पधारने वाले थे। उसने सोचा कि मेरे सहज स्वागत को अग्रेज अफसर कहीं अन्यथा न ले। वाह रे सत्यव्रती महात्मा हसराज।

महात्मा हसराज ने शिक्षा जगत में तो चमत्कार किया ही, वे सामाजिक कार्यों मे भी कभी पीछे नही रहे। आर्य समाज के वेद प्रचार के कार्यों में वे बढ़-चढ़ कर स्वय भी भाग लेते थे तथा सहयोगियो को भी सदा प्रेरित किया करते थे इस वर्ष प्रकृति का प्रकोप उत्तराखण्ड मे हुआ और आर्य समाज ने बढ़-चढ कर पीड़ितो की सहायता की। इसी प्रकार महात्मा हसराज के समय में बीकानेर में भयकर अकाल पडा था, उस समय महात्मा हसराज, लाला लाजपत राय, पडित लखपतराय वकील तथा अन्य अनेक महानुभावो ने गाव-गाव जाकर धन तथा अन्न का वितरण किया। उस समय मध्य प्रदेश व बिहार के छोटा नागपुर क्षेत्र मे भी भयकर अकाल पड़ा था, महात्मा जी तुरन्त वहा पहुचे। १८९९ का राजपूताना का अकाल, १९०७-०८ का अवध का अकाल तथा १९१८ का गढ़वाल का अकाल—महात्मा हसराज, लाला दीवानचन्द, प्रिंसिपल मेहरचन्द तथा पडित रलियाराम और महात्मा जी के सुपुत्र लाला बलराम ने रात दिन इन अकाल पीड़ितों की सहायता की। अनाथ बच्चो को लाकर पजाब और दिल्ली मे सचालित अनाथालयो में रखा गया और उनकी ऐसी परवरिश की जैसी शायद उनके मा-बाप भी न कर पाते।

स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हसराज का शिक्षा जगत मे योगदान सदैव स्वर्णाक्षरो मे अकित रहेगा। आज भी सरकार के बाद, शिक्षा मे सर्वाधिक बजट आर्य समाज द्वारा सचालित शिक्षा-सस्थाओ का है। प्रिंसिपल साईदास, लाला दीवानचन्द, प्रिंसिपल मेहरचन्द, श्री मेहरचन्द महाजन, श्री जीवनलाल कपूर, श्री गोवर्धन लाल दत्ता, श्री सूरजभान आदि महानुभावो ने शैक्षिक सामाजिक-प्रशासनिक जगत के विशिष्ट आयामो का सृजन किया।

महात्मा हसराज ने केरल के मालाबार क्षेत्र म जाकर साम्प्रदायिक सद्भाव की स्थापना मे विशेष सहयोग दिया था। पजाब से इतनी दूर जाकर उस समय काय करना वास्तव में एक अद्भुत दृढव्रती होने का साक्षात प्रमाण है।

महात्मा हसराज की मृत्यु पर पजाब असेम्बली के स्पीकर सर शाहबुद्दीन ने कहा था—'आज पजाब से शिक्षा की ज्योति जगाने वाला एक सन्त उठ गया। लाला लाजपतराय ने अपनी पुस्तक 'आर्यसमाज' मे लिखा है—'महर्षि दयानन्द के बाद महात्मा हसराज और महात्मा मुन्शीराम के बिना आर्य समाज असभव था। डी० ए० वी० कालेज तो लाला हसराज के बिना सर्वथा असम्भव ही था।'

महात्मा हसराज ने समाज सुधार का कटकाकीर्ण मार्ग, त्याग, तपस्या और बलिदान का मार्ग अपने लिए चुना था। उनका रास्ता ऊबड खाबड था, भयावना था और बलिदान मागता था। महात्मा हसराज ने यह बलिदान दिया। यही काय उन्हें 'महात्मा' के नाम से पुकारे जाने की सार्थकता को सिद्ध करता है। उनका कार्य युगो-युगो तक मानव के मार्ग को प्रशस्त एव आलोकित करता रहेगा। उनको स्मृति मे मेरी विनत श्रद्धांजलि।

—डा० धर्मपाल

सम्पादक के नाम पत्र

आर्य सन्देश के संग्रहणीय विशेषांक

आर्य सदेश का "ऋषि बोधाक एव स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती सयुक्ताक प्राप्त हुआ। विशेषाक वास्तव मे काफी सुन्दर एव आकर्षक था। इसमे सभी लेख शिक्षाप्रद एव प्रेरणादायक थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पठनीय रही। इस पत्र के विशेषाको की बडी धूम रहती है "देश विशेषाक काफी सग्रहणीय एव खोजपूर्ण सामग्री से परिपूर्ण होता है। यह भी अपनी शान के अनुरूप निकाला है। आर्य सन्देश का आर्य समाज की तमाम पत्र पत्रिकाओं मे अपना विशिष्ट स्थान है। इसके साथ साथ पत्र कृणवन्तोविश्वमायम् के नारे को साकार करने तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के मिशन को पूरा करने के लिये भी कृत सकल्प है। विशेषाक की सफलता के लिए बधाई।

रामकुमार आर्य मन्त्री आर्य युवक परिषद गोहाना (सोनीपत)

सुन्दर विशेषाक

'ऋषि बोधोत्सव एवम् स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती का सयुक्ताक मिला। आपने सयुक्ताक अति सुन्दर निकाला है आपको कोटि-कोटि बधाई। हरेक महानुभाव ने स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज के बारे मे बहुत सुन्दर लेख लिखा है। आर्य जनता को सही जीवनी पढ़न को मिली है। आर्य जनता इस से बोध ग्रहण करे। अन्य महानुभावों की समय समय पर जीवनी के रूप मे विशेष अक निकालोगे ऐसी आशा है।'

कान जी भाई चौधरी हिमनगर गुजरात

मै जिन का ऋणी हूं—

पत्रकार शिरोमणी आर्य नेता श्री महाशय कृष्ण जी

—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

जिस दिन महाशय कृष्ण जी का निधन हुआ, मैं उस प्रात काल आर्य नगर जिला हिसार के एक शिविर मे पहुचा। मैंने ही वहा जाकर यह दुखद समाचार सुनाया। यह समाचार सुनते ही आचार्य सत्यप्रिय बोले, अब उनका रिक्त स्थान पूरा न हो सकेगा।' कुछ दिन बाद प्रो० शरर मिले तो आपने भी कहा कि पत्रकार तो पैदा होते ही रहेंगे परन्तु महाशय कृष्ण जैसा निडर स्वाभिमानी पत्रकार अब देखने को न मिलेगा। श्रद्धेय श्री प० शान्ति प्रकाश जी उन्हीं दिनो मुझे मिले तो आपने कहा कि देश द्रोहियो की धज्जिया उड़ाने वाला और हिन्दू जाति के लिए सदा न्याय की पुकार करने वाला ऐसा जाति रक्षक पत्रकार अब मिलना असम्भव है।

यह बात पिछले दिनो प्रमाणित हो गई। मिर्जाई खलीफा गत दिनो भारत आया। हमारे दूरदर्शन व प्रेस ने उसको सिर पर उठा लिया। मिर्जाई देश का बटवारा करवाने मे सबसे आगे थे। सर जफरुल्ला ने ही तो कमिशन के सामने पाकिस्तान का केश पेश किया था। खलीफा महमूद व उसके भाई मिर्जा बशीर अहमद एम० ए० ने पजाब के बटवारे के बारे कई ट्रैक्ट लिखे। पूरा पजाब पाकिस्तान के लिए मागा। फिर एक एक गाव की जन सख्या के आधार पर पाकिस्तान मे मिलने का अधिकार मागा। सिखो को पाकिस्तान मे मिलने की प्रेरणा दी। अपनी पुस्तको मे गाधी जी व नेहरू जी को भी साम्प्रदायिक बताया। तिरगे के इक इक तार इस्लाम के लिए एक चुनौती बता बता कर मुसलमानों को उकसाया। इनमे से अधिकाश बातें मैंने अपनी पुस्तक रक्तसाक्षी प० लेखराम मे दी हैं।

आज महाशय कृष्ण होते तो देश वासियों को बताते कि मिर्जाई जमात ने कैसे देश की हत्या में योगदान दिया है। इतिहास की पुस्तको मे आ चुका है कि सर लिजर हयात को कादियां लाया गया और उससे त्याग पत्र दिलवा कर देश के विभाजन का रास्ता मिर्जाईयों ने साफ करवाया। आज मिर्जा नासिर शान्ति, प्रेम व भाईचारे का उपदेश देता है। धरती लहूलुहान हो गई तो इस लिए कि मिर्जाई अग्रेज के टोडी होने में गौरव अनुभव करते रहे फिर देश के विभाजन के लिए बढ चढ कर आगे आए। महाशय कृष्ण सा प्रबुद्ध पत्रकार कोई होता तो सरकार से पूछता कि स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान पर्व व काकोरी के शहीदो के बलिदान पर्व तो दूरदर्शन भूल गया—बार-बार मिर्जा नासिर अहमद का प्रचार होता रहा। किस लिए ?

श्री महाशय कृष्ण की लेखनी में एक जादू था। वे बहुत सुन्दर शब्दो मे एक दो वाक्यो में बडे मर्म की बात लिखने में सिद्धहस्त थे। लाला लाजपतराय को १९०७ मे जब देश निकाला मिला तो आपने लिखा कि कि सरकार किसी के सम्मान के लिए उसे खताब (Title) देती है और दण्ड के लिए अताब (Punisment) देती है। होता यह है कि जिसको भी सरकार अताब (दण्ड) देती है उसी का लोगो मे सम्मान बढ़ जाता है। लाला लाजपतराय को अताब दिया गया है। यह अताब ही उनको जन जन में लोक प्रिय बना रहा है। इससे सुन्दर शब्दो में कोई सरकार पर क्या चोट मार सकता था। और इससे बढिया शब्दो मे लाला जी पर क्या लिखा जा सकता था ?

इसके ठीक एक वर्ष बाद बम्बई मे ज्यूरी का निर्णय सुन कर स्वय लोकमान्य तिलक ने जो शब्द कहे थे उनका भाव भी तो महाशय कृष्ण के 'अताब व खिताब' से मिलता जुलता था।

सन् १९३१ मे राजगुरु, सुखदेव व भगत सिह की त्रिमूर्ति का महा बलिदान हुआ। श्री वीरेन्द्र के कारण तब महाशय परिवार स्वय सरकार के अताब का निशाना बना हुआ था। फिर भी महाशय जी शहीदों व उनके परिवारो का डट कर पक्ष लेते रहे। कुछ दिन पूर्व मैंने उनके उस काल के तीन सम्पादकीय नोटस या समाचार टिप्पणियां पढी जो उनकी निर्भीकता व देश भक्ति का ज्वलन्त प्रमाण है। सुखदेव शहीद की बहिन को लायलपुर के सरकारी स्कूल से निकाल दिया गया। कारण उसके परिवार की देश सेवा का था। महाशय जी ने बडी निडरता से यह समाचार छाप कर सरकार को नगा किया।

गाव में बम्ब फट गया तो बाबा अर्जुन सिह व उनके परिवार के एक सदस्य की नम्बरदार ने थाने मे रिपोट दर्ज करवा दी। पुलिस व गुप्तचर विभाग जाच के लिए गये तो वीर भगत सिह के बाबा के विरुद्ध एक भी व्यक्ति ने साक्षी न दी। उलटो यह मांग की गई कि रिपोर्ट झूठी है अत नम्बरदार को दण्ड दिया जाये। यह मांग भी महाशय कृष्ण जी ने उठा ली।

मार्शल-ला के दिनों मे कई नेता जेल में डाल दिये गये। इनमें अधिकाश आर्य समाजी थे। आर्य समाज के तो अनेक साधु, प्रचारक व महात्मा भी बन्दी बना लिये गये थे। महाशय कृष्ण तो अपनी लेखनी के कारण कारागार मे गए ही, शान्त स्वामी अनुभवानन्द व चन्द्र कवि आर्योपदेशक भी बन्दी बना लिए गये। उस समय के नेताओं की जेल बीती पुस्तक छपी थी। उसमें महाशय जी के बारे मे लिखा है कि यह अत्यधिक स्वाभिमानी हैं इस लिए जेल के अधिकारी इनसे खीजे ही रहते हैं। महाशय जी सलाम नही बजाते थे।

देश विभाजन से पूव Panjab's who is who पजाब के नामी लोगो पर एक पुस्तक छपी। उसमे भी लेखक लिखता है कि महाशय कृष्ण देश के सर्वाधिक स्वाभिमानी पत्रकार हैं।

महाशय जी ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के निधन पर अपने सम्पादकीय मे उन्हें अपना Friend Philosopher and Guide मित्र, गुरु व मार्गदर्शक लिखा था। उस सम्पादकीय मे आर्य समाज के आने वाले नेताओं के बारे में एक कवि की एक पक्ति दी थी। मुझे वह सब याद है परन्तु मैं उसे यहां नही देता परन्तु महाशय जी का कथन आज सत्य सिद्ध हो रहा है। महाशय जी ने एक अन्य लेख में लिखा था अब आर्य समाज 'बौने दिमागो' के हाथ मे आ गया है। यह बात कई एक को चुभी होगी परन्तु सितम्बर मास मे जब मैं केरल गया तो हमारे कार्यालय में देश के सबसे बड़े दैनिक मलयालम मनोरमा के प्रधान सम्पादक आए तो मैंने गद्गद् होकर कहा कि आज मुझे महाशय कृष्ण याद आ रहे हैं। महाशय जी के पश्चात् भी इतना बड़ा पत्रकार हमारे बीच देखा गया है। "मातृ भूमि" भी मलयालम का एक प्रमुख दैनिक है उसके भी तीन सम्पादक आए। यह बात मैंने केरल से आकर अपने लेखो मे दी कि इस दृश्य को देखकर मुझे पत्रकार शिरोमणि महाशय कृष्ण जी की याद आ गई।

महाशय जी को आर्य समाज से कितना प्यार था इसका पता इस बात से लगा लें कि प० मेहरचन्द शर्मा जी सम्पादक आर्यवीर का सभा की नीतियों के सबध मे श्री महाशय जी से बडा मतभेद रहता था परन्तु पण्डित जी के रुग्ण होने पर महाशय जी देहली से जालन्धर आए और हस्पताल मे पण्डित जी का पता करने गये। बिना किसी के कहे चुपचाप इलाज के लिये कुछ आर्थिक सहयोग भी करके आए। यही आर्यत्व है। यही बड़प्पन है। यही तब के व अब के आर्य नेताओ मे बडा भेद है।

मैं लेखराम नगर (कादिया) से नरवाना आर्य स्कूल मे चला गया। एक दिन महाशय जी का एक पत्र मुझे मिला। मैं कक्षा मे पढ़ा रहा था। उसमे लिखा था कि तुम जैसे हो एम० ए० करो। आर्य समाज को विशेष योग्यता के व्यक्तियो की आवश्यकता है। मैंने पत्र पढते ही एम० ए० करने का दृढ निश्चय कर लिया। यह पत्र अभी मेरे पास सुरक्षित है। मैं आज कुछ समाज सेवा के योग्य बन पाया हू तो इसके लिये मैं स्वय को महाशय जी का ऋणी भी पाता हू। उनके उस पत्र ने मेरे जीवन को एक नई दिशा दे दी।

मथुरा दीक्षा शताब्दी पर सड़क के किनारे एक कार खड़ी थी। उसमे महाशय जी को देखकर मैं भाग कर उनके पास गया। नमस्ते की। तब मैं हिसार मे एम० ए० प्रथम वर्ष मे पढता था। वयोवृद्ध नेता ने छूटते पूछा, 'हिसार से आ रहे हो, नरवाना से या कादिया से ?"

मैंने कहा, 'हिसार से।'

मेरे साथ कुछ युवक और थे। एक वजीराबाद के जन्मा युवक था। उसने पूछा, 'यह कौन सज्जन थे ?"

(शेष पृष्ठ ७ पर)

जामा मस्जिद क्षेत्र से हिन्दुओं का पलायन

स्थिति नहीं सुधरी तो 'मिनी पाकिस्तान' बनेगा

नई दिल्ली, ८ अप्रैल। आंकड़े बता रहे हैं कि यदि जामा मस्जिद इलाके से हिन्दुओं का पलायन इसी तरह जारी रहा तो आने वाले दशक में यह इलाका पूरी तरह से 'मिनी पाकिस्तान' बन जायेगा। इस इलाके में दो दशक पूर्व हिन्दुओं की जो आबादी थी आज उसकी एक तिहाई भी यहां नहीं बची है। इस सनसनीखेज खाबा हालात से सत्तारूढ़ गैर जानकार बना हुआ है। सबसे बड़ी हैरत की बात तो यह है हिन्दू हितों की बात करने वाली पार्टी भाजपा भी खामोश है।

सरकारी आंकड़े चीख-चीख कर कह रहे हैं कि १९८६ के दंगों के बाद जामा मस्जिद इलाके से हिन्दुओं का पलायन जारी है। दंगों के समय इस इलाके में हिन्दुओं की आबादी तीस फीसदी थी। आज इस आबादी का सिर्फ ७ या ८ फीसदी ही शेष बचा है। माना जा रहा है कि जामा मस्जिद इलाके से ९२-९३ फीसदी हिन्दू अपने मकान बेच कर इलाके से पलायन कर चुके हैं।

मकानों को बहुत महंगी दरों से खरीदा जा रहा है। जो मकान पहले ५ से ७ लाख रुपये में बिकते थे, अब वही मकान १८ से २५ लाख रुपये के बीच में बिक रहे हैं। लेकिन रजिस्ट्रार के पंजीयन में यह कीमत ३५ हजार से लेकर ५० हजार रुपए तक दर्ज कराई जाती है। इतने महंगे दामों पर अल्प संख्यक समुदाय कैसे मकान खरीद रहा है? यह सवाल गुप्तचर संस्थाओं की खोज का दिलचस्प विषय हो सकता है। गैर सरकारी सूत्र इस बारे में कहते हैं कि इसके लिए बाकायदा अरब देशों से पैसा आता है।

गौरतलब बात यह है कि वर्ष १९८३ में गली मटियामहल के कुछ वरिष्ठ मुस्लिम नेताओं की एक गुप्त बैठक हुई थी जिसमें फैसला किया गया था कि पहली खेप में जामा मस्जिद में रहने वाले हिन्दुओं के मकानों को जिस भी कीमत पर मिले, खरीद लिया जाए। ताकि इसे इस्लामिक क्षेत्र घोषित किया जा सके। दूसरी खेप में कसाबपुरा (सदर बाजार), लालकुआं क्षेत्र, शिनगर तथा रणजीत नगर को निशाना बनाया जाए।

पलायन जारी है। सदर बाजार, नई सड़क तथा चावड़ी बाजार के व्यापार को भी अल्पसंख्यक हाथों में दबोचने की योजना है। इन बाजारों की एक एक दुकानों पर हर माह करोड़ों और अरबों का व्यापार होता है। सूत्र कह रहे हैं कि हिन्दुओं से उनके रोजगार को छीन कर उन्हें पलायन करने के लिए मजबूर किए जाने की योजना पर तेजी से काम किया जा रहा है।

सूत्रों के मुताबिक इस समय गली पहाड़ी इमली में रहने वाले हिन्दुओं को पलायन करने के लिए मजबूर किया जा रहा है। वसीयतों को दरकिनार करके तेजी से मकान खरीदे जा रहे हैं। पलायन कर चुके परिवारों की संख्या देखिए—

गली श्यामलाल, परिवार संख्या ७५, शेष ३। गुड़िया गली, परिवार संख्या ७७, शेष ०। मटियामहल, परिवार संख्या २०, शेष १। माइयों का कटरा, परिवार संख्या ५०, शेष ३। (फाटक दीवाना हाऊस) पहाड़ी इमली, परिवार संख्या १४०, शेष ८। टोकरीवालान, परिवार संख्या १००, शेष ४। गली अन्धेरी, परिवार संख्या ५, शेष ३। कल्याणपुरा, परिवार संख्या ३१, शेष ८।

इन स्थानों या गलियों में पहले इतने परिवार रहते थे, जो लगातार घट रहे हैं। अरब पैसे के बल पर जामा मस्जिद इलाके को 'मिन्नी पाकिस्तान' बनाए जाने की साजिश 'चर्चा ए-आम' है और सरकार है कि खामोशी से राजधानी में शोले भड़कने का इन्तजार कर रही है। सूत्रों का मानना है कि भवनों को महंगी कीमत में बाद में खरीदा जाता है—पहले तो दहशत से ही पलायन के लिए मजबूर किया जाता है। साभार—दैनिक पब्लिक एशिया

प्रतिभावान छात्र पुरस्कृत

डा० रामप्रकाश, विज्ञान व तकनीकी शिक्षा राज्य मन्त्री हरयाणा ने आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा ४ अप्रैल, ९२ को आयोजित ११७वें आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह में दस मेधावी छात्र छात्राओं को अमर शहीद मेजर (डा०) अश्विनी कुमार कण्व स्वर्णपदक शौर्य पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया—सुश्री नलिनी चावला, ममता मित्तल, नीशू कुमार, दीपिका गुलाटी, मोनिका शर्मा, सुरभि विज, विशाल मलिक, प्रवीण कुमार, विकास गुप्त एवं विभु आर्य।

अजमेर विश्वविद्यालय का दयानन्द विश्वविद्यालय नाम रखा जायेगा

राजस्थान सरकार के गृह मन्त्री श्री दिग्विजयसिंह ने दयानन्द बाल निकेतन के वार्षिकोत्सव में दयानन्द महाविद्यालय के सभागार में विगत मास मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि अजमेर विश्वविद्यालय का नाम दयानन्द सरस्वती के नाम पर ही रखा जायेगा।

एल्ट सेन्टर का नाम महर्षि दयानन्द भवन रखा जाये

गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश के १०१ निवासियों ने एक हस्ताक्षर युक्त ज्ञापन देकर मण्डल अभियन्ता (प्र०) एल्ट सेन्टर गाजियाबाद से यह मांग की है कि एल्ट सेन्टर के बहुउद्देशीय हाल का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती भवन' रखा जाये। युग पुरुष महर्षि दयानन्द द्वारा समाज राष्ट्र व मानव जाति के लिए की गई बहुमूल्य सेवाओं को ध्यान में रखते हुए यह अनुरोध किया गया है। ज्ञापन दाताओं ने आगे कहा है कि यदि यह उपयुक्त न लगे तो स्वामी विवेकानन्द हाल या सरस्वती भवन नाम रखा जा सकता है।

छठा अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद-२७ द्वारा छठा अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष १५ मई १९९२ से १५ जून १९९२ तक तपोवन आश्रम देहरादून में आयोजित होगा।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर्मकाण्ड के मर्मज्ञ वैदिक मनीषी आचार्य वेद भूषण स्वयं प्रशिक्षण देंगे।

प्रतिष्ठान ने तीन सौ से अधिक पुरोहितों को अब तक प्रशिक्षित कर दिया है। अगले वर्ष इस शिविर को नेपाल में लगने की सम्भावना है। शिविर में भाग लेने के इच्छुक प्रशिक्षणार्थी चार रुपये के पोस्ट के टिकट भेज कर आवेदन पत्र एवं नियम प्राप्त कर सकते हैं। आवेदन पत्र २५ अप्रैल ९२ तक हैदराबाद कार्यालय में निम्न पते पर पहुंच जाने चाहिए।

पता—अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद-५०००२७]

—सत्यानन्द आर्य

ऋषि जन्मोत्सव पर दूरदर्शन में परिचर्चा

आदरणीय डा० धर्मपाल जी सादर नमस्ते।

विशेष समाचार यह है कि हमें यह जान कर व देख कर बेहद प्रसन्नता हो रही है कि आपने दिनांक १३-२-९२ को सायं सात पचास पर दूरदर्शन विभाग द्वारा आयोजित ऋषि जन्मोत्सव पर परिचर्चा में भाग लिया। आपने केवल मात्र १५ मिनट की परिचर्चा में लाखों दर्शकों के समक्ष आर्य समाज का सार गर्भित इतिहास प्रदर्शित किया। आपकी समस्त वार्ता तार्किक व चिन्तनीय थी।

हमारी आर्य युवा विकास परिषद् उपरोक्त कार्यक्रम को देख कर बड़ा गर्व महसूस कर रही है, इस हेतु हम आपका हार्दिक धन्यवाद प्रकट करते हैं।

आदरणीय धर्मपाल जी हमने ऋषि जन्मोत्सव के अवसर पर प्रधानमन्त्री श्री नरसिम्हाराव सूचना व प्रसारण मन्त्री, आकाशवाणी व दूरदर्शन विभाग को पत्र लिख कर मांग की थी कि, इस शुभ अवसर पर महान समाज सुधारक के जन्म दिवस पर राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया जाये। एवं दूरदर्शन व आकाशवाणी पर विशेष कार्यक्रम दिखाये जायें। हम उपरोक्त कार्यक्रम दिखाने पर दूरदर्शन विभाग का आभार प्रकट करते हैं।

अन्त में हमें आप जैसे महापुरुषों पर गर्व है कि आप आर्य समाज की चतुर्दिक उन्नति हेतु दृढ़ संकल्पित हैं। हम ईश्वर से आपकी दीर्घायु की कामना करते हैं। शुभ शुभ! सधन्यवाद सहित।

डा० जसबीर आर्य अध्यक्ष

निर्भीक व यशस्वी पत्रकार पं० क्षितीश वेदालंकार सम्मानित

आर्य समाज दीवान हाल के १०७वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर २८ मार्च, ९२ को लालकिला के ऐतिहासिक मैदान में आर्य समाज के यशस्वी पत्रकार व विद्वान लेखक प० क्षितीश कुमार जी वेदालकार को सम्मानित किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने प० वेदालकार को शाल ओढाकर, आचार्य यशपाल सुधांशु जी ने सम्मान राशि तथा दीवन हाल के प्रधान श्री मूलचन्द गुप्त ने अभिनन्दन-पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

उल्लेखनीय है कि १६ सितम्बर, १९१६ को जन्मे श्री क्षितीश कुमार जी ने बाल्यकाल से ही अपनी प्रतिभा का परिचय देना प्रारम्भ कर दिया था। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मे सन् १९३३ मे महात्मा गाधी को मान पत्र भेंट करने का सौभाग्य आपको ही मिला था। आर्य समाज दीवान हाल (चावडी बाजार) की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर ९वी कक्षा के मेधावी छात्र क्षितीश ने संस्कृत मे धारा प्रवाह भाषण देकर सम्पूर्ण विद्वत मण्डली को गद्-गद् कर दिया था।

महान स्वतन्त्रता सेनानी प० क्षितीश जी ने सन् १९३९ के आर्य सत्याग्रह हैदराबाद के प्रथम जत्थे मे शामिल होकर कठोर कारावास को भोगा। केवल आप ही एक मात्र ऐसे स्नातक रहे हैं जिन्हे बिना परीक्षा दिये दीक्षान्त समारोह मे सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला था।

प्रख्यात आर्य साहित्यकार प० क्षितीश जी ने ३० से अधिक साहित्यिक कृतियों का प्रणयन व सम्पादन किया है। एक सिद्ध हस्त लेखक, कवि व सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान प० वेदालकार जी हिन्दी, संस्कृत, मराठी, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं के मर्मज्ञ भी हैं।

चिर यायावर, प० क्षितीश जी ने काश्मीर से कन्याकुमारी तथा द्वारिका से मणिपुर तक की यात्राओं के साथ २ नेपाल, बगलादेश, मारीशस, नैरोबी, लन्दन आदि देशो का भी भ्रमण किया है।

निष्ठावान सामाजिक कार्यकर्त्ता प० वेदालकार जी ने अनेक वर्षों तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, भारतीय साहित्यकार सघ, तथा कई सस्थाओं मे अधिकारी/कर्मठ कार्यकर्त्ता के रूप मे रहकर बहुमूल्य सेवा की है।

निर्भीक पत्रकार प० क्षितीश कुमार ने 'अर्जुन' मे प० इन्द्र विद्यावाचस्पति जी की छत्रछाया में पत्रकारिता का जीवन शुरू किया और लोकप्रिय राष्ट्रीय पत्र दैनिक 'हिन्दुस्तान' से सहायक सम्पादक के रूप मे सेवा निवृत्त हुए। तत्पश्चात् इस मिशनरी सम्पादक ने आर्य जगत को अपने कठोर परिश्रम व सूझबूझ के बल पर प्रसिद्धि के शिखर तक पहुचा दिया। आपके सम्पादकीय अग्रलेख एक नयी चेतना जागृत करते हैं।

ओजस्वी वक्ता प० क्षितीश कुमार जी ने अनेक वर्षों तक घूम-घूम कर वैदिक धर्म के प्रचार का भी अभूतपूर्व कार्य किया है।

स्मरणीय है कि प० क्षितीश जी अनेक धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक सस्थाओं द्वारा असख्य पुरस्कारो से सम्मानित किये जा चुके हैं।

उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर सामाजिक व्यवस्था सम्मेलन भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम मे उपस्थित अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान आचार्य यशपाल सुधांशु, आर्य नेता श्री सूर्यदेव, डा० धर्मपाल, श्री मूलचन्द गुप्त, सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार आदि सभी वक्ताओ ने प० क्षितीश जी वेदालकार के सुखद निरोग व कि उनके सम्मान ग्रहण करने से हम सभी धन्य हुए दीर्घायु होने की कामना करते हुए उन्हे आर्य समाज का गौरव बताया और कहा हैं। प० क्षितीश जी ने अश्रु पूरित नेत्रो से भाव विभोर होकर अपने सम्मान के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि मैं ऋषि दयानन्द के ऋण से उऋण तो नहीं हो सकता परन्तु समर्पित भाव से आर्य समाज की सेवा मे सदैव सलग्न रहूगा।

आर्य वीर दल चरित्रवान युवक बनाने का कारखाना है

आर्यवीर दल द्वारा सचालित शाखाओ व शिविरो मे युवको को आर्य समाज के सिद्धान्तो व मन्तव्यो को जीवन मे उतारने के लिए प्रेरित किया जाता है। आर्यवीरो को स्वाध्याय सन्ध्या, हवन, आदि भी सिखाया जाता है। जहा-जहा आर्यवीर सक्रिय है वहा-वहा आर्य समाज भी सक्रिय है। आर्यवीर दल ऐसा कारखाना है जहाँ अनुशासित, चरित्रवान, बलिष्ठ व आर्य समाज की विचारधारा के प्रचारक युवकों का निर्माण किया जाता है। अत प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर में एक-एक आर्यवीर दल की स्थापना की जानी चाहिए।

पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' का सम्मान

आर्य समाज के प्रेरणा स्तम्भ पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द्र जी 'सुमन' का आर्य समाज दीवान हाल के १०७वें वार्षिकोत्सव पर २७ मार्च को ऐतिहासिक लालकिला मैदान मे आयोजित एक भव्य कवि सम्मेलन में अभिनन्दन किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने 'सुमन' जी को शाल ओढ़ा कर, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने सम्मान राशि तथा दीवान हाल समाज के प्रधान श्री मूलचन्द गुप्त ने अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

उल्लेखनीय है कि सुमन' जी का जन्म गाजियाबाद जनपद के बाबूगढ ग्राम में १६ सितम्बर, १९१६ को एक आर्य परिवार मे हुआ था और ज्वालापुर महाविद्यालय की शिक्षा दीक्षा ने आपको तपोनिष्ठ वैदिक विद्वान बनाया।

सुमन' जी के हृदय मे देश-प्रेम की भावना कूट कूट कर भरी थी। स्वतन्त्रता सेनानी सुमन जी सन् १९४० में हिन्दी मिलाप में कार्य करते हुए आजादी की लडाई मे कूद पडे। अंग्रेजी सरकार ने १९४३ में आपके लेखों व कविताओं को आपत्तिजनक करार देते हुए उन्हें जब्त करने के आदेश दिए एवं आपको नजरबन्द कर दिया।

लब्ध प्रतिष्ठ साहित्य सेवी 'सुमन जी ने ३० से अधिक मौलिक ग्रन्थो की रचना कर एव अनेक महत्वपूर्ण पत्र पत्रिकाओ का सम्पादन कर हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि की। दिवगत हिन्दी सेवी' सदर्भ ग्रन्थ का दस खण्डो में प्रणयन कर आपने अभूतपूर्व कार्य किया है।

१५० से अधिक विद्वानो को साहित्यिक शोध कार्य में निर्देशन देकर आपने अमूल्य सेवा भी की है।

सस्कारी तपोनिष्ट, सुप्रसिद्ध कवि, विद्वान लेखक आचार्य सुमन जी को पूर्व राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन, उपराष्ट्रपति डा० शकरदयाल शर्मा द्वारा साहित्य सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया जा चुका है। सूचना व प्रसारण मन्त्रालय द्वारा भारतेन्दु पुरस्कार प्रदान किया गया एव केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय द्वारा सीनियर फेलोशिप दी गई है। आपको अनेक सस्थाओ ने पुरस्कृत व सम्मानित किया है, गणना असम्भव है।

इस अवसर पर आयोजित विराट कवि सम्मेलन का सयोजन डा० सारस्वत मोहन मनीषी ने किया। डा० मनीषी ने सुमन' जी को आर्य समाज का उज्वल भाल बताया। सभी वक्ताओ व कवियो ने 'सुमन' जी के स्वस्थ, सुखद व दीर्घ जीवन की कामना की और कहा कि उन्हे सम्मानित कर हम स्वयं गौरवान्वित हुए हैं। आचार्य क्षेमचन्द्र 'सुमन' ने अपने सम्मान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य समाज का तो मेरे ऊपर बहुत ऋण है उसे उतार पाना सम्भव नहीं है।

शोक समाचार

मास्टर रामेश्वर दास नहीं रहे

आर्य समाज तिमारपुर मन्दिर के पूर्व प्रधान मास्टर रामेश्वर नहीं रहे। शनिवार, २८ मार्च, ९२ को हिन्दूराव हस्पताल के नर्सिग होम मे रात्रि ११ बजे उनका निधन हो गया। २९ मार्च, को निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से उनका अन्त्येष्टि सस्कार किया गया। अनेक आर्य समाजो सस्थाओ के प्रतिनिधियो व भारी सख्या मे उपस्थित लोगो ने उन्हें अन्तिम श्रद्धाजलि दी। शोक सतप्त परिवार मे उनकी धर्म पत्नी श्रीमती गोमती देवी, पाच पुत्र व दो पुत्रिया हैं।

मास्टर रामेश्वर दास का जन्म २५ दिसम्बर, १९१५ को गाव पूठ खुर्द बवाना मे हुआ था। वे राजकीय आदर्श स्कूल लुडलो केसल न० २ से सेवा निवृत्त हुए थे। आर्य समाज मन्दिर तिमारपुर के सस्थापको में एक थे। समाज मन्दिर मे स्कूल की स्थापना, सचालन एव समाज मे कई महत्वपूर्ण पदो पर रहते हुए अनेक वर्षों तक उन्होने सेवा की। वे आर्यवीर दल से भी जुडे हुए थे। वे दैनिक यज्ञ, स्वाध्याय व सामाजिक कार्यों मे बढ चढ कर भाग लेते थे।

३१ मार्च, ९२ को तिमारपुर में रस्म पगडी व शान्ति यज्ञ के पश्चात शोक सभा मे उन्हे अनेक सस्थाओ की ओर से भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गयी। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनके शोक सतप्त परिवार को दुःख सहने की शक्ति एव उनकी दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

(पृष्ट ४ का शेष)

मैंने कहा, इस बुढापे में तेरे ताऊ जी के अतिरिक्त और कौन हो सकता है जिसकी स्मृति इतनी हो कि यह पूछे नरवाना से आये हो कादियां से या हिसार से। इन्हें आर्य समाज के एक सेवक के बारे इतनी जानकारी है कि इसका सम्बन्ध इन तीन नगरों से है। मेरा उत्तर सुन कर वह युवक झुंझला कर बोला कि हमें क्यो नहीं बतलाया कि यह महाशय कृष्ण जी हैं। मैंने समझा कि आपने उनको अखबारो में देख रखा है अत आप यह मानते होगे परन्तु कार मे बैठे महाशय जी को वह युवक पहचान न सके। इतना आकर्षण था उस युग के नेताओं मे।

मेरा एक लेख देहली प्रताप मे छपा तब मैं पुलिस की यातनायें सह कर छूटा ही था। अभियोग अभी चल रहा था। मेरा लेख बडा गर्म था। नरवाना के श्री कृष्ण चन्द्र महाशय जी से देहली मिले तो महाशय जी ने उन्हे कहा कि मेरा ओर से राजेन्द्र से कहना कि वह इतने कष्ट भोग कर आया है अभी इतने जोशीले लेख न दिया करें। कुछ ऐसा भाव था, महाशय जी का। मुझे भी कई बार महाशय जी की नीतिया अखरी थी। मैं भी उनकी नीतिया का एक वर्कर के रूप में कभी विरोध भी किया करता था परन्तु मैं उनकी लेखनी पर सदा मुग्ध रहा। मैं उनका भक्त व प्रशसक भी रहा। उनके प्यार को आज याद करता हू तो मैं अनायास कह उठता हू—

'जब याद तुम्हारी आती है दिल धीरे धीरे रोता है।

गत दो तीन वर्षों मे देश के विभिन्न भागो मे आर्य जगत् ने मेरा कई बार सम्मान किया है। मेने हर बार खुले हृदय से यह कहा है कि यह मेरा सम्मान नही यह प० लेखराम जी, आचार्य चमूपति, महाशय कृष्ण जी, पूज्य उपाध्याय जी, स्वामी स्वतन्त्रा नन्द जी तथा स्वामी वेदानन्द जी का सम्मान है। मेरी लेखनी पर महाशय जी का क्या प्रभाव है या मैंने लेखक के रूप में अपने पूज्य नेता से क्या सीखा यह मैं विस्तार से किसी आगामी लेख में दूगा। —साभार आर्य मर्यादा

नव वर्ष अभिनन्दन

नव विक्रमी सम्वत् २०४९ एव ११७वें आर्य समाज स्थापना दिवस पर आर्य सन्देश के कृपालु पाठकों, विद्वान लेखको विज्ञापन दाताओ व सभी आर्य महानुभावो को हार्दिक शुभ कामनायें।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R.N No 32387/77 Posted at N D P S O on 16-17-4-1992 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल-११०२४/९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) १३९/९२
साप्ताहिक "आर्यसन्देश" १९ अप्रैल, १९९२

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मे प्रवेश आरम्भ

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ सराय ख्वाजा(फरीदाबाद) मे चौथी से नवमी कक्षा तक प्रवेश आरम्भ है। अन्तिम तिथि १५ मई है। पाठ्यक्रम सी बी एस ई गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त है। विद्यालय के साथ छात्रावास की व्यवस्था है।

प्रिंसिपल

फोन ८-२७५ ९८ गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ नई दिल्ली ४४

आर्य समाज बांकनेर (दिल्ली) का ४१वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बाकनेर का ४१वा वार्षिकोत्सव २९ फरवरी व १ मार्च १९९२ को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस शुभ अवसर पर स्वामी अग्निदेव 'भीष्म', स्वामी ओतानन्द, प० देवेन्द्रनाथ शास्त्री एम० ए० पी० एच डी०, डा० सराब खान दिल्ली विश्वविद्या०, प० महेन्द्रकुमार शास्त्री हरियाणवी कवि प्रि० कुन्दनलाल हमदद प० आशानन्द भजनीक के मनोहर एव प्रभावशाली भजन एव उपदेशो से ग्रामीण जनता मन्त्र मुग्ध हो गई। श्री सुनीलकुमार सक्सेना उप-निदेशक (खेल) दिल्ली प्रशासन ने खेल प्रतियोगिताओ का उद्घाटन किया। श्री वीरेन्द्र सिंह विकास आयुक्त दिल्ली प्रशासन के कर कमलो द्वारा विजेता खिलाड़ियो को पुरस्कार वितरित किए गये। श्री विरेन्द्र सिंह ने उदीयमान खिलाड़ियो की सुविधा के लिए हर सम्भव सहायता देने का वचन दिया। उन्होने पहले ही ग्राम बांकनेर के लिए स्वीकृत मिनी स्टेडियम की जानकारी दी। उन्होने जनता का नैतिक स्तर ऊचा उठाये जाने पर बल दिया।

इस अवसर पर आयोजित वालीबाल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान ईगल क्लब सोनीपत तथा सन्त क्लब कुण्डली ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। कबड्डी मे खत्री स्पोर्टस बाकनेर विजेता व शक्ति स्पोर्टस क्लब बरेला उप विजेता रहे। कुश्ती वजन मे जोगिन्द्र, मुकेश, ओमप्रकाश, अनिल, कुलदीप, अशोक, मुकेश, राजेश जयपाल, सजय, कर्मवीर, वीरेन्द्र, प्रताप, राजेश और राजसिंह प्रथम स्थान पर तथा अजय, सतीश, अनूप विजयपाल, पवन, अनिल, मुकेश इन्द्रजीत सजय, प्रवीण, विजयपाल विद्यानन्द, राजेन्द्र, भगत माईवाला तथा सुखबीर द्वितीय स्थान पर रहे। दौड राकेश राठी ने जीती। निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम सुशीला रानी, द्वितीय मीनक्षी तथा भूपेन्द्र सिंह आर्य तृतीय स्थान पर रहे। भाषण प्रतियोगिता मे हीरालाल खत्री, मीनाक्षी व राजीव रावत क्रमश प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे। ग्राम बाकनेर के ५७ उदीयमान खिलाड़ियो ने कुश्ती कबड्डी, वालीबाल, फुटबाल, हाकी, योगासन में प्रान्तीय तथा राष्ट्रीय स्तर पर सराहनीय प्रदर्शन किया। आर्य समाज बाकनेर ने इन खिलाड़ियो तथा इनके अभिभावकों का अभिनन्दन किया। कुश्ती में जोगिन्द्र व जयप्रकाश ने स्वर्णपदक अशोक कुमार ने रजत पदक तथा अनिल कुमार ने राष्ट्रीय स्तर पर कांस्य पदक प्राप्त किए। कबड्डी मे अनिल कुमार को राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया। पहलवान खिलाड़ियो को प्रशिक्षण देने का सराहनीय कार्य पहलवान आनन्द प्रकाश एन० आई० एस (कुश्ती) ने किया। उत्सव के समापन पर श्री मांगेराम आर्य प्रधान ने सभी को हार्दिक धन्यवाद दिया तथा भविष्य में आयोजित सभी कार्यक्रमो में सहयोग की अपील की।

मेहरलाल पवार मन्त्री

सेवा में—

पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ा विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उ प्र)

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी०(एल१०२४/१-०९२),

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

वर्ष १५, अंक २२ रविवार २६ अप्रैल १९९२ विक्रमी सम्वत् २०४९ दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक—२५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

कुम्भ मेले में वेद प्रचार शिविर का उद्घाटन

गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाये

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

उज्जैन गाय का दूध अमृत के समान है। न केवल गाय का घी दही मक्खन आदि अत्यन्त लाभकारी है बल्कि गाय का दूध गोबर आदि भी काम आता है और औषधियो के उत्पादन मे सहायक है, अत सारे देश में गोहत्या बन्द की जाए और गाय को एक राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाय। ये उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने १७ अप्रैल को सिंहस्थ कुम्भ मेले के अवसर पर वैदिक धर्म शिविर का उद्घाटन करते हुए कहे। इस अवसर पर गोरक्षा सम्मेलन भी आयोजित किया गया। इस कुम्भ मेले का आयोजन मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा तथा मध्य विदर्भ सभा के संयुक्त तत्वावधान मे किया गया था।

स्वामी जी ने इस अवसर पर यह भी बताया कि दिल्ली में गाजीपुर मे गौ संवर्धन दुग्ध केन्द्र को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के दुग्ध केन्द्र के रूप में विकसित किया जायेगा। यहाँ भारतीय व विदेशी भाषाओ के विद्वान वैदिक धर्म के प्रचारार्थ तैयार करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल भी स्थापित किया जायेगा।

गोवंश का लदान अन्य राज्यो को बन्द किया जाये

इस सम्मेलन मे सार्वदेशिक न्याय सभा के संयोजक श्री विमल वधावन ने यह प्रस्ताव भी रखा कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद ४८ के अन्तर्गत जिन राज्यों मे गोहत्या बन्दी कानून लागू है वहाँ से गाय व गोवंश का लदान बम्बई कलकत्ता जैसे शहरो के लिए तुरन्त बन्द किया जाए। श्री विमल वधावन ने समस्त देशवासियो से यह संकल्प भी लेने की अपील की कि वे राष्ट्र की समृद्धि के लिए गाय के दूध व अन्य उत्पादो को अधिकाधिक उपयोग में लाय। भारी संख्या मे उपस्थित जनसमूह ने इन प्रस्तावों का समर्थन किया।

राष्ट्र की निगाहें आज भी आर्य समाज की ओर लगी है

मध्य प्रदेश के वाणिज्य कर मन्त्री तथा समारोह के मुख्य अतिथि बाबूलाल जैन ने कहा कि म० प्र० मे गोहत्या बन्दी कानून हाल ही मे पारित किया जा चुका है और आशा व्यक्त की कि उ० प्र०, राजस्थान हिमाचल प्रदेश आदि राज्यो मे भी इसी आशय के कानून बनाये जायेंगे।

श्री जैन ने आगे कहा कि स्वामी दयानन्द व आर्य समाज ने भूतकाल मे न केवल देश की स्वतन्त्रता व राष्ट्र निर्माण मे अद्वितीय योगदान दिया है अपितु आज भी मार्ग दर्शन के लिए सारे राष्ट्र की निगाहें आर्य समाज की ओर ही लगी है। श्री जैन समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे बोल रहे थे।

वेद परायण यज्ञ

प्रख्यात वैदिक विद्वान स्वामी दीक्षानन्द ने इस शिविर मे आठ दिन तक प्रात व सायं वेद परायण यज्ञ का संचालन किया।

इस कार्य मे सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० भवानी लाल भारतीय ने भी आर्य जनता को सम्बोधित किया।

द्वितीय भारतीय भाषा सम्मेलन

आर्य समाज भाषायी आधार पर देश की एकता व अखण्डता को सुदृढ करना चाहता है

नई दिल्ली। आगामी ९ मई को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे विट्ठल भाई पटेल भवन में प्रात १० बजे से ५ बजे तक द्वितीय भारतीय भाषा सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इसका उद्घाटन लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल करेंगे। सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती करेंगे।

इस सम्मेलन के आयोजक सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प० वन्देमातरम रामचन्द्र राव ने कहा कि आर्य समाज भाषाओं के आधार पर सारे राष्ट्र की एकता व अखंडता को सुदृढ करना चाहता है। देश की सभी १५ भाषाये अपनी राष्ट्रभाषाए हैं तथा हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप मे विकसित किया जाना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि आर्य समाज देश के बड़े २ शहरो व महानगरो मे इसी प्रकार के भाषा सम्मेलन व गोष्ठियां आयोजित करेगा। उल्लेखनीय है कि २१ व २२ दिसम्बर, ९१ को हैदराबाद मे प्रथम भारतीय भाषा सम्मेलन हुआ था जिसका उद्घाटन केन्द्रीय मानव संसाधन मन्त्री श्री अर्जुन सिंह ने किया था।

श्री वन्देमातरम ने यह भी बताया कि आर्य समाज दक्षिण राज्यो की भाषाओ को देवनागरी लिपि के जरिये जन साधारण तक पहुंचाने की दिशा में भी विचार कर रहा है।

ज्वालापुर महाविद्यालय का दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

हरिद्वार गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के ८५वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर १३ अप्रैल को पचास स्नातको को विद्याभास्कर एवं आयुर्वेद भास्कर की उपाधि प्रदान की गयी।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने नवस्नातकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि गुरुकुल के त्यागपूर्ण वातावरण से निकल कर संसार के नये धरातल में प्रवेश करने जा रहे हैं। स्वामी जी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि वे जीवन के हर क्षेत्र मे सफल हो वे और उन्नति पथ पर अग्रसर होंगे स्वामी जी ने बताया कि इस गुरुकुल ने राष्ट्र को अद्वितीय विद्वान् पत्रकार साहित्यकार शास्त्रार्थ महारथी व राजनेता दिये है और नवस्नातक गुरुकुल के नाम को रोशन करते रहेंगे।

प० रामचन्द्र राव वन्देमातरम ने अपने उदबोधन में कहा कि नवीनस्नातक त्याग व तपस्या के द्वारा इस संस्था को और भी गौरवशाली बनायेंगे।

उल्लेखनीय है कि आज गुरुकुल की उपाधियो को दस बारह विश्वविद्यालयो द्वारा बी० ए० के समकक्ष मान्यता प्रदान की जा चुकी है।

अन्त मे गुरुकुल के कुलपति आचार्य गौर शंकर जी एवं कुलाधिपति प० रामकरण जी शर्मा ने भी गुरुकुल की उन्नति मे सहयोग के लिए आर्य जनता से अपील की। समारोह में वेद सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन आयुर्वेद सम्मेलन कवि सम्मेलन आदि भी आयोजित किये गये। विशेष यज्ञ कार्यक्रम में आकर्षण का केन्द्र बिन्दु था। ब्रह्मचारियो के व्यापक प्रदर्शन ने सभी को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

सम्पादक—प्रो० सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

विज्ञान मय कोष में प्रयाण (७)

—देव नारायण भारद्वाज

नीचे विष्णु है, वही दृढ़ता व्यावहारिकता व्यापकता स्थिरता गतिशीलता का आधार है। ऊपर बृहस्पति है, वही उन्नति महानता उच्चता, नियन्त्रण की उच्चतम अध्यक्षता है। प्रत्येक दिशा मे जब हमे परमात्मा के यह मुख्य नाम स्मरण आते हैं, नाम से हमे उसके गुण स्मरण आते हैं इन गुणो से हमें प्रेरणा प्राप्त होती है कि हम भी इन गुणो को धारण करके अपने समाज एव सम्बन्धियो के लिए ऐसे बने। जहा कहीं हम स्वय अध्यक्ष या कार्यालयाध्यक्ष या प्रमुख है वहा हम भी ऐसा ही व्यवहार करके अपने अधिनस्थो के लिए आधार बनें। हम इन गुणो से परमात्मा पर विश्वास हो जाता है कि वह सभी दिशाओ में हमारा अधिपति है, तो हमे भय किस बात का रह जाता है।

रक्षिता बोध—

यदि कहीं किंचित भी भय हमे होता है, तो यह जो हर दिशा मे अपने पृथक् पृथक गुणवाची नाम से एक ही परमात्मा अधिपति रूप मे विराजमान है, वह योद्धा या सेनापति को भेजकर हमारी रक्षा करता रहता है। प्रत्येक दिशा में प्रभु के पृथक् पृथक सहायक गुणो पर आधारित नामो से रक्षक नियुक्त है। यदि हम न्याय मार्ग पर चलते हैं और फिर भी कोई शत्रु बन कर हमें पीड़ित करना चाहता है, तो यही रक्षक हमारी रक्षा करते रहते हैं।

सामने की दिशा मे रक्षक असित है। परमात्मा अविद्या अन्धकार मे न फसने के कारण बन्धन रहित है। यही गुण बन्धनो को काटने वाला है। दाहिनी ओर रक्षक तिरश्चिराजी टेढी चाल वाले अधम का प्रकाशक अर्थात् सचेत कराने वाला है। पश्चिम दिशा मे अथवा पीछे की ओर रक्षक प्रदाकु है, जो छिप कर घात करने वालों से हमारी रक्षा करता है। बायी ओर रक्षक स्वज है, हमारे अन्दर स्वत उत्पन्न होने वाले काम क्रोध बुराईयो को स्वय उत्पन्न होने वाले रक्षक गुण से दूर कर देता है। नीचे की ओर रक्षक कल्माषग्रीवा है जो कल्मष-मोह अज्ञान को अपनी ग्रीवा मे रख कर निकल जाने वाला है—हरे रग की वनस्पति भी यही करती है जो कार्बनडाई आक्साइड अर्थात्—विषैली गैस को निगल कर आक्सीजन प्रदान करती है। ऊपर की दिशा मे रक्षक श्वित्र है जो बाह्य ससर्ग से प्राप्त होकर बढने वाले दुख रोग अज्ञान से श्वेत सम्मिलित रूप मे उपस्थित होकर हमारी रक्षा करता है।

इषु बोध—

परमात्मा का प्रमुख गुण दिशा का अधिपति है सहयोगी गुण योद्धा सेनापति या रक्षक है। रक्षक के हाथ मे कोई शस्त्र होना चाहिए जिससे वह किसी को उस शस्त्र को चला कर रक्षा कर सके। उसे बचा सके। एक वचन में इषु एव बहु वचन मे इषव। जिसका अर्थ होता है—बाण जो मर्म लक्ष्य पर जाकर भेदन करते हैं यही प्रभु अधिपति के योद्धा के हाथ म रक्षा के लिए तैयार शस्त्र है।

सामने आदित्य सूर्य का किरण उगती है दाहिन ओर मुड कर एव कुछ ऊपर उठ कर सूर्य की यही किरण पितर बन जाती है अर्थात यही जगत मे सृजन का कार्य करने लगती हैं जैसे पौधो की पत्तिया म प्रकाश सश्लेषण की क्रिया पश्चिम या पीछे सूर्य पुन नीचे लगने लगता है और अस्त होने को है, सूर्य की किरण भूमि से तत्व खींच कर पौधो की बालियो में अन्न रूप मे हमारे भडार में सचित हो जाती हैं। यही सूर्य की किरण उत्तर—बाद में अथवा बायी ओर रात्रि मे भी दूर पदार्थ मे छिप जाती है और दो पत्थरों को रगडने से छिपी विद्युत के रूप में प्रकट हो जाता हैं। नीचे भूमि पर यही किरण वीरुध अर्थात विरुद्ध रूप वाले जिनके सिर नीचे होते हैं और चरण ऊपर की ओर होते है—ऐसे वृक्ष बन कर उल्टे ऊपर की ओर बढने लगते ह। वन उपवन वृक्षो के कारण ही ऊपर की ओर यही किरणें वर्षा की बूदे बन कर पृथ्वी पर बरसने लगती हैं।

दूसरे पक्ष पर विचार करगे तो पता चलेगा कि यह किरण ही सागर से जल को बन्धन मुक्त करके ऊपर उडा कर मेघों को दे देती हैं—यह हुआ असित रक्षिता के हाथ मे आदित्य बाण। यही मेघ आडे-तिरछे चल कर उड़ कर इधर उधर बिखरने लगते हैं और जल से भरे मेघ रूप मे पितर बन जाते हैं। आदित्य की किरणें ही छिप कर भूमि मे अकुरित बीज तक जाती हैं। इन्हीं मेघो के अन्दर स्वय उत्पन्न होने वाली विद्युत का चमत्कार होता है। मेघो की आर्द्रता एव ताप-क्रम के कारण नीली हरी गर्दन वाली वृक्ष व वनस्पति आती है जो भूमि से ऊपर उठती है। यही मेघ माला पर्वतो से टकरा कर वर्षा रूप में ऊपर से नीचे भूमि पर बरस पडती है।

सूर्य की किरणो के साथ-साथ पुरुषों पर भी इषुओ की सकल्पना की जा सकती है। आदित्य बाण वे हैं जो आदित्य ब्रह्मचारी के रूप में ज्ञानाचार्य बन जाते हैं पितर बन वे हैं, जिनके पास कोई शैक्षिक उपाधि भले न हो किन्तु उनके पास अनुभव की अमूल्य धरोहर होता है। इन दोनों विद्वान् और पितरो मे जो राष्ट्र के आधार बन जाते हैं—उसके पोषक बन जाते हैं—वह अन्न बाण के रूप में जाने जाते है। विद्वत्ता, पैतृकिता एव पोषकता का सामर्थ्य रखने वाले भले ही छिपे रहे किन्तु एक दिन विद्युत की भाति चमक उठते हैं। इन विद्वानो को ससार की गति के विरुद्ध चलना पडता है—ससार भौतिक वाद में भोग विलास में रत है जबकि यह तपस्वी इनसे उल्टे योग परोपकार मे चल कर विरुध बन जाते हैं। यही तपस्वी महान् बन जाते हैं वृद्ध बन जाते हैं और उनके केश श्वेत होकर उन्हें श्वित्र की आभा प्रदान करते हैं, और करुणा की वर्षा बन कर ससार के उपकार के लिए बरसने लगते हैं। इस प्रकार इन्हीं बाणो के द्वारा हमारी रक्षा होती है। इस विवरण को एक तालिका मे प्रस्तुत किया जाता है—

दिशा दर्श-मनन सारणी

दिशा	दिशा बोध	अधिपति
पूर्व (सामने)	ज्ञान, प्रकाश, ताप, नेत्र (ज्ञानेन्द्रियां)	अग्नि
दक्षिण (दायें)	दक्षता बल ऐश्वर्य, भुजा (कर्मेन्द्रियां)	इन्द्र
पश्चिम (पीछे)	समीक्षा बल की वरीयता, लोकप्रियता, सुषुम्ना (सवेदनशीलता)	वरुण
उत्तर (बायें)	प्रगति, नम्रता, मधुरता हृदय (सौम्यता)	सोम
ध्रुवा (नीचे)	दृढता व्यवहार का धरातल व्यापक स्थिरता पैरो की गतिशीलता	विष्णु
ऊर्ध्वा (ऊपर)	प्रगति का उच्च शिखर महानता की ऊचाई ऊपर की उच्चता शिर नियन्त्रण का महनीयता	बृहस्पति

अधिपति बोध—दिशाओ के अधिपति ही दिशा बोध के आधार हैं इस बोध को प्राप्त करने की प्रणाली बताना ही अधिपति बोध है।

रक्षिता	रक्षिता बोध	इषु	इषु बोध
असित	अविद्या अन्धकार के बन्धन काटने वाला	आदित्य	सूर्य की किरणें विद्वान मनीषी
तिरश्चिराजी	अधम व टेढ चाल चलने वालो से सचेत करने वाला	पितर	किरणो की सृजन शक्ति मेघ माला आदि अनुभवी बड़े पितर आदि
प्रदाकु	छिपकर घात करने वालो से बचाने वाला	अन्न	सूर्य किरणो के द्वारा पोषक तत्व भूमि से प्राप्त कर पौधो में अन्नोत्पादन
स्वज	स्वय उत्पन्न काम क्रोध की बुराईया को दूर करने वाला	अशनि	मौनकर्ता जो अपने अपने कर्मों से चमक उठते
कल्माष ग्रीव	कलमष अन्दर के मोह अज्ञान को निगल कर सृष्टि को सुखी बनाने वाला।	वीरुध	उल्टी चाल वालो पर नियन्त्रण कर्ता
श्वित्र	बाहर के ससर्ग जन्य रोग दुख को छुडा कर स्वच्छ बनाने वाला।	वर्षम	उपकार की वर्षा करने वाले महापुरुष

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

शाकाहारी दीर्घायु होते हैं



जर्मन कैंसर अनुसंधान केन्द्र हिडलबर्ग में पिछले ग्यारह वर्षों तक इस विषय का गम्भीर अध्ययन किया गया। वैज्ञानिकों ने इस दौरान १९०४ शाकाहारियों के स्वास्थ्य का निरन्तर परीक्षण किया। उनकी मान्यता है कि शाकाहारी तुलनात्मक दृष्टि से अधिक स्वस्थ ही नहीं होते बल्कि वे दीर्घायु भी होते हैं। मांस भक्षण से कैंसर की सम्भावना बढ़ जाती है क्योंकि इससे आंतों में अम्ल की मात्रा में वृद्धि होती है। यह मात्रा वृद्धि ही कैंसर का कारण होती है। जर्मनी में हृदय रोग तथा रक्त संचार के रोग काफी पाये जाते हैं परन्तु शाकाहारी इन रोगों से मुक्त रहते हैं। शाकाहारी अपने भोजन में कमवसा के कारण, ज्यादा स्वस्थ रहते हैं तथा वे हृदय रोगों की आशंका से भी बचे रहते हैं। उनमें सांस अथवा रक्त चाप की समस्यायें भी नहीं उभरती हैं। हिन्दुस्तान टाइम्स के २ अप्रैल १९९२ के अंक में यह भी स्पष्ट कहा गया है कि मनुष्य को प्रसन्न चित्त बने रहने के लिए मांसाहार से दूर ही रहना चाहिए।

शाकाहार भोजन पद्धति सर्वश्रेष्ठ है। वैज्ञानिकों ने शाकाहारी भोजन में सर्वाधिक भोजन तन्तु होने की पुष्टि की है। भोजन तन्तुओं की प्रचुरता से आंतों में भोजन का हलन-चलन अधिक व्यवस्थित रहता है। शाकाहार से हृदय रोगों की रोक थाम की जा सकती है। अमेरिका के डाक्टर ब्राउन और गोल्ड स्टीव को १९८५ में नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया। उनका मानना है कि भारतीय पद्धति—'कम खाओ, समय पर खाओ बार बार मत खाओ' स्वस्थ रहने का मूल मन्त्र है।

शाकाहारी भोजन मांसाहारी भोजन की अपेक्षा सस्ता है। अनेक पशु और जीव पर्यावरण सन्तुलन के लिए आवश्यक है। यदि इन पशुओं का विनाश कर दिया जाए तो भूमि की उर्वरा शक्ति पर भी प्रभाव पड़ेगा और देश में भुखमरी फैल जाएगी।

इसलिए शाकाहारी आन्दोलन को तीव्रता प्रदान करना हम सभी का कर्त्तव्य है।

—डा० धर्मपाल

'मंगलमय हो नव संवत्सर'

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

सुख समृद्धि सफलता बरसे, जन-जन में आये नव जीवन।
प्रमुदित-कुसुमित वसुन्धरा हो, हर्षित मानवता का अभिमन॥

महि मण्डल से असुर वृत्तियों का हो अब सम्पूर्ण समापन।
द्वेष घृणा के भाव तिरोहित हो फैले फिर से अपनापन॥

जाग्रत ज्योति जगे जगती पर, ज्योतिर्मय हो अवनी अम्बर।
आलोकित हो जगती सारी, उगे ज्ञान का पावन दिनकर॥

प्राप्त करें देवत्व मनुज सब, बहे प्रेम की अविरल धरा पर।
नव आशा विस्तृत हो भूपर, मंगलमय हो नवसंवत्सर॥

सम्पादक के नाम पत्र

गौरवपूर्ण पत्रिका

"आर्य संदेश" का अंक काफी दिनों से आना बन्द है जिससे हम प्रतीक्षा करते-करते पत्र लिखने के लिये विवश हुए। कृपया अंक निरन्तर भेजते रहें। आर्य जगत की इस गौरव पूर्ण पत्रिका की प्रतीक्षा प्रत्येक सच्चे आर्यों को रहती होगी कृपा कर शीघ्र अंक भेजें।

लालमणि शर्मा (आर्य)

आर्य सन्देश के प्रेरक विशेषांक

आर्य जगत के सम्मानित साप्ताहिक 'आर्य सन्देश' के ८ मार्च का ऋषि बोधोत्सव एवं स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती संयुक्तांक' नामक विशेषांक पाकर अत्यन्त आह्लादित हुआ। गत वर्ष में, ऋषिवर दयानन्द जी महाराज के दर्शन व वार्तालाप से धन्य होने वाले आर्य महापुरुषों की श्रृंखला की कड़ियों, श्री पं० लेखराम, श्री पं० गुरुदत्त 'विद्यार्थी' व स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज पर आर्य सन्देश' ने दुर्लभ व प्रेरक विशेषाङ्क जिज्ञासु ऋषि भक्तों तक पहुंचाने का महत्-कार्य किया है। स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज के बाद, जहां तक मेरी अपनी समझ है भक्त अमीचन्द ही आते हैं जिनपर उनकी रचनाओं से युक्त, एक विशेषाङ्क अवश्य निकलना चाहिए क्योंकि आर्यों में इनका जीवन व भजन दोनों, प्रेरणादायी तो सिद्ध होते हैं परन्तु हम सबको इनके बारे में विशेष परिज्ञान न होना कष्टकारक है। अतएव आगामी विशेषाङ्कों में हमें यह निधि भी प्राप्त होगी, ऐसी अपेक्षा है। इस अंक के अति सुन्दर मुख पृष्ठ चित्र को, यदि एक बड़ी प्रति भी नववर्ष कैलेण्डर के रूप में प्रकाशित कर दी जाये तो बड़ा अच्छा होता। परिचयोल्लास लेखन हेतु डा० सच्चिदानन्द शास्त्री जी सहित शेष समस्त लेखों का कोटिशः धन्यवाद व दिल्ली आ० प्रति० सभा का आभार ज्ञापन करता हूं।

पं० रामाज्ञा 'आर्यपुत्र' भागलपुर—देवरिया (उ०प्र०)

प्रशंसनीय पत्रिका

आर्य सन्देश आर्य जगत का एक उच्च कोटि का प्रशंसनीय पत्र है, ग्राहक शुल्क भेज रहा हूं।

विजयपाल शास्त्री
५० वर्धमान नगर, पो० हीरापुरा अजमेर रोड जयपुर

भगतसिंह डी० ए० वी० स्कूल कालेज में नहीं पढ़े थे

श्रीमान डा० धर्मपाल जी सप्रेम नमस्ते,

आपका एक लेख वीर भगतसिंह पर मैंने आर्य सन्देश में देखा। मेरा नम्र निवेदन है कि आप जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति को सस्ते साहित्य पर आश्रित नहीं होना चाहिए। आपने किसी डा० ए० वी० के वक्ता या लेखक के आधार पर यह लिखा है कि भगतसिंह ने डी० ए० वी० स्कूल से मैट्रिक किया। वह यह भी कहते हैं दूरदर्शन में मैंने सुना था कि भगतसिंह डी० ए० वी० कालेज में पढ़ा था और आर्यसमाजी भी ऐसा कहते व लिखने लग पड़े हैं। डा० सत्यकेतु ने भी अपने इतिहास में यही बात ठोक दी है। मैं तो आपसे विनम्र भाव से ही कह सकता हूं कि यह सब सत्य नहीं। भगत सिंह तो मैट्रिक थे ही नहीं। उन्हें परमानन्द जी के विशेष स्नेह व सिफारिश में नेशनल कालेज लाहौर में ले लिया गया। उनकी भतीजी ने उनकी प्रामाणिक जीवनी लिखी है। अब मेरी भी खोजपूर्ण पुस्तक आ रही है। शेष कुशल।

—राजेन्द्र जिज्ञासु

सामवेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज भीमनगर गुड़गांवा में ३-५-९२ से १०-५-९२ तक प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। रात्री खुले मैदान में वेद प्रचार का कार्यक्रम रखा गया था। इस शुभावसर पर आर्य जगत के सन्यासी, महात्मा, विद्वान एवं आर्य नेता पधारे। यजमान शुल्क नहीं रखा गया है ताकि सभी धर्मप्रेमी यजमान बन सकें।

—अमीचन्द धीमान, मन्त्री-आ० स० भीमनगर, गुड़गांवा

यमाचार्य का आतिथ्य

—डा० नरेश कुमार शास्त्री

कठोपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद की कठशाखा से सम्बद्ध प्रसिद्ध उपनिषद् है। यह उपनिषद् दो अध्यायो मे परिसमाप्त हुआ है और प्रत्येक अध्याय तीन वल्लियों मे विभाजित हुआ है। इस उपनिषद् मे जहा आत्मतत्व का गम्भीर भाव सरल सुबोध सवाद शैली मे प्रस्तुत किया गया है वही पर अतिथि देवो भव की व्याख्या भी बड़ी ही सुन्दर ढग से प्रस्तुत की गई है।

भारतीय सस्कृति के इस अनुपम आदर्श का प्रस्तुतिकरण कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय की प्रथम वल्ली मे नचिकेता की कथा के प्रसग मे हुआ है।

वह कथा इस प्रकार है कि यज्ञफल की कामना से वाजश्रवा के पुत्र वाजश्रवस ने विश्वजित् नामक यज्ञ का आयोजन किया। वाज अन्न को कहते हैं वाज अर्थात् अन्न के दानादि करने के कारण जिसका श्रव—यश फैला हुआ हो उसे वाजश्रवा कहते हैं। वाजश्रवा के पुत्र को ही कठोपनिषद् मे वाजश्रवस कहा गया है—(वाजम न तद्दाना दिनि मित्त श्रवोयस्य स वाजश्रवा रूढितो वा तस्या पत्य वाजश्रवस। कठ० शकर भाष्य—१ १) इस विश्वजित् यज्ञ मे यज्ञ का यजमान अपना सर्वस्व समर्पित कर देता है इसी यज्ञ का दूसरा नाम सर्वमेध यज्ञ भी है वाजश्रवस यज्ञ के उपरान्त जो कुछ उसके पास था सब दान करने लगे। उन वस्तुओ में जहा बहुत सी श्रेष्ठ वस्तुए थी वही पर कुछ ऐसी भी थी जिन्हे श्रेष्ठ नही कहा जा सकता परन्तु सर्वस्व दान के समय तो श्रेष्ठ अश्रेष्ठ सभी वस्तुए दान करनी होता हैं। अत वाजश्रवस को अपनी वे गऊए भी दान करनी पडी जिन्हें अच्छी गाय नहीं कहा जा सकता। जबकि वे गऊए जल पी चुकी थी घास भी खा चुकी थीं—न भूख थी न प्यास थी परन्तु उनका दूध दुहा जा चुका था और वे इस योग्य भी नहीं थी कि भविष्य मे दूध दे सकें क्योकि वे इतनी वृद्ध हो चुकी थी कि भविष्य में भी उनके प्रसव की कोई सम्भावना नही थी वे किसी बच्चे को जन्म देकर पुन दुधारु गाय नही कहला सकती थी। वाजश्रवस जब इन बूढ़ी गऊओ को भी दान दक्षिणा के रूप मे दे रहे थे तो उनका आस्तिक बुद्धि पुत्र जिसका नाम नचिकेता था अपने पिता को बड़ ध्यान से देख रहा था और अपने अन्त हृदय मे सोच रहा था—

> पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रिया।
> अनन्दा नाम ते लोका तान् स गच्छति ता ददत्॥ १ १ ३

जो गायें पीतोदका=जल पी चुकी हो जग्धतृणा=घास खा चुकी हों, दुग्धदोहा=दूध दुहा जा चुका हो और निरिन्द्रिया बच्चा पैदा करने मे भी असमर्थ हो—ऐसी गऊओ का दान करने वाला यजमान ऐसे लोको को प्राप्त होता है जो आनन्द से रहित हैं उन्हे ऐसी योनियो मे जन्म लेना पडता है जो स्वर्ग रूप न होकर नरक रूप हो—दुखो का घर हो।

नचिकेता आयु से तो बालक था परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से प्रबुद्ध था वह अपने पिता को इस प्रकार के कुदान से प्राप्त होने वाले फल से बचाना चाहता था। अत अपने बालसुलभ स्वभाव से पिता के समीप जाकर बोला— तत कस्मै मा दास्यसि — पिता जी मुझको आप किसे दगे। पिता के उत्तर न देने पर नचिकेता ने अपने प्रश्न को दुबारा तिबारा दुहराया। पिता का पुत्र के प्रति मोह होता है अत बार बार पूछने से वाजश्रवस को क्रोध आ गया और क्रोध मे बोले— मृत्यवे त्वा ददामि मैं तुझे मृत्यु के हवाले करूगा। पिता का यह कहना कुछ वैसा ही था जैसा कि आज कल भी माताए बार बार तग करने पर अपने प्रिय पुत्र को क्रोध मे आकर कह देती हैं— तेरा गला घोट दूगी। परन्तु उनका ऐसा कहने का तात्पर्य उन्हे शरारतो से या ऊटपटाग के प्रश्नो के करने से रोकना ही होता है न कि गला घोट कर मृत्यु के घाट उतारने से। वाजश्रवस का भी यही अभिप्राय रहा होगा कि नचिकेता मृत्यु के नाम से घबरा जाए और बार बार यह न पूछे कि 'मुझे किसे दगे?' परन्तु नचिकेता ने अपने पिता के क्रोध भाव को न समझा और घर से निकल पडा घर से निकल कर नचिकेता यमाचार्य के घर पहुचे। (यमाचार्य को उपनिषद् मे वैवस्वत मृत्यु अन्तक आदि कई नामो से सम्बोधित किया गया है) परन्तु जब नचिकेता वहाँ पहुचे तो यमाचार्य घर से बाहर गये हुए थे अत नचिकेता को द्वार पर ही प्रतीक्षा करना पडी। अन्न जलादि भी ग्रहण नही किया। तीन दिवस के बाद यमाचार्य घर लौटे तो उन्हें किसी धर्मज्ञ ने नचिकेता का आतिथ्य करने के लिए निम्न प्रकार सावधान किया—

> वैश्वानर प्रविशति—अतिथिर्ब्राह्मणो गृहम्।
> तस्यैता शान्ति कुर्वन्ति हर वैवस्वत-उदकम्॥

हे विवस्वान् के पुत्र वैवस्वत=यम! आपके घर में वैश्वानर=अग्नि के समान तेजस्वी, विद्वान् अतिथि ने प्रवेश किया है। तुम सद् गृहस्थ हो सद् गृहस्थ विद्वान् अतिथि को अपने आतिथ्य से सर्वथा प्रसन्न रखते हैं। अत इसके आतिथ्य के लिए जल लाओ।

भारतीय सस्कृति मे अतिथि सेवा के लिए तीन कार्य आवश्यक होते थे— १ अर्घ्यपाद्य अर्थात् सत्कार पूर्वक जल द्वारा हाथ पैर धुलवाना २ आसन अर्थात् बैठने के लिए उचित स्थान एव आसनादि प्रदान करना ३ मधुपर्क अर्थात् अल्पाहार के रूप मे खाने के लिए कुछ भोज्य पदार्थ प्रदान करना। इसी लिए धर्मज्ञ ने अर्घ्यपाद्य हेतु जल लाने के लिए यमाचार्य को प्रेरित किया। इसी के साथ मे सावधान करते हुए कहा—

> आशाप्रतीक्षे सगत सनृतां च इष्टापूर्ते पुत्रपशुश्चसर्वान्।
> एतद् वृङ्क्ते पुरुषस्य अल्पमेधस यस्य अनश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे। १ १ ८

जिस गृहस्थ के घर मे ब्रह्मवित् अतिथि भूखा रहता है उस अल्पबुद्धि की आशा प्रतीक्षा सगत सूनृता इष्ट आपूर्त पुत्र तथा पशु आदि सब समृद्धिया नष्ट हो जाती है।

आचार्य शकर उपर्युक्त श्लोक के व्याख्यान में आशा प्रतीक्षा आदि शब्दो को निम्न रूप मे व्याख्यात करते हैं—

आशा— अनिर्ज्ञातप्राप्येष्टार्थ प्रार्थना आशा

अज्ञातप्राप्य इष्ट वस्तु के लिए की गई प्रार्थना का नाम आशा है।

प्रतीक्षा— निर्ज्ञातप्राप्यार्थ प्रतीक्षण प्रतीक्षा

ज्ञात प्राप्य वस्तु के लिए की गई प्रार्थना का नाम प्रतीक्षा है।

सगत— सगत सत्सयोगज फलम् विद्वान् अतिथि के सयोग (सगति) से उत्पन्न होने वाले फल को सगत कहते हैं।

सूनृता— सूनृता हि प्रियावाक निमित्त च प्रियवाणी तथा उससे होने वाले फल को सूनृत कहते हैं।

इष्ट—'इष्ट यागजम् (फलम्) यागादि से प्राप्त होने वाले फल का नाम इष्ट है।

आपूर्त— पूर्तम् आरामादिक्रियाज फलम् सामाजिक कल्याण के लिए लगाये गए बाग बगीचे विश्राम स्थल पेयजल व्यवस्था नि शुल्क चिकित्सालय आदि कार्यों के प्रति रूप प्राप्त होने वाले फल को आपूर्त कहते हैं।

महात्मा नारायण स्वामी अतिथि निरादर के उपर्युक्त रहस्य को खोलते हुये उपनिषद् रहस्य (कठ०) मे लिखते हैं—

जब कोई व्यक्ति किसी का आतिथ्य नही करना चाहता तो उसकी इच्छा होती है कि उसे घर से रुखसत करे और इसके लिए उसे कुछ रुखाई से बात करनी पड़ती है। रुखाई से बात करने के फलरूप मे मधुरभाषिता जाती है मधुरभाषिता के न रहने से कोई विद्वान् न उसके पास आता है न उसे अपने पास आने देता है इससे सत्सग भी गया और इस सत्सग के अभाव से श्रौत और स्मार्तकर्म भी छूटे क्योकि बिना विद्वानो के सहयोग के ये काम अकेले करने के नही हैं। विद्वानो के असहयोग से पुत्रेष्टि आदि करके पुत्र भी पैदा नहीं कर सकता और यदि पैदा हुआ भी तो वह मूर्ख ही रहेगा जो मरने से बदतर है जैसा कि नीति मे कहा गया है —

> अजातमृत मूर्खाणां वरमाद्यौ न चान्तिम।
> सकृद्दु खकरावाद्यावन्तिमस्तु पदेपदे॥ (पचतन्त्र)

अर्थात पुत्र का न पैदा होना पैदा होकर मर जाना और मूर्ख रहना— (इन तीनो मे से) पहले दोनो श्रेष्ठ हैं परन्तु अन्तिम (मूर्ख रहना) श्रेष्ठ नहीं है क्योकि पहले दो से तो मनुष्य को एक ही बार दुखी होना पडता है परन्तु अन्त की बात से तो उसे पग पग पर दुख भोगना पडता है—अस्तु सन्तान के मूर्ख रहने

(शेष पृष्ठ ५ पर)

भारतीय भाषा सम्मेलन क्यों ?

भाषा देश को एक सूत्र मे बांधती है। हमारे देश की संस्कृति को देश की भाषाएं ही वाणी प्रदान कर सकती हैं। एकता को बल देने वाले इस स्वर्ण सूत्र की गत वर्षों में उपेक्षा की गई है। यही नहीं निहित स्वार्थों ने भाषा का प्रयोग विभाजक अस्त्र के रूप में किया है।

हमारे समाज में आर्थिक विषमता के लिए भी भारतीय भाषा की उपेक्षा एक प्रमुख कारण है। आज भारतीय भाषा के माध्यम से शिक्षा के अवसर सीमित हैं और इन भाषाओं के माध्यम से शिक्षित युवकों के लिए नियोजन के अवसर भी नगण्य हैं।

परकीय भाषा आज भी हमारे ऊपर थोपी हुई है। यदि इस सांस्कृतिक दासता से विमुक्ति नहीं हुई तो हमारा विचार, हमारा तत्वज्ञान और हमारी सभ्यता नष्ट हो जाएगी। हमारी अस्मिता ही मिट जायेगी। प्राचीन सुमेरु और मिस्र की सभ्यता के साथ जो हुआ वही हमारे साथ हो जाएगा।

आज मुट्ठी भर अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित धनिक वर्ग सम्पूर्ण देश पर पदाधिकार जमाए हुए है। योग्य युवकों के लिए नियोजन के द्वार केवल इस लिए बन्द हैं कि वह हमारे पुराने शासकों की भाषा में निष्णात नहीं है। यदि सत्ता कुछ अंग्रेजी जानने वालों के पास ही बन्दिनी है तो यह न तो लोकतन्त्र है न समाजवाद।

संविधान में और राजभाषा अधिनियम में भाषाओं के सम्बन्ध में उपलब्ध मे उपबन्ध किए गए थे। संविधान निर्माताओं की यह आकांक्षा थी और जनता की आज भी यह अभिलाषा है कि जनभाषाओं का अधिकाधिक प्रयोग हो। किन्तु संविधान की उपेक्षा करते हुए आज भी दासता का बोझ अंग्रेजी के रूप में हमारे कन्धों पर पड़ा हुआ है। भारत का नवयुवक इसके विरुद्ध आवाज उठा रहा है। देश के उत्कर्ष में अंग्रेजी बाधक है। इसके स्थान पर भारतीय भाषाओं का लाना समय की मांग है।

भाषा विषयक संकल्प भारत की संसद ने १९६८ मे पारित किया था। १९९१ में ऐसा ही संकल्प लोक सभा ने पुनः पारित किया। दुःख की बात है कि फिर भी शासकों ने इस ओर ध्यान नही दिया है। इसमें केन्द्र सरकार जितनी दोषी है लगभग उतनी ही राज्य सरकारें भी। उदाहरण के लिए अभी तक केवल चार उच्च न्यायालयों मे राज्य की राजभाषा के प्रयोग की अनुमति है। शेष में भारतीय भाषाएं आज भी न्यायालय के परिसर से बाहर खड़ी हैं और अंग्रेजी आसनारूढ है।

भारतीय भाषा यात्रा

आज हमारे बीच ऐसे राजनैतिक दल मौजूद हैं जो नाम और कम दोनों से ही एक प्रान्तवाद और एक भाषावाद के लिए स्थापित किए गए हैं। भाषाओं को आधार बनाकर अलगाववाद का जहर फैलाने की कुचेष्टा की जा रही है। ऐसे लोग यह भूल जाते हैं कि हमारी प्राचीन संस्कृति समस्त भारतवर्ष के लिए एक थी। उस समय भी भाषाओं मे भेद था परन्तु कोई भी अलग संस्कृति का विकास करने की कोशिश नही कर पाया।

भाषा एकता तथा विभाजन दोनों का ही साधन बन सकती है परन्तु यह निर्भर करता है नेतृत्व करने वालों पर, एक तरफ जहां राजनीतिक दल भाषाओं के आधार पर विभाजन को अपना लक्ष्य मानते हैं वहीं आर्य समाज भाषाओं के ही आधार पर सारे देश की एकता एवं अखण्डता को सुदृढ़ बनाने का सपना सजो रहा है।

इस प्रकार भारतीय भाषा सम्मेलनों का देश के विभिन्न शहरों मे शृंखला बद्ध आयोजन करके उत्तर और दक्षिण प्रान्त के लोगों मे मेल मिलाप और एक दूसरे की भाषाओं को समझने के अवसर उपलब्ध कराए जायेंगे। आर्यसमाज की यह भारतीय भाषा यात्रा न तो वोट बटोरने के लिए है और न ही किसी अन्य स्वार्थ के कारण। अपितु केवल मात्र इस उद्देश्य से प्रारम्भ की गई है कि सारे देशवासी भारत की समस्त १५ भाषाओं को अपनी मातृ भाषाएं समझें तथा हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित किया जाए।

भारतीय भाषा सम्मेलन शान्ति पूर्ण तरीकों से जन जागरण करके भारतीय भाषाओं को शिक्षा, न्याय, प्रशासन और अन्य सभी क्षेत्रों में उनका उपयुक्त स्थान उन्हें दिलाना चाहता है। यह कार्य ऋषि दयानन्द, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी के विचारों के अनुरूप है। इस उद्देश्य से २१ और २२ दिसम्बर १९९१ को हैदराबाद में पहला सम्मेलन हुआ। जिसका उद्घाटन केन्द्रीय मानव संसाधन मन्त्री श्री अर्जुन सिंह जी ने किया था। उसमे प्राप्त जन सहयोग और परिलक्षित जनभावनों को देखते हुए यह निर्णय किया गया कि इस प्रकार के सम्मेलन भारत में अन्य स्थानों पर भी किए जाए।

इस कड़ी मे ९ मई १९९२ को दिल्ली मे कांस्टीट्यूशन क्लब मे प्रातः १० बजे से ५ बजे तक एक सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। जिसका उद्घाटन लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल करेंगे।

स्वागत समिति

भारतीय भाषा सम्मेलन

डा० सच्चिदानन्द	श्री बिमल वधावन	डा० धर्मपाल
श्री के० नरसिम्हा रेड्डी	श्री सूर्यदेव	श्री कीर्तिकुमार कोरटकर
श्री राजेन्द्र अग्रवाल	श्री आदर्श गोयल	श्री विद्याधर गुरुजी

(पृष्ठ ४ का शेष)

से पशु आदि धन का संग्रह भी सम्भव नहीं—इस प्रकार उपयुक्त बातों के अभाव से कोई गृहस्थ न किसी वस्तु की आशा कर सकता है और न किसी की प्रतीक्षा।"

यमाचार्य ने आतिथ्य के महत्व को समझते हुए अर्घ्यपाद्य आदि से नचिकेता का सत्कार ही नहीं किया, अपितु आचार्य यम ने आस्तिक बुद्धि नचिकेता को अपने गृह पर तीन रात्रि तक निराहार पड़ रहने के प्रतिरूप आत्मप्रायश्चित्त के रूप में तथा अतिथि की प्रसन्नता के लिए प्रति रात्रि एक एक वर अर्थात तीन वर मांगने के लिये नचिकेता से कहा—

'तिस्रोरात्री यद् अवात्सी गृहे मे, अनश्नन् ब्रह्मन् अतिथि नमस्य।
नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्ति मेऽस्तु तस्मात् प्रति त्रीन् वरान् वृणीष्व ॥ ११९

हे ब्रह्मवित् विद्वान् अतिथि! आपको मेरा प्रणाम हो। हे नचिकेता! आप नमस्य हैं मेरे प्रणाम योग्य हैं मुझे आपका सत्कार करना चाहिए था, परन्तु आप तीन रात्रि तक निराहार मेरे द्वार पर पड़े रहे अतः प्रायश्चित्त रूप में—जिससे मैं अतिथि निरादर के पाप से मुक्त हो सकूं—मेरा भी कल्याण हो जाए, आप प्रति रात्रि के हिसाब से एक एक वर अर्थात् तीन वर मांगने की मेरी प्रार्थना स्वीकार करें।

नचिकेता ने कठोपनिषद् की अग्रिम कथा के अनुसार यमाचार्य से ऐहलौकिक तथा पारलौकिक वरों की याचना की। प्रथम वर मे पितृतोष=क्रुद्ध पिता की प्रसन्नता तथा द्वितीय वर मे यज्ञाग्नि विज्ञान के द्वारा स्वर्ग=भौतिक शरीर मे सुख विशेष की प्राप्ति की याचना की। ये दोनों वर ऐहलौकिक वर थे तृतीय वर पारलौकिक था—आत्मतत्व का ज्ञान।

इस प्रकार यमाचार्य ने 'अतिथि देवो भव' 'अतिथि नमस्य" के महत्व को अपने आचरण से उपस्थित किया। उपनिषद् काल से भी पूर्व से चला आ रहा यह अतिथि सत्कार भारतीय संस्कृति का आज भी वैसा ही अभिन्न अंग है, प्रत्येक मनुष्य का आवश्यक कर्त्तव्य है।

आर्य वीर दल

प्रशिक्षण-शिविर सम्पन्न

भागलपुर देवरिया सार्वदेशिक आर्यवीर दल मऊ मंडल के तत्वावधान मे १२ से १५ मार्च तक बौद्धिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। १५ मार्च को आयोजित आर्यवीर सम्मेलन की अध्यक्षता श्री दिनेश शर्मा, आसाम प्रान्त ने की एवं कुशल संचालन युवा आर्य नेता श्री रामाज्ञा आर्य पुन, बौद्धिकाध्यक्ष आर्यवीर दल पूर्वी उ०प्र० ने किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक रक्षा सचिव श्री बाल दिवाकर जी हंस, श्री सुमेधा मित्र वेदालंकार, डा० ओंकारनाथ आदि ने सैकड़ों आर्यवीरों का उद्बोधन द्वारा मार्ग दर्शन किया। आर्यवीरों ने प्रस्तुत कार्यक्रमों द्वारा जनता को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

श्रेष्ठ परम्परा के अनुरूप दीन दुखियों की सेवा कर आर्य समाज के काम को आगे बढ़ायें

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

दिल्ली। आर्य समाज की गतिविधियों एवं कार्यक्रमों में तेजी लाने तथा सगठन को सशक्त बनाने हेतु २४ मार्च, ९२ को एक 'कार्यकर्त्ता सम्मेलन' आर्य समाज दीवानहाल मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से दीवानहाल समाज के १०७वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित किया गया था।

इस अवसर पर कर्मठ कार्यकर्त्ताओ को सम्बोधित करते हुए स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि त्याग बलिदान व सेवा की अपनी श्रेष्ठ परम्परा के अनुसार आर्य समाज ने आगे बढ कर सदैव दीन दुखियो व पीडितो की सहायता की है। उत्तरकाशी गढवाल के भूकम्प पीडितो को लगभग ७० लाख रुपये की सहायता पहुचाई गई। मथुरा जिले में केन्द्र सरकार की मदद से लाखो रुपयो के उपकरण व अन्य सामग्री विकलागों के लिए वितरित की गई। इसी प्रकार काश्मीर व पजाब के विस्थापित भाई बहिनो की भी विशेष सहायता की गई। मलखिया व सीतापुर आदि अनेक स्थानो पर हजारों की सख्या मे भूले भटके लोगो को वैदिक धर्म में प्रविष्ट किया जा चुका है।

स्वामी जी ने आगे कहा कि नशाबन्दी, स्वदेशी वस्तुओ के अधिकाधिक प्रयोग के लिए नये कार्यक्रमो की शुरुआत की जाए। यदि भारतीय भाषाए बढेंगी तो राष्ट्र भाषा हिन्दी का भी अधिक प्रचार-प्रसार होगा। अत दक्षिण भारत की तरह राजधानी में भी आयोजित किये जाने वाले अखिल भारतीय भाषा सम्मेलन में तन, मन, धन से सहयोग करें। आर्य समाज के कार्यक्रमो व उत्सवों मे हमे श्रद्धापूर्वक भारी सख्या मे भाग लेना चाहिए। जन सम्पर्क बढा कर झुग्गी झोंपडी कालोनियो में सेवा कार्य भी बढाना चाहिए।

सम्मेलन मे ३२ कर्मठ कार्यकर्त्ताओ के मौखिक व लिखित रूप से प्राप्त बहुमूल्य सुझावो का सार इस प्रकार है—

(१) श्री लाजपतराय निझावन प्रताप नगर, समाज—पहले स्वय आर्य बनें फिर दूसरो को आर्य बनाने की बात करें, १० नियमो का अनुपालन करें व पच यज्ञ नित करे। पहले आर्य समाज फिर कुछ और, हमारा लक्ष्य हो।

(२) श्री नेतराम शर्मा कृष्ण नगर—प्रत्येक आर्य का तप, त्याग, व मधुर आचरण का जीवन हो, सगच्छध्व सगठन सूत्र को अपनायें, यम नियमो आदि का पालन करें और कथनी करनी एक समान हो।

(३) श्री रोशनलाल सरोजनी नगर—प्रत्येक समाज मन्दिर मे व्यायामशाला औषधालय वाचनालय आदि होने चाहिए सुयोग्य पुरोहित की व्यवस्था हो, आर्य सिद्धान्तो के प्रति निष्ठा रखने वाले ही अधिकारी बनें एव कार्यों के लिए समय दें, मतभेद समाप्त करें, विवादों मे सार्वदेशिक सभा एव प्रतिनिधि सभाओ के आदेशो का पालन करें।

(४) आचार्य हरिदेव जी, करोल बाग—प्रत्येक समाज को दशांश सभा को अवश्य देना चाहिए, प्रतिनिधि व सार्वदेशिक सभा को सशक्त करने से ही आर्य समाज की उन्नति होगी भजनोपदेशक व उपदेशको की सख्या मे वृद्धि की जाये, लेखन व भाषण के काम को तेज करें सभी आर्यजन समाजो व सभाओं मे मन्त्री प्रधान आदि से सहयोग करें।

(५) श्री वेदव्रत शर्मा हनुमान रोड—दिल्ली जैसे महानगर में आर्य समाज की गतिविधियो मे दक्षिण भारत के रह रहे लोगों को भी अपने साथ जोडना चाहिए तथा प्रचार साहित्य अन्य भाषाओ में वितरित करना चाहिए।

(६) श्री मूलचन्द गुप्त दीवान हाल—वैदिक शोध केन्द्र की स्थापना की जाये, विद्वानो के बच्चों के विवाह के लिए सहायता कोष स्थापित करें, नये बनने वाले समाज मन्दिरो व यज्ञशालाओं के लिए एक आर्य समाज सहायता निधि बनाई जाए एव गुरुकुलों मे निर्धन व मेधावी बच्चो की शिक्षा हेतु स्थायी कोष बनाया जाये।

(७) वैद्य महेन्द्र पाल सिंह आर्य सी ब्लाक जनकपुरी—योग व यजुर्वेद सध्या हवन का प्रचार-प्रसार, साम्प्रदायिकता का विरोध किया जाना चाहिए, आर्य राजनैतिक संस्था का निर्माण किया जाये तथा भाषाओं में वैदिक साहित्य का प्रकाशन व वितरण किया जाये तथा ग्राम ग्राम में आर्य समाजें स्थापित की जायें।

(८) श्री हरकिशन आर्य नागल राय—समाजो में गुरुकुल के स्नातक को ही पुरोहित रखने पर बल दिया जाये, सभी समाजों के प्रधानों, मन्त्रियों आदि का परस्पर परिचय कराया जाए, सभी समाजों के पूरे पतो की सूची सभा उपलब्ध कराये, वेद प्रचार के लिए मांडलिक योजना बनायें, सस्कृत,सस्कार, ढोलक प्रशिक्षण की व्यवस्था की जावे, सभा द्वारा यज्ञ की एक स्वीकृत व मान्य विधि सभी समाजो को दी जाये एव आर्य समाज की स्थापना के लिए सभाओ में शिक्षक भेजे जावें।

(९) डा० मागमल नागलराया—सत्यार्थप्रकाश उपलब्ध कराये जायें, विवाह उत्सवों में सत्यार्थ प्रकाश भेंट स्वरूप दें, जलसे जलूसों मे केसरी टोपी, साफी आदि पहनना अनिवार्य हो, प्रत्येक आर्य जन हिन्दी प्रचार का सकल्प ले, दिल्ली मे महर्षि दयानन्द के पत्रो, ग्रन्थो, स्मृति वस्तुओ का सग्रहालय स्थापित किया जाये।

(१०) श्री बलवन्त सिंह साहिबाबाद दौलतपुर—युवा वर्ग से सम्पर्क कर उसे अपने साथ जोडें, छोटे छोटे ट्रैक्टो मे सस्ता आर्य साहित्य प्रकाशित करा कर वितरित करें, एव विद्वानो का मान करें।

(११) श्री भारत भूषण सरस्वती विहार—डी० ए० वी० स्कूलों का आर्यकरण किया जाए, वहां अग्रेजी के प्रचलन को कम किया जाए एव टाई के प्रयोग पर रोक लगाई जानी चाहिए, इनसे आर्य समाज की बदनामी होती है, समाजो व सभाओ में अधिकारी नाम के साथ जाति न लगायें, बगला देशियो का शुद्धिकरण किया जाए, हिन्दुओं की आबादी घट रही है, उपाय करें अन्यथा अल्पसख्यक हो जायेंगे।

(१२) श्री शिवशकर गुप्त गाधी नगर—सभाओ का समाजों पर नियन्त्रण हो, समाजो मे वेद प्रचार को प्रमुखता दी जाए न कि पगडी लेकर किराएदार रखने को समाजो में व्यापारिक निर्माणो पर प्रतिबन्ध लगाये जायें तथा प्रत्येक समाज अपने अपने मन्दिर मे सगठन सचिव नियुक्त करे।

(१३) श्री कृष्णदेव सरस्वती विहार—प्रत्येक राज्य अपने यहा की छमाही रिपोर्ट सार्वदेशिक सभा का भेजें उपदेशक व भजनीक पर्याप्त सख्या में हो, राम की सच्ची पूजा, हनुमान की सच्ची पूजा आदि ट्रैक्ट छपवा कर मगलवार रामनवमी, कृष्णाष्टमी को बांटे जाए, दूरदर्शन पर पाखण्डों को दूर करने के लिए विचार गोष्ठिया, हवन यज्ञ, सन्ध्या सिखाने आदि के कार्यक्रम दिखाने का प्रबन्ध किया जाए।

(१४) श्री सोहनलाल किदवई भाग पूर्वी बाबरपुर—अनुशासन, प्रेम, श्रद्धा व अच्छे आचरण द्वारा सगठन सुदृढ किया जाए जाति विहीन समाज की स्थापना के लिए आन्दोलन चलाये बिना दहेज की शादियों का प्रचार करें, विजातीय विवाहो के लिए आर्य समाज पजीकरण कार्यालय खोले।

(१५) डा० ऋषि विन्दापुरम—समाज मन्दिरो मे पुरोहितो द्वारा सस्कृत व हिन्दी नि शुल्क पढाये जाने की व्यवस्था हो, कुमार सभायें बना कर उनके लिए प्रभावी कार्यक्रम बनायें एव शास्त्रार्थों को शुरु किया जाए।

(१६) श्री प्रियतम दास जी रसवन्त चूनामण्डी पहाडगज—यज्ञ पद्धति एक सी हो तथा युवको व महिलाओ को समाजो व सभाओं में भागीदार बनाये।

(१७) श्री शिवकुमार युवको को आगे लायें एव सर्वांश लागू करे।

(१८) चौधरी भीमसिंह तिमारपुर—आर्य समाज के नियमो पर चलें प्रेम का व्यवहार करें, सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझे एक भाव, एक लक्ष्य हो कि मिल-जुल कर वेद प्रचार करें तथा प्रचार कार्य में तेजी लायें।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

(पृष्ठ ६ का शेष)

(१९) श्री विमल कान्त शर्मा बच्चो को सत्संग व उत्सवो में लावें, प्रत्येक समाज में आर्य वीर दल अवश्य स्थापित किया जाए, बच्चो व युवको के लिए प्रत्येक उत्सव पर खेल कूद, भाषण, निबन्ध लेखन, वाद विवाद प्रतियोगितायें आयोजित की जाए, स्त्री समाजो को सशक्त किया जाए क्योंकि आर्य नारी से परिवार भी आर्य बन जाता है, अश्लील साहित्य व फिल्मों तथा मादक पदार्थों के विरुद्ध अभियान चलाया जाए हिन्दी मे नामपट्ट लिखने व अंग्रेजी नाम पट्टो को पोतने के कार्यक्रम चलाये जाये।

(२०) श्री प्रेमचन्द श्रीधर डी० ए० वी० संस्थाओ मे अंग्रेजी के प्रचलन टाई, केपीटेशन फीस आदि के विरुद्ध कार्यक्रम चलाये जाये पवित्र आचरण व प्रचार कार्यों द्वारा आर्य समाज के गौरव को बढाना चाहिए।

(२१) डा० महेश विद्यालकार पुरोहित समाज मन्दिर की आत्मा होता है, उसको पूरा मान सम्मान दो, मन्दिरो मे सेवको को भी सहायता करो ऋषि की वसीयत के अनुसार सेवा त्याग व प्रेम से वेद प्रचार कार्य बढाओ, मिशनरी भावना से वेद प्रचार व जन सम्पर्क कर पारिवारिक सत्संग कर।

(२१) डा० धर्मपाल महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा—डा० धर्मपाल ने ईसाई मिशनरियों की तरह झुग्गी झोपड़ियो मे जाकर जन सम्पर्क एव मिशनरी भावना के काम करने का आह्वान किया। आर्य समाज के नियमो का हमे पालन करना चाहिए, आर्य सिद्धान्तो मे अटूट श्रद्धा हो, सगठन को सुदृढ करें तथा हम एक ही आवाज पर इकट्ठे हो जाय।

(२२) श्री सूर्यदेव प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा—श्री सूर्यदेव ने इस सम्मेलन मे पधारने के लिए सभी कर्मठ कार्यकर्ताओ को धन्यवाद दिया और कहा कि सभी सुझावो पर यथा समय अलग से विचार किया जायेगा। उन्होंने कहा कि जो-जो अच्छे सुझाव हैं और जिन्हे समाजो में सरलता से लागू किया जा सकता है, अपनाया जा सकता है, उन्हे अपना ले। हमे नामकरण, जन्म दिवस आदि मिल-जुल कर मनाने चाहिए तथा अपने जन सम्पर्क कार्य को सशक्त करना चाहिए।

दानी महानुभावों से अपील

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा सन् १९१६ मे स्थापित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद न केवल स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान अनेक शहीदो व देशभक्तो की कार्यस्थली रहा है, अपितु इसने देश को अनेक उच्चकोटि के विद्वान भी दिये हैं।

इसका सचालन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा किया जा रहा है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्त सी० बी० एस० ई० पाठ्यक्रम गुरुकुल मे पढ़ाया जाता है।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के विशाल भवन विशाल छात्रावास भवन की मरम्मत, बिजली की फिटिंग, नलकूपो के लिए नई मोटर, सुलभ शौचालय तथा स्नानागारो आदि की व्यवस्था तुरन्त करवायी जानी है धनाभाव के कारण सभी कार्य अधूरे पड़े है गुरुकुल के स्वामी श्रद्धानन्द वैदिक पुस्तकालय भवन में पुस्तकें संग्रह की जानी हैं तथा छात्रावास भवन के नीचे ऐतिहासिक संग्रहालय का भी विकास किया जायेगा। यहां स्वतन्त्रता सेनानियों व क्रान्तिकारियों के दुर्लभ चित्र हैं।

अतः दानी महानुभावो से अपील है कि वे अपनी नेक कमाई से उपरोक्त कार्यों के लिए अधिक से अधिक राशि आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा को बैंक ड्राफ्ट मनीआडर या नकद अथवा सभा के उप कार्यालय गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद) को भिजवाने की व्यवस्था करायें यह दान राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

ओमानन्द सरस्वती
कार्यकर्ता प्रधान परोपकारिणी सभा

राजेन्द्रसिंह बिसला विधायक
कार्यवाहक प्रधान

प्रो० शेरसिंह, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री
प्रधान

सूबेसिंह
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

महाशय श्रीचन्द
धनगपुर

धर्मचन्द
मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद नई दिल्ली-४४

विजयकुमार IAS
पूर्व उपायुक्त

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 23 24 4 1992 Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल ११०२४/९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) १३९/९२
साप्ताहिक "आर्यसन्देश" २६ अप्रैल, १९९२

आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन पर शोध कार्य सम्पन्न

लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली की प्राध्यापिका सुश्री सविता को उपराष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा ने मेरठ विश्वविद्यालय में १० मार्च ९२ को सम्पन्न हुए समारोह में हिन्दी के वरिष्ट साहित्यकार पद्मश्री' आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन' के व्यक्तित्व व कृतित्व पर शोध ग्रन्थ प्रस्तुत करने के लिए पी० एच० डी० की उपाधि प्रदान की।

सुश्री सविता के शोध ग्रन्थ का विषय आचार्य सुमन का सम्पादकीय वैशिष्ट्य था और यह प्रबन्ध लाजपतराय कालेज साहिबाबाद के हिन्दी प्रवाचकाध्यक्ष डा० रामकृष्ण कौशिक के निर्देशन में प्रस्तुत किया था।

माता सीता के पवित्र जीवन से प्रेरणा लें

दिल्ली आर्य महिला सभा के तत्वावधान में विगत मास आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल मे सीताष्टमी पर्व एवं ऋषि बोधोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती प्रभात शोभा ने की। श्रीमती शोभा प्रभात डा० ऊषा शास्त्री डा० शशि प्रभा श्रीमती शकुन्तला आर्या श्रीमती प्रेम शील आदि विदुषी आर्य महिलाओं ने माता सीता के पवित्र जीवन से प्रेरणा लेकर आदर्श समाज निर्माण करने का आह्वान किया। नारी उद्धारक देव दयानन्द को भी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी इससे पूर्व विशेष यज्ञ व ध्वजारोहण किया गया। श्रीमती सरला मेहता ने अभ्यागत बहिनों का स्वागत किया।

प्रवेश प्रारम्भ

आर्य अनाथालय पटौदी हाऊस

अनाथ व निराश्रित बालक बालिकाओं के पालन-पोषण व शिक्षण के लिए आर्य अनाथालय से सम्पर्क करें। उल्लेखनीय है कि इस समय ७५० से अधिक ऐसे निराश्रितों को निःशुल्क व्यवस्था व कक्षा १ से १५वीं तक शिक्षा प्रबन्ध किया जा रहा है।

सम्पर्क करें —श्री एच० एस० रघुवंशी प्रबन्धक आर्य अनाथालय, १४८८ पटौदी हाऊस दरियागंज नई दिल्ली।

आर्य बाल संरक्षण गृह

विघन परिवार के ११ वर्ष के अधिक आयु के बच्चे जिनके माता या पिता न हों, उनके लिए प्रवेश शुरू है। अभिभावक ३० अप्रैल, ९२ तक सम्पर्क करें।—

अखिलेश भारती प्रबन्धक आर्य बाल संरक्षण गृह, आर्य समाज पुल बंगश नया मोहल्ला दिल्ली ६ (निकट आजाद मार्केट चौक)।

ग्रीष्मावकाश शिविर लगेंगे

आर्यवीर दल राजस्थान द्वारा १६ मई से २५ मई तक आर्य समाज तिजारा जिला अलवर मे तथा ८ जून से १४ जून तक आर्य समाज मन्दिर हिन्डोन सिटी जिला सवाई माधोपुर में जिला स्तरीय ग्रीष्मावकाश शिविर लगाये जायेंगे। इसी प्रकार २६ मई से ४ जून तक गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में शिविर लगेगा।

सेवा में—

5 8

सुयदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाऊस दरियागंज नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ फोन ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी०(एल१०२४/१-०९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५, अंक २३ | रविवार, ३, मई १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

अशोक विहार आर्यसमाज मन्दिर में यज्ञ शाला का उद्घाटन

यज्ञ कल्पना का प्रतीक है

दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि आर्य समाज ने जो शुद्धि अभियान चला रखा है उसके अन्तर्गत ५ अप्रैल ९२ को कोतबा (रायगढ) में ५११४० ईसाइयों को शुद्ध करके वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। दो दिन तक चले इस यजुर्वेदिक यज्ञ में पुनन्तु मामू देवजना पुनन्तु मनसा धिया मन्त्रोच्चारण के साथ दीक्षित होने वाले भाई राष्ट्र के प्रति निष्ठावान होते हैं। और इस प्रकार आर्य समाज राष्ट्र की एकता व अखण्डता को सुदृढ़ करने में प्रयासशील हैं। ये विचार स्वामी आनन्द बोध ने २६ अप्रैल को आर्य समाज मन्दिर अशोक विहार, फेज–३ में आयोजित एक समारोह में अध्यक्षीय भाषण में कहे।

स्वामी जी ने आगे बताया कि इस तृतीय वनवासी आर्य महासम्मेलन में सरकार से यह भी मांग की गयी है कि ईसाई पादरियों को देश छोड़ने के तुरन्त आदेश दिये जायें क्योंकि वे भोले भाले वनवासियों का लोभ व भय से धर्म परिवर्तन करके देश की एकता का खतरा पैदा कर रहे हैं।

स्वामी जी ९ मई को नई दिल्ली में हो रहे द्वितीय अखिल भारतीय भाषा सम्मेलन की भी जानकारी देते हुये उसके उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के प्रधान महाशय धर्मपाल ने आज प्रात आर्य समाज मन्दिर अशोक विहार, फेज-३ में निर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन किया। महाशय जी ने इस अवसर पर यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुये इसे लोक व परलोक के लिए कल्याणकारी बताया और कहा कि हमें प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक यज्ञ करना चाहिए।

मिशन की भावना से काम करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि आर्य समाज का अतीत बहुत उज्जवल था। पूर्व की भांति हमें मिल जुल कर एवं मिशन की भावना से काम करना चाहिए तभी आर्य समाज के कार्यक्रमों को और तेजी से आगे बढ़ा सकेंगे।

संगठन को मजबूत करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने संगठन व अनुशासन के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि हम सब संगठित होकर ही विश्व को आर्य बनाने के स्वप्न को साकार कर सकते हैं।

इस अवसर पर लब्ध प्रतिष्ठ वैदिक विद्वान पं० यशपाल जी सुधांशु ने यज्ञ को सुख, शान्ति व कल्याण का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि यज्ञ न केवल पर्यावरण को शुद्ध करता है, व भौतिक समृद्धि प्रदान करता है अपितु मानसिक व आध्यात्मिक उन्नति भी होती है।

कार्यक्रम में श्री ओम प्रकाश आहूजा मुख्य अतिथि थे, उन्होंने भी प्रेरक विचार रखे।

श्री राजसिंह भल्ला ने मंच का कुशल संचालन किया एवं आर्यवीरों की गतिविधि की जानकारी दी।

महात्मा हंसराज जन्म दिवस समारोह

दयानन्द का मूल्यांकन होना अभी शेष है

नई दिल्ली। देश में संस्कृत की शिक्षा अनिवार्य कर दी जानी चाहिए और संस्कृत अध्ययन के अनिवार्य हो जाने के बाद नैतिक शिक्षा की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। ये उद्‌गार पूर्व विदेश मन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी ए वी प्रबन्ध समिति द्वारा १९ अप्रैल को तालकटोरा इन्डोर स्टेडियम में आयोजित महात्मा हंसराज जन्म दिवस के अवसर पर व्यक्त किये। वे मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे।

श्री वाजपेयी ने आगे कहा कि युग पुरुष दयानन्द ने सबसे पहले स्वराज्य का मन्त्र देश को दिया था। महापुरुष का मूल्यांकन इतिहास करता है परन्तु महर्षि दयानन्द का मूल्यांकन होना अभी शेष है।

श्री वाजपेयी ने कहा कि धर्म व पंथ दो अलग-अलग चीज हैं। अंग्रेजी के सेक्यूलर शब्द का धर्म निरपेक्ष गलत अनुवाद है। धर्मनिरपेक्षता पर देश में खुली बहस होनी चाहिए। अत आर्यसमाज को धर्म निरपेक्षता पर शास्त्रार्थ कराने चाहिये। श्री वाजपेयी ने डी ए वी आन्दोलन के प्रणेता महात्मा हंसराज को श्रद्धांजलि प्रस्तुत की।

डा० वाचस्पति उपाध्याय सम्मानित

श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने इस कार्यक्रम में प्रख्यात वैदिक विद्वान डा० वाचस्पति उपाध्याय को शाल ओढ़ाकर व स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। इस प्रकार उन अन्य कर्मठ कार्यकर्त्ता, शिक्षा विद बल्कि विद्वानों को सम्मानित किया गया।

समारोह में कुलाची हंसराज माडल स्कूल, अशोक विहार द्वारा संचालित दयानन्द प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र की महिलाओं को सिलाई की मशीने निःशुल्क वितरित की गयी। कार्यक्रम में डा० वाचस्पति उपाध्याय, श्री केदारनाथ साहनी, श्री रामचन्द्र विकल, श्री आर एल भाटिया, श्री आर एस शर्मा, श्री रामनाथ सहगल आदि ने भी महात्मा हंसराज के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला।

सम्पादक—प्रो० सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

विज्ञान मय कोष में प्रयाण (७)

—देव नारायण भारद्वाज

अधिपति लक्षण—

वह अग्नि की भांति अग्रणी तेजस्वी, एवं ज्ञानवान हो। वह इन्द्र की भांति बली, ऐश्वर्यशाली एवं कर्मव्रती हो। वह वरुण की भांति वरणीय, प्रिय एवं माधुर्य पूर्ण हो वह सोम की भांति शान्त, सरल एवं सौम्य हो। वह विष्णु की भांति गति शील, व्यापनशील एवं प्रजा वत्सल हो। वह बृहस्पति की भांति सबसे बड़ा तन-से ही नहीं मन से भी बड़ा हो नियन्त्रण एवं संरक्षण प्रदान करने वाला हो। परमात्मा में यह सभी लक्षण हैं, इसी प्रकार सभी दिशाओं में व्याप्त उसके यह लक्षण हमारा संरक्षण करते हैं।

रक्षिता लक्षण—

परमात्मा के योद्धा कोई पृथक नहीं—वह स्वयं ही हैं जो सर्वत्र व्याप्त है। उसके पृथक गुणवाची नाम भी योद्धा का स्वरूप निर्धारण करते हैं। राष्ट्रपति के योद्धा-सेनापति में भी यह लक्षण होने चाहिए। उसमें बन्धनों को काटने की क्षमता हो, टेढ़ी चाल चलने वालों को वश में कर सके जो छिप कर घात करते हैं उनका पता लगा सके, स्वयं छिप कर उन पर आक्रमण कर सके। युद्ध अभियान में स्वत उत्पन्न बाधाओं को स्व विवेक से दूर कर सके। अपनी सेना के अन्दर की बुराइयों को समझ कर, जैसे शंकर के विषपान से उनका गला नीला हो गया था—वे नीलकण्ठ कहलाये। वैसे ही प्रजा की अन्दरूनी आलोचनाओं को सहन कर न्यायोचित सुधार कर सके। बाहर की आलोचनाओं या आक्रमणों का परिमार्जन करके राष्ट्र में श्वेत शुद्ध वेदों की वाणी का प्रसार कर सकें। अधिपति राष्ट्राध्यक्ष के सेनापति में यह लक्षण प्रकट होने चाहिए।

इषुः शस्त्र लक्षण—

हमारे योद्धाओं के पास पूर्ण जांच पड़ताल के बाद जो शस्त्र उपयोगार्थ दिए जावें—उनके लक्षण भी स्पष्ट होने चाहिए। सूर्य की किरणों की भांति एक दम सीधे वार कर सकते हों, वे सीधे ही नहीं आड़े तिरछे भी चल सकते हों। वे एक दूसरे के सहारे बने रहें—सम्बद्ध रहे—विरुद्ध न रहें, जैसे अधिपति का अन्न आधार शस्त्र है—शस्त्र का अन्न—आधार उसके कलपुर्जे हैं, कल पूर्जों का अन्न आधार बारूद है इनमें से कोई एक खिसक जाए तो पूर्ण प्रणाली व्यर्थ हो जाये। इसीलिए वे एक दूसरे के आधार बने रहे। आवश्यकता पर वे उसी प्रकार से प्रकट हो जायें जैसे आकाश में बिजली प्रकट हो जाती है—वह पहले चमकार करती है फिर भटकार करती है। शस्त्र विपरीत परिस्थितियों में भी कार्य कर सकते हों—नीचे से ऊपर को आक्रमण तो कर ही सकते हो, किन्तु कभी वृक्षों की भांति कार्बनडाई आक्साइड जैसे विषों को विध्रम करके आक्सीजन जैसी प्राण वायु का उत्सर्जन कर सकते हों, और शत्रु द्वारा लगाई गई आग को वर्षा करके बुझा भी सकते हों।

रमण रक्षिता में—

मनसा परिक्रमा के ६ मन्त्रों में जो ६ रक्षिताओं का उल्लेख किया गया है, उन पर विचार करने से ज्ञात होता है कि संसार का सभी ताना बाना इन्हीं के कारण और इन्हीं के द्वारा है। यदि समाज में हमें बन्धन में डालने वाले व्यक्ति न हों तो हम उनसे बचने का उपाय ही क्यों करें। इसी प्रकार कुटिल चाल चलने वाले, छिप कर घात करने वाले, कुछ क्रियाओं की प्रतिक्रिया स्वरूप स्वयं उत्पन्न होने वाले दोष, अपनी ग्रीवा से कल्मष को प्रकट करने वाले—कटु भाषी ऊपर से श्वेत भीतर से विघटनकारी न हों, तो हम इन सबसे बचने का उपाय क्यों करें! अधिपति प्रभु के युद्धक गुण या राष्ट्रपति के सेनापति इन्हीं छओं दोषों को अति क्रमणों को अपने बाणों के द्वारा हटाने का अभियान चलाते है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि सूर्य की किरणें भी अपनी गति के द्वारा यही कार्य करती हैं।

हम सभी जानते हैं कि किरणों में सात रंग होते हैं। इन्द्र धनुष में वे सभी रंग हमें पृथक्-पृथक् दिखाई देते हैं, किन्तु धरती पर वे समन्वय के रूप में बिखरने के कारण श्वेत ही दिखाई देते है। वैज्ञानिकों का कथन है कि पृथ्वी की एक निश्चित ऊंचाई पर एक मोटी 'ओजोन' की पर्त या दीवाल है। यह किरणें उससे छन कर ही नीचे आती हैं। यदि वह दीवाल छिन्न-भिन्न हो जाये तो यही जीवन संचार कर किरणें संहारक बन कर सृष्टि में विनाश का कारण बन सकती हैं।

सायणाचार्य आदि पौराणिक मनीषियों ने इन सभी रक्षिताओं को ऊपर वर्णित विविध चाल एवं रंग रूप के कारण विभिन्न प्रकार के सर्पों की संज्ञा दी है। सर्प प्राणी रूप में या रवि किरणें सर्प न करके ही चलते हैं, इसलिए ये दोनों सम-अर्थबोधक हो जाते हैं। पूज्य महर्षि ने भी दक्षिण में कीट पतंग, वृश्चिक आदि तिर्यक जीव पश्चिम में बड़े बड़े अजगर सर्पादि विषधारी प्राणियों का संकेत किया है। उपासक का मन्तव्य है कि तुम इन्हें अपने से बाहर समाज में, सृष्टि में ही खोजते रहोगे—जरा अपने हृदय के अन्दर भी झांक कर देख लो—यह कहीं तुम्हारे अन्दर ही तो नहीं छिपे है। तो सब से पहले तुम इन्हें प्रभु चिन्तन, उसके अधिपति गुण चिन्तन उसके रक्षक गुण चिन्तन और उसके शस्त्र गुण चिन्तन के द्वारा बाहर निकाल दो—उनको समाप्त कर दो। ऐसा करने पर ही तुम्हारा हृदय शुद्ध व शान्त हो जायेगा।

वन्दना के स्वर गूंज उठें—

कवि सम्मेलन में अच्छी कविता सुनने पर, व्याख्या में अच्छा प्रसंग सुनने पर, संगीत में अच्छा राग सुनने पर, प्रकृति में अच्छा दृश्य देखने पर, अपने बिछुड़े प्रिय से मिलने पर कोई यकायक वाहवाह' कर उठता है। मौन या मुखर उल्लास उसके हृदय में हिलोरें लेने लगता है। इसी भांति उपासक का हृदय जब उक्त वर्णित दोषों से रहित हो जाता है तो वह सभी दिशाओं में व्याप्त अधिपति को अधिपति के सेनापति को और सेनापति के शस्त्रों के प्रतीक रूप में इन सभी गुणों के माध्यम से ईश्वर की वन्दना कर उठता है—उसको नमस्कार कर उठता है। (१) असित (बन्धन रहित) (२) स्वज (अजन्मा) (३) श्वित (शुद्ध स्वरूप) ईश्वर के यही तीन गुण हमारे रक्षक हैं। (१) तिरश्चिराजी (तिर्यक चाल वाले व्यक्ति या कीट पतंग वृश्चिक) (२) पृदाकु (बड़े बड़े अजगर सर्पादि विषधारी प्राणी) (३) कल्माष ग्रीवा (वृक्ष वनस्पति की भांति उल्टे ऊपर उठने वाले प्राणी) भी विषैली गैसों का स्वयं शोषण कर हमको स्वच्छ प्राण वायु प्रदान करते हैं। यह सभी गुण हमारे लिए रक्षक हैं। इनके चिन्तन-स्मरण से हमारा नमस्कार परम प्रभु के लिए गुंजित हो उठता है। उसके उपकारों के प्रति हमारा मस्तक विनत हो उठता है।

उठ गई अहिंसा की उजियाली—

हमारे स्वार्थ के मार्ग में आने वाला हमारे द्वेष का कारण बन जाता है, या अन्य किसी के स्वार्थ के मार्ग में हम रोड़ा होते हैं, तो हम उसके भी द्वेष के कारण बन जाते हैं। द्वेष का परिणाम होता है हिंसा—दोनों एक दूसरे को मार देना चाहते हैं। पराजित न हो तो अपमानित कर देना चाहते हैं। इस प्रकार यह द्वेष विद्वेष बढ़ते बढ़ते महान् हिंसा का कारण बन जाता है। उदाहरण रूप में राम रावण युद्ध महाभारत विश्व युद्ध और नवीनतम बुश-सद्दाम युद्ध हमारे सम्मुख हैं। हम सभी इस हिंसा की आग में मन, वाणी या कर्म के परिसर में जलते रहते हैं। अन्दर का द्वेष भाव ही बाहर हिंसा के रूप में उमड़ पड़ता है। किसी रूप में भी सबल का निबल को सताना हिंसा है। निबल भला सबल को सता ही कैसे सकता है किन्तु वह भी प्रच्छन्न द्वेष के ईंधन पर हिंसा की आग में भुनता रहा है। इस प्रकार यह द्वेष हमें प्रभु चिन्तन से दूर ले जाता है।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि हमारा हृदय श्वेत शान्त हो चुका है। हमें प्रभु के अधिपति रक्षिता और इषु गुणों का सहारा मिल गया है—सान्त्वना मिल गई है तब तो हमें हिंसा छोड़ कर अहिंसा अथवा द्वेष छोड़ कर निर्द्वेष की भूमि पर आ जाना चाहिए। स्वार्थ ही राग द्वेष का आधार होता है—यही अन्याय के लिए रंगित भी करता है। यदि हम सबल सक्षम हैं तो दया करुणा की वर्षा से निबल की रक्षा कर लेंगे। यदि हम निर्बल और अक्षम हैं—तो अपने अन्दर छिपे द्वेष का निवारण कैसे करेंगे? उस प्रभु के न्याय पर छोड़ कर हम द्वेष रहित हो सकते हैं। राग द्वेष से मुक्त होकर हमारी मनसा परिक्रमा पूर्ण हो जायेगी और हम प्रभु दर्शन की राह में आगे बढ़ जायेंगे।

मनु महाराज के आधार पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने पूना प्रवचनों में धर्म के ग्यारह लक्षणों में अहिंसा को प्रथम स्थान दिया है। अष्टांग योग के प्रथम अंग यम को सर्वप्रथम उपाग भी अहिंसा ही है। जिस प्रकार जड़ एक होती है उससे तना-शाखा उपशाखा-टहनी पत्र आदि विकसित हो जाते हैं, उसी प्रकार अहिंसा से ही योग अथवा धर्म के लक्षण विस्तार प्राप्त करते जाते हैं। चंचल मन को इसी धर्म तत्व पर केन्द्रित कर लेना ही—विज्ञानमय कोष में हमारा प्रयाण है।

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

स्वामी रामेश्वरा-नन्द सरस्वती

आर्य समाज के विभिन्न आन्दोलनों के कर्मठ सूत्रधार, महान तपस्वी विद्वान सन्यासी स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती का निधन ८ मई १९९० को हुआ था। स्वामी जी महाराज ने अपने विषय मे किसी को कभी कुछ नहीं बताया। अत जन्म तिथि जानने के सभी प्रयास निरर्थक ही रहे। निधन के समय उनकी आयु सम्भवत १०१ वर्ष रही होगी। इतिहास मे ऐसे अनेक युगपुरुषों के नाम आते हैं जिनके जीवन वृत्त का पता नहीं होता, पर उनका कार्यवृत्त इतना गोरव-शाली होता है कि उनकी प्रासंगिकता सदा सदा ही बनी रहती है। ऐसे ही कर्मठ महामना थे, स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती। आर्यसमाज स्थापना दिवस १९९२ के अवसर पर आर्यसन्देश का विशेषांक उनकी स्मृति मे प्रकाशित किया गया। यह उस तप पूत ऋषिवर के प्रति हमारी श्रद्धांजलि थी। सच्ची श्रद्धांजलि तो वह होगी जब सभी आर्यजन मिल कर, आर्य समाज की पताका को दिग-दिगन्त तक ले जाने का प्रयास करें, सकल्प ले तथा सफलता प्राप्त करें।

स्वामी जी महाराज की कीर्ति का स्मारक गुरुकुल घरोण्डा है, वे सारा जीवन आर्ष पाठ विधि के अनुसार वैदिक ज्ञान का आलोक विकीर्ण करते रहे।

स्वामी जी ने आर्य समाज द्वारा चलाए गए सभी आन्दोलनों में भाग लिया था। गोरक्षा आन्दोलन में तो वे प्रथम पंक्ति मे रहे। १९६१ मे पजाबी सूबे की मांग को लेकर जब मास्टर तारासिंह ने आमरण अनशन किया तो उन्होंने भी १६ अगस्त १९६१ को यजुर्वेद पारायण यज्ञ के पश्चात् आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया था। उन्होंने अपना अनशन मास्टर तारासिंह के अनशन समाप्त कर देने के बाद ही २४ अगस्त को समाप्त किया। उस समय स्वामी जी को मारने के भी अनेक प्रयास किए गये थे।

स्वामी जी १९६२ मे लोक सभा के सदस्य बने थे। आज भी उनकी ओजस्वी वाणी, स्पष्ट वादिता तथा क्रान्तिकारी राष्ट्रीय विचारों को स्मरण किया जाता है। उन्होने भारतीय वैदिक संस्कृति के सबल पक्ष को लोक सभा मे प्रस्तुत किया।

स्वामी जी ने आर्य जगत को अनेक श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियां प्रदान की। उनकी सन्ध्या भाष्यम्, सन्ध्या सुमन, देव यज्ञ, धनार्थव पुरुष, भ्रमोच्छेदक, नमस्ते प्रदीप, महर्षि दयानन्द का योग, महर्षि दयानन्द और राजनीति, महर्षि दयानन्द और काशी शास्त्रार्थ वैदिक साहित्य की अमूल्य थाती हैं।

७ नवम्बर १९६६ का दिन जब पार्लियामेंट की ओर उन्होंने हाथ उठा कर कहा था—पार्लियामेंट को घेर लो, सदा याद किया जाएगा। यह नेतृत्व प्रतिभा, स्वामी श्रद्धानन्द के दिल्ली के घण्टाघर के सामने प्रस्तुत सिंहनाद का भी स्मरण कराती है, गोलियां चलानी है तो मेरे सीने पर चलाओ।

स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज की राष्ट्रीय सेवाओं तथा आर्य सामाजिक सेवाओं के लिए, हम उन्हे अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते है। —डा० धर्मपाल

पर्वतीय क्षेत्रों मे वेद प्रचार

तह० ऊखीमठ के विकट कोट माहेश्वरी में २० से ३० मार्च तक वैदिक प्रचार हेतु गबर सिंह राणा के प्रयासो से शिविर लगाया गया जिसमे श्री गबरसिंह जी ने अपने ओजस्वी प्रवचनों के द्वारा क्षेत्रीय निवासियों पर गहरा प्रभाव छोड़ा है उनके प्रयत्नों से उस क्षेत्र में पशुबलि के विरुद्ध भावना बननी प्रारम्भ हो रही है। ४ से ११ अप्रैल तक इसी प्रकार का एक शिविर कालीमठ मे भी लगाया गया है।

सम्पादक के नाम पत्र

दूरदर्शन पर आर्य समाज पर सुन्दर कार्यक्रम

अभी पिछले दिनो दूरदर्शन पर आर्य समाज पर कार्यक्रम देखा। स्व दयानन्द के जन्म दिवस पर एक कार्यक्रम दिखाया, जिसमे डा० धर्मपाल, श्री आशा जोशी तथा डा० महेश विद्यालंकार ने भाग लिया। इन विद्वानो ने स्वामी दयानन्द के जीवन तथा उनके कृतित्व एवं उद्देश्यो पर प्रकाश डालते हुए आर्य समाज की उपलब्धियों की चर्चा की। मेरे विचार मे यह एक प्रेरणादायक कार्यक्रम था। ऐसे कार्यक्रम दूरदर्शन पर बराबर होते रहने चाहिए। मैं कई वर्ष से डा० धर्मपाल से आग्रह करता रहा हूं कि दूरदर्शन पर स्वामी दयानन्द स्वामी श्रद्धानन्द आदि के जन्म दिवस तथा पुण्य तिथियो पर 'सत्यार्थ प्रकाश' पर तथा आर्यसमाज के महत्वपूर्ण कार्यों पर दूरदर्शन से भी कार्यक्रम प्रस्तुत करने का प्रयत्न करना चाहिए। मुझे प्रसन्नता है कि वे अपने प्रयास मे सफल रहे हैं, पर इन कार्यक्रमों की संख्या बढ़नी चाहिए। विदेशो में जहां आर्यसमाज क्रियाशील है, उन पर भी कार्यक्रम होने चाहियें। मेरे विचार मे तो आर्य समाज को एक ऐसे धारावाहिक की योजना देनी चाहिए, जिसमें उन के स्वाधीनता संग्राम मे योगदान का इतिहास स्पष्ट हो सके। आर्य समाज ने अनेक त्यागी, बलिदानी, तपस्वी, देश प्रेमी, शिक्षा-विद् पैदा किये हैं। इन महापुरुषो की कहानी दूरदर्शन पर दिखाई जानी चाहिए। आर्य समाज चाहे तो वह यह मांग कर सकता है कि दूरदर्शन के कार्यक्रम का आरम्भ वेद मन्त्रों से होना चाहिए।

निश्चय ही आर्य समाज को दूरदर्शन के सही उपयोग पर विचार करना चाहिए क्योंकि इस साधन से पूरे समाज मे जागृति उत्पन्न की जा सकती है।

डा० कमल किशोर गोयनका
ए-९८, अशोक विहार फेज प्रथम दिल्ली-५२

श्रीमान सम्पादक जी नमस्ते,

'आर्य सन्देश' का आर्य समाज स्थापना दिवस एवं स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती संयुक्तांक अभी प्राप्त हुआ है, तदर्थ धन्यवाद।

इससे पूर्व का 'स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती' विशेषांक अभी प्राप्त नहीं हुआ। सम्भवत उसमे मेरा लेख भी छपा होगा। कृपया भिजवाने का कष्ट करें।

डा० रामनाथ वेदालंकार
वेद मन्दिर गीता आश्रम ज्वालापुर हरिद्वार

आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह

शनिवार ४ अप्रैल १९९२ को आर्य समाज पालम कालोनी ने प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य जी की अध्यक्षता मे आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस शुभावसर पर पं० श्यामप्रकाश आर्य जी के ब्रह्मत्व मे यज्ञ किया गया।

इस दिन बच्चों का कार्यक्रम जैसे कहानी चुटकले वाद विवाद प्रतियोगिता एवं भाषण प्रति० आयोजित किये गये। दशम वर्ग के छात्र श्री निशांत कुमार ने कहा कि त्याग और बलिदान की इस भूमि पर जन्मे तप पुत्र महर्षि दयानन्द सरस्वती को कोटि-कोटि नमन है जिन्होंने कपोल कल्पित गाथाएं तथा विभिन्न आडम्बरों को दूर कर सभ्यता संस्कृति तथा वैदिक धर्म को पुनः जागरण के लिए स्थापित किया था। आर्य युवा वि० परिषद के प्रचार सचिव श्री रमेश चन्द्र वाजपेई ने कहा कि सरकार नव वर्ष के कार्यक्रम दूरदर्शन पर ३१ दिसम्बर व १ जनवरी को न दे कर चैत्र शुक्ल १ को देने चाहिए व आर्य संस्कृति का प्रसार विभिन्न प्रचार माध्यमो से जनता मे करना चाहिए। आर्य युवा विकास परिषद के अध्यक्ष डा० जसबीर आर्य ने कहा कि आज आर्य समाज की शिथिलता को खत्म कर सामाजिक गति देने के लिए इस नव वर्ष के उपलक्ष में दृढ़ संकल्पित हो। आर्य युवा परिषद के कार्यकारिणी सदस्य श्री चन्द्र माधव प्रसाद आर्य ने गीत के माध्यम से महर्षि के मंतव्य को लोगो के समक्ष रखा। अन्त में अध्यक्षीय भाषण में श्री ओमप्रकाश आर्य जी ने कहा कि इस आर्य समाज के मंच मे मैं इस सम्पूर्ण विश्व की मानव जाति धार्मिक कल्याण समृद्धि एवं विकास की कल्पना करता हूं। यही आर्य समाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर हमारा हार्दिक स्वर है।

कहां गए वे लोग : दानवीर सेठ छाजूराम जी

(मर्मस्पर्शी कतिपय अन्तरंग संस्मरण)

— ब्रह्मदत्त स्नातक, पत्रकार —

पिछले डेढ शती मे हजारो स्त्री-पुरुषो ने यथाशक्ति तन मन और धन से आर्य समाज एव जनता जनार्दन की सेवा की। यहा हम एक ऐसे श्रद्धालु दानवीर का उल्लेख कर रहे हैं, जिसका पूरा विवरण इतिहास लिखने वालो ने नहीं किया, परन्तु करोड़ो रुपयों का दान उन्होने किया और वह भी आत्म-प्रशसा से दूर रहकर विलिप्त भाव से। वे आर्य समाज विधान सरणी (कलकत्ता) के प्रधान स्वर्गीय चौधरी छाजूराम जी, जिन्हे सरकार से नाइटहुड (सर) सी आई ई व जी सी आई ई प्राप्त थी और पटसन व्यापार के क्षेत्र मे सर्वोच्च शिखर पर पहुचकर भी सादगी और विनम्रता की मूर्ति थे। उन्होने यावज्जीवन रोगियों, दीन-दुखियो अकाल पीडितो की सहायता की। शिक्षा सस्थाओ की स्थापना मे लाखो रुपये विशेषत पिछड़े क्षेत्रो मे दान दिये। प्रस्तुत उल्लेख हमारे बाल्यकाल का है, जिसको 6 वर्ष की आयु मे हमने देखा था और स्वर्गीय पिताश्री प० गंगादत्त शर्मा (आश्रम परिवर्तन के बाद स्वामी विश्वेश्वरानन्द सरस्वती) से समय समय पर सुनने को मिले थे।

तृतीय दशक के प्रारम्भ मे श्री मद्यानन्द अनाथालय (बालगृह) अजमेर के कुछ छात्रों को लेकर धन सग्रहार्थ कलकत्ता आर्य समाज मे पिता जी ठहरे। सबसे प्रथम दानदाता चौधरी छाजूराम जी ने दान सूची मे अपने नाम के साथ 2000 रु लिखकर सेठ जुगल किशोर बिड़ला के पास भेज दिया। बिड़ला जी ने भी 2000 रु दान लिखकर उस सूची मे चौधरी साहब के नाम के आगे लिखे 2000 को काटकर 5000 रु लिखकर उन्हे दिखला देने को कहा। चौधरी छाजूराम जी ने उस सूची मे बिड़ला जी के लिखे 2000 को भी काटकर 5000 रु कर दिये और वह सूची उन्हें दिखाने को लौटा दी तथा परिचित सेठो के अन्य नाम भी लिख दिये। इस हास-परिहास मे स्वल्प समय मे 18,000 रु सग्रह हो गये। पिताजी वापस अजमेर इस शर्त के साथ लौट पाये कि वे इसके बाद तीन मास के भीतर कलकत्ता आकर वहां आर्य समाज मे आचार्य पुरोहित तथा आर्य कन्या विद्यालय मे धर्म शिक्षा पढ़ाने का कार्य करेंगे। दक्षिणा नियत नहीं की थी।

कलकत्ता आकर चौधरी साहब ने अपने विशाल भवन की ऊपरी मंजिल पर पिताजी माताजी, एव 5 वर्ष के मुझे कमरो मे ठहरा दिया और भोजन के लिये अपने निजी भोजनालय मे व्यवस्था कर दी। वे स्वय तथा उनका परिवार भी वहीं जीमते थे। खाने की व्यवस्था चौके मे होती थी। महीने भर कार्य करने के बाद गद्दी (व्यावसायिक दफ्तर) से बड़े मुनीम जी ने एक सौ रुपये पिताजी को लिफाफे में रखकर भेज दिये। निवास-भोजन का मूल्य नही लेते थे। इस प्रकार 1 वर्ष पूरा होने के बाद पिताजी ने कहा चौधरी साहब, कार्य मैं आर्य समाज का करता हू मैं वहा से वेतन ले लिया करूगा।

इस पर चौधरी छाजूराम जी ने जो उत्तर दिया वह उनका गर्वोक्ति नहीं, चरम विनम्रता का द्योतक था। बोले —यदि आप ऐसा ही चाहते है तो वैसा हो जायगा। हमारा इस वर्ष का धर्मादा 2 लाख 56 हजार रुपयो का है। आपके निमित्त तो साल मे 1200 रु योग होगा। वह हम आर्य समाज को दे देंगे। आप को वहा से आ जायेगा।

वे कहने लगे कि मैंने गरीबी की चरम सीमा देखी है और आज मुझे लोग करोड़ पति कहते हैं। मैं जाटों मे जन्मा, जिनका सम्बन्ध व्यापार से नहीं होता, पर वही अब मेरी आजीविका है। तीसरे, इतना धनपति होने पर भी धनिको का कोई व्यसन या रोग मुझे नहीं है। यह सब स्वामी दयानन्द जी महाराज की शिक्षाओं का प्रभाव है। अत धर्म और समाज के निमित्त जो भी दान करें, वही कम है। इस प्रकार उन्होने सारा जीवन आदर्श आर्य का जीवन बिताया।

वे अत्यन्त सादा भोजन जीवन एव वेषभूषा धारण करके, दीन दुखियो की सहायता करते व नियमत सध्या-हवन सपरिवार करते थे तथा प्रति रविवार को आर्य समाज के सत्सग मे दो घोडो की शानदार टमटम मे सपत्नीक आते थे और पिताजी माताजी, के साथ मैं भी उसमें बैठता था। जिस जमाने मे 1 लाख रुपये मूल्य की राइल्स रायस कार सारे देश के भीतर 10 थीं उनके पुत्र सज्जन कुमार भी वैसी एक कार के स्वामी थे। उनका खानपान, आचरण पश्चिमी ढग का था और असमय मे काल कवलित हो गये। उनके द्वितीय पुत्र महेन्द्र कुमार उनके उत्तराधिकारी थे तथा एक मात्र पुत्री कमला जी जन्म से विकलांग थीं। चौधरानी जी का मुझ पर अपार वात्सल्य एव माताजी के साथ आदर व मैत्री थी। उनके साथ बचपन की स्नेह की अनेक घटनाएं मुझे आज भी याद हैं।

पिताजी सुनाते थे कि हमारे पैतृक स्थान साहनपुर की जाट रियासत के राजा भरत सिंह की पौत्री के विवाह का प्रस्ताव लेकर जब वे चौधरी छाजूराम जी से मिले, तब उन्होने उस आमिषाहारी परिवार से सम्बन्ध करने मे असमर्थता प्रकट की थी। उदार इतने थे कि हमारे आर्यशाला अध्यापक मास्टर जोधसिंह जी के पुत्र स्वर्गीय महेन्द्र सिंह जी के लिये छात्रवृत्ति लाहौर मे बाध दी थी।

मेरी माता जी के रोगी होने पर वे और उनकी पत्नी कलकत्ता के प्रसिद्ध डाक्टरो की टीम लेकर मौजूद रहे। चौधरी छाजूरामजी को व्यवसाय मे घाटा होने पर भी उन्होने धर्मभाग को अन्त तक नहीं त्यागा। वे स्वय मूलत हरियाणा के निवासी थे। भिवानी मे एक नेत्र चिकित्सालय की स्थापना, रोहतक मे डिग्री कालेज, सांगरिया (राजस्थान) मे विद्यापीठ के अलावा अकाल पीड़ितो एव गो सेवा, गुरुकुलो के लिये करोडो रुपये दान मे उन्होने जीवन मे दिये। उनकी स्मृति को शतश नमन।

प० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी

दादरी चलो

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान मे 15 से 17 मई, 92 तक चरखी दादरी (जिला भवानी) मे प० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रतिष्ठित सन्यासी, विद्वान वक्ता, गायक आदि ऋषि मिशन के लिए समर्पित युवा मनीषी प० गुरुदत्त जी को श्रद्धाजलि अर्पित करेंगे। समारोह मे विचार गोष्ठियाँ, कवि सम्मेलन, नशाबन्दी सम्मेलन, भाषण-प्रतियोगितायें भी आयोजित की गयी हैं।

इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए विद्वतापूर्ण लेख व विज्ञापन तथा इसे सफल बनाने के लिए सुझाव एव तन, मन, धन से सहयोग की प्रार्थना है। सभी आर्य जन सादर आमन्त्रित हैं। शताब्दी समारोह मे भाग लेने वाले महानुभाव 15 दिन पूर्व सूचित करें ताकि आवास का उचित प्रबन्ध किया जा सके।

उप-कार्यालय—फव्वारा चौक, रोहतक रोड, चरखी दादरी (जिला भिवानी) हरयाणा।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	**सुमेधानन्द सरस्वती**
सरक्षक	सयोजक

पडित गुरुदत्त निर्वाण शताब्दी समारोह

प्रो० शेरसिंह	**सूबेसिंह**	**सत्यनारायण**
प्रधान	मन्त्री	प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा		आर्य समाज चरखी दादरी

—आर्य समाज राजपुर (बरेली) के सक्रिय कार्यकर्ता एव शुद्धि प्रेमी श्री छब्बू आर्य का 16 मार्च को आकस्मिक निधन हो गया। वे 28 वर्ष के थे। उनके परिवार मे पत्नी, दो पुत्र व एक पुत्री हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे व शोक सतप्त परिवार को दारुण दुख सहने की शक्ति दे।

भगवानदास मल्होत्रा का निधन

कर्मठ आर्य समाजी, माडल टाऊन दिल्ली निवासी श्री भगवान दास मल्होत्रा का 23 जनवरी को निधन हो गया। वे दीन दुखियो की सेवा मे सलग्न रहते थे। पुण्यात्मा की स्मृति को प्रणाम।

हिन्दी में निमंत्रण-पत्र छपवाएं : सांस्कृतिक प्रदूषण रोकें

यद्यपि पिछले पर्याप्त समय से अनेक व्यक्ति अपने पारिवारिक संस्कारों के निमन्त्रण पत्र हिन्दी में छपाने लगे हैं तथापि उन अनेक घरानों के जिनका योगदान हिन्दी प्रचार-प्रसार में रहा है, निमन्त्रण पत्र अभी भी अंग्रेज़ी में छप रहे हैं। जब मुझे अंग्रेजी में छपा हुआ निमन्त्रण पत्र प्राप्त होता है तो लगता है कि किसी ने हथौड़ा मार दिया हो और मैं प्राय पूछ लेता हू कि क्या संस्कार भी अंग्रेजी में होगा ? क्या पण्डित जी उसके मन्त्रो की व्याख्या और उपदेश भी अंग्रेजी मे करेंगे ? प्राय उत्तर दिया जाता है कि जल्दी मे कार्ड अंग्रेजी मे छप गये अथवा हिन्दी मे अच्छे कार्ड बाजार में उपलब्ध नही हैं या बच्चो ने अंग्रेजी मे कार्ड छपवा लिए ये सब थोथी दलीलें हैं। अब हिन्दी मे एक से एक सुन्दर कार्ड बाजार मे उपलब्ध हैं। जब लड़के के लिए लड़की और लड़की के लिए लड़का ढूढने का कार्य परिवार के सभी बुजुर्ग मिल कर करते हैं तो निमन्त्रण पत्र की छपाई को भी गम्भीरता से लिया जाना चाहिए। इसी संदर्भ मे २-३ घटनाए बताना सामयिक होगा।

आर्य समाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी वेदानन्द जी महाराज विश्व की ७-८ भाषाओं के प्रकाण्ड विद्वान् थे। उन्हें एक बार अपने एक आर्य समाजी शिष्य का निमन्त्रण-पत्र अंग्रेजी मे प्राप्त हुआ। उन्होंने उसका संस्कृत में उत्तर दिया। मैंने पूछा—'महाराज! वह संस्कृत को कैसे समझेगा ?" उन्होंने उत्तर दिया कि "जब वह मूर्ख मेरी भावनाओ तक को नही समझता और अंग्रेजी मे कार्ड छपवा कर मुझे मानो चिढ़ाना चाहता है तो मैं उसकी सुविधा की परवाह क्यो करूं ?

जब प्रो० शेरसिंह भारत सरकार मे राज्य मन्त्री थे तब उनकी सुपुत्री डा० नीलम का विवाह होना था और उन्होंने मुझे निमन्त्रण पत्र का नमूना बना कर देने को कहा। मैंने नमूना द्विभाषी (हिन्दी/अंग्रेजी मे) बना कर दिया। उन्होंने मुझ से पूछा कि अंग्रेजी मे नमूना किस लिए ? मैंने कहा कि आपके निमन्त्रण-पत्र हिन्दीतर भाषियो को भी जाएगे जिनमे अनेक राज्यपाल और वरिष्ठ मन्त्री भी होंगे। उन्होने कहा कि विवाह मेरा निजी मामला है और निमन्त्रण पत्र केवल हिन्दी मे छपेंगे और वे हिन्दी में ही छपे। इस घटना से अनेक राजनेता और धार्मिक नेता प्रेरणा ले सकते है।

उसके कुछ काल बाद मेरे पुत्र का विवाह हुआ जो आस्ट्रेलिया (मूल नाम आस्त्रालय) मे कम्प्यूटर इन्जीनियर है। मैंने जब निमन्त्रण पत्र केवल हिन्दी मे छपवाने चाहे तो बेटे ने विनय पूर्वक मुझ से कहा कि आस्ट्रेलिया मे मेरे सभी अधिकारी और साथी केवल अंग्रेजी समझते है हिन्दी नही जानते। मैंने उसका हल यह निकाला कि भारत में जाने वाले सभी निमन्त्रण पत्र केवल हिन्दी मे हो, केवल आस्ट्रेलिया के लिए कुछ निमन्त्रण पत्रो के पीछे अंग्रेजी मे भी छपवा लिया जाए और आस्ट्रेलिया मे वे द्विभाषी रूप मे भेजे जाए।

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद से जुडे कई कार्यकर्ताओ में अनेक हिन्दीतर भाषी भी हैं। मुझे याद है कि एक तमिल भाषी ने अपना निमन्त्रण पत्र ऊपर हिन्दी मे तथा नीचे तमिल भाषा मे छपवाया था।

आशा है कि उपर्युक्त उदाहरणो से अंग्रेजी मे निमन्त्रण पत्र छपवाने वाले प्रेरणा लेंगे। अंग्रेजी मे निमन्त्रण पत्र छपवाने वाले सज्जनो को एक क्षण रुक कर यह सोचना चाहिए कि हम ऐसे किन बहुसंख्यक मित्रो सम्बन्धियो के लिए अंग्रेजी मे निमन्त्रण पत्र छपवा रहे हैं जो अपनी भाषा न जान कर केवल अंग्रेजी जानते तथा समझते हैं। कई सज्जन अंग्रेजी मे निमन्त्रण पत्र होने पर उन कार्यक्रमो का बहिष्कार करते हैं। यदि हम उनका सामाजिक बहिष्कार न भी करे तो अपना क्षोभ और असहमति तो प्रकट कर ही सकते हैं। अन्यो द्वारा भी इसी प्रकार सोचा जा सकता है। अंग्रेजी में निमन्त्रण पत्र छपवाने वालो को निरुत्साहित तो किया जाना चाहिए। निमन्त्रण-पत्रो की भाषा व्यक्तियो की अस्मिता और सभ्यता की पहचान होती है। अत यह आवश्यक है कि निमन्त्रण-पत्र हृदय की भाषा हिन्दी मे छपें। याद रखिए सांस्कृतिक प्रदूषण वायु और जल प्रदूषण से भी अधिक भयंकर है।

उपरोक्त तथ्य विवाह आदि संस्कारो तथा नव वर्ष और दीपावली आदि के बधाई पत्रो पर भी लागू होते हैं।

जगन्नाथ, ए-२६, रोहित कुंज डा० रानी बाग, दिल्ली-३४

जरा सोचिए

जरा सोच कर देखिए कि अंग्रेजी भाषा व अंग्रेज बच्चो के साथ होड़ कराने में हमारे बच्चों पर कितना वजन पडता है। पूना के कुछ प्रोफेसरो से मेरी बात हुई। उन्होंने बताया कि चूंकि हर भारतीय विद्यार्थी को अंग्रेजी के मार्फत ज्ञान सम्पादन करना पड़ता है, इसलिए उसे अपने बेशकीमती वर्षों मे से, कम से कम, छह वर्ष अधिक जाया करने पडते हैं। हमारे स्कूलो और कालेजो से निकलने वाले विद्यार्थियो की संख्या में इस छह का गुणा कीजिए और फिर देखिए कि राष्ट्र के कितने हजार वर्ष बर्बाद हो चुके हैं।

—महात्मा गांधी

कृपया ध्यान दें

(१) सांस्कृतिक प्रदूषण जलवायु प्रदूषण से भी अधिक भयंकर है।

(२) जब हिन्दी मे भेजे गये तार सस्ते पडते हैं तो अंग्रेजी मे तार क्यो भेजे जाय।

(३) अब जब अनेक बड़े-बड़े औद्योगिक और व्यापारिक प्रतिष्ठान अपना अपना काम काज तथा गैर सरकारी और सरकारी कार्यालयो से पत्राचार हिन्दी मे करते हैं, चैक हिन्दी में लिखते हैं, प्राप्ति पत्र (रसीदें) हिन्दी मे छपाते हैं, प्रचार सामग्री हिन्दी मे बनवाते हैं, आय-व्यय लेखा आदि हिन्दी में रखते हैं तब आप भी ऐसा ही कीजिए और देश का गौरव बढ़ाइये।

अधिक जानकारी के लिए आप 'उद्योग एवं व्यापार में हिन्दी का महत्व' शीर्षक का लेख संयोजक, राजभाषा कार्य, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली २३ से मंगा कर पढ़िये।

राम के पवित्र जीवन से शिक्षा लें

नई दिल्ली भगवान रामचन्द्र मर्यादा के प्रतीक थे। आज त्याग के कारण ही उनकी उज्ज्वल कीर्ति जन-जन को प्रेरणा दे रही है। भगवान राम के पवित्र जीवन से शिक्षा ग्रहण कर हमे अपने माता पिता की सेवा करनी चाहिए और समाज व राष्ट्र के लिए त्याग का संकल्प लेना चाहिए। ये विचार आर्य समाज दीवान हाल मन्दिर मे ११ अप्रैल को आयोजित मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के जन्मोत्सव के अवसर पर पण्डित नेत्रपाल शास्त्री, पं० महेन्द्रकुमार शास्त्री, श्री सूर्यदेव-प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दीवान हाल आर्य समाज मन्दिर के प्रधान श्री मूलचन्द गुप्त ने व्यक्त किए।

आज ही के पवित्र दिन आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र जी देहलवी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य मे भी इस कार्यक्रम मे समाज व राष्ट्र के प्रति देहलवी जी की बहुमूल्य सेवाओ का स्मरण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इससे पूर्व आज प्रात समाज मन्दिर मे एक विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम मे राजधानी की अनेक समाजों के गणमान्य अधिकारी एवं आर्य अनाथालय पटौदी हाऊस के छात्र भी भारी संख्या मे उपस्थित थे। शान्ति पाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

पानीपत में वैदिक शोध संस्थान

पानीपत आर्य समाज बड़ा बाजार पानीपत द्वारा पूर्व स्थानीय आर्य स्कूल के मैदान मे एक अद्वितीय तथा अनुपम शोध संस्थान वैदिक आश्रम के निर्माण कार्य का शुभारम्भ सम्पन्न हुआ

आर्य समाज पानीपत के प्रधान श्री रामानन्द सिंगला के अनुसार इस वैदिक आश्रम में प्रमुखत वेदो तथा आर्ष ग्रन्थों पर शोध संस्थान, आयुर्वेद शोध संस्थान व विद्वद् जन वृद्ध आश्रम का निर्माण होगा। इस योजना पर लगभग एक करोड रुपये खर्च होंगे जिस के लिए नगर तथा पूरे देश के विभिन्न क्षेत्रों के दानी महानुभावो के पवित्र संकल्प लिए हैं। इस योजना के लगभग दो वर्षों में पूरा होने की सम्भावना है।

इसी उपलक्ष्य मे एक नवशस्येष्टि यज्ञ का आयोजन भी वैदिक आश्रम स्थल पर किया गया जिसकी पूर्णाहुति पर ही शिलान्यास कार्य प्रारम्भ हुआ।

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का भव्य वार्षिकोत्सव सम्पन्न

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी का २१वां वार्षिकोत्सव बडे समारोहपूर्वक गत ३, ४ ५ अप्रैल को सम्पन्न हुआ। इस त्रिदिवसीय महोत्सव मे देश के विभिन्न कोने हैदराबाद पूना, बेलगांव, धूलिया, ब्यावर, जामनगर आदिपुर कच्छ गांधी धाम, बिलासपुर, उत्तर प्रदेश बिहार पंजाब आदि से पधारी हुई आर्य जनता ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

इस अवसर पर विश्व के अनूठे "पाणिनि मन्दिरम्" का शिलान्यास तप पूत पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज दयानन्द मठ दीनानगर, श्री गजानन्द जी आर्य मन्त्री-परोपकारिणी सभा अजमेर, श्रीमती ईश्वरी देवी जी आर्या पटना एव श्रीमती रेखमा कपूर वाराणसी द्वारा सम्पन्न हुआ। लगभग ३० लाख रुपये की लागत से निर्मित होने वाले उक्त भव्य मन्दिर के निर्माणार्थ उपस्थित आर्य जनता ने तत्काल कुछ आर्थिक सहायता प्रदान की। शिलान्यास से पूर्व हैदराबाद से पधारी हुई सुश्री शोभा जी के मधुर शास्त्रीय संगीत एव सुश्री नन्दिता शास्त्री स्नातिका के ध्रुपद गायन ने वातावरण को अति मनोहर बना दिया था।

इस अवसर पर ब्यावर आर्यसमाज की ओर से विद्यालय की आचार्या सुश्री डा० प्रज्ञा देवी जी को संस्कृत मे एक सुन्दर अभिनन्दन पत्र भी श्री ओमप्रकाश जी झवर-कोषाध्यक्ष परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा समर्पित किया गया जिसका वाचन आचार्य जी की अनुजा पण्डिता मेधा देवी जी ने किया।

महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा संस्कृत-व्याख्यान, सस्वर वेदपाठ, अष्टाध्यायी सूत्रपाठ अन्त्याक्षरी सत्यार्थप्रकाश-प्रश्नोत्तरी, संस्कृत गीत, लघुनाटिका, भोजपुरी गीत, व्यायाम एव शौर्य प्रदर्शन आदि के मनोहारी कार्यक्रम प्रस्तुत किये

"भारतीय संस्कृति को उजागर करने एव परिवारो को बनाने में हमारा यह विद्यालय सर्वोपरि है। महर्षि दयानन्द ने इस देश को बनाने की क्या-क्या कल्पना की थी उनकी शिक्षाओं को अपनी इस संस्था मे देखा जा सकता है।" ये उद्गार आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा अजमेर के मन्त्री श्री गजानन्द आर्य ने पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी के २१ वें वार्षिकोत्सव के द्वितीय दिवस पर अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में व्यक्त किये। श्री आर्य ने विद्यालय के कार्यक्रमो से प्रभावित होकर प्रतिवर्ष वार्षिकोत्सव पर आने का संकल्प व्यक्त करते हुये प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता मे भाग लेने वाली तेरह छात्राओ मे से प्रत्येक छात्रा को १०१ रुपये का पुरस्कार प्रदान किया।

आर्य समाज स्थापना दिवस की इस सन्ध्या पर शास्त्रार्थ महारथी श्री प० शान्तिप्रकाश जी ने कहा कि "महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज का उद्देश्य केवल वेदो का प्रचार करना है। सिक्खो के अन्तिम गुरु गोविन्द सिंह जी ने चारो वेदों को सच्चा माना अत सिक्खो को आर्यसमाज के साथ मिलकर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करना चाहिए।" प्रसिद्ध वैदिक मनीषी प० ब्रह्मदत्त स्नातक जी दिल्ली के भाषणो का भी जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

समारोह मे महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत "सृष्टि का प्रथम नाटक" (आचार्या प्रज्ञा देवी जी द्वारा लिखित नामक अद्भुत नाटिका तथा "ऐसो उपवन मे आंधी चली कि हम कहा से कहा आ गये हैं,, शीर्षक की काव्यालि (कव्वाली) से श्रोता मन्त्रमुग्ध हो गये। इन तीनो दिवसो मे हुये गीतों मे "शिक्षा दयानन्द स्वामी कउजिन बिसरावा हे सखी यह भोजपुरी गीत सर्वाधिक पुरस्कृत हुआ जबकि संस्कृत गीत "पुराणपाप नाशकम् श्रुतेर्मतप्रकाशकम् स्वधर्मकर्ममण्डित च वेदशास्त्रपण्डितम्" की अपनी पृथक् विशेषता रही।

तीनो दिवस "संस्कृतस्य महत्त्व तत्प्रचारोपायश्च विषयक स्व डाक्या माई अवत संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में क्रमशः कु ऋतम्भरा, कु धारणा एव कु प्रीति ने भाग लिया। ये सभी भाषण प्राय समान स्तर के उत्तम रहे।

तृतीय दिवस कन्याओ के अभूतपूर्व शौर्य प्रदर्शन वाले खेलो के कार्यक्रमो ने तो समा बाध दिया जिसकी पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने आशीर्वाद देते हुये अत्यन्त प्रशसा की। उन्होने कहा कि 'भगवान् करे ऐसी संस्थायें हजारों हो। मैंने कई स्कूल देखे, तमाशे देखे पर ऐसा जलसा आज तक नहीं देखा। बहिन जी इसी प्रकार १०० साल तक कार्य करती रहे इन्हें किसी भी प्रकार की कमी न होने पाये" खेलो के अन्त मे कन्याओ द्वारा प्रस्तुत—'हिन्द महासागर की ऊची लहरों के हम गान हैं" इस सांकेतिक गान ने समुपस्थित जनता को मोह लिया।

अन्त मे श्री ओमप्रकाश जी झवर ने धन्यवाद, आचार्या डा० प्रज्ञा देवी जी के आभार ज्ञापन एव शान्ति पाठ शखध्वनि के पश्चात् इस त्रिदिवसीय महोत्सव का समापन हुआ।

श्री शिशुपाल रामभरोसे का अभिनन्दन

श्री शिशुपाल रामभरोस, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका, डरबन का २६ मार्च १९९२ को, दुर्ग स्थित दयानंद परिसर में भव्य स्वागत किया गया। समारोह आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ द्वारा सयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री रमेशचन्द्र, सभा प्रधान ने की। इस अवसर पर सैकड़ों गणमान्य नागरिक, विद्यालयो के प्राचार्य एवम् शिक्षक-शिक्षिकाए, छात्र एवम् स्थानीय आर्य बन्धु उपस्थित थे। अधिष्ठाता दुर्ग भू-सम्पत्ति व्यवस्था समिति एव श्रीमती विमला श्रीवास्तव, सहसम्पादिका आर्य सेवक की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय है।

अपने उद्बोधन मे श्री शिशुपाल रामभरोस ने दक्षिण अफ्रीका की परिस्थितियो पर प्रकाश डालते हुए, वहा पर आर्य समाज की गतिविधियो की विस्तृत जानकारी दी। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद के अतिरिक्त, श्री शिशुपाल रामभरोस, दक्षिण अफ्रीका के आर्य परोपकारिणी परिषद एव उसके द्वारा सचालित वृद्धाश्रम आदि के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित करते हैं। क्योंकि उस देश की सामान्य भाषा अग्रेजी ही है, अत आर्यजनों के लाभार्थ, आर्य एव वैदिक साहित्य का अनुवाद, अग्रेजी मे कराकर, आर्य प्रतिनिधि सभा, वैदिक धर्म के महत्व को जनता के पास पहुचाने के लिए, अनवरत रूप से प्रयत्नशील है।

माननीय अतिथि ने बताया कि दक्षिण अफ्रीका मे पुरोहितों एव आचार्यो का कार्य अधिकतर महिलाए ही करती हैं और इसी शृंखला में वे लोग दैनिक हवन पारिवारिक यज्ञ से लेकर विवाह कार्य एव मृत्यु के उपरान्त संस्कार का कार्य भी कराती हैं। इन कार्यों के लिए उन्हें विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है और समय समय पर प्रशिक्षण की कक्षाए भी आयोजित की जाती है। श्री शिशुपाल रामभरोस ने कहा कि इन सब कार्यों के लिए सुदूर अफ्रीका स्थित भारतीय समुदाय एव आर्य बन्धुओ का प्रेरणा स्रोत, उनके पूर्वजों का मूल जन्म स्थान, भारत ही है। वहा के प्रबुद्ध भारतीय मूल के अप्रवासियो का यही संकल्प है कि वे लोग दक्षिण अफ्रीका मे, महर्षि दयानन्द के सन्देशो, उपदेशो एव उनके द्वारा प्रवाहित ज्ञान गगा का बोध, प्रत्येक अप्रवासी बन्धु को करावे।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे श्री रमेशचन्द्र, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, म० प्र० व विदर्भ ने श्री शिशुपाल रामभरोस एव उनके सहयोगियों के स्तुत्य कार्यों पर साधुवाद दिया।

सभा प्रधान श्री रमेशचन्द्र ने श्री शिशुपाल रामभरोस के जीवन पर एक सक्षिप्त परन्तु सारगर्भित विवरण उपस्थित जन समूह के समक्ष प्रस्तुत किया।

स्वागत समारोह का कुशल सचालन, श्री गुलाबचन्द बसल, अधिष्ठाता वेद प्रचार आर्य प्रतिनिधि सभा म० प्र० व विदर्भ ने किया।

आर्य समाज ब्रह्मपुरी

आर्य समाज ब्रह्मपुरा, न्यू उस्मानपुर, दिल्ली का वार्षिक उत्सव ४ मई से १० मई, ९२ तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। ४ से ९ मई तक प्रतिदिन प्रातः ५-३० बजे से ७-०० बजे तक प्रभात फेरी निकाली जायेगी। ९ मई को सांय ७ से १० बजे तक भजन व प्रवचन होगा। १० मई को समापन के दिन प्रातः ७ से १० बजे तक यज्ञ, ध्वजारोहण आर्यवीरो द्वारा प्रदर्शन, भजनोपदेश, लगर आदि होगा।

दयानन्द बाल सदन, अजमेर को ५०,००० रुपए का पुरस्कार

दयानन्द बाल सदन अजमेर को राज्य सरकार ने राज्य की सर्वश्रेष्ठ बाल कल्याण सस्था घोषित करके उसे ५०,००० रुपये के पुरस्कार से सम्मानित किया है।

जयपुर मे दिनांक १४ ४ ९२ को रविन्द्र मच पर समारोह आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम समाज कल्याण मन्त्री की अध्यक्षता तथा जन सम्पर्क मन्त्री श्रीमति पाठक के मुख्य आतिथ्य मे सम्पन्न हुआ। सन १८९५ मे स्थापित इस सस्था द्वारा कई हजार अनाथ और निराश्रित बालक बालिकाओ को शिक्षित और दीक्षित करने का उल्लेख करते हुए उसे बाल कल्याण की सवश्रेष्ठ सस्था घोषित किया गया।

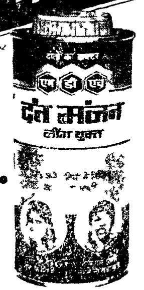
आर्य समाज अजमेर द्वारा सचालित इस पुरानी और सुप्रसिद्ध सस्था के वतमान विकास का सारा श्रेय आर्य समाज के प्रधान आचार्य दत्तात्रेय जी वाब्ले (आय) को है जो बाल सदन के भी गत ५० वर्षों स मन्त्री और प्रधान रहे हैं। यह सस्था अब आर्थिक दृष्टि से भी सर्वथा स्वावलम्बी हो गई है, सस्था में इस समय देश के अनेक प्रान्तो के १५० अनाथ और निराश्रित बालक-बालिकाए हैं जिनके नि शुल्क भोजन और वस्त्र की सुन्दर व्यवस्था के अतिरिक्त उन्हें काष्ठ कला और सीवनकला के औद्योगिक प्रशिक्षण के अतिरिक्त कालेज स्तर तक उच्च शिक्षा की सुविधा भी नि शुल्क प्राप्त है। स्वर्गीय पण्डित जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन आदि अनेक प्रसिद्ध नेताओ ने इस सस्था का निरीक्षण कर उसके सेवा कार्य की प्रशसा की है। और इस प्रकार यह बाल सदन अब केवल राज्य स्तर की नहीं अपितु अखिल भारतीय स्तर की एक प्रतिष्ठित बाल कल्याण सस्था समझी जाने लगी है।

आर्य समाज कोटला मुबारकपुर

आर्य समाज कोटला मुबारकपुर के तत्वावधान में आर्य समाज स्थापना दिवस रामनवमी, वैशाखी एव शतकीय महायज्ञ १० अप्रैल से १३ अप्रैल तक धूम धाम से मनाये गये।









आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R.N. No 32387/77 Posted at N D P S O on 30 1-5-1992 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल-११०२४/९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसैन्स नं० यू (सी०) ११९/९१

विशाल व्यायाम एवं ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर

२० मई बुधवार से ३१ मई रविवार १९९२ तक

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे—आचार्य डा० देवव्रत जी, (प्रधान सचालक सार्व आर्य वीरदल,के सरक्षण में तथा ब्र०राजसिंहआर्य की अध्यक्षता मे महाशय चुन्नीलाल बालमन्दिर सेकेन्ड्री स्कूल एल ब्लाक हरि-नगर नई दिल्ली मे आयोजित किया जा रहा है।

आर्य समाजो से निवेदन,

यदि आप चाहते हैं कि आर्य समाजो मे नई पीढ़ी आवे तथा आर्यवीर दल की शाखा आरम्भ करें और आर्य समाज का भविष्य सुरक्षित रहे तो कम से कम अपने आर्य समाज से दो दो युवक इस शिविर मे अवश्य भेजें।

दिल्ली की आर्य जनता से निवेदन :

यदि आप चाहते हैं कि आपकी सन्तान राम जैसी आदर्श, कृष्ण जैसी चतुर, चाणक्य जैसी नीतिज्ञ, राणाप्रताप व शिवा जैसी राष्ट्र रक्षक, भगत-सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल जैसी बलिदानी दयानन्द जैसी ईश्वर भक्त, श्रद्धा-नन्द जैसी सस्कृति रक्षक बने तो अपने बच्चों को आवश्यक रूप से इस शिविर में भेजें।

सम्पर्क स्थान—

आर्य समाज मन्दिर बिरला लाइन्स—रात्रि ७ बजे से ९ बजे तक

ब्र० राजसिंह आर्य, ३६६ गली रोशन,
सिनेमा पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-७ दूरभाष २९१०३०४

ब्र० बृजेश मन्त्री त्रिनगर — दूरभाष ७२१६१७३

ईश कुमार नारग-बी-१६, आशा पार्क, विकट तिलक नगर

वीरेन्द्र कुमार आर्य, रानी बाग, दूरभाष ७१८७१८१

राकेश आर्य, लाजपत नगर दूरभाष ६८४६७७१

श्रीकान्त, आर्य समाज मालवीय नगर दूरभाष ६८६८८८६

उद्घाटन समारोह २१ मई प्रात १० बजे, समापन समारोह ३१ मई प्रात १० बजे।

विशेष आकर्षण शिविरार्थियों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन। समापन समा-रोह मे अपनी-अपनी आर्य समाजो से बसे भर कर लावें और समारोह स्थल पर युवको का उत्साह वर्धन करें। ऋषिलगर का प्रबन्ध होगा।

अपील—१० दिन तक तीनों समय का भोजन व समापन पर ऋषि लगर पूर्ण शुद्ध देसी घी का होगा। दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक धन देकर पुण्य के भागी बनें। ड्राफ्ट राशि आर्यवीर दल दिल्ली के नाम से भेजें, तथा आटा दाल, चावल, घी आदि के रूप में भी दान दे सकते हैं। निवेदक—

सचालक	सगठन मन्त्री	शिविर सयोजक
डा० ज्ञान प्रकाश	विजय सिंघल	रूप चन्द नागर

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस,दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी०(एल१०२४/१-०९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५, अंक २४ | रविवार, १० मई १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल : ११७ वां आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

गायत्री मन्त्र भारतीय संस्कृति का प्रतीक है

नई दिल्ली। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारतीय संस्कृति की रक्षा एवं ईश्वरीय ज्ञान वेद के प्रचार व प्रसार के लिए शुद्धि अभियान चलाया था। ये उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने ३ मई ९२ को दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में आर्य समाज मन्दिर जंगपुरा विस्तार नं १ नई दिल्ली में आयोजित ११७ वें आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुये व्यक्त किये। स्वामी जी ने नयी बन रही इस्लामिक पट्टी से उत्पन्न गम्भीर खतरे के प्रति भी सचेत रहने का आह्वान किया।

समारोह की अध्यक्षता श्री अशोक कुमार ने की। श्री अशोक जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि वेदों का पढ़ना पढ़ाना आर्यों का परम धर्म है परन्तु इससे भी आवश्यक यह है कि हम आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सगों में नियमित रूप से जायें तथा अपने परिवार के अन्य सदस्यों को भी अपने साथ लेकर ले जायें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने इस कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि वेदों के प्रकांड पंडित महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों का डंका उस समय बजाया था जब वेद ज्ञान प्राय लुप्त हो चुका था। उन्होंने आगे बताया कि सन् १९८३ में मद्रास में एक इन्शोरेंस कम्पनी ने जब नव वर्ष के बधाई कार्डों पर गायत्री मन्त्र मुद्रित कराकर भेजा था तो सरकारी धन के दुरुपयोग का आरोप लगाकर मद्रास हाईकोर्ट में रिट दायर की गयी थी।

इस सम्बन्ध में अपने निर्णय में विद्वान न्यायाधीश ने कहा था कि गायत्री मन्त्र भारतीय संस्कृति का प्रतीक है एवं देश की आत्मा है। वेद तो मनुष्य को दानवता से हटाकर मानवता की ओर ले जाता है अतः वेद का महामन्त्र गायत्री मन्त्र साम्प्रदायिक नहीं हो सकता।

श्री सूर्यदेव ने आगे कहा कि अंग्रेजी काल में लोग वेदों को गडरियों के गीत कहा करते थे परन्तु महर्षि दयानन्द द्वारा वेदों की प्रतिष्ठा स्थापित करने एवं वेद मन्त्रों के ठीक-२ अर्थ करने के फलस्वरूप ही लोगों में वैचारिक क्रान्ति आयी है।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने वैदिक धर्म के प्रचार एवं आर्यसमाज के कार्यों को आगे बढाने के लिए संगठन के महत्व पर प्रकाश डालते हुये मिल जुल कर प्रीति पूर्वक कार्य करते रहने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में मैत्री कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय की प्राध्यापिका डा० (श्रीमती) शशि प्रभा कुमार ने बताया कि आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने हमें वेदों की ओर चलने का मार्ग दिखाया था।

आर्य समाज पंजाबी बाग का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आचरण में पवित्रता लाकर स्वयं आर्य बनें

नई दिल्ली आर्य समाज पंजाबी बाग (पश्चिम), नई दिल्ली का २८ वां वार्षिकोत्सव ३ मई को धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने कहा कि कृण्वन्तो विश्वमार्यम् हमारा लक्ष्य है और इसकी प्राप्ति के लिए हमें संगठित हो आर्य समाज के कार्यक्रमों को आगे बढाते रहना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि पहले हमें अपने आचरण में पवित्रता लाकर स्वयं आर्य बनना चाहिए तब हम इस लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ सकेंगे।

२६ अप्रैल को प्रात क्षेत्र में प्रभात फेरी निकाली गयी। २७ अप्रैल से २ मई तक प्रतिदिन गुरुकुल वानप्रस्थ ज्वालापुर के आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में प्रात यज्ञ और सायं वेद कथा होती रही। २ मई को स्त्री सम्मेलन भी सम्पन्न हुआ। ३ मई को ११ यज्ञ कुण्डों में पूर्णाहुति में भारी संख्या में उपस्थित नर-नारियों ने श्रद्धापूर्वक भाग ले आहुतियां दीं।

इससे पूर्व प्रात सहदेव मल्होत्रा आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग के छात्रों ने मनोहर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभी को मन्त्रमुग्ध कर दिया। उल्लेखनीय है कि वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में २७ अप्रैल से २ मई तक प्रतिदिन सायं आर्यजनों के निवास स्थानों पर पारिवारिक सत्संग लगते रहे।

आर्यसमाज तिलक नगर का वार्षिकोत्सव

दिल्ली ३ मई। आर्य समाज तिलक नगर का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ

इस अवसर पर समाज मन्दिर द्वारा संचालित विद्यालय के छात्रों ने फैंसी ड्रेस का कार्य प्रस्तुत किया। स्वामी दयानन्द, शहीद भगतसिंह व गुरु गोविन्द सिंह पर भाषण प्रतियोगिताओं के विजेता छात्रों को आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान महाशय धर्मपाल ने पुरस्कार प्रदान किये।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने आर्य समाज तिलक नगर द्वारा की जा रही समाज सेवा एवं आर्य समाज के कार्यक्रमों की भूरि-२ प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि यह प्रसन्नता की बात है कि समाज के विद्यालय के माध्यम से आर्य समाज की गतिविधियों को आगे बढाया जा रहा है और बच्चों को अच्छे संस्कार दिये जा रहे हैं।

समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री, डा० महेश विद्यालंकार, आचार्य रविदत्त गौतम ने भी महर्षि दयानन्द द्वारा की गयी सेवाओं का स्मरण कर आर्यजनों को सजग रहकर कर्त्तव्य पथ पर बढते रहने का आह्वान किया। इससे पूर्व प्रात डा० शिवकुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ।

भूल सुधार

आर्य सन्देश के ३ मई के अंक में प्रथम पृष्ठ पर भूल से अशुद्ध छपे को निम्न प्रकार पढ़ें

अशुद्ध	इस प्रकार पढ़ें
१ यज्ञ कल्पना का प्रतीक है	यज्ञ कल्याण का प्रतीक है
२ श्री राजसिंह भल्ला ने मंच	डा० राजसिंह आर्य ने मंच

सम्पादक—प्रो० सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

आनन्द मय कोष में उपस्थान (८)

—देव नारायण भारद्वाज

हमने अस्थि मास के ठोस नग्न अन्नमय कोष उसमें प्रवाहित टायर-ट्यूब की हवा के समान प्राणमय कोष को समझ लिया है। यहां पर यह भी स्पष्ट कर देता है कि यह वायु तो ट्यूब को फुलाये रखने मात्र का काम ही करती है, जब कि प्राण वायु, प्राण, अपान, समान, उदान व्यान और उपप्राणों के रूप मे शरीर के भिन्न-भिन्न भागों मे विभिन्न कार्य करती है। जड किन्तु इन दोनो कोषो से सूक्ष्म मनोमय कोष है, जो शरीर की समस्त इन्द्रियों से मिल कर विद्युत सा कार्य करता है। ससार मे स्थान-स्थान पर बल्ब ट्यूब लाइट एव हण्डों को लगाया गया है, किन्तु प्रकाशित वही होता है, जिसमें 'स्विच ऑन' करने पर विद्युत पहुंच जाती है। इन उपकरणो मे संचित गैस जल कर विशेष प्रकाश प्रदान करती है। मन चचल होता है, इधर-उधर दौड लगाता रहता है, बुद्धि मे संचित ज्ञान और उसके यथोचित प्रयोग द्वारा हम उन को एकाग्र करते हैं और उसे भटकने से रोक कर सही उद्देश्य पर लगा देते हैं। यही विज्ञान मय कोष है। ससार में अपार ज्ञान राशि बिखरी है, किन्तु उसमे से जो हमारे उपयोग का अश है, उसे उचित ढग से उपयोग मे लाना ही विज्ञान मय कोष है। उदाहरणार्थ शब्द अमर है—यह सिद्धान्त है। एक स्थान पर कहे शब्दो को हम दूसरे स्थान पर खडे होकर अपने कानो के द्वारा सुन लेते हैं। कानों के सुनने की क्षमता सीमित है। हम ऐसा यन्त्र आविष्कृत करते हैं—जिससे हम सैकड़ो किलोमीटर दूर बठ कर उन शब्दों को सुन सकते हैं। इसे दूरभाष कहते हैं। आकाशवाणी के प्रसारण भी इसी सिद्धान्त पर काम करते है। अर्थात् अन्धकार से हट कर प्रकाश की ओर बढ़ना ही तो विज्ञानमय कोष है। जब तक प्रकाश की खोज रही—यह विज्ञान मय कोष सक्रिय रहा, और जब वह प्रकाश हमे मिल गया तो फिर आनन्द ही आनन्द है। दूरदर्शन के आविष्कार तक विज्ञान का काम चलता रहा। आविष्कार होकर दूरदर्शन की पेटिका हमारे हाथ में आ गई, फिर तो बटन दबाया और अदृश्य, दृश्य सामने उपस्थित हो गया। अब तो आविष्कारक ही नहीं, उसका उपयोग करने वाला हर व्यक्ति उसका आनन्द उठा सकता है। हां उसमें आने वाली त्रुटि के परिमार्जन के लिए उसके विशेषज्ञ तक हमे जाना होगा। तो अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ जाना ही आनन्दमय कोष है—'तमसो मा ज्योतिर्गमय'। विधिवत सम्पन्न सन्ध्या से यही आविष्कार हमारे हाथ मे आ जाता है।

'मनसा वाचा कर्मणा' पाप की क्रियाओं से मनोमय कोष को पवित्र करके हम बच सकते हैं, पाप बाद में चाहे वचन मे आये या कर्म मे, किन्तु उसका जन्म मन में ही होता है—इसका आधार अभिमान या अवसाद होता है। ज्ञान पूर्वक राग और द्वेष से मुक्ति पाकर अहिंसा व्रत का हम पालन करते हैं। इस प्रकार हम अन्धकार से हट कर प्रकाश की ओर क्रमश बढते जाते हैं। हमे परमात्मा का उपस्थान—उसकी समीपता मिलने लगती है। 'जैसे ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव पवित्र हैं वैसे अपने करना। ईश्वर को सर्वव्यापक अपने को व्याप्य जान के ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात करना उपासना कहाती है। इसका फल ज्ञान की उन्नति आदि है यही तो महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश मे बताया है।

ज्ञान का क्रमिक विकास—

असत्य ही अन्धकार है और सत्य ही प्रकाश है। असत्य मे मिथ्या और अज्ञान सम्मिलित है और सत्य मे सच्चाई और ज्ञान सम्मिलित है। उपासक क्रमश अभ्यास के द्वारा असत्य का निष्कासन और सत्य का अनुष्ठान कर सकता है। यही प्रस्तुत मन्त्र का आशय है—

उद्वय तमसस्परि स्व पश्यन्त उत्तरम्।
देव देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥ यजु०३५।१४

अर्थ—(वयम्) हम (तमस) अन्धकार से (परि) परे (उत्) ऊपर उठे और (स्व) परमात्मा के सुख स्वरूप को (पश्यन्त) देखते हुए अर्थात् अनुभव करते हुए (उत्तरम्) और अधिक ऊपर उठे। (देव देवत्रा) दोनो मे भी महादेव (सूर्यम्) सकल जगत के उत्पादक। (ज्योति) तेज अर्थात् परमात्मा को (अगन्म) प्राप्त होकर (उत्तमम्) और अधिक ऊचे उठ जाय, श्रेष्ठ हो जावें।

इस मन्त्र में प्रभु का प्रकाश प्राप्त करने के लिए एक क्रम निर्धारित किया है। पहले अन्धकार से परे हो जाये—उसे छोड दे अथवा मन में निश्चय कर लें कि जिसमें हम फसे हुए हैं—वह अन्धकार है और हमे इसमें से बाहर निकलना है। तो हमारे विकास का अकुर उग गया। यह एक अच्छी स्थिति बन गई। दूसरे स्तर पर हमने यह भी समझ लिया कि वास्तव में प्रकाश क्या है। प्रभु का सच्चा सुख स्वरूप क्या है, तो वही विकास अकुर अब और ऊपर उठ कर एक सुकोमल पादप बन गया—यह एक अधिक अच्छी स्थित हो गई। जैसे हमें सूर्य दिखाई देता है, उसी प्रकार हम अपने हृदय मे प्रभु की ज्योति का दर्शन करने लगें, तो वही विकास का पादप एक ऊचा वृक्ष बन गया—यह एक उत्तम स्थिति हुई।

जो लोग पौ फटने से पूर्व सोकर उठ जाते हैं—तो समझ लो वे उठ पडे यही 'उत' है। घर के अन्दर अभी प्रकाश नहीं हुआ हो कुछ कुछ सूर्य प्रकाश की आभा स्पष्ट होने लगी है, किन्तु वही जन अपने शयन कक्ष को छोड कर बाहर प्रागण मे आ जाते हैं, तो प्रकाश कुछ अधिक दिखाई देने लगता है—तो समझ लो वे चल पड़े—यही उत्तर स्थिति है। उसी समय वे महाशय प्रांगण में होकर सीढियाँ चढते हुए ऊपर छत पर पहुच जाते हैं तब तो चारो ओर प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देने लगता है—तो समझ लो वे चलने के साथ साथ अर्थात गति के साथ साथ प्रगति भी करने लगे—यही उनकी उत्तम स्थिति है। इस उदाहरण में एक और रहस्य छिपा हुआ है। जैसे जैसे व्यक्ति उठता जाता है वैसे सूर्य भी ऊपर उठता जाता है—अर्थात् इधर व्यक्ति का सकल्प और क्रिया है, उधर सूर्य का सहयोग एव दर्शन है। आप कह सकते हैं कि जो लोग उठेंगे नहीं तो क्या सूर्य भी नहीं उठेगा। वे तो पडे रहेंगे तो भी सूर्य ऊपर उठ आयेगा। यहां पर समझने की बात यह है—यदि कोई नेत्रहीन है तो उसके लिए सूर्य उगने या न उगने का क्या अर्थ यदि नेत्र होते हुए कोई नेत्रहीन बना रहे इसमें भी सूर्य का क्या दोष? समझ लो सूर्य—उसके लिए नहीं, अपितु उनके लिए उगता है जो जागता है—जो देखता है, जो सोचता है। कुछ ही ऐसे व्यक्ति हो सकते हैं जो इस समय सोये पडे रहते है, पर अधिकाश ऐसे व्यक्ति होते हैं, जिनके लिये प्रातःकाल मे जागने की बाध्यता होती है। कृषक, श्रमिक व्यापारी, एक नगर से दूसरे नगर मे जाकर सेवा करने वाले दैनिक यात्री, यही नही वनवासी साधु सन्त, मनुष्य क्या पशु पक्षी सभी उसकी प्रतीक्षा करते है। तो सूर्य उनके लिए उगता है। आलसी के लिए नही। यह दूसरी बात है कि बाद मे उगे भी उगे सूर्य से कुछ लाभ मिल जाये, किन्तु प्रभात काल की अमृत वेला—मनोरम प्राकृतिक छटा की मौलिकता उसे नहीं मिल सकेगी।

हर वस्तु उसी की सकेतक—

जब हमने जग कर उठ उठ कर खडे होने चलने, और चल कर ऊपर छत पर चढने का पुरुषार्थ कर लिया और हमे प्रभु का बोध हो गया है, तो वह दयालु प्रभु कृपालु देव स्वय हा सकेत करके अपनी ओर देखने के लिए हमें उत्साहित करने लगता है। देखिए मन्त्र यही कहता है—

उदु त्य जातवेदस देव वहन्ति केतव।
दृशे विश्वाय सूर्यम॥ यजु० ३३ ३१

पदार्थ—(उत) ऊपर (उ) ही (जातवेदसम्) जिससे चारो वेद प्रसिद्ध हुए हैं जो प्रकृत्यादि सब भूतों में व्याप्त हो रहा है, जो सब जगत का उत्पादक है, उस अन्तर्यामी (देवम्-सूर्यम्) चराचर के आत्मा परमेश्वर देव के पास (विश्वाय) सम्पूर्ण (दृशे) दर्शन के लिए अर्थात् परम साक्षात्कार के लिए (केतव) उसकी इस ससार में बिखरी हुई अनन्त किरणें या फहराती हुई झंडियां हमे (वहन्ति) पहुचा देती है।

पूर्व मन्त्र में ज्ञान के क्रमिक विकास की अवधारणा के अनुसार जब हम इस मन्त्र के 'उत' ऊचाई पर पहुच जाते हैं, तो वह परम पिता परमात्मा हमे सफलता से अपने दर्शन देने लगता है। 'केतव'—अनेकार्थक शब्द है, जो परमात्मा के गुणों का, प्रकाश की किरणों का, ऊचाई पर फहराई गई पताकाओ का, और ससार के पदार्थों के यथार्थ समेटे हुए है। (क्रमश)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

एमनेस्टी रिपोर्ट का भारत विरोधी दृष्टिकोण



यदि हम एमनेस्टी की ताजा रिपोर्ट का अवलोकन करें, तो यह स्पष्ट पता लगेगा कि इसमे सामयिक विश्व की कुछ मूलभूत सच्चाइयो को ध्यान में नहीं रखा गया है। प्रत्येक एमनेस्टी रिपोर्ट राजनैतिक सन्देश नहीं देती, परन्तु जो अति महत्वपूर्ण होती हैं, उनका राजनैतिकता से परे होना अथवा कोई सन्देश न देना निश्चय ही अटपटा सा लगता है। भारत के सम्बन्ध में एमनेस्टी रिपोर्ट को दूसरी श्रेणी मे रखना उचित है अर्थात् इसका अभीष्ट राजनैतिकता से जुडा होना चाहिए। इस रिपोर्ट मे अत्याचार बलात्कार, हत्या आदि को प्रतिदिन की घटनाए बता कर अतिरंजित रूप में प्रदर्शित किया गया है इसमें यह भी आरोप लगाया गया है कि पजाब, काश्मीर और आसाम मे जो कुछ हो रहा है, वह सिद्धान्तत केन्द्र की देन है। इसके सूत्र नई दिल्ली से जुडे हैं। स्पष्टत भारत मे मानवाधिकारों का दुरुपयोग हो रहा है। ऐसा ही विश्व के अनेक देशो मे भी हो रहा है। इन समस्याओं को सुलझाने के लिए विशेष, और एक सुनिश्चित दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता है। इस रिपोर्ट मे कहा गया है कि यहा पर मानवाधिकारो की बात को कुछ राजनेताओ की दया पर छोड दिया गया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि भारत के विषय में रिपोट तैयार करते हुए, एमनेस्टी ने कुछ जरूरत से ज्यादा ही मेहनत की है। ऐसा लगता है कि कुछ पूर्वाग्रह उन्हे ऐसा करने के लिए प्रेरित करते रहे हैं। एमनेस्टी की एक रिपोर्ट पजाब के विषय मे मई १९९१ मे आई थी। फरवरी मे भारत सरकार की टिप्पणियो के साथ एक और रिपोट आई। एक महीना पश्चात् १९५ पृष्ठ की एक पुस्तक आ गई—'भारत, अत्याचार बलात्कार और हिरासत मे मृत्यु।' इसमे एक अध्याय समाधान के सम्बन्ध में भी जोडा गया है। ये सभी रिपोर्ट शिकायतों, समाचार पत्रो की कतरनों तथा अपुष्ट आरोपो पर आधारित हैं। कश्मीर के कोनन पोशपुरा में एक बलात्कार के विषय को आधार बनाया गया। इनकी जाच पडताल प्रेस काउन्सिल आफ इण्डिया ने की तथा इसे पूरी तरह निराधार पाया।

एमनेस्टी की प्रस्तावना में कहा गया है कि सभी को नागरिक एव राजनैतिक अधिकार सुनिश्चित किए जाए। आखिर यह एमनेस्टी इन्टर नेशनल है क्या? यह एक स्वयसेवी आन्दोलन है जो मानवाधिकारो के विश्व व्यापी घोषणा के आधार पर, ससार के सभी देशो में अपनाए जाने पर बल देता है। एमनेस्टी का दावा है कि विश्व के १५० देशों में इसके १,११०,००० सदस्य, और दानदाता हैं। एमनेस्टी की वार्षिक आय प्रतिवर्ष लगभग १० मिलियन है।

भारत विश्व के नक्शे पर एक बडा प्रजातन्त्र देश है, परन्तु इसके सम्बन्ध में एमनेस्टी की रिपोर्ट को पक्षपातपूर्ण ही माना जाएगा। इसमे कहा गया है कि भारत के २५ राज्यो मे मानवाधिकारो की अवहेलना प्रतिदिन की सामान्य घटना है। यहा पर सैकडों हजारों लोग हवालातो मे मारे जाते हैं। जम्मू कश्मीर मे काफी लोगों को बिना अदालत में पेश किये हिरासत मे रखा हुआ है।

यह आश्चर्य है कि भारत जैसे बडे देश मे जहाँ ८० करोड लोग रहते हैं, वहाँ पर मानवाधिकारो को मानने की एमनेस्टी को एक भी मिसाल न मिले। बस यहीं पर एमनेस्टी रिपोर्ट पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है। अच्छा होता एमनेस्टी की रिपोर्ट भोपाल गैस काण्ड के सम्बन्ध में आई होती, पर वहाँ तो यह आन्दोलन चुप रहा। एमनेस्टी सस्था हिएगो गार्शिया के विषय में चुप रही, इराक और कुवैत के सम्बन्ध में भी चुप रही।

सम्पादक के नाम पत्र

सग्रहणीय विशेषांक

आर्य सन्देश का आर्य समाज स्थापना दिवस एव स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती सयुक्तांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एव आकर्षक था। इसमे सभी लेख शिक्षा प्रद एव प्रेरणादायक थे। विशेषांक के माध्यम से आर्य समाज व स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढने को मिली। इस पत्र के 'विशेषांको की बडी धूम रहती है। यह भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकला है आर्य सन्देश का आर्य जगत की तमाम पत्र-पत्रिकाओ मे अपना विशिष्ट स्थान है। विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

रामकुमार आर्य, मन्त्री
आर्य युवक परिषद् गोहाना सोनीपत

उच्च कोटि का सम्पादन

महाशय जी सादर नमस्ते,

आर्य सन्देश के प० लेखराम अक तथा स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती अक प्राप्त हुए। दोनों ही अको का सम्पादन उच्च कोटि का है। डा० शिवकुमार शास्त्री द्वारा लिखित स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती एक क्रान्तिकारी व्यक्तित्व अत्यन्त रोचक और तथ्यपूर्ण लगा। इतना लम्बा लेख सहज ही पढ़ा गया। अगर बीच मे शीर्षक डाल कर लम्बे लेख को विभक्त कर दिया गया होता तो अच्छा होता। दोनो ही अकों के लिए आप मेरी कृतज्ञता पूर्वक बधाई स्वीकार करें।

डा० गगाप्रसाद विद्यार्थी
एम० ए० पी० एच० डी० (यजुर्वेद) अवकाश प्राप्त
मध्भा अभियन्ता वेद भवन १७५, जयनगर, जबलपुर सिटी

दिगभ्रमित न करें

आदरणीय डा० साहब, सादर नमस्ते,

१२ अप्रैल ९२, के आर्य सन्देश मे प्रकाशित सामग्री प्रशसनीय है, आप का सहयोग अति सराहनीय है।

आशा है आपने डी० ए० वी० के प्रो० वेद व्यास की टिप्पणी पर समुचित उत्तर लिखने का मन बनाया होगा। अपनी ही सस्था का विद्वान अपने व्यक्तिगत विचारो से बहुसमुदाय को दिगभ्रमित करे तो समाज के हित मे चेलैन्ज का समुचित उत्तर देना आप जैसे कर्त्तव्यनिष्ठ महाशयो का परम कर्त्तव्य है। आशा है आप मेरी भावना से अवश्य प्रेरित होगे और आर्य सन्देश तथा अन्य आर्य पत्र पत्रिकायें इसका खण्डन करेगे।

प० गुरुदत्त विद्यार्थी के विषय मे आपने जो शतवर्ष विवेचन प्रस्तुत किया है, उससे बहुत कम लोग परिचित होगे। आपने अग्रणी व्यक्ति की जीवन लीला से परिचित करा कर बहुत उपकार किया।

सोहनपाल सी० एल०, अलीगढ़

ऐसी रिपोर्ट को भारत के सम्बन्ध मे बोलने लिखने से पहले अपने पिछले वृत्त को अच्छी तरह देख लेना चाहिये।

यह माना जा सकता है कि भारत में अनेक स्थानो पर मानवाधिकारो को समाज में वह स्थान नहीं मिल रहा जो मिलना चाहिये पर यह कहना कि यहां पर सभी कुछ गलत हो रहा है, मान्य नही हो सकता।

भारत एक धर्मपरायण देश है। यहां पर अत्याचारी व्यक्ति भी परमात्मा की शक्ति को मानता है। वह कर्म फल में विश्वास रखता है। यहां पर सभी पूजा पाठ करते समय यह सकल्प करते हैं कि वे किसी को दुखी नहीं करेंगे। फिर भी कुछ तो हो ही रहा है जब एमनेस्टी जैसी विश्व व्यापी सस्था ने लिखा है।

हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने आपको सुधारें।

डा० धर्मपाल

स्वामी अच्युतानन्द सरस्वती : जिन्होंने ऋषि दयानन्द से शास्त्र चर्चा की थी

—डा० भवानीलाल भारतीय

अविभाजित पजाब के सरगोधा जिले के खुशाब नामक करबे में स्वामी अच्युतानन्द का जन्म १८५३ ई० मे हुआ था। अपने प्रारम्भिक जीवन मे वे अद्वैत वेदान्त के अनुयायी तथा एक सन्यासी मण्डल के अधिष्ठाता मण्डलेश्वर थे। जब स्वामी दयानन्द का पजाब मे आगमन हुआ था उस समय स्वामी अच्युतानन्द ने उनसे नवीन वेदान्त पर शास्त्रार्थ भी किया था। इन्होने उपनिषदो पर अद्वैत सम्प्रदाय की विचारधारा के अनुसार कोई टीका भी लिखी थी।

इन्हीं स्वामी अच्युतानन्द को आर्य समाज का अनुयायी और शैदाई बनाने का विचार प० गुरुदत्त विद्यार्थी के मन में आया। उस समय स्वामी जी अपनी शिष्य मण्डली सहित लाहौर आये हुए थे। यह १८८८ ई० की घटना है। स्वामी जी का निवास शाहआलमी गेट के निकट किसी कोठी मे था। अन्य लोगो की भांति प० गुरुदत्त भी उपदेश श्रवणार्थ स्वामी अच्युतानन्द के निकट जाने लगे। उन्होने शीघ्र ही स्वामी जी की विद्वत्ता तथा योग्यता का ठीक-ठीक अनुमान कर लिया। अतः वे सोचने लगे कि यदि यह स्वामी आर्य समाज मे प्रविष्ट हो जाय तो स्वामी दयानन्द की विचारधारा को प्रसारित करने मे बडी सहायता मिलेगी। धीरे-धीरे प० गुरुदत्त स्वामी अच्युतानन्द के निकट सम्पर्क में आने लगे और उनसे उपनिषदो का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया।

स्वामी अच्युतानन्द भी प० गुरुदत्त के गम्भीर अध्ययन तथा प्रतिभा से शीघ्र ही परिचित हो गए। अब दोनो के बीच देश की अधोगति और आर्य जाति के सर्वांगीण ह्रास पर प्रायः चर्चा होती रहती। पण्डित जी घण्टों तक स्वामी जी के डेरे पर बैठे रहते। कभी किराये की गाडी लेकर स्वामी जी को नगर मे भ्रमणार्थ ले जाते। कभी-कभी देर रात गए तक वे स्वामी जी के निकट बैठ कर शास्त्र चर्चा व शका समाधान करते। अन्तत उन्हे सफलता मिली। प० गुरुदत्त के सत्सग एव सम्पर्क ने उन्हे बदल दिया। कहा तो वे अद्वैतवाद के प्रबल पक्ष पोषक थे और अब प० गुरुदत्त द्वारा किए गये विचारो के आदान प्रदान ने उन्हे त्रैतवाद का समर्थक बना दिया।

१८८८ ई० के नवम्बर मास मे स्वामी अच्युतानन्द ने अपने सन्यास मण्डल और उसके मण्डलेश्वर पद का परित्याग कर दिया और आर्य समाज मे सम्मिलित हो गये। इस घटना के पश्चात वे आजीवन आर्य समाज के प्रचारक बने। महात्मा हसराज से आपका आत्मीय सम्बन्ध था। स्वामी जी की रचनाओ का विवरण इस प्रकार है—

ऋग्वेद शतकम—(१९९२ वि०) मे प्रकाशित किया। तत्पश्चात् शान्ति आश्रम लुधियाना ने इसका चतुर्थ सस्करण १९९४ वि० मे छापा। हकीम बीरूमल अजमेर ने जुलाई १९६३ ई० मे प्रकाशित किया तथा दयानन्द सस्थान दिल्ली ने २०३७ वि० में इसका नवीन सस्करण प्रकाशित किया।

यजुर्वेद शतकम्—आर्य प्रादेशिक सभा ने आर्य साहित्य विभाग ग्रन्थ-माला २ के अन्तगत प्रकाशित किया। शान्ति आश्रम लुधियाना ने चतुर्थ सस्करण निकाला। प्रकाशन की तिथि का उल्लेख इस सस्करण पर नही है।

सामवेद शतकम्—आर्य प्रादेशिक सभा के सस्करण के अतिरिक्त शान्ति आश्रम, लुधियाना ने तृतीय सस्करण प्रकाशित किया। हकीम बीरूमल ने अजमेर से १९६६ ई० मे पुनः प्रकाशित किया।

अथर्ववेद शतकम्—आर्य प्रादेशिक सभा ने आर्य साहित्य विभाग ग्रथमाला ६ के अन्तगत तृतीय सस्करण ११७८ मे प्रकाशित किया। शान्ति आश्रम लुधियाना (तृतीय सस्करण) तथा हकीम बीरूमल ने अजमेर से १९६४ ई० में इसे प्रकाशित किया।

वेद ज्योति—चारों शतको का सम्मिलित सग्रह जनज्ञान प्रकाशन दिल्ली ने २०२६ वि० में प्रकाशित किया।

अब महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव फाल्गुन बदी दशमी को

—डा० महेन्द्रकुमार शास्त्री

विचार विचक्षण पाठकवृन्द! ऋषि दयानन्द लिखित आत्मकथा तथा पूना प्रवचन से ही महर्षि दयानन्द की जन्म तिथि के निर्धारण का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। इसके अतिरिक्त प० लेखराम, प० देवेन्द्र बाबू, प० भगवद्दत्त बी० ए० के खोजपूर्ण तथ्यों तथा तर्क और प्रमाणो के आधार पर स्वामी जी का जन्म सवत १८८१ विक्रमी के फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष मे हुआ था।

सम्वत् १८८१ के फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष में मूल नक्षत्र फाल्गुन बदी दशमी तथा ग्यारहवीं को पडता है। व्यावहारिक सूर्योदय तिथि सवत् १८८१ फाल्गुन बदी दशमी शनिवार थी। अत ऋषि दयानन्द की जन्म तिथि सम्वत् १८८१ फाल्गुन मास, कृष्णपक्ष दशमी तिथि, शनिवार तदनुसार १२ फरवरी सन् १८२५ ई० है।

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा ने इस तिथि को स्वामी जी की प्रमाणिक जन्म तिथि माना है। इस विचार के समर्थक विद्वानो मे प्रो० भीमसेन शास्त्री, स्वामी आत्मानन्द सरस्वती प० बुद्धदेव विद्यालकार प० भगवद्दत्त बी० ए० प० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री आचार्य विश्वश्रवा व्यास तथा टकारा जन्म शताब्दी के मन्त्री एव दयानन्द जन्म स्थान निर्णय के लेखक पडित विजयशकर मूलशकर आदि प्रमुख हैं।

१५ मार्च १९९२ की सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा की बैठक मे सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि महर्षि का जन्मोत्सव देशी तिथि के अनुसार प्रतिवर्ष फाल्गुन बदी दशमी के दिन सारे विश्व में समारोह पूर्वक मनाया जाए। इस बैठक की अध्यक्षता सभा प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने की और भाग लेने वालो मे प्रमुख थे—श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव श्री वीरेन्द्र एम० ए० प्रो० शेरसिह डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, डा० शिवकुमार शास्त्री, श्री मनमोहन तिवारी, श्री अश्विनीकुमार एडवोकेट, डा० धर्मपाल, डा० भवानीलाल भारतीय श्री रामनाथ सहगल, श्री विद्यासागर शास्त्री, श्री शिशुपाल रामभरोस, श्री विद्याधर आदि।

मेरी विश्व के समस्त आर्य समाजो के अधिकारियों से प्रार्थना है कि प्रति वर्ष महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज का जन्मोत्सव फाल्गुन बदी दशमी के दिन ऋषि दशमी के रूप मे धूमधाम से मनाया करें। उस दिन आर्य समाज मन्दिरो पर दीपमाला की जाए, नए ध्वज लगाए जाए। महर्षि विषयक व्याख्यान एंव भजनोपदेश कराए जाए। आर्य समाजो द्वारा सचालित शिक्षण सस्थाओ मे सार्वजनिक अवकाश रखा जाए। भारत सरकार एव प्रान्तीय सरकारो से अनुरोध किया जाए कि जिस तरह महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, मुहम्मद साहब गुरु नानक, महात्मा गाधी, डा० अम्बेडकर आदि महापुरुषो की स्मृति मे सार्वजनिक अवकाश होता है उसी प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के सर्वतोमुखी क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द के जन्मोत्सव पर भी फाल्गुन बदी दशमी के दिन सार्वजनिक अवकाश रखा जाए।

आर्य समाज भीकमपुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज भीकमपुर जैती जनपद बदायू का १२वां वार्षिकोत्सव दिनांक १६ मई से १८ मई तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर उच्चकोटि के विद्वान, सन्यासी, महात्मा तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। विद्वानों के अमृतमय वचनो को सुनने के लिये अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर लाभ उठावें।

बड़े पैमाने पर हो रही है गायों की तस्करी

पाकिस्तान मे गोमांस की बड़े पैमाने पर मांग होने के कारण राजस्थान और गुजरात के सीमाई इलाको से सैकड़ों गायें रोज पाकिस्तान भेजी जाती हैं। पाकिस्तान की सीमा से जुड़ा राजस्थान का विस्तृत मरू इलाका कभी सरकार की उपेक्षा का शिकार होता है तो कभी सूखा और अकाल जैसी प्राकृतिक विपदाए अपना कहर बरपा देती हैं। सीमात कस्बो में रहने वाले लोगों ने इस उपेक्षा भरी जिन्दगी को स्वीकार कर लिया है। इसी के साथ उनमें तस्करी की प्रवृत्ति बढ़ रही है। सीमाई कस्बो में रहने वाले लोगो में से पैंतीस प्रतिशत तस्करी में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लगे हुए हैं। हालांकि यह एक मोटा अनुमान है।

नशीले पदार्थों, इलेक्ट्रानिक वस्तुओं के साथ साथ गाय की बड़े पैमाने पर तस्करी ने नए सवाल खड़े कर दिए हैं।

पिछले चार साल की प्राकृतिक विपदा ने मरु प्रदेश के लोगो को ही नही अपितु पशुओं को भी दम तोड़ने पर विवश कर दिया है। राज्य की लगभग ३० लाख गाय भी इसकी चपेट मे आई हैं। जो इस विपदा से बच रही हैं, वे पाकिस्तान पहुच कर बूचड़खाने में कट रही हैं।

गाय की तस्करी वैसे तो आजादी के बाद से ही शुरू हो गई थी। पर पिछले चार साल से यह बेतहाशा बढ़ी है। राजस्थान गो सेवा सघ के एक प्रवक्ता ने बताया कि सर्दियो के मौसम मे गाय की तस्करी का काम व्यापक स्तर पर होता है। क्योंकि रात मे यह सुनसान रहती है। जानकार लोगो का कहना है कि इसी साल लगभग आठ हजार से भी अधिक गाय सीमा के उस पार पहुची हैं।

सर्दियो मे पाकिस्तान में भी गोमांस की बेहद मांग रहती है। इस दौरान गोमांस सौ से डेढ सौ रुपये किलो तक बिक जाता है। पाक व्यापारी गाय के बदले मे सोना या नशीली वस्तु देते हैं। इस धन्धे मे तस्कर को हर गाय पर आधा से दो तोला सोना या इसी अनुपात मे नशीली वस्तु दी जाती है। यह काम पूरे योजनाबद्ध तरीके से होता है। पहले तो गाय के झुड को भारतीय तस्कर पाक सीमा पर धकेल देते हैं। यह काम रात के अन्धेरे मे किया जाता है। अब क्योंकि १२४७ किलोमीटर सीमा पर सुरक्षा बल क मुट्ठी भर जवान तैनात हैं और बाढ भी नहीं है लिहाजा हर दफा इन तस्करो को पकड पाना मुश्किल होता है। गायो के बदले भुगतान का काम तस्करो के भारत बैठे एजेंट करते है या फिर कुछ गायो के गले मे सोना नशीले पदार्थ बाध कर तस्कर उन्हे फिर भारतीय सीमा मे धकेल देते हैं।

गायो की तस्करी राजस्थान के सभी सीमान्त जिलो से हो रह है। बाडमेर, जेसलमेर, बीकानेर और श्री गगानगर के कस्बाई क्षेत्रो से राजस्थान की गाये तो सीमा पार पहुचती ही हैं, साथ ही गुजरात से पशु भी बाडमेर के रास्ते से पाकिस्तान पहुचाए जाते हैं। बाडमेर, जैसलमेर की सीमा पर यह धधा अधिक ही बढ रहा है। बीकानेर गगानगर मे अनूपगढ और जैसलमेर मे नाचण, रामगढ़ म्याजलार सतो, सूदय तडोव कोठारू और मोहनगढ वे गाव हैं जो गायो की तस्करी के प्रमुख केद्र कहे जाते है। बताया जाता है कि पिछले साल भीषण अकाल की वजह से लोगो ने अपनी गायो को सौ से २०० रुपये तक में एजेन्टो को बेच दिया। बाडमेर मे देताली, मुनावा, सर आलम, पाचल, बीसापुरा, चोहटन और गगानगर जिले मे चित्रकूट, पथवेडावाली आदि कुछ इलाके तस्करी के प्रमुख केन्द्र कहे जाते हैं। गाव वालों से खरीदने के अलावा एजेन्ट दूसरे तरीको से भी गाय खरीदते हैं। ये लोग पशु मेले मे पहुच जाते हैं और झुड का झुड गाय खरीद लेते हैं। 'फाटक' उस क्षेत्र को कहते हैं जहा खोये भटके पौर अवारा पशुओ की देखभाल की जाती है। ग्राम पचायते अक्सर यहा पशुओ की नीलामी करती हैं। जैसे ही नीलामी की घोषणा होती है तस्कर सक्रिय हो जाते हैं। चूकि गावों में ये लोग पैसो और ताकत की वजह से दबदबा बना लेते है इसलिए बोलियों पर भी इनका नियत्रण रहता है। नीलामी के बाद तस्कर गायो को अपने एजेन्ट या ग्राम चरवाहो को पाक सीमा में हाकने के लिए दे देते हैं। अपार मांग होने पर ये तस्कर गांव वालो को डरा धमका कर भी पशु उठा कर ले जाते हैं। इस आशय की रपट भी समय-समय पर पुलिस थानो मे दर्ज होती रहती है।

जाति के अनुसार इन तस्करों का वर्गीकरण किया जाए तो प्रमुख बात यह देखने में आती है कि इस धन्धे में लगभग साठ प्रतिशत हिन्दू हैं जबकि चालीस प्रतिशत में मुसलिम और दूसरी जातियां आती हैं। हिन्दुओ में प्रमुख रूप से भाटी और बिश्नोई जाति के सीमा पर रहने वाले परिवार इस धन्धे से अपना जीवन गुजार रहे हैं।

विडम्बना यह है कि जो भाजपा सरकार विपक्ष मे रहते हुए पशुओ की तस्करी के बारे मे विधान सभा मे अनेक सवाल उठाती थी, आज मूक बनी हुई है। भाजपा नेता तब कहते थे कि पशुओ की तस्करी को इका नेता व राजस्थान पुलिस का सरक्षण है। वे आज अपना प्रभुत्व होने पर चुप हैं ?

स्थिति यह है कि गाव वाले अपनी खराब आर्थिक स्थिति के कारण अपने पशुओ को लावारिश छोडने को मजबूर हो जात हैं या फिर मामूली रकम मे बेच देते है। वही तस्करी के दौरान पकडी गई गायो की देख-रेख की उचित व्यवस्था नही होने की वजह से पुलिस, कस्टम विभाग और सीमा सुरक्षा बल भी पगु हो गया है।

गो सेवा सघ के प्रवक्ता ने बताया कि पिछले कुछ समय से पुलिस सुरक्षा बल और सामाजिक सस्थाओ की मुस्तैदी ने गायो की तस्करी को कुछ हद तक रोकने की कोशिश की। लेकिन यह नही के बराबर है। एक अनुमान के तौर पर जैसलमेर से दो हजार, श्रीगगानगर से ढाई हजार और बाडमेर से तीन हजार के करीब गायें पाक बूचडखाने पहुच गई। हालांकि इसी साल पुलिस और सुरक्षा बल ने कई गिरोह को तस्करी करते हुए पकड़ा भी।

गो रक्षा के लिए जगदम्बा सेवा समिति, राजस्थान गो सेवा सघ जैसी सामाजिक सस्थाए आगे आई हैं। ये सस्थाए न केवल 'फाटक' के पशुओ को तस्करो से बचाती हैं बल्कि आश्रम में रख कर इन्हे पालती भी हैं। सघ का एक उडनदस्ता है जो रेगिस्तान मे रह कर तस्करी किए जा रहे पशुओं को बचाता को बचाता है। इस उडनदस्ते का नेतृत्व सघ के कार्यकर्ताओ के अतिरिक्त स्थानीय नागरिक भी करते हैं। पर जब तक सरकार बडे पैमाने पर गायो को बचाने के लिए कोई योजना नही बनाती, तब तक गायों की तस्करी को रोक पाना असम्भव है।

—साभार जनसत्ता २८ ४-९२

विश्वविद्यालय में दयानन्द अध्ययन केन्द्र की स्थापना

राजस्थान सरकार द्वारा अजमेर विश्वविद्यालय का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय रखे जाने सम्बन्धी जो विधेयक राज्य विधान सभा में ८ अप्रैल ९२ को प्रस्तुत किया गया था, वह सर्व सम्मति से पारित हो गया है। आर्य समाज अजमेर के प्रधान श्री दत्तात्रेय जी आव, के निरन्तर प्रयत्न से यह नामकरण हो सका है।

उन्होने जहा राज्य सरकार को इसके लिए हार्दिक धन्यवाद प्रस्तुत किया है वही यह भी सुझाव दिया है कि इस नामकरण को सार्थक करने के लिए विश्वविद्यालय म एक विशेष पीठ या अध्ययन केन्द्र की स्थापना की जाये जिसमे महर्षि दयानन्द के जीवन और शिक्षाओं पर शोध और अध्ययन किया जाय जैसा पजाब के गुरु नानक विश्वविद्यालय में प्रावधान है।

आचार्य गोविन्दसिंह मन्त्री

सत्यार्थ प्रकाश एक अनमोल हीरा है

वेद ही मानव को मानव से जोड़ने का काम करते हैं। इस युग में वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का भारत के निर्माण व उत्थान में अद्वितीय योगदान रहा है। वास्तव में स्वामी जी न आते तो भारतीय संस्कृति की रक्षा न हो पाती, ये उद्‌गार महामण्डलेश्वर स्वामी श्याम सुन्दर दास शास्त्री ने आर्य समाज मन्दिर हरिद्वार मे आयोजित एक समारोह में व्यक्त किए।

महामण्डलेश्वर स्वामी गोपाल मुनि जी ने कहा कि सत्यार्थप्रकाश को पढ़ने से मुझे ज्ञात हुआ है कि यह ग्रन्थ बिना किसी भेद-भाव के सत्यासत्य का समाधान करने वाला एक अनमोल हीरा है।

कार्यक्रम में स्वामी वेदानन्द जी वैदिक, सुश्री सन्तोष कुमारी जी रतन, श्रीमती निर्मला कुमारी श्रीमती सरला देवी आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

संन्यासिनी माता मीरा यति सम्मानित

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार ने आर्य वान प्रस्थाश्रम ज्वालापुर, की संन्यासिनी माता मीरा यति को वर्ष १९९१ के आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से सम्मानित किया। यह पुरस्कार वैदिक धर्म के प्रचार के लिए समर्पित व्यक्तियों को आर्य संघर्ष विद्यासभा ट्रस्ट जयपुर के माध्यम से प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने शाल ओढ़ा कर गुरुकुल के कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने प्रशस्ति पत्र एवं कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह ने २१०० रुपये की सम्मान राशि प्रदान कर माता मीरा यति को सम्मानित किया। समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव एवं महामन्त्री डा० धर्मपाल ने भी माता जी के प्रति आदर व स्नेह भाव प्रदर्शित किया।

आजीवन ब्रह्मचर्य व्रती माता मीरा जी ने १० से अधिक पुस्तकें भी लिखी हैं। वह स्थान-स्थान पर घूम घूम कर वेद प्रचार, साहित्य वितरण, निर्धन व सूखाग्रस्त क्षेत्रों के पीड़ितों के लिए कपड़ों की भी व्यवस्था करती रही है। उल्लेखनीय है कि ट्रस्ट के इतिहास में पहली बार एक महिला को सम्मानित किया गया है।

भारत माता की वाणी हिन्दी को देश के कोने-कोने में गुंजित करें

मानव संसाधन मन्त्री श्री अर्जुनसिंह ने कहा कि हिन्दी भारतमाता की वाणी है और हिन्दी की सेवा भारत की सेवा है। श्री अर्जुनसिंह केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा के तत्वावधान में २७ अप्रैल को नई दिल्ली में आयोजित एक अखिल भारतीय हिन्दी सेवी सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। श्री अर्जुनसिंह ने सम्मानित हिन्दी सेवियों से कहा कि वे भारत माता की वाणी को देश के कोने कोने में गुंजित करें तथा हिन्दी के विकास में जो अड़चनें आयें उन्हें सद्भाव व सहयोग से दूर करें।

श्री अर्जुन सिंह ने दस हिन्दी सेवियों को शाल, ताम्र पत्र व ग्यारह-ग्यारह हजार रुपये की राशि प्रदान कर सम्मानित किया। उन्होंने अगले वर्ष से यह राशि बढ़ा कर १५ हजार रुपये करने की भी घोषणा की। पुरस्कृत विद्वानों में श्री अक्षयकुमार जैन, श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी भी हैं। प्रख्यात हिन्दी लेखिका श्रीमती गौरपंत का पुरस्कार उनकी माता श्री साप्ताहिक हिन्दुस्तान की सम्पादक श्रीमती मृणाल पाण्डे ने ग्रहण किया।

सांसद श्री शंकरदयाल सिंह ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हिन्दी की सेवा के क्षेत्र में अहिन्दी भाषी विद्वानों ने जितना काम किया है, उसके लिए हम नत मस्तक हैं। इससे पूर्व संस्थान के निदेशक डा० अमर बहादुर सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो० कृष्ण कुमार शर्मा एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रो० हसन हुसैन ने किया।

विद्यार्थियों को चरित्रवान बनाने की आवश्यकता

: रामलाल राही

सी० आर० पब्लिक स्कूल, टी० ब्लाक, सुखीराम पार्क उत्तम नगर नई दिल्ली ५९ का उद्घाटन आज १९-४-९२ को केन्द्रीय गृह उपमन्त्री श्री रामलाल राही के द्वारा सम्पन्न हुआ। समारोह में बोलते हुए श्री राही ने कहा कि आज अच्छे विद्यालयों की आवश्यकता है जहां प्रारम्भ से ही बच्चों को चरित्र की विशेष शिक्षा देकर चरित्रवान बनाया जा सके तथा उन्हें प्राचीन भारतीय संस्कृति के बारे में पूर्ण जानकारी दी जानी चाहिए इस समारोह में अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने विद्यालय की विशेषताओं को बता कर इसे एक अच्छे स्कूल की संज्ञा दी।

—अशोक कुमार वैदिक

उप व्यायाम शिविर

१, २८ मई से ७ जून तक केवल हरयाणा २, २६ मई से ५ जून तक स्थान —पुत्र गुरुकुल चित्तौड़गढ़ राज०। सौजन्य से —आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ३, १ जून से १० जून तक, स्थान —गुरुकुल महाविद्यालय पुष्पावती पूठ उ० प्र०। सौजन्य से —गुरुकुल महाविद्यालय पुष्पावती पूठ गाजियाबाद उ० प्र०।

गुंजोटी के सरपंच दिगम्बरराव देशमुख संन्यासी बने

आर्य समाज गुंजोटी के पुराने सक्रिय कार्यकर्त्ता, गरीबों के हितैषी, त्याग की साक्षात मूर्ति व गुंजोटी गांव के सरपंच श्री दिगम्बररावजी वानप्रस्थी ने अपनी आयु के ७६वें वर्ष में वैदिक संन्यास आश्रम गाजियाबाद के वार्षिकोत्सव पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी महाराज से दिनांक १९-४-९२ प्रात ९ बजे संन्यास ले लिया। उनका नाम बदल कर स्वामी व्रतानन्द रखा है।

पं० अशोक कुमार

एक अनुकरणीय उदाहरण

श्री पतराम त्यागी, उप प्रधान आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली ने आर्य प्रतिनिधि सभा की विगत मास हुई बैठक में 'आर्य सन्देश' के पचास ग्राहक बनाने का संकल्प लिया। श्री त्यागी ने सभा कार्यालय में ३१ ग्राहकों का शुल्क जमा भी करा दिया है। श्री त्यागी का कथन है कि आर्य सन्देश पत्रिका ऋषि दयानन्द की विचार धारा एवं वेद प्रचार-प्रसार का एक उत्तम, सशक्त एवं सस्ता माध्यम है। कर्मठ व समर्पित आर्य समाजी श्री त्यागी बड़े लगन से ग्राहक बनाने के कार्य में संलग्न हैं। अगले चरण में श्री त्यागी का ५० आजीवन ग्राहक बनाने का लक्ष्य है। श्री त्यागी का यह प्रयास अन्य आर्य बन्धुओं के लिए अनुकरणीय है।

विशाल व्यायाम एवम् ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर की तिथियां परिवर्तन

२० मई से ३१ मई के स्थान पर ७ जून से २१ जून १९९२ तक निश्चित हुआ है। सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय शिक्षक शिविर और दिल्ली प्रदेश का संयुक्त शिविर लगाने के लिये यह परिवर्तन किया गया है।

आर्य समाज नैनीताल का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नैनीताल अपना वार्षिकोत्सव २० से २७ मई तक समारोहपूर्वक मना रहा है। इस समागम में आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर अनेकों सम्मेलनों का आयोजन भी किया जा रहा है। इस समारोह में सपरिवार तथा इष्टमित्रों सहित पधार कर धर्म एवं आध्यात्म का लाभ उठावें।

—आर्य समाज घरौंडा जनपद करनाल का वार्षिकोत्सव २७ से २९ मार्च तक उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर अनेकों विद्वान तथा भजनोपदेशकों ने अपने अमृतमय उपदेशों से जनता जनार्दन को लाभान्वित किया। २७ मार्च को एक विशाल शोभायात्रा भी निकाली गई शोभायात्रा में आर्य वीर दल के स्वयंसेवकों द्वारा किये गये व्यायाम प्रदर्शन को जनता ने अत्यधिक पसन्द किया। समारोह अत्यन्त सफल रहा।

आर्य समाज मन्दिर गौहाटी का निर्वाचन

१९९२-९३ के लिये पदाधिकारियों का चुनाव २२-३-९२ को आर्यसमाज मन्दिर गौहाटी के प्रांगण में श्री परेशचन्द्रदेव जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

१—प्रधान डा० नारायणदास जी
२—मन्त्री श्री भगवानदास गुप्त
३—कोषाध्यक्ष श्री जगदीश वर्मा
४—पुस्तकाध्यक्ष श्री रमेश गोयल

—भगवानदास गुप्ता, मन्त्री

पर्वतीय क्षेत्रों में वेद प्रचार

तह० ऊखीमठ के निकट कोट माहेश्वरी में २० से ३० मार्च तक वैदिक प्रचार हेतु भवर सिंह राणा के प्रयासों से शिविर लगाया गया जिसमें श्री भवरसिंह जी ने अपने ओजस्वी प्रवचनों के द्वारा क्षेत्रीय निवासियों पर गहरा प्रभाव छोड़ा है उनके प्रयत्नों से इस क्षेत्र में पशुबलि के विरुद्ध भावना बननी प्रारम्भ हो रही है। ४ से ११ अप्रैल तक इसी प्रकार का एक शिविर कालीमठ में भी लगाया गया है।

आर्य समाज कृष्ण नगर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज कृष्ण नगर का ४१वा वार्षिकोत्सव ११ से १९ अप्रैल तक धूमधाम से मनाया गया। ११ को प्रभात फेरी निकाली गई १२ अप्रैल से १७ अप्रैल तक प्रतिदिन यजुर्वेद यज्ञ का आयोजन किया गया। १६ अप्रैल को स्त्री सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमे आर्य विदुषी महिलाओं ने स्वामी दयानन्द द्वारा नारी जाति पर किए गए उपकारो का स्मरण कर समाज व राष्ट्र निर्माण मे आर्य नारियो को आगे बढ कर काम करने का आह्वान किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने १९ अप्रैल को समापन दिवस के अवसर पर आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि राष्ट्र भाषा हिन्दी हमारी एकता व अखण्डता का आधार है। आर्य समाज सभी भारतीय भाषाओ का विकास चाहता है, इसमें हिन्दी की भी उन्नति है। स्वामी जी ने ९ मई को दिल्ली में आयोजित किए जा रहे द्वितीय अखिल भारतीय भाषा सम्मेलन की भी जानकारी दी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा कि देश की राजधानी होने के नाते दिल्ली में आर्य समाज की गतिविधियों एव कार्यक्रमो का पूरे देश नई दिल्ली प्रभाव पड़ता है, अत हमे सभी आर्य उत्सव व पर्व बड़े धूमधाम से माया है। हिन्दी चाहिए। सभी को जीवन मे आर्यत्व लाने चाहिए। सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने कहा कि आर्य समाज के सिद्धान्तों का दृढ़ता से पालन करते हुए हमे आर्य समाज के काम को आगे बढाते रहना चाहिए।

इस कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि सासद श्री बी० एल० शर्मा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री प० महेन्द्रकुमार शास्त्री एव प० प्रणव प्रकाश शास्त्री आदि ने भी राष्ट्र निर्माण मे आर्य समाज के योगदान की चर्चा की। इससे पूर्व प्रात यज्ञ की पूर्णाहुति दी गयी। ऋषि लगर व शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दिल्ली में एक लाख से अधिक बंगला देशी

दिल्ली में इस समय बगला देश के एक लाख से अधिक लोग अवैध रूप से रह रहे हैं। बगला देश से चोरी छिपे आये इन लोगो का पता लगाने व उन्हे वापस भेजने के हर सम्भव उपाय किए जा रहे हैं। यह जानकारी २८ अप्रैल को केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री शकर राव चव्हाण ने राज्य सभा मे दी।

गुरुकुल आश्रम आमसेना में उड़ीसा के महामहिम राज्यपाल द्वारा धर्मार्थ चिकित्सालय का शिलान्यास

गुरुकुल आश्रम आमसेना का २४वां वार्षिक महोत्सव १० अप्रैल १९९२ को अत्यन्त समारोह के साथ मनाया गया। ५० बिस्तर वाले धर्मार्थ चिकित्सालय का शिलान्यास करने एव रजत जयन्ती वर्ष का शुभारम्भ करने हेतु इस अवसर पर उड़ीसा के महामहिम राज्यपाल श्री यज्ञदत्त शर्मा उच्चाधिकारियों के साथ गुरुकुल भूमि पधारे।

गुरुकुल का सारा कार्यक्रम ब्रह्मचारियो की व्यवस्था एव जन सेवा के कार्यक्रम को देख कर राज्यपाल महोदय अत्यन्त प्रभावित हुए और उन्होने आश्वासन दिया कि सरकार यथासम्भव इस सस्था को सहायता देगी। इस अवसर पर भारी सख्या में जनता विद्वान् व वक्ता उपस्थित थे।

कल्याण जी भाई बेलाणी 'कल्याणदेव आर्य बने

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा प्रसिद्ध आर्य श्रेष्ठी श्री कल्याण जी भाई बेलाणी (७-बी, कक्कड निकेतन, डेरासर लेन, घाटकोपर (पूर्व)मुम्बई-७७ का नाम परिवर्तित करके श्री कल्याणदेव आर्य रखा गया है। यह नाम परिवर्तन चैत्र शुक्ला २, वि० स० २०४९ (५-४-९२) को आर्य वन विकास फार्म के वार्षिक उत्सव पर किया गया।

सभी आर्य सज्जनो से निवेदन है कि वे भविष्य में उनके साथ नवीन नाम से ही व्यवहार करें।

—ज्ञानेश्वरार्य

दर्शन योग महाविद्यालय, आर्य वन, रोजड पो० सागपुर (सा० का०) गुजरात

सेवक की आवश्यकता

आर्य समाज बी एन पूर्वी, शालीमार बाग, दिल्ली-५२ के लिए सेवक की शीघ्र आवश्यकता है जो लिखना-पढ़ना जानता हो। वेतन योग्यतानुसार, गुरुकुल के छात्र को वरीयता। शीघ्र लिखें या सम्पर्क करें।

—प० परमानन्द सागर प्रधान आर्य समाज

पता ए० ई० १२६ शालीमार बाग, दिल्ली-५२

दूरभाष : ७२२३६८७

चुनाव समाचार

आर्य समाज नीलोखेड़ी

आर्य समाज नीलोखेड़ी, हरियाणा के १९ अप्रैल ९१ को हुए वार्षिक निर्वाचन मे सर्वश्री एच० डी० तुली—प्रधान चौ० ईश्वरसिंह एव ओमप्रकाश—उपप्रधान सुभाष चन्द्र सिंह—मन्त्री, देवेन्द्र कुमार उपमन्त्री प्रताप चन्द—पुस्तकाध्यक्ष तीथदास—कोषाध्यक्ष एव कृष्ण लाल—लेखन निरीक्षक सर्व सम्मति से चुने गए।

आर्य समाज लखीमपुर

आर्य समाज लखीमपुर, उ० प्रदेश के वार्षिक चुनाव मे श्री सुशील कुमार—प्रधान, श्री रामजन्म—मन्त्री, श्री सुधीर कान्त—कोषाध्यक्ष एव श्री आनन्द स्वरूप—पुस्तकाध्यक्ष सवसम्मति से निर्वाचित हुए।

आर्य समाज भोपाल

आर्य समाज हैवी इलेक्ट्रिकल्स पिपलानी, भोपाल के वार्षिक चुनाव में सर्वश्री धर्मवीर बवबा—अध्यक्ष, सुरेन्द्र प्रकाश सेठ—उपाध्यक्ष, बलदेव बैठा—मन्त्री, मनमोहन दुआ व नरेन्द्रकुमार आर्य—उपमन्त्री, विनोदकुमार आर्य—कोषाध्यक्ष एव रेवाशंकर चौधरी—पुस्तकाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

आर्य समाज रावत भाटा

आर्य समाज रावतभाटा, राजस्थान के वार्षिक चुनाव में श्रीमती भागवन्ती मेहता—प्रधाना सर्वश्री महेश प्रधान—उपप्रधान देवेन्द्र कुमार—मन्त्री, घीसाराम शर्मा व मन्नालाल सोनी—उपमन्त्री, ओमप्रकाश आर्य—कोषाध्यक्ष, एव ओमप्रकाश व्यास पुस्तकाध्यक्ष चुने गये।

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्योहारो व पर्वों से सम्बन्धित रचनाए कृपया अक प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवाये।

—आर्य समाजो, आर्य शिक्षण संस्थाओं आदि के उत्सव व समारोह के कार्यक्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करावें।

सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस मे टाइप की हुई होनी चाहिए।

—अस्पष्ट लिखी अथवा देर से प्राप्त सामग्री का उपयोग करना सम्भव न हो सकेगा।

—पता बदलने अथवा नवीकरण शुल्क भेजते समय ग्राहक संख्या का उल्लेख करते हुए पिन कोड नम्बर भी अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क २५ रुपये तथा आजीवन सदस्यता २५० रुपये है। आजीवन ग्राहक बनने वालो को ५० रुपये ग्राहक बनाने के कार्यालय अथवा आर्य सन्देश के पुराने विशेषांक निःशुल्क उपहार स्वरूप दिए जाएंगे। स्टाक सीमित है।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अंक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखें।

—आर्य सन्देश के लेखकों के कथनो या मतो से सहमत होना आवश्यक नहीं है। —पाठकों के सुझाव व प्रतिक्रिया आमन्त्रित हैं।

कृपया सभी पत्र व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

—सम्पादक

सेवा में—

. ३ १ ५ नमा हरिद्वार (उ प्र

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी०(एल१०२४/१-०९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५, अंक २५ | रविवार, १७ मई १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

द्वितीय भारतीय भाषा सम्मेलन सम्पन्न

सभी भारतीय भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि अपनायें

नई दिल्ली। 'हिन्दी तो हमारे मन मन्दिर की भाषा है व हमारी प्रेरणा की भाषा है। हिन्दी की उन्नति से ही अन्य भारतीय भाषाओं की उन्नति में तेजी आयेगी।' ये विचार लोकसभा अध्यक्ष शिवराज पाटिल ने ९ मई को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा कान्स्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली में आयोजित द्वितीय भारतीय भाषा सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए। सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की।

दो सत्रों में सम्पन्न हुए इस सम्मेलन में अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित हुए। सम्मेलन में वक्ताओं की आम राय यह थी कि सभी भारतीय भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि अपनायी जाये। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल थे। सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने सम्पूर्ण कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। सम्मेलन में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष श्री राम रेड्डी भी उपस्थित थे।

भाषाओं में देश की माटी की सौंधी सुगन्ध है

श्री पाटिल ने आगे कहा कि भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है यहां अनेक भाषायें बोली जाती हैं। इन भाषाओं में देश की माटी की सौंधी सुगंध है, जीवन दायिनी नदियों की गति है, वायु का प्रवाह है एवं लोगों के व्यवहार व जीवन की छाप है। हिन्दी भाषा हमारी राष्ट्रीय भाषा है और संविधान में हिन्दी को सर्वप्रथम स्थान प्राप्त है।

मधुर संगीत

श्री पाटिल ने बताया कि लोक सभा भारतीय भाषाओं का एक अद्भुत संगम है। सदन में गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगू आदि के सांसद जब बोलते हैं तो उनकी हिन्दी में उनकी अपनी भाषा का पुट होता है और इसे सुनना बहुत अच्छा लगता है। जब संसद में हमारी बंगाली बहिन बोलती हैं तो ऐसा लगता है कि कोई मधुर संगीत सुना रहा हो या काव्य में गा रहा हो। इससे अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं।

भाषाओं की उन्नति सरकार की जिम्मेवारी

श्री पाटिल ने कहा कि शब्द, भाषा की शक्ति होता है। लेखक, कवि, चिन्तक आदि के प्रयासों व शक्ति से ही भाषा का विकास होता है एवं वह आगे बढ़ सकती है। पुराने जमाने में राजा भाषा को संरक्षण देते थे। आज लोकतन्त्र में समूह व संस्थायें भी भाषा की उन्नति में योगदान देते हैं परन्तु भाषा की उन्नति की सबसे बड़ी जिम्मेदारी सरकार की है और इसके लिए सरकार को पर्याप्त धन राशि उपलब्ध करनी चाहिए।

देवनागरी लिपि अपनाने पर बल

लोक सभा अध्यक्ष श्री पाटिल ने बल देते हुए कहा कि यदि सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक ही समान देवनागरी लिपि अपना ली जाये तो इससे सभी भाषाओं की उन्नति होगी। पर इसके लिए सभी की सहमति आवश्यक है।

संस्कृत की रक्षा करें

श्री पाटिल ने कहा कि संस्कृत में वेद, शास्त्रों, उपनिषदों का ज्ञान अनमोल उपलब्धि है परन्तु दुख की बात है कि आज संस्कृत भाषा ओझल होती जा रही है।। यदि संस्कृत भाषा लुप्त हो गई तो इससे हमारे व्यवहार, जीवन व संस्कृति पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ेगा।

अन्तर्राष्ट्रीय भाषाए भी सीखें

श्री पाटिल ने कहा कि संस्कृत, हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में आध्यात्मिक ज्ञान का जो भण्डार भरा पड़ा है वह विश्व की किसी और भाषा में नहीं है, परन्तु यदि आज हम कृषि, प्रबन्ध प्रशासन, वाणिज्य, कृषि विज्ञान अन्तरिक्ष आणविक शक्ति आदि की नवीनतम जानकारी प्राप्त करनी है तो अंग्रेजी, फ्रैंच, जर्मन जापानी आदि अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं का भी ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। उन्होंने कहा आज वैज्ञानिक उन्नति के कारण हम सब एक दूसरे के करीब आ रहे हैं और सारा विश्व एक छोटा सा गांव लगता है, अतः हमें अन्तर्राष्ट्रीय भाषायें सीख कर भौतिक उन्नति भी करनी चाहिए।

भाषाओं की उन्नति के लिए नवीनतम तकनीक अपनायें

श्री शिवराज पाटिल ने कहा कि आज हिन्दी का प्रचार-प्रसार पुरानी पद्धति पर नहीं हो सकता। पहले आश्रमों में ज्ञान श्रुति परम्परा से दिया जाता था। आज प्रिंटिंग प्रेस है, दृश्य व श्रव्य उपकरण हैं, टी० वी० सेट है और इससे आगे उपग्रह का भी उपयोग किया जा रहा है। अतः हमें हिन्दी व भारतीय भाषाओं के विकास व उन्नति के लिए इन वैज्ञानिक आविष्कारों का लाभ उठाना चाहिए।

अंग्रेजी हमेशा नहीं रहेगी

श्री पाटिल ने कहा कि संविधान में हिन्दी का स्थान नम्बर एक पर है। दक्षिण भारतीयों की सुविधा के लिए संविधान में हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी के प्रयोग की भी व्यवस्था है। परन्तु अंग्रेजी भाषा देश में हमेशा नहीं रहेगी और हिन्दी को बढ़ने को कोई ताकत नहीं रोक सकती है।

देवनागरी को अतिरिक्त लिपि के रूप में अपनायें

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि मैं सभी वक्ताओं द्वारा व्यक्त विचारों एवं प्रस्तुत प्रस्ताव से सहमत हूं। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं की अपनी-अपनी लिपि के साथ साथ देवनागरी लिपि भी प्रयोग में लाई जाये। इससे एक दूसरे के विचारों को जानने का अवसर मिलेगा।

उन्होंने कहा कि स्वतन्त्रता के ४१ वर्ष बाद भी सरकार राष्ट्रीय कार्य प्रणाली के समस्त क्षेत्रों—प्रशासन, शिक्षा, न्याय विधि में भारतीय भाषाओं को उनका उचित स्थान दिलाने में असफल रही है।

भाषाई राज्यों के कारण ही खालिस्तान की मांग उठी है

—भजनलाल

सम्मेलन के मुख्य अतिथि हरयाणा के मुख्य मन्त्री श्री भजनलाल ने कहा कि भाषा व संस्कृति का मेल देश को एक सूत्र में बांधता है। उन्होंने कहा राष्ट्र भाषा हिन्दी राष्ट्र की एकता का प्रतीक है। पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण तक हिन्दी सारे देश को जोड़ती है। इसके साथ-साथ हमें प्रान्तीय भाषाओं को जीवित रखना है और उनका विकास करना है।

श्री भजनलाल ने आगे कहा कि अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत में अंग्रेजी न थी। भारतीय भाषाओं में आपस में कोई झगड़ा न था परन्तु अंग्रेजों ने अंग्रेजी थोप कर देश की एकता को तोड़ दिया। उन्होंने आगे कहा कि देश में भाषाओं के आधार पर देश का बंटवारा ठीक नहीं था। आज यदि भाषाई

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सम्पादक—प्रो०सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

आनन्द मय कोष में उपस्थान (१)

—देव नारायण भारद्वाज

जब हमारा ध्यान प्रभु के प्रति केन्द्रित हो जाता है तो उसके गुणो का स दर्श हमे ससार के पदार्थों मे होने लगता है। आग जलती है—इस आग के ताप ऊर्जा और प्रकाश के गुण हमे परमात्मा के गुणो की समानता का आभास कराते हैं। पवन का प्रवाह, उसकी शीतलता भी प्रभु के गुण गायन करती प्रतीत होता है। आकाश के शब्द उसकी देन लगते है। पानी की सरसता और पृथ्वी की विस्तृत आधारमयी गोद भी प्रभु का ही प्रमोद लगने लगती है। सीधी आडी-तिरछी चलने वाली प्रकाश की किरण तो तीर की भाति हमारे मन-ध्यान-नेत्र को परमेश्वर की ओर ही सकेत करती प्रतीत होती है। ससार के सभी पदार्थ—लगता है कि झण्डे बन गए हो और प्रभु दशन का मार्ग प्रशस्त कर रहे दिखाई देते हैं। कोई अपने राजनीतिक दल का कोई अपने मतमतान्तर का, कोई अपने मन्दिर या भवन का एक विशिष्ट रग आकार और चिन्ह का ध्वज फहराता है। उसे देख कर उसके दल, मत-मतान्तर या भवन की पहिचान हो जाती है। इसी प्रकार ससार के पदार्थों मे सन्निहित गुणो को देख कर—प्रभु के गुण ध्यान मे आ जाते हैं और गुण के अनुसार गुणी वह प्रभु भी ध्यान मे आ जाता है। इस प्रकार वे सभी पदार्थ प्रभु मिलन के माग की झण्डिया बन जाती हैं।

प्रथम मन्त्र ने लक्ष्य प्राप्ति के तीन सस्तर उत् उत्तर और उत्तम प्रस्तुत किए थे। आपके पास किसी विद्या, कला या वस्तु का होना 'उत' ठीक है, उसकी आपका उपयोग की पद्धति का सज्ञान होगा और उसका उपयोग कर लिया जाना 'उत्त' अच्छी स्थिति है, और उसका सुन्दरता के साथ उपयोग करना 'उत्तम' बहुत अच्छी या श्रेष्ठ स्थिति है। इसी को कहते हैं 'उत' सत्यम् 'उत्तर' 'शिवम' और 'उत्तम' सुन्दरम्'। साधारण सा उदाहरण लिया जाये। एक बडे कागज के छोटे छोटे टुकडे आपको करने हैं। आपके पास कागज का होना 'उत' सत्ता बोधक है। उपयोग के लिए या कल्याण काय के लिए छोटे छोटे टुकडो मे फाडना कोई सन्देश अनेक व्यक्तियो को पहुचाना है, तो फाडना ही होगा—यह उसके बाद की 'उत्तर' शिव बोधक स्थिति है। कागज बराबर सुडोल आकार के टुकडो मे बदल जाये, न कि छोटे बडे टेढे मेढे और उनमे सही प्रकार से सन्देश लिख कर पहुचाया जाये, यह हुई उसकी सौदय बोधक स्थिति। जिस मेज पर रख कर इस पुस्तिका का लेखन किया जा रहा है उस पर कुछ दाग बने हुए है—पेन्ट के। छोटी सी यह सुन्दर मेज और उस पर जडा सनमाइका का आवरण इन दागो के कारण भद्दा सा लगने लगा है। हुआ यह कि इसी पर रख कर एक बालिका ने पाच पाच पैसे के सिक्को को जोड कर पानी का जहाज बनाया। वह जहाज तो बहुत सुन्दर बना, उसे देख कर सभी प्रशसा करते है किन्तु यह किसी को पता नही चल पाता है कि जहाज तो सुन्दर बन गया है किन्तु एक सुन्दर मेज का रूप असुन्दर हो गया है। इस मेज पर कोई कपडा या कागज रख कर यदि जहाज बनाया गया होता, तो रगने वाले पेन्ट की बूदे उसी पर गिरती और जहाज के साथ साथ मेज भी सुन्दर बना रहता। तो यही वास्तविक सुन्दरम् की स्थिति है, जिसमें शिवम—भी हो और सत्यम भी हो।

दूसरा मन्त्र हमे यही सन्देश देता है कि हम जिस जातवेद परमात्मा के दशन करने चले है—वह वेदो का पूव ज्ञाता है वह ज्ञातवेद है। वह सम्पूण जगत का उत्पादक है, वह प्रकृति एव जीव भाग से भी भूतो मे व्याप्त है। उसके इन गुणो को देख कर हम कुछ गुणो का अश धारण करने का प्रयत्न कर ले। उत्तम सदैव उत्तम नही रहता 'उत' की तुलना मे उत्तर' अच्छा है। उत्तर की तुलना मे 'उत्तम' श्रेष्ठ है किन्तु जब उत्तम ही उन्नम है सर्वत्र उन्नम है' तब 'उत' हो या उन्नम बात एक ही है। दूसरे मन्त्र मे प्रयुक्त उत तुलनात्मक नहीं प्रतीत होता है। यहा पर तो यह ऊचाई का ही बोधक है। 'उत्तम' का यह अथ नही है कि हम अब 'उत नही रहे। उत्तम का तो महत्व ही तब है जब उसमें उत भी बना रहे। इससे हम सकेत मिलता है कि हम उत' से 'उत्तम' हुए थे तो सीधा मुख करके 'उत से 'उत्तम का ओर ही न देखत चले जाये। हम 'उत्तर' से उत' की ओर भी ध्यान करते रहे। आकाश मे उडना सीख लेना विशेष उपलब्धि है, किन्तु धरती पर चलना साधारण होते हुए भी आवश्यक है। दूसरे मन्त्र मे हमे यही सन्देश मिलता है कि उन्नत हो जाये। इस शब्द मे भी दो भाव मिश्रित हैं—उत+नत=ऊपर भी नीचे भी। उत्तम की उपलब्धि प्राप्त कर भी नत्—नम्रता का सहारा नही छूटना चाहिए। वृक्षो पर फल लद जाने पर उनकी डालियाँ-टहनिया झुक जाती हैं। उपलब्धियो के फल आने पर हम भी झुक जायें—घमण्डी बन कर घृणा के पात्र न बन जाये। पहले मन्त्र के तीन सोपान—उत उत्तर, उत्तम, दूसरे मन्त्र के उन्नत आसन पर हमे प्रतिष्ठित कर देते है।

उस जातवेद परमात्मा ने इस ससार मे अपनी अनन्त प्रकाश किरणे, अनन्त पदार्थ और अनन्त झण्डिया फहरा रखी हैं। जो हमें उसकी ओर पहुचने का सकेत करती रहती है। उनको देख कर 'दृशे विश्वाय सूर्यम्" हम सम्पूर्ण रूप मे उसके दशन कर सकते है। मुझे स्मरण है कि अभी कुछ वर्ष पूर्व छोटे 'अ' से बडे 'आ' मे स्थानान्तरित हो गया था—अलीगढ से आजमगढ मे भेज दिया गया था। स्थानो की दूरी लगभग सात सौ पचास कि० मी० की थी, किन्तु छोटे 'अ' के लोगो की छवियां मेरे नेत्रो मे ऐसे समाई हुई थी कि 'आ' मे किसी की पीठ, किसी की बाह, किसी की पिछली गर्दन देख कर मुझे अ के व्यक्ति स्मरण हो आते थे—यहा तक कि किसी की चाल, किसी का वस्त्र तथा किसी का बोलने का ढग देख कर मुझे अपने पूव परिचित याद आ जाते थे। प्राय वे व्यक्ति पूर्व व्यक्तियो के लिए आज स्थल पूव स्थलो के लिए पुन पहुच जाने के माध्यम बन जाते थे। भौतिक जगत की यह सभी झण्डिया जैसे मुझे भौतिक जगत का आभास करा देती है। वैसे ही परमात्मा के शाश्वत गुण ध्यान मे आकर वस्तु एव व्यक्ति मे उन गुणो की झलक पाकर हम प्यारे प्रभु के स्मरण दशन हेतु तत्पर हो सकते हैं।

'दृशे विश्वाय सूर्यम पूर्ण रूप मे परमात्मा का दशन हमे करना है। इन भौतिक नेत्रो मे तो यह सम्भव नही है। भौतिक नेत्रो से हम किसी भौतिक पदार्थ को भी पूण रूप से नही देख सकत है, उसके सामने का भाग ही दिखाई देता है—पीछे या अगल बगल का नही दिखाई देता है। यदि हम कोई छोटी वस्तु हाथ मे लेकर देखते हैं तो उसके चारो ओर देख सकते है, किन्तु एक बार मे नेत्र एक ही ओर देखते हैं—सभी ओर नही फिर उसके अन्दर के भाग को देखने की बात तो दूर रही। हम उसे सम्पूण रूप मे देखने का यत्न इसी रूप मे कर सकते है जब हम उसको गुणो का आधार बना कर देखे। विश्व दशन ही प्रभु दशन बन जाये और प्रभु दशन ही विश्व दशन बन जाए। अपना-पराया नही—सभी मे आत्मा की सत्ता का दशन, पराया अपना नही—केवल स्वाथ नही परमाथ का बोध ही प्रभु दशन का सबल है। प्रभुवर ने अपनी एक और मन्त्रणा से हम यही सरलता से समझाया है "अदृश्रन्नस्य केतवो वि रश्मयोजना अनु। भ्राजन्तो अग्नयो यथा। साम० ६०४ अर्थात परमात्मा के सर्वव्यापक विज्ञानादि गुण प्रकाशमान अग्नि के समान प्राणि मात्र मे दिखाई देते है।

कितना अद्भुत उसका रूप—

'उदु-त्य' वाले दूसरे मन्त्र की भावना मन जाने पर किसी घृणित रोगी' हमें वही प्रभु दिखाई देता है हम उसकी सेवा को मचल पडते हैं किसी निधन मे, किसी दुखी मे, किसी निबल मे, हमे वही दिखाई देता है और हम उस की सहायता के लिए व्यग्र हो उठते है। यदि हम स्वय इस दशा मे है तो हमे इस मन्त्र का भाव आश्वासन देता है कि अपने जैसे अन्यो को देखो—तुम्हे तुम से भी अधिक दीन हीन मिल जायेंगे—जब वे इन कष्टो से मुक्ति पायेंगे तो तुम क्यो नही पा सकोगे। प्रभु की दया पर भरोसा रखो और कोई अकृत्य मत करो। मरना है तो चैन से मर जाओ—आगे उत्तम जन्म के अधिकारी बन जाओ। जब वह दिखाई देने लगता है तो वह सभी पदार्थों मे अद्भुत विचित्र सा ही दिखाई देता है—हमारा मन मोह लेता है। देखिए अगला मन्त्र—

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याऽग्नेः।
आप्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।

यजु० ७।४२ (क्रमश)

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

द्वितीय भारतीय भाषा सम्मेलन



पिछले दिनो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्र राव के प्रयास से स्पीकर हाल कान्स्टीट्यूशन क्लब नई दिल्ली मे द्वितीय भारतीय भाषा सम्मेलन आयोजित किया गया। पहला सम्मेलन दिसम्बर १९९१ मे हैदराबाद मे हुआ था। उस समय भारत सरकार के केन्द्रीय मानव ससाधन विकास मन्त्री श्री अर्जुन सिंह जी मुख्य अतिथि थे। नई दिल्ली मे आयोजित सम्मेलन की अध्यक्षता सभा प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने की तथा सम्मेलन का उद्घाटन लोकसभा अध्यक्ष डा० शिवराज पाटिल ने किया। उदघाटन सत्र के अन्य वक्ता थे हरियाणा के मुख्य मन्त्री श्री भजनलाल कृषि मन्त्री श्री पी० शिवशकर। सम्मेलन की पूर्व पीठिका तथा परिकल्पना प० वन्देमातरम् ने प्रस्तुत की। प्रस्ताव डा० धर्मपाल ने प्रस्तुत किए तथा सम्मेलन सत्र का सचालन डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने किया।

भारतीय भाषा सम्मेलनो की इस श्रृंखला का मुख्य प्रयोजन है कि भारत में सभी भाषाओ को सम्मानपूर्वक स्थान मिले तथा ये भाषाए राष्ट्रीय एकता में वृद्धि करे। जहा कही इनका प्रयोग विभाजक अस्त्र के रूप मे किया जा रहा है, उसे तुरन्त समाप्त किया जाए। आज भी हमारे ऊपर एक विदेशी भाषा थोपी हुई है। निश्चय ही यह हमारी सांस्कृतिक पराधीनता का प्रतीक है। यदि हम इस पराधीनता की श्रृंखला मे कुछ और समय जकडे रहे तो हमारी सस्कृति तथा हमारा तत्त्व ज्ञान पूरी तरह नष्ट हो जाएगा। जनमानस की कोई कीमत नही रह गई है। इस प्रजातान्त्रिक देश मे कुछ अग्रेजी पढे लिखे सुविधा सम्पन्न, धनी वर्ग के लोग ही अपना अधिकार जमाए बैठे हैं वक्ताओ का स्वर था कि समाज बड़ा होता है, पर सत्ता तो सरकार में निहित होती है। समाज सरकार बना सकता है, पर समाज सरकार के ही कार्यक्रमों के अनुसार कुछ अपेक्षित समय तक चलने के लिए बाध्य होता है। आवश्यकता इस बात की है कि समाज इतना सजग और जागरूक हो कि वह सरकार की नीतियो को प्रभावित कर सके।

बहुत पहले महात्मा गांधी ने कहा था—'आप और हम चाहते है कि करोड़ो अन्तर्प्रान्तीय सम्पर्क स्थापित करें। स्पष्ट है कि अग्रेजी के द्वारा कई पीढ़िया गुजर जाने पर भी वे परस्पर सम्पर्क स्थापित न कर सकेंगे।' हम भारत की आजादी के ४५ वर्ष बीत जाने पर भी इस भावना का सम्मान नही कर सके। मुझे नही लगता कि भारत के किसी कोने में, अग्रेजी के बिना सम्पर्क न किया जा सकता हो। कश्मीर की ऊंचाइयो से लेकर कन्याकुमारी तक, गुजरात से लेकर नागालैण्ड तक तथा सुदूर अण्डमान निकोबार द्वीप समूहो मे भी अग्रेजी के बिना बातचीत हो सकती है। फिर क्या कारण है कि हम अग्रेजी को लादे हुए हैं, क्यो नही हम भारतीय भाषाओं के माध्यम से सारा राजकाज चलाते, क्यो नही हम हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप मे स्वीकार करते, क्यो नही हम सभी भाषाओ को राष्ट्रभाषा का दर्जा देते? हमे एक न एक दिन तो यह करना ही होगा, नही तो हम बहुत पिछड जायेंगे।

यह तर्क दिया जाता है कि दक्षिण भारत मे हिन्दी का विरोध है। ऐसा नही है इन भाषाओं के शब्द भी हिन्दी के और सस्कृत के बहुत निकट है। धातु रूपो मे तो पर्याप्त साम्य है, प्रत्यय रूप थोडे भिन्न हो सकते हैं। उच्चारण की भिन्नता के भी अनेक कारण होते हैं। मुख्य कारण जलवायु तथा वचनेन्द्रियो का प्रकम्पन अभ्यास हुआ करता है एक शब्द देखिए रेप्रेजेन्टेटिव (अग्रेजी)—पिरातिनिति (तमिल) प्रतिनिधि (मलयालम), प्रतिनिधि (हिन्दी)। इस शब्द के तमिल, मलयालम तथा हिन्दी—तीनों रूप एक हैं, केवल तमिल उच्चारण भिन्न है। एक और शब्द लीजिए—कन्करेंस (अग्रेजी) सम्मतम् (तमिल), सम्मतम् (मलयालम) सहमति/सम्मति—हिन्दी। आप देखिए—क्या कोई भेद है। यदि इन सभी भाषाओ को एक लिपि मे लिख जाए तो ये भाषाए स्वत ही एक दूसरे के निकट हो जायगी। इस दिशा मे काका कालेलकर द्वारा सस्थापित—नागरी लिपि परिषद सराहनीय कार्य कर रही है। आर्यसमाज की ओर से भी यह सारा कार्य किया जा सकता है। हमारा कर्त्तव्य होना चाहिए सरकार को प्रशासन को, तथा शिक्षा जगत को प्रभावित करने का। हम महर्षि दयानन्द सरस्वती के तथा अन्य विद्वानो के सम्पूर्ण साहित्य को सभी भारतीय भाषाओ मे तैयार कर सकते है। इसका दूसरा चरण, सम्पूर्ण साहित्य को विभिन्न भाषाओ मे, पर देवनागरी लिपि मे तैयार करने का हो सकता है। भारतवर्ष मे अनेक विश्वविद्यालय हैं, वहां पर थोडा सा प्रयास करने पर विषय विशेष की शोधपीठ स्थापित की जा सकती है पजाब, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, रोहतक तथा अजमेर के विश्वविद्यालयो मे आर्यसमाज का अच्छा प्रभाव है। दक्षिण भारत के अनेक कालेजो का सचालन आर्य समाज कर रहा है। तकनीकी इन्जीनियरी तथा मैडीकल कालेज भी आर्यसमाज चला रहा है। इस पूरी शक्ति के बल पर ऋषिवर के हिन्दी भाषा आर्य भाषा के प्रयोग के स्वप्न को हमे पूरा करना ही चाहिए।

भारत के सविधान के भाग १७ का शीर्षक राजभाषा है। इस भाग मे चार अध्याय हैं जो क्रमश सघ की भाषा, प्रादेशिक भाषाए तथा उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयो आदि की भाषा तथा विशेष निर्देश से सम्बन्धित हैं। ये चारो अध्याय अनुच्छेद ३४३ से ३५१ के अन्तर्गत समाहित है। सविधान का ३५१ वा अनुच्छेद जहा हिन्दी के विकास की बात कहता है। वहा 'अन्य' शब्द का प्रयोग इसे विशालतर फलक प्रदान करता है।

कुछ लोग अग्रेजी के पक्ष मे यह तर्क देते हैं कि यह विज्ञान और गणित की भाषा है। सभी को यह जानकर सुखद अनुभूति होगी कि आगामी वर्ष से 'वैदिक गणित' विद्यालयो मे पढ़ाया जाएगा और तब पता चलेगा कि अकगणित, बीजगणित और रेखागणित के बीज बिन्दु वेदो मे उपलब्ध हैं। इसी प्रकार अन्य विज्ञान की भी खोज होगी और यह कहना कि मात्र अग्रेजी में यह उपलब्ध है, गलत सिद्ध हो जाएगा।

अस्तु, हमारा विश्व की किसी भी भाषा से कोई विरोध नही है। हम तो यह चाहते हैं कि भारत की सभी भाषाओं को सम्मान मिले तथा यहा का राजकाज इन्ही भाषाओ मे हो तथा भारत के सबसे बडे भूभाग मे बोली जाने वाली हिन्दी सम्पर्क भाषा हो, तथा सभी भाषाए एक लिपि मे लिखी जाए।

इस सम्मेलन मे दो और भी सत्र थे, उनके विषय मे आगे लिखा जाएगा—

—डा० धर्मपाल

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय डाक्टर साहब नमस्ते

स्वामी विवेकानन्द मे लोकप्रियता पाने की एक कड़ी सनक थी। क्या वे कभी भारतीय जनता के सम्पर्क मे आये? वे किस प्रकार सम्पर्क मे आ सकते थे क्योंकि वे तो केवल अग्रेजी या बंगाली ही जानते थे और जबकि महर्षि दयानन्द सरस्वती तो हिन्दी जानते थे और वे भारत की आत्मा अर्थात जनता के सम्पर्क मे रहते थे।

अत: आपसे अनुरोध है कि आप भारतीय जनता पार्टी एव राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ को प्रसन्न करने के लिए स्वामी विवेकानन्द के बारे मे न लिखा करें क्योंकि बी० जे० पी० करोड़पतियो की पार्टी है।

मैं आपकी जानकारी के लिए स्वामी विवेकानन्द के विचार क्या थे इस बारे मे 'रिबिल्ट इण्डिया बाई स्वामी विवेकानन्द' के पृष्ठ ४९ से निम्न उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हू —

"आज की इस अव्यवस्था व कलह के बीच मैं अपनी मन की आखो से भारत का सुनहरी और अदृश्य भविष्य देख रहा हू जिसमे वेदान्त आत्मा है और इस्लाम उसका शरीर है क्योंकि हमारी अपनी मातृभूमि के लिए हिन्दूवाद एव इस्लाम दो महान् पद्धतियां है—वेदान्त आत्मा व इस्लाम शरीर—केवल मात्र एक आशा।

प्रा धर्मेन्द्र मिश्रा

'ओकार कुण्डा' खासीवाब रोड, बडोदरा, ३९०००१

(पृष्ठ १ का शेष)

आधार पर बटवारा न होता और पजाब हरयाणा, हिमाचल प्रदेश सब इकट्ठे होते ता खालिस्तान की माँग किसी के दिमाग मे न उठती और कोई देश को तोडने की बात न करता।

मातृ-भाषा को महत्व दें

श्री भजनलाल ने कहा कि देश की इस पवित्र धरती पर वेदा की रचना हुई और भगवान कृष्ण ने गीता का ज्ञान दिया था। अत हमें इस देश धरती की अपना भाषा मातृभाषा को महत्व देना चाहिए यही हमारी शान है।

हिन्दी एकता का सूत्र है

मुख्य अतिथि ने आगे कहा कि जिस प्रकार माला का धागा मनको को एक सूत्र मे बाध कर रखता है उसी प्रकार हिन्दी भी सभी भारतीय भाषाओ को माला के मनको की तरह एक सूत्र मे बाध कर रखती है।

आर्य समाज ही राष्ट्र का मार्ग दर्शन कर सकता है

श्री भजनलाल ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने राष्ट्र को रास्ता दिखाया था और उस रास्ते पर चल कर हम समाज व राष्ट्र का आज भी निर्माण कर सकते हैं। आज कुछ लोग देश को तोडने की बात व काय कर रहे हैं। इस विकट परिस्थिति मे आर्य समाज ही आगे बढ कर फिर माग दिखा सकता है क्योकि जब-जब राष्ट्र पर सकट आया है तो आर्य समाज ने ही मदद की है।

स्थान-स्थान पर भाषा सम्मेलन आयोजित करें

श्री भजनलाल ने कहा कि सभी भारतीय भाषाओ का हमे आदर करना चाहिए। हिन्दी राष्ट्र भाषा है इसका प्रचार प्रसार किया जाना चाहिए। किसी को एसा अनुभव नही होना चाहिए कि हिन्दी उन पर थोपी जा रही है। अत प्रेम से लोगो के विचार बदलने की जरूरत है ये काम बुद्धिजीवी कर सकते हैं। इस लिए आर्य समाज को देश के विभिन्न भागो मे एसे सम्मेलन आयोजित कर जागृति पेदा करनी चाहिए।

देश की पहली विधान सभा

श्री भजनलाल ने यह भी बताया कि देश मे पहली विधान सभा हरयाणा की थी जहा सबसे पहले हिन्दी मे काम शुरु किया गया। इन्होने यह भी कहा कि हरयाणा के स्कूल व कालेजो मे नैतिक शिक्षा का एक एक पीरयड रखा गया है ताकि छात्र माता-पिता, गुरु व समाज के प्रति अपने कत्तव्य को जान सकें व राष्ट्र निर्माण मे योगदान दे सके।

सस्कृत सब भाषाओ की जननी है

सम्मेलन के प्रथम सत्र मे पूव विधि म त्री श्री पी० शिवशकर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सस्कृत ही सभी भारतीय भाषाओ की जननी है। सविधान सभा मे सविधान निर्माताओ के सामने हिन्दी व सस्कृत मे से एक को राजभाषा बनाने का जब प्रश्न आया तो सस्कृत की अपेक्षा हिन्दी को केवल एक मत ही अधिक मिला था।

श्री पी० शिवशकर ने यह बताया कि दक्षिण भारत मे लोग हिन्दी सीख रहे है और वह दिन भी आयेगा जब वे हिन्दी के मामले मे उत्तर भारत के लोगो को पीछे छोड देगे।

देवनागरी विश्व लिपि बने

हरयाणा के कृषि मन्त्री श्री बचनसिह आय ने इस अवसर पर कहा कि मैं आय समाज का चौकीदार हू। स्वतन्त्रता सग्राम मे ८० प्रतिशत आर्यसमाजियो ने भाग लिया था व कुर्बानिया दी थी। इस लिए जब जब देश पर सकट आता है तो आय समाज को दद होता है और राष्ट्र हित मे वह आगे बढ कर काम करता है। उन्होने आगे कहा कि देवनागरी न केवल भारतीय भाषाओकी लिपि होनी चाहिए वरन् विश्व की अन्य भाषाओं की लिपि भी बननी चाहिए।

सम्मेलन का शुभारम्भ सुश्री सुनन्दा द्वारा प्रस्तुत वरदा वेदमाता के गायन से हुआ। तत्पश्चात् सम्मेलन के सूत्रधार प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम ने आरम्भिक भाषण दिया जो अविकल रूप से प्रस्तुत है—

भारतीय भाषा सम्मेलन में पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव द्वारा आरम्भिक अभिभाषण

मेरा मुख्य कार्य न तो भारतीय भाषाओ के इतिहास की खोज करना है और न यह मालूम करना कि किस प्रकार से उनका प्रयोग शुरू हुआ, किस प्रकार से इन भाषाओ ने अपने आपको सम्पन्न बनाया और कौन सी भाषा किस भाषा समूह से सम्बन्ध रखती है। मै केवल इतना ही बताना चाहता हू कि भारतीय भाषाओ की वतमान स्थिति क्या है? और भविष्य मे उनकी प्रगति की क्या सम्भावनाए हैं और हमारे राष्ट्र की कार्यविधि मे उनका क्या स्थान अपेक्षित है?

जब उपनिवेशवादी अग्रेज शासन आय थे तब उन्होने यहा की तत्कालीन परिस्थितियो को देखकर और काफी सोच विचार के बाद एक ऐसी योजना बनाई जिसके द्वारा वे हमारे देश की सार्वभौमिक सत्ता को नष्ट करके हमारे ऊपर निरकुश राज कर सके। 'फूट डालो और राज्य करो' वाली नीति उन्हे बहुत उपयोगी मालूम हुई। जिसका सफलता पूवक प्रयोग करते हुए उन्होने अपने ध्येय को प्राप्त किया। भारत वासियो को पहले उन्होने नस्ल धम, जाति और रग भेद के आधार पर विभाजित किया और फिर हमें भाषा के आधार पर भी बाटने की कोशिश की।

दक्षिणात्य लोगो को उन्होने उत्तर भारतियो के विरुद्ध यह कहकर भडकाया कि वे आर्य लोग हैं जो आक्रान्ता के रूप मे बाहर से आये और यहा आकर उन्होंने द्रविणो को अपने आक्रमण का शिकार बनाया। अग्रेजो ने इस बात का भी प्रचार किया कि उत्तर भारत की भाषायें भारत योरोपीय समूह की भाषाये हैं, जबकि दक्षिण भारत की भाषाओं का सम्बन्ध द्रविड समूह की भाषाओ से है, जो एक दूसरे से सर्वथा भिन्न है।

यह जानते हुए भी कि भारतीय भाषाओ के इस प्रकार के वर्गीकरण का कोई ठोस आधार नही है उन्होने इस प्रकारका दुष्प्रचार केवल इस लिए किया जिससे हमारे भारतीय समाज को और अधिक विखण्डित किया जा सके। आजकल दक्षिण भारत मे हिन्दी का जो विरोध हो रहा है वह केवल अग्रेजो की इस कूटनीति का ही परिणाम है।

महोदय, मैं एक निगृहीत सत्य को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए बताना चाहता हू कि द्रविड लोग अन्य कोई नही बल्कि उन्हीं आर्य ऋषि मुनियो की सन्तान हैं जिनको परमात्मा ने मानव सृष्टि के आदि-काल मे, जिसे कृत युग के नाम से जाना जाता है, हमारे देश के प्राचीन सप्त सिन्धु प्रदेश मे अवतरित किया था। द्रविड शब्द की उत्पत्ति द्रु' धातु से हुई है जिसका अथ है 'दृष्टा' अर्थात ऋषि, और विड (विद) का अर्थ है जानने वाला या ज्ञानी व्यक्ति। द्रविडों मे जो लोग पश्चिम दिशा की ओर चलकर योरूप पहुचे और वही पर बस गये, वे द्रुइद' कहलाये। कालान्तर मे उन्होंने योरूप के सामाजिक जीवन को बहुत प्रभावित किया। योरूपीय 'द्रुइद' साहित्य मे 'शिव सहित' का समावेश इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि 'द्रुइद' जाति का मूल स्थान उत्तर भारत ही था। एक दूसरा उदाहरण और देना चाहता हू। अगस्त्य ऋषि उत्तर भारत से विन्ध्याचल पवत पार करके दक्षिण मे गये थे। उनकी आज भी वहा बहुत मान्यता है। वहा के लोग उनकी पूजा करते हैं।

तेलुगु, तमिल, मलयालम आदि तथाकथित द्रविड भाषाओ की सरचना, उनका वाक्य विन्यास व्याकरण इस बात का प्रमाण है कि उनका आदि मूल सस्कृत भाषा ही है, जिसे देव-भाषा, सुर-भाषा, गीर्वाणीय भाषा आदि नामों से भी जाना जाता है। इन भाषाओ मे सस्कृत शब्दो की बहुलता

स्पष्ट दिखाई देती है। मेरा विश्वास है कि संसार की समस्त भाषाओं की उत्पत्ति चाहे वह ग्रीक हो या लैटिन संस्कृत भाषा से हुई है। आज संसार में जो भी भाषायें हम देखते हैं वे देश काल और परिस्थिति से प्रभावित संस्कृत भाषा का ही वर्तमान स्वरूप है।

जब हम भारतीय भाषाओं के वर्ण क्रम पर दृष्टिपात करते हैं तो यह स्पष्ट दिखाई देता है कि वे एक दूसरे की बहन हैं, एक ही माता की अलग अलग संतान हैं जिनमें कई बातों की समानता है, उनका व्याकरण उनकी संरचना आदि में बहुत कुछ साम्य है। हमारा आपका और सरकार का यह कर्तव्य है कि इन भाषाओं को उनके सही स्वरूप में देखने और दिखाने का प्रयत्न करें। भाषाओं में संगठन की ध्वनि होती है विघटन का नहीं। हमें निरंतर प्रचार द्वारा इस ध्रुव सत्य को जन जन के मानस तक पहुंचाने का प्रयत्न करना चाहिए।

एक दूसरी बात जो हमारे पक्ष में जाती है वह यह है कि सब भारतीय भाषाओं की उनकी अपनी स्वतंत्र लिपि के साथ साथ उनके लिए एक समान लिपि के प्रयोग की भी सम्भावना दिखाई देती है। इस समान लिपि के प्रयोग से विभिन्न भाषा समूहों को एक दूसरे के पास आने, एक दूसरे को सोचने समझने का मार्ग प्रशस्त हो जायेगा।

भारतीय भाषा सम्मेलन सभी भारतीय भाषाओं के लिए देवनागरी को अतिरिक्त लिपि के रूप में प्रयोग करने पर बल देता है।

अब मैं सरकारी प्रशासन तंत्र में भारतीय भाषाओं की संवैधानिक स्थिति क्या है, इस विषय पर कुछ चर्चा करूंगा। संविधान के भाषा परक अध्याय में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को सिद्धांत रूप में एक उच्च स्थान दिया गया है। लेकिन व्यवहार में कथनी और करनी के बीच एक बहुत बड़ा अंतर है। इसका मुख्य कारण सरकार की इस विषय में उदासीनता और राजनैतिक आकांक्षा का अभाव है। इसके अतिरिक्त दूसरा कारण है हमारे देश की अफसरशाही का अंग्रेजी भाषा के प्रति मोह जो अंग्रेजों के चले जाने के बाद आज भी ज्यों का त्यों बना हुआ है। अन्यथा और कोई कारण नहीं है जो हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को उनका वांछित पद देने में बाधक हो? कुछ ऐसे राजनेताओं को छोड़ कर जो अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए भाषा का अस्त्र के रूप में दुरुपयोग करते हैं सारा देश चाहता है कि अंग्रेजी के स्थान पर भारतीय भाषाओं का प्रयोग किया जाय जिनमें हिंदी का स्थान सर्वोच्च है। विभिन्न प्रांतों में क्षेत्रीय भाषा का उपयोग होना ही चाहिए।

अपने इस संक्षिप्त भाषण को समाप्त करने से पूर्व मैं कहना चाहता हूं कि मैं सब भारतीय भाषाओं को जिनमें लिखित साहित्य उपलब्ध है राष्ट्र भाषा घोषित किए जाने के पक्ष में हूं।

सार्वदेशिक सभा के महामंत्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती कलकत्ता के प्रमोद कानन में ठहरे थे। उन दिनों स्वामी जी कोपीन धारण करते थे और संस्कृत में प्रवचन देते थे। केशव चन्द्र सेन के परामर्श पर स्वामी जी ने आर्य भाषा हिन्दी में बोलना तथा वस्त्र धारण करना स्वीकार कर लिया। उल्लेखनीय है कि स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रंथ आर्य भाषा हिंदी में ही लिखे हैं।

सम्मेलन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, महामंत्री डा० धर्मपाल, श्री विमल वधावन, चौ० लक्ष्मीचन्द, श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट आदि ने अतिथियों का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

प्रथम सत्र के समापन पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की ओर से डा० धर्मपाल ने निम्न प्रस्ताव प्रस्तुत किया। दक्षिण भारत देश के अन्य राज्यों व उत्तर भारत से इस सम्मेलन में आये प्रतिनिधियों ने सर्व सम्मति से प्रस्ताव का अनुमोदन किया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा प्रस्तुत मुख्य प्रस्ताव

देश के सभी प्रदेशों से आए हुए विभिन्न भाषाई संगठनों के प्रतिनिधियों की यह सभा अपने इस विश्वास को पुनः दुहराती है कि समस्त भारतीय भाषायें एक जोड़ने वाली शक्ति हैं जिनका मूलस्रोत एक है, जिनके गुण समान हैं, जिनका व्याकरण और विचारों को अभिव्यक्त करने की शैली भी एक प्रकार की है।

आज की परिस्थिति में जबकि अनेक विघटनकारी शक्तियां प्रत्येक विषम परिस्थिति का दुरुपयोग करके देश को और अधिक खंडित करने का प्रयत्न कर रही हैं सभी देश भक्त संगठनों को इन विनाशकारी शक्तियों को कुचल डालने का प्रण लेना चाहिए जिससे हमारी मातृभूमि की रक्षा हो सके।

इस सभा का सुझाव है कि जनता और सरकार दोनों ही प्रत्येक स्तर पर हर सम्भव कार्य द्वारा स्वयं को मात्र संगठनात्मक शक्ति के रूप में ही प्रस्तुत करने का प्रयत्न करें। इसकी शुरूआत विभिन्न भारतीय भाषाओं से एक ऐसी शब्दावली तैयार करके की जा सकती है जिनका स्वरूप और अर्थ एक समान हो ऐसे शब्दों का भी चयन किया जाना चाहिए जिनका विभिन्न भाषाओं में स्वरूप और निर्माण व्यवस्था अलग अलग होते हुए भी उनका अर्थ एक समान हो।

यह सभा यह सुझाव भी देना चाहती है कि भारतीय मूल की सब भाषाओं की अपनी अपनी लिपि के साथ साथ उनके लिए देवनागरी को भी एक अतिरिक्त लिपि के रूप में प्रयोग किया जाय इस प्रकार सब भाषाओं को एक दूसरे के निकट आने का अवसर मिलेगा और हर भाषा भाषी एक दूसरे के विचारों और भावनाओं को अच्छी तरह समझ सकेंगे।

यह सभा इस बात पर खेद प्रकट करती है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के चार दशक बाद भी सरकार भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय कार्य प्रणाली के समस्त क्षेत्रों प्रशासन, शिक्षा तथा न्याय विधि में उनका उचित स्थान करने के लिए अपनी राजनैतिक आकांक्षा का परिचय देने में असफल रही है।

यह सभा स्पष्ट करना चाहती है कि उनका किसी भी विदेशी भाषा के प्रति चाहे वह अंग्रेजी हो अथवा जर्मन या जापानी कोई दुर्भावना नहीं है। लेकिन वह भारतीय भाषाओं को निरंतर अधीनस्थ स्थिति में बनाये रखना सहन नहीं कर सकती जबकि ये भाषायें सब दृष्टि से सम्पन्न हैं और उन्हें अपने देश में सम्मान जनक स्थिति में रहने का पूर्ण अधिकार है।

यह सभा आशा करती है कि सरकार अधिक देर न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझने का प्रयत्न करेगी।

द्वितीय सत्र

भोजनावकाश के बाद सम्मेलन का दूसरा सत्र श्री ब्रज किशोर शर्मा अपर सचिव विधि मन्त्रालय की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ।

डा० महेश चन्द्र गुप्त निदेशक राजभाषा गृह मंत्रालय ने बताया कि वर्ष १९८९-९० के दौरान भारत सरकार के कार्यालयों से सत्रह करोड़ पत्र जारी किए और उनमें से ६ करोड़ २७ लाख पत्र हिन्दी में भेजे गए थे। उन्होंने यह भी बताया कि सरकार द्वारा जारी आदेशों के अनुसार विदेशों में स्थित भारतीय दूतावासों में हिंदी के आशुलिपिक रखना एवं हिंदी में पत्र भेजना अनिवार्य कर दिया गया है जहां कि राजभाषा अंग्रेजी नहीं है।

डा० गुप्ता ने यह भी बताया कि अब लोक सेवा संघ की परीक्षायें किसी भी भारतीय भाषा के माध्यम से दी जा सकतीं हैं। उन्होंने यह भी अनुरोध किया कि हमें केन्द्र सरकार एवं अन्य सरकारी संस्थानों से सभी पत्र व्यवहार हिन्दी में करना चाहिए और नियमानुसार उसका उत्तर हिन्दी में ही दिया जायेगा।

प्रकाशन विभाग के निदेशक डा० श्याम सिंह शशि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुजराती भाषी होते हुए भी अपना अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश हिंदी में ही लिखा था और वास्तव में हिन्दी अहिन्दी भाषी लोगों द्वारा मिशनरी भावना से कार्य करने से फली फूली है।

डा० शशि ने कहा कि हमे अपने नामपट्ट व निमन्त्रण पत्र हिन्दी या भारतीय भाषाओ मे छपवा कर गौरव अनुभव करना चाहिए। हिन्दी मे मूल लेखन होना चाहिए और अग्रेजी से हिन्दी मे केवल अनुवाद की भाषा ही बन कर ही हिन्दी न रह जाये हमे यह देखना चाहिए।

डा० शशि ने सामाजिक विज्ञान व तकनीकी साहित्य के प्रकाशनार्थ सरकार द्वारा आर्थिक अनुदान प्रदान करने सम्बन्धी प्रस्ताव रखा जो सवसम्मति से पारित हुआ।

डा० महावीर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि राज्यो मे शिक्षा का माध्यम वहा की मातृभाषायें ही होनी चाहिए। उन्होने यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि राज्यों मे उच्च न्यायालयो तक का न्याय सम्बन्धी काम वहा की राजभाषाओ मे होना चाहिए, प्रस्ताव का सभी ने अनुमोदन किया।

सम्मेलन के द्वितीय सत्र मे श्री सिद्धार्थ वत्ता, एडवोकेट श्री सोमनाथ मरवाह एव श्री एम० नारायण स्वामी ने विचार प्रस्तुत किए।

श्री ब्रजकिशोर शर्मा ने कहा कि मैं सम्मेलन के वक्ताओ द्वारा व्यक्त विचारो से सहमत हू।

श्री शर्मा ने एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जो सवसम्मति से पारित हुआ।

सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आयोजित यह भारतीय भाषा सम्मेलन सवसम्मति से निम्नलिखित सकल्प पारित करता है और केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार विभिन्न प्राधिकरणो और व्यक्तियो से यह आग्रह करता है कि उन्हे लागू करने मे वे अपना पूर्ण सहयोग और समर्थन प्रदान करे।

अन्य प्रस्ताव

१—भारत के सभी शासकीय पदों मे और सरकारी उपक्रमो के अधीन पदो मे भर्ती की परीक्षा और साक्षात्कार मे प्रत्याशियो को हिन्दी के प्रयोग की अनुमति दी जाय तथा प्रश्नपत्र हिन्दी मे उपलब्ध कराए जावे।

२—हिन्दी का सम्यक ज्ञान रखने वाले कुछ व्यक्ति सघ लोक सेवा आयोग, लोक सेवा उपक्रमो के भर्ती सगठन आदि मे नियुक्त किए जाए।

३—सम्मेलन राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री से यह विशेष अनुरोध करता है कि सभी शासकीय समारोहो मे वे भारतीय भाषा का ही प्रयोग करे।

४—हमारे राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, लोकसभा अध्यक्ष तथा अन्य मन्त्री और शिष्टमडल जब विदेश जाए तो वहा वे समारोह और औपचारिक कार्यक्रमों मे भारतीय भाषा का ही प्रयोग करे।

५—केन्द्र सरकार और दिल्ली प्रशासन को अच्छे स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यालयो की स्थापना मे और विद्यमान हिन्दी माध्यम के विद्यालयो के स्तर के उत्थान के लिए पर्याप्त सहयोग और सहायता प्रदान करनी चाहिए। जिससे हिन्दी माध्यम के छात्र पीछे न रहे।

६—दिल्ली विश्वविद्यालय मे पहले चरण मे कला, वाणिज्य और विधि मे हिन्दी माध्यम से शिक्षण करने की व्यवस्था तुरन्त की जाए।

७—ससदीय राजभाषा समिति के प्रतिवेदनो पर विचार करके जो विभिन्न राष्ट्रपति आदेश निकाले गए हैं उनका अनुपालन न होना राष्ट्र के लिए लज्जाजनक है और प्रशासन के लिए कलक है। केन्द्र सरकार तुरन्त राष्ट्रपति आदेश के पूर्ण अनुपालन की व्यवस्था करें।

—१९६८ मे ससद ने और १९९१ में लोकसभा ने राजभाषा के सम्बन्ध मे जो सकल्प पारित किए हैं उनके अनुसरण मे केन्द्र सरकार त्वरित कार्रवाई करे।

९—दूरदर्शन और आकाशवाणी के कार्यक्रमो और समाचार प्रसारण मे मानक शब्दावली का प्रयोग न करके भाषा को अरबी, फारसी के शब्दो का प्रयोग करके अवैधानिक और दुरूह बनाया जा रहा है। इन प्रसार माध्यमो मे हिन्दी का प्रयोग हो। हिन्दी को भ्रष्ट नही किया जाए।

१०—यह लज्जास्पद है कि उच्चतम न्यायालय मे आज भी हिन्दी के प्रयोग की अनुमति नही है। केन्द्रीय सरकार अधिनियम बनाकर हिन्दी के प्रयोग की अनुमति प्रदान करे।

११—दिल्ली स्थित न्यायालयो मे साधारण वादकारी और न्यायाधीश के बीच खडी भाषा की दीवार को हटाना आवश्यक है। दिल्ली उच्च न्यायालय मे हिन्दी मे कार्य करने की अनुमति दी जाए और जिला स्तर तक के न्यायालयो मे हिन्दी का प्रयोग अनिवार्य किया जाए।

१२—राजभाषा अधिनियम की धारा ७ का सशोधन करके उच्च न्यायालय के ऐसे प्रत्येक निर्णय का जो भारतीय भाषा मे दिया गया है अनिवार्यत अग्रेजी मे अनुवाद की व्यवस्था समाप्त की जाए।

१३—जो भी औषधियां, खाद्य या अन्य उपभोक्ता सामग्री पैक करके विक्रय की जाती हैं उन पर जिस क्षेत्र मे वह विक्रय के लिए रखी जाती है, उस क्षेत्र की प्रधान भाषा मे समस्त विवरण लिखना कानून द्वारा अनिवार्य किया जाए जिससे साधारण व्यक्ति यह जान सके कि वह क्या क्रय कर रहा है, उसका भार क्या है और कीमत क्या है। इससे साधारण उपभोक्ता अपने हित की रक्षा कर सकेगा।

१४—आठवी अनुसूची की उपयोगिता समाप्त हो गई है अतएव उस का निरसन कर दिया जाय और हमारे देश की जिन भाषाओ का लिखित साहित्य है उन सब भाषाओ को राष्ट्रीय भाषा घोषित किया जाये।

१५—प्रत्येक प्रदेश मे प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा की लिपि के साथ साथ देवनागरी लिपि भी सिखाई जाए।

१६—सन्दर्भ ग्रन्थो, विशेष रूप से सामाजिक विज्ञान, विधि तथा तकनीकी साहित्य के प्रकाशनार्थ मानव ससाधन मन्त्रालय भारत सरकार तथा अन्य विभाग एव राज्य सरकारें अधिकाधिक आर्थिक अनुदान राशि स्वच्छिक सस्थाओ को प्रदान करें।

डा० श्यामसिंह शशि द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव

१७—राज्यो के उच्च न्यायालयो तक न्याय सम्बन्धी सभी कार्य वहाँ की राज्य भाषाओ मे किया जाना चाहिए।

श्री महावीर द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव

सामाजिक कार्यकर्ता श्री सरदारी लाल वर्मा दिवंगत



बडे खेद के साथ सूचित किया जा रहा है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान, श्री सरदारी लाल वर्मा, प्रधान, आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली का देहावसान आज प्रात १०४५ पर डा० राम मनोहर लोहिया हस्पताल के नर्सिंग होम मे हो गया। वे ७६ वर्ष के थे। वह अपने पीछे पत्नी ५ पुत्र तथा एक पुत्री छोड गए हैं। वे पिछले दो महीने से श्वास के रोग से पीडित थे। उन्होंने आयु भर आर्य समाज की सेवा की। वे सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय तथा आर्य समाज की अनेक शिक्षण सस्थाओ से जुड रहे। उनका दाह सस्कार निगम बोध घाट पै १४-५-१९९२ को साय ५-०० बजे हुआ।

आर्य अनाथालय की स्थापना

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती पूर्व मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी ने ग्रा० पो० कौराली फज्जुपुर बल्लभगढ़ फरीदाबाद मे आर्य अनाथालय की स्थापना की है। भवन निर्माण का काय आरम्भ हो गया है। इस पावन कार्य मे दानी सज्जनो से प्रार्थना है कि इस महान यज्ञ मे सहयोग देंगे। जिससे यह काय सम्पन्न हो सके।

अनाथालय १ जुलाई १९९२ से प्रारम्भ हो जायेगा।

—रमेशचद्र शास्त्री, अध्यक्ष ग्रामीण विकास शिक्षा समिति

शिक्षक/व्यायामाचार्य की आवश्यकता

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् को शिक्षक/व्यायामाचार्य की आवश्यकता है गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त एवं आर्य समाज के संस्कारों से ओत प्रोत व्यक्तियों को प्राथमिकता दी जायेगी वेतन योग्यतानुसार। निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें—

श्री अनिल आर्य प्रधान केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् आर्य समाज कबीर बस्ती दिल्ली। टेलिफोन नम्बर ७१३६०४

चुनाव समाचार

आर्य समाज मन्दिर शादी खामपुर नई दिल्ली का वार्षिक चुनाव ६ अप्रैल १९९२ रविवार को प्रातःकालीन सत्संग के उपरान्त १०.०० बजे श्री वेद व्रत जी शर्मा चुनाव अधिकारी की अध्यक्षता एवं देखरेख में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ तथा निम्नलिखित पदाधिकारी एवं सदस्य चुने गये

१ श्री ओम प्रकाश—प्रधान २ श्री भगवान सिंह यादव—उपप्रधान ३ श्री बलवीर सिंह—उपप्रधान ४ श्री श्याम सुन्दर पालीवाल—मन्त्री ५ डा. सतवीर सिंह—उपमन्त्री ६ श्री रमेश भटनागर—कोषाध्यक्ष ७ श्री सूर्य प्रकाश शर्मा—पुस्तकालय अध्यक्ष ८ श्री कलीराम—सदस्य ९ श्रीमती खुशीदेवी—सदस्य १० श्रीमती उषा सहगल—सदस्य ११ श्रीमती कृष्णा खन्ना—सदस्य

—आर्यसमाज देशराज कालोनी पानीपत का पांचवां वार्षिकोत्सव २८ से २९ मार्च तक धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अनेकों सम्मेलनों का भी आयोजन किया गया था जिसमें आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान आर्यनेता तथा भजनोपदेशकों ने भाग लिया। इस अवसर पर हरियाणा के कृषि राज्यमन्त्री श्री बचनसिंह जी आर्य का अभिनन्दन भी किया गया।

—आर्य समाज जलाली अलीगढ का ७९ वां वार्षिकोत्सव २० से २२ मार्च तक समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान तथा भजनोपदेशकों ने पधार कर उपस्थित जनता को वैदिक आदर्शों से परिचित कराया।

आर्यसन्देश–दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 14 15 5 1992 Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल ११०२४ ९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) १३९ ९१
साप्ताहिक आर्यसन्देश १७ मई १९९२

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर महत्वपूर्ण सम्मेलनो का आयोजन

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार का ९२वा वार्षिकोत्सव ४ अप्रैल १९९२ से १४ अप्रैल १९९२ तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस समारोह मे प्रतिदिन आचार्य प० मदन मोहन विद्यासागर जी के ब्रह्मत्व मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री ओमप्रकाश वर्मा के मनोहारी भजनोपदेश हुए।

शनिवार ११ अप्रैल १९९२ को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने गगा पार गुरुकुल कांगडी की पुण्य भुमि मे ध्वजारोहण किया। इस समारोह मे श्री हरबशलाल शर्मा प्रधान गुरुकुल करतारपूर की ओर से ऋषि लगर की व्यवस्था की गई। स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा १९०२ मे स्थापित गुरुकुल के जीर्ण भवन का पिछले वर्ष पुनरुद्धार किया गया रात्रि मे श्री सूर्यदेव जी और श्री प्रशान्त कुमार वेदालकार के विशेष व्याख्यान हुए।

रविवार १२ अप्रैल को गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति ने गुरुकुल कागडी हरिद्वार के विशाल प्रागण मे ध्वजारोहण किया। दोपहर में आचार्य रामनाथ जी वेदालकार की अध्यक्षता मे वेद सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इसमें स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव डा० धर्मपाल डा० गणेशदत्त शर्मा तथा डा० भारत भूषण के व्याख्यान हुए। इस अवसर पर प्रश्न मच का भी आयोजन किया गया। रात्रि मे डा० श्यामसिंह शशि पद्मश्री की अध्यक्षता मे कवि सम्मेलन हुआ। इसमे डा० विष्णुदत्त राकेश श्री कमल कान्त बुद्धकर श्री सत्यदेव शास्त्री डा० हरिप्रकाश आदि ने महत्वपूर्ण एव सामयिक कविताए पढी।

सोमवार १३ अप्रैल १९९२ को प्रात राष्ट्र रक्षा सम्मेलन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रो० शेरसिंह डा० धर्मपाल प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव डा० प्रशान्तकुमार वेदालकार डा० जयदेव वेदालकार श्री सूर्यदेव तथा श्री सुभाष विद्यालकार ने आर्य जनता को सम्बोधित किया। इस अवसर पर माता मीरायति तथा डा० प्रशान्त कुमार को आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। रात्रि मे श्री विनय चन्द्र जी मोद्गल्य (पद्मश्री) की अध्यक्षता मे सगीत सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

मगलवार १४ अप्रैल को पूर्णाहुति के पश्चात् डा० दीनानाथ जी श्री सत्यदेव जी के सहयोग से डा० भारतभूषण और डा० वेदप्रकाश ने वेदारम्भ सस्कार सम्पन्न कराया। अपराह्न मे प० सत्यव्रत जी विद्यालकार की अध्यक्षता मे आर्य सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में डा० धर्मपाल डा० भारत भूषण डा० प्रशान्त कुमार वेदालकार तथा डा० वेदप्रकाश शास्त्री ने सामयिक विचार प्रस्तुत किये। रात्रि मे स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में व्यायाम सम्मेलन सम्पन्न हुआ। यह सम्मेलन श्री रणजीत सिंह और श्री ईश्वर भारद्वाज के तत्पर सहयोग से पूर्ण समारोह के आकर्षण का केन्द्र था। जिला बोर्ड के अध्यक्ष श्री अशोक त्रिपाठी इस समारोह मे मुख्य अतिथि थे। श्री त्रिपाठी हमारे विद्यालय मे अध्यापक रह चुके हैं।

—डा० दीनानाथ गुप्ता आचार्य

सेवा में—

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाऊस दरियागंज नई दिल्ली ११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली ११०००१ फोन ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी०(एल११०२४/१-९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

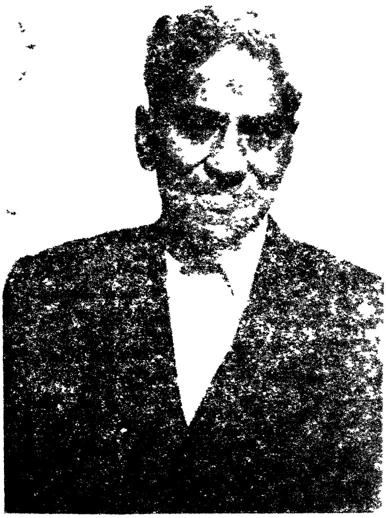
आर्य सन्देश

वर्ष १५ अंक २६ | रविवार २४ मई १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

श्री सरदारी लाल वर्मा नींव के पत्थर थे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री सरदारी लाल जी वर्मा का १३ मई ९२ को प्रातः १०.३० बजे डा० राममनोहर लोहिया अस्पताल में निधन हो गया। वे ७६ वर्ष के थे। १४ मई को पूर्ण वैदिक रीति से निगम बोध घाट पर अन्त्येष्टि संस्कार किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव महामन्त्री डा० धर्मपाल, सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा एवं राजधानी की अनेक आर्य समाजों व आर्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों एवं सैकड़ों की संख्या में उपस्थित लोगों ने श्री वर्मा जी को अन्तिम श्रद्धांजलि दी। श्री वर्मा जी के शोक संतप्त परिवार में उनकी धर्मपत्नी, पाँच पुत्र व एक पुत्री हैं।



श्री सरदारी लाल वर्मा का जन्म सन् १९१६ में हुआ था। भारत सरकार में राजपत्रित पद से सेवा निवृत्त होने के बाद तो वे पूरा समय देकर आर्य समाज की सेवा में जुट गए जबकि सरकारी नौकरी में रहते हुए भी समाज सेवा करते रहे थे। श्री वर्मा जी आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज हनुमान रोड गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी हरिद्वार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं अनेक संस्थाओं में वर्षों तक महत्वपूर्ण पदों पर रह कर सेवा करते रहे।

आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड नई दिल्ली में १६ मई को हवन यज्ञ एवं रस्म पगड़ी हुई। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री केदार नाथ साहनी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री सरदारी लाल जी वर्मा एक आदर्श आर्य समाजी थे। वे वास्तव में नींव के पत्थर थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा कि श्री सरदारी लाल जी वर्मा सारी आयु आर्य समाज की सेवा करते रहे। परमपिता परमात्मा उनके परिवार जनों को इस दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करे एवं हम सभी उनसे प्रेरणा लेकर अथक प्रयास करते हुए समाज सेवा करते रहें। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने कहा कि श्री वर्मा जी ने स्वाहा शब्द को सच्चे अर्थों में अपने जीवन में चरितार्थ किया था। विश्व-विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने कहा कि हमें उनके आदर्श जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

दिल्ली आर्य प्रान्तीय महिला सभा की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला आर्या ने कहा कि निर्भीक, प्रबुद्ध व कर्मठ श्री वर्मा जी ऋषि दयानन्द के सपनों को पूरा करने के लिए सदा काम करते रहे। श्री प्रकाश आर्य ने कहा कि श्री वर्मा जी एक दीवाने थे और दीवानों की तरह ही समाज का काम करते रहते थे। एडवोकेट श्री सोमनाथ मरवाह ने बताया कि श्री सरदारी लाल के प्रयासों से ही रामलीला मैदान में १०१ हवन कुण्डों में हवन कराया गया था। आर्य समाज हनुमान रोड की एक एक ईंट श्री वर्मा जी की गाथा कहती रहेगी। भारतीय आर्य लेखक संघ के डा० प्रशान्त वेदालंकार ने कहा कि जो भी श्री वर्मा जी के सम्पर्क में आया वर्मा जी उसे अपना बना लेते थे। आर्य समाज करोल बाग के प्रधान आचार्य हरिदेव ने कहा कि श्री वर्मा जी का यज्ञमय जीवन था। अखिल भारतीय सनातन धर्म सभा के श्री बलवन्त राय बहल आर्यसमाज हनुमान रोड के कार्यकारी प्रधान श्री राममूर्ति कैला ग्रूप हाउसिंग सोसाइटी के श्री हरिदेव आर्य श्री रूप किशोर शास्त्री आदि ने श्री सरदारी लाल वर्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर राजधानी की अनेक आर्य समाजों एवं संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। अनेक संस्थाओं की ओर से शोक संदेश प्राप्त हुए।

श्रद्धांजलि सभा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्य समाजों व आर्य संगठनों की ओर से २४ मई, ९२ को प्रातः १० बजे आर्य समाज दीवान हाल, दिल्ली में कर्मठ आर्य नेता श्री सरदारी लाल जी को श्रद्धांजलि देने के लिए एक शोक सभा का आयोजन किया गया है। सभी आर्य बन्धु इस सभा में उपस्थित हो अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें।

सम्पादक प्रो० सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

आनन्द मय कोष में उपस्थान (१०)

—देव नारायण भारद्वाज

पदार्थ—

(देवानाम) ब्रह्मज्ञानी विद्वानो का (उत अगात) ऊचाई या उन्नति की ओर ले जाने वाला (अनीकम) बल आत्मबल (चित्रम्) अद्भुत है यह बल ही (मित्रस्य) मित्र (वरुणस्य) वरुण (अग्ने) तथा अग्नि का (चक्षु) मार्ग दर्शक है और वह इस तत्व का उपदेश देता है कि (द्यावा पृथिवि) द्यौ एव भूमि—प्रकाशक एव प्रकाश्य लोको और उनके मध्यस्थ (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष इन सबमे ही (आप्रा) ओत प्रोत आपूर्ण है वह (जगत) जगम चर जगत का (तस्थुष) स्था वर अचर जगत का (सूर्य) प्रेरक व उत्पादक है—(स्वाहा) इस सत्य को मैं अपने अनुभव से स्वीकार करता हू।

उत उत्तर उत्तम एव उन्नति के उच्च तल पर चढ जाने पर भी हमे आगे चलना है। उपासक को प्रभु ने जो आत्म बल प्रदान कर दिया है—वह बहुत विचित्र है वह अब भी उसको आगे बढाता चला जाता है वह आत्मबल चक्षु की भाति उसका मार्ग दर्शन करने लगता है यह मार्ग दर्शन उसे मित्र, वरुण अग्नि गुण वाले परमात्मा से मिला देता है। वही परमात्मा तो पृथ्वी अन्तरिक्ष एव द्यौलोको मे—सर्वत्र ओत प्रोत हो रहा है। वही इस चर चर जगत का प्रेरक और उत्पादक है। वाह वाह कितना अद्भुत यह आत्मबल है जो इस अद्भुत जगत में आपूर्ण अद्भुत प्रभु के अद्भुत दर्शन करा देता है।

नयन मुदे हुए ध्यान मुद्रा मे—भक्त की मन की आख खुल गई हैं उसे भक्ति की विशेष शक्ति मिल गई है यही बल और आख उस प्रभु के दर्शन कराने लगती हैं जो सर्वत्र व्याप्त है जड चेतन सबका उत्पादक है। वह सम्पूर्ण जगत की आत्मा है जो आज इस शरीर की आत्मा उपासक के नेत्रो के सामने है। यह दृश्य चित्रण है—अद्भुत है। वह परमात्मा अब मित्र वरुण एव अग्नि के रूप मे हमारे सामने उपस्थित है। धन्य है वह प्रभु।

ससार मे मित्र हैं जो स्नेह उत्पन्न करते हैं सुन्दरता की वृद्धि करते है ललित कलाओ के द्वारा मधुर सगीत, स्वादिष्ट व्यजन आकर्षक चित्र प्रस्तुत करके प्राणियों मे सौमनस्य का साम्राज्य स्थापित करते हैं। वरुण कौन है वही है जो ससार के शासक हैं जो वरणीय है जो निर्वाचनीय है जिसे सब सम्मति एव सब रूचि से हमने अपना नायक शासक बना दिया है और हम उस पर भरोसा करके निश्चित हो गए हैं जो सर्वत्र व्याप्त होकर हमारी रक्षा तो करता है किन्तु निरीक्षण भी करता है। हम कही त्रुटियां कर रहे हैं—कही कही अपराध कर रहे हैं—वह सुधारने और दण्ड देने मे भी समर्थ है क्योकि वही अग्नि भी है। अग्नि को पावक इसी लिए कहते हैं कि वह पवित्र करती है तापक इसलिए कहते हैं कि अपराधो को आतप्त करके कर्म फल का भोग कराके फिर मानव के सोने को कुन्दन बना देता है और प्रकाशक इस लिए कहते है कि वह अपने प्रकाश के द्वारा हमें ससार को देखने का साधन बन जाती है।

पुस्तक मे जहा मित्र+वरुण+अग्नि शब्द अकित है ऐसा लगता है कि वरुण के दाये मित्र और बाये अग्नि है किन्तु हम पढने वालो को लगता है कि वरुण के बायें मित्र है और दाये अग्नि है। यही सही भी है क्योकि हम बायें से दाये ही पढते है। शासक के दाहिनी ओर अग्नि—अर्थात् तेज व ज्ञान है तो बायी ओर सोम और शिल्प है। हम अपने शरीर पर ध्यान दे तो शासक मस्तिष्क के दाहिनी ओर जो भुजा है वह शक्ति की प्रतीक है और बाई ओर की भुजा उतनी शक्तिशाली नही है किन्तु वहा पर हृदय है जो सौम्यता का प्रतिनिधि है। आज सन्ध्या में इन्ही तीन गुणो के माध्यम से प्रभु को देख ले। प्रभु न केवल मित्र है न केवल वरुण है और न अग्नि है वह मित्र भी है वरुण भी है और अग्नि भी है। वह अकेला ही सब कुछ है यह तो हम है जो ससार मे पृथक पृथक कार्मों के कारण पृथक पृथक रूप के बन जाते है।

मित्र वरुण अग्नि के तीनो रूप प्रतीक हमे एक सूर्य मे दृष्टिगोचर होते हैं। प्रात साय जब हम सन्ध्या करते हैं तो वह कितना सुन्दर अरुणिम आभायुक्त प्यारा लगता है। यहा तो उसका ललित रूप है जो ललित कलाओ मे ढलता रहता है। वही सूर्य हमारा शासक भी है वरणीय भी है। हम निरन्तर अन्धकार से निकल कर प्रकाश की ओर दौडते रहते हैं। पेड पौधो की शाखाये भी उसी ओर बढती है क्योकि वह हमे अपने वश मे नियन्त्रण मे रखता है। 'राजन' शब्द जिसका राजा भी एक रूप है इसका अर्थ है प्रकाश करना इसी एक शासक सूर्य के केन्द्रीभूत होकर ससार के सारे निर्माण और वितरण होते हैं। इसमे अग्नि भी है जो हमे प्रकाश के साथ साथ गर्मी और ऊर्जा प्रदान करती है यही सूर्य सम्पूर्ण जगत की आत्मा है किन्तु यह भौतिक है—उस परम पिता परमात्मा की एक किरण का यह तो अश मात्र है अशुमाली। इसके दर्शन मन्त्र से हम उसके दर्शन पर पहुच जाये—इस मनोरम अरुणिम बेला में—यही तो हमारा अभीष्ट है। मित्र वरुण अग्नि के गुण वाले ससार के विद्वानो को आदर्श बना कर उनके अनुसार स्वय व्यवहार करके इन गुणो का अधिकार हम प्राप्त कर सकते है तो उसकी हमारी दूरी मिट जाएगी—जो तू है वह मैं हू जो मैं हू वह तू है की उक्ति चरितार्थ हो जाएगी।

स्वाह-स्वाह और वाह-वाह—

प्रस्तुत मन्त्र का अन्तिम शब्द है—स्वाहा। यही शब्द देव यज्ञ मे आहुतिया को अर्पित करते समय प्रत्येक मन्त्रोच्चारण के बाद बोला जाता है। यहा तो इस मन्त्र के अग के रूप मे यह शब्द प्रयुक्त हुआ है। ज्ञानेन्द्रियो के द्वारा जब कोई असमान्य अनुकूल अच्छा अद्भुत वस्तु का आभास होता है तो हम सहसा वाह वाह कर उठते हैं—उसकी प्रशसा मे सूक्ष्म शब्द ऐसे बोल पडते हैं जिनसे उस वस्तु का सार शरीर के अन्दर—मुख मे—जाता प्रतीत हो—किसी भी ज्ञानेन्द्रिय के माध्यम से अन्दर आत्मा मे जाता सा प्रतीत हो। वाह वाह उच्चारण से वायु भीतर जाती अनुभव होता है। महर्षि जी ने इसी स्वाहा शब्द के चार स्पष्ट अर्थ हमे बताये हैं— १—(सु आहेतिवा) सु अर्थात् कोमल मधुर कल्याणकारी प्रिय वचन सब मनुष्यों को सदा बोलना चाहिए २—(स्वा वागाहेति वा) जो अपनी वाणी ज्ञान मे विद्यमान है वह जो कहती है, वही वागिन्द्रय से सदा बोलना चाहिए। ३—(स्व प्राहेति वा) स्व अर्थात अपने पदार्थों को ही अपना कहना चाहिए दूसरे के पदार्थों को नही। ४—(स्वाहुत हवि०) अच्छी रीति से शुद्ध करके सदा हवि देनी चाहिए—यह स्वाहा शब्द के पर्यायों का अर्थ है।

उसके दर्शन बारम्बार करें—

दर्शनार्थी की आख पूर्ण स्वस्थ है उनमे दृष्टि क्षमता भरपूर है किन्तु जिसे हम देखना चाहते है—उसके ऊपर कुहरा छाया हुआ है तो उसे देख नही सकते हैं। अनेक बार वाहन—चालक ऐसी दशा मे दुर्घटना ग्रस्त हो जाते हैं वस्तु बिलकुल स्पष्ट है—कही कुहरे-धुन्ध का नाम तक नही है किन्तु दर्शनार्थी नेत्र रोग ग्रस्त है—उनमे मोतिया बिन्द आ गया है तो वह उस वस्तु को देख नही सकता है। एक बार यही हुआ। एक उच्च स्तरीय मण्डलीय बृहत सम्मेलन के सचालन का कार्य पहले से प्रख्यात सचालक (कम्पेयर) को सुपुर्द किया गया। सचालक ने अपनी योजना बना ली थी कि इस क्रम से हम वक्ताओ को आमन्त्रित करेगे। सम्मेलन के सर्वोच्च अतिथि को जैसा कि सबसे अन्त मे बुलाया जाता है यही योजना उसके मन मे था। सचालक ने माइक पर आकर भूमिका प्रस्तुत की, तभी उसके हाथ मे एक सूची दे दी गई—और कहा गया कि इस क्रम से वक्ताओ को आमन्त्रित करे वे मोतिया बिन्द के कारण पढने मे असमर्थ—उन्होने अपने क्रम से ही प्रथम वक्ताओ को आमन्त्रित कर दिया—फलस्वरूप उन्हे टोक दिया गया साथ ही प्रथम वक्ता का सकेत भी कर दिया जिसे उन्होने भाषण के लिए बुला दिया। उपरान्त सूची को किसी से पढवा कर समझ लिया—तब सचालन को सफलता से सम्पन्न किया। आशय यह है कि देखने के लिए वस्तु भी स्पष्ट व स्वच्छ हो और देखने वाले नेत्र भी स्वस्थ और स्वच्छ होने चाहिए। किसी भी रग की ही क्यो न कोई वस्तु हो यदि धीरे धीरे उसके ऊपर धूल जम जायेगी तो उसका वास्तविक रग पहचानना कठिन होगा आगे भी मन्त्र हमे इसी पृष्ठ भूमि में प्रभु दर्शन की प्रेरणा देता है—

(क्रमश)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

आर्यधन श्री सरदारीलल वर्मा



यह विधि का विधान ही है कि इस ससार मे जो भी आया है उसका जाना भी निश्चित है—जातस्य हि ध्रुव मृत्यु । यह आवागमन का चक्र तो चलता ही रहता है, परन्तु जीवन उसका सार्थक है जो यहा आकर अपने लिए अपनी जाति अपने धर्म तथा अपने राष्ट्र के लिए कुछ ऐसा कर जाए, जिससे सभी का उत्थान एव कल्याण हो । 'अस्मिन् परिवर्त्ति नि ससारे मृत को वा न जायते । स जातो येन जातेन याति वश समुन्नतिम ।' श्री सरदारी लाल वर्मा जी ने इस परिवर्तनशील ससार में जन्म लेकर, अपने वश का, अपनी जाति का, अपने धर्म का तथा अपने राष्ट्र का सदैव समुन्नयन किया । उनके ऊपर आर्य समाज के ऐसे सस्कार बचपन से ही पड़े कि वे सारा जीवन आर्य समाज के काम मे डूबे रहे । रात दिन वे आर्य समाज की प्रगति के लिए प्रयत्नशील रहा करते थे ।

श्री वर्मा जी का जन्म २२ अक्तूबर १९१६ को ग्राम धर्मकोट रणधावा जिला गुरदासपुर पजाब मे हुआ था । उन्होने १९३४ मे मैट्रिक किया तथा आगे चल कर प्रभाकर और बी० ए० की परीक्षाए उत्तीर्ण की । आपके पिता श्री देवी दयाल धार्मिक सज्जन थे । फरवरी १९४३ मे स्यालकोट के आर्यसमाजी परिवार की सुपुत्री आशा वर्मा के साथ आपका विवाह हुआ । आप १९३६ मे ही दिल्ली आ गए थे । यहा पर १९३६ से १९३९ तक आपने प्राईवेट नौकरी की और १९४० मे आप सरकारी नौकरी मे आ गये । आप १९७५ मे सेवा निवृत्ति के समय वित्त मन्त्रालय मे गजटेड आफीसर अण्डर सेक्रेट्री थे । कार्यालय मे आपकी सहृदयता तथा लगनशीलता से सभी अत्यन्त प्रभावित थे ।

श्री वर्मा जी के पैत्रिक गांव धर्मकोट रन्धावा मे आर्य समाज मन्दिर आप की दुकानो के साथ ही था । उसी गाव के मुसलमान मोहम्मदीन ने शुद्धि के पश्चात् आर्य समाज को अपनाया तथा सन्यास लेकर अपना नाम स्वामी विज्ञानानन्द रखा । श्री स्वामी जी के जीवन का श्री सरदारी लाल वर्मा पर गहरा प्रभाव पड़ा । १८ वर्ष की आयु मे १९३४ मे वे आर्य समाज के सपर्क मे आये । वे पहले सनातन धर्म के कट्टर अनुयायी थे । आर्य समाज धर्मकोट रन्धावा की हर गतिविधि में वे बढ चढ कर भाग लिया करते थे । उनके बड़े भाई श्री मूलराज १९२७ से ही दिल्ली में आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली के सदस्य थे । दिल्ली आने पर श्री सरदारी लाल जी भी यहीं के सदस्य बने ।

१९४४ मे सरकारी मकान मिलने पर वे लोदी रोड चले गए । १९४५ मे उन्होंने आर्य समाज लोदी रोड की स्थापना की । श्री वर्मा जी ने देश के विभाजन के समय, शरणार्थियों की रात दिन सेवा की । उन्होने कोटला मुबारकपुर मे पहला शरणार्थी शिविर लगवाया और ५०० व्यक्तियो के भोजन तथा आवास की व्यवस्था की । १९५०-५१ मे लोदी रोड श्मशान घाट की स्थापना की तथा १९५१ में आर्य स्कूल लोदी रोड की स्थापना की जो आज कल दीवानचन्द आर्य स्कूल के नाम से जाना जाता है । १९५५ मे सरकारी निवास गोल मार्किट मे मिलने पर आप पुन आर्य समाज हनुमान रोड के सदस्य बने ।

श्री वर्मा जी रघुमल आर्य कन्या सीनियर सेकेन्डरी स्कूल राजा बाजार नई दिल्ली की प्रबन्धक समिति के सदस्य तथा रघुमल प्राईमरी स्कूल डाक्टर लेन नई दिल्ली के प्रधान थे । आप सतप्रावा गर्ल्स सीनियर सेकण्डरी स्कूल करोल बाग के भी सदस्य थे । आप आर्य पब्लिक स्कूल की प्रबन्ध समिति के सदस्य थे । आर्य शुद्धि सभा के कोषाध्यक्ष मातृ मन्दिर आर्य कन्या गुरुकूल वाराणसी के सदस्य, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के सदस्य, गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के उपमन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री तथा प्रधान रहे हैं । आप आर्य नगर कोआपरेटिव हाऊसिंग सोसाइटी के सस्थापक प्रधान थे । आप लोक सेवा सघ हनुमान रोड के सयोजक थे । आपने नवम्बर १९९१ में गुरुकुलो के निस्सहाय एव निर्धन बालको की पढ़ाई हेतु पचास हजार रुपये देकर आशा सरदारी लाल वर्मा ट्रस्ट की स्थापना की थी ।

श्री वर्मा जी ने दिल्ली मे प्रथम बार एक सौ एक कुण्डी यज्ञ करवाया । दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को समृद्ध करने के लिए आर्य स्पेशल ट्रेन चलाई तथा एक लाख पैंतीस हजार रुपये की बचत करके सभा कोष मे जमा कराई । आपने साइकिलो पर जा जाकर तुगलकाबाद क्षेत्र मे आर्य समाज का प्रचार किया । सभा के लिए प्रचार वाहन खरीदा तथा साहित्य प्रकाशन केन्द्र का काम प्रारम्भ किया ।

आपके परिवार मे सभी बेटे बटिया धार्मिक आस्था पूर्वक अपना कार्य सुचारु रूप से कर रहे हैं—

१ ज्येष्ठ पुत्र—कर्नल रविन्द्र कुमार वर्मा, पुत्र वधू रविकान्ता वर्मा पौत्री रश्मि वर्मा

२ पुत्र—शशिभूषण वर्मा पुत्रवधू—रजनी वर्मा पौत्र—शिखर पौत्री—ऋचा वर्मा

३—पुत्र अशोक कुमार वर्मा पुत्र वधू—चन्द्रकान्ता वर्मा पौत्र पुनीत और सुमीत वर्मा ।

४ पुत्र—अरुण प्रकाश वर्मा—पुत्रवधू—रश्मि वर्मा, पौत्र—असीम, पौत्री आस्था वर्मा

५—पुत्र राकेश वर्मा—पुत्रवधू ज्योति वर्मा, पौत्री—शुचि व गरिमा वर्मा पुत्र—ऋत्यय वर्मा

६—पुत्री—सुधा रेखी, दमाद—राजेन्द्रकुमार रेखी, दौहित्र—समीर, सदीप रेखी ।

श्री वर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती आशा वर्मा जी भी अनेक सामाजिक सस्थाओ से जुड़ी हैं तथा वे अभी आर्य समाज हनुमान रोड की प्रधाना है ।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति एव सद्गति प्रदान करे तथा परिवार को इस दारुण दुख को सहन करने की सामर्थ्य प्रदान करे ।

मुझे श्री वर्मा जी के साथ कार्य करने का अवसर १९८० मे मिला था । उनसे समाजो के सचालन मे विशेषकर आर्य महासम्मेलनों के आयोजन मे भरपूर सहयोग आशीर्वाद तथा प्रेरणा मिली । श्री वर्मा जी एक कुशल सगठन कर्त्ता, आर्य समाजो के यशस्वी नेता थे । दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को सुदृढ आधार देने के लिए उन्हे सदैव स्मरण किया जायेगा ।

हमारी विनत श्रद्धाजलि ।

—डा० धर्मपाल

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय सम्पादक जी सादर नमस्ते,

आर्य सन्देश के १९ अप्रैल के अक मे 'जामा मस्जिद क्षेत्र से हिन्दुओ का पलायन' लेख से विशेष जानकारी मिली । सम्बन्धित विभागो को आवश्यक कार्यवाही करनी चाहिए । यदि हम अब भी नहीं जागे तो कब सचेत होगे । राजेन्द्र जिज्ञासु जी का लेख पत्रकार शिरोमणी आर्य नेता महाशय कृष्ण जी भी बहुत सुन्दर लगा, कृपया लेखक को बधाइ दे ।

आप बहुत परिश्रम से सम्पादन कर रहे हैं । मेरी ओर से सम्पादक मडल के सभी सहयोगियो को बधाई दे ।

सुनीलकुमार
९८३ निमारपुर दिल्ली-९

व्यक्ति और समाज का निर्माता-पुरोहित

—आचार्य वेदभूषण

समूचे विश्व मे आज सामाजिक असन्तुलन अशान्ति का कारण बना हुआ है। असन्तुलन के कारण ही सामाजिक विषमता अनुशासन हीनता और मानसिक उद्वेग सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। इन सभी विषमताओ का अन्तत मूल कारण है क्या ?

प्राय आज के चिन्तक इस सारी स्थिति का मूल कारण आर्थिक विषमता को ही बतलाते हैं। यही कारण है कि विश्व के समस्त राष्ट्रो की सरकारें अहर्निश अर्थ सग्रह के पीछे भाग रही है। राष्ट्रीय विकास क लिए जो योजनाए बनाई जाती हैं उन योजनाओ का मुख्य उद्देश्य भी आर्थिक विकास ही माना जाता है। यह कैसी विडम्बना है।

समस्त विश्व मे उन्नति के लिए जितनी भी योजनाए बनाई जा रही हैं उनका यदि निष्कर्ष निकाला जाए तो स्पष्ट हो जाएगा कि आज चेतन मनुष्य से कही अधिक जड अर्थ का महत्व मान लिया गया है। इसका सीधा साधा अभिप्राय यह है कि—आज अर्थ मनुष्य के लिए नही है अपितु आज का मनुष्य अर्थ के लिए ही है। चेतन से अधिक जड पदार्थो की मान्यता ही अज्ञान की चरम सीमा कहाती है।

इस अज्ञान के विरुद्ध जब तक सशक्त आन्दोलन कर हमे मानवता के मूल्य की रक्षा करनी होगी ऐसे समस्त कार्य ऐसी समस्त योजनाए प्रतिबन्धित करनी होंगी। जो मानव की बलि देकर अर्जित की जाती हैं।

कहा जाता है कि—मध्य काल मे यज्ञ मे पशु बलि और नर बलि दी जाती थी। इसी हिंसा प्रवृत्ति के विरुद्ध भगवान बुद्ध और महावीर ने आवाज उठाई थी। पर 'मर्ज बढता ही गया ज्यो ज्यों दवा की' उन यज्ञ कुण्डों की ज्वालाए प्रत्यक्ष मे बुझ गई हैं जिनमे नरबलि दी जाती थी। ऐसा लगता है पर यथार्थ यह है कि—आज वह ज्वाला सूक्ष्म हो गई है। और लाखो करोडो मनुष्य की बलि जारी है। नरबलि आज सीमा लांघ चुकी है। मानवता अपने ही हाथो परास्त हो रही है। नरबलि का ऐसा ताण्डव कभी देखा ही नही गया।

पिछले दिनो विषैली शराब के पीने से हजारो लोगो की जाने चली गई भारत सरकार ने अनेक शराब निर्माताओ को पकड लिया। केवल वे इसलिए पकडे गए कि—हजारो लोग तुरन्त और प्रत्यक्ष मर गए। आज के कानून मे मनुष्य हत्या के लिए दण्ड विधान नही है। केवल दण्ड विधान उस मृत्यु या हिंसा के लिए जो तुरन्त देखा जा सके। यदि नरबलि और मनुष्य का हिंसा दण्डनीय अपराध होता तो फिर जो व्यक्ति खदानो मे कार्य करते हैं या जो लोग रात्रि में चलते कारखानो मे काम करते हैं या जिन्हे चाय और काफी पिला कर या विदेशी शराब पिला कर या अन्य ऐसे ही अनेक कार्य जिन्हे करते हुए मनुष्य अल्पायु हो जाता है वह अपराध न माना जाता ?

स्पष्ट है कि—आज मनुष्य का मूल्य लाख दो लाख रुपये रह गया है। यह मूल्य दुर्घटनाओ मे मर जाने के बाद क्षतिपूर्ति की जो राशि प्रशासन द्वारा दी जाती है। वह इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य के जीवन का क्या मूल्य है। मनुष्य की कीमत क्या है ?

जब तक समाज चेतन मनुष्य को जड पदार्थ से अर्थ से ऊपर नही मानेगा तब तक नरबलि का यह ताण्डव रोका नही जा सकता।

अन्तत इन समस्त स्थितियो पर विहगम दृष्टि डाली जाए और इसका वास्तविक कारण खोजा जाए तो पता चलेगा कि ससार मे जितने भी दु ख जितनी भी विषमताए फैल रही है उनका मूल कारण—सस्कार है।

असस्कारित मनुष्य ही अपनी अशान्ति और विषमता को जन्म देता है। जिस प्रकार गोबर खाद से उत्पन्न अन्न पौष्टिक और लाभप्रद होता है और रासायनिक खाद से उपजाया अन्न पुष्टि रहित विष युक्त होता है। ठीक ऐसे ही सस्कारित मनुष्य ससार मे सुखवर्धक होता है। और असस्कारित मनुष्य ही दु ख विषमता और स्वार्थ का कारण बनता है।

आज के वैज्ञानिक युग मे मानव निर्माण के इस सूक्ष्म विज्ञान की ओर उपेक्षा की जा रही है। ससार मे जन्म लेने स पहले या शिशु को उत्पन्न करने से पूर्व उस आत्मा और देह पर सूक्ष्म सस्कारो का डालना एक अद्भुत विज्ञान हैं जिसे समझने की आवश्यकता है।

आज मनुष्य समाज शूद्र हो गया है। क्योकि "जन्मना जायते शूद्र सस्काराद्विज उच्यते' आज का सस्कार रहित युग शूद्र युग बन चुका है। चेतन आत्मा द्वारा जो कुछ खेल जन्म के बाद खेला जाता है उस खेल के पीछे प्रमुख भूमिका सस्कारों की ही होती है।

पुरोहित का कार्य यही है कि वह मानव निर्माण के सूक्ष्म विज्ञान का ज्ञाता होता है। मानव निर्माण कार्य जिसे सौंपा जाता है उसे ही पुरोहित कहा जाता है। इसलिए चारो वेदो का सर्वप्रथम मन्त्र पुरोहित की ओर ध्यान आकृष्ट करता है।

प्राचीन काल से मानव की शारीरिक मानसिक और आत्मिक उन्नति के लिए वेदो में सोलह सस्कारो का विधान चला आता है।

आज जब से पुरोहितो का अभाव हुआ है तभी से सस्कारो का अभाव हो गया है। ससार को सस्कारो का महत्व और पुरोहित के औचित्य का समझना होगा विश्व के जागरण के लिए पुरोहित को जागृत करना होगा।

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद अपने सामर्थ्य के अनुसार इस दिशा में कार्यरत है। हम हित चिन्तको से सहयोग की भिक्षा मागते हैं और कहते हैं कि—वय राष्ट्रे जागृयाम।

हम राष्ट्र में पुरोहितो को जागृत करेगे।

आर्यसमाजों के अधिकारियो की सेवा मे नम्र निवेदन

मान्यवर,

आर्य समाजो का वित्तीय वर्ष ३१ मार्च १९९२ को समाप्त हो गया है। आप आगामी वर्ष के लिए वार्षिक साधारण सभा की बैठक विधानानुसार आर्य समाज के नियमो उपनियमो के अनुसार ३१ मई १९९२ तक अवश्य आयोजित कर लें तथा आगामी वर्ष के लिए अधिकारियों, आर्य वीर दल के लिए अधिष्ठाता का तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधियो का निर्वाचन यदि गत वर्ष न किया हो तो कर लें। आपकी आर्य समाज की ओर से प्रथम दस सभासदो पर एक और प्रत्येक अतिरिक्त बीस सभासदो पर एक प्रतिनिधि निर्वाचित किया जा सकता है, जिसकी आयु २५ वर्ष से कम न हो और जो पिछले दो वर्षों से समाज का सभासद रहा हो।

१५ मई १९९२ तक निम्नलिखित विवरण तथा धनराशि सभा कार्यालय मे भिजवाने की कृपा करें।

१—१ अप्रैल १९९१ से ३१ मार्च १९९२ तक का वार्षिक विवरण—

(अ) यज्ञ, सस्कार शुद्धिया, अन्तर्जातीय विवाह, दिन के समय साधारण रीति एव बिना दहेज कराये गये विवाहों का तथा समारोहो का विवरण।

(आ) समाज के अधीन चल रही सस्थाओं, विद्यालयो, चिकित्सालय, पुस्तकालय सेवा समिति, आर्य वीर दल आदि का विवरण।

२—१ अप्रैल १९९१ से ३१ मार्च १९९२ तक आय व्यय विवरण।

३—सदस्य सूची निम्नलिखित फार्म के अनुसार स्वय बना ले—

क्रम सख्या	सदस्य का नाम	पिता का नाम	पता	वर्ष भर मे प्राप्त सदस्यता शुल्क

४—सदस्यता शुल्क का दशांश, वेदप्रचार राशि और आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क २५ रुपये अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क २५१ रुपये शीघ्र भेजे।

आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध मे यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपने तथा अपनी समाज का सहयोग प्रदान करें।

डा० धर्मपाल (महामन्त्री)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का विशाल राष्ट्रीय व्यायाम एवं शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

७ जून से २१ जून १९९२ तक

महाशय चूनीलाल बाल मन्दिर हायर सेकेण्ड्री स्कूल एल० ब्लाक हरिनगर नई दिल्ली में आचार्य डा० देवव्रत (प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल) की अध्यक्षता में आयोजित किया जा रहा है।

आर्य समाजों से निवेदन

कुछ कर गुजरने की तमन्ना रखने वाले आर्य वीरों का यह काफिला आर्य समाजों में नई पीढ़ी के अभाव को दूर करने का दृढ़ संकल्प करता है इसलिए प्रत्येक आर्य समाजों में नई पीढ़ी के अभाव को दूर करने का दृढ़ संकल्प करता है इसलिए प्रत्येक आर्य समाज से कम से कम पांच आर्य वीरों को अपनी आर्य समाज से शिविर में भेजें।

शिविर के नियम

१—१२ वर्ष से अधिक आयु के युवक प्रवेश के अधिकारी हैं
२—शिविर स्थल पर शाम ६ जून तक पहुंचना अनिवार्य है।
३—शिविर शुल्क ५० रु० मात्र होगा।
४ शिविर में ऋतु अनुकूल बिस्तर एवं भोजन के बर्तन साथ लावें
५—वेश भूषा खाकी नेकर व सफेद कमीज सफेद बनियान लंगोट कला कच्छा लाठी कापी पेन आसन प्लेट सफेद जुराब होगी।
६—काली बैल्ट व टोपी शिविर स्थल पर क्रय की जा सकती है।

अपील व ऋषि लंगर

इस विशाल शिविर में १५ दिनों तक ८०० व्यक्तियों का तीनों समय का शुद्ध देशी घी का भोजन दूध आदि तथा समापन समारोह में लगभग १० हजार व्यक्तियों के लिए ऋषि लंगर की व्यवस्था आपके द्वारा दिल खोलकर दान देकर सम्भव है।

नौजवान अपना जीवन आर्य बन्धु जन अपना धन राष्ट्रहित में देकर इस महान युवा सैनिक यज्ञ को सफल बनायें। दान दाताओं से प्रार्थना है कि खुले दिलों से अधिक से अधिक धन नकद व क्रास चैक अथवा ड्राफ्ट द्वारा आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के नाम भेज कर रसीद प्राप्त करें। तथा आटा दाल चावल चीनी की बोरियां तथा शुद्ध घी के टीन, दलिया दूध व सब्जी आदि के रूप में भी दे सकते हैं।

१—मिल्कफूड शुद्ध घी का टीन	१२००)	—आटे की बोरी	५००)
३—चावल की बोरी	२०००)	४—दलिया की बोरी	६००)
५—चीनी की बोरी	६००)	६ दाल की बोरी (चने	
७—दूध प्रति क्विंटल	८००)	राजमा आदि	१५००)

सम्पर्क व सूचना स्थल

१—ब्र० राजसिंह आर्य (महामन्त्री) १६६ गली रोबिन सिनेमा पुरानी सब्जी मण्डी दिल्ली ७ फोन २९३०३०४ २५२५४२४
२—आर्य समाज बिरला लाइंस सब्जी मण्डी दिल्ली ७ (समय ७ से ९ बजे सायं)
३—बृजेश आर्य मन्त्री श्रीनगर फोन—७२१६१७३
४—राकेश आर्य, सी० ७०, लाजपत नगर फोन—६८४६७७५
५—वीरेन्द्र आर्य (जिला अध्यक्ष रानी बाग) फोन—७१८७६८६
६—श्रीकान्त आर्य जिला अध्यक्ष आर्यसमाज मालवीय नगर फोन ६८६८८८६
७—विनय सिंघल संगठन मन्त्री बी ६१ आशा पार्क जेल रोड नई दिल्ली—५०२४६०
८—योगेश्वर आर्य (१० से १२ बजे तक) आर्य समाज बी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली

निवेदक

डा० ज्ञान प्रकाश शर्मा
रूपचन्द नागर
व्यवस्थापक
प्रीतमदास रखेजा
अधिष्ठाता

ब्र० राजसिंह आर्य
महामन्त्री प्रान्तीय

डा० देवव्रत आचार्य
प्रधान संचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

अन्तर्राष्ट्रीय पत्राचार हिन्दी में किया जाए

नई दिल्ली सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल ने मंगलवार १२ मई को लोक सभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल से भेंट कर राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को समुचित स्थान देने की मांग की।

इस प्रतिनिधि मण्डल में स्वामी जी के अतिरिक्त सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम एडवोकेट श्री सोमनाथ मरवाह सांसद श्री मदनलाल खुराना पत्रकार श्री अनिल आर्य न्यायमूर्ति श्री महावीर सिंह एडवोकेट श्री विमल वधावन चौधरी लक्ष्मीचन्द आदि सम्मिलित थे।

प्रतिनिधि मण्डल ने श्री शिवराज पाटिल को एक याचिका भी दी। याचिका में मांग की गई है कि एक अधिनियम पारित करा कर सभी भारतीय भाषाओं के लिए हिन्दी को एक अतिरिक्त लिपि के रूप में मान्यता प्रदान की जाए। याचिका में यह भी कहा गया है कि अन्तर्राष्ट्रीय पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग किया जाए। राज्यों में भी वहां की भाषाओं को वही स्थान दिया जाए जो राजभाषा हिन्दी को मिला हुआ है। साथ ही न्यायालयों व शिक्षा के क्षेत्र में भी क्षेत्रीय भाषाओं को उचित स्थान दिया जाए।

देवनागरी को सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक अतिरिक्त लिपि के रूप में भी अपनाये जाने के प्रतिनिधि मण्डल के विचार की श्री पाटिल ने सराहना की और पूछा इसे कैसे कार्यान्वित किया जा सकता है इस पर श्री वन्देमातरम जी ने बताया कि निरक्षरता उन्मूलन कार्यक्रम की तरह यह कार्य किया जा सकता है

भारतीय भाषाओं को उचित स्थान दिलाने में जो भी तत्व बाधक हों उनका निराकरण किया जाए अथवा संविधान में वांछित संशोधन किया जाये। प्रतिनिधि मण्डल ने यह भी सुझाव दिया है।

आर्यसमाज देवनगर नई दिल्ली का ३२वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज देवनगर का ३२वां वार्षिकोत्सव ४ मई से १० मई १९९२ तक बड़े हर्षोल्लास के साथ आर्य समाज में मनाया गया इस सुअवसर पर मई से १० तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ आचार्य अखिलेश्वर जी वैदिक प्रवक्ता गुरुकुल गौतमपुर की संरक्षता में हुआ। इस यज्ञ की पूर्णाहुति १० मई को सम्पन्न हुई। प्रत्येक दिन सायं को ७ ३० बजे से ८ ३० तक श्री गुलाबसिंह राघव द्वारा भजन व ८ ३० से ९ ३० तक आचार्य अखिलेश्वर जी का वेद प्रवचन होता रहा जिसमें अनेकों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इस सुअवसर पर १० मई को श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री मन्त्री सार्वदेशिक सभा श्री सूर्यदेव जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली डा० धर्मपाल जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली आचार्य विश्वश्रवा जी व डा० प्रेमचन्द श्रीधर जी के ओजस्वी व्याख्यान हुए उन्होंने समाज के उत्थान के लिए बहुत अधिक बल देने के लिए लोगों को प्रेरित व उत्साहित किया।

इस सुअवसर पर बच्चों में आर्य संस्कृति की प्रवृति लाने के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया इसमें ८ मई को स्वामी दयानन्द जी के जीवन चरित्र पर लेखन प्रतियोगिता हुई। इसमें १० वर्ष से १६ वर्ष तक के १५ बच्चों ने भाग लिया और ९ मई को ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मन्त्रों के उच्चारण की प्रतियोगिता हुई। इन प्रतियोगिताओं में ५ वर्ष से १० वर्ष तक के २० बच्चों ने भाग लिया। इन सभी बच्चों को सूर्यदेव जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा पुरस्कार दिए गए। उत्सव के समापन पर श्री रघुबर दयाल जी प्रधान आर्य समाज देवनगर ने आगन्तुकों का उत्सव में भाग लेने का धन्यवाद दिया।

अन्त में दोपहर १ बजे से २ २० बजे तक ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई।

कन्या गुरुकुल नरेला का ३९वां वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्य कन्या गुरुकुल महाविद्यालय नरेला (दिल्ली) का ३९वा वार्षिकोत्सव दिनांक २८-२९ मार्च को समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। उत्सव के एक सप्ताह पूर्व गुरुकुल की ब्रह्मचारिणी छात्राओ द्वारा यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का अनुष्ठान हुआ। अन्तिम दिन नरेला निवासी दो यजमान सपत्नीक व्रतधारण पूर्वक यज्ञ की पूर्णाहुति मे सम्मिलित हुए। इस शुभ अवसर पर कुलपति पूज्यपाद श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, आचार्य प० देव भूषण जी (हैदराबाद), प्रो० शेरसिंह जी प्रधान हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री प० सुखदेव जी शास्त्री महोपदेशक रोहतक, आचार्य आर्य नरेश जी अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रचारक, नैष्ठिक श्री जीवानन्द जी प्रस्तोता श्री दयानन्द आर्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर कु० विमला देश पांडे अध्यक्ष हरिजन सेवक सघ दिल्ली, एव विख्यात राष्ट्रवादी नेता श्री एच के एल भगत चौ० हीरा सिंह जी, श्री जगदीश जी टाईटलर केन्द्रीय मन्त्री एव श्री चुन्नीलाल जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचारक, श्री सी० एल० वर्मा उद्योगपति के प्रेरणादायक प्रवचन तथा कन्याओ के भाषण, श्लोक व सगीत का मनोहर कार्यक्रम हुआ। मान्यवर भगत जी के कर कमलो द्वारा बिहार राज्य के वीर कवि द्वारा विरचित काव्य ग्रथ एक ब्रह्मचारिणी को पुरस्कार स्वरूप दिया गया। विजेता छात्राओ को भी पुरस्कार प्रदान किए गए। दोनो दिन सायं छात्राओ ने आश्चर्यजनक आसन, व्यायाम लाठी, तलवार स्तूप आदि का प्रदर्शन किया। श्रद्धालु जनों ने गुरुकुल के लिए निम्न प्रकार दान दिया।

दान विवरण

१	श्री सी एल वर्मा जी	११०००
२	चौ० करण सिंह जी हुड्डा	११०००
३	श्रीमती चन्द्रवती जी	५१००
४	श्री लक्ष्मीनारायण जी महिपालपुर	५०००
५	श्री डा० रामकृष्ण जी एडवोकेट प्रीतमपुरा	३०००
६	श्री रायसिंह जी गुरुकुल नरेला कर्मचारी	११००
७	श्रीमती जादो देवी नरेला	११००
८	श्री धर्मवीर जी नरेला	११००
९	चौ० राजपाल जी	५०१
१०	श्री कुलदीप सिंह कंवल	११००
११	मा० करण सिंह जी माजरा डबास	११००
१२	श्री नन्दकिशोर जी खेटावास	५०१

इसके अतिरिक्त श्रद्धालु दानियो ने २१००० रुपये पुण्य दान दिया।

वैद्य कर्मवीर आर्य महामन्त्री

शुद्धि समाचार

पानीपत। दिनांक २०-४-९२ आर्य समाज बड़ा बाजार पानीपत मे शुद्धि समारोह बड़ी धूम धाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मुस्लिम युवक श्री मुर्तजा अहमद त्यागी ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया। आर्य समाज के पुरोहित प० शिवकुमार आर्य ने श्री मुर्तजा को यज्ञ का मुख्य यजमान बना कर यज्ञोपवीत दिया। इस प्रकार श्री मुर्तजा अहमद शुद्ध होकर पुन वैदिक धर्म मे श्री मोहन त्यागी के नाम से दीक्षित हुए।

इस अवसर पर स्वामी धर्मानन्द जी परिव्राजक, आर्य समाज के प्रधान श्री रामानन्द सिंगला व मन्त्री श्री राममोहन राय उपस्थित थे।

पं० विश्वनाथ विद्यालंकार की पत्नी दिवंगत

देहरादून १५ अप्रैल। पं० विश्वनाथ विद्यालंकार जी की पत्नी श्रीमति कुन्ती देवी जी का दिनांक १५ अप्रैल १९९२ को देहान्त हो गया। वह ९४ वर्ष की थी। विगत वर्ष १९९१–११ मार्च पं० विश्वनाथ जी की मृत्यु के समय से ही वह अस्वस्थ चल रही थी। उनके परिवार में अब दो पुत्र श्री राजेन्द्र नाथ श्री सोमनाथ एवं तीन पुत्रियां श्रीमति कमला, इबरान्, श्रीमति विमला एवं श्रीमति इन्दिरा सुनाना पौत्र पौत्रियां दौहित्र दौहित्रियां हैं दो पुत्र डा० प्रेमनाथ एवं श्री रवीन्द्रनाथ कई वर्ष पूर्व दिवंगत हो चुके हैं। डा० प्रेमनाथ पंजाबी विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में दर्शन विभाग के अध्यक्ष थे।

श्रीमति कुन्तीदेवी जी का जन्म सन् १९०८ में क्वेटा (पाकिस्तान) में एक आर्य समाजी परिवार में हुआ था। श्रीमति कुन्ती देवी जी कन्या महाविद्यालय जालंधर की प्रथम छात्राओं में थी। इन्होंने दसवीं तक शिक्षा प्राप्त की थी। यह स्मरणीय है कि उस समय में बहुत ही कम महिलाएं इतनी शिक्षा ग्रहण कर पाती थी।

इस अवसर पर हम आर्य बन्धुओं का ध्यान एक और तथ्य की ओर दिलाना चाहते हैं। जब भी किसी आर्य विद्वान् एवं आर्यबन्धु की मृत्यु होती है तो देखा गया है कि उसका परिवार आर्य समाज से दूर चला जाता है। आवश्यकता है कि स्थानीय आर्य समाज इस विषय में विचार कर निर्णय करें कि आर्य समाज के क्षेत्र के अन्तर्गत आर्य समाजी विचारधारा में विश्वास रखने वाला अथवा आर्य परिवार का कोई भी सदस्य उस स्थान के आर्य समाज की दृष्टि से ओझल न रहे एवं आर्य समाज हर सम्भव प्रयास कर उन्हें आर्य समाज में सक्रिय रखे। आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की यह प्रथम कड़ी होनी चाहिए एवं देश भर की समस्त आर्य समाजों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

अन्त में ईश्वर से प्रार्थना है कि वह माता कुन्ती देवी जी की आत्मा को शान्ति व सद्गति तथा परिवार के लोगों को इस वियोग को सहन करने की शक्ति एवं वेदमार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।

मनमोहन कुमार आर्य

चुनाव समाचार

आर्य समाज तिमारपुर

आर्य समाज तिमारपुर दिल्ली का ९२ ९३ का वार्षिक चुनाव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री वेदव्रत जी शर्मा की अध्यक्षता में १७ मई ९२ को हुआ जिसमें निम्नलिखित अधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए—

चौ० भीमसिंह—प्रधान श्री खुशीराम मान—उपप्रधान तेजपाल सिंह मलिक—मन्त्री श्री जगदीश प्रसाद शर्मा—उपमन्त्री श्री ज्ञानप्रकाश—कोषाध्यक्ष श्री वेदप्रकाश—पुस्तकाध्यक्ष श्री विमलकान्त शर्मा—प्रचार मन्त्री श्री मनफूल सिंह—लेखा निरीक्षक।

कार्यकारिणी सदस्य

श्री सुन्दर स्वरूप सिंघल श्री रामपाल सिंह श्री ओमप्रकाश गुप्ता श्री वेदपाल राजन्य श्री सुरेन्द्र सिंह श्री चन्द्रपाल सिंह सहरावत श्री जगबीर सिंह श्री डी० के० काकरान श्री राजेन्द्रलाल श्रीवास्तव

—आर्य समाज मन्दिर अशोक नगर नई दिल्ली १८ का वार्षिक चुनाव २१ ४ ९२ मंगल को चुनाव अधिकारी श्रीमान युधिष्ठर रामसेठ की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से हुआ।

प्रधान—श्री मंगलराम आर्य उपप्रधान—श्री जसवन्त राय ढींगरा उपप्रधान—श्री देवेश्वर महेन्द्रू मन्त्री—दीनानाथ गुलाटी उपमन्त्री—श्री चन्द्रपाल आहूजा प्रचार मन्त्री—चन्द्रभान आहूजा कोषाध्यक्ष—मिट्ठनलाल आर्य लेखापरिक्षक—यशपाल आर्य व भण्डार अध्यक्ष—नन्दलाल भाटिया।

वैदिक धर्म स्वीकार कर जीवनलाल बने

१४ ५ ९२ आर्य समाज बिड़ला लाईंस में क्षेत्र के सम्मानित व्यक्तियों व अपने पिता श्री अनवर अहमद व भाई श्री राशिद की उपस्थिति में २१ वर्षीय नवयुवक मोहम्मद असलम ने वैदिक धर्म स्वीकार किया। इस अवसर पर यज्ञोपवीत देवयज्ञ के उपरान्त श्री जीवनलाल का स्वागत करते हुए वैदिक साहित्य भेंट किया गया।

आर्य बन्धु जयप्रकाश

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 21-22-5-1992 Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/९२

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल-११०२४/९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) ११९/९१

साप्ताहिक "आर्यसन्देश" २४ मई, १९९२

मन्दिर निर्माण हेतु अपील

आदरणीय बहनो और भाइयो ! आपको यह जान कर प्रसन्नता होगी कि लम्बे संघर्ष के बाद आर्य समाज पश्चिमपुरी को जमीन मिल गई है । डी० डी० ए० ने विधिवत हमे भूमि का कब्जा २९-८८ को दे दिया है । इस प्रयास में अनेक बन्धुओ ने हमे जो सहयोग दिया उसके लिए हम उनके आभारी हैं ।

एक सुन्दर यज्ञ शाला, भव्य सत्संग हाल तथा पुस्तकालय आदि के लिए कमरे बनाने की योजना विचाराधीन है । उनके निर्माण पर तीन से पाच लाख रुपये के व्यय का अनुमान है ।

यह निश्चय किया गया है कि दानी महानुभावों के नाम संगमरमर की शिला पट्टिकाओ पर अंकित किए जायेंगे जो मन्दिर मे उपयुक्त स्थान पर स्थाई रूप मे लगाई जाएगी । ५००० (पाच हजार या अधिक रुपये देने वालो के नाम की पट्टिका स्वतन्त्र होगी और ५०० (पाच सौ) या अधिक रुपये देने वालो की सम्मिलित । कोई बन्धु अपने किसी प्रिय की स्मृति मे यज्ञशाला अथवा कमरा आदि के निर्माण का पूरा खर्च देना चाहे तो उस पर उनके प्रिय के नाम की शिला लगा दी जायेगी ।

अत हमारी सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी सहायता-राशि शीघ्र भेज कर कृतार्थ करें । अपना चैक/ड्राफ्ट 'आर्यसमाज पश्चिमपुरी नई दिल्ली' के नाम सीधे भेज दें । हम आपके बहुत आभारी होंगे ।

आर्य वीर दल राजस्थान

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के तत्वावधान मे आर्य वीर दल राजस्थान का एक विशाल प्रशिक्षण शिविर २६ मई से ४ जून, ९२ तक आर्य गुरुकुल चित्तौड़गढ़ मे लगाया जा रहा है।

प्रवेश शुल्क ५५ रुपये, आर्यवीर की न्यूनतम आयु १५ वर्ष होनी चाहिए शिविरार्थी को २५ मई सायं ६ बजे तक गुरुकुल चित्तौड़गढ़ मे आवश्यक सामान के साथ पहुच जाना चाहिए । ४ जून समापन के अवसर पर विजेता आर्यवीरों को पुरस्कार व प्रमाण पत्र दिये जायेंगे ।

दानी महानुभाव दान राशि 'आर्य वीर दल शिविर' द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर के पते पर भेजें ।

यज्ञ शाला निर्माण के लिए अपील

आर्य समाज निर्माण विहार के मन्दिर निर्माण के लिए ५०० वर्ग गज भूमि ८४००० रुपये मे डी० डी० ए० से आवंटन हुई थी । चार दिवारी, एक कमरा बरामदा शौचालय का निर्माण हो गया है । धर्मार्थ होमियोपैथिक औषधालय सुचारु रूप से चल रहा है । जिसमें लगभग १५० रोगी प्रतिदिन लाभ उठा रहे हैं।

अब भव्य यज्ञ शाला के निर्माण का काम चल रहा है जिसमें लगभग २ लाख रुपये लागत आयेगी ।

सभी आर्य समाजो व दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्य के लिए अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर कृतार्थ करें ।

प्रेमप्रकाश आर्य
मन्त्री

रोशनलाल गुप्त
संयोजक

सेवा में—

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाऊस दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित । रजि० न० डी०(एल११०२४/१—०९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५, अंक २७ | रविवार, ३१ मई १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

आर्यसमाज गीता कालोनी का वार्षिकोत्सव—

ऋषि दयानन्द एक बागी फकीर थे

दिल्ली १७ मई। आर्य समाज गीता कालोनी का वार्षिकोत्सव क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा शाहदरा क्षेत्र के प्रधान श्री विश्म्भर नाथ भाटिया की अध्यक्षता में आज धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

समारोह के मुख्य अतिथि सांसद श्री बैकुण्ठ लाल शर्मा, प्रेम ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि वानप्रस्थ की आयु में आने पर आर्य समाजियों को वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश कर समाज व राष्ट्र की सेवा में और अधिक योगदान देना चाहिए। उन्होंने आर्य साहित्य वितरण पर भी बल दिया।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य समाज राष्ट्र की एकता व अखण्डता को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है और राष्ट्रभाषा हिन्दी को राष्ट्रीय एकता की कड़ी मानता है। आर्य समाज कभी भी तुष्टिकरण का पक्षपाती नहीं रहा है और इसे राष्ट्र की प्रगति में बाधक मानता है।

श्री सूर्यदेव ने आगे कहा कि एक बार कलकत्ता प्रवास के दौरान जब महर्षि दयानन्द तत्कालीन वायसराय न्याय ब्रुक से मिलने गए थे उन्होंने कहा कि स्वामी जी आप अन्य मतावलम्बियों की आलोचना करते हैं, इससे आप कोई खतरा अनुभव करते हो तो आपकी सुरक्षा की व्यवस्था की जाए। इस पर ऋषि दयानन्द ने कहा कि मैं केवल सत्य भाषण ही करता हूं और ईश्वर मेरा रक्षक है। अंग्रेजी राज्य में मुझे कोई खतरा नहीं। यह सुन कर वायसराय ने कहा कि स्वामी जी जब आप ईश्वर की प्रार्थना करते हो तो अंग्रेजी राज्य स्थाई व सुदृढ बना रहने के लिए भी प्रार्थना किया करें।

यह सुनते ही निर्भीकता की मूर्ति स्वामी दयानन्द ने कहा कि मैं तो प्रात व सायं प्रति दिन परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि अंग्रेजी राज्य तुरन्त समाप्त हो एवं भारतवर्ष स्वतन्त्र हो जाए। यह सुन वायसराय ने वार्ता बन्द कर दी। अपनी गोपनीय रिपोर्ट में वायसराय ने ब्रिटेन की महारानी को लिखा था कि स्वामी दयानन्द एक बागी फकीर है और गुप्तचरों को इस बागी फकीर पर निगाह रखने के निर्देश दे दिए हैं। श्री सूर्यदेव ने कहा कि स्वामी दयानन्द व आर्य समाज के उज्जवल अतीत से प्रेरणा लेकर हमें आगे बढते रहना चाहिए।

श्री विश्वम्भर नाथ भाटिया ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हमें मिल जुल कर चलना चाहिए और संगठन को मजबूत करना चाहिए। आर्यसमाज के सत्संगों में बच्चों को अवश्य लेकर आना चाहिए ताकि उन पर अच्छे संस्कार पड़ें और वे अच्छे नागरिक बनें।

इससे पूर्व आज प्रात वेदपरायण यज्ञ की पूर्णाहुति में श्रद्धालु आर्य जनों ने श्रद्धापूर्वक आहुतियां दी। इस वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में एक सप्ताह तक वैदिक विद्वान श्री प्रेमचन्द श्रीधर की मनोहर कथा भी होती रही।

दिल्ली की आर्य संस्थाओं द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि—

श्री सरदारी लाल वर्मा का जीवन यज्ञमय था

दिल्ली २४ मई। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्य समाजों आर्य शिक्षा संस्थाओं व आर्य संस्थाओं की ओर से आर्य समाज दीवान हाल में आर्य जगत के वरिष्ठ कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री सरदारी लाल जी वर्मा के निधन पर एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। श्री वर्मा जी का १३ मई को देहावसान हुआ था।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि श्री सरदारी लाल वर्मा जी आर्य समाज हनुमान रोड में एक प्रहरी के रूप में काम करते थे। कुछ भी कह देना तो सरल होता है परन्तु उसे कार्य रूप देना कठिन होता है परन्तु काम करते हुए जब भी कोई कठिनाई आती थी तो श्री वर्मा जी बड़ी सूझ बूझ से दूर करते थे। वर्तमान में वे आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ अन्तरंग सदस्य भी थे। मैं तथा सभा मन्त्री डा० धर्मपाल जब उन्हें डा० राममनोहर लोहिया अस्पताल के नर्सिंग होम, में देखने गये थे तो उनमें बहुत उत्साह था और उन्होंने कभी निराशा की बात नहीं की। श्री वर्मा जी जैसे कर्मठ कार्यकर्त्ता से प्रेरणा लेकर हमें सदैव आर्य समाज की सेवा में संलग्न रहना चाहिए।

एडवोकेट श्री सोमनाथ जी मरवाह ने कहा कि वर्मा जी के जाने से मुझे ऐसे लगता है जैसे मेरा एक बाजू ही कट गया हो। उनके पुत्रों व पुत्री को वर्मा जी के दिखाये मार्ग पर अवश्य चलते रहना चाहिए। मैं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों का धन्यवादी हूं कि उन्होंने आर्य सन्देश के २४-५-९२ के अंक में वर्मा जी के बारे में विस्तृत समाचार व जीवन-वृतान्त दिया है, अत सभी को उसे पढ कर प्रेरणा लेनी चाहिए।

आर्य अनाथालय बाल गृह, पटौदी हाऊस के मन्त्री श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री ने कहा कि अकेला आदमी क्या कुछ कर सकता है यह हमें श्री वर्मा जी के जीवन से सीखना चाहिए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की विद्या परिषद् के प्रस्तोता श्री चन्द्रदेव जी ने कहा कि श्री वर्मा जी विद्या परिषद् के पूर्व प्रस्तोता रहे हैं और उनसे हमारे पारिवारिक सम्बन्ध थे। सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक श्री बाल दिवाकर हंस ने कहा कि वर्मा जी ने आर्य समाज के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था और वे ऋषि के सच्चे भक्त थे।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादक—प्रो॰ सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

आनन्द मय कोष में उपस्थान (११)

—देव नारायण भारद्वाज

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत। पश्येम शरदः शतम्। जीवेम शरदः शतम्। शृणुयाम शरदः शतम्। प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्। भूयश्च शरदः शतात्। यजु० ३६।२४।

अर्थ—(तत्) वह (चक्षु) मार्ग दर्शक (देवहितम्) देवताओं, विद्वानों, धर्मात्माओं एवं उपासकों का परम हितैषी वह (पुरस्तात्) सम्मुख (सृष्टि पूर्व से) (शुक्रम्) शुद्ध तेजोमय रूप में (उच्चरत्) उपस्थित हुआ है—(उत+चरत) सबसे ऊपर विद्यमान है। (तत्) उसी ब्रह्म को हम (पश्येम शरदः शतम्) सौ वर्ष तक ज्ञान चक्षु से देखें (जीवेम शरदः शतम्) सौ वर्ष तक जीवें। (शृणुयाम शरदः शतम्) सौ वर्ष तक सुनें, तथा उन्हीं के गुणों को (प्रब्रवाम शरदः शतम्) सौ वर्ष तक दूसरे से कहें उपदेश करें। (अदीनाः स्याम शरदः शतम्) जिससे हम सौ वर्षों तक अदीन स्वाधीन हों। और (भूयश्च शरदः शतात्) हम उसी के अनुग्रह से सौ वर्ष से अधिक भी हों—अर्थात् देखें जीवें, सुनें उपदेश करें और अदीन या स्वतंत्र रहें।

महर्षि के शब्दों में इन मन्त्रों का भाव है—'आरोग्य शरीर, दृढ़ इन्द्रिय, शुद्ध मन और आनन्द सहित हमारा सदा रहे। यही एक परमेश्वर सब मनुष्यों का उपास्य देव है। जो मनुष्य इसको छोड़ कर दूसरों की उपासना करता है वह पशु के समान होकर सब दिन दुःख भोगता रहता है। इसलिए प्रभु में अत्यन्त मग्न होके अपने आत्मा और मन को परमेश्वर में जोड़ के इन मन्त्रों से स्तुति और प्रार्थना सदा करते रहें।

प्रस्तुत मन्त्र के दो स्पष्ट भाग दिखाई देते हैं। प्रथम भाग में तो उस देव हितकारी परमात्मा का चित्रण है जो सदैव हमारे सम्मुख उपस्थित रहता है और द्वितीय भाग में हमारा वर्णन है कि हम उस परमात्मा को देखते समझते रहें। हमारे सामने साक्षात् दृश्य उपस्थित कर दिया गया है। सूर्योदय हुआ सूर्य हमारे सामने है। वह स्वयं शुद्ध है और सारे जगत को शुद्ध भी करता है। उसकी किरणें ही हमारी आंख में आ जाती हैं और हम उससे सूर्य व उसके सारे संसार को देखने लगते हैं। जिन व्यक्तियों की नेत्र ज्योति मन्द पड़ जाती है—उनके नेत्रों पर एक शीशा लगा दिया जाता है, जो सूर्य की किरणों को—अथवा अन्य प्रकाशित किरणों को खींच कर नेत्र को प्रदान कर देता है जिससे वह सभी कुछ देखने में समर्थ होता है। यह सम्भव तभी होता है, जबकि व्यक्ति की आंख में देखने की शक्ति पहले से कुछ न कुछ अवश्य उपस्थित है, यदि वह दृष्टिहीन है तो वह किरण उसकी कुछ भी सहायता नहीं कर सकती हैं। इसी प्रकार हम अपना बल लगा कर संसार को देखें—कार्य करें—किन्तु उसे भी परमात्मा का ही बल समझें इससे विपरीत ऐसा न समझ बैठें कि हमारा बल तो बल ही नहीं है—कार्य तो प्रभु बल से ही होना इसलिए हम कुछ भी न करें। यथा शक्ति अपना बल प्रयोग करें अवश्य—उसे भी प्रभु का बल मान कर प्रयोग करें।

दृष्टा दृश्य और दृष्टि पथ तीनों के स्वच्छ होने पर देखने की प्रक्रिया पूर्ण होती है केवल इनके स्वच्छ होने भर से नहीं। इन तीनों के एक समन्वय पर आने से दृश्य दिखाई देता है। चार वेद हैं—ऋग्वेद ज्ञान यजुर्वेद कर्म और सामवेद उपासना की प्रेरणा देता है। ज्ञान-कर्म उपासना पृथक पृथक किसी काम के नहीं हैं—इन तीनों के समन्वय से ही हमें लाभ मिलता है। केवल ज्ञान बिना कर्म के व्यर्थ, केवल कर्म बिना ज्ञान के—व्यर्थ, केवल उपासना बिना ज्ञान—कर्म के व्यर्थ। इनका समन्वय ही सार्थक है जो विज्ञान से प्राप्त होता है। ईश्वर जीव, प्रकृति-पृथक पृथक अर्थहीन हैं। जीव प्रकृति के आधार पर ईश्वर को प्राप्त कर सकता है—यह भी समन्वय से ही सम्भव है जो विज्ञान की देन है। कृषि विज्ञान के साधनों से आपने ईख को उगा लिया, तो उसका मधुर स्वरूप शर्करा आपको मिल ही जायेगी। आपने गुलाब के वृक्ष को बड़ा कर लिया तो उसका फूल आप को मिल ही जाएगा—फूल मिल जाएगा तो उसकी सुगन्धि आपको स्वमेव मिल जायेगी, आपको ही क्या आस पास सभी बोल पड़ेंगे—क्या सुगन्धि है—सुयश है। यही तो आनन्द मय कोष है जो अन्न, प्राण, मन को—देह शक्ति मन को विज्ञान से समन्वित करने पर स्वयमेव प्रस्तुत हो जाता है।

यह परमपिता का अद्भुत दृश्य अथर्ववेद (१९ ६७ १से ८) अपने विज्ञान चक्षु से आनन्द पूर्वक बारम्बार देखने की प्रेरणा देता है—(१) पश्येम शरदः शतम्—हम सौ वर्ष तक देखते रहें (२) जीवेम शरदः शतम्—हम सौ वर्ष तक जीते रहें (३) बुध्येम शरदः शतम्—हम सौ वर्ष तक समझते रहें (४) रोहेम शरदः शतम्—हम सौ वर्षों तक चढ़ते रहें (५) पूषेम शरदः शतम्—हम सौ वर्ष तक पुष्ट होते रहें (६) भवेम शरदः शतम्—हम सौ वर्षों तक बने रहें (७) भूयेम शरदः शतम् हम सौ वर्षों तक शुद्ध रहें। (८) भूयसी शरदः शतात्—हम सौ वर्षों से अधिक वर्षों तक—यही सभी कुछ करते रहें। इसी शरीर में जब यह आनन्द का अनुष्ठान हम कर लेंगे—तब शरीर छूट जाने के बाद भी सूक्ष्म शरीर के साथ आनन्द का कोष साथ ही रहेगा। अन्ततः हमें मोक्ष की गोद में बैठा देगा।

आचमन—लक्ष्य की लब्धि

यहां पर आचमन मन्त्र के तीन शब्द पुनः स्मरण कर लें। अभीष्टये-पीतये शम इनके प्रतीक इस बार फिर परिवर्तित से प्रतीत होने लगेंगे। पहले आचमन में-अभीष्टये जहां भौतिक सम्पदा का पीतये आध्यात्मिक ऐश्वर्य का प्रतीक होकर आया था, इन दोनों के समन्वय से हमको शम शान्ति सुख प्राप्त हो जाये। दूसरी बार आचमन मन्त्र पढ़ते समय हम कई सोपान आगे बढ़ चुके थे। अंग स्पर्श, मार्जन, अघमर्षण एवं प्राणायाम मन्त्रों के माध्यम से हमने सर्वांग रूप में शुद्धता निष्पापता एवं शक्ति का वरण कर लिया है। अभीष्टये' से ज्ञान, 'पीतये' से कर्म साधना द्वारा 'शम' शान्ति का मार्ग हमने प्राप्त कर लिया है। अब तो दो सोपान हम और आगे बढ़ चुके हैं—बुद्धि में व्याप्त विज्ञान तरंगों ने मनसा परिक्रमा करके, प्रभु के उपस्थान का आनन्द अनुभव कर लिया है। अब आचमन मन्त्र का 'अभीष्टये' हो गया है 'तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत'-देवताओं का हितकारक सृष्टि पूर्व से शुद्ध रूप में विद्यमान वह मार्ग दर्शक प्रभु-और 'पीतये' हो गया है—पश्येम शरदः शतम् से भूयश्च शरदः शतात् तक का शेष मन्त्र—सौ वर्षों तक उसे देखें सौ वर्षों से भी अधिक काल तक उसे जीते रहें—आचमन मन्त्र का शम-हो गया है—अदीनाः स्याम शरदः शतम् सौ वर्षों तक अदीन—स्वतन्त्र रह कर जीवन में सुख और मरण में आनन्द प्राप्त करने में सफल हों।

सद्बुद्धि प्रेरणा—

व्यक्ति जप त्याग तपस्या के द्वारा विद्वान बन जाते हैं—यही देवता कहलाते हैं। साधकों को उपलब्धि होती है—सुख या आनन्द। बहुधा यह आनन्द मग्न रह कर पुरुषार्थ को छोड़ बैठते हैं तो यह आनन्द तो उनसे छिन हो जाता है प्रत्युत वे स्वयं भी जड़ से जड़ हो जाते हैं। कभी ब्रह्मा विष्णु महेश इन्द्र वसु आदित्य रुद्र नामक महापुरुष हुए होंगे जो कहलाते थे। भोग लिप्सा अथवा हमारे अज्ञान के कारण वे जड़ मूर्तियों में बदल दिए गए और उनके विषय में भांति भांति की मनगढ़न्त कहानियाँ लिख दी गईं। शक्ति युक्ति भक्ति के परिणाम स्वरूप व्यक्ति सम्पदा प्राप्त करता है। निर्धन से धनवान हो जाता है—वही फिर दुर्व्यसन में पड़कर पतनोन्मुख हो जाता है। इससे बचने का उपाय यही है कि हम अपनी बुद्धि को सन्मार्ग पर ही चलाते रहें और कुबुद्धि से बचते रहें। इसीलिए गायत्री मन्त्र का जाप करके सन्मार्ग की प्रेरणा करने का उपक्रम करते रहना चाहिए।

> ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
> धियो यो नः प्रचोदयात्॥ यजु० ३६/३

अर्थ—(ओ३म्) सबका रक्षक (भूः) जो प्राणों से भी प्रिय है (भुवः) जो भक्तों और भक्तों को दुःखों से पृथक करने वाला है, (स्वः) जो सब जगत को, व्यापक होकर नियम में रखता है तथा सुख स्वरूप है। (सवितुः) सब जगत का उत्पादक (देवस्य) सबके प्रकाशक देव के (तत्) उस (वरेण्यम्) वरणीय सुन्दर (भर्गः) शुद्ध स्वरूप को (धीमहि) हम लोग सदा ध्यान करते हैं। (यः) जो (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) उत्तम कर्मों वाले सन्मार्ग में प्रेरित करें।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की बिहार यात्रा

तीसरा भारतीय भाषा सम्मेलन पटना में होगा

पटना २३ मई। आर्य समाज हवेली खडगपुर के वार्षिकोत्सव पर जाते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती और उप-मन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री आज पटना पहुचे। पटना से बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री के साथ स्वामी जी तथा शिवकुमार शास्त्री जमालपुर के लिए रवाना हुए। साय काल ७-३० बजे गाडी जब जमालपुर रेलवे स्टेशन पर पहुची, तो आर्यसमाज जमालपुर के कार्यकर्ताओ ने भारी सख्या मे स्टेशन पर पहुच कर सभा प्रधान श्री स्वामी जी का स्वागत किया। वह वहा से सीधे आर्य समाज जमालपुर पहुचे वहा आर्य समाज मन्दिर मे आर्य जनो को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार को बढाने और आर्य समाज के सगठन को मजबूत करने पर बल दिया।

साय ८-३० बजे स्वामी जी और शिवकुमार शास्त्री जमालपुर से कार द्वारा चलकर ९-३० बजे हवेली खडगपुर पहुचे। वहा एक सजे हुए मैदान मे हजारो की सख्या मे आर्य जन उनके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। डा० शिवकुमार शास्त्री ने आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए वेदानुसार जीवन व्यतीत करने तथा सच्चे आर्य बनने की अपील की। रात्रि १० बजे स्वामी जी ने अपने ओजस्वी भाषण मे बिहार मे आर्य समाज को मजबूत करने और घर घर मे उसका सन्देश पहुचाने का आर्य जनो से आह्वान किया और नवयुवको के चरित्र निर्माण एव नशाखोरी छोडने की भी अपील की। उन्होने कहा कि यह चम्पारण की धरती हमेशा देश का नेतृत्व करती रही है, आपके इसी प्रदेश मे गाधी जी ने आजादी का बिगुल बजाया और चम्पारण की जनता ने दिल खोलकर उनका साथ दिया।

२४ तारीख को प्रात काल यज्ञोपरान्त डा० शिवकुमार शास्त्री और स्वामी जी के आध्यात्मिक प्रवचन हुए। दोपहर को ठीक १ बजे हवेली खडगपुर मे शानदार शोभायात्रा निकाली गई। इस शोभायात्रा में कडाके की धूप होने पर भी स्वामी जी पैदल ही चल रहे थे और हजारो की सख्या मे आर्य नवयुवक उनके आगे-पीछे चल रहे थे। इस शोभायात्रा मे आर्य समाज की नई स्फूर्ति और उसका नया जोश दृष्टिगोचर हो रहा था। रात्रि ८ ३० बजे से १० ३० बजे तक हवेली खडगपुर के सजे हुए मैदान मे डा० शिवकुमार शास्त्री और स्वामी जी का ओजस्वी भाषण हुआ। इस अवसर पर बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भूपनारायण शास्त्री भी उपस्थित थे।

इस सभा मे यह भी निर्णय किया गया कि तीसरा भारतीय भाषा सम्मेलन बिहार के किसी बडे शहर मे किया जाए।

स्मरणीय है कि सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री और उप मन्त्री श्री डा० धर्मपाल बिहार सभा के विवाद सम्बन्धी मामलो की जाच के लिए पहले से ही वहा पधारे हुए थे।

२५ मई को वहा से चलकर स्वामी जी, डा० सच्चिदानन्द शास्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री और डा० धर्मपाल २६ मई को २ ३० बजे दिल्ली पहुचे।

आर्य पर्वों की सूची

सन् १९९२ तदनुसार सवत् २०४८-४९

क्र० स०	नाम पर्व	अग्रेजी तिथि	चन्द्र तिथि	सवत्	वार
१	मकर सक्रान्ति	११-१-१९९२	पौष सुदी ९	२०४८	मगलवार
२	बसन्त पचमी	९-२-१९९२	माघ सुदी ५	२०४८	रविवार
३	सीता अष्टमी	२५-२ १९९२	फा० वदी ८	२०४८	मगलवार
४	दयानन्द बोधरात्रि	२ ३ १९९२	फा० वदी १३	२०४८	सोमवार
५	लेखराम तृतीया	७-३-१९९२	फा० सुदी ३	२०४८	शनिवार
६	नव सस्येष्टि	१९-३-१९९२	चैत्र सुदी १	२०४८	गुरुवार
७	आर्य समाज स्थापना दिवस	४-४-१९९२	चैत्र सुदी १	२०४९	शनिवार
८	रामनवमी	११ ४-१९९२	चैत्र सुदी ९	२०४९	शनिवार
९	हरि तृतीया	१-८-१९९२	श्रावण सुदी ३	२०४९	शनिवार
१०	श्रावणी उपाकर्म	१३-८-१९९२	श्रावण सुदी १५	२०४९	गुरुवार
११	श्री कृष्ण जन्माष्टमी	२१ ८-१९९२	भाद्र वदी ८	२०४९	शुक्रवार
१२	विजया दशमी	६-१०-१९९२	अश्विनी सुदी १०	२०४९	मगलवार
१३	श्री गुरु विरजानन्द दिवस	९-१०-१९९२	अश्विनी सुदी १३	२०४९	शुक्रवार
१४	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस	२५-१०-१९९२	कार्तिक वदी १५	२०४९	रविवार
१५	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	२३-१२-१९९२	पौष वदी १५	२०४९	बुधवार

नोट—सभी आर्य समाजें इन पर्वों को सोत्साह मनावें। देशि तिथियो मे घट बढ़ के कारण पर्व दिवस मे परिवर्तन हो सकता है।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री
मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार १९९२

वैदिक धर्म, वैदिक साहित्य एव आर्य समाज के प्रति समर्पित भाव से की गई श्लाघनीय सेवाओ के फलस्वरूप महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार निधि न्यास आर्य समाज फुलेरा, जिला जयपुर राजस्थान की ओर से १०,००० दस हजार रुपये नकद, उत्तरीय प्रशस्ति-पत्र तथा अभिनन्दन-पत्र महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार स्वरूप प्रति वर्ष ऋषि निर्वाण दिवस पर प्रदान किया जाता है। सन् १९९२ के महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार के लिए कोई भी आर्य विद्वान स्वय अपना या अन्य आर्य विद्वान का नाम पूर्ण विवरण तथा कृतियो सहित दिनाक ३१ ७-१९९२ तक प्रस्तुत कर सकता है।

अध्यक्ष महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार
निधि न्यास आर्य समाज फुलेरा
जिला जयपुर (राजस्थान) ३०३३३८

भूल-सुधार

आर्य सन्देश के २४ मई के अक मे पेज ३ कालम २ मे 'बजनी पुत्र के स्थान पर ज्येष्ठ पुत्र तथा इसी पक्ति मे पोत्री रश्मि वर्मा के आगे पुत्र रूपेश भी पढ़ें।

—सम्पादक

आओ ! वेद पढ़े

पहले ज्ञान पीछे अनुष्ठान

पहले वेद के महत्व को समझें फिर उसको पढ़ कर तदानुकुल आचरण करके जीवन को सुन्दर, सफल बनावें ।"

वेद मे प्रभु को आहुत, स्वाहुत शतक्रत आदि नामो से सम्बोधित किया है अर्थात् प्रभु ने जीव हित के लिए सम्यक प्रकारेण अपनी आहुति दे दी है सृष्टि के आदि मे मानव की सर्वागीण उन्नति और मार्ग प्रदर्शन के लिए चार ऋषियो द्वारा वेद ज्ञान देकर अपार उपकार किया है ।

पक्षपात रहित ससार के सभी विद्वान इस बात से सहमत है कि 'वेद' ससार के पुस्तकालय मे सबसे पुराना ग्रन्थ है, इसलिए इसको 'अग्रिय' कहा गया है। महर्षि कणादि इसको सबसे पहला ज्ञान भगवान से मिलने के कारण वेद को प्रमाणिक मानते हैं ।

तद्वचनादाम्न यस्य प्रमाण्यम् ।

वद ज्ञान का भण्डार है—वेद महान ज्ञान-विज्ञान का भण्डार है । तृण से लेकर ब्रह्म पर्यन्त सभी पदार्थों की गुणगाथा इसमे है, अर्थात् जीवनोपयोगी सभी पदार्थों का ज्ञान इसमे उपलब्ध है। वेद ही सर्वव्यापक अविनाशी परमपिता का ज्ञान कराने के लिए है ।

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् । ऋग्वेद १।१३४।३९

उपनिषद महर्षियों ने भी सही बात कही है ।

"नावेदविन्मनुते त बृहन्तम् ।"

वेद की महिमा—स्मृति ग्रन्थो मे वेद के सम्बन्ध में बहुत कुछ उल्लेख मिलता है । महर्षि मनु ने वेद को धर्म का आधार और सर्व ज्ञानमय बताया है ।

"वेदो अखिलो धर्म मूलम् ।" मनु० २।६

"सर्व ज्ञान मयो हि स ।" मनु० २।७

"धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाण परम श्रुति ।" मनु० २।१३

वेद से ही विश्व की भिन्न-भिन्न सस्कृतियों का विकास हुआ है । मनु जी अपने मानव धर्म शास्त्र में लिखते हैं कि चारो वर्ण, तीनो लोक चारो आश्रम तथा भूत, वतमान और भविष्य की सब व्यवस्थाये वेद से ही ससार में प्रचलित होती हैं—

'चातुर्वण्य त्रयो कालश्चत्वारश्चाश्रम पृथक् । भूत भव्य भविष्य च सर्व वेदात् प्रसिध्यति ।। मनु० १२।९७

इसी भाव को महर्षि वेदव्यास जी ने अपने महान ग्रथ महाभारत के शान्ति पर्व में इन शब्दो मे व्यक्त किया है ।

"अनादि निधना नित्यावागुत्सृष्टा स्वयभुवा । आदौ वेदमयी दिव्या यत सर्वा प्रवृत्तय ।"

वेद ही मनुष्यो देवो तथा पितरों का शाश्वत चक्षु मार्गदर्शक है ।

'पितृ देव मनुष्याण ाम वेदश्चक्षु सनातनम् ।। मनु० १२ ९४

यही नहीं, मनु जी ने वेदो का पढ़ना ही विद्वान पुरुषो का महान तप बताया है ।

"वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तप परमिहोच्यते ।' मनु०२।१६६

अत वेद का पढना मनुष्य का परम धर्म कहा गया है अन्य सब धर्म गौण इससे नीचे दर्जे के हैं ।

"वेदमेवाभ्यसेनित्य यथा कालमतन्द्रित । त ह्यस्याहु, पर धर्म मुपधर्मोऽन्य उच्यये ।।" मनु० ४।१४७

अत मनु जी का यह भी कहना है कि जो द्विज नित्य प्रति प्रात वेद पढ़ कर अन्य कामो मे समय नहीं गवाता है, वह जीवन काल में ही शुद्ध भाव को प्राप्त होते हैं ।

योऽनधीत्य द्विजो वेदम् अन्यत्र कुरुते श्रमम् ।
स जीवन्नेव शूद्रत्वम् आशु गच्छति सान्वय ।।" मनु०२।१६८

वेद के अध्ययन, तदानुकूल आचरण करने से हमे शान्ति, ऐश्वर्य ही नहीं अपितु सब प्रकार के सातो भगवा को देकर मोक्ष तक प्राप्त कराने वाला है ।

'अय ते स्तोमो अग्रियो हृदिस्पृगस्तु शन्तम ।
अथा सोम सुत पिब ।।" ऋग०१।१९।५

"स्तुतामया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजानाम् । आयु प्राण प्रजा पशु कीर्ति द्रविण ब्रह्म वर्चसम् । मह्यम् दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् अथर्व०१९।७१।१

ऐसी महाकल्याणमयी वेद विद्या को महामानव देव दयानन्द जी महाराज ने मानव जाति के उत्कष उत्थान के लिए नितान्त उपयोगी और अभ्युदय का आधार बताया है । इसी उद्देश्य से महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना करके इसके तीसरे नियम मे वेद का पढना पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।

परन्तु वेद हम को उस सरल रूप में नहीं उपलब्ध है जिन से जनसाधारण लाभ उठा सके । दूसरे जनता अपनी उच्च शिक्षा के अभाव में वेदो के सैकडो सूक्तो और मन्त्रो मे छुपे अथाह वेद ज्ञान के लाभ से वचित रहती है । परन्तु हमारे ऋषियो का एक मत यह भी है कि मण्डलो आदि की बात तो जाने दीजिये, वेद का एक शब्द यदि पूरे तौर पर समझ लिया जाये और तदानूकूल आचरण हो, तो वह हमारे जीवनो को सुन्दर और सफल बनाने की शक्ति रखता है । इस बात को महर्षि पतञ्जलि ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ महाभाष्य मे एक स्थान पर वेदों के सम्बन्ध मे लिखते हुए यू कहा है—

"एक शब्द सम्यग् ज्ञात सुप्रयुक्त स्वर्गलोके काम धुग भवति"

ऐसी पावमानी स्वस्ति दायनी वेद विद्या के प्रचार प्रसार की बड़ी सरल विधि भी परमात्मा ने स्वय बताई कि सज्जन विद्वान लोग वेद ज्ञान का अध्ययन करके इसे मानव कल्याण के लिए ऐसे फैलावे जैसे बादल चहु ओर वर्षा करके गर्मी से पीड़ित लोगो को शान्ति प्रदान करता है ।

'मिमीहि श्लोकमास्य पर्जन्य इव ततन ।
गाय गायत्रमुक्थ्यम् ।" ऋग०१।३८।१४

अत मैं यहा कतिपय वेदमन्त्र अशों को वैदिक सूक्ति के रूप मे देता हूं । पाठकगण इन्हे पढ़े और अर्थों को समझ कर तदानुकूल आचरण करके, अपने जीवनो को सुन्दर और सफल बनावें ।

वैदिक सूक्ति—

स श्रुतेन गमेमहि । अथर्व० १।१।४ वेद के अनुकूल चले । ओ३म् क्रतो स्मर कृत स्मर । यजुर्वेद ४०।१५ ईश्वर को याद कर और अपने किए हुए कर्म को । देवाना सख्यमुपसेदिमा वयम् । ऋग० १।८९।२ हम विद्वानो से मित्रता करें। एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति । ऋग०१।१६४।४ एक ईश्वर को विद्वान् कई नामो से पुकारते हैं । गा मा हिंसी । यजुर्वेद १३।४३ गाय को मत मार । उद्धृत्य वेदमथ कर्माणि कृण्वहे । अथर्व० १९।६८।१ वेद को पढ़ कर तदनतर त्रिविध प्रकार के कर्म करें । य शर्धते नानददाति शृध्याम् । ऋग०२।१२।१० जो पाप कर्म के लिए बढना चाहने वाले को बढने नहीं देना । वय ते इन्द्र विश्वह प्रियास ऋग० २।१२।१५ हे परमऐश्वर्यशाली प्रभु ! हम सब सदा तेरे प्यारे बनें । इद पृश्निरदुहत् । अथर्व० २।१।१ सारा ससार इस प्रभु को प्रकट कर रहा है । मा भ्राता भ्रातरम् द्विक्षत । अथर्व० ३।३०।३ भाई भाई से द्वेष न करे ।

—चमनलाल ए० ए०

एच-६४, अशोक विहार, दिल्ली-५२

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज पालम गाव नई दिल्ली-४५ का १९वा वार्षिकोत्सव १५-४-९२ को समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर श्रीमती लक्ष्मी देवी आर्या ने विशेष देवयज्ञ कराया तथा प० ज्योति प्रसाद एव श्रीमती सुदेश आर्या के मधुर भजन हुए । उत्सव का मुख्य आकर्षण आर्य क्रान्ति सम्मेलन रहा जिसे स्वामी पूर्णानन्द महाराज, श्री श्यामसुन्दर गुप्ता, श्री जगबीर सिंह सोलंकी, श्री हरस्वरूप शर्मा, श्री सुरेन्द्र कुमार वर्मा, एव श्री वीर भान नारंग ने आर्य जनता को सम्बोधित किया । ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया ।

—उदय श्रेष्ठ

मन्त्री, आर्य समाज पालम गांव नई दिल्ली-४५

आदर्श-त्रैतवाद

—राजसिंह भल्ला

पहला अध्याय

ओ३म् की महत्ता

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति । यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पद संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत् ॥ कठो० १/२/१५

कठोपनिषद के ऋषि यमाचार्य उपदेश करते हैं कि हे नचिकेता जिस शब्द को सब वेद परमात्मा की प्राप्ति के लिये साधन बताने के लिये बार बार कहते हैं जिसको प्राप्त करने के लिये वेदो ने हर प्रकार के तप और साधन बताए हैं जिसके जानने की इच्छा के लिये ब्रह्मचर्याश्रम धारण किया जाता है अर्थात् समस्त इन्द्रियो को रोक ब्रह्म अर्थात् वेद के नियमो की पूरी पूरी आज्ञा पालन करने हुए वेदो की शिक्षा पाते हैं, जिससे वह बाधा जिसके कारण अपने मे व्यापक ब्रह्म को भी जान नही सकते दूर हो जाती है । जिस प्रकार दपण से ही आख और अन्जन-सुरमा दिखाई पडता है इसी प्रकार मन रूपी दपण से ही जीवात्मा और परमात्मा का ज्ञान हो सकता है परन्तु अन्धेरी रात में कुछ नही दीखता अत देखने के लिये प्रकाश की आवश्यकता पडती है । इसी प्रकार ब्रह्म ज्ञान के वास्ते जिस प्रकाश की आवश्यकता है वह वेद विद्या है । जिसके यथावत् प्राप्त करने का साधन ब्रह्मचर्य आश्रम है । इसके बिना इस ज्ञान का प्राप्त होना सम्भव नहीं जान पडता । अत जिस पद अर्थात् शब्द के जानने के वास्ते उपरोक्त साधन किये जाते हैं उस साधन को सक्षेप से बताया है वह पद केवल ओ३म् है । इस शब्द मे अकार से व्यापक होने का उकार से प्रकाशक होने का प्रमाण और मकार से बुद्धिमत्ता और प्रकाश-स्वरूप होने का तथा इसके अतिरिक्त अन्य सब कामो का पता ओ३म् से लग जाता है ।

एतद्ध्येवाक्षरं ब्रह्म एतद्ध्येवाक्षरं परम् ।
एतद्ध्येवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत् ॥
कठो० १/२/१६

यमाचार्य उपदेश करते हैं कि ओ३म् अक्षर है, इस का कभी नाश नहीं होता । यह सदा रहता है । यह सब से बडा और नाश रहित है । यही मनुष्य जीवन का नियत माग या सबसे बढ़कर जानने योग्य पदार्थ और ज्ञान की अन्तिम सीमा है । सारे साधन इस ज्ञान के प्राप्त करने के लिये ही किये जाते हैं । जिस प्रकार रसोई की सारी सामग्री का मतलब पेट भरना ही होता है इसी प्रकार सम्पूण साधनो की प्राप्ति केवल ओ३म् के जानने के लिये ही है । और जो व्यक्ति उस अक्षर ओ३म् को जान जाता है उसकी जो कुछ इच्छा होती है वह पूण हो जाती है । ओ३म् के जान लेने के पश्चात् किसी इच्छा का होना कठिन ही नही असम्भव है इसी ओ३म् को आदि जगत से मनुष्य सबसे उत्तम कहते आए है । इस नाम के ज्ञान से हर प्रकार का कष्ट स्वय दूर हो जाता है । सम्पूण सुखो का स्रोत यही नाम है । जो लोग ओ३म् के उपासक है उनको हर्ष शोक भय आदि से कोई सम्बन्ध ही नही, जिस स्थान मे सूर्य का प्रकाश हो वहा किसी प्रकार का अन्धकार हो ही नही सकता । ऐसे ही जिस किसी ने ओ३म् को जान लिया है उसको अज्ञान रह ही नहीं सकता जहा अज्ञान नही वहा दु ख कैसे हो सकता है क्योकि अज्ञान से ही राग द्वेष मे प्रवृत्ति होती है अर्थात् भले बुरे कर्मों के करने से पाप पुण्य होते हैं और पाप पुण्य से जन्म मरण होता है इसी से दु ख होता है । जहा अज्ञान नहीं वहा राग द्वेष हो ही नही सकता । जहा राग द्वेष नही वहा दु ख किसी प्रकार भी उत्पन्न नही होते । अत एक ओंकार के स्वरूप को जान लेने से ही मानव सम्पूण दु खो द्वन्द्वो से मुक्त हो जाता है ।

एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम् ।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्म लोके महीयते ॥
कठो० १/२/१७

ओ३म् की उपासना सवश्रेष्ठ मुक्ति का माग है । ओ३म् का आश्रय परम है । इस परम सहारे को जान कर तथा धारण करके साधक ब्रह्म लोक मे महिमा को पाता है । ओ३म् की उपासना के योग्य बनने के लिये ज्ञान की आवश्यकता है । अविद्या, अज्ञान ओ३म् को जानने के मार्ग में बाधा न डाल पाए इसके लिये निष्काम कर्म की आवश्यकता है । मैला मन उपासना मे लग नहीं सकता उसे शुद्ध करने की आवश्यकता है । और बिना निष्काम कर्म के मन शुद्ध हो नहीं सकता और बिना मन की शुद्धि के ओ३म् की उपासना सम्भव हो नहीं है । अत जितने साधन हैं सब पहले ही होते हैं । ब्रह्म के जानने के लिये वह सब से अन्तिम साधन है । जिसने इस साधन अर्थात् ओ३म् को जान लिया है वह ब्रह्म लोक के सुख अर्थात् ब्रह्म दशन के आनन्द को प्राप्त होता है ।

प्रश्नो० ५-२ ओ३म् जाप से कामना पूर्ति—

तस्मै स होवाच । एतद्वै सत्यकाम । पर चापर च ब्रह्म यदोंकार ।
तस्माद विद्वाने तेनैकतरमन्वेति ।

सत्यकाम द्वारा पूछे जाने पर कि भगवान । जो मनुष्य पर्यन्त ओ३म् का जाप करता है—सिमरन करता है तो वह किस लोक को प्राप्त करता है का पिप्पलाद ऋषि उत्तर देते हैं कि हे सत्यकाम यह जो ओंकार है यहीं पर और अपर ब्रह्म है । इस लिये विद्वान तत्त्वदर्शी भक्त इसी ओंकार के सहारे से पर ऊपर ब्रह्म में से एक को पा लेता है । ऋषि कहते हैं कि जगत मे दो प्रकार की वासना हैं । एक तो मुक्ति की वासना दूसरी सासारिक सुख की कामना, अत जो व्यक्ति ओंकार का नियम पूवक जीवन पर्यन्त ध्यान करता है उसकी जिस प्रकार की इच्छा हो वह पूरी हो जाती है । अर्थात् जो ज्ञानी पुरुष है वह जिस विचार से ब्रह्म की उपासना करता है उसमे सफल होता है । उसको पुनजन्म की आवश्यकता नहीं होती वह इसी जन्म में सब सुखो को प्राप्त कर लेता है ।

प्रश्नो० ५-५—ओंकार जाप से ब्रह्म प्राप्ति ।

य पुनरेतं त्रिमात्रेणोमित्येतेनैवाक्षरेण पर पुरुषमभिध्यायित स तेजसि सूर्ये सम्पन्न । यथा पादोदर स्त्वचाविनिर्मुच्यते एव ह वै सपाप्मना विनिर्मुक्त स सामभिरुन्नीयते ब्रह्मलोकम् स एतस्माज्जीवघनात्परात्पर पुरिशय पुरुषमीक्षते । तदेतो श्लोको भवत ।

ऋषि कहते हैं कि जो साधक इस तीन मात्रा वाले ओ३म् अक्षर से परब्रह्म पुरुष मनसा वाचा भाव तथा चिन्तन करता है तो वह उपासक प्रकाश तथा सूर्य में सप्राप्त होता है । उसका आत्मा, आत्मिक प्रकाश तथा सूय मे मग्न हो जाता है । जैसे साप केंचुली से छूट जाता है निश्चय ऐसे ही वह उपासक पाप से मुक्त हो जाता है । इस अवस्था में वह साम मन्त्रो द्वारा ओ३म् नाम के कीतन से ब्रह्म लोक को लेजाया जाता है तब वह इस जीव लोक मे ऊपर पर से पर अर्थात् परम ब्रह्माण्ड के पति पुरुष को देखता है । ऐसा ध्यानी उपासक परमेश्वर के पर स्वरूप—वाचक से वाच्य को प्राप्त करता है । इस पर श्लोक प्रमाण है । जो वेद ज्ञान से पूण है वह परमात्मा को जान सकता है जो वेद ज्ञान से शून्य है वह परमात्मा को नही जान सकता । जिस का मन मल विक्षेप आव ण से ग्रसित है वह भी परमात्मा के दशन नही कर सकता । परमात्मा ने सूत्र दिया है जिसका नाम वेद है । ज्ञान के द्वारा जब मन के दोष-मल विक्षेप आवरण दूर हो जाते हैं तो मन के दर्पण मे भगवान के दशन होते हैं अन्यथा नही ब्रह्म दशन ओंकार जाप से मन के शुद्ध दपण मे होते हैं ।

प्रश्नो० ५-६ ओ३म् के जाप का फल

तिस्रो मात्रा मृत्युमत्य प्रयुक्ता अन्योन्यसक्ता अनविप्रयुक्ता ।
क्रियासु बाह्याभ्यन्तर मध्यमासु सम्यक प्रयुक्तासु न कम्पतेज्ञ ॥

जो साधक ओ३म् की तीन मात्राओ अर्थात् अकार उकार और मकार को मिला कर ठीक-ठीक उपासना करता है और जिसका कोई कर्म नियम विरुद्ध नही है । जिसकी आन्तरिक और बाह्य क्रिया में अन्तर नही । जो मन वचन कम मे समान रहता है । जैसा मन से सोचता है वैसा ही बोलता है जैसा बोलता है वैसा कर्म भी करता है जिसको पाप के विचार की शका भी नहीं होती ऐसा ओ३म् का जाप करने वाला साधक कभी भय नहीं खाता वह निर्भय हो जाता है । (क्रमश)

स्वास्थ्य सुधा—

उपयोगी घरेलु नुस्खे

नेतराम शर्मा

प्रधान—भारतीय योग सस्थान, पूर्वी जिला दिल्ली

आंखों की बीमारियों के घरेलु इलाज

१—मोतियाबिन्द—प्याज का रस १० ग्राम असली शहद १० ग्राम, भीमसैनी कपूर २ ग्राम इन तीनो चीजो को अच्छी तरह मिला कर शीशी में भर लें रात को सोते समय सलाई से आंखो मे लगाने से मोतियाबिन्द का असर रुक जाता है।

२—नीम की निबोली (फल) का गूदा बारीक पीस कर शहद मिला कर आंखो मे लगाने से मोतियाबिन्द बिना आपरेशन कट जाता है।

३—गाय का ताजा मूत्र प्रतिदिन लगाने से मोतियाबिन्द आदि सभी आंखो के रोग दूर हो जाते हैं।

४—धुन्ध, जाला, रोहे—काला सुरमा (कोरा) ५० ग्राम, प्याज रस ४०० ग्राम कपूर २ ग्राम इन चीजों को साफ सुथरे धुले खरल मे डाल कर लगातार खरल करे। जब सूख जाए तो सुरमा बारीक कपडे मे छान कर शीशी मे भर लें। इसके प्रयोग से धुन्ध, जाला और रोहे दूर हो जाते हैं और नयनो की ज्योति बढती है।

५—दुखती आंखें—२०० ग्राम गुलाब जल मे ५ ग्राम फिटकरी पीस कर शीशी मे रख ड्रोपर से दो तीन बूद आंखों मे डालने से रोग दूर हो जाते हैं।

६—पिसा त्रिफला रात्री मे पानी मे भिगो सुबह छान कर आंखों मे छीटें मारने से भी आखो की ज्योति बढती है जितनी बार मुह धोये उतनी बार ही ठण्डे पानी के छीटे अवश्य आखो पर दे। रोशनी बनी रहेगी।

७—बारहसिंगे के सींग को माता के दूध मे घिस कर लगाने से कई साल पुरानी फूली भी कट जाती है।

८—एक गिलास गाजर के रस मे दो चम्मच असली शहद डाल कर पीने से भी रोशनी बढती है।

९—रात्री मे गाजर कदूकस से कस कर दूध मे उबाल कर शक्कर डाल ओस मे रख दे। प्रात नाश्ते मे रोज लें तो भी आखों मे काफी ज्योति का विकास होगा।

१०—बादाम, मोटी सौंफ और मिश्री बराबर-बराबर लेकर पीस कर एक चम्मच दूध के साथ प्रतिदिन लेने से बच्चों के चश्मे दूर हो जाते हैं। समय तीन माह।

११—महावर का चूर्ण १ चम्मच दूध के साथ लेने से बडों के भी चश्मे छूट जाते हैं समय ३ माह।

१२—सूत्र नेति और जल नेति से भी चश्मे उतर जाते हैं।

परहेज—मैदा, चीनी, धुले चावल सफेद, खीर, उबला आलु, हलुआ, भारी चिकनाई वाले पदार्थ, चाय काफी शराब, गोलियां, टाफियां, चाकलेट, अचार-मुरब्बे, मीट, इलाज के दौरान छोड दीजिये।

सलाद, फलो का सेवन हरी सब्जी गाजर मूली, पनीर बादाम लाभदायक।

आर्य समाज शांताक्रूज बम्बई

निःशुल्क योग चिकित्सा शिविर

दिनांक ७ जून से १६ जून १९९२

प्रतिदिन प्रात ७ से ८-३० बजे तक दिनाक ७ जून से १६ जून १९९२ तक सरल योग क्रियाओ द्वारा मानसिक एव शारीरिक स्वास्थ्य लाभ के लिए स्वय पधारें तथा अपने समस्त पारिवारिक जनो को इसकी सूचना देकर लाभान्वित करें।

इस निःशुल्क योग चिकित्सा शिविर का सचालन श्री ओमप्रकाश जी शर्मा, डायरेक्टर योग सेण्टर, बिड़ला पिलानी इन्स्टीटयूट (राजस्थान) करेंगे।

विनीत

कैप्टिन देवरत्न आर्य — प्रधान

नरेन्द्र अम्बालाल पटेल — महामन्त्री

स्त्री आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की गतिविधियां

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की ओर से कई परिवारो मे सत्सगों का आयोजन किया गया, जोकि बडी धूम धाम से सम्पन्न हुए।

प्रथम मार्च १९९२ को बाद दोपहर श्री हरभगवान पाहवा जी के घर पर सत्सग का आयोजन किया गया। हवन यज्ञ श्रीमति जनकरानी जी आर्या ने सम्पन्न कराया। दूसरा सत्सग १२० सी किचलूनगर में बहिन शुभलता भण्डारी जी के घर पर हुआ। जिसका हवन यज्ञ आर्य समाज के पुरोहित आचार्य श्री राजेश्वर जी शास्त्री ने सम्पन्न कराया। तीसरा सत्सग बहिन कमला जी वैद्य के घर पर हुआ, जिसमे हवन यज्ञ श्रीमती जनकरानी आर्या ने सम्पन्न कराया। चौथा सत्सग श्री किशोरीलाल जी के घर पर सगला शिवाला रोड पर हुआ, जिसका हवन यज्ञ आचार्य राजेश्वर जी शास्त्री ने सम्पन्न कराया। इन सभी सत्सगों में सभी स्त्री समाज की बहिनो का योगदान रहा।

भव्य वेद कथा

आर्य समाज चूना मण्डी, नई दिल्ली में १ से ७ जून तक यज्ञ व वेद कथा का आयोजन किया गया है—

यज्ञ व प्रवचन	प्रात ६ से ७३० तक
भजन व वेद कथा	रात्रि ८ से ९-४० तक

विशेष आचार्य श्याम स्नातक द्वारा उपदेश सभी धर्म प्रेमी सज्जन सादर आमन्त्रित हैं।

प्रधान, प्रियतम दास रसवन्त

(पृष्ठ १ का शेष)

आर्य कन्या गुरुकुल वाराणसी की आचार्या सुश्री पुष्पावती ने कहा कि श्री वर्मा जी ने गुरुकुल की सदैव भरपूर सहायता की। श्री लाजपतराय निष्कावत ने कहा कि श्री वर्मा जी ने अपने बच्चो मे भी आर्य समाज के अच्छे सस्कार डाल कर उनका निर्माण किया था। नरेला गुरुकुल के वैद्य कर्मवीर ने कहा कि श्री वर्मा जी ने निष्ठापूर्वक कार्य करके आर्य समाज के काम को आगे बढाया है। श्री बृजलाल शास्त्री ने कहा कि वर्मा जी के जीवन में आर्यत्व था।

आर्य सन्देश के पूर्व सम्पादक प० नरेन्द्र वाचस्पति ने कहा कि श्री वर्मा जी स्वय बहुत लग्न से काम करते थे और हमें प्रोत्साहित करते थे। अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ के श्री खैरातीलाल जी भाटिया एव श्री रतनलाल सहदेव ने कहा कि श्री वर्मा जी का जीवन यज्ञमय था। दिल्ली आर्यवीर दल के अधिष्ठाता श्री प्रीतमदास रसवन्त ने कहा कि श्री वर्मा जी मे गजब की शक्ति थी।

इस अवसर पर सतभावा स्कूल के प्रधान श्री ओमप्रकाश आहूजा श्री केदारनाथ आर्य, श्री राममूर्ति कैला, श्रद्धानन्द सेवा सघ के श्री हसराज चोपड़ा आदि ने भी श्री वर्मा जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। आर्य समाज सरोजनी नगर व निर्माण विहार, रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल सरोजिनी नगर व हकीकत राय सेवा समिति के मन्त्री व कमठ कार्यकर्त्ता श्री मोहनलाल गुप्त, आर्य समाज नरेला के मन्त्री मास्टर पूर्णसिंह आर्य आदि ने भी अपनी सस्थाओ के शोक प्रस्ताव दिए।

अन्त मे दो मिनट का मौन रख कर परम पिता परमात्मा से दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई।

ऐसे थे श्री वर्मा जी

सन् १९७५ की बात है। मैं श्री सरदारी लाल जी वर्मा से वित्त मन्त्रालय मे भोजनावकाश (लच) के समय आर्य समाज के काम से मिलने गया। मैं यह देख कर बहुत हैरान हुआ कि उनके और साथी तो भोजन का आनन्द ले रहे थे परन्तु वर्मा जी के पास लच समय में आर्य समाज के कई प्रकार के काम के लिए अनेक लोग बैठे थे। सभा व समाज के पत्र शीर्ष व मोहरें उनके पास थीं और वे तेजी से काम कर रहे थे। श्री वर्मा जी ने बताया कि लच समय मैंने इसी काम के लिए नियत किया है। कितनी लग्न थी श्री वर्मा जी में।

सभा मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा

हिन्दी मे हस्ताक्षर न करने पर वेतन नहीं

अनेक व्यक्ति स्वाधीनता प्राप्ति से पूर्व भी सभी कागजो पर अपने हस्ताक्षर हिन्दी मे करते रहे थे। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात यह प्रवृत्ति बढने लगी। केन्द्रीय सरकार के कई मन्त्री जैसे श्री रा० कृ० पाटील तथा श्री महावीर त्यागी सभी सरकारी कागजो पर हिन्दी मे ही हस्ताक्षर करते थे चाहे टिप्पणिया अथवा पत्र अग्रेजी में लिखे हो।

सन् १९६५ के पश्चात केन्द्रीय सरकार के अनेक अधिकारी भी ऐसा करने लगे। हिन्दी भाषी राज्यो मे तो ऐसे आदेश हैं कि कोई सरकारी अधिकारी जो अपने हस्ताक्षर हिन्दी मे न करें अपना वेतन प्राप्त नही कर सकता। ऐसे मामले में किसी सरकारी आदेश की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नही है। यह विचार हमारे हृदय मे स्वतः ही जागृत होना चाहिए कि हम अपनी भाषा को सम्मान दे। उस भावना का परिचय हम सर्वत्र हिन्दी में हस्ताक्षर करने का सकल्प लेकर दे सकते हैं। यदि हम स्वय ऐसा करने लगें तो अपने मित्रो को भी ऐसा करने की प्रेरणा दे सकगे। इसके लिए प्रत्येक नगर एव गाव मे अभियान चलाना उचित होगा। हम कभी भी कोई पत्र लिख रहे हों चैक जारी कर रहे हो कोई फार्म भर रहे हो किसी भी भाषा के किसी करार पर हस्ताक्षर कर रहे हों सभी जगह अपने हस्ताक्षर हिन्दी मे (देवनागरी लिपि मे) करें। हस्ताक्षर करते समय कुछ लोग अपने नाम को सक्षिप्त करके आर०पी० शर्मा जी के० श्रीवास्तव आदि लिखते हैं। इसके स्थान पर राजेन्द्र प्रसाद शर्मा अथवा रा० प्र० शर्मा' 'गोपाल कृष्ण श्रीवास्तव अथवा गो० कृ० श्रीवास्तव आदि लिखना उचित होगा महात्मा गाधी भी मो० क० गांधी लिखते थे न कि एम० के० गांधी।

—हरिबाबू कसल
महामन्त्री हिन्दी व्यवहार सगठन
ई ९/२३ वसन्त विहार नई दिल्ली ५७

प्राकृतिक चिकित्सा व वैदिक साधना शिविर

आदर्श जन संस्थान के तत्वावधान मे २९ मई से ७ जून तक आर्य समाज बिड़ला लाइन्स कमला नगर दिल्ली ७ मे प्राकृतिक चिकित्सा व वैदिक साधना शिविर आयोजित किया जा रहा है।

सम्पर्क सूत्र
आदर्श जन संस्थान ५७८४/६, यू ब्लाक जवाहर नगर दिल्ली ७

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 28-29-5-1992 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/९२

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल-११०२४/९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) ११९/९१

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ
कोई मासिक शुल्क नहीं

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर जिला जालन्धर (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त) मे नये छात्रो का प्रवेश १५ जून ९२ से आरम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलो में पढाये जाने वाले हिन्दी, गणित अग्रेजी, विज्ञान समाज शास्त्र आदि सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धम शिक्षा भी अनिवाय रूप से पढाई जाती है।

निशुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम, योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण सात्विक भोजन, दूध व आवास की बिना किसी मासिक शुल्क के समुचित व्यवस्था, शुद्ध दूध की उपलब्धि के लिए गुरुकुल की अपनी गऊशाला इस गुरुकुल की अपनी विशेषताए।

प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कम से कम कक्षा छ तथा प्राक्शास्त्री (पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ पचवर्षीय पाठ्यक्रम) मे प्रवेश के लिए कम से कम कक्षा १० उत्तीर्ण होना आवश्यक है। शास्त्री श्रेणी में आर्योपदेशक का पाठ्यक्रम अनिवाय है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिलें अथवा पत्राचार करें।

—आचार्य
श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर
जिला—जालन्धर १४४८०१ पजाब

आर्य वीरांगना दल का प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीरागना दल दिल्ली का शिविर ३१ मई से ७ जून तक आय समाज मन्दिर तिलक नगर नई दिल्ली-१८ मे लगेगा। इस शिविर मे उच्चकोटि की शिक्षिकाओ द्वारा आसन, प्राणायाम, लाठी, तलवार, जूडो कराटे आत्मरक्षा आदि का शिक्षण दिया जाएगा। साथ ही साथ यज्ञ, सन्ध्या, चरित्र निर्माण और आर्य समाज के सिद्धांतो का ज्ञान कराया जाएगा।

नियम—(१) १२ वष से २५ वर्ष की युवतिया भाग ले सकेंगी।
(२) शुल्क पैंतीस रुपए मात्र होगा।
(३) खाने के बर्तन व ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लाए।
(४) वेषभूषा, सफेद सलवार, नीला सूट व सफेद जूते।
(५) शिविर स्थल पर ३० मई की शाम तक पहुचें।

सम्पर्क कर—

डा० सुविती आर्या	विभा आर्या	शामदेवी आर्या	उज्ज्वला वर्मा
(५५००९७२)	३०१९११५	२/३३६ सुभाषनगर	५५९४३६५
	५०२४६०		सयोजक

—शिवकुमार शास्त्री

श्री विशम्भर नाथ भाटिया प्रधान निर्वाचित

२६ अप्रैल, १९९२ को सम्पन्न हुए क्षेत्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा, शाहदरा क्षेत्र के निर्वाचन में श्री विश्म्भर नाथ भाटिया प्रधान सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए। अन्तरग गठन का उन्हे अधिकार दिया गया।

सेवा में—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ प्र)

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाऊस दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी०(एल११०२४/१-०९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५, अंक २८ | रविवार, ७ जून १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

व्यक्तिगत मठ, ट्रस्ट, आश्रमों का सभाओं से सम्बद्धीकरण आवश्यक है

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की १५ मार्च, ९२ को हुई अन्तरंग सभा की बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि आर्य समाज अथवा महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम पर जो व्यक्तिगत ट्रस्ट, मठ अथवा आश्रम इस समय देश के विभिन्न भागों में चल रहे हैं, वे सभी सम्बन्धित आर्य प्रतिनिधि सभा या सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध होने चाहिए ताकि उस संस्था के अवसान के समय उसकी सम्पत्ति का हस्तांतरण प्रतिनिधि सभा या सार्वदेशिक सभा को हो सके।

आगे यह भी निर्णय लिया गया कि सभा प्रान्तीय सभाओं के प्रधानों को लिखा जाय कि वे इस प्रकार के मठों संस्थाओं आदि के अधिकारियों से सम्पर्क करें और निर्णय से अवगत करायें। यदि कोई निर्णय को न माने तो आर्य जनता व धनी मानी लोगों से अपील की जाये कि वे इन संस्थाओं को दान न दें। उल्लेखनीय है कि यह प्रस्ताव सभा के उप मन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने रखा था।

स्कूली बच्चों को भोजन में अण्डा न दिया जाए

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने केन्द्रीय कृषि मन्त्री श्री बलराम जाखड़ को १८ मई को एक पत्र लिख कर इस बात पर कड़ा विरोध प्रकट किया है कि राज्य सरकारों को स्कूलों के बच्चों को दोपहर के भोजन में अण्डा देने का सुझाव दिया गया है। यह सुझाव कृषि मन्त्रालय ने ग्रामीण क्षेत्रों में मुर्गी पालन को बढ़ावा देने के लिए दिया है। स्वामी जी ने यह पत्र पंजाब केसरी में १६ मई, ९२ को प्रकाशित एक समाचार के सन्दर्भ में लिखा है।

स्वामी जी ने लिखा है कि मेरे पास अनेक लोगों के पत्र व फोन आ रहे हैं जिनमें पूछा गया है कि श्री जाखड़ आर्य संस्कृति के परम संरक्षक हैं फिर उनके मन्त्रालय से ऐसा सुझाव क्यों दिया गया है?

स्वामी आनन्द बोध ने पत्र में आगे लिखा है कि स्कूली बच्चों को दोपहर के भोजन में अण्डे के स्थान पर दूध, दही व फल देने की व्यवस्था कराई जाये। भोजन में अण्डा देने से राष्ट्रीय चरित्र का पतन होगा।

श्री मनचन्दा कर्त्तव्य की वेदी पर शहीद हुए

नई दिल्ली १ जून। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने एक प्रेस विज्ञप्ति में पटियाला आकाशवाणी केन्द्र के कार्यवाहक निदेशक व स्टेशन अभियन्ता श्री मोहन लाल मनचन्दा की आतंकवादियों द्वारा जघन्य हत्या पर गहरा दुःख व्यक्त किया है। उन्होंने शोक संतप्त परिवार के प्रति भी संवेदना व्यक्त की।

श्री सूर्यदेव ने कहा कि कर्त्तव्य की वेदी पर शहीद हुए देश भक्त श्री मनचन्दा के परिवार को भरपूर सहायता दी जाये और सरकार से मांग की कि आकाशवाणी व दूरदर्शन के कर्त्तव्यनिष्ठ कर्मचारियों की पूर्ण सुरक्षा की व्यवस्था की जाये ताकि ऐसी घटनाओं की भविष्य में पुनरावृत्ति न हो।

नौलखा महल आर्य समाज को सौंपा जाएगा

राजस्थान के मुख्य मन्त्री श्री भैरोंसिंह शेखावत ने कहा कि उदयपुर में स्थित नौलखा महल, जहां महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की थी, उसे आर्य समाज को सौंप दिया जाएगा। श्री शेखावत आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा चरखी दादरी रोहतक में १६ मई को आयोजित पं० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे।

श्री शेखावत ने कहा कि यदि ऋषि दयानन्द दस वर्ष और जीवित रहते तो छुआछूत व महिलाओं पर अत्याचार के विरुद्ध कानून बनाने की आज जरूरत न रहती। उन्होंने कहा कि दयानन्द एक अभूतपूर्व क्रान्तिकारी थे।

नशा बन्दी लागू

श्री शेखावत ने राजस्थान की धरती पर गुरुकुल खोले जाने की जरूरत पर बल दिया ताकि युवा पीढ़ी को उत्तम संस्कार दिए जा सकें। उन्होंने यह भी बताया कि राजस्थान में पूर्ण नशा बन्दी लागू की जा चुकी है।

दयानन्द का भव्य स्मारक बनाया जाए

इस अवसर पर श्री हनुमानप्रसाद चौधरी ने कहा कि अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के रचना स्थल को ऐसा स्वरूप प्रदान किया जाये कि देश विदेश के लोग वहां से प्रेरणा लेकर जायें और स्वदेशी का संदेश घर घर पहुंचायें। श्री हनुमानप्रसाद ने इस स्मारक स्थल के लिए दस लाख रुपये दान की घोषणा की।

संस्कृत ग्रन्थों का लोकार्पण

दिल्ली प्रशासन के आयुक्त एवं सचिव (भाषा/शिक्षा) श्री एस० पी० अग्रवाल ने संस्कृत अकादमी द्वारा २६ मई को पुराने सचिवालय में आयोजित एक समारोह में संस्कृत के चार ग्रन्थों का लोकार्पण किया।

इन ग्रन्थों में डा० कुबेर लाल जैन व्यास शिष्य द्वारा लिखित 'वेद की यज्ञ विद्या' श्री धर्मवीर शास्त्री द्वारा लिखित 'महर्षि माल्यार्पण' श्री मधुर शास्त्री द्वारा लिखित 'बालक बिशाती' तथा श्रीराम प्रसाद ठाकुर द्वारा लिखित 'गीत मंजरी' है।

इस अवसर पर अकादमी के कैसेटों के दो सेटों का भी लोकार्पण किया गया। मंच संचालन अकादमी के सचिव श्री कृष्ण सेमवाल ने किया तथा समारोह की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत के अध्यक्ष डा० पुष्पेन्द्र कुमार शर्मा ने की।

प्रो० सम्पादक—सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

आनन्द मय कोष में उपस्थान (१२)

—देव नारायण भारद्वाज

कितना ही आकर्षक विशाल सबल शरीर क्यो न हो बुद्धि मे विकार हो जाने पर सब व्यर्थ हो जाता है वही व्यक्ति पागल होकर नालियो मे लेटता फिरता है वही व्यक्ति वस्त्रहीन होकर कूड़ करकट को अपने शरीर पर लपेट कर घूमता फिरता है और नंग बड़े परमेश्वर से की लोकोक्ति चरितार्थ करने लगता है। गायत्री मन्त्र की यही साधना है कि हम अपनी बुद्धि को सुबुद्धि बनाये रक्खे। यह तभी सम्भव होगा जब हम उस जनक प्रभु को वरण करेगे—वरण कैसे करेगे—उसके गुणो का शुद्ध रूप मे ध्यान करके। इसी ध्यान से बुद्धि भी श्रेष्ठ बन जायेगी। श्रेष्ठ बुद्धि श्रेष्ठ विचारों की जननी होकर हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर देगी।

विचार कोई साधारण वस्तु नही है—यह अक्रूर से भी सूक्ष्म होते हुए हमारे कल्याण अकल्याण का कारण बन जाता है इसे हमने ही उत्पन्न किया है तो भी यह हम पर दया करने वाला नही है—सुविचार बन कर विकास मे एव कुविचार बन कर विनाश मे यही सहायक बन जाता है। पूत सपूत —पूत कपूत की भांति ही इसका व्यवहार होता है। रामायण काल महाभारत काल के युद्ध नागासाकी हिरोशिमा पर एटम बम गिरा कर पलक झपकते लाखो प्राणियो को क्रूरता पूर्वक मृत्यु के मुह मे झोंक देना किसी विचार का ही परिणाम था। आज भी विश्व मे देश मे प्रदेश मे जनपद मे समाज मे हमारे घर मे इन विचारो का ही नृत्य होता रहता है। हमारे आहार विहार आचार एव व्यवहार का आधार यह विचार ही है।

विचार शुद्ध शुभ और कल्याणकारी हो इसके लिए विवेक के वरदान का सम्मान करना पड़ेगा क्योंकि विवेक ही यह निर्णय करता है कि यह विचार ग्राह्य है या त्याज्य। विवेक हमे अशुभ विचार से ही नही हठधर्मी से भी बचाता है। विवेक ही मन और उसके सकल्प विकल्पो पर नियन्त्रण करता है। कुछ लोग कह उठते हैं कि वे सदाचरण कैसे करें मन तो मानता ही नही। वे यदि इस बिन्दु पर ध्यान दे कि किसी सामान्य सुन्दरी परस्त्री को देख कर मोहित होने वाला मन अपनी अति सुन्दर व हित को देख कर इस लिए लालायित नही होती क्योंकि विवेक यहा पर अनुशासन करता है। विवेक के नियन्त्रण मे रहने वाला विचार कभी कुविचार नही हो सकता किन्तु विवेकहीन होकर किया गया विचार कभी सुविचार नहीं हो सकता। महर्षि जी ने इसीलिए तो रात्री शयन कालीन प्रार्थना मे यजुर्वेद के जिन मन्त्रो का प्रावधान किया है उनमे हर बार तन्मे मन शिव सकल्प मस्तु वह मेरा मन शिव सकल्पो वाला हो का उपदेश सन्निहित है।

यह गायत्री मन्त्र हमारे लिए बुद्धि का अनुष्ठान साथ लेकर आता है। बुद्धि मात्र वह है जो हमे किसी वस्तु का वास्तविक बोध करा दे इसी के सुन्दर स्तर को सुबुद्धि या मनीषा कहते हैं बुद्धि का एक रूप मेधा (मे+धा) मुझ को धारण करने वाला है इसी का सुन्दर स्तर सुमेधा या विवेक है। बुद्धि का एक रूप है प्रतिभा (प्रति+भा) भा प्रकाश प्रति और प्रकाश की ओर ले चलने वाली बुद्धि ही प्रतिभा है जिससे धारण कर्त्ता में विशेष चमक व दीप्ति आ जाये। सूर्योदय पर प्रकाश तो सर्वत्र फैल जाता है जहां एक ओर यज्ञशालाए वेदोच्चार करने लगता है वहा दूसरी ओर मधुशालाए भी गुञ्जार करने लगती हैं। इनमे से कल्याण मार्ग का चयन कर लेना ही प्रज्ञा बुद्धि का कार्य है—प्रकृष्ट ज्ञान की बुद्धि। सब शाश्वत स्थाई मुक्त प्रद ज्ञान—ऋत् को जीवन मे भर देने वाली बुद्धि ऋतम्भरा है जो हमारे सद् विचार के प्रेरक विवेक की जननी है। सूर्य की सात किरणो की भांति बुद्धि की ये सात किरण भी हमारे जीवन का यथोचित मार्गदर्शन करती हैं और यहा मरणोपरान्त हमे मुक्तिरत्न भी प्रदान कर देती है। गायत्री मन्त्र का सार यही है कि हम प्रभु के मुख्य नाम ओ३म् के द्वारा उसे स्मरण करते है—उसको प्राण प्रिय प्राण रक्षक कष्ट निवारक एव सुख प्रदायक समझ कर उसके सविता—सृष्टि सृजक स्वरूप को वरण करते है। उसके शुद्ध स्वरूप पर ध्यान केन्द्रित करते है और उससे प्रार्थना करते है कि वह हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे। यही सद्बुद्धि की प्रेरणा हमारे समग्र उद्धार का आधार है।

समर्पण और नमन—

आचमन मन्त्र के द्वारा हमने सन्ध्या का लक्ष्य निर्धारित किया था—धर्म अर्थ काम मोक्ष की उपलब्धि। इस उपलब्धि मे भौतिक जगत के माध्यम से ही आध्यात्मिक जगत की उपलब्धि सम्मिलित है। प्रेय को पकड़ कर—उसे छोड़ कर श्रेय पर चढ़ना सम्भव है। छत के ऊपर सूरज के दर्शन के लिए हम जाना चाहते हैं—सोपान को पकड़ कर चढ़ते चले जाते हैं—पर सोपान के स्तरो को छोड़ते भी जाते हैं—तभी ऊपर चढ़ पाते है। वैसे ही ससार को पकड़ना आवश्यक है तो उसे क्रमश छोड़ना भी अनिवार्य है तभी रवि दर्शन सम्भव है। सुदृढ इह लोक से सुदृढ़ परलोक मिलता है। जीवात्मा जो मुक्त होना चाहता है—उसके एक ओर प्रकृति का दिया शरीर है दूसरी ओर मुक्ति आनन्द प्रदाता परमात्मा है। परमात्मा की जीव को अपेक्षा है जो प्रकृति की उपेक्षा नही—समीक्षा से ही पूर्ण होगी। सन्ध्या के समस्त सोपान हम इसी ऊंचाई पर पहुचाने के लिए है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मन्त्रदृष्टा होकर हमे इसी लिए यह उत्तम वाक्य प्रदान किया है—

हे ईश्वर दयानिधे। भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थ काम मोक्षाणां सद्य सिद्धिर्भवेन्न।

अर्थ—हे परमेश्वर! दयानिधे! आपकी कृपा से जपोपासना आदि कर्मों को करके हम धर्म अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें। (सस्कार विधि)।

भावार्थ—हे ईश्वर दयानिधे! आपकी कृपा से जो जो उत्तम काम हम लोग करते हैं वे सब आपके अर्पण है। जिससे हम लोग आप को प्राप्त होके धर्म जो सत्य न्याय का आचरण करना है अर्थ—जो धर्म से पदार्थों की प्राप्ति करना है काम—जो धर्म और अर्थ से इष्ट भोगो का सेवन करना है और मोक्ष जो सब दुखों से छूट कर सदा आनन्द मे रहना है इन चार पदार्थों की सिद्धि हम को शीघ्र प्राप्त हो। (पञ्च महायज्ञ विधि।

समर्पण मे निष्काम कर्म की भावना सन्निहित है। समर्पण कब सम्भव है जब हम जिसे कुछ देना चाहते है—वह उसे स्वीकार कर ले वस्तु भी अपनी हो अन्य किसी की नही। एक प्रस्तर प्रतिमा के मुख पर रखने के उद्देश्य से रक्खी गई मिठाई मुख पर ही बिखरी रह जाती है वह अर्पण नही हो पाती है। अर्पण कब होती है जब प्रसाद रूप मे जनता जनार्दन मे वितरित कर दी जाती है वे उसे खा कर स्वादलब्ध हो जाते है। हमारे पास हमारा क्या है? सभी कुछ प्रभु का है—पर हम उसे अपना मान कर घमण्ड कर बैठते हैं—ऐंठने लगते है—प्यादे से फर्जी भयो टेढो टेढो जाये की लोकोक्ति के अनुसार आपे से बाहर निकल पड़ते है। अपनी उपलब्धि को अपनी न मान कर यथोचित ढग से जन कल्याण या प्राणि मात्र को वितरित कर देना ही समर्पण है। यह कार्य तो हमने उसी समय प्रारम्भ कर दिया था जब सन्ध्या का पहला मन्त्र शन्नो देवी का भाव मन मे भर लिया था। धर्म अर्थ काम मोक्ष की उपलब्धि बिना समर्पण के सम्भव ही कहा थी।

भारी भरकम एक व्यक्ति देखने में आया उसके पास भारी भरकम धन की गठरी भी था। चलने के लिए कार थी कार मे बैठाने के लिए सेवक थे कार से उतार कर गद्दे पर लाने के लिए सेवक थे देखने के लिए चश्मा था सुनने के लिए कान पर लगाने वाला यन्त्र था—यहा तक कि शौचालय में बैठाने उठाने एव शौच जल सेचन के लिए भी सेवक की सहायता उपलब्ध थी क्योंकि उसके हाथ तो मोटापे के कारण मल द्वार तक पहुच ही नहीं पाते थे। कितना सम्पन्न था—वह व्यक्ति? क्या साधारण श्रमिक से भी अधिक दीन नहीं था वह—काश उसकी कार छूट जाती उसका चश्मा छूट जाता उसका श्रवण यन्त्र छूट जाता उसके ये सेवक छूट जाते—जिनके बिना न वह खा सकता है—न पहन सकता है और न शौच ही कर सकता है तो वह वास्तव मे कितना सुखी हो जाता। इसी प्रकार ससार की सभी भौतिक आवश्यकताओं को शनै शनै समाप्त करते हुए उसी प्रभु के ध्यान मे मग्न हो जाना तो समर्पण है। इसका यह कदापि अर्थ नही कि कार बेकार है मन्त्र उपकरण—सेवक सुविधा अस्वीकार है। (क्रमश)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

युवा शक्ति राष्ट्र शक्ति

सम्पादकीय

भारत वर्ष मे पिछले एक दशक से भी अधिक समय मे राजनैतिक अस्थिरता उखाड पछाड, मारामारी और कुठा और निराशा का वातावरण बना हुआ है। यह स्वाभाविक ही है कि इसका प्रभाव हमारी युवा शक्ति पर भी पडा है। युवा शक्ति वास्तव मे राष्ट्र की शक्ति है। उनको यदि सही मार्ग दिखाया जाए तो वे राष्ट्र के कल्याण के लिए तथा उसकी उन्नति के लिए अनेक स्रोत खोज सकते हैं। तथा देश को सम्पन्नता एव समृद्धि के मार्ग पर अग्रसर कर सकते हैं। परन्तु यदि उन्हे सही मार्ग न दिखाया जाए तो वे ही युवा समर्थ्यवान होते हुए भी पराजित मनोवृत्ति के शिकार होकर गलत रास्ते पर चल पडते है। आज जो देश मे अलगाववाद, आतकवाद एव दगा-फसाद हो रहा है, उसमे मस्तिष्क चाहे जिसका हो परन्तु हाथ और पैर युवा और किशोर आयु के बालको के ही हैं। विश्वविद्यालयो मे अनेक स्थानों पर तोड-फोड तथा नेतृत्व बदलने की मागें उठती हैं। बहनो का अपमान होता है। यह सब इस दिग्भ्रमित युवा शक्ति को सही मार्ग न दिए जाने का ही परिणाम है। यदि सामाजिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक और कलात्मक स्तर पर निर्णय लेते समय युवाजनो को विश्वास मे ले लिया जाये तो निश्चय ही वे उच्छृखल घटनाओं से दूर रहकर इन राष्ट्रोन्नति के कार्यो मे सहायक हो सकेंगे।

युवा शक्ति के सायास एव सचेत प्रयास के पश्चात ही हम सुख शान्ति एव समृद्धि के राजपथ पर आगे बढ सकते हैं। देश के सामने अनेक आयाम है। युवा शक्ति इन सारे कार्यों मे मानवमूल्यो की सही पहचान से तथा सच्ची धार्मिक जागृति मे सहयोगी हो सकती है। कई बार स्कूलो, कालेजो मे धार्मिक शिक्षा तथा नैतिक शिक्षा की ओर ध्यान ही नही दिया जाता। कम और ईश्वर की तो बात ही नहीं कही जाती और इसका परिणाम होता है हडतालें, तोडफोड तथा व्यवस्थाओं का विरोध। आवश्यकता इस बात की है कि युवा शक्ति का सही मार्गदर्शन किया जाये। यदि यह बात कही जाये कि युवा वर्ग दोषी है तो शायद हम उनके साथ न्याय नही कर रहे हैं। उनमे जोश और ऊर्जा होती है। इस जोश और ऊर्जा का सदुपयोग भी किया जा सकता है और दुरुपयोग भी। हमारे राजनेता, अध्यापक, धर्माधिकारी अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए विघटित कराने मे उनकी शक्ति का दुरुपयोग करते हैं। धर्मान्धता उनकी भावनाओ को ईधन देती है और वह बिना सोचे समझे स्वार्थी धर्माधिकारियो के आदेश पर कुछ भी करने को तैयार हो जाते है।

हम कहते तो है, सब समान हैं, सब भाई भाई हैं, हमे सबका कल्याण करना है हमे विश्व का कल्याण करना है, हम सभी को समान सुविधायें देंगे, पर यह सब भाषाणो तक ही सीमित रहता है। हमारे अगुआ केवल भाषण देते हैं। वे न तो कोई रचनात्मक काम स्वय करते हैं और न ही इस युवा पीढी को ऐसा कार्य करने की प्रेरणा देते हैं स्वतन्त्र भारत की कल्पना पीछे छूट गयी है, राष्ट्रहित पीछे छूट गया है, स्वहित और राजनैतिक समीकरण आगे आ गये है, मत, मजहब, सम्प्रदाय, क्षेत्रीयता, जातीयता और भाषीय विवाद उभर कर ऊपर आ रहे हैं।

युवा शक्ति शान्ति, स्वतन्त्रता और समानता के लिए बहुत बडा काम कर सकती है। युवा शक्ति देश की आर्थिक असुरक्षा को समाप्त करने में अपनी कर्मण्यता और स्वरोजगार की भावना के आधार पर महत्वपूर्ण काय कर सकती है। युवा शक्ति का योगदान विकलागो और वृद्धो की सेवा में लिया जा सकता है। अनेक वृद्ध भी सामाजिक निर्माण की भूमिका मे उपयोगी हो सकते हैं। हमें इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

सम्पादक के नाम पत्र

दिनाक २० मई १९९२

प्रिय सूर्यदेव जी,

आर्य जगत् के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री सरदारी लाल वर्मा के आकस्मिक निधन का समाचार जान कर अतीव कष्ट हुआ। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करे। दुख की इस वेला मे उनके प्रति मैं अपनी हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करता हू।

आपका,
लालकृष्ण आडवाणी
विपक्ष के नेता लोक सभा

मान्यवर सम्पादक जी सादर नमस्ते

आर्य सन्देश व विशेषाक मिले, धन्यवाद। विशेषाको मे बडे दिलचस्प व उपयोगी लेख हैं। परिवार के अन्य सदस्य व मैं बार-बार पढता हू। अक सम्भाल कर रखे हैं। ये हृदय पटल पर अच्छी छाप छोडते हैं और प्रेरणा मिलती है कि हमारा जीवन भी आर्य महापुरुषो की तरह हो। साप्ताहिक अक के पेज बढायें, इसके खर्चे के लिए मैं अपनी सेवायें दे सकता हू।

तुलसीराम आर्य
२३/७ तिलक नगर, दिल्ली

युवा शक्ति राष्ट्र के निर्माण के साथ साथ मानवता के निर्माण मे भी बहुत उपयोगी हो सकती है। आर्य समाज ने सदैव ही इस दिशा मे गम्भीरता पूर्वक विचार किया है। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सार्वदेशिक आर्य वीर दल का विशाल राष्ट्रीय शिविर देश की राजधानी दिल्ली मे देश के जाने माने व्यायामाचार्य एव सार्वदेशिक आर्य वीर दल के सचालक डा० देवव्रत आचार्य के निर्देशन मे आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर मे वास्तव में ऐसे मनुष्यों का निर्माण किया जायेगा जो देश, जाति और धर्म के लिए समर्पित हो। नवयुवकों मे आसन, प्राणायाम, कराटे, आत्मरक्षण, सध्या, यज्ञ, सत्सग, बौद्धिकज्ञान चर्चा, सयम तथा देशभक्ति के प्रवचनो द्वारा सेवाभावना की प्रेरणा दी जायेगी।

युवा शक्ति से तात्पर्य केवल युवको से ही नही है। हमारी बेटियां और बहनें भी युवको की भांति ही राष्ट्र निर्माण में अपना सहयोग सदा से देती आयी हैं। इन वीरागनाओ के विकास के लिए भी आर्य वीरागना दल का एक शिविर आर्य समाज मन्दिर तिलक नगर, नई दिल्ली-१८ मे ३१ मई से ७ जून १९९२ तक लगाया जा रहा है। इस शिविर के माध्यम से युवती बहनों को अपने कर्तव्य का बोध कराने, राष्ट्रीय चेतना जागृत कराने, अनुशासित जीवन तथा आत्मरक्षण के लिए सशस्त्र प्रशिक्षण दिया जायेगा। इनमे शारीरिक क्षमता के साथ-साथ चारित्रिक बल, बौद्धिक विकास तथा आर्य सस्कृति की भावना को भी जागृत किया जायेगा।

इस प्रकार के शिविर प्रतिवर्ष लगते हैं। परन्तु ७ जून १९९२ से २१ जून १९९२ तक महाशय चुन्नीलाल सरस्वती बाल मन्दिर, हरि नगर, नई दिल्ली ६४ मे लगाया जाने वाला शिविर अभूतपूर्व शिविर होगा। इस महान काय को सुचारु रूप से सम्पन्न करने के लिए सभी भाई बहनो से विनम्र निवेदन है कि वे तन, मन, धन से सहयोग करें तथा क्रास चैक ड्राफ्ट, एव नकद धनराशि 'आर्य वीर दल' के नाम से सभा कार्यालय में भिजवायें। जो दानी सज्जन आटा, दाल, चावल और देशी घी के टीन देना चाहें, वह आर्यसमाज दीवान हाल, आर्यसमाज बिरला लाईन्स, आर्यसमाज हनुमान रोड, आर्यसमाज तिलक नगर मे यथाशीघ्र भिजवाने की कृपा करे।

अतीत स्वय उत्तर है, उस पर सवाल नही होते।
मिट्टी की कोख मे डूबे बिना गुलाब नही होते।
चिरागों की तरह जवानी को जलाना होता है।
मुट्ठियाँ बाध लेने भर से तो इन्कलाब नही होते।

—डा० धर्मपाल

क्रांतिकारी नेता, वन्देमातरम् रामचन्द्रराव

मैंने एक आर्य समाजी परिवार मे जन्म लिया। आर्यसमाज के स्वस्थ राष्ट्रीय एवं क्रान्तिकारी वातावरण मे ही मेरा पालन पोषण हुआ। जब मैं बच्चा ही था तो हैदराबाद के प्रचण्ड सत्याग्रह से देश को अनुप्राणित होते देखा। आर्य समाजी परिवार मे जन्म लेने के कारण तथा हैदराबाद राज्य मे ही रहते हुए मैं हैदराबाद के पीड़ित पद दलित पदाक्रान्त परन्तु साहसी आर्यों से जुड़ गया।

हैदराबाद का नाम सुनते ही ऐसा अनुभव होता था कि आर्यों के रक्त से रंगीन भूमि मेरे पूज्यो की साधना स्थली है। महात्मा नारायण स्वामी जी, लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, दक्षिण केसरी वीर विनायकराव जी, भाई बंसीलाल जी, भाई श्यामलाल जी, बंसीलाल व्यास जो हैदराबाद के लौहपुरुष युवक हृदय सम्राट प० नरेन्द्र जी, प्रकाशवीर शास्त्री जी आदि मेरे सामने खड़े होते है। हैदराबाद के रक्त रंजित इतिहास में रुचि बढ़ी तो जिन शूरवीरो के अतुलनीय से मै सर्वाधिक प्रभावित हुआ इनमे से एक है साहस के अंगारे श्री रामचन्द्रराव जी 'वन्देमातरम्'।

श्री रामचन्द्र राव जी की माता श्रीमती रामलक्ष्माम्बा और पिता रामाराव थे। उनके ज्येष्ठ भ्राता श्री वी वीरभद्रराव जी थे। ये बचपन से ही अपने माता पिता के धार्मिक भावो से प्रभावित थे। इससे नित्य प्रति प्रातः उठते ही अपने माता पिता के चरणो का मस्तक झुकाने के आदी हो गए थे। जब सन १९२४ मे एक दिन रोज की भांति पिता के चरणो मे रामचन्द्रराव जी मस्तक झुकाने गये तब उनके पिता चिंतित दिखाई दिये तो रामचन्द्रराव ने कारण पूछा तो पिता ने उत्तर मे महान क्रान्तिकारी श्री अल्लूरी सीताराम राजू जी की अंग्रेजी शासन के अधिकारियो ने निर्दयता से हत्या का समाचार बताते हुए उस क्रान्तिकारी वीरश्रेष्ठ का सारा वृत्तांत बता दिया। इस समाचार से बालक रामचन्द्र राव पर अमिट छाप पड़ी। उस समय ग्यारह वर्ष के रामचन्द्रराव गद्वाल के माध्यमिक विद्यालय मे पढ रहे थे। तब से वे क्रांतिकारियों की ओर प्रभावित हुए थे। स्वयं अचल, बुद्धिवादी, साहसी, दृढ़ निश्चयी, देशभक्त व्यक्तित्व के निर्माण मे लगे थे। इनमे त्यागभाव, तप साहस जैसे सद्गुण आदि अपने माता पिता के प्रबोधों से प्राप्त किये।

इस प्रकार रामचन्द्र राव जी साहसी, बहादुर, सहनशील, अद्वितीय राष्ट्रीय नेता, प्रताप का प्रताप, शिव की शान, राम का आदर्श, कृष्ण की नीति, चाणक्य की चतुराई, दयानन्द की दया, श्रद्धानन्द की श्रद्धा, परम सात्विक देश भक्ति के कारणों से सर्वदा जाति के उद्धार के लिए अपने साथी और कार्यकर्ताओ को तैयार कर संगठन मे लगे थे। वे गठिला, सुन्दर, सुडौल शरीर, रग रग मे देशभक्ति का, स्वाभिमान, प्रफुल्लवदन, विशाल नेत्र, प्रशस्त वक्षस्थल, त्यागमय जीवन, सहनशीलता वनराजसिंह की भांति वीर आक्रमणकारी, निडर और शत्रुओ को एक ही दहाड़ मे परास्त करने वाले व्यक्तित्व के साथ साथ आर्य समाज की ओर प्रभावित हुए। सन १९३८ में जब आर्य समाज की ओर से निजाम के विरुद्ध जन आन्दोलन का रूप लिया गया और सत्याग्रह की शुरूआत हो गई तो रामचन्द्रराव जी को भी पकड़ कर अन्य सत्याग्रहियो के साथ चंचलगूड़ा जेल भेज दिया गया। तब वहां जेल के प्रांगण मे जाते ही सभी अन्य सत्याग्रहियों के साथ रामचन्द्रराव को भी जनेऊ उतार देने के लिए कहा गया। पर उन्होने जनेऊ उतार देने से इन्कार कर दिया। जेलर साहब ने कानून का हवाला देकर जनेऊ उतरवा लिए। इस प्रकार जनेऊ उतारने के कारण उन्होने बिना जनेऊ के भोजन न करने का अपना दृढ निश्चय बतलाया। 'यहां यह मामला धार्मिक है।' अन्त मे जनेऊ लाकर दिया गया पर रामचन्द्रराव ने कहा निकाला गया जनेऊ बिना हवन के पहना नही जाता। तो डिप्टी जेलर चकरा कर कहने लगा कि 'हवन होगा, पुरोहित आयेगा और आप जनेऊ पहनेंगे। आखिर सुगन्धित सामग्री जला कर मन्त्रोचारण के साथ जनेऊ पहनाया गया तब भोजनादि स्वीकार किया गया।

इन्ही दिनो मे जेल में सत्याग्रही हर दिन "वन्देमातरम" नामक राष्ट्रीय गान गाना शुरू किए, यह सुन कर सुप्रिटेण्डेण्ट जेल तिलमिला उठा। तब घोषणा की गई कि जेल मे 'वन्देमातरम" नही गाया जाना चाहिए। रामचन्द्र राव तथा अन्य कुछ युवको ने आदेश का पालन करने से इनकार कर दिया। स्वाधीनता के पुजारी तथा वीरता के प्रतीक वीर रामचन्द्रराव ने उस अवस्था मे उक्त राष्ट्रीय गीत को सार्वजनिक रूप मे गाकर निजाम के आदेश की अवहेलना की। जिसके परिणाम स्वरूप इस उत्साही युवक को (२४) कोड़ो की सजा का कठोर दण्ड दिया गया। जब फरवरी १९३९ में इस वीर वर को यह सजा दी जा रही थी तब प्रत्येक कोड़े की चोट शरीर पर पड़ते ही इनके मुख से 'वन्देमातरम' की ध्वनि निकलती थी। जब बेहोश होने के पश्चात कुछ होश आया तो भी इनके मुख से यही शब्द निकले थे कि "मैं शरीर नहीं आत्मा हूं।' इस गीत के गाने के अपराध मे उन्हे १४ कोड़ो का दण्ड दिया गया। इस प्रकार बेंत लगने से उनके शरीर से रक्त बह रहा था गहरे घाव हो गये थे। शरीर से मांस कट कटकर शायद छड़ियो के साथ अलग हो गया था। देश भक्ति के इस प्रचार से 'शासक एवं शासन दोनो तिल मिला उठे।" निजामशाही पुलिस के कोड़े निर्दयता के साथ जब इस युवक को कुन्दन सी पीठ पर बरसने लगे तो हर कोड़े पर "वन्देमातरम' की गूंज सुनाई दे रही थी। रामचन्द्र राव ने जिस साहस एवं वीरता का उदाहरण दिया उसको देखकर अंग्रेज आई जी पी भी चकित रह गया। वीर दामोदर सावरकर जी ने तो आप वीर रामचन्द्रराव को 'वन्देमातरम्" के नाम से विभूषित किया। तभी से आप वन्देमातरम् रामचन्द्र राव के नाम से प्रख्यात हो गये।

श्री रामचन्द्र राव जी के सुगुप्त क्रान्तिकारी जीवन का एक और महत्वपूर्ण उदाहरण हमारे सामने आता है १५ अगस्त १९४७ के पश्चात जब स्वतन्त्र भारत की सरकार ने अपना जनरल एजेंट बनाकर श्री के एम मुंशी जी को हैदराबाद भेजा तब वहां के प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता दक्षिण केसरी वीर विनायक राव जी विद्यालंकार बरटना से सम्पर्क स्थापित कर विश्वस्त गुप्तचर देने की इच्छा व्यक्त की। तो वीर विनायक राव ने मुंशी जी के सामने वन्देमातरम् परिवार के बलिदान का वर्णन कर उन्हे ही उपयुक्त समझ कर उपस्थित किया। इस आधार पर वन्देमातरम् रामचन्द्रराव तथा उनके कुछ साथी निजाम की कुटिल चालो की वास्तविक रिपोर्ट देने लगे। जब निजाम अपने को स्वतन्त्र रखने के लिए विदेशो से हथियार मंगाता था तथा भारत सरकार से युद्ध करने की तय्यारी मे था, इसके लिये उसने रजाकारो की एक प्राईवेट सेना कासिमरज्वी के नेतृत्व मे खड़ी कर ली थी। एक सिरेटसिडनी काटन नामक अंग्रेज के नेतृत्व में भी रजाकारो का दल रात्री मे चोरी से हवाई जहाज के जरिये प० पाकिस्तान तथा गोवा के मार्ग से हथियारो को खेप लाया करता था। यह जहाज कभी बंदर और कभी वरंगल मे हथियारों की पेटियां उतारकर लौट जाया करता था। उस समय वन्देमातरम् के साथी हवाई अड्डो के निकट एक साधारण ग्रामीण वेश धारण कर रात्री मे बराबर जागकर उस जहाज का नम्बर, पेटियो के नम्बर हथियारों की संख्या, क्वालिटी तथा उन हथियारों को हैदराबाद तक पहुंचाने वाले मात्र ट्रक का नम्बर ठीक ठीक पता लगा लेते थे। इसमे इनको हवाई अड्डो पर काम करने वाले स्वाधीनता प्रेमी कर्मचारियो का सहयोग भी मिलता था। जब सारा जग निद्रा देवी की शरण मे विश्राम करता था, तब ये रात्रि भर जाग कर उसकी टोह लेते थे और भारत सरकार के जनरल एजेन्ट तक ठीक-ठीक समाचार पहुंचाने मे सफल होते थे। इतना ही नही अपनी जान हाथ मे रख कर निजाम की आर्डिनेन्स फैक्ट्री मे प्रवेश कर वहां की सारी ही गुप्त जानकारी लेकर भी भारत के जनरल एजेंट के एम मुन्शी जी तक पहुंचाने का महान दुर्लभ कार्य किया करते थे। उस समय मिक्स्टो मिल्स हैंड ग्रेनेड तथा जापानी टाइप थ्रीनाट थ्री की जानकारी अपेक्षित थी। अतः वन्देमातरम जी ने स्वयम् ही मिलट्री वरदी पहन कर साथ में निजामी सेना के दो सिपाही जगन्नाथ तथा गणेश सिंह को साथ लिए निषिद्ध क्षेत्र में सेना के निर्धारित कोड वर्ड बाम्ब का प्रयोग कर प्रवेश पा लिया और वो तीन घन्टे तक घूम कर सारी जानकारी लेकर भारत सरकार के जनरल एजेंट श्री मुन्शी जी तक पहुंचाई। इस

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आदर्श-त्रैतवाद-२

—राजसिंह भल्ला

यदि कोई संसार में निर्भय विचर सकता है तो वह केवल ऐसा साधक हो सकता है जिसे किसी का भय नहीं होता। सुख दुख या भय अपने कर्मों से होता है जब हम पाप ही नहीं करेंगे तो हमें दुख कैसे हो सकता है। भय के तीन कारण होते हैं। पहले स्वय पाप करना दूसरे किसी अन्य से भय और तीसरे अविद्या अज्ञान से भय। जब मन वचन कर्म से सही कार्य करेंगे पाप नहीं करेंगे और कर्म भी ज्ञान पूर्वक करेंगे तो भय किस प्रकार हो सकता है। अध्यात्मवाद मे ओ३म् नाम की तीन मात्राए, वाचिक, मानस और भावमय जाप है। भावमय जाप का नाम ही एकाग्रता है। ध्याता ध्येय और ध्यान की समता ही भावमय जाप है। इस जाप मे आत्मा स्थिर हो जाती है और अपर ब्रह्म नाम से पर ब्रह्म नामी को प्राप्त कर लेता है।

ओ३म् की अराधना

ओमित्येतदक्षरमुद्गी थमुपासीतोमिति ह्यु्द्गायति।
तस्योपव्याख्यानम्। छान्दो० १/१/१

साधक उपासना के समय ओ३म् अक्षर उद्गीथ को अराधे। उद्गाता ओ३म् कह कर ही गाया करता है। उस ओ३म् नाम का आगे व्याख्यान है। उपासना के नाम जाप, नाम चिन्तन तथा नाम ध्यान का बडा महात्म्य है। प्राचीन काल के सन्त नाम का गान किया करते थे। जब भगवान नाम ऊंचे स्वर से गाया जाय तो उसी को उद्गीथ कहते हैं। ओ३म् का अर्थ है रक्षा करने वाला उसी का ऊंचे स्वर से गान करना चाहिए वही रक्षक है। रक्षा करने वाला परमेश्वर ही उद्गीथ है।

ओ३म् सब रसो का सार है

एषां भूतानां पृथिवी रस पृथिव्या आपो रसोऽपामोषधयो रस।
ओषधीनां पुरुषो रस पुरुषस्य वाग् रसो, वाच ऋग् रस ऋच
साम रस, साम्न उद्गीथो रस। छान्दो० १/१/२

पांच महाभूतो का सार पृथिवी है। पृथिवी का सार जल है। जलो का सार अन्नादि ओषधिया हैं ओषधियो का सार पुरुष है। मनुष्य देह है। पुरुष का सार उसकी वाणी है। वाणी का सार ऋग् है—भगवान की स्तुति है। ऋग् का सार साम है, स्तुति को स्वर मे गाना है साम का सार भगवान का नाम गायन है। सब सारो का सार भगवान का नाम ओ३म् है।

सारों का सार है

स एष रसाना रसतम परम।
पराध्योंऽष्टमो यदुद्गीथ। छान्दो० १/१/३

पहले मन्त्र के सात सारो को जो आठवा सार—ओ३म् है—भगवान् का नाम है वह सब सारो का सार है। परम सार है। परमानन्द है। परमधाम है। सबसे उत्कृष्ट स्थान है। उस ओ३म् की उपासना करनी चाहिये। मनुष्य जन्म का सार भगवान की स्तुति है। स्तुति का सार उसे सगीत मे गाना है। और साम सगीत का सार भगवान के नाम को जपना तथा गाना है। ओ३म् भगवान् का नाम परम सार है। परमेश्वर की प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन होने से वह परमानंद है और परम स्थान है। उपासना में ओ३म् नाम की उपासना परम उपासना है।

ओ३म् जाप से कामना पूर्ति

आपयिता ह वै कामना भवति य एतदेव विद्वानक्षरमुद्गीथमुपास्ते।
छान्दो० १।१।७

जो उपासक ओ३म् नाम नाम की महिमा को इस प्रकार जानता हुआ इस अक्षर उद्गीथ की उपासना करता है। भगवान के ओ३म् नाम को जपता है निश्चय वह कामनाओ को प्राप्त करने वाला वा प्राप्त कराने वाला हो जाता है। उसकी सब कामनायें पूर्ण हो जाती हैं। भगवान् के नाम की महिमा को जान कर ज्ञान पूर्वक सच्ची धारणा से और उपनिषद के परमार्थ से जो कर्म किया जाता है उसका सस्कार प्रबल होता है और फल भी अत्युत्तम होता है।

नाम उपासक के सब विरोध दूर हो जाते हैं

एव यथाश्मानमाखण मृत्वा विध्वसते एव हैव स विध्वसते य एव विदि पाप कामयते यश्चैनमभिदासति। एषोऽश्मा खण। छान्दो० १।२।८

जिस प्रकार पत्थर से टकरा कर मिट्टी का ढेला चकनाचूर हो जाता है ठीक उसी प्रकार वह नष्ट हो जाता है जो इस प्रकार ओ३म् नाम की उपासना करने वाले की अनिष्ट कामना करता है। जो इस उपासक को हनन करना चाहता है वह स्वय नष्ट हो जाता है। क्योकि वह उपासक तो परमात्मा की उपासना के कारण एक अभेद्य शिला है। ओ३म् नाम की उपासना करने वाले के सब विरोध दूर हो जाते हैं।

ओ३म् का स्मरण करो

अराइव रथनाभौ सहता यत्र नाड्य। स एषोऽन्तश्चरते बहुधा जायमान।
ओमित्येवध्यायाथ आत्मान स्वस्ति,व पाराय तमस परस्तात्॥ मुण्डको० २/६

रथ की नाभि में लगे हुए अरो की भान्ति जहा नाडिया जुडी हुई हैं वहा हृदय मे वह यह आत्मा अनेक विकासो से साधनाओ से भीतर प्रकट होता है। ऐसे इस आत्मा ओ३म् को स्मरण करो अज्ञान अन्धकार से परे पार उतरने के लिए तुम्हारा कल्याण हो।

ओ३म् अविनाशी की व्याख्या

ओमित्येतदक्षरमिद सर्वं तस्योपव्याख्यान, भूत भवद् भविष्यदिति सवमोकार एव, यच्चान्यत् त्रिकालातीत तदप्योकार,एव। माण्डूक्यो०१

जो दिखाई दे रहा है यह सब वह ओ३म् अविनाशी है। उसका व्याख्यान किया है। भूत वर्तमान और भविष्यत् सब ओकार ही है। जो कुछ और तीनो कालो से ऊपर है वह भी ओकार ही है

सारा विश्व भगवान् का शरीर है इसमे ईश्वर व्यापक है। उसी की इच्छा से आकार प्रकार तथा नाम रूपमय जगत की रचना हुई। अतएव भगवान् की सत्ता में ही सारा ससार है। एक प्रकार भगवान् विश्व ब्रह्माण्ड का शरीर है। शरीर मे रहने वाला शरीरी एक है।

प्रणव द्वारा आत्म साक्षात्कार

वह्नेर्यथा योनिगतस्य मूर्त्तिन दृश्यते नैव च लिङ्ग नाश। स भूय एवेन्धन-योनिगृह्यस्तद्वोभय वै प्रणवेन देहे। श्वेता १।१३

जैसे लकडी से उत्पन्न होने वाली अग्नि लकडी मे न दिखाई देती और न ही उस अग्नि का उस लकडी मे अभाव है अर्थात उसका ऊष्मा रूप चिह्न भी नष्ट नही होता। वह अग्नि चाहे तो फिर भी इन्धन योनि मे ग्रहण की जा सकती है अर्थात् लकडी को ईन्धन वत जला कर अग्नि का ग्रहण किया जा सकता है ठीक इसी प्रकार आत्म तत्व परमात्म तत्व दोनो देह मे प्रणव से प्रणव ध्यान से तथा जाप से ग्रहण करने योग्य है। ओकार के जाप ध्यान सिमरन से इसी शरीर मे आत्मा के द्वारा परमात्म का साक्षात्कार किया जा सकता है।

ओकार द्वारा परमात्मा के साक्षात्कार का ढग—

स्वदेहमरणिं कृत्वा, प्रणव चोत्तरारणिम्।
ध्याननिर्मथनाभ्यासाद्देवपश्येन्निगूढवत्॥ श्वेता० १/१४

परम कल्याण का अभिलाषी उपासक अपने शरीर को नीचे की अरणि कल्पना कर और प्रणव को ऊपर की अरणि कल्पना कर ध्यान रूप मन्थन अभ्यास से लकडी मे छुपी अग्नि की तरह परमात्मा को देखे। मन लगा कर भगवान् के नाम सिमरन—नाम जाप ध्यान से भगवान के दर्शन करे।

ब्रह्म प्राप्ति का साधन ओ३म्—

ओमित ब्रह्म। ओमितीद सवम्। ओमित्येतदनुकृति हस्म वा अप्यो श्रावयेत्या श्रावयन्ति। ओमिति सामानि गायन्ति। ओं शोमिति शस्त्राणि शसन्ति। ओमित्यध्वर्यु प्रतिगर प्रति गृणाति। ओमिति ब्रह्मा प्रसौति। ओमित्यग्निहोत्रमनु जानाति। ओमिति ब्राह्मण प्रवक्ष्यन्नाह ब्रह्मोपाप्नवानीति। ब्रह्मैवोपाप्नोति। तैत्तरीयो० ८।१

स्वास्थ्य सुधा—

उपयोगी घरेलु नुस्खे

नेतराम शर्मा

प्रधान—भारतीय योग संस्थान, पूर्वी जिला दिल्ली

बच्चों के हरे पीले दस्त—

१३—शीत ऋतु मे जायफल को माता अपने दूध मे घिस कर चटाये दस्त फौरन बन्द हो जायेंगे।

१४—बच्चे की कब्ज तोडने की दवा—अमलतास की फली के अन्दर एक काली टिकिया लेकर उसे मा के या गाय के दूध मे घोल कर पिलाने से बच्चे की कब्ज दूर हो जाती है। मल निकल जाने से वह रोना बन्द कर देगा और चैन से सो जाएगा।

१५—बच्चो के पेट दर्द का इलाज—अजवायन १० ग्राम, काला नमक २ १/२ ग्राम, हीग असली ४ ग्रेन तीनो को महीन पीस कर और कपडे मे छान कर शीशी मे रख लें। प्रात साय आधा ग्राम एक बड़ा चम्मच गर्म जल से दे। दर्द दूर हो जायेगा।

१६—पेट के कीड़ो की दवा—नारगी के सूखे छिलके १० ग्राम, वायविडग १० ग्राम दोनो को बारीक पीस कर चूर्ण बना लें बच्चे को १-१/२ ग्राम चूर्ण खिला कर ऊपर से गर्म पानी पिला दे। पेट के कीड़े बिल्कुल मर जायेंगे। बेल का रस पीने से भी कीडे नष्ट हो जाते हैं।

१७—एक अखरोट की गिरी खिला कर ऊपर से गुनगुना दूध पिला दें प्रात काल उसके पेट के कीडे मल के साथ बाहर निकल आयेंगे। खुराक से पहले गुड़ खिला दें।

१८—बच्चे का बिस्तर पर मूत्र करने का इलाज—अखरोट की एक गिरी, ५ ग्राम किसमिस खिला दे एक हफ्ता या १० दिन मे रोग दूर हो जाएगा।

१९—कब्ज का नुस्खा—सनाय की पत्ती २५ ग्राम, सौंफ ५० ग्राम, मिश्री १०० ग्राम तीनो चीजें बारीक पीस कर चूर्ण शीशी मे रख ले। रात को २ ग्राम लेकर बच्चे को दूध से खिला दें। कच्चे बेल का गूदा या इसका शरबत पीने से भी कब्ज दूर हो जाती है।

२०—सूखा रोग का इलाज—हरी गिलोय के रस मे बच्चे का फ्राक या झबला रग कर और सुखा कर बच्चे को पहनावें कुछ ही दिनो मे सुखा रोग दूर हो जायेगा और वह हृष्ट पुष्ट हो जायेगा।

२१—बड़ी आयु के स्त्री पुरुषो के पेट के रोग—यदि पेट खराब रहता हो, हाजमा दुरुस्त न हो, कब्ज रहती हो पेट दर्द होता हो, पेट गुड़गुड करता हो, अफारा रहता हो, खट्टे डकार आती हो भूख न लगती हो, हाजमा ठीक न रहने से चेहरा पीला पड गया हो तो अपनी खाने पीने की आदतें बदलिये। पत्ती वाले साग खूब खाइए, फलो का आहार बढ़ाइये, फलो मे सन्तरा, आम, अगूर, अनार, केला, सेब नाशपाती, चीकू, पपीता अमरूद आदि फलो का सेवन बहुत लाभदायक है।

अपच (बदहजमी) का उपाय होने के बाद यदि एक दिन केवल सन्तरे और अनार के रस का ही सेवन किया जाये और कुछ भी खाया पीया न जाये तो अपच अवश्य दूर हो जायेगी। उपवास भी बहुत लाभकारी, नीबू रस, शहद पानी ही लें। उपवास खोलते वक्त सन्तरा, मौसमी के रस का सेवन करें। खुराक धीरे-धीरे बढ़ाये।

आर्य वीरांगना दल का शिविर समापन समारोह ७ जून को

आर्य वीर दल (दिल्ली प्रदेश) के तत्वावधान मे आर्य समाज तिलक नगर में ११ मई से चलने वाले शिविर का समापन समारोह आर्य समाज तिलक नगर मे ही ७ जून को प्रात ७ बजे से यज्ञ सत्सग के पश्चात प्रारम्भ होगा। शिविर मे लगभग ८० युवतियों का नित्य प्रति चारित्रिक एव शारीरिक विकास का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। समापन समारोह मे एक सप्ताह के अल्प समय मे युवतिया द्वारा सीखे गये आसन लाठी जूडो, तलवार और छुरी आदि का प्रदर्शन किया जाएगा, अन्य उपस्थित विदूषी महिलाओ के विचार भी आपको सुनने को मिलेंगे। सभी से निवेदन है कि अधिकाधिक सख्या मे उपस्थित हो इस अवसर की शोभा बढाये।

शराब का ठेका बन्द कराने के लिए संघर्ष

आर्य समाज के नेता श्री खजान सिंह के अनुसार ग्राम करेवडी जिला सोनीपत के सैंकडो ग्रामीणो ने जिला उपायुक्त श्री रामप ल च द्र के कार्यालय मे उपस्थित हो देशी शराब के ठेके ब द कराने की माग की और कहा कि ठेके ब द न होने पर सघर्ष शुरू कर दिया जायेगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रचारक प० रतनसिंह आर्य का प्रचार व सघर्ष की तैयारी के लिए करेवडी भेज दिया है।

श्री मेघ जी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार १९९२

प्राय समाज सा ताक्रुज बम्बई द्वारा श्री मेघ जी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार १९९२ के लिए प्रविष्टिया आमन्त्रित की जाती हैं

यह पुरस्कार मस्कत निवासी श्री मेघ जी भाई ननसी को स्मति मे उनके सुपुत्र श्री कनकसिंह मेघ जी भाई के आर्थिक सहयोग से प्रति वष जुलाई माह के प्रथम सप्ताह में दिया जाना है। इस बार यह समारोह ५ जुलाई १९९२ को होगा।

प्राय साहित्य के लेखको को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इस पुरस्कार का प्रारम्भ किया गया है। वेद वेदागो के प्रतिरिक्त जीवन पय त प्राय साहित्य के माध्यम से सेवा करने वाले लेखक को इस पुरस्कार से मम्मानित किया जायेगा।

पुरस्कार प्राप्त लेखक को ११००० रुपये की र शि रजत ट्राफी व शाल से सम्मानित किया जायेगा नियम इस प्रकार हैं—

१ जिस प्र य विद्वान ने जीवन पय त वदिक साहि य के द्वारा प्राय समाज की अधिकतम सेवा की हो

२ प्रकाशित ग्र थों का सम्ब घ प्राय समाज के दशन इतिहास सिद्धा त प्रथवा प्राय महापुरुषो के जीवन प्रादि से है इस पुरस्कार को सीमा मे माने जायगे।

३ ग्र थ लेखक को अपनी समस्त रचनाओं क दो दो प्रतियां प्राय समाज सा ताक्रूज (प०) बम्बई को भेजनी होगी। ए बार ग्रथ प्राप्त होने के पश्चात् पुन अगले वष भेजने की आवश्यकता नहीं होगी।

४ सर्वोत्तम ग्र थ का चयन एक समिति करगी जिसका निर्वाचन प्राय समाज सा ताक्रुज करेगा। प्राय समाज सा ताक्रुज की प्र तरग सभा का निणय प्र तिम निणय माना जाएगा।

इस पुरस्कार हेतु लेखक अपने ग्र थो की दो प्रतिया सयोजक प्राय साहित्य पुरस्कार प्राय समाज सा०ताक्रु ज बम्बई ५४ को यथाशीघ्र भेजने की कृपा कर

कप्टन देवरत्न प्राय

सयोजक—पुरस्कार समिति एव प्रधान प्राय समाज सा ताक्रुज बम्बई ५४

मासाहार रोगो को दावत देता है

स्वस्थ चि तन क लिए शुद्ध सात्विक आहार की एक अहम भूमिका है। देश विदेशों में यह बात सिद्ध हो चुकी है कि शाकाहार ही मनुष्य का सर्वोत्तम आहार है। मासाहार करना मनुष्य के लिए अप्राकृतिक भी है व धम सगत भी नहीं है। मांसाहार कर हम अपने को जीव हत्या मे भागीदार क्यो बनाते हैं? क्योकि मास हार करना भी जीव हत्या मे एक योगदान करना ही है। इसके प्रति रिक्त वज्ञ निक दृष्टिकोण से भी लगभग १६० प्रकार की बीमारियां मासाहारी व्यक्तियो मे अधिकता से प ई जाती है यह विश्व स्वास्थ्य सगठन की रिपोट है। अण्डा जिसका आज कल व्यापक प्रचार व प्रसार हो रहा है लोगों को इसकी जानकारी नहीं है कि हृदय रोगों को ज म देने वाला कोलेस्टराल अण्डे मे सबसे अधिक मात्रा मे पाया जाता है इस लिए अण्डे का सेवन करके आप अपने लिए हृ य ोगो को द वत क्यों दे हे हैं जबकि विविध मिश्रित शाकाहार से पूर्ण सतुलित आहार ले सकते हैं।

राजीव कुमार प्राय

मन्त्री प्राय समाज प्रायमगढ

प्रार्य समाज गोंडल गुजरात का वार्षिकोत्सव

प्राय समाज गोडल गुजरात का वार्षिकोत्सव हाल ही मे सम्प न हुआ। यज्ञ भजनोपदेश व प्रवचन हुए क द्र सरकार व राज्य सरकार से सव सम्मति से प्रस्ताव पारित कर माग की गई कि महर्षि दयान द सरस्वती के ज म दिवस पर सावजनिक अवकाश घोषित किया जाये

निर्वाचन

सर्वसम्मति से हुए चुनाव मे श्री अश्विन भाई भट्ट—प्रमुख श्री डी० आर० मेहता—उप प्रमुख श्री विनोद कुमार व०लभ भाई जगड़ा—महामन्त्री श्री एम० एन० जोशी—सहमन्त्री श्री एन० एच० दवे—खजाची निर्वाचित हुए।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 4 5 6 1992 Licence to post without prepayment Licence No U (C) 139/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल ११०२४/९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) ११६/९१
साप्ताहिक 'आर्य सन्देश' ७ जून १९९२

क्रान्तिकारी नेता

(पृष्ठ ४ का शेष)

प्रकार निजाम सरकार गुप्तरूप में स्वतन्त्र भारत की सरकार से युद्ध करने की जो अन्दर ही अन्दर जोरदार तैयारियां कर रहा था उसका सारा ही भेद इस वीर ने अपनी जान पर खेलकर प्राप्त किया। हम देखते हैं कि जानबाज आर्य समाजी युवकों के कारण ही हैदराबाद की जनता निजाम के खूनी साम्प्रदायिक पंजे से बच सकी और भारत सरकार के लिए मार्ग सरल एवं प्रशस्त बन सका परन्तु ऐसे जिन युवकों ने स्वाधीनता के लिये तिल तिल कर अपना जीवन जलाया। स्वाधीनता प्राप्ती के पश्चात सरकार की ओर से इन वीरों का क्या सम्मान और सहयोग किया गया? आज भी ऐसे स्वाधीनता की नींव के पत्थर हमारी उपेक्षा के शिकार हो रहे हैं। काश कि हमारी सरकार उनका यथोचित सम्मान कर तथा सुध लेकर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट कर पाती।

ऐसे महान बुद्धिवादी साहसी, आर्यत्व निष्ठ एवं देशभक्त देशनायक अपनी आयु के ७५ वर्ष पूरे कर ७६ वें वर्ष में पदार्पण कर रहे हैं मैं उनके लिए दीर्घायु तथा ऐश्वर्य की कामना करता हुआ वर्तमान राजनैतिक तथा धार्मिक कार्यकर्ताओं को उनके गुणों और कर्तृत्व शक्ति का लाभ उठाने की सद्बुद्धि के लिये परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं।

—नन्दनार्य विद्यावाचस्पति प्रधान
आर्य समाज वरंगल आन्ध्रप्रदेश

निशुल्क संस्कृत प्रशिक्षण शिविर

आत्म शुद्धि आश्रम रोहतक में १९ जून से २८ जून तक निशुल्क संस्कृत प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है। शिविर में संस्कृत में वार्तालाप करना व संस्कृत अध्ययन की सरल विधि आदि का प्रशिक्षण दिया जायेगा। शिक्षार्थियों के लिए भोजन निवास आदि का प्रबन्ध आश्रम की ओर से होगा।

सम्पर्क सूत्र—स्वामी धर्ममुनि (अधिष्ठाता) आत्म शुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ १२४५०७ रोहतक।

प्रबल प्रतिज्ञा करो

ऐ भारत जननी के सपूतो महर्षि की सन्तानो भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए।

१—राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग करो।

२—देसी महीना दिन तिथि विक्रमी संवत का तथा सृष्टि संवत का प्रयोग करने की आज यज्ञ वेदी पर प्रबल प्रतिज्ञा करके आर्य बनो।

वेद पथिक धर्मवीर आर्य भण्डारी सराय रुहेला नई दिल्ली ५

आर्य समाज आर्यमगढ़

२३ ४ ९२ को आर्य समाज आर्यमगढ के वार्षिक निर्वाचन में निम्न लोग पदाधिकारी निर्वाचित हुए—

प्रधान—श्री कन्हैया लाल गुप्त एडवोकेट उपप्रधान—श्री कपिलदेव राय जी श्री रामनारायण जी मन्त्री—श्री राजीव कुमार आर्य, उपमन्त्री श्री मुनीष नाथ गुप्ता एडवोकेट श्री श्रीचन्द जी कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश शास्त्री पुस्तकालयाध्यक्ष—श्री कामता राय जी श्री सन्तोष कुमार आर्य (सहायक) आय-व्यय निरीक्षक—श्री रामस्वरूप वर्मा जी।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाऊस दरियागंज नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली ११०००१ फोन ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी०(एल१०२४/१-०९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५ अंक २९ | रविवार १४ जून १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

आर्यसमाज मन्दिरों के लिए भूमि आवंटन के मामले में डी. डी. ए. अधिकारियों द्वारा घोर लापरवाही

नई दिल्ली। राजधानी में आर्य समाज मन्दिरों के लिए भूमि आवंटित करने के सम्बन्ध में दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा घोर लापरवाही की जा रही है। मंगोलपुरी जे० जे० कालोनी में १० वर्ष पूर्व तथा आनन्द वास शकरपुर जे० जे० कालोनी में ४ वर्ष पूर्व आर्य समाज मन्दिरों के लिए जमीन एलाट करने के सम्बन्ध में सभी औपचारिकताएं पूरी कर प्रार्थना पत्र दिए जा चुके हैं परन्तु अभी तक भी डी० डी० ए० द्वारा भूमि आवंटित नहीं की गई है।

इस सम्बन्ध में प्रधान मन्त्री श्री पी० वी० नरसिंह राव को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने २ जून ९२ को पत्र भेज कर इस मामले में व्यक्तिगत ध्यान देने का अनुरोध किया है ताकि उक्त मन्दिरों के लिए भूमि आवंटित हो सके। प्रधान मन्त्री जी को लिखा पत्र प्रस्तुत है—

सेवा में

महामहिम श्री पी० वी० नरसिंहराव
प्रधान मन्त्री
भारत सरकार नई दिल्ली

विषय—आर्य समाज मन्दिर मंगोलपुरी जे० जे० कालोनी दिल्ली तथा आर्य समाज मन्दिर शकुरपुर जे० जे० कालोनी दिल्ली को मन्दिर बनाने हेतु दिल्ली विकास प्राधिकरण के अधिकारियों द्वारा भूमि आवंटित करने में लापरवाही के सम्बन्ध में।

माननीय महोदय

सादर नमस्ते।

प्रभु कृपा से आप स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

निवेदन है कि मैं आपका ध्यान दिल्ली विकास प्राधिकरण के अधिकारियों की लापरवाही की ओर दिलाना चाहता हूं दिल्ली प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित शाखा आर्य समाज मंगोलपुरी, जे० जे० कालोनी दिल्ली में मन्दिर बनाने हेतु भूमि आवंटित करने के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण के कार्यालय में ११ ५ ९२ को विधिवत सारी औपचारिकताएं पूरी कर प्रार्थना पत्र दिया गया था। उसके उपरान्त गत १० वर्षों से लगातार क्षेत्रीय आर्य समाज के कार्यकर्ता दिल्ली विकास प्राधिकरण के चक्कर लगा रहे हैं परन्तु अभी तक मन्दिर हेतु विधिवत भूमि आवंटित नहीं की गई।

२—सभा की दूसरी सम्बन्धित शाखा आर्य समाज आनन्द वास शकूरपूर जे० जे० कालोनी दिल्ली के समाज मन्दिर के लिए १२ ९ १९८८ को श्री देसराज जी डिप्टी डायरेक्टर (जे० जे०) दिल्ली विकास प्राधिकरण विकास कुटीर नई दिल्ली में भूमि आवंटित करने सम्बन्धी सभी औपचारिकताएं पूरी कर प्रार्थना पत्र दिया गया था। लगभग गत चार वर्षों से क्षेत्रीय समाज के कार्यकर्त्ता दिल्ली विकास प्राधिकरण के कार्यालय के चक्कर लगा रहे हैं। परन्तु अभी तक दिल्ली प्राधिकरण द्वारा मन्दिर हेतु विधिवत भूमि आवंटित नहीं की गई।

उपरोक्त दोनों समाज मन्दिरों के लिए भूमि देने के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण के पूर्व डिप्टी डायरेक्टर श्री बी० पी० गुप्ता श्री एन० बालाचन्द्रन श्री देसराज श्री के० पी० चौधरी श्री मनजीतसिंह कमिश्नर श्री रवि मलिक दिल्ली के पूर्व उपराज्यपाल श्री हरकृष्णलाल कपूर श्री रोमेश भण्डारी पूर्व प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी को सभा की ओर से तथा बाहरी दिल्ली के पूर्व संसद सदस्य श्री चौ० भरतसिंह तथा श्री सज्जन कुमार जी ने भी यथा शीघ्र भूमि देने के लिए पत्र लिखे परन्तु बड़े ही खेद की बात है कि दिल्ली विकास प्राधिकरण के अधिकारी तथा सम्बन्धित क्लर्क द्वारा जान बूझ कर भूमि आवंटित करने रुकावट डाली जा रही है।

आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने स्वतन्त्रता संग्राम में बढ़ चढ़ कर भाग लिया है। कार्यकर्ताओं ने देश की एकता व अखण्डता के लिए कार्य किया है। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने समय समय पर देश पर आये संकट तथा विपत्तियों भूकम्प बाढ़ पंजाब तथा कश्मीर से आये विस्थापित भाई बहनों अनाथ बच्चों विधवाओं के लिए बढ़ चढ़ कर सहायता कार्य किए हैं।

आर्य समाज के कार्यकर्ता बड़े शान्तिपूर्ण ढंग से नियमानुसार विधिवत रूप से दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा आवंटित की गई भूमि का पूरा भुगतान करके मन्दिर बनाना चाहते हैं उसमें भी दिल्ली विकास प्राधिकरण के अधिकारियों द्वारा रुकावट डाली जा रही है।

अतः मेरा आप से अनुरोध है कि आप व्यक्तिगत रूप से इस ओर ध्यान देकर दिल्ली विकास प्राधिकरण के अधिकारियों को आदेश देकर उपरोक्त दोनों समाज मन्दिरों के लिए भूमि दिलवा कर पुण्य के भागी बनें।

आपका सहयोग सद्भाव ही हमारा सबल है।

धन्यवाद सहित

भवदीय
(डा० धर्मपाल) महामन्त्री

श्री यश का निधन एक राष्ट्रीय क्षति

प्रमुख स्वाधीनता सैनानी प्रख्यात पत्रकार व कांग्रेसी सांसद श्री यश का १ जून को हाल घर में निधन हो गया। वे ७३ वर्ष के थे।

३१ मई रात को श्री यश ने तबीयत खराब होने की शिकायत की। रात उन्होंने घर ही बिताई और अगले दिन उन्हें तड़के एक नर्सिंग होम में दाखिल कराया गया। दोपहर १ बज कर ४० मिनट पर उनका निधन हो गया।

श्रद्धांजलियां—उपराष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा प्रधान मन्त्री श्री नरसिंह राव पंजाब के राज्यपाल श्री सुरेन्द्रनाथ हरयाणा के राज्यपाल श्री धनिकलाल मंडल मुख्य मन्त्री श्री भजनलाल एवं अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने श्री यश के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने श्री यश के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए अपने शोक सन्देश में इसे एक राष्ट्रीय क्षति बताया है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

आनन्द मय कोष में उपस्थान (१२)

—देव नारायण भारद्वाज

नहीं यह सब अंगीकार है, क्योंकि यह तो सर्वशुभांगी का शृंगार ही नहीं उसकी सत्कार्य क्षमता का विस्तार है। जो उपयोगी हैं यह सब उसके सहयोगी हैं—प्रतियोगी नहीं। बाहर के हर आवरण शृंगार को हटा कर घर में हम निरावरण रहना पसन्द करते हैं और ध्येय ध्वनि में मग्न रहते हैं। हम मगन कब होंगे—जब नगम होंगे—(न+गम) जीवन नगमा बन जायेगा तभी यह मन—नमन हो जायेगा—(न+मन) मन नहीं रह जायेगा—वह तो आत्मा का दास बन जायेगा—और आत्मा परमात्मा के पास हो जायेगा। हम कह उठेंगे—

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च, नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥ यजु० १६ ४१

अर्थ—(शम्भवाय) शान्ति देने वाले प्रभु के लिए (च) और (मयोभवाय) आनन्द देने वाले प्रभु के लिए नमस्कार हो। (च) और (शङ्कराय) शान्ति कारक प्रभु के लिए (च) और (मयस्कराय) सुख कारक प्रभु के लिए (नमः) नमस्कार हो। (च) और (शिवाय) कल्याण स्वरूप प्रभु के लिए (च) और (शिवतराय) अति कल्याण कारक प्रभु के लिए (नमः) नमस्कार हो।

हमको संसार के सुख अभ्युदय तथा मोक्षानन्द निःश्रेयस' दोनों को प्राप्त करना है। शम्भु (शम्भव) शंकर शिव रूप प्रभु को इसलिए नमन है कि वह हमें निःश्रेयस प्रदान करता है। मयोभव मयस्कर शिवतर प्रभु को इसलिए नमन है कि वह हमारे सांसारिक अभ्युदय का कर्ता है। शान्ति सुख कल्याण ईश्वर के गुण हैं—जीवात्मा के नहीं। यह गुण तो उसे ईश्वर से ही प्राप्त होते हैं। जब तक शरीर के अंग स्वस्थ हैं—उन पर ध्यान नहीं जाता किंचित अस्वस्थ होने चोट लगने यहां तक कि दांतों के मध्य एक कण के फंस जाने पर ध्यान बार बार उसी पर चला जाता है—शरीरांग के स्व में पुनः स्थित हो जाने पर हम स्वस्थ हो जाते हैं। शरीर के सारे अंगों में समन्वय होने पर हमें शान्ति मिलती है मन के पीडक विचारों से हट जाने पर हमें शान्ति मिलती है। अशान्ति के हट जाने का नाम ही सुख या स्वास्थ्य है—(सु+ख)—सुन्दर इन्द्रियों वाला है। इन्हीं स्वस्थ इन्द्रियों का प्रभु कर्म, चिन्तन दर्शन में लग जाना आनन्द है। यदि यह गुण भक्त में पहले ही होते तो वह भला उपासना क्यों करता। परमात्मा गुण के (उप) निकट (आसन) बैठ कर वह इन गुणों को ग्रहण करता है—फिर तो वह स्वयं गुणी बन कर पूर्व गुणी से मिल जाता है—सन्निहित हो जाता है।

संध्या को शम से प्रारम्भ किया था—नमस्कार मन्त्र में शम् की पुनरावृत्ति पर पूर्ण करते हैं। तीन बार ओ३म् शान्ति का उच्चारण करके उठ बैठते हैं। आधिभौतिक आधिदैविक और आध्यात्मिक क्लेशों का शमन होकर हमें यहां तीनों प्रकार के सुख मंगल और आनन्द प्राप्त हों—इसी के लिए अपनी जीवन चर्या को आगे बढ़ाते हैं। अन्नमय कोश से चल कर आनन्द मय कोष तक पहुंचने की पगडंडी है—यही वैदिक संध्या। यह राजपथ नहीं है, जहां बिना वाहन बिना अनुमति के जाना सम्भव नहीं—भले ही देखने में वह विस्तृत व भव्य हो—यह तो पगडन्डी है जो हर घर कुटी तक जाती है जिस पर कोई भी बिना किसी वाहन के सहारे पैदल ही जा सकता है—न हाथी है न घोड़ा है यहां पैदल ही जाना है। चलो चलना प्रारम्भ कर दें। ●

औरतों की इज्जत से खिलवाड़ कर रहे हैं जंगजू

जम्मू २६ मई। घाटी में विदेशियों की शह पर हथियार उठाए उग्रवादी पिछले तीन सालों में कुछ और पाने में सफल रहे हों या नहीं पर अपनी काम पिपासा बुझाने में जरूर सफल रहे हैं। स्त्रियों को जबरदस्ती उनके घरों से उठा कर उग्रवादी उन्हें अपनी वासना का शिकार बनाते हैं। इसमें हिन्दू औरतों के अलावा मुसलमान औरतें व लड़कियां भी शामिल हैं।

सूत्रों के अनुसार उग्रवादियों की वासना की शिकार लगभग छह हजार स्त्रियों ने इस दौरान गर्भपात कराया है। इनमें से चार हजार के करीब गर्भपात तो केवल जम्मू के नर्सिंग होमों में ही हुए हैं।

नर्सिंग होम के सूत्रों ने नाम उद्धृत न किए जाने की शर्त पर जागरण को बताया कि गर्भपात कराने वाली अधिसंख्य स्त्रियां घाटी की हैं व उनके तीन से पांच माह के गर्भ हैं। सामान्यतः ऐसे गर्भपात किए जाने का शुल्क दो से पांच हजार तक है पर उग्रवादियों की सताई इन स्त्रियों से बहुत मामूली रकम वसूली जाती है।

एक ऐसे ही परिवार से जब यह पूछा गया कि जम्मू में यह क्यों? क्या कश्मीर में नर्सिंग होम अस्पताल नहीं हैं तो इन्होंने बताया कि घाटी में उग्रवादियों का इतना खौफ है कि डाक्टर उनकी आज्ञा के बिना ऐसा नहीं कर सकते। उग्रवादियों का मानना है कि उनके द्वारा गर्भधारण हुई महिलाएं बच्चे को जन्म दें और आने वाली नस्ल भी आजादी की मांग करे।

इसी कारण कई विख्यात डाक्टरों ने घाटी छोड़ दी है। दो लाख से अधिक मुसलिमों ने घाटी को महज इसलिए छोड़ दिया कि उनकी बहू बेटियों की इज्जत अब सुरक्षित नहीं है। घाटी का एक विख्यात डाक्टर जिसको हर कश्मीरी आदर की दृष्टि से देखता है ने रातों रात अपनी बेटी की इज्जत बचाने के लिए घाटी छोड़ दी। डाक्टर का नौकर अलगाववादियों से मिल गया। वह पाकिस्तान में प्रशिक्षण पाकर लौटा तो साथी उग्रवादियों के साथ एक रात उसी डाक्टर के घर धावा बोल दिया। वह डाक्टर की बेटी की अस्मत से खेलना चाहता था। डाक्टर ने संयम व चालाकी से उन्हें फिर आने को कहा। उसी रात डाक्टर ने बच्चों सहित घाटी छोड़ दी। अब वह लीबिया में है।

कश्मीर छोड़ आये लोगों के मकानों का उग्रवादी कामवासना के लिए प्रयोग कर रहे हैं।

कुछ समय पहले इस विषय को लेकर उग्रवादियों में आपस में टकराव हुआ था। इसमें छह उग्रवादी मारे गये। कई संगठनों ने इसकी निन्दा की और ऐसे उग्रवादियों को चेतावनी दी। पर यह सब छवि सुधार कार्यक्रम था। क्योंकि उग्रवादी जो काम दूसरों को करने से मना करते हैं वहां वे खुद करते हैं।

घाटी में पहले पहल बलात्कार का शिकार हिन्दू औरत हुई। पर अब मुसलमान स्त्रियों को भी नहीं बख्शा जा रहा है।

पहले जब उग्रवादी कोई घटना करने के बाद किसी घर में शरण लेते तो लोग हर प्रकार से उनकी सहायता करते थे। हब्बाकदल (श्रीनगर) में एक बार एक उग्रवादी ने तोड़ फोड़ करने के बाद एक घर में शरण ली। सुरक्षा कर्मचारी तलाशी लेने जब उस घर तक पहुंचे तो घर वालों ने अलग कमरे में अपनी कुंआरी बेटी व उग्रवादी को एक पलंग पर सुला दिया। सुरक्षा कर्मचारियों की पूछ ताछ में उस उग्रवादी को उन्होंने अपना दामाद बताया। पर ज्यों ज्यों अलगाववाद की चिंगारी ज्वालामुखी बनती गई त्यों त्यों उग्रवादियों के अत्याचार बढ़ने लगे।

जो लोग इन उग्रवादियों को शरण आदर देते थे, उन्हीं की बेटियों बहुओं से बलात्कार किया जाने लगा। कइयों को बुरी तरह से प्रताड़ित किया गया या बलात्कार के बाद मार तक डाला गया। बारमुला में सकीना, इकबाल पार्क (बादीपुर) में हलीमा अचावल (अनंतनाग) में आशा कौल उन सैकड़ों स्त्रियों में से थीं जिन्हें बलात्कार के बाद यातनाएं देकर मार डाला गया। हवस की शिकार लाल चौक की एक महिला पागल हो गई। जंगजुओं के इस व्यवहार पर लोगों को आश्चर्य नहीं है। लोगों का कहना है कि सीमा के उस पार पाकिस्तान में भी कट्टरपंथियों का व्यवहार इसी तरह का है। इस सम्बन्ध में कुछ घटनाओं का उल्लेख रोचक है। पाकिस्तान की सरकार इसलाम की अलमबरदार बनती है, पर उसके एक प्रमुख नेता पर बलात्कार का आरोप लगा। बेनजीर भुट्टो की सहेली बीना हयात की इज्जत लूटने वाले वही लोग थे, जो हर समय इसलाम की बात करते हैं।

इस बीच घाटी में सिख स्टूडेंट फेडरेशन ने सिख स्त्रियों से सिख पहनावा पहनने को कहा है।

(—साभार दैनिक जागरण २७ ५ ९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

बिग बैंग (महाविस्फोट) का सिद्धान्त और सृष्टि उत्पत्ति



राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र दि हिन्दुस्तान टाइम्स के २७.४.९२ के अंक मे बिग बंग सिद्धान्त को यथोचित ठहराते हुए प्रकाशित हुआ था। २८ वर्षों की निरन्तर गहन साधना के पश्चात कोस्मिक बैक ग्राउण्ड एक्स प्लोरर द्वारा प्राप्त इस खोजपूर्ण उपलब्धि पर निश्चय ही सभी वैज्ञानिकों खगोल विदों और बुद्धि जीवियों को प्रसन्न होना चाहिए। इस से पहले भी १९६४ मे दो अमेरिकी वैज्ञानिकों ने इस बिग बैग सिद्धान्त की सम्पुष्टि की थी। वास्तव मे यह खोज आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

अमेरिकी वैज्ञानिको ने घोषणा की है कि लगभग १४ अरब वर्ष पूर्व सृष्टि की उत्पत्ति हुई थी और वे इसकी अनुगूंज को अब सुन रहे हैं। नासा अन्तरिक्ष यान ने कोस्मोस के किनारों पर कुछ ऐसी सिकुड़नों और लहरों को पहचाना है जो नक्षत्रों और तारक मण्डलों के जन्म के फासिल अवशेष हैं। एक अग्रणी ब्रिटिश खगोलविद श्री माइकेल रोवन रोबिन्सन के अनुसार जो हम यहां देख रहे हैं वे वह क्षण हैं जब पृथ्वी नक्षत्र और तारामण्डल का बनना प्रारम्भ हुआ था।

इन सिकुड़नों लहरों को कोस्मिक बैक ग्राउण्ड एक्सप्लोरर सेटेलाइट ने ढूंढ निकाला है और उत्तेजित खगोल विदों के सम्मुख वाशिंगटन में आयोजित अमेरिकी भौतिकी सभा मे प्रस्तुत किया।

डरहम विश्वविद्यालय के खगोल विद ने कहा कि आप अनुमान नहीं लगा सकते कि इन लहरों को देखना कितना रोमांचकारी एवं उत्तेजनापूर्ण है। विश्व भर के खगोल विद इस दौरान टेलीफोन पर कान लगाए एक दूसरे से बातें करते रहे। वे आपस मे निरन्तर सम्पर्क मे थे।

अब कोब ने पिछले २८ वर्षों से विभ्रमित वैज्ञानिको के सामने एक ठोस समझ प्रस्तुत की है। १९६० मे दो अमेरिकी वैज्ञानिको ने लगभग १४.१५ अरब वर्ष पूर्व सृष्टि की उत्पत्ति की बिग बैंग थ्योरी की अवधारणा प्रस्तुत की थी। इसी अवधारणा को अब कोब ने सम्पुष्ट किया है।

इस सारे प्रसंग को वैदिक मान्यताओं के आधार पर इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है कि यह कोई नई खोज नहीं है, बल्कि यह पूर्व ज्ञान की वैज्ञानिक सम्पुष्टि है। सृष्टि उत्पत्ति का यह सम्पूर्ण प्रकरण ऋग्वेद मे उपलब्ध है—

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमाऽपरो यत्।
किमावरीवः कुहकस्य शर्मन्नम्भः किमासीद्गहनं गभीरम्।

जब यह कार्य सृष्टि उत्पन्न नही हुई थी तब एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर और दूसरा जगत का कारण अर्थात् जगत् बनाने की सामग्री विराजमान थी। उस समय असत् शून्य नाम आकाश अर्थात् जो नेत्रों से देखने मे नही आता सो भी नही था। क्योंकि उस समय उसका व्यवहार नही था। उस काल मे सत् अर्थात् सतोगुण रजोगुण और तमोगुण मिला के जो प्रधान कहाता है, वह भी नहीं था। उस समय परमाणु भी नही थे। तथा विराट अर्थात् जो सब स्थूल जगत् के निवास का स्थान है सो भी नही था। जो यह वर्तमान जगत् है, वह भी अनन्त शुद्ध ब्रह्म को नही ढांक सकता और उससे अधिक वा अथाह भी नही हो सकता जैसे कोहरा का जल पृथ्वी को नही ढांक सकता है उस जल से नदी में प्रवाह भी नहीं चल सकता और न वह कभी गहरा वा उथला हो सकता है। इससे क्या जाना जाता है कि परमेश्वर अनन्त है और जो यह उसका बनाया जगत है, सो ईश्वर की अपेक्षा से कुछ भी नहीं है।

जब जगत नही था तब मृत्यु भी नही थी क्योंकि जब स्थूल जगत संयोग से उत्पन्न हो के वर्तमान हो पुनः उसका और शरीर का वियोग हो तब मृत्यु कहावे सो शरीरादि पदार्थ उत्पन्न ही नही हुए थे।

वैज्ञानिक अनुसंधान पर आधारित बिगबैंग (महाविस्फोट) के क्या कारण थे यह किन परिस्थितियों के कारण हुआ इससे आधुनिक विज्ञान अभी भी अनभिज्ञ है। ऋग्वेद में इसका नाम मार्तण्डम आया है—मृत+आम्+अण्डम्—अर्थात् मारक पिण्ड अर्थात् विस्फोटक पिण्ड।

ऋग्वेद मे सृष्टि उत्पत्ति का पूर्ण विवरण प्राप्य है।

अतः यह बिग बैंग की थ्योरी पूर्व प्राप्य वैदिक ज्ञान का पुनराख्यान एवं वैज्ञानिक सम्पुष्टि है। डा० विष्णुकान्त वर्मा द्वारा लिखित वैदिक सृष्टि उत्पत्ति रहस्य में इस विषय पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है।

डा० धर्मपाल

स्वास्थ्य सुधा—

उपयोगी घरेलु नुस्खे

नेतराम शर्मा
प्रधान—भारतीय योग संस्थान पूर्वी जिला दिल्ली

बच्चों के हरे पीले दस्त—

२२—जायफल नीबू के रस मे पीस कर लेने से भी कब्ज दूर। दिन भर पपीता खाने मे भी कब्ज दूर

२३—अंगूर खाने तथा उसका रस पीने से भी कब्ज दूर और आंखो की ज्योति तथा चेहरे की कान्ति बढ़ती है और तुरन्त ही नये रक्त का संचार हो जाता है।

अमरूद—

२४—आधे सिर का दर्द—सवेरे उठ कर अमरूद तोड़ सिल पर रगड़ कर लुगदी बना मस्तक के दर्द वाले स्थान पर लेप करें दो दिन में लाभ।

२५—पागलपन—इलाहाबादी मीठे अमरूद ५०० ग्राम दिन के भोजन के बाद और २०० ग्राम शाम ४ बजे नमक काली मिर्च नीबू के साथ। समय ४० दिन रोग दूर।

२६—गठिया (अर्धांग वात)—अमरूद के पत्तों को कूट कर लुगदी बना गठिया की सूजन पर लेप कर दें सूजन दूर हो जायेगी।

२७—कांच निकलना—गुदा को अंगुली से अन्दर कर ऊपर से अमरूद के पत्तो की पुल्टिस बांध दी जाए तो गुदा ठीक हो जायेगी। कांच निकलना बन्द हो जायेगा।

२८—बवासीर की दवा—रात को दो सूखे अंजीर पानी मे भिगो कर चांद की चांदनी में रख सुबह खाकर ऊपर से ताजा गाय भैंस का कच्चा दूध पीए एक सप्ताह मे बवासीर का नाम नहीं रहेगा।

२९—कच्चे पपीते का रस मस्सो पर लगातार लगाये और प्रतिदिन दोपहर के समय ५०० ग्राम पक्का पपीता फल खाए मस्से दूर हो जायेंगे और बवासीर मिट जायेगी। मस्सो को अपने मूत्र से भी धोने से लाभ।

३०—सरसो के तेल को अंगूठे पर लपेट गुदा में रोज मालिश से भी बवासीर दूर।

परहेज—कोई भी गर्म चीज न खाय लाल मिर्च चाय काफी शराब अण्डे मीट चावल आलू अरबी तेल खटाई आदि।

पेट की सफाई के लिए हरी सब्जियों का प्रयोग अमरूद पपीता पालक मेथी सरसो टमाटर खीरा ककड़ी नीबू आदि का प्रयोग। कुंजल योनी एनिमा अग्निसार उड्डियान बंध।

३१—श्वेत कुष्ठ की दवा—अंजीर के पत्तो की लुगदी सफेद स्थान पर चालीस दिन बांधे इसके बाद ४० दिन तक अंजीर का दूध सफेद सफेद स्थान पर लगाए।

३२—पीलिया का शर्तिया इलाज—मीठे कंधारी अनार का रस। प्याला भर लोहे के बर्तन मे रात को छत पर रख दीजिए। प्रातः उसमे मिश्री (कुंजा) घोल लें। १५ दिन पीने से पीलिया बिल्कुल दूर। मूली कच्ची खाने से इसका रस पीने तथा पत्तो के खाने से भी एक हफ्ते मे पीलिया दूर

सामाजिक समरसता की खोज

—डा० धर्मचन्द्र वेदालंकार

आज अनास्था का युग है। पहले आस्थाओ का युग था तब हमारी समाज मे आस्था थी, उसकी मान्यताओ और परम्पराओ मे आस्था थी। उससे बढ कर शास्त्र मे आस्था थी। सबसे बढ़ कर ईश्वर मे आस्था थी। अतएव समाज और व्यक्ति आस्था और विश्वास के बल पर चल रहे थे। ऐसा नही था कि उस पुराने समय के समाज मे समस्याए नही थी। समस्याए थी लेकिन उनके समाधान भी उपस्थित थे। वह चाहे शास्त्रोक्त कथन रहे हो या बुजुर्गो की समझदारी या अपने भाग्य का भरोसा—इन सब चीजो के सहारे व्यक्ति, परिवार और समाज की सारी समस्यायें हल हो जाती थी। अब ऐसा कोई आधार हमारे पास नही रह गया है जिसके सहारे सामाजिक सघष को टाला जा सके। पहले चाहे शारीरिक सघष आज से कही ज्यादा था, लेकिन मानसिक सघष इतना प्रबल नही था। भौतिक दृष्टि से पहले का समाज चाहे जितना विपन्न था लेकिन मानसिक दृष्टि से वह पर्याप्त समरस था। बेशक उस समाज म शोषण का बरोकट क चक्र चलता था। बेकारी थी—भूख थी—सब कुछ था तदपि व्यक्ति व्यक्ति मे वग वग मे, जाति-जाति मे एक प्रकार का सामजस्य स्थापित था। हमारा लक्ष्य यह बिल्कुल नही है कि शोषण और उत्पीडन को अनदेखा करके समाज म सामजस्य स्थापित हो। ऐसा सामजस्य तो समाज की अधिक से अधिक समता पर ही आधारित हो सकता है।

हमारे आज क सघष या अनास्था और अविश्वास का मूल कारण क्या है? यह जानने की बात है। अब हमारे जीवन के मान मूल्य बदल रहे हैं। हमारी भारतीय संस्कृति त्याग मूलक थी। अतएव तब त्याग पर जोर था। समाज मे जो भौतिक सुख सुविधाओ का जितना ज्यादा त्याग करता था वह उतना ही सम्मान का भाजन होता था। उदाहरण के लिए सन्यासी या ब्राह्मण वर्ग को ले सकते हैं। समाज मे यदि उसको सर्वाधिक सम्मान प्राप्त था तो वह केवल उनके त्याग के ही कारण था। उस समाज मे विद्या विवेक का भी अपना महत्व था। विद्या को सबसे बडा धन उस जमाने मे माना जाता था। कहा जाता था कि 'विद्या धन सर्व धन प्रधानम्" अर्थात् विद्या ही सब से बडा धन है। विद्या से जो विवेक (समझदारी) जाग्रत होता है वह भी पुराने जमाने मे बहुत बडी बात थी। इसके अतिरिक्त सहनशीलता का बडा महत्व था। उसी को क्षमाशीलता या तपस्या कहा जाता था। उदारता के साथ दूसरे के अभ्युदय या अपराध को सहन करना बहुत बडी तपस्या समझी जाती थी। बलवान और वीर पुरुषों के लिए भी क्षमा भूषण स्वरूप थी। विनय शीलता का पुराने जमाने मे अपना बहुत बडा मूल्य था। जो व्यक्ति जितना अधिक विनयशील होता था वह उतना ही महान और समझदार समझा जाता था। घर परिवार, जाति और बिरादरी मे लोग उसी व्यक्ति का सम्मान करते थे जो सबको उचित सम्मान देता था। इसी को शील और शिष्टाचार कहा जाता था। पुराने जमाने में आचरण की शुद्धता या पवित्रता भी बहुत बडी बात थी। तब किसी भी सभ्य व्यक्ति म इन सभी गुणो का होना अनिवार्य था। सादगी पुराने युग का शृगार था। तन और मन की सरलता अपने आपमे देखते ही बनती थी। एक व्यक्ति को दूसरे के कथन पर पूरा-पूरा विश्वास रहता था। तब लोग अपने कथन और वचन का मूल्य भी मानते थे। जिस समाज के जीवन मूल्य इतने उच्च और उदार हों, उस समाज मे समरसता अवश्यम्भावी थी। वहा पर सघष और तनाव का अवसर कम से कम था।

आज स्थिति बहुत बदल गयी है। पहले का व्यक्ति जहा पर विनय सम्पन्नता होती था आज का व्यक्ति अहमन्य हो चला है। वह विनय और शिष्टाचार को आत्महीनता का पर्याय मान बैठा है। भौतिक समृद्धि ने उसके अह को उन्नत कर दिया है। सहनशीलता या क्षमाशीलता को वह अपनी सबलता न मान कर दुबलता मानता है। भ्रष्टाचार शिष्टाचार बन गया है। आचार-विचार का कोई मापदण्ड ही अब नही रह गया है। जिसको जो अच्छा लगता है वह वही करता है। उचित अनुचित, पाप पुण्य, अच्छाई बुराई का सब विवेक थोथरा हो गया है। मन वाणी की सरलता अब मूखता या गवारपन है। सभ्यता की पहचान तो यह है कि चाहे आपके मन मे कुछ भी क्यो न हो लेकिन उसे मुख पर न लाइये। पहले का व्यक्ति अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करके निर्विकार हो जाता था लेकिन अब का आदमी तो इतना व्यक्तिगत हो गया है कि वह अपने हर सुख-दुख को गोपनीय समझता है। तभी कुण्ठित रहता है। दूसरे का मान-सम्मान करना आज कल अपने स्वाभिमान के विरुद्ध समझा जाता है। सादगी अब शृगार नही अब तो वह अगार है। यदि कोई व्यक्ति सादा रहता है तो यह उसकी सज्जनता नही अपितु या तो निर्धनता है या कृपणता है या फिर असभ्यता है। आज व्यक्ति स्वय मे इतना सम्पूर्ण हो चला है कि वह दूसरो के साथ उठना बैठना हिलना मिलना अपनी शान के विरुद्ध समझता है। पहले का व्यक्ति समाज मे स्वय को अपूर्ण समझता था इसी लिए वह दूसरो की अपेक्षा का अनुभव करता था। लेकिन आज का व्यक्ति तो स्वय को सभी भाति स्वतन्त्र और स्वावलम्बी मानता है दूसरो के यहा आना जाना सुख दुख की बाते करना उसकी अहमन्यता को ठेस पहुचाती है। आज उसकी अस्मिता इतनी उतुग हो चुकी है कि उसके सामने सारा ही समाज बौना नजर आने लगा है। एक ओर उसका व्यक्तिगत हित-अहित है तो दूसरी ओर सारे समाज का अस्तित्व। पहले का व्यक्ति यह सोचता था कि मैं समाज के लिए क्या कर सकता हू उसे क्या दे सकता हू। आज का व्यक्ति तो केवल लेने की बात सोचता है देने की नही। इसीलिए सुख सुविधाओ और अधिकारो की एक अन्धी दौड लगी हुई है। पहले जीवन मे सतोष और समपण होता था। जो कुछ प्रयत्न पूवक सहज सुलभ होता था। पहले का व्यक्ति उसी मे सन्तुष्ट होकर अपने कम के प्रति समर्पित होता था। वह उसी को धम मानता था। उसमे घाटा उठाकर भी वह स्वय को लाभान्वित मानता था। तभी तो गीता म श्रीकृष्ण ने कहा था कि स्वधर्मे निधनं श्रेय परधर्मो भयावह। 'अपने कर्तव्य पालन के लिए मृत्यु भी वरेण्य है उससे विचलित या पथभ्रष्ट होकर जीना भी मरण के समान है। पर आज हमारे अन्दर कत्तव्य निष्ठा कहा है? वह सुख और शान्ति कहा है? कहा गया वह सतोष का परम धन? कहा गया अमृत तुल्य स्नेह सम्बन्ध।

आजकल कोई व्यक्ति अपने निर्धारित कर्म या व्यवसाय से सतुष्ट नही है। वह चाहे किसी भी पेशे का व्यक्ति हो और तो क्या अध्यापक वर्ग भी जो ब्राह्मण वग के अन्तगत आता है आज व्यवसायी हो चला है। उसका उद्देश्य भी मात्र धनाजन बन गया है दूसरे व्यवसायो की तो बात ही क्या है। हर व्यक्ति आज आपको प्रापर्टी डीलर मिलेगा, या बीमा कम्पनी का एजेन्ट या पुलिस का दलाल या इसे और भी सभ्य ढग से कहा जाये तो राजनैतिक मिलेगा। सर्वतोभावेन समर्पित होकर जीवन की कोई सृजनात्मक दिशा अब नहीं है। जीवन का कोई सुनिश्चित उद्देश्य नही है। कोई दिशा और दृष्टि नही है। जीवन मे खाली आर्थिक घूड दौड शेष रह गयी है। ऐसे मे क्या पाप पुण्य, होगा क्या उचित अनुचित होगा। कहा धैर्य और सतोष होगा? कहां क्षीरोज्जवल क्षमा-शीलता और सहन-शीलता होगी। तब व्यक्ति व्यक्ति या जाति जाति के सम्बन्ध कैसे मधुर रह सकते हैं। ऐसे समाज मे स्नेह और सहकार नही। सघष और तनाव ही इस समाज की नियति रहेगी। आस्था और विश्वास के स्थान पर तर्क और आलोचना ही व्यक्ति के सम्बल होगे। वह बजाय कुछ करने के कहने मे अब विश्वास रखता है। साहित्याचार्यों ने काव्य मे नवरसो का विधान किया था। शायद उनकी दृष्टि आलोचना रस पर नही पडी थी। यह काव्य और साहित्य का अभिनव रस है। और इसी रस में आज लोकरुचि है। शेष रस तो अब केवल साहित्य समीक्षा तक ही सिमट कर रह गये हैं। जो व्यक्ति स्वय कर्मण्य होता है उसे आलोचना मे नहीं सृजन मे आनन्द मिलता है। उत्तम सृजन स्वय मे सर्वश्रेष्ठ आलोचना है।

यह ठीक है कि समाज में आस्था और विश्वास के मान बिन्दुओ का ह्रास हुआ है। लेकिन वह इस सीमा तक तो अभी नहीं हुआ है कि उनका नाम ही निःशेष हो जाये। आज व्यक्ति के अपने अन्तर का स्रोत ही सूख गया है। जिस अतल जल से भक्ति और आस्था तथा सृजन की जलधाराए प्रवाहित होती हैं वह सरस हृदय तो आज मरूस्थल बन गया है। उसमें अब सुशील लाल जल नही केवल मृगमरीचिका का विभ्रम है। आस्था और विश्वास जहा पर व्यक्ति के व्यक्तिगत मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं, वही पर सामाजिक स्वास्थ्य के लिए भी वे हितकर हैं। आज हम मूल्यो के चौराहे पर खड़े हैं। एक रास्ता भार—

(शेष ८ पृष्ठ पर)

आदर्श-त्रैतवाद-३

—रार्जासिंह भल्ला

ओ३म् यह परमेश्वर है। यह सब ओ३म् है। ओ३म् यह अनुज्ञा है। अनुमति देना भी ओ३म का अर्थ हैं। पूज्य को कहना हो कि शास्त्र सुनाओ तो ओ३म् सुनाओ कहने से सुनाते हैं ओ३म् कह कर साम मन्त्रों को गाते है। याजक लोग ओ३म् शोम सुख कर कह कर यज्ञ उपकरणों की प्रशसा करते हैं। ओ३म् उच्चारण करके अध्वर्यु मन्त्र पाठ करता है। ओ३म् शब्द से ब्रह्मा कर्म करने की आज्ञा देता है। यहां आज्ञा अर्थ मे ओ३म् है। ओ३म् उच्चारण करके अग्नि होत्र की आज्ञा देता है। ओ३म् उच्चारण करके ब्राह्मण वेद का व्याख्यान करता हुआ यह चाहता है कि मैं ब्रह्म को प्राप्त होऊ इस प्रकार वह ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है इस प्रकार ओम्म् जाप ब्रह्म प्राप्ति का साधन है।

ओ३म् के आश्रय से पूर्ण ज्ञान प्राप्ति—

ऋग्भिरतं यजुर्भिरन्तरिक्ष सामभिर्यत्तत्कवयो वेदयन्ते तमोङ्कारेणैवायतनेनान्वेति विद्वान् यत्तच्छान्तमजरममृतमभयं परं चेति। प्रश्नो–५ ७ऋषि ने कहा कि ऋग्वेद अर्थात् ज्ञान काण्ड से इस लोक को और यजुर्वेद अर्थात् कर्मकाण्ड से आकाश मे निवास करने वाले अन्य लोको को और सामवेद मे जो कुछ प्राप्त होता है उसे पूर्ण ज्ञानी पुरुष जिन्होंने योग और समाधि से मद् विद्या को जान लिया है वह बता सकते है। इस अवस्था को ओंकार के आश्रय मे ही सब साधारण मनुष्य प्राप्त कर लेता। जिसमें शान्ति प्राप्ति होती है। अर्थात् फिर कोई इच्छा शेष नही रहती जिस ओर मन को आत्मा चाहे उस ओर मन जावे। न बुढापे का अवसर प्राप्त होता है मृत्यु से पृथक रहता है और निर्भय रहता है। और जो सबसे महान् है उसको प्राप्त कर लेता है।

दूसरा अध्याय

ईश्वर का स्वरूप

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥
ईशो० ८ ४०/८

सारे विश्व का आत्मा सब भूत प्राणियों का मूलाधार परम मौलिक सत्य और उपासको से प्राप्य पद वह परमेश्वर परि—सब ओर से—सर्वत्र अगात्—प्राप्त है। सर्वत्र विद्यमान है। वह दीप्तिमान है। काया रहित व्रण रहित और नस नाडियो से रहित है अर्थात् परम सूक्ष्म है—परम शुद्ध है। पाप से बिंधा हुआ नही है। सर्वथा निर्दोष है। भगवान् स्थूल सूक्ष्म और कारण इन तीनो शरीरो से रहित है। वह सर्वज्ञ है। मन को जानने वाला है। सर्वत्र प्रकट है। और स्वतन्त्र सत्ता है। उस स्वयम्भू परम पुरुष ने निरन्तर रहने वाले वर्षों के लिए ठीक ठीक वायु आदि को रचा। भगवान ने सभी पदार्थों और लोक लोकान्तरो को जैसे चाहिये वैसे रचे। यथा योग्य परिमाण मे क्रम मे नियम मे और देशादि मे कल्पित किए।

ईश्वर सर्वव्यापक जगत् नियन्ता—

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्। ईशो० । १ ।

यह जो दिखाई देने वाला तीनो लोको में जगत् है—सारा ब्रह्माण्ड है उस सारे मे परमात्मा अपनी शक्ति से विद्यमान है। उसके नियम नियन्त्रण मे यह सब ससार है। वही सारे विश्व में बसी हुई चेतना जगत् का आत्मा है। उत्पत्ति स्थिति और प्रलय उसी मूल सत्ता के आश्रित है। वह सब समर्थ सर्व शक्तिमान् भगवान् सारे ससार का स्वामी है तथा सचालक है। सब पदार्थ उसी के हैं। इस भावना मय त्याग से हे मानव तू पदार्थों को भोग सब भोग्य पदार्थ परमात्मा की देन जान। तू मत ललचा वस्तुओं के सग्रह सचय की लालसा मत कर तू विचार कर जरा देख तो सही यह पदार्थ तो भगवान् के हैं धन उसी का है लालच मत कर। यह धन तो कभी किसी के साथ नही गया और आगे भी किसी के साथ नहीं जायेगा। यह धन तो यहीं पड़ा रह जाएगा क्योंकि ये सब पदार्थ उसी परमेश्वर के हैं अन्य किसी के नहीं। ऐसी विचार बुद्धि से सग्रह की प्रवृत्ति को सयम में रखना चाहिये। ईश्वर को सर्वव्यापक और सब का स्वामी और जगत् नियन्ता मान।

ईश्वर अखण्ड अचल इन्द्रियातीत है।

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन् पूर्वमर्षत्। तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति। ईशो० । ४ ।

अखिल विश्व मे बसा हुआ उपास्य देव अचल है—वह स्वरूप से अचल है। एक है अखण्ड है। अद्वितीय है वह अपने स्वभाविक सकल्प बल से मानव मन से भी अधिक वेगवान् है प्रभु के स्वभाव की इच्छा अतुल वेगवती है। इस परमेश्वर को नेत्र आदि देव नही पहुच सके उसे पा नही सके वह इन्द्रियो से आगे गया हुआ है। व्यापक है—विद्यमान है। वह प्रभु इन्द्रियातीत है। दौडते हुए अन्यो को—वायु विद्युत आदि वेगवान शक्तियों को भी—वह भगवान लांघ जाता है। परन्तु स्वरूप से कूटस्थ है। उसमे—सर्व शक्तिमान् भगवान् के नियत नियम मे जीव कर्मों को धारण करता है। उसकी नियम नियति मे जन्म कर्म फल की व्यवस्था चलती रहती है। आकाश मे जो जल ठहरे जन्म जन्मान्तर को पाने वह मातरिश्वा जीवात्मा है।

ईश्वर अचल इन्द्रियातीत है—

तदेजति तन्नैजति तद् दूरे तद्वन्तिके। तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः। ईशो० । ५ ।

वह परमेश्वर तत्व हिलता है—अलौकिक क्रियावान् है वह अकम्प है—अपने स्वरूप में सदा स्थिर एक रस है। यह दूर है—अज्ञानियो के लिए दूर है—ढूढने के लिए इधर उधर जाना पडता है। इन्द्रियो से ग्रहण नही किया जा सकता। यह अत्यन्त समीप है—विश्व आत्मा है। आत्मा से ग्रहण किया जाता है। वह परमेश्वर इस दिखाई देने वाले जगत् के भीतर है वह अपनी सत्ता से जगत् मे विद्यमान् है भीतर भी है और बाहर भी ओत प्रोत है। वह परमेश्वर अलौकिकी स्वभाविकी क्रिया से युक्त है। वह स्वरूप से निश्चल है। उसमे देश काल कृत अन्तर नहीं है। केवल अज्ञान कृत अन्तर है वह परमात्मा आत्मा द्वारा जाना जाता है। वह स्वसत्ता भाव से सर्वव्यापक है।

परमात्मा निराकार है—

अशरीरं शरीरेष्वनवस्थेष्ववस्थितम्। महान्तं विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति। कठो० १।२ २२।

उस परमात्मा का शरीर नही अर्थात् न तो स्थूल शरीर है और न सूक्ष्म शरीर तथापि वह परमात्मा प्रत्येक शरीर मे रहता है। यह कार्य करता हुआ जगत् के अन्दर रहता है किन्तु फिर भी न काम करता हुआ पाया जाता है। परमात्मा की महानता की बड़प्पन की कोई सीमा नही है। वह सबसे बडा है। ससार की कोई वस्तु ऐसी नहीं जो उसके बाहर हो वह प्रत्येक के बाहर भीतर मौजूद है। हमारे भीतर उसकी विद्यमानता के कारण हम उसकी दृष्टि से बच नहीं सकते और क्योंकि वह हर जगह मौजूद है अत हम उसके राज्य से भाग कर भी कहीं नहीं जा सकते। जहा जायेंगे वहा व्यापक होने से वह पहले मौजूद रहता है। जब तक हमे उसके अस्तित्व का ज्ञान नही है तब तक हम पाप कर सकते हैं जब उसका ज्ञान हो जाता है तो पाप करने का साहस नही रहता। पाप करने की इच्छा नही होती। जीव स्वभाव से भययुक्त है। परमात्मा को व्यापक जान कर वह पाप करने से डर जाता है। जब उसके मन मे पाप का विचार आता है तो तुरन्त अन्दर से भय लज्जा और शका पैदा हो जाती है। ऐसी अवस्था मे मनुष्य पाप करने से बच जाया करता है। जब व्यक्ति पाप नहीं करेगा तो उसे शोक और भय लज्जा किस प्रकार हो सकता है।

(सारे जगत् का स्वामी) तीनों कालों मे रहने वाला ईश्वर आत्मा मे रहता है।

अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषो मध्य आत्मनि तिष्ठति। ईशानो भूतभव्यस्य न ततो विजुगुप्सते एतद्वै तत्।

(क्रमश)

स्वर्गीय सरदारी लाल वर्मा

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

रोम रोम में आर्यत्व की झलक दिखाई देती थी।
अति भक्ति भावनामयी अंग मे फड़क दिखाई देती थी।
पद्मासन लगा विमग्न हुए जब ईश्वर चिन्तन करते थे।
द्वेष भाव चिन्ता विकार इस तन से दूर विचरते थे॥

एक पल को भी ऋषि दयानन्द दिल से नही भुलाया।
वैदिक धर्म प्रचारार्थं जीवन का लक्ष बनाया॥
अनवरत कार्यरत लग्न शील ने पावन पथ अपनाया।
निन्दा स्तुति अपमान मान दुख सुख सारा बिसराया॥

भव्य भवन हनुमान रोड मे यज्ञशाला को बनवाया।
खम्बे-खम्बे पर पवित्र वेद मन्त्रों को लिखवाया॥
कथा कीर्तन महा सम्मेलन कवि दरबार लगाये।
ताल मृदंग चंग ढोलक वीणा बंसी बजवाये॥

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्षों तक प्रधान रहे।
रहे अग्रसर जीवन भर तक वर्मा जी निरभिमान रहे॥
वर्मा जी के जीवन की थी बात निराली सारी।
है लोकोक्ति पुरानी मथुरा तीन लोक से न्यारी॥

क्या उत्साह उमंग अंग ऊंचे उनके अरमा थे।
उर मे कटुभाव न किंचित थे वर्मा जी शुभ कर्मा थे॥
वेद धर्म के सजग प्रहरी मन वचन से सत धर्मा थे।
आर्य पुरुष परिश्रमी गुणादिक सरदारी लाल वर्मा थे॥

तेरह मई बानवे का आया था दिवस महा दुखदाई।
घर आंगन दीवार द्वार पर भारी उदासीनता छाई॥
यह जीवन क्षण भंगुर आकर क्रूर काल ने धावा बोला।
प्राण पखेरू निकल गये तज कर नाशवान तन चोला॥

इस जग में बिरले ही मानव सुख वैभव कीर्ति कमाते हैं।
अपने तप त्याग गुणादिक जग मे नाम अमर कर जाते हैं॥
जन-जन के प्रिय ऋषि भक्त का याद सदा शुभ काम रहेगा।
अमर हो गये आप जगत में वर्मा जी का नाम रहेगा॥

प० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा के तत्वावधान मे चरखी दादरी मे पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह १५ मई से १७ मई ९२ तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

ध्वजारोहण

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने १५ मई को प्रात ओ३म् ध्वजा रोहण किया। वक्ताओं ने प० गुरुदत्त जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनकी स्मृति को स्थायी बनाने के लिए प० गुरुदत्त विद्यार्थी भवन का निर्माण किया जाए जहां पंडित जी द्वारा लिखित पुस्तकों का प्रकाशन किया जाए।

वेद सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुए वेद सम्मेलन मे प० सुदर्शन देव, प० राजवीर शास्त्री, सम्पादक दयानन्द सन्देश एवं डा० महावीर मीमांसक आदि ने वेद स्वाध्याय व उस पर आचरण करने पर बल दिया।

गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन

कन्या गुरुकुल खरल, गुरुकुल कुम्भ खेड़ा के संचालक स्वामी व्रतदेव की अध्यक्षता मे रात्री को हुए गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन मे पूर्व सांसद श्री कपिल देव शास्त्री, आचार्य देव, गुरुकुल गौतमनगर तथा सर्वहितकारी के सम्पादक श्री वेदव्रत शास्त्री ने विचार व्यक्त किए कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही राष्ट्रीय समस्यायें हल हो सकती हैं।

अभूतपूर्व शोभा यात्रा

१६ मई को प्रात यज्ञ के बाद एक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। इस विशाल जलूस मे स्वामी सर्वानन्द, स्वामी आनन्दबोध सरस्वती स्वामी ओमानन्द, स्वामी सुमेधानन्द, प्रो० शेरसिंह आगे-आगे चल रहे थे। पीछे हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पंजाब आदि अनेक राज्यो की आर्य समाजो, आर्य संस्थाओं के नर-नारी व गुरुकुलो के कार्यकर्ता व ब्रह्मचारी चल रहे थे। प० गुरुदत्त विद्यार्थी की जय के नारो से आकाश गूंज रहा था। चरखी दादरी के इतिहास में यह अभूतपूर्व जलूस था। जनता ने स्थान-स्थान पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया।

नशा बन्दी सम्मेलन

नशाबन्दी सम्मेलन स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे तथा श्री हीरानन्द जी पूर्व मन्त्री के संयोजन मे सम्पन्न हुआ। इसमे श्री विजयकुमार पूर्व उपायुक्त, सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह आदि नेताओं ने भारत तथा हरयाणा सरकार को सचेत किया कि यदि शराब आदि नशों पर प्रतिबन्ध न लगाया गया तो जहां जनता का नैतिक पतन होगा वहां आर्थिक ढांचा भी बिगड़ जायेगा। आर्य समाज की ओर से सरकार की इस अकल्याणकारी नीति के विरुद्ध बड़े से बड़ा बलिदान देकर आज से संघर्ष करने की तैयारी प्रारम्भ की जा रही है।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के अवसर पर जिन आर्य महानुभावो ने आर्य समाज की सेवा मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, उनका सार्वजनिक अभिनन्दन एक शाल तथा प्रमाण पत्र भेंट करके किया।

१७ मई को आर्य महिला सम्मेलन कुमारी निर्मला देश पाण्डेय की अध्यक्षता में हुआ। इसमे अनेक विदुषी बहनों ने महिलाओं के उत्थान के लिए उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किए।

दोपहर बाद सार्वदेशिक आर्य वीरदल सम्मेलन के प्रधान संचालक आचार्य देवव्रत की अध्यक्षता और प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार के संयोजन मे सम्पन्न हुआ। इसमें मुख्य वक्ता श्री सोमपाल सदस्य राज्य सभा ने सभा कार्यालय रोहतक में निर्माणाधीन प० रघुवीर सिंह शास्त्री यज्ञशाला को पूरा करने के लिए १० हजार अपनी ओर से तथा ४० हजार अन्य दानियों से संग्रह करके भेजने की घोषणा की। इसी प्रकार हरयाणा के कृषि राज्य मन्त्री श्री बच्चनसिंह जी आर्य ने अपने ऐच्छिक कोष से ११ हजार रुपए यज्ञशाला हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भेजने की घोषणा की।

श्री राममेहर एडवोकेट ने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के कुलपति श्री ओमप्रकाश चौधरी के सन्देश के आधार पर आर्य जनता को बताया कि सार्वदेशिक सभा, परोपकारिणी सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधानों के परामर्श से दयानन्द पीठ के अध्यक्ष को मनोनीत किया जावेगा और विश्वविद्यालय छात्रावास का नाम प० गुरुदत्त विद्यार्थी छात्रावास रखा जावेगा। उन्होने यह भी बताया कि विश्वविद्यालय में भविष्य मे हिन्दी के ही स्टेनों तथा स्टेनो-टाइपिस्ट की भर्ती की जावेगी उन्होंने यह भी घोषणा की कि विश्वविद्यालय मे हरयाणा अकादमी की स्थापना करके प० बस्तीराम, प० तेजसिंह, प० ईश्वर सिंह, स्वामी नित्यानन्द, कु० जोहरी सिंह, श्री पृथ्वीसिंह बेधड़क आदि कवियो के साहित्य का संग्रह किया जावेगा।

१७ मई रात्रि को आर्य कवि सम्मेलन का आयोजन सुप्रसिद्ध आर्य कवि श्री सारस्वत मोहन के संयोजन मे किया गया। कवि महानुभावो ने प० गुरुदत्त विद्यार्थी तथा आर्य समाज की महत्ता पर प्रभावशाली कविताएं सुना कर जनता को आनन्दित किया।

आर्य समाज परमानन्द बस्ती बीकानेर का निर्वाचन

आर्य समाज, परमानन्द बस्ती, बीकानेर का निर्वाचन डा० रवीन्द्र जी कुल श्रेष्ठ की प्रधानता मे सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ।

प्रधान—डा० रवीन्द्र, जी कुल श्रेष्ठ, वरिष्ठ उपप्रधान—डा० जयकृष्ण, उपप्रधान—डा० नरेन्द्रनाथ जी सचदेवा, उपप्रधान—मा० रामनारायण, उपप्रधान श्रीमती सुभाग मुखी जी, मन्त्री—डा० शिवनारायण आर्य, उप मन्त्री—श्री बद्री लाल, श्रीमती द्रोपदी देवी जी, प्रचार मन्त्री—श्री योगेन्द्र कृष्ण, कोषाध्यक्ष—श्री सेठ छगनलाल जी आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री सीताराम जी शर्मा, आर्यवीर दल अधिष्ठाता—श्री भागीरथ सिंह व श्री राजूराम एवं यज्ञ अधिष्ठाता—श्री हरभगवान जी।

(पृष्ठ १ का शेष)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव एवं महामन्त्री डा० धर्मपाल ने श्री यश के निधन को एक अपूर्णीय क्षति बताया।

श्री यश का ज म १७ जून १९१८ को जल लपुर छटटन में हुआ था। वे आर्य समाज के सुप्रसिद्ध स य सी महात्मा म न द स्वामी के सुपुत्र थे। लगभग ११ वर्ष की अल्पायु मे एक सिपाही की पि ई के क ण उ हे गिरफ्तार किया गया था। आजादी की लडाई मे उ होने बढ चढ कर भाग लिया था और अनेक बार गिरफ्तार भी किया गया। भारत छोडो अ दोलन मे भाग लेने की वजह से १९४२ म वे एम० ए० की पर क्षा न दे पये।

स्वत त्रता प्राप्ति के बाद वे पज ब मे प्रत र सिंह करो ज्ञा नी गुरुव म सिंह व ज्ञान जल सिंह क म त्री मण्डल म कई वर्षों तक म त्री भी रहे गत चुनाव मे वे ज ल धर क्षेत्र से लोक सभा के सदस्य निर्वाचित हुये थे

श्री यश जाल धर से प्रकाशित होने वाले उर्दू मिलाप व हिं दी मिलाप के सम्प दक थे। उनके अनेक कह नी सग्रह भी प्रक शित हो चुके हैं।

श्री यश का प र्थिव शरीर ज लधर मे मिल प भवन मे अं तिम दर्शनो के लिए रख गया था। के द्रीय कृषि म त्री श्री बलर म जाखड अखिल भा तीय काग्र स कमेटि के सयुक्त सचिव श्र डी० प० य श्र मती जे द्र कुमारी आदि ने मिल प भवन में उ हे अं तिम श्रद्धाजलि द

२ जून को पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ ज ल धर मे उनका अ येष्टि कर दी गई उनके पुत्र विश्वक ति ने मुखाग्नि द अ येष्टि क समय पजाब म त्री मण्डल के सदस्य पूर्व विदेश म त्री इ द्रकुम गुजराल व अ य गणम य लोग उपस्थित थे।

श्री यश के निधन से स हि यक सामाजिक व र जनतिक जगत की अपार क्षति हुई है उनके परिवार मे एक प त्नी तीन पुत्रियाँ व एक पुत्र हैं समस्त अ य जगत की ओर से श व स त प्त प रि व र को हा र्दिक सवेदना एव दिवगत को विनीत श्रद्धाजलि।



200/- रुपये की खरीद पर 1 सुधांशु जी का टेप रिकार्डर कैंसेट या तोलिया







आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 11-12-6-1992 Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल-११०२४/९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) १३९/९२
साप्ताहिक "आर्यसन्देश" १४ जून, १९९२

(पृष्ठ ४ का शेष)

भारतीय चिरतन मूल्यो का है जो कि हमे अब अप्रासगिक दिखाई पडता है लेकिन पूर्णतया त्याज्य भी नही प्रतीत होता। दूसरा रास्ता आधुनिक पाश्चात्य सस्कृति का है जिसकी ओर हम दिन प्रतिदिन लालायित होकर बढते चले जा रहे हैं। इन दोनो दृष्टियो या सस्कृतियो के जीवन मूल्यो मे धरती और आकाश का अन्तराल है। एक का रास्ता त्यागपूवक सरलता युक्त जीवन यापन है तो दूसरा रास्ता प्रदशन प्रियता के साथ कृत्रिम और कुछ सुविधा सम्पन्न जीवन यापन का है। एक मे अपनाव है तो दूसरे मे तनाव है। एक मे सहकार है तो दूसरे मे सघष है। एक मे स्नेह है तो दूसरे मे स्वार्थ है। एक मे ममता है तो दूसरे मे समता की दुहाई है। आज का सामाजिक सघष केवल व्यक्ति व्यक्ति का सघष न होकर दो विरोधी व्यवस्थाओं का सघष है। अब देखना यह है कि मानव कौन से पथ को अपनाता है। एक मे शान्ति और सतोष है तो दूसरे मे विग्रह और सघर्ष है। हमारा विश्वास यही है कि मनुष्य मूलत शान्तिकामी है। सघष उसकी विवशता हो सकता है कामना नही। अतएव देर सवेर वह प्रथम पथ का ही वरण करेगा और अपने जीवन को समरस बनाएगा।

श्री शिवकुमार गोयल सम्मानित

सुप्रसिद्ध पत्रकार व लेखक श्री शिवकुमार गोयल को हापुड में ३१ मई को हिन्दी पत्रकारिता दिवस पर 'कैलाश-श्री' प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन ने श्री गोयल को अग्रेजी हटाओ अभियान का सेनानी एव एक जागरूक पत्रकार बताया।

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख त्योहारो व पर्वों से सम्बन्धित रचनाए कृपया अक प्रकाशन से एक मास पूव भिजवाये।

—आय समाजो आय शिक्षण सस्थाओ आदि के उत्सव व समारोह के कायक्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात् यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करावें।

सभी रचनायें अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस मे टाइप की हुई होनी चाहिए।

—अस्पष्ट लिखी अथवा देर स प्राप्त सामग्री का उपयोग करना सम्भव न हो सकेगा।

—पता बदलने अथवा नवीकरण शुल्क भेजते समय ग्राहक सख्या का उल्लेख करते हुए पिन कोड नम्बर भी अवश्य लिखें।

—आय सन्देश का वार्षिक शुल्क २५ रुपये तथा आजीवन शुल्क २५० रुपये है। आजीवन ग्राहक बनने वालो को ५० रुपये मूल्य का वैदिक साहित्य अथवा आर्य सन्देश के पुराने विशेषाक नि शुल्क उपहार स्वरूप दिए जाएगे। स्टाक सीमित है।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अक न मिलने पर दूसरी प्रति के लिए पत्र अवश्य लिखे।

—आर्य सन्देश के लेखकों के कथनो या मतो से सहमत होना आवश्यक नही है। —पाठको के सुझाव व प्रतिक्रिया आमन्त्रित हैं।

कृपया सभी पत्र व्यहावर व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेजें।

—सम्पादक

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रस, पटौदी हाउस दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१ फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी०(एल१०२४/१-९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५, अंक ३० | रविवार, २१ जून १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

विकासपुरी मे आर्य समाज मन्दिर गिराया गया—

आर्य समाज देश व्यापी आन्दोलन चलाएगा

नई दिल्ली १४ जून डी० डी० ए० द्वारा विकास पुरी, दिल्ली मे आर्य समाज मन्दिर तोड़े जाने के विरोध मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आज मन्दिर की क्षतिपूर्ति एव घटना की पूरी जाच कराने की सरकार से जोरदार मांग की।

स्वामी जी ने गृह मन्त्री भारत सरकार एव दिल्ली के उपराज्यपाल से मन्दिर तोड़ने वाले अधिकारियों के विरुद्ध तुरन्त कार्यवाही करने की भी माग की। स्वामी जी मामले की जाच करने के बाद एक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित कर रहे थे।

उल्लेखनीय है कि आर्य समाज मन्दिर के लिए डी० डी० ए० ने जो शर्तें रखी थी समाज के अधिकारियो ने उन्हें पूरा करते हुए लिखित आश्वासन भी दिया था तथा बैंक मे जमा कराई गई राशि की सूचना भी दे दी थी। डी० डी० ए० व समाज के बीच बहुत पहले से पत्राचार चल रहा था और २४ जनवरी को डी० डी० ए० के कार्यालय ने सभा के प्रधान को सम्बन्धित भूमि के नियमित करने सम्बन्धी एक पत्र भी लिखा है परन्तु बिना किसी पूर्व नोटिस के २९ मई को पुलिस के सरक्षण मे बुलडोजर लाकर डी० डी० ए० ने आर्य समाज मन्दिर को तोड़ दिया। साथ ही जनता के कल्याण के लिए चलाए जा रहे औषधालय को भी जबरदस्ती गिरा दिया गया। पवित्र यज्ञशाला के खम्बों को भी गिराने का प्रयत्न किया गया था और यदि वे गिर जाते तो अनेक मौतें हो सकती थी।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने बताया कि इस मन्दिर का उन्होंने स्वय शिलान्यास किया था, उस समय सासद श्री सज्जन कुमार एव अखिल भारतीय सनातन धर्म सभा के प्रधान श्री रमाकान्त गोस्वामी भी उपस्थित थे।

स्वामी जी ने कहा कि राजधानी मे इस समय चार सौ से अधिक ऐसे स्थल हैं जहा लोगो ने गैर कानूनी कब्जे करके कबरें एव मजारे बनायी हैं। परन्तु डी० डी० ए० के अधिकारियो ने कभी उनको नोटिस देने का साहस नही दिखाया और विकासपुरी में कायदे कानून से बनाये जा रहे आर्य समाज के मन्दिर को डी० डी० ए० ने तोड़ दिया।

स्वामी जी ने सरकार को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि यदि आर्यसमाज की माग पर तुरन्त ध्यान न दिया गया तो देशव्यापी आन्दोलन छेड़ दिया जायेगा और बड़े से बड़ा बलिदान देकर भी आर्य समाज अपने धर्म स्थल की रक्षा करेगा।

इबादतगाहों की सुरक्षा के लिए—

भारत में मस्जिदों की गिनती की योजना

नई दिल्ली इस्लामिक हिस्ट्री एण्ड रिसर्च काउन्सिल (आई० एच०आर० सी०) ने भारतीय उपमहाद्वीप की इस्लामी पुरातात्विक इमारतो, ऐतिहासिक प्रतीकों, धार्मिक सगठनों, सास्कृतिक यादगारो की खोज और उसकी सुरक्षा के क्रम मे यहा स्थित मस्जिदो के सर्वेक्षण की एक योजना शुरू की है। सर्वेक्षण के बाद यह सगठन 'भारतीय मस्जिद परिषद' का गठन करेगी। उल्लेखनीय है कि इसी नाम के लन्दन स्थित सगठन ने 'ब्रिटेन मुस्लिम ससद बनाने मे एक अहम भूमिका अदा की है, इसलिए उम्मीद की जा रही है कि भारत मस्जिद सगठन' भी भविष्य मे कोई ऐसा ही कदम उठायेगा।

मस्जिद सर्वेक्षण योजना को 'मस्जिद गणना (भारत)' नाम दिया गया है, इस समय लखनऊ, हैदराबाद, केरल और पश्चिम बगाल की मस्जिदो का सर्वेक्षण किया जा रहा है, जिलेवार सर्वेक्षण के बाद प्रदेश सर्वेक्षण की एक विस्तृत रिपोर्ट मे २१ धाराओ पर आधारित जानकारिया होगी, पूरा ब्यौरा कम्प्यूटीकृत कर दिया जायेगा और उसकी पचापी की चार प्रतियां तैयार की जायेंगी, जिसमे से एक-एक प्रति भारतीय पुरातत्व विभाग और मुस्लिम वक्फ बोर्ड को दी जायेंगी, एक प्रति सर्वेक्षण करने वाला सगठन खुद रखेगा और चौथी पलापा सऊदी अरब स्थित 'इस्लामी सोसायटी आफ स्टेटिकल साइन्स' को भेज दी जाएगी।

सर्वेक्षण योजना के बारे में आई० एस० इस० ओ० एस० के अध्यक्ष प्रो० मुनीर अहमद ने बताया कि सर्वेक्षण रिपोर्ट तैयार करने के बाद विभिन्न मस्जिदों की सुरक्षा और उनकी कृषि भूमि की आय से एक विस्तृत कार्यक्रम बनाया जायेगा तथा मस्जिदो का नैतिक चरित्र बहाल करने के साथ-साथ उन्हे शिक्षा केन्द्रों मे परिवर्तित करने की भी कोशिश की जाएगी। इस समय इस प्रकार का सर्वेक्षण इण्डोनेशिया, अमरीका, दक्षिण अफ्रीका और ब्रिटेन मे पूरा हो चुका है तथा मालद्वीप, मारिशस, भारत, कजाकिस्तान, तुर्कमानिया, अजरबेजान, आर्मीनिया, पाकिस्तान, और अफगानिस्तान मे सर्वेक्षण का काम शुरू हो चुका है, जो दिसम्बर के आखिरी हफ्ते तक पूरा हो जायेगा।

'मस्जिद गणना' का मुख्य दफ्तर हैदराबाद में और शाखाए पूरे देश की प्रदेशीय राजधानियों मे कायम की गई हैं, एक अनुमान के मुताबिक तीन से पाँच वर्षों की अवधि तक यह योजना पूरी हो जाएगी, मस्जिदों की तस्वीरों का एक अलबम प्रकाशित करने की योजना पर भी विचार किया जा रहा है।

सर्वेक्षण के समय सम्बन्धित व्यवस्थापक या मोतवल्ली को २१ धाराओं पर आधारित एक शोध फार्म दिया जा रहा है, जिसमे विस्तृत पता, मस्जिद का नाम स्थापना, सस्थापक, आय-व्यय सम्बन्धित ब्यौरे, सम्बन्धित व्यक्ति, सरकारी सरक्षण, जायदाद की हैसियत, स्थिति, स्थापत्यकला के हवाले, वर्तमान स्थिति, गुम्बद, मीनार, मेहराब छत, रोशनदान, आगन चल-अचल सम्पत्ति का विस्तृत विवरण दर्ज किया जाएगा। ब्यौरे मे ऐतिहासिक महत्व, मुकदमे और मस्जिद के होने की गवाही के तौर पर पाच गवाहिया भी ली जायेंगी।

सूत्रों के अनुसार इस योजना पर पाच वर्षों मे छ करोड़ रुपये का खर्च आएगा। कोष के लिए सगठन ने भारत के वाहैसियत लोगो से सहयोग की अपील की है, बिहार में इस योजना के कार्यान्वयन का जिम्मा 'नेशनल इस्लामिक लिंक' ने लिया है।

डा० कासमी का कहना है कि इबादतगाह विधेयक पारित होने के बाद इस योजना पर काम करना और जरूरी हो गया है, ताकि जिस मकसद के लिए धर्मस्थल सुरक्षा विधेयक पारित किया गया है, वह पूरा हो सके। डा० कासमी का मत है कि सिखो ईसाइयो और हिन्दुओ को भी अपनी-अपनी इबादतगाहो से सम्बन्धित ऐसी सर्वेक्षण रिपोर्ट तैयार कर लेनी चाहिए ताकि भविष्य में कभी कोई धर्मावलम्बी किसी दूसरे धर्म के पूजा स्थलो के लिए प्रश्न चिन्ह बनाने की जुर्रत न करे।

—साभार सण्डे मेल

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

एक ऋषि भक्त के जीवन के कुछ संस्मरण

—जगतराम आर्य

जिला होशयारपुर (पजाब) के एक डी० ए० वी० स्कूल मे शिक्षा प्राप्त प० तुलसीराम जी जो ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त थे, पक्के आर्य समाजी थे। उनकी अनन्य कृपा से जैसे वे स्वय आर्य समाज के रग में रगे हुए थे उसी तरह मुझे भी उसी रग मे रगने का काम किया।

लाहौर आने के बाद १९२८ मे आर्य समाज मन्दिर वच्छोवाली का सदस्य बन गया जो हमारे निवास के निकट ही पडता था। महाशय कृष्ण जी तथा प० ठाकुरदत्त अमृतधारा वाले उसी आर्य समाज मे आते थे।

अमर शहीद भगतसिह जी से सम्पर्क हो गया। उनके प्रत्येक जलसे जलूस और मीटिंगो मे जाता रहा। अग्रेजो के बुत, जाज एडवड आदि के तोडने, शहीद भगतसिह के साथ जाता रहा और पुलिस से लाठिया भी खाई। साइमन कमीशन के आने पर पजाब केसरी लाला लाजपतराय जी के साथ दाए-बाए शहीद भगतसिह जी, विद्यारत्न और मैं तीनो लाला जी के सरक्षक के तौर पर साथ-साथ चल रहे थे और "साइमन गो बैक" के नारे लगा रहे थे। लाला जी को साडरस ने सिर पर डण्डे मारे और पुलिस ने हमारी टागो पर और पीठ पर लाठिया बरसाई। ऐसी भयामय स्थिति मे लाला जी ने आत्मिक बल के कारण जलूस का रूट पूरा किया।

विद्या नाम की एक विवाहिता लडकी उसके पति श्रीराम के सीधे और भोलेपन का फायदा उठाते हुए विद्या को फुसला कर अपने यहा जफर भाटी दरवाजे ले गया। जान जोखिम मे डाल कर दो महीने मे विद्या को वापस लाकर पुन श्रीराम के घर बसा दिया।

दूसरी कुवारी लडकी विमला जो धर्मवीर की बहिन थी। धर्मवीर वीरभारत दैनिक मे काम करते थे और गली मुज कुटा मे रहते थे। जहा केवल दो मकान ही हिन्दूओं के थे। शेष सभी मुसलमानो के मकान थे। विमला को फुसला कर निकाल ले जाने की तैयारी मे थे। धर्मवीर से सम्पर्क करके सात दिन के अन्दर ही विमला की शादी एक बुकसेलर से कर दी गई थी।

एसेम्बली के चुनाव मे देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी के पक्ष मे ८ दिन इतना काम किया था कि ८ दिन तक घर भी नही जा पाया। मेरे घर वालो को कुछ पता नही था। वे अत्यन्त दुखी और परेशान रहे।

१९४७ में सिख भाईयों की बचा कर डी० ए० वी० कालेज कैम्प मे पहुचाया। यह बहुत खतरनाक काम था। इसी काम मे मेरा एक साथी किशोरी लाल मुसलमानो के हाथो मारा गया।

कोयटा भूकम्प से पीडित आए लोगो की हर प्रकार से सेवा प्रबन्धक आर्य समाज की ओर से रेलवे स्टेशन पर विशेष रूप से की।

नोट—लाहौर मे स्वामी वेदानन्द जी महाराज तथा स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज से विशेष सम्पर्क तथा उनकी छत्र छाया रही।

दिल्ली १९४७ :

दिल्ली आकर निकटवर्ती आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल का सदस्य बन गया। बाद मे गाधीनगर दिल्ली ३१ में निवास होने पर घरो मे पारिवारिक सत्सग करते रहे। उसके बाद एक बारात घर मे साप्ताहिक सत्सग करते रहे। उसके बाद ४०० गज का एक प्लाट लेकर आर्य समाज मन्दिर की नींव रखी। अब बहुत सुन्दर आर्य समाज मन्दिर, गाधीनगर प्रसिद्ध है।

महावीर चौक गाधीनगर से लेकर शाहदरा बाबूराम स्कूल तक एक मील लम्बा मार्ग शाहदरा रोड का नाम "प० लेखराम मार्ग" के पत्थर लगवाए। इस के लिए बहुत सघर्ष और प्रयास करना पडा।

आर्य समाज मन्दिर गाधीनगर मे आने के लिए सीधा रास्ता बाजार से मन्दिर तक नही था। उसके लिए दो वर्ष तक कोर्ट मे केस लडा।

एक सरदार का नाजायज खोखा बना हुआ था, लडाई-झगडा होता रहा। मुझे जान से मारने की धमकी दी गई। मैंने कहा—"आर्य नही डरते हैं जमाने में किसी से। जो करना हो कर लो खुशी से।' अन्त मे उस रास्ते का नाम "आर्य समाज मन्दिर मार्ग' के नाम से प्रसिद्ध है और पत्थर लगा हुआ है।

पांचवी कक्षा तक आर्य पुत्री पाठशाला की स्थापना की। नगर निगम से मान्यता प्राप्त है। यहा धर्म शिक्षा पढाई जाती है। अध्यापिकाओ को सत्यार्थ-प्रकाश की परीक्षा अनिवार्य रूप से देनी होती है।

गाधीनगर के बडे थाने मे साहबसिह एस० एच० ओ० के हाथो से थाने के बडे हाल मे महर्षि दयानन्द का बडे आकार का फ्रेम किया हुआ फोटो लगवाया।

सनातन धर्म के वार्षिकोत्सव गाधीनगर मे उत्सव के सयोजक से घनिष्ठता होने के कारण सनातन धर्म के प्रसिद्ध विद्वान एव नेता स्वामी हर मिलापी जी महाराज की उपस्थिति मे मच पर महर्षि का बडा फोटो और फोटो के आगे चारो वेद रखे गये तथा वेदो वाले का थोडा परिचय भी कराया गया और पण्डित मदन मोहन मालवीय जी जो विश्व भर मे सनातन धर्म जगत के सबसे बडे नेता थे उनके शब्द जो लाहौर मे एक बडी सभा मे कहे थे और मैंने सुने थे दोहराए गए—'सनातन धर्म एक हरी भरी लहलहाती खेती है और आर्य समाज इसकी बाड है।"

गाधीनगर दिल्ली मे डी० ए० वी० स्कूल की स्थापना की। छात्र अधिक हो जाने पर एक के दो स्कूल करने पडे। प्रत्येक शनिवार को प्रात काल स्कूल मे हवन यज्ञ का कार्यक्रम रहा है।

हरिजनो की बस्ती मे हवन यज्ञ के साथ वैदिक सत्सग तथा आर्य समाज का प्रचार उन्ही का बना प्रसाद बाटा जाता रहा।

महर्षि दयानन्द लिखित आर्योद्देश्यरत्न माला तथा स्वमन्तव्यामन्तव्य विचार के साथ हजार ट्रैक्ट बांटे गये तथा "सत्यार्थ प्रकाश' शौक से पढ़ने वालों को सत्यार्थ प्रकाश" मुफ्त दिए गए।

यमुना पार पूर्वी दिल्ली में वेद प्रचार मण्डल बनाया गया। उसके द्वारा आर्य समाज का प्रचार प्रसार होता रहा।

१९८१ मे गाधीनगर आर्य समाज मे दो प्रतिज्ञाए की गयी—१ जहां से हिन्दी भाषा में छपा हुआ निमन्त्रण आएगा केवल वहा ही जाऊगा चाहे कितनी ही घनिष्ठता व रिश्तेदारी क्यो न हो। ११ वर्ष से इस प्रतिज्ञा पर कटिबद्ध हू।

२—किसी भी आर्य समाज का पद अधिकारी नही बनूगा। बिना पद के आर्य समाज की पूरी-पूरी सेवा करूगा क्योंकि आर्य समाज को मैं अपनी मा समझता हू।

१९७५ मे रामलीला मैदान दिल्ली मे आर्य समाज स्थापना शताब्दी सार्वभौम का महान समारोह हुआ। लाला रामगोपाल जी शाल वाले सार्वदेशिक सभा के प्रधान (आज के श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती) ने जो-जो काम मेरे जिम्मे लगाए बडी तन्मयता और लगन से पूरे किए। तदर्थ स्वामी जी महाराज ने प्रशस्ति पत्र मुझे दिया।

आर्य समाज रघुबरपुरा तथा आर्य समाज गाता कालोनी दोनो ही नये आर्य समाज स्थापित हुए थे। विधिवत और नियम उपनियम अनुसार शुरू मे काम जमाने के लिए स्वामी जी महाराज ने मुझे आदेश दिया। दोनो आर्य समाजो की सेवा की और सुचारू रूप से काम चलाया गया।

प्रीत विहार, दिल्ली ९२ मे आर्य समाज मन्दिर का निर्माण कार्य चल रहा है,। "सी" ब्लाक के बराबर वाली रोड का नाम "आर्य समाज मार्ग" कर दिया गया है। दोनो ओर से मोटा लिख कर पट लगा दिए हैं।

आर्य समाज गाधीनगर जिसकी स्थापना मेरे द्वारा हुई थी एक दिन प्रात. काल आर्य समाज मन्दिर जो बहुत ही सुन्दर बना हुआ है। मैं अकेला ही आर्य समाज का कोई कार्य कर रहा था। एक साधू आकर गेट के बाहर खडे हो गए। मैंने बडे ध्यान से देखा तो लगा यह तो स्वामी दयानन्द जो महाराज हैं। यहा कैसे आ गए ? मैं दौडा हुआ गेट पर आया। स्वामी जी महाराज के चरण स्पर्श किए। मैंने कहा—अन्दर हाल मे चल कर बैठें। स्वामी जी ने कहा—"यह स्थान सुन्दर है यही बैठेंगे। मैं स्वामी जी के चरणो मे बैठ गया। स्वामी जी ने लगभग ५-७ मिनट बातें की। इतने में स्वप्न भग हो गया। स्वामी जी महाराज के दर्शन

(शेष पृष्ठ ६ पर)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्यसन्देश

श्री रतनचन्द सूद दिवंगत

सुप्रसिद्ध उद्योगपति, समाज सेवी, मानवतावादी श्री रतनचन्द सूद का १३ जून १९९२ को निधन हो गया। लोदी रोड श्मशान घाट पर उनका अन्तिम संस्कार रविवार १४ जून को किया गया। १६ जून को साय ६ बजे उनके गोल्फ लिंक्स निवास पर चौथा एव शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ।

श्री रतनचन्द जी सूद दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान रहे हैं। वे टकारा मे महर्षि दयानन्द जन्म स्थान—ट्रस्ट के अध्यक्ष थे। विनयनगर आर्य समाज मन्दिर में उनके नाम से एक विद्यालय चल रहा है। उन्होंने सदैव धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं, गुरुकुलो, कालेजो, डी० ए० वी० संस्थाओ, शुद्धि सभा, दलितोद्धार सभा, केन्द्रीय सभा, सार्वदेशिक सभा, प्रादेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा की दिल खोल कर सेवा की।

शान्तिमय यज्ञ मे सर्वश्री रामनाथ सहगल, डा० धर्मपाल,, श्री वीरेन्द्रप्रताप चौधरी, श्री भटनागर, श्री केदारनाथ साहनी, श्री आर० एल० भाटिया, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री सरदार स्वर्णसिंह ने उनको श्रद्धाजलि अर्पित की तथा परिवार के लिए सुख समृद्धि की कामना की।

श्री रतनचन्द सूद की स्मृति में सभी आर्य समाजो की ओर से श्रद्धांजलि सभा आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे शुक्रवार १९-६ ९२ को साय ५-३० बजे होगी।

—विमलकान्त शर्मा



पृथ्वी सम्मेलन

पिछले दिनो रियो-डी जेनेरो मे पृथ्वी सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस सम्मेलन मे विश्व भर के राष्ट्रीय अध्यक्ष सम्मिलित हुए थे। इस सम्मेलन को आयोजित करने का निश्चय ही विशेष महत्व का है। पिछले कुछ वर्षों से वैज्ञानिक एव पर्यावरण विशेषज्ञ चेतावनी देते आ रहे हैं कि यदि समय रहते सावधानी न बरती गई तो दक्षिण ध्रुव के ऊपर जो ओजोन परत मे छेद हुआ है, उसका दायरा बढ़ जाएगा तथा जो सूर्य हमे शक्ति, ऊर्जा, जीवन, प्रकाश देता है उसकी किरणे सीधे हमारे ऊपर आक्रमण करेंगी तो वे प्राणदायी होने की अपेक्षा घातक होंगी। वातावरण एव पर्यावरण की सुरक्षा हमारा सभी देशो का पहला कर्त्तव्य होना चाहिए। पर्यावरण प्रदूषण पिछले सालो में बहुत अधिक बढा है और यदि इसकी यही गति रही तो वह दिन दूर नही जब मानवता इस पृथ्वी से लुप्त हो जाएगी। वेद का मन्त्र है—ओ३म् द्यौ शान्ति रन्तरिक्ष शान्ति पृथिवी शान्तिराप, शान्ति रोषधय शान्ति। वनस्पतय शान्ति विश्वे देवा शान्ति ब्रह्म शान्ति सर्वं शान्ति शान्ति रेव शान्ति, सा मा शान्तिरेधि। इस वेद मन्त्र मे यही कामना की गई है कि प्रकाशमान सूर्य सुखदायक हो, अन्तरिक्ष सुखदायक हो, भूलोक सुखदायक हो, सब वृक्ष वनस्पति सुखदायक हो। उससे भिन्न सब ही सुखदायक हो। स्वय शान्ति भी मुझे शान्ति देवे। वैदिक धर्मानुयायी पर्यावरण की शुद्धता की कामना करते हैं, तो उनका कर्त्तव्य भी है कि वे पर्यावरण की शुद्धता के लिए कार्य भी करें। प्रदूषण निवारण का सर्वश्रेष्ठ उपाय अग्निहोत्र है। इसका प्रभाव तुरन्त होता है। भोपाल गैस काण्ड के समय एक दम्पत्ति ने सूझ बूझ से काम लिया। उन्होंने तुरन्त यज्ञ करना प्रारम्भ किया और उस दूषित गैस के प्रभाव से बच गये। जो कुछ भोपाल मे हुआ था वह तो मात्र दुर्घटना की पूर्व सूचना है। आज प्रदूषण एक अपरिहार्य खतरा बन गया है। प्रदूषण निवारण का काम पूरी दुनिया मे एक साथ करना चाहिए। मुद्दा यह नही है कि भोपाल मे गैस का दुष्प्रभाव हुआ, अथवा पानीपत के कुछ स्थानो मे गैस रिसी अथवा किसी अन्य स्थान पर गैस रिसने से दुनिया का एक बडा हिस्सा नष्ट हो गया अथवा युद्ध भूमि के विनाशकारी प्रभावो से गल्फ देशो के निकटवर्ती समुद्रो के सभी जीव मारे गए, मुद्दे की बात तो यह है कि पूरी पृथ्वी का वायुमण्डल प्रदूषित हो रहा है।

रियो में अपने भाषण मे भारत के प्रधानमन्त्री श्री पी० वी० नरसिंह राव ने सभी प्रतिनिधियो का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित किया कि मानवता के सम्मुख प्रदूषण की समस्या परस्पर गुम्फित प्रकृति की है और पृथ्वी को बचाने के लिए हम सभी को मिल कर काम करना चाहिए। हमारे प्रधान मन्त्री अधिकाश देशों को 'रियो ट्रीटी' पर हस्ताक्षर करने के लिए तैयार कर सके, इसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं। यह ठीक है कि अमेरिका की हठधर्मिता को वे झुका नही सके, पर यह भी उतना ही सत्य है कि उनकी बात को विस्तृत मान्यता मिली। श्री राव ने पूर्व प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी के 'पृथ्वी ग्रह सुरक्षा कोष' के निर्माण के प्रस्ताव का भी समर्थन किया। इस प्रस्ताव को इस शिखर सम्मेलन मे व्यापक समर्थन मिला। हमारे प्रधान मन्त्री ने कहा कि गरीबी और प्रदूषण तथा वातावरण और विकास अन्योन्याश्रित है। उन्होंने कहा कि विकसित तथा विकासशील देशो को मिल कर अनुसधान तथा विकास की दिशा मे कार्य करना चाहिए।

श्रीगंगानगर मे आर्य वीर दल के बढ़ते कदम

१२ फरवरी से १५ फरवरी १९९२ तक श्रीगगानगर मे स्वामी सुमेधानन्द के निर्देशन मे तीन अलग अलग ग्रामो मे ३ शिविर सम्पन्न हुए इन 11 EEA ग्राम मे हरफूलसिंह आर्य, 2 R B मे हरदयाल सिंह आर्य तथा फकीरवाली मे श्री रामाकृष्ण जी सरपच का सहयोग विशेष सराहनीय रहा। इनमे लगभग १२५ आर्य वीरो ने भाग लिया। प्रदर्शनो के कार्यक्रम भी एक ही दिन मे अलग-अलग स्थानों पर जिला सभा के मन्त्री शुद्धबोध जी के व्यवस्थापूर्ण विशेष प्रयासों से बडे सुन्दर ढग से सम्पन्न हुए। आर्य वीरो ने शाखायें चलाने का दायित्व लिया। शिविरो मे विशेष स्थान प्राप्त करने वाले आर्य वीरो को पुरस्कार तथा सभी को आर्य वीर प्रमाण पत्रो से सम्मानित किया गया। इन स्थानो से अनेक आर्य वीर राजस्थान के आर्य वीर दल प्रान्तीय शिविर (गुरुकुल चित्तौडगढ़) मे भाग लेंगे। जनपद स्तर पर शिविर समारोह उपरान्त आर्यवीर दल हेतु निम्न प्रकार मनोनयन हुआ—

अधिष्ठाता—श्री शुद्धबोध जी शर्मा
जनपद सचालक (मण्डलपति)—हरफूल सिंह आर्य (11 EBA)
कार्यवाहक मन्त्री—दिनेश आर्य (2 R B)

मदनपाल राठी आर्य
व्यायाम शिक्षक सा० आर्य वीर दल

वेदोपदेशक विद्यालय मे प्रवेश आरम्भ

आर्य जनता को यह जान कर हर्ष होगा कि वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट का नया सत्र १ जुलाई से आरम्भ हो रहा है। इसमे १०वी पास योग्य सुशील, एव वैदिक धर्म प्रचार मे समर्पित विद्यार्थी ही प्रवेश पा सकेगे। २ तथा ४ वर्षों के अध्ययनकाल मे भोजन, शिक्षा और निवास की निशुल्क व्यवस्था होगी। निम्न पते पर शीघ्र पत्र व्यवहार करे।

कुलाधिपति	सस्थापक एव अधिष्ठाता
प० ब्रह्मप्रकाश शास्त्री	वेदानन्द वैदिक

वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट जिला गाजियाबाद

रियो डे-जेनेरो मे पर्यावरण सरक्षण सम्बन्धी २७ सूत्री घोषणा पत्र पर सिद्धान्तत सहमति प्रकट करते हुए सभी राष्ट्राध्यक्षो ने हस्ताक्षर किए। इन सूत्रो का सार यही है कि हम सभी मिल कर पर्यावरण शुद्धि के लिए कार्य करें ताकि यह पृथ्वी रहने योग्य बनी रहे। यही भावना पूर्व उद्धृत वेद मन्त्र मे भी है—

—डा० धर्मपाल

वेदों में पशुओं की रक्षा

—जयदेव वर्मा

वेद भारतीयो के लिए ही नही अपितु समस्त ससार के लिए ज्ञान के स्रोत है। यह ज्ञान मानव एव पशुओ के हर पहलू के बारे मे व्यापक रूप से वेदो मे विद्यमान है। यजुर्वेद के निम्नलिखित मन्त्रो और भावार्थ से पता चलता है कि पशुओ के बारे मे आर्यो के क्या विचार थे। इन मन्त्रो मे न केवल पशु पक्षियो की उपयोगिता बताई गयी है अपितु यह भी बताया गया है कि मानव जाति का उनके प्रति क्या कर्तव्य होना चाहिए। उनकी किस प्रकार रक्षा करनी चाहिए और उनके मारने वालो को राजादि, न्यायाधीश द्वारा दण्डित करना चाहिए।

यजु अ १३ म ४७

इम मा हिꣳसीर्द्विपाद पशु ꣳ सहस्राक्षो मेधाय चीयमान मयु पशु मेधमग्ने जुषस्वतेन चेतन्वास्तन्वो निषीद मयु ते शुगृच्छतु य द्विष्मस्त ते शुगृच्छतु ॥४७॥

भावार्थ—कोई भी मनुष्य सबके उपकार करने हारे पशुओ को कभी न मारे किन्तु इनकी अच्छी प्रकार रक्षा कर और इन से उपकार लेके सब मनुष्यों को आनन्द देवे जिन जगली पशुओ से ग्राम के पशु खेती और मनुष्यो की हानि हो उनको राजपुरुष मारे और बन्धन करें ॥४७॥

इम मा हिꣳसीरेकशफ पशु कनिक्रद वाजिन वाजिनेषु गौरमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद। गौर ते शुगृच्छतु य द्विष्मस्त ते शुगृच्छतु ॥४८॥ यजु अ १३ म ४८

भावार्थ—मनुष्यो को उचित है कि एक खुर वाले घोडे आदि पशुओ और उपकारक वन के पशुओं को भी कभी न मारें जिन के मारने से जगत् की हानि और न मारने से सबका उपकार होता है। उनका सदैव पालन पोषण करे और जो हानिकारक पशु हो उनको मारे ॥४८॥

इम ꣳ साहस्रꣳ शतधारमुत्स व्यच्यमान ꣳ सरिरस्य मध्ये। घृत दुहानामदिति जनायाग्ने मा हिꣳसी परमे व्योमन्। गवयमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद। गवय ते शुगृच्छतु य द्विष्मस्त ते शुगृच्छतु ॥४९॥

यजु अ १३ म ४९

भावार्थ—इस मन्त्र मे वाचकलुप्तोपमालकार है। हे राजपुरुषो! तुम लोगों को चाहिए कि जिन बैल आदि पशुओ के प्रभाव से खेती आदि काम, जिन गौ आदि से दूध घी आदि उत्तम पदार्थ होते हैं कि जिनके दूध आदि से सब प्रजा की रक्षा होती है उनको कभी मत मारो और जो जन इन उपकारक पशुओ को मारे उनको राजादि न्यायाधीश अत्यन्त दण्ड देवें और जो जगल मे रहने वाले नीलगाय आदि प्रजा की हानि करें वे मारने योग्य हैं ॥४९॥

इममूर्णायु वरुणस्य नाभि त्वच पशूना द्विपदा चतुष्पदाम्। त्वष्टु प्रजाना प्रथम जनित्रमग्ने मा हिꣳसी परमे व्योमन्। उष्ट्रमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद। उष्ट्र ते शुगृच्छतु य द्विष्मस्त ते शुगृच्छतु ॥५०॥

यजु अ १३ म०। ५०

भावार्थ—हे राजन्! जिन भेड आदि के रोम और त्वचा मनुष्यो के सुख के लिए होती हैं और जो ऊट भार उठाते हुए मनुष्यो को सुख देते है उनको जो दुष्टजन मारा चाहें उनको ससार के लिए दुखदायी समझे और उनको अच्छे प्रकार दण्ड देना चाहिए।

अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकात्सोऽअपश्यज्जनितारमग्रे। तेन देवा देवताग्रमायꣳस्तेन रोहमायन्नुपमेध्यास। शरभमारण्यमनु त दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो षीद। शरभ ते शुगृच्छतु ये द्विष्मस्त ते शुगृच्छतु ॥५१॥ यजु अ १३ म ५१

भावार्थ—मनुष्यो को उचित है कि बकरे और मोर आदि श्रेष्ठ पक्षियो को न मारे और इनकी रक्षा करके उपकार के लिए सयुक्त करे और जो अच्छे पशुओ और पक्षियो को मारने वाले हो उनको शीघ्र ताड़ना देवे। हा जो खेतो को उजाड़ने हारे स्याह आदि पशु हैं उनको प्रजा की रक्षा के लिए मारे ॥५१॥

त्व यविष्ठ दाशुषो न पाहि शृणुधी गिर रक्षा तोकमुत त्मना ॥५२॥

यजु अ १३ म ५२

भावार्थ—जो मनुष्य मनुष्यादि प्राणियो के रक्षक पशुओं को बढ़ाते हैं और कृपामय उपदेशों को सुनते सुनाते हैं वे आन्तर्य सुख को प्राप्त होते हैं ॥५२॥

सहायक निदेशक (पशु पालन)
पशु पालन विभाग दिल्ली प्रशासन दिल्ली।

स्वास्थ्य सुधा—

उपयोगी घरेलू नुस्खे

३३—पेशाब का बार-बार आना (प्रमेह की दवा)—अनार के फल का छिलका बारीक पीस कर चार ग्राम ताजा पानी के साथ दिन में दो बार प्रात साय खाने से मूत्राशय की गर्मी दूर होती है। पेशाब बार बार आना बन्द हो जाता है।

आम—

३४—यदि पेशाब रुक गया हो तो आम की गुठली की गिरी पानी मे पीस कर लिंग तथा पेडू पर लेप करने से पेशाब उतर आता है।

३५—आम की गुठली का चूर्ण ३ ग्राम मठा के साथ खाने से दस्त, खट्टी डकार, जलन उल्टी, घाव आदि रोग दूर हो जाते हैं।

३६—लू लगने की दवा—कच्चे आम को पानी मे डाल कर उबालना—उबालने के बाद उसका रस गूदा निकालना, गुठली छिलके को फेंकना, गुड, बूरा या चीनी डाल कर ऊपर से पानी, २ ग्राम मुश्क कपूर तथा काली मिर्च का चूर्ण डाले। इसे आग पर रख कर चम्मच से चला थोडी देर बाद उतार कर चम्मच से थोड़ा-थोडा खाये। इससे लू नही लगेगी और यदि लग गई हो तो आराम आ जावेगा।

३७—बढ़ी हुई तिल्ली का इलाज—रसदार आम का रस शहद मे मिला कर कुछ दिन खाने से तिल्ली ठीक हो जाती है।

३८—स्कर्वी का उपाय—कच्चे आम के इस्तेमाल से स्कर्वी रोग दूर हो जाता है।

३९—आग से जलने का उपाय—आम के पत्तो की भस्म जले हुए स्थान पर लगाने से आराम होता है।

४०—पेट के कीड़ो का इलाज—आम के फलो के छिलको का काढ़ा पीने से पेट के कीडे मर जाते हैं।

प्रदर का इलाज—आम के तने की छाल १ किलो ग्राम लेकर ५ मिली ग्राम पानी मे उबाल काढा बना चीनी डाल दिन मे बार बार पीने से प्रदर रोग दूर हो जाता है।

४२—वीर्य स्तम्भन की दवा—आम की मजरी (बौर) को छाया में सुखा कर उसका चूर्ण ३ ग्राम फाँके और ऊपर से दूध पी लें। इससे वीर्य गाढा हो जायेगा, काम शक्ति बढ़ेगी तथा स्तम्भन होगा।

४३—सुजाक की दवा—आम के वृक्ष के छिलके का रस ५० ग्राम, चूने का पानी ४० ग्राम। इसे मिला कर एक एक चम्मच प्रात साय पीजिए। ऊपर से ताजा दूध पीजिए रोग दूर होगा।

४४—पका कलमी आम या अन्य तथा मेंगो शेक, खून बनाने वाला, थकावट दूर करने वाला घाव जल्दी भरने वाला, मास बढ़ाने वाला, बल दायक, तपेदिक को दूर करने वाला है लेकिन शुगर वालों को हानिकारक है। (क्रमश)

नेतराम शर्मा

प्रधान—भारतीय योग सस्थान, पूर्वी जिला दिल्ली

'आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का चुनाव सम्पन्न'

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली का ९२ ९३ का वार्षिक चुनाव समाज के वरिष्ठ उपप्रधान श्री रतनलाल सहदेव जी की अध्यक्षता में ११ ५-९२ को समाज के सत्सग हाल में सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्न अधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए—

प्रधान—श्री राममूर्ति कैला, उपप्रधान—श्री रतनलाल सहदेव, श्री हसराज चोपड़ा, श्रीमती आशा वर्मा, डा० अमर जीवन, मन्त्री—श्री वेदव्रत शर्मा, उपमन्त्री—श्री पवन प्रकाश वर्मा, श्री सत्य नारायण आर्य, श्रीमती सुमेधा शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री भोलानाथ आर्य, पुस्तकाध्यक्ष श्री खैरायती लाल भाटिया, अधि० आर्य वीर दल—श्री वीरेश कुमार गुप्ता।

आदर्श-त्रैतवाद-४

—राजसिंह भल्ला

अंगुष्ठ मात्र अर्थात् अनन्त आत्माओं में साक्षी रूप में रहने वाला पुरुष परमात्मा अपने मध्य अर्थात् स्वरूप में रहता है। वह भूत भविष्यत् का ईश्वर है। उससे—उसे जान कर मनुष्य शोक रहित हो जाता है। फिर सन्देह नहीं करता यह वही परम पुरुष—परमात्मा है। यहां अंगुष्ठ से तात्पर्य अंगस्थ है। विराट पुरुष के सभी लोक लोकान्तर अंग हैं। वह अनन्त महिमा युक्त भगवान साक्षी रूप से सारे चराचर जगत में रहता है। वास्तव में परम पुरुष स्व-स्वरूप में कूटस्थ है। वही तीनों कालों का ईश्वर है। उसके दर्शन से जाप सिमरन तथा ध्यान से सारे संशय समाप्त हो जाते।

प्रकाश स्वरूप त्रिकालिक ईश्वर

अंगुष्टमात्र पुरुषो ज्योतिरिवाधूमक ।
ईशानो भूतभव्यस्य स एवाद्य स उ श्व एतद्वै तत् ।। कठो० १।४।१३

अंग मात्र में रहने वाला परम पुरुष ज्योति की भांति प्रकाशमान है। निर्धूम ज्योतिवत् प्रदीप्त है। वह प्रभु भूत भविष्यत् का ईश्वर है। वह ही आज वर्तमान में ईश्वर है और वह ही कल था तथा आगे ईश्वर रहेगा। उसकी सत्ता त्रिकाल में सर्वोपरि विराजमान है। यह वही ईश्वर है जिसकी जिज्ञासा साधक करते हैं।

सर्व व्यापक ब्रह्म—

अग्निर्यथैकको भुवन प्रविष्टो रूप रूप प्रतिरूपो बभूव ।
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूप-रूप प्रतिरूपो बहिश्च ।। कठो० १।५।९

जिस प्रकार प्रत्येक पदार्थ के भीतर एक ही अग्नि मौजूद है और जिस प्रकार की वह वस्तु है उसी प्रकार की दिखाई देती है। उसी आकार की दिखाई देती है। क्योंकि अग्नि का अपना कोई आकार नहीं प्रत्येक आकार में जो रूप दिखाई पड़ता है वह अग्नि के भीतर होने के कारण है। उसके अन्दर अग्नि होने का प्रमाण देता है। अर्थात् आकार से रहित अग्नि प्रत्येक आकार को प्रकाशित करने वाली हैं। प्रत्येक पदार्थ में व्यापक होने वाला परमात्मा जिससे रहित कोई वस्तु नहीं जो सूक्ष्म से भी सूक्ष्म पदार्थ में विद्यमान है। संयोग वस्तु से असंयोग वस्तु और आकाश सूक्ष्म है। अत प्रत्येक संयोग वस्तु में आकाश विद्यमान है। कोई संयोग वस्तु नहीं जिसमें आकाश न हो—जिसमें आकाश है वह संयोग वस्तु है। असंयोग वस्तु नहीं। परमात्मा असंयोग वस्तु और आकाश से भी अति सूक्ष्म है इस कारण वह सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तु अर्थात् गुण के भीतर भी विद्यमान है। जिस प्रकार परमाणु में आकाश नहीं रह सकता परन्तु उसके गुण विद्यमान रहने हैं और जहां गुण हो वहां परमात्मा विद्यमान होगा यह आवश्यक नहीं कि जहां आकाश हो वहीं परमात्मा हो आकाश के बिना परमात्मा सूक्ष्मतम होने से हो सकता है। परमात्मा ऐसे परमाणुओं में भी जिनमें आकाश नहीं रह सकता विद्यमान है और बाहर भी है। परमात्मा यदि प्रत्येक वस्तु के भीतर ही होता तो वस्तुएं परमात्मा से बड़ी होतीं क्योंकि छोटी वस्तु ही बड़ी वस्तु के भीतर रह सकती है। किन्तु वह परमात्मा बाहर भी है। वह सब के भीतर और बाहर व्यापक है।

सर्वव्यापक ब्रह्म—

वायुर्यथैको भुवन प्रविष्टो रूप-रूप प्रतिरूपो बभूव ।
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूप रूप प्रतिरूपो बहिश्च ।। कठो० १।५।१०

प्रत्येक संयुक्त वस्तु में वायु प्रवेश करके उसके आकार की मालूम होती है क्योंकि वायु का अपना कोई आकार नहीं वह जिस प्रकार की वस्तु में रहती है वैसा ही उसका आकार होता है। यदि मकान आयताकार है तो उस में वायु भी आयताकार ही होगी यदि आकाश वर्गाकार है तो उसमें रहने वाली वायु भी वर्गाकार ही होगी वैसे वायु प्रत्येक वस्तु के साथ उसी आकार वाली मालूम होती है। आत्मा परमात्मा की यह दशा है। वह जिस वस्तु में रहते हैं उसी की शकल में रहते हैं क्योंकि उनकी अपनी कोई शकल नहीं है यदि वस्तु के भीतर ही होते तो उसी आकार वाला कह सकते थे परन्तु वह हवा की भांति प्रत्येक वस्तु के बाहर भी है। इस प्रकार परमात्मा भी इस जगत् के भीतर और बाहर होने से जगत् के आकार वाला नहीं कहला सकता। वह परमात्मा सर्वव्यापक है।

ईश्वर अलिप्त है—

सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषैः ।
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्य ।। कठो० १।५।११

जिस प्रकार सूर्य जगत् की आंख अर्थात् देखने का कारण है परन्तु आंखों का सहायक होने पर भी जो बीमारी आदि दोष आंख में होते हैं वह सूर्य में नहीं आते। इसी प्रकार परमात्मा सारे जगत में व्यापक है परन्तु संसार के दुखों से लिप्त नहीं होता। जो संसार में दोष है वे स्थूल है और स्थूल वस्तु सूक्ष्म में प्रवेश नहीं कर सकती बाहर रह सकती है। जब प्रवेश ही न कर सके तो हानिकर कैसे हो सकती हैं। परमात्मा प्रत्येक अच्छी बुरी वस्तु में व्यापक है परन्तु क्योंकि सूक्ष्म वस्तु में स्थूल के गुण नहीं जा सकते और स्थूल में सूक्ष्म के गुण जा सकते हैं। जहां गुणी जाएगा वहां गुण जाएगा कोई गुण अपने गुणी को छोड़ कर नहीं जा सकता यह नियम है कि स्थूल द्रव्य सूक्ष्म में प्रविष्ट नहीं हो सकते अत उसके गुण भी वहां नहीं जा सकते। पानी में आग प्रवेश करके पानी को गरम कर सकती है परन्तु आग में पानी प्रवेश करके आग को ठण्डा नहीं कर सकता। इसी प्रकार पृथिवी आदि स्थूल वस्तु के गुण परमात्मा में नहीं आ सकते और न स्थूल पदार्थ का प्रभाव सूक्ष्म पर होता है। इसलिए सम्पूर्ण जगत् के भीतर रहता हुआ भी परमात्मा जगत् के दुःखों से युक्त नहीं हो सकता वह अलिप्त है।

परमात्मा व्यापक और अलिंग है—

अव्यक्तात्तु पर पुरुषो व्यापकोऽलिंग एव च ।
यज्ज्ञात्वा मुच्यते जन्तुरमृतत्वं च गच्छति ।। कठो० १।६।८

परमात्मा प्रकृति से सूक्ष्म है। और प्रत्येक परमाणु में व्यापक है कोई वस्तु ऐसी नहीं जिसके भीतर बाहर परमात्मा विद्यमान न हो। वह परमात्मा सब से सूक्ष्म है और अलिंग है। इस कारण उसका कोई चिह्न इन्द्रियों से अनुभव नहीं हो सकता। केवल एक वही परमात्मा है जिसके जानने से जीवात्मा मुक्ति प्राप्त कर लेता है। और अमृत अर्थात् मृत्यु रहित अवस्था को प्राप्त कर लेता है।

ईश्वर सर्वज्ञ और जगत् नियन्ता—

एष ब्रह्मैष इन्द्र । एष प्रजापति । एते सर्वे देवा इमानि च पञ्च महाभूतानि, पृथिवी वायुराकाश आपो ज्योतींषीत्येतानीमानि च क्षुद्रमिश्राणीव बीजानीतराणि चेतराणि चाण्डजानि, जरायुजानि च स्वेदजानि, चोद्भिज्जानि चाश्वा गाव, पुरुषा हस्तिनो यत्किञ्चेद प्राणिजङ्गम च, पतत्रि च, यच्च स्थावर सर्वं तत्प्रज्ञानेत्र प्रज्ञाने प्रतिष्ठितम्। प्रज्ञानेत्रो लोक प्रज्ञा प्रतिष्ठा। प्रज्ञान ब्रह्म।

ऐतरेयो ३।१।३

ऋषि परमात्मा का स्वरूप वर्णन करते हुए कहते हैं यह जो आगे वर्णन होगा वह ब्रह्म है। यही इन्द्र ऐश्वर्यमान है। यह ही प्रजाओं का पति—परमेश्वर है। ये सारे देव ये पांच महाभूत ये सब दूसरे तुच्छ मिले जुले कीट पतंगे तथा बीज और दूसरे अण्डों से उत्पन्न होने वाले, जरायु से उत्पन्न होने वाले, पसीने से होने वाले, भूमि से निकलने वाले और घोड़े गऊ पुरुष आदि जो कुछ सांस लेने वाला चलने फिरने वाला उड़ने वाला जगत् है तथा जो स्थावर है वह सब पूर्ण ज्ञान से चलाया जा रहा है। उसके सब नियम में ज्ञान है—चेतना काम कर रही है। सारा जगत् उसके पूर्ण ज्ञान में स्थिर है। उसकी स्थिति में भी पूर्ण ज्ञान का नियम है। सारा विश्व पूर्ण ज्ञान से चलाया जाता है। विश्व का नियन्ता पूर्ण ज्ञानी है। आधार है। वही पूर्ण ज्ञान ब्रह्म है। परमेश्वर निर्भ्रान्त है। वह सर्वज्ञ है। वह विश्व का नियन्ता है। वह विश्व का सञ्चालक है। विश्व का आश्रय है। उसी परम चेतन से विश्व चलाया जा रहा है।

ईश्वर सर्वज्ञः सर्वशक्तिमान प्रकाश स्वरूप—

मनोमय प्राणशरीरो भारूप सत्यसंकल्प आकाशात्मा ।
सर्वकर्मा सर्वकाम सर्वगन्ध सर्वरस सर्वमिदमभ्यात्तोऽवाक्यनादर ।।

छान्दो० ३।१४।२ (क्रमश)

वेदों में एड्स रोग का उपचार

वेदमार्तण्ड स्वामी रमेश मुनि मानसरोवर जयपुर

वेदो मे रोगो के उपचार व विज्ञान सम्बन्धी हम पिछले २० वर्ष से शोध कार्य कर रहे है। हमको वेदों मे एड्स (AIds) रोग का उपचार मिल गया है। उदाहरणतया—इस रोग का नाम शोशा समझ लें तो इस रोग मे शरीर की कोशिकाए मल्टीप्लाई नही करती। जो भोजन शरीर में जाता है उससे क्रमश रस, रक्त, मांस, मज्जा, मेदा अस्थि एव वीर्य बनता है। सब धातुए ३-३ दिन मे एक के बाद एक स्वत बनती चली जाती हैं और नई कोशिकाए बनते बनते २८ दिन में मनुष्य का शरीर नया बन जाता है। चन्द्रमा भी एक मास मे पूर्ण हो जाता हैं। अगर शरीर मे नई कोशिकाए नहीं बनें तो मनुष्य का शरीर विनाशको प्राप्त हो जाता हैं। इसको समझने के लिए हमको चन्द्रमा का संक्षिप्त अध्ययन करना होगा। हमारी पृथ्वी अपनी कीली पर पश्चिम से पूर्व की ओर २७ ८३ कि० मी० प्रति मिनिट के हिसाब से घूम रही हैं और २४ घण्टे मे अपनी कीली पर एक चक्कर कर लेती हैं। लेकिन वह उसी स्थान पर नहीं आती बल्कि वह सूर्य परिक्रमा पथ मे एक मिनट में लगभग १७८७-१४ कि० मी० के हिसाब से चलकर २४ घण्टे मे २५,७३ ४८२-९ कि० मी० दूर पहुच जाती हैं। चन्द्रमा हमारी पृथ्वी से ३,८४,४०१ कि० मी० दूर हैं और हमारी पृथ्वी की परिक्रमा करता हुआ सूर्य की भी परिक्रमा कर रहा हैं। लेकिन चन्द्रमा मे एक खास बात यह हैं कि वह अपना मुख सदैव सूर्य की ओर किये रहता हैं। चन्द्रमा की हमारी पृथ्वी के चारो ओर घूमने की कक्षा की लम्बाई २४,१५ २६३ कि० मी० हैं (Confirmed by Spherical Astronomy by Mr W M Surart 6th edition) पूर्णमासी की पड़वा से प्रत्येक दिन चन्द्रमा की एक एक कला घटकर अमावस्या को बिलकुल अंधेरा हो जाता हैं। फिर इसी प्रकार अमावस्या की पड़वा से प्रत्येक दिन एक एक कला बढ़कर पूर्णमासी को चन्द्रमा पूर्णता को प्राप्त हो जाता हैं। थोड़ी देर को हम यहा समझ लें कि चन्द्रमा को भी एडस जैसा ही रोग हैं लेकिन चन्द्रमा की नाभि में अमृत कुण्ड भी हैं। अमृत कुण्ड के अमृत से (Nectar) उसका शरीर फिर पूर्ण हो जाता हैं। यही इस रोग का विज्ञान हैं। अगर वही औषधि एड्स के रोगी को दे दी जाये तो वह Human Immunodeficiency Virus का समूल नाश कर देती हैं एव उसकी कोशिकाए मल्टीप्लाई करना प्रारम्भ कर देती हैं, और वह स्वस्थ हो जाता है। हृदय रोग, तपैदिक रोगो के वैदिक उपचार एव स्मृतिवर्धक औषधिया एव वेदो के विज्ञान सम्बन्धी हमारे ४० ५० लेख प्रकाशित हो चुके हैं (वेद मन्त्रो की असीम शक्ति, पुत्रेष्टि एव वर्षेष्टि सहित ४० कामना यज्ञानुष्ठानो के लिए कृपया लेखक की 'वैदिक यज्ञानुष्ठान् विधि" नामक पुस्तक देखे जो मुन्शीराम मनोहरलाल बुकसेलर, ४४१६, नई सडक दिल्ली या गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सडको दिल्ली से उपलब्ध हो सकती हैं) हमने लगभग ७ वर्ष पहले एड्स के उपचार को ज्ञात कर लिया था तदनुसार हमने ६ दिसम्बर, १९८५ को अमरीका के राष्ट्रपति श्री रोनाल्ड रीगन महोदय को सूचित किया जिन्होने लगभग ६ माह बाद १७ जुलाई, १९८६ के पत्र द्वारा हमारे पत्र की प्राप्ति स्वीकारी और हमारा पत्र मैडीकल औथोरिटीज को भेजा एव हमें धन्यवाद प्रेषित किया। उनकी एड्स प्रोग्राम पर कन्ट्रोल का शोध कार्य डाक्टर वाल्टर डाउडले डाइरेक्टर डिसीज कन्ट्रोल एटलान्टा जार्जिया कर रहे हैं। उन्होने अपने पत्र सख्या ४०४, ३२९-२८९, एफ० टी० एस० २३६-२८९१ दिनाक १८ मार्च, १९८७ एव अपने दूसरे पत्र दिनाक २५ जून, १९८७ के द्वारा हमसे वेद की दवाई का नाम पूछा और हमें धन्यवाद दिया। इसके बाद ५ जनवरी, १९८८ के पत्र द्वारा हमको सूचित किया कि दवाई का ट्रायल करने के लिए उनका क्लिनिकल सेन्टर बाथेसडा मेरीलेन्ड मे है जिसका पूरा पता हमे सूचित किया। बाथेसडा के क्लिनिकल सेन्टर के अधिकारी ने २९ अगस्त, १९८८ के पत्र द्वारा अमरीका की दवाई की कम्पनी से सम्पर्क करने को लिखा। अभी २ जनवरी, १९९२ के पत्र द्वारा अमरीका के उपराष्ट्रपति श्री डान क्वैल को हमने बास्केट बाल के चैम्पियन श्री इरविन जानसन को एड्स मुक्त करने की गारण्टी दी हैं। चूकि यह रोग एक विकृत सैक्स भोगने का परिणाम हैं। इसलिए हमने इस उपचार को बताने की कीमत १० मिलियन डालर (लगभग ३० करोड़ रुपये) बताई हैं, जबकि वे लगभग ४०० करोड़ डालर प्रति वर्ष खर्च कर रहे हैं। इस रकम से हम अनेक स्थानो पर वैदिक शोध सस्थान बनायेंगे व वेदोक्त अनेक प्रकार के यज्ञ करके शोध कार्य को आगे बढायेंगे। हमारे वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक हैं। उसमे सभी उपचार सत्य हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तो नियम सख्या ३ मे यह स्पष्ट घोषित किया हुआ हैं। वेदों के हृदय रोग के उपचार को ही विश्व की भाषाओ मे उनके देशो के अखबारों मे प्रकाशित कराये तो कुछ हजारो रुपयो के व्यय से ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को अनन्य लाभ होगा और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" उद्देश्य सफल होगा क्योंकि करोडो व्यक्ति आर्य बन जायेंगे। अगर कोई सस्था एव धनी मानी व्यक्ति हमारी इस कार्य में सहायता करें तो मानव समाज को बहुत लाभ होगा। कृपया सम्पर्क करें —

अध्यक्ष, वैदिक शोध सस्थान रजि० २/८९-९०, ब्लाक ११/७१/१२, मानसरोवर, जयपुर-२०

(पृष्ठ २ का शेष)

करके मन बडा प्रसन्न था। स्वप्न भग हो जाने पर बहुत निराशा और मन दुखी हुआ। उसके एक घण्टे बाद आर्य समाज मन्दिर मे दैनिक सत्सग में पहुच कर श्री पुरी जी से और श्री शुक्ला पुरोहित जी से स्वप्न की बात कही। वे भी खुश हुए। बाद मे भी भूल गया और दोनो सज्जन वे भी भूल गए कि क्या वार्ता हुई। इसका मुझे बहुत ही दुख है। नोट नहीं किया, पश्चाताप कर रहा हू। इस अद्वितीय घटना को साधारण घटना समझ कर और यह समझ कर कि कोई विश्वास नही करेगा मैंने इसकी चर्चा नही की। बाद मे मुझे पता लगा कि यह असाधारण घटना थी।

मेरी ऋषि भक्ति का अनुमान सिवाय ईश्वर के कोई नही लगा सकता। केवल उस अन्तर्यामी को ही पता है। न ही मैं किसी को पता लगने देता हूं। मेरी स्थिति यह हो चुकी है जैसे महावीर हनुमान ने सीता माता की दी हुई मोतियो की माला के एक-एक मोती को भगवान राम की तलाश मे तोड़ कर रख दिया था और गुरु द्रोणाचार्य ने जब राजकुमारो की शस्त्र विद्या की परीक्षा लेते हुए प्रश्न के उत्तर मे जो कुछ भी वीर अर्जुन ने कहा था, वही स्थिति मेरी हो चुकी है।

मेरी धारणा है कि जब से इस सृष्टि की रचना हुई है तब से जितने भी ऋषि, मुनि, साधु सन्यासी, महात्मा, महान पुरुष, हिन्दू पुराणों के अवतार आचार्य पण्डित हुए हैं मानव मात्र के लिए समाज के लिए, देश के लिए भलाई के जितने बहुमुखी काम ऋषि दयानन्द जी महाराज ने किए हैं उतने काम किसी ने भी नहीं किए। विपरीत एव घोर परिस्थितियों, कठिनाईयो को सहन करते हुए स्वयं विषपान करके मानव मात्र को अमृत पिला गये। भारतीय जनता ऋषि दयानन्द को समझी ही नही। बिना अन्ध विश्वास के बिना पक्षपात के ऋषि दयानन्द के समस्त जीवन तथा उनके कार्य को पढ कर गम्भीरता से उस पर विचार करें और अनुसधान करें तो मेरी धारणा से सभी भारतीय सहमत होगे।

यह कुछेक काम जो मैंने अपने जीवन काल में किए हैं वह काम कैसे-कैसे हुए, कितना समय लगा, कैसी-कैसी कठिनाईया, बाधाए आई विस्तार से कहा या लिखा जाए तो एक पुस्तक बन सकती है। यह तो सकेत मात्र ही लिखा गया है।

यह जो कुछ मैंने किया केवल ऋषि ऋण से उऋण होने का प्रयास किया है। आर्य समाज की सेवा तथा आर्य समाज का काम करते हुए जितना आनन्द और सन्तोष मुझे आता है, इतना रुपया पैसा पाने से नहीं होता।

आर्य सेवक—प० जगतराम आर्य
बी-१०९ प्रीत विहार दिल्ली-९२

चलोचलो हरिनगर

सार्वदेशिक आर्य वीरदल के राष्ट्रीय शिविर का रोमांच-कारी समापन समारोह

२१ जून रविवार प्रातः ८ बजे से

स्थान—महाशय चुन्नीलाल सरस्वती बाल मन्दिर,
एल ब्लाक हरिनगर, दिल्ली-६४,
निकट दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल

अध्यक्षता—**स्वामी आनन्दबोध सरस्वती**
(प्रधान सार्वदेशिक सभा)

मुख्य अतिथि—**सुरेन्द्र आर्य** (जय भारत मारुती लि०)
विशिष्ट अतिथि—**महाशय धर्मपाल** (महाशियां दी हट्टी)
श्री सूर्यदेव जी (प्रधान दिल्ली आ० प्र० सभा)

यह अवसर चूक न जाना

आर्यसमाज के युवकों ने राष्ट्ररक्षा के लिए एक बार फिर अगड़ाई ली, आर्य समाज का स्वर्णिम इतिहास पुनः दोहराया जाएगा। शिविर में भाग ले रहे ८०० युवकों व कार्यकर्ताओं ने शपथ ग्रहण की समूचे राष्ट्र में आर्य समाज के कार्यों का जन जागरण होगा।

विशेष आकर्षण आधुनिकतम व्यायाम प्रदर्शन

शिविर में प्राप्त शिक्षण के प्रदर्शन योग आसन लाठी जूडो कराटे, कुंगफू, जिमनास्टिक, तलवार भाला फरसा, धनुषबाण युद्ध कला के अनूठे प्रदर्शन होंगे जिसे देखकर आप भुला न सकेंगे।

युवा शक्ति का अभाव नहीं रहेगा

आज आर्य वीरों ने संस्कृति सेवा शक्ति को बढ़ाने का संकल्प लिया है और आर्यवीर दल आर्य समाज में युवा शक्ति के अभाव को दूर करने के लिए दृढ़ संकल्प हैं। आर्य जन भी अपने कर्त्तव्य का पालन करें इस समारोह में अधिक से अधिक संख्या में सपरिवार पधार कर युवकों को आगे बढ़ने का आशीर्वाद दें।

विराट ऋषि लंगर

समारोह के अन्त में देशी घी का ऋषिलंगर का प्रबन्ध है सभी अपनी अपनी आर्य समाजों से बसों टेम्पों में बैनर झण्डे लगाकर समारोह स्थल पर पहुंचें

महामंत्री	प्रधान संचालक
डॉ० राजसिंह आर्य	डा० देवव्रत आचार्य सा० आ० वी० द०
अधिष्ठाता दिल्ली	संचालक
प्रियतम दास रसवन्त	डा० ज्ञान प्रकाश शर्मा

नरेला क्षेत्र में बनाए जाने वाले प्रस्तावित बूचड़खाने का घोर विरोध

आपसे प्रार्थना है कि आप नरेला क्षेत्र में बनाये जाने वाले बूचड़खाने के विरोध में अपना और अपनी संस्था (पार्टी) का व्यक्तिगत सहयोग योगदान कर अनुगृहित करें।

अतः आप अपनी ओर से तथा संस्था की ओर से इसके विरोध में पत्र (प्रस्ताव) भारत सरकार तथा दिल्ली प्रशासन को अवश्य लिखें और इसकी एक प्रतिलिपि आर्य समाज नरेला को भी भिजवाने का कष्ट करें।

मन्त्री आर्य समाज नरेला

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 18 19 6 1992 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल-११०२४/९२) पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) १३९/९२
साप्ताहिक "आर्यसन्देश" २१ जून, १९९२

शाकाहारी बनें और हिन्दी का प्रचार करें

दिल्ली मैंने भरी जवानी में स्वामी श्रद्धानन्द के चरणों में बैठ कर देश नेता व युवक निर्माण की प्रेरणा ली थी। ये उद्गार प्रख्यात पहलवान गुरु गुरु हनुमान ने ७ जून को महाशय चुन्नीलाल सरस्वती बाल मन्दिर हरिनगर में आर्य वीर दल के शिविर का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए।

१५ दिन तक चलने वाले इस विशाल शिविर में ६५० आर्यवीर प्रशिक्षण ले रहे हैं। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने की।

गुरु हनुमान ने आगे कहा कि मेरे शाकाहारी शिष्यों ने दुनिया के बड़े-बड़े पहलवानों पर विजय पाकर भारत का माथा ऊंचा किया है। उन्होंने आर्य वीरों से कहा कि वे जीवन भर शाकाहारी रह कर हिन्दी का प्रचार करते रहें।

आर्यवीरों को आशीर्वाद देते हुए स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी ने कहा कि वेद में बताया गया है कि ब्रह्मचर्य व तप से देवताओं ने मृत्यु को जीत लिया था, अतः आप २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन करने का व्रत लें।

स्वामी जी ने कहा कि आर्य वीर दल को सुदृढ़ करने के लिए आर्य वीरों को अनुशासन का पालन करना चाहिए और महर्षि दयानन्द की तरह तप, त्याग व निष्ठा से आर्य समाज को मजबूत बनाते हुए जीवन पर्यन्त समाज की सेवा करते रहना चाहिए।

स्वामी जी ने उत्तरकाशी में भूकम्प पीड़ितों की आर्य वीरों द्वारा की गई अद्भुत सेवा की भी सराहना की और इसी प्रकार निष्काम सेवा करते रहने का आह्वान किया।

ब्रह्मचारी राजसिंह मल्ला इस विराट शिविर को सफल बनाने में अथक प्रयास कर रहे हैं।

इस समारोह में आर्य समाज के शीर्ष नेता, सभाओं के गणमान्य अधिकारी व सदस्य भारी संख्या में उपस्थित थे।

—गुरु हनुमान

श्री जगन्नाथ जी सोई का देहावसान

फरीदाबाद क्षेत्र के २२ आर्य समाजों के संगठन आर्य केन्द्रीय सभा के संरक्षक व आर्य समाज सैक्टर ७ के प्रधान श्री जगन्नाथ जी सोई का १७ मई रविवार रात्रि १-३० बजे देहान्त हो गया। वे ८७ वर्ष के थे। उनका महान व्यक्तित्व सत्य निष्ठा, मित भाषण एवं निरभिमानता का परिचायक था। वे एक महान समाज सेवक थे। आयु पर्यन्त वे समाज सेवा में संलग्न रहे।

आर्य समाज सैक्टर ७ में १९ मई मंगलवार को सायं ७ बजे एक शोक सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में सैकड़ों आर्य जनों व महिलाओं ने भाग लिया। सभी ने श्री जगन्नाथ जी सोई को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की एवं दिवंगत आत्मा के लिए शान्ति की कामना की।

रस्म पगड़ी २९ मई शुक्रवार को सायं २ बजे से ३ ३० बजे तक चूल कोट पावर हाउस कालोनी कोठी न० ५ अम्बाला कैन्ट पर सम्पन्न हुई।

मन्त्री आर्य समाज सैक्टर ७ फरीदाबाद

सेवा में—

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी०(एल११०२४/१-०९२)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५ अंक १ | विवार जन | विक्रमी सम्वत /६ | दयानन्दाब्द १ | सृष्टि सम्वत १ ६०
मूल्य एक प्रति ५ पैसे | वार्षिक २ | आजीवन ५ रुपये | विदेश में पौण्ड | डालर | ५

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर सम्पन्न—

देश व संस्कृति की रक्षा के लिए आर्य समाज युवक तैयार करे

नई दिल्ली २१ जन आज देश अत्यन्त कठिन दौर से गुजर रहा है अत आर्य समाज को ऐसे युवकों को तैयार करना चाहिए जो देश धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिए हर बलिदान देने को तत्पर रहें ये विचार हरियाणा के कृषि राज्य मंत्री श्री बचन सिंह ने आज महाशय चन्नी लाल सरस्वती बाल मन्दिर हरिनगर नई दिल्ली के आर्य वीर दल के समापन समारोह के अवसर पर व्यक्त किये। श्री बच्चन सिंह ने आगे कहा कि प्रत्येक आर्य समाज में आर्य वीर दल की एक एक शाखा स्थापित की जानी चाहिए। शिविर का आयोजन सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने किया था।

७ जून से चल रहे इस शिविर में भारत के विभिन्न राज्यों से आये ० आर्य युवकों ने भाग लिया। प्रशिक्षित आर्य वीरों ने व्यायाम जूडो कराटे आदि के रोमांचकारी प्रदर्शन द्वारा हजारों आर्य नर नारियों को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

हर्षोल्लास के वातावरण में हुये समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने की।

स्वामी जी ने आर्य वीरों को आशीर्वाद दिया विजेता आर्य वीरों को पुरस्कार प्रशस्ति पत्र आदि प्रदान किये। आर्य वीरों ने आर्य समाज की उन्नति भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्र की एकता व अखण्डता की रक्षा का संकल्प लिया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ आर्य जगत के ... दयानन्द द्वारा ध्वजारोहण से हुआ। जयभारती मारुति लि० के संचालक एवं समारोह के मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्र ... ने इस मनोहारी प्रदर्शन की सराहना की।

आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान व आयोजन के विशिष्ट अतिथि महाशय धर्मपाल ने इसे एक चिरस्मरणीय कार्यक्रम बताया और कहा कि वे ३१ आर्य वीरों का प्रति मास सौ सौ रुपये की छात्रवृत्ति देंगे।

इस अभूतपूर्व शिविर का संचालन सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक डा० देवव्रत आचार्य ने किया तथा महामंत्री ब्र० राजसिंह आर्य ने इस सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने आर्य वीरों के इस कार्यक्रम को सर्वश्रेष्ठ बताया और समारोह में पधारे आर्य महानुभावों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

विकासपुरी में गिराए गए आर्य समाज मन्दिर का मामला—

उपराज्यपाल ने शिष्ट मंडल को जांच का आश्वासन दिया

दिल्ली १ जून उपराज्यपाल दिल्ली के कार्यालय पर आज दिल्ली की आर्य समाजों एवं महिला सभा की ओर से धरना दिया गया। यह धरना डी० डी० ए० द्वारा २९ मई को बिना पूर्व सूचना के विकासपुरी में आर्य समाज मन्दिर गिराये जाने के विरोध में दिया गया।

तीन घण्टे तक चले इस धरने में ... आर्य नर नारियों व आर्य युवकों ने भाग लिया।

बाद में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व में दस सदस्यों का शिष्टमण्डल उपराज्यपाल श्री प्रसन्न भाई करुणाशंकर दवे से मिला।

स्वामी जी ने प्रबल विरोध प्रकट करते हुए श्री दवे को बताया कि आर्य समाज विकासपुरी की ओर से सभी औपचारिकतायें पूरी कर दी गयी थी परन्तु फिर भी डी० डी० ए० ने बिना पूर्व नोटिस के मन्दिर गिरा दिया। यह एक बड़े षडयन्त्र का परिणाम है।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने उपराज्यपाल को आगे बताया कि सन १९७ में जब ... ने इसी प्रकार प्रशान्त विहार में आर्य समाज का मन्दिर गिराया था तो तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने मन्दिर के लिये न केवल डी० डी० ए० से निःशुल्क दुगनी भूमि दिलवायी थी बल्कि सरकार द्वारा मन्दिर बनवाने का भी आश्वासन दिया था।

शिष्ट मण्डल में सार्वदेशिक सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री श्रीमती शकुन्तला आर्य चौधरी लक्ष्मीचन्द एवं विकासपुरी आर्य समाज के अधिकारी शामिल थे।

शिष्ट मण्डल ने उपराज्यपाल से मांग की कि दिल्ली विकास प्राधिकरण के दोषी अधिकारियों के विरुद्ध शीघ्र कड़ी कार्यवाही की जाय और मन्दिर के लिए क्षतिपूर्ति दी जाए।

उपराज्यपाल श्री दवे ने शिष्ट मण्डल को आश्वासन दिया कि इस सारे मामले की तुरन्त जांच करवा कर उचित कार्यवाही की जायेगी।

स्कूल के पास शराब की दुकान

दिल्ली आप मानें या न मानें यह सच है कि दिल्ली प्रशासन की अनुमति से सन्तनगर बुराड़ी में डी० ए० वी० स्कूल के पास एक शराब की दुकान चल रही है। बच्चों को क्या संस्कार मिलेंगे कोई नहीं सोचता। एक तरफ तो प्रशासन व डी० ए० वी० पी० विज्ञापन व होर्डिंगों के द्वारा मद्य निषेध पर लाखों रुपया व्यय कर रहा है दूसरी ओर इस प्रकार शराब की दुकान खोली जा रही है। स्थानीय निवासियों द्वारा विरोध प्रकट करने के बावजूद अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई है। ●

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

ट्रिनिडाड में अंतरराष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन का आयोजन

टिनिडाड की राजधानी पोट आफ स्पेन म गत १६ से १९ अप्रैल तक अतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया था। विश्व के १६ देशो के प्रतिनिधियो ने उसमे भाग लिया। पाच सदस्यो का एक प्रतिनिधिमडल भारत से भी गया था जिसम सवश्री बच्च प्रसाद सिह यशपाल जैन राजेन्द्र अवस्थी और डा० माजदा असद थे।

हिन्दी की पहुच

राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी क सबध म भल ही स्थिति कभी-कभी अस्पष्ट नजर आता हो लेकिन अतरराष्ट्रीय द्वार तक उसकी दस्तक अवश्य पहुच गयी है। जिस भव्य और विशाल रूप मे सम्मलन का आयोजन किया गया था उसका वर्णन करना कठिन है। उसका अदाजा इसी स हो सकता है कि त्रिनिडाड क राष्ट्रपति नूर हुसन अली न १५ तारीख की शाम को सम्मलन का शुभारभ किया और उसका विधिवत उदघाटन वहा क प्रधानमत्री पी पाटिक मनिग क हाथ सम्पन्न हुआ। इसके अतिरिक्त कबिनट स्तर के तीन मत्रिया टिनिडाड टवगो के मुख्य न्यायाधीश एव ... असम्बली क अध्यक्ष न भी दो दिना तक उसम हिस्सा लिया। अनेक समद सदस्या और वरिष्ठ पदा धकारिया न अपन सक्रिय सहयोग से सम्मलन की गरिमा बढ़ाई।

भारतीय मूल के नागरिक

वेस्टइडीज का अग टिनिडाड दक्षिण अमरीका से सटा एक द्वीप है जिसके एक ओर वेनजुएला और दसरी ओर गयाना जस देश है। वेस्टइडीज के दशो की बनावट एक है आर हर देश म भारतीय मूल के लागो की सख्या काफी मात्रा म है। ट्रिनिडाड की कुल आबादी १२ लाख है जिसमे भारतीय मूल क लोग पाच लाख है। य अपने को भारत की सतान कहने म गौरव अनुभव करते है और अपन धम और संस्कृति को पिछले डढ सौ वर्षो मे अपनाये हुए है।

विदेश मे हिन्दी

सूरीनामा मारिशस तथा फीजी म धम और सस्कृति क साथ साथ हिन्दी और भोजपुरी भी जीवित है लेकिन टिनिडाड और गयाना म हिन्दी का योजनापूवक समाप्त कर दिया गया। पहले वहा के स्कूला म हिन्दी का पढाई वकल्पिक रूप स हुआ करती थी बाद म उसे समाप्त करक फ्रच और स्पेनिश की पढाई जारी की गया। उपनिवेशवाद का जीवन रखन क लिए हिन्दी का समाप्ति तथा अग्रजी का वच व आवश्यक माना गया। यही कारण है कि यद्यपि वहा के लोग आज भी अपने को हिन्दुस्तानी कहते है लेकिन हिन्दी उनके लिए अनजान भाषा होती जा रही है।

इसलिए जब हिन्दी निदि टिनिडाड टवगो न इस अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन का कल्पना की तब निश्चय ही उसके निमाग म यह बात रही होगी कि हिन्दी के ज्ञान के बिना भारतीय सभ्यता-सस्कृति से जुड रह पाना कठिन है। यह भावना अप्रत्यक्ष रूप से सम्मलन म हमे देखन को मिली

प्रस्ताव पारित

सम्मलन म कई प्रस्ताव पारित किए गए और उनमे स दो पर विशेष बल दिया गया। एक प्रस्ताव यह था कि टिनिडाड और टबगो के स्कूलो म हिन्दी की पढाई वैकल्पिक रूप से शुरु हो और दसरा यह कि हिन्दी को सयुक्त राष्ट्रसघ की भाषा के रूप मे मान्यता मिले। जहा तक पहली माग का प्रश्न है वहा के प्रधानमत्री ने यह आश्वासन दिया कि हिन्दी की वकल्पिक पढाई अगले वष से शुरु कर दी जाएगी। इसे सम्मेलन की बहुत बडी सफलता माना गया। वसे टिनिडाड ससद मे विरोधी दल के प्रमुख तथा भारतीयो के सबसे बडे नेता श्री वासदेव पाडय न यह कहकर इस आश्वासन का धज्जिया उडायी कि यह वोट और चुनाव क लिए सरकार का एक नारा मात्र है।

आठ सत्र का सम्मेलन

सम्मेलन म कुल मिलाकर आठ सत्र हुए जिनमे लगभग ४० गभीर पत्र पढ गये। हालैड के डा० एम० के० गौतम जमनी के डा० लोठार लुत्से हगरी की इवा अरादी तथा मारिया नेग्रसी सूरीनाम के डा० ज्ञान भगत तथा पोलड के प्रो० क्रिस्टी अमरीका के डा० भूदेव शर्मा और टिनिडाड के श्री मोहन सामलाल के पर्चे बहुत महत्वपूर्ण थे। बौद्धिक रूप से सम्मेलन काफी ऊचाई पर रहा। तीन-तीन विश्व हिन्दी सम्मेलनो म जो वातावरण हिन्दी के पक्ष म तैयार हुआ उसे इसने आगे बढाया।

सार्थक चिन्तन जरूरी

भारत से १३ हजार मील दूर टिनिडाड जसे देश म हिन्दी के सबध मे सार्थक चिन्तन और विचार विमश होना भारत के लिए गभीरता से सोचन का विषय है जब कि विश्व क लगभग ४ देशो म फले हिन्दुस्तानी मूल के भाई-बहन हिन्दी के माध्यम से जुडना चाहते हम स्वय अभी अग्रजी की दासता म जकडे हुए है। आज दुनिया क कोन कोने म विश्व विद्यालयो म हिन्दी की पढाइ हो रही है पर हम अग्रजी स्कूलो की सामना क स्वदलन म स्वेच्छा स फसत जा रहे है।

श्रद्धा एव अपनत्व

हिन्दुस्तान और हिन्दी के प्रति सुदर देशो म बसने वाले भारतीयो के मन मे जो श्रद्धा और अपनत्व है उसकी कल्पना हम वहा गये बिना नही कर सकते। सम्मलन के आयोजक म प्रमुख हिन्दी निधि क अध्यक्ष श्री चाका सीतारामा सयोजक रविशकर मचालक प्रो क रामच द्र तथा प्रेरणास्रोत असेम्बली की अध्यक्षा कुमारी ओका सिपालाय। प्रथम दिन का कायक्रम पोट आफ स्पेन के ट्रिनिडाड कट्री क्लब मे सम्पन्न हुआ। उसके बाद के सभी समारोह रूद्रनाथ कपिल दव लर्निंग रिसोस सटर सागवान के परिसर म हुए। उस स्थल के आसपास ८० प्रतिशत घर मकान गाव खनी व्यवसाय तथा कारोबार भारतीय मूल के लोगो के है। इस कारण लोगो का सहयोग खब मिला। सभी प्रतिनिधियो को यहा के भारतवशियो ने अपने घरो म ठहराया था।

भारतीयो के प्रति ईर्ष्या द्वेष

भारतीयो के प्रति यहा क अन्य समुदायो मे ईर्ष्या द्वेष का एक कारण यह है कि अपनी कडी मेहनत और लगन क बल पर भारतीयो न अचल सपत्ति अर्जित की है।

जाज टाउन पोट आफ स्पेन तथा पारामारिबो जसे शहरो म ० प्रतिशत मकान और दुकान भारतवासियो की है इस कारण कभी कभी हिन्दुस्तानियो को परेशान भी होना पडता है

उत्तरी अटलाटिक सागर क पश्चिमी छोर पर स्थित टिनिडाड एव टबगो का क्षेत्रफल मात्र ५ ९ वग किलोमीटर है और वहा ६६ प्रतिशत साक्षरता है। समद्धि और सुसभ्यता दोनो दृष्टि म यह एक स्मरणीय देश है।

हिन्दी के स अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन की प्रतिशत कार्रवाई अग्रजी म हुई। वह एक विवशता थी क्योंकि हिन्दी उनके लिए एक कठिन भाषा है। पर इन लोगो क उत्साह को देखकर आशा को यह आस बधी कि अगर भारत सरकार हिन्दी सिखान के लिए योग्य और निष्ठावान शिक्षक यहा भेजे तो माहौल साल-दो साल म बदल सकता है हिन्दी क माध्यम स हम अपने इन बाधवो को अपने और करीब ला सकते है।

साभार दनिक राष्ट्रीय सहारा ११ ५ ९२

श्री रामलाल मलिक अस्वस्थ

दिल्ली के सुप्रसिद्ध आय समाजी दानवीर व सामाजिक कमठ कायकर्त्ता श्री रामलाल मलिक आजकल अस्वस्थ चल रहे है और वह जीवन नर्सिंग होम नई दिल्ली म आई०सी० सी० य निट म दाखिल है। बीमारी क कारण उनकी याददाश्त पर प्रभाव पडा है।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के अधिकारी एव कायकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि शीघ्र ही उन्हे स्वास्थ्य प्रदान करे और व दीर्घायु हो ताकि समाज सेवा करते हुए वे हम सब का मार्गदशन करते रहे।

सम्पादक

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

राष्ट्रपति का निर्वाचन



वैदिक राज्य व्यवस्था मे वशानुक्रमिक एक तन्त्र राजा की पद्धति स्वीकार नही की जाती। वैदिक राज्य व्यवस्था प्रजातन्त्र पद्धति को मानती है। उसमे राजा, प्रजा द्वारा चुना हुआ होना चाहिए। वेद मे राजा का अर्थ प्रजाओ द्वारा चुना हुआ 'राष्ट्रपति' होता है। वेद मे कहा गया है— सर्वास्त्वा राजन् प्रदिशो ह्वयन्तु — अथर्ववेद ३ ४ १— हे राजन राष्ट्र की सभी दिशाओ मे रहने वाली प्रजायें राज्य करने के लिए तुम्हारा आह्वान करे। त्वा विशो वृणता राज्याय — अथर्ववेद ३,४,२ हे राजन ! सब प्रजाये राज्य करने के लिए तुम्हारा चुनाव करे। इस प्रकार के अनेक स्थल है जहा पर राजा के चुनाव का स्पष्ट उल्लेख आता है। एक प्रसग विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है जहा कहा गया है कि— हे राजन ! राष्ट्र के जो धीवर लोग है जो रथकार लोग हैं जो लोहे का काम करने वाले कारीगर हैं, जो रथ और गाडिया चलाने वाले लोग है वे सब तुम्हारे चुनाव के लिए अपना मत दे रहे हैं—ये धीवानो रथकारा कर्मारा ये मनीषिण । सूता ग्रामण्यश्च ये।— अथर्ववेद, ३,५,६ ७, इसका अर्थ यह है कि केवल ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ही नही, अपितु शूद्रो का भी हाथ राजा के चयन मे होता था।

भारतवर्ष मे इस समय यही प्रजातन्त्र प्रणाली कार्य कर रही है। राष्ट्रपति के आगामी चुनाव मे सम्पूर्ण देश के प्रतिनिधि अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। वे प्रतिनिधि अपने-अपने क्षेत्र की सभी वर्गों की जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

आगामी निर्वाचन मे डा० शकर दयाल शर्मा को भारत राष्ट्र के सर्वोच्च पद के लिए नामित किया जा रहा है। यह चुनाव एक सही चुनाव है। उनका दीर्घकालीन राजनैतिक एव प्रशासनिक अनुभव है। वे पिछले पचास वर्षों से राष्ट्र की सेवा मे सक्रिय हैं। स्वाधीनता आन्दोलन मे उनकी भूमिका से लेकर उपराष्ट्रपति तक के कार्य निश्चय ही उनको इस पद के सर्वथा योग्य पाते है। वे भारतीय सस्कृति के संवाहक एव उदारमना व्यक्ति हैं। हमारी हार्दिक शुभकामनाए।

—डा० धर्मपाल

दयानन्द बाल मन्दिर अमरोहा

दयानन्द बाल मन्दिर अमरोहा जूनियर हाई स्कूल अमरोहा का वार्षिकोत्सव विगत मास बड़ी धूम धाम से मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुए विधायक श्री प्रतापसिंह सैनी ने कहा कि दयानन्द बाल मन्दिर नाम की सस्थाए इसी प्रकार की सस्थाए हैं जिन्होने राष्ट्र चेतना में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वामी दयानन्द एव आर्य समाज के सिद्धांतो पर आधारित ये सस्थाए बालक बालिकाओ मे राष्ट्रीय स्वरूप के पहिचान कराने वाले सस्कारों को प्राणवान कर रही हैं।

इसी अवसर पर शिक्षाधीक्षक अमरोहा—हरिश्चन्द्र आर्य, वीरेन्द्र कुमार आर्य एव प्रधानाचार्य श्रीमती मजुला शर्मा ने भी अपने विचार विद्यालय के सन्दर्भ में प्रस्तुत किए।

विद्यालय के नन्हें मुन्ने बच्चों द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गये। कार्यक्रम का प्रारम्भ वैदिक यज्ञ द्वारा किया गया। कार्यक्रम में गुरुकुल नाटक, माँ का प्यार नाटक तथा केवट राम सवाद दर्शको द्वारा विशेष रूप से सराहा गया। नगर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों के साथ अभिभावकों ने दर्शकों की मुख्य भूमिका अदा की। मच सचालन विद्यालय के छात्र विनीत ने किया।

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय भाई, सादर नमस्ते।

आशा है प्रभु कृपा से स्वस्थ व सानन्द होंगे।

इस बार के 'आर्य सन्देश' मे आपका सम्पादकीय "युवा शक्ति-राष्ट्र शक्ति' पढने को मिला। वास्तव मे ही युवा वर्ग को समादृत करने की आवश्यकता है इसी मे हमारा और युवावर्ग का हित सन्निहित है। यदि युवा वर्ग को मार्गदर्शन न दिया गया तो यह भ्रमित होकर ऐसी भयानक पगडण्डिया मे भटक कर रह जाएगा जहा से लौट पाना सम्भव नही हो सकेगा। आपने अपने लेख के अन्त मे मेरा एक मुक्तक उद्धृत किया है—धन्यवाद।

मेरे मन म एक बात बार बार आती है कि हम लोगो के पास कोई भी अच्छी सी भजनो की कैसेट नही है। जब कि आज के युग मे यह एक बहुत ही आवश्यक माध्यम है। आम तौर पर सभी आर्यों,आर्य परिवारो को यह कमी खटकती है। नए लोगो को देने के लिए भी अच्छी कैसट हमारे पास नहीं है। मैंने इसी आशय कोलेकर कुछ भजन लिखे भी है। मेरे गीत आदि कुछ कैसेटो मे आए हैं। मैंने भजनो की कैसेट भी बनाने के लिए कुछ लोगो से सम्पर्क किया मगर आर्थिक सकट आडे आ गया— सो फिलहाल चुप ही हो गया हू। आप इस दिशा म कुछ विशेष रचनात्मक कार्य कर सके तो कृपया लिखे। आज कल एक आध्यात्मिक ग्रन्थ लेखन मे लगा हुआ हू— और कोई रास्ता नही।।' इसके प्रकाशन की भी समस्या सामने आएगी। ग्रन्थ आधे मे भी अधिक पूरा हो चुका है।



स्वर्गीय रतनचन्द जी सूद

रचयिता— स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
अधिष्ठाता वेद प्रचार

महादानी निरभिमानी स्वर्गीय रतनचन्द जी सूद थे।

थी चमत्कारिणी प्रतिभा हर दम रहता उर उत्साह अमित।
सुख माना परम परमार्थ सदा प्रसन्न मन तन प्रमुदित।।

सौम्य स्वभाव शीलता के गुण तन मन मे मौजूद थे।
महादानी निरभिमानी स्वर्गीय रतनचन्द जी सूद थे।।१।।

नेत्र चिकित्सालय कितनी शिक्षा सस्थाये खुलवाई।
कितने असहाय अनाथो और दुखी जनो की पीर मिटाई।।

अति शुष्क मरुस्थल मे बरसा की सुखद शान्तीमयी बूद थे।
महादानी निरभिमानी स्वर्गीय रतनचन्द जी सूद थे।।२।।

जितने व्याकुल पन्थी आये माधव के सम गले लगाना।
सदगुणो की सुगन्ध छोड गए याद युगो तक करे जमाना।।

पर सेवा अग उमग सवदा विचारार्थ उर उछल कूद थे।
महादानी निरभिमानी स्वर्गीय रतनचन्द जी सूद थे।।३।।

साधु सन्त महात्माओ का आदर सत्कार किया करते थे।
प्रभु विश्वस्त राष्ट्र रक्षार्थ तन मन धन वार दिया करते थे।।

वेद विरोधी शत्रु जनो का अग्नि बाण बारूद थे।
महादानी निरभिमानी स्वर्गीय रतनचन्द जी सूद थे।।४।।

तेलुगु भाषा में आर्य साहित्य के प्रणेता पं० गोपदेव

भवानीलाल भारतीय—

आन्ध्र प्रदेश मे आर्य समाज के सिद्धान्तो का प्रचार करने का श्रेय पं० गोपदेव जी को है। इन्होंने तेलुगु भाषा मे अनेक महत्वपूर्ण मौलिक ग्रन्थो की रचना करने के साथ-साथ ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो तथा उपनिषद दर्शनादि शास्त्रो का भी अपनी मातृ भाषा में अनुवाद किया है। पं० गोपदेव का जन्म १८९८ ई० मे आन्ध्र प्रदेश के गूंटुर जिलान्तर्गत तेनाली तालुके के कुचिपुडा नामक ग्राम मे एक कृषक परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम श्री रामैया तथा माता का नाम श्रीमती अम्बाम्बा था। अपने गाव की प्राथमिक पाठशाला मे अध्ययन करने के अनन्तर उन्होंने १९२२ में अध्यापन प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम किया तथा अपने गाव कुचिपुडी मे पाच वर्ष तक अध्यापक रहे। इसी अवधि मे वे संस्कृत का अध्ययन भी करते रहे। तत्पश्चात् उन्होने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और उत्तर भारत की ओर प्रस्थान किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सचालित उपदेशक विद्यालय मे एक वर्ष तक अध्ययन करने के उपरान्त वे आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के आचार्यत्व मे चलाये जाने वाले आर्य उपदेशक विद्यालय गुरुदत्त भवन, लाहौर मे एक वर्ष तक वैदिक सिद्धान्तो का अध्ययन करते रहे। इस अवधि मे उन्हे सार्वदेशिक सभा की ओर से १५ रुपए मासिक छात्रवृत्ति मिलती रही। दर्शन शास्त्र का विशद अध्ययन करने के लिए वे पं० मुक्तिराम उपाध्याय द्वारा सचालित गुरुकुल पोठोहार (रावल पिण्डी) में तीन वर्ष तक रहे। इसके पश्चात् वे काशी आये और पं० देवनारायण तिवारी से व्याकरण पं० चिन्न स्वामी से मीमांसा तथा पं० महादेव शास्त्री से न्याय दर्शन का विशद एव गम्भीर अध्ययन किया।

१९३८ मे वे पुन आन्ध्र प्रदेश लौटे। इस समय निजाम हैदराबाद मे आर्य सत्याग्रह आरम्भ किया जा चुका था। पं० गोपदेव ने भी सत्याग्रह मे अपना योगदान किया तथा १९३९ में शोलापुर मे पं० गगाप्रसाद उपाध्याय के आचार्यत्व मे चलाये गये उपदेशक विद्यालय मे कुछ समय तक अध्यापन कार्य भी किया। १९३९ मे ही उन्होने उपाध्याय जी की प्रेरणा से स्वग्राम कुचिपुडी मे आर्यसमाज की स्थापना की। अब वे स्वतन्त्र रूप से आर्यसमाज के प्रचार कार्य मे जुटे तथा आन्ध्र एव तेलगाना क्षेत्र मे अनेक आर्यसमाजो की स्थापना की। पं० गोपदेव ब्रह्मचारी हैं और ८६ वर्ष की आयु में भी उत्साह पूर्वक अपनी साधना मे सलग्न हैं। १ मार्च १९८४ को आन्ध्र विश्वविद्यालय ने उन्हे कला प्रपूर्ण (डाक्टर आफ फिलासफी) की आदरी उपाधि प्रदान की है।

पं० गोपदेव ने अपना सम्पूर्ण साहित्य तेलगु भाषा मे लिखा है जो निम्न प्रकार है—

१—सांख्य, योग न्याय, वैशेषिक तथा वेदान्त दर्शन की तेलगु टीका।

२—ईश से श्वेताश्वतर पर्यन्त ११ उपनिषदो की तेलगु टीका

३—स्वामी दयानन्द के निम्न ग्रन्थो के तेलुगु अनुवाद सत्यार्थप्रकाश ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, व्यवहार भानु आर्योद्देश्य रत्नमाला, आर्याभिविनय, गोकरुणा निधि वेदान्त ध्वान्त निवारण तथा भागवत खण्डन।

४—तलुगु भाषा मे लिखे गये उनके अन्य ग्रन्थ निम्न हैं—१ अपशूद्राधिकरणम् २-वैदिक कर्म व्याख्या ३—ईश्वर स्वरूपम् ४—वेद ही ईश्वरीय है ५—शकर पीठाधिपति अस्पृश्य ६—अहं मैं ७—श्रीराम नवमी, सीताराम कल्याणम् ८—लक्ष्मीसूक्त ९—ओमृहमर।

पं० गगाप्रसाद के आस्तिकवाद तथा Worship नामक ग्रन्थो का पण्डित गोपदेव ने तेलुगु मे अनुवाद किया। आस्तिकवाद के अनुवाद का प्रथम सस्करण १९४७ ई० में तथा द्वितीय सस्करण १९६९ ई० मे आर्य समाज कुचिपुडी से से प्रकाशित हुआ। Worship का 'पूजा' शीर्षक अनुवाद १९७३ ई० मे आर्य महिला समाज कुचिपुडी ने प्रकाशित किया। पं० ईश्वरचन्द्र दर्शनाचार्य लिखित अर्थ धर्म मीमांसा का भी उन्होने तेलुगु अनुवाद किया है। पं० मुक्तिराम उपाध्याय द्वारा सम्पादित 'वैदिक गीता' का स्वभाषा में अनुवाद कर उन्होंने प्रकाशित किया।

उनके द्वारा लिखित अथवा अनूदित कुछ अन्य ग्रन्थ हैं—श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जीवन चरित, हनुवेदी दयानन्द ईशावास्योपनिषद् प्रवचन।

आर्य गृहस्थ (अनुवाद) तथा एसु क्रीस्तु रहस्य भावन (अनुवाद) वैदिक दिनचर्या (पञ्च महायज्ञ विधि) की अब तक २० सहस्र प्रतियां छप चुकी हैं।

पं० गोपदेव के अधिकांश ग्रन्थमाला आर्य समाज कुचिपुडी द्वारा सचालित अम्बा ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशित हुए हैं। सम्प्रति वे दयानन्द उपदेशक विद्यालय हैदराबाद के आचार्य पद पर कार्यरत हैं।

स्वास्थ्य सुधा—

उपयोगी घरलू नुस्खे

केला—

४५ खासी की अचूक दवा—केला का शर्बत खासी दूर करने की अच्छी दवा है। अमेरिका मे खासी के लिए इसे सबसे अच्छा उपाय समझा जाता है।

४६ पेचिस का इलाज—दो पके केले लेकर उनके गूदे मे गुड, नमक या दही मिलाकर खाने से दो दिन मे पेचिस दूर हो जाती है।

४७ श्वास (दमे) का इलाज—बिना छिलका उतार कम पके केले मे चाकू से गढा बना ले। उस गढे मे जरा सा नमक तथा काली मिर्च का चूर्ण भर कर उसे रात-भर चादनी मे पडा रहने दे। सवेरे उस केले को आग पर भून कर खाने से दमे मे आराम पहुचता है।

४८—प्रदर रोग का इलाज प्रतिदिन सबेरे शाम १ केला ५ ग्राम शुद्ध घी के साथ खाये। ५ ६ दिन मे रोग दूर हो जायगा।

४९—आग से जलन का उपाय जो स्थान आग से जल गया हो, उस पर केले का गूदा फेट कर कपडे के टुकडे पर मरहम की तरह बिछा कर चिपका दे। फौरन ठडक पड जायेगी।

५० बहु मूत्र का इलाज केला पका हुआ १ अदद, विदारी कद चूर्ण २ ग्राम, शतावरी चूर्ण २ ग्राम, इन्हे खाकर ऊपर से दूध पीलें। दो दिन मे बहुमूत्र ठीक हो जायेगा।

५१—पीलिया का इलाज—बिना छील एक केले के ऊपर भीगा हुआ चूना लगा दे। सबेरे इसे छील कर खा ले। प्रतिदिन ऐसा करने से १ से ३ सप्ताह के अन्दर पीलिया दूर हो जायेगा।

५२—सूजाक की दवा कच्चे केले काटकर धूप मे सुखा लें। पीस कर आटा बना देशी शक्कर मिला खाकर ऊपर से दही की लस्सी पी ले। दो हफ्ते मे आराम। अगर इसके साथ केले के आटे की ही रोटी खाये तो जल्दी आराम।

५३—बाझपन का इलाज केले के पेड से नीचे गिरी ६ ७ कोमल बाझ फलिया लेकर इनमे इतनी ही सख्या मे शिवलिंगी के बीज पीस ले। बाझ स्त्री मासिक धर्म के बाद खाने तो दो महीने मे ही गर्भ ठहर जायेगा।

५४ रक्त स्राव का इलाज किसी महिला की मूत्रेन्द्रि से रक्त निकलता हो तो केले की जड का रस पिये। रक्त स्राव बन्द हो जायगा।

५५ दिमागी शक्ति २ ३ अखरोट की गिरी और १ २ चम्मच शहद मिलाकर प्रात खूब चबा चबा कर खाने से दिमागी ताकत बढती है।

५६ हृदय की कमजोरी सौंफ का १ चम्मच चूर्ण थोडे शहद मे मिलाकर चाटने से हृदय की दुर्बलता दूर होती हैं और रक्त शुद्ध होता है।

नेतराम शर्मा

प्रधान—भारतीय योग सस्थान पूर्वी जिला दिल्ली

वीरांगना शिविर सम्पन्न

आर्य समाज पीपाड शहर के तत्वावधान मे २२-५-९२ से २८-५-९२ तक आठ दिवसीय वीरागनाओ को सजग करने हेतु एक शिविर का आयोजन किया गया जिसका सचालन श्रीमति सविता जी आर्य (अलवर) ने किया। शिविर मे आसन लाठी प्राणायाम के साथ-साथ आध्यात्मिक कार्यक्रम भी रखे गये। शिविरावधि मे प्रात यज्ञ प्रवचन एव मनन का आयोजन किया जाता है जिसमे सुबह साय लगभग ३० महिलाए एव कन्याओ ने लाभ उठाया।

आदर्श-त्रैतवाद-५

—राजसिंह भल्ला

वह परम पुरुष मनोमय ज्ञानवान् है पूर्ण ज्ञानी है। शक्ति ही उसका शरीर है— सर्वशक्तिमान है। वह प्रकाशस्वरूप है सच्चे सकल्प वाला है, आकाशवत निराकार आत्मा है। सर्व कर्म समर्थ है। पूर्ण काम है। सर्व गन्ध ज्ञानवान है। सर्वरस ज्ञानवान। इस सारे शरीर को प्राप्त है—सारे शरीर म व्यापक है। शरीर मे ओत-प्रोत है। वह वाणी से रहित है और संभ्रम—अप्राप्न प्राप्ति से ऊपर है। वह सर्व सुख सम्पन्न है जो उसकी उपासना करता है वह मुक्त हो जाता है।

ईश्वर सुख स्वरूप निराकार अनन्त है—

प्राणो ब्रह्म। क ब्रह्म। ख ब्रह्मेति। स होवाच विजानाम्यह यत्प्राणो ब्रह्म क च तु ख च न विजानामीति। न होचुर्यद वाव क तदव खम यदेव ख तदेव कमिति। प्राण च हास्मै तदाकाश चोचु। छान्दो० ४।१०।५।

प्राण जगत का जीवनाधार ब्रह्म है। सुख स्वरूप ब्रह्म है। आकाशवत अनन्त निराकार ब्रह्म ह। यह सुनकर वह— शिष्य बोला जो प्राण ब्रह्म है वह तो मैं जानता हू किन्तु क और ख मैं नही जानता। वे ऋषि बोल जो ही कम सुख है वह ही खम— अनन्त निराकार है वह ही सुखमय है। उसको प्राण जगत का जीवन वह आकाश ही हे। ऋषि न कहा उस पर अनुकम्पा करके ऋषि ने शिष्य को उपदेश दिया कि ब्रह्म जीवन आनन्द और अनन्त है।

ईश्वर अलिप्त है—

य एषोऽक्षिणि पुरुषो दृश्यत एष आत्मनि होवाच। एतदमृतमभयमेतद ब्रह्मति तद्यद्यप्यस्मिन्सर्पिर्वोदक वा सिञ्चन्ति वर्त्मनी एव गच्छ त। छन्दो० ४।१५।१।

जो वह आख म पुरुष दीखता है यह आत्मा है यह उसन कहा। यह ही अमृत है। अभय हे और यह ब्रह्म है। भीतरी आख स जो जो स्वरूप वा अपना आप दीखता है। उसी से तात्पर्य है। यह यद्यपि इस आख म हे परन्तु वह लिप्त नही होता यह अलिप्त है। जैसे लोग आख मे घी डालत है अथवा पानी डालते हैं परन्तु वह आख म नही रहते किन्तु किनारा को ही निकल जाते है। एसे ही अन्तर मुख हो कर देखा हुआ पुरुष परम निर्लेप तथा स्वतत्र हे। यहा दशन शक्ति मे ध्यान का सकेत है।

परमात्मा शोभाधाम सर्व सुन्दर है—

एत सयद्वाम इत्याचक्षत एत हि सर्वाणि वामान्यभिसयन्ति। सर्वाण्येन वामान्यभिसयन्ति य एव वेद। २ छन्दो ४।१५।२।

एष उ एव वामनीरेष हि सर्वाणि वामानि नयति। सर्वाणि वामानि नयति य एव वेद। ३

इस आत्मा को आ मज्ञानी शोभाधाम प्राप्न शोभा ऐसा कहत हैं क्योंकि इसको ही सारी शोभाए तथा सौन्दर्य सब ओर स प्राप्त होत ह। जो ऐसा जानता है उसको सारी शोभाए प्राप्त होती है।

और यह ही परमात्मा वामनी सौंदर्य का नेता है। क्योकि यह ही सारे सौंदर्यों को चला रहा है। जो ऐसा जानता है वह सारे सौंदर्यों को चलाता है सारे शुभ कर्म करता है।

प्रकाशों का नेता ईश्वर ज्योति स्वरूप—

एष उ एव भामनीरेष सर्वेषु लोकेषु भाति। सर्वेषु लोकेषु भाति य एव वेद। छन्दो ४।१५।४।

तथा वह हो भगवान भामनी— प्रकाशा का नता है। यह ही ज्योति स्वरूप सारे लोको मे प्रकाशमान है। जो ऐसा जानता है वह मुक्त हो— सारे लोका म प्रकाशमान हो जाता है। भगवान ज्योति स्वरूप है। यही भाव यहा है।

ईश्वर विराट अखण्ड ज्योति स्वरूप है—

तस्य ह वा एतस्यात्मनो वैश्वानरस्य मूर्धैव सुतेजा चक्षुर्विश्वरूप प्राण पृथग्वर्त्मात्मा सन्देहो बहुलो बस्तिरेव रयि पृथिव्येव पादावुर एव वेदिर्लोमानि बर्हिर्हृदय गार्हपत्यो मनो न्वाहार्यपचन आस्यमाहवनीय। छान्दो ५।१८।२।

उस ही इस अखंड सर्वत्र विद्यमान आत्मा का शोभन प्रकाश ही सिर के समान है। द्यु लोक उस का मूर्धा है। विश्वरूप सर्वज्ञान उसका नेत्र है। ब्रह्माण्ड की वायु—जीवन शक्ति ही उसका प्राण है। अनन्त भाव ही उसका धड है। धन सम्पत्ति ही उसकी बस्ती है। पृथ्वी ही उसके पाव। वेदी ही उसकी छाती है। यज्ञ कुशा उसके लोम है। गार्हपत्य अग्नि उसका मन है और आहवनीय अग्नि उसका मुख है। वह वैश्वानर आत्मा एक अखण्ड है सर्वत्र विद्यमान है। प्रकाश स्वरूप है। सर्वज्ञ है। अनन्त है। मनो का स्वामी है। और निराकार है। तथा यज्ञस्वरूप है। यह अखण्डनीय उपासना है। इसे विराट की उपासना भी कहते है।

ईश्वर सबका आश्रय—

तस्य क्व मूल स्यादन्यत्रान्नात। एवमेव खलु सोम्यान्नेन शुङ्गेनापो मूलमन्विच्छद्भि सोम्य शुङ्गेन तजो मूलमन्विच्छ। तजसा सोम्य! शुङ्गेन सन्मूलमन्विच्छ। सन्मूला सोम्येमा सर्वा प्रजा सदायतना सत्प्रतिष्ठा। छान्दो ६।८।४।

इस देह का अन्न से दूसरा कहा मूल— कारण हो! दह का कारण अन्न अर्थात पृथ्वी है। ऐसे ही निश्चय से है सोम्य पृथ्वी रूप अकुर से जल कारण जान। हे प्यारे! पानियो के अकुर—कार्य से तज कारण को जान। ह सोम्य! तज कार्य से सत मूल को सब के सचालक भगवान को जान! ह प्यारे! ये सारी प्रजाए सब आत्माए तथा सृष्टिया सत के मूल वाली हैं। इनका आश्रय परमेश्वर है। य सत के आश्रित हैं और सत मे प्रतिष्ठित है। सत्य म सम्पूर्ण विकाशमय जगत स्थित है।

भगवान ही सारे कारणो का आश्रय है। और सब आत्माओ का आधार हे। परमेश्वर म सारे कारण विलक्षण रूप से रहत हैं। इस कारण यह ईश्वर सब का मूल कहा गया है।

ईश्वर भूमा और सुख का भण्डार है—

यो वै भूमा तत्सुखम। नाल्पे सुखमस्ति। भूमैव सुखम। भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्य इति। भूमान भगवो विजिज्ञास इति। छान्दो ७।२३।१।

सनत कुमार ने कहा हे नारद— बहुत होने को सबसे महान को और परम पुरुष को भूमा कहा है। निश्चय जो महान है परम पवित्र सत्ता है वह सुख है। महान् ही जानने की इच्छा करने योग्य है। नारद महाराज मैं महान को ही जानना चाहता हू।

भूमा परम पद है। अमृत है। अविनाशी है। आनन्द स्वरूप है—

यत्र नान्यत्पश्यति नान्यच्छृणोति नान्य द्विजानाति स भूमा। अथ यत्रान्यत्पश्यत्यच्छृणोत्यन्यद्विजानाति तदल्पम। यो वै भूमा तदमृतम। अथ यदल्प तन्मर्त्यम। छान्दो ७।२४।१।

जिस परम शुद्ध अवस्था म आत्मा अन्य वस्तु को नही देखता अन्य शब्द को नही सुनता और अन्य पदार्थ को नही जानता वह भूमा है। उस निर्पेक्ष आत्मा पद का नाम भूमा है। इसके विपरीत जहा आत्मा अन्य वस्तुआ को देखता है अन्य शब्दो को सुनता है अन्य वस्तुआ को जानता है वह अल्प हे। जो ही भूमा है, परमपद है, वह अमृत है। अविनाशी है। आनन्द स्वरूप है। आनन्द स्वरूप है। और जो अल्प है वह मरणीय है।

ईश्वर सर्व व्यापक है—

स एवाधस्तात् स उपरिष्टात्स पश्चात्स पुरस्तात्स दक्षिणत स उत्तरत एवद सर्वमिति। छान्दो० ७।२५।१।

सनतकुमार ने कहा वह भूमा ही नीचे है वह ऊपर है वह पीछे है, वह आगे है वह दक्षिण मे है वह उत्तर मे है और वह ही सवत्र विद्यमान है।

ईश्वर बल शक्ति और तेज का भण्डार—

अथ यदिदमस्मिन ब्रह्मपुरे दहर पुण्डरीक वेश्म दहरोऽस्मिन्नन्तराकाशस्तस्मिन् यदन्तस्तदन्वेष्टव्य तद्वाव। विजिज्ञासितव्यमिति। छान्दो० ८।१।१।

इस ब्रह्मपुर म—भगवद भवन के शरीर म जो यह सूक्ष्म कमल गृह है हृदय है। और इसमें भीतर जो सूक्ष्म आकाश है। आत्मा का निवास स्थान है उसमे जो भीतर चेतन ज्योति है वह खोजने योग्य है। ब्रह्म वह ही जानने की इच्छा करने योग्य है। ब्रह्म की उपासना आराधना मनुष्य शरीर म ही होती है। इस कारण इसे ब्रह्मपुर कहते हैं। यह स्थान बल शक्ति और तज का केन्द्र है।

स्वर्गीय पण्डित वासुदेव शर्मा

डा० महेशचन्द्र शर्मा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान पण्डित वासुदेव शर्मा के निधन पर राज्य की आर्य समाजो मे शोक सम्वेदना व्यक्त की गई। ३ जून को उनके निवास स्थान पर ८६ वर्ष की आयु मे उनका निधन हो गया था उनके ज्येष्ठ पुत्र डाक्टर सुरेशचन्द्र शर्मा ने स्थानीय खाजेंकला घाट मे मुखाग्नि दी। इस अवसर पर सैकडो लोग उपस्थित थे। पूर्ण वैदिक रीति से उनका दाह सस्कार पण्डित रामचन्द्र शास्त्री एव पण्डित विन्दाप्रसाद के आचार्यत्व मे दाह सस्कार सम्पन्न हुआ। तीन दिनो तक हवन-यज्ञ के बाद ५ जून को उनकी कर्म भूमि आर्य समाज पटना सिटी मे शान्ति यज्ञ पूर्ण वैदिक रीतिसे सम्पन्न हुआ।



इस अवसर पर नगर के हजारो लोगो ने अश्रु पूर्ण नेत्रो से शोक-व्यक्त किया। आय समाज का वातावरण हवन यज्ञ, वैदिक मन्त्रो मे गूज उठा और प्रिय नेता के प्रति अपनी श्रद्धाजलि व्यक्त की।

पण्डित जी का जन्म १९०५ मे हुआ था और १९१८ मे पटना सिटी आर्य समाज की एक छोटी सी जगह मे कार्य प्रारम्भ किया। उनके प्रेरणा स्रोत के रूप मे राजगुरु पण्डित धुरेन्द्र शास्त्री (स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती, स्वामी मुनीश्वरानन्द जी स्वामी अभेदानन्द जी और स्वामी सर्वदानन्द जी जैसे अनेको आर्य नेताओ का प्रभाव पडा और १९२८ मे पटना सिटी आर्य-समाजसे मन्त्री तथा १९३५मे बिहार राज्य आर्यप्रतिनिधि सभाके प्रधान मन्त्री बने। वे १९५३ तक लगातार प्रतिनिधि सभा के सर्वसम्मति से प्रधान मन्त्री बनने रहे पुन उनकी प्रशासनिक और सगठनात्मक क्षमता ने १९६० से १९६५ तक तथा पुन १९६८ मे आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मन्त्री का पद स्वीकार करना पडा। वे १०वर्षो तक १९७२ से लगातार प्रधान निर्वाचित किये गये। राज्य की शैक्षणिक सस्था गुरुकुल वैद्यनाथ धाम के वे बीस वर्षो तक मन्त्री तथा गाधी आर्य कन्या विद्यालय (पटना सिटी) आर्य कन्या विद्यालय (नया टोला) डी० ए० वी० कालेज सीवान दयानन्द विद्यालय मीठापुर के सस्थापका मे थे। इसके अलावा तीन दर्जन से अधिक सामाजिक शैक्षणिक और सास्कृतिक सस्थाओ से मृत्यु पर्यन्त जुडे रहे।

राज्य मे उनका व्यक्तित्व एक विमल कीर्ति के रूप मे निखरता रहा।

सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के १९३७ मे अन्तरग सदस्य बने तथा लगातार १९९२ की ३ जून (मृत्यु तिथि) तक सदस्य उपमन्त्री तथा उपप्रधान की हैसियत से सेवा करत रहे। वे आर्य समाज की प्रतिमूर्ति के रूप मे जान जात थे।

एक व्यक्तित्व

१९०५ मे एक गाव मे जन्म लेने के बाद सात वर्ष की आयु मे पूरे परिवार को प्लेग महामारी मे खो बैठे। एक अनाथ बालक ने समाज मे आविर्भाव किया। उन्होने सात वर्ष की आयु मे परिस्थितियो से मुकाबला कर राष्ट्रीय स्थान प्राप्त किया, यह उनकी लगन, कर्मठता का प्रतीक रहा। पटना सिटी आय समाज को एक कोठरी से परिवर्तित कर दो एकड की भूमि और विशाल भवन मे परिवर्तित कर कार्य कुशलता का परिचय दिया। आई० ए० की परीक्षा १९२८ म पास करन के पश्चात् एक विद्यालय की स्थापना की और १९३० से १९७४ तक प्रधानाध्यापक बने रहे? यही उनकी जीविका का साधन रहा। १९३५ मे विवाह बन्धन मे जुडे और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अन्नपूर्णा देवी को शिक्षा देकर उन्हे भी १९४० मे शिक्षिका बनाया।

अल्प वेतन म भी पूरे परिवार को शिक्षित किया और सबो को सस्कृत भाषा से जोडा। उनके ज्येष्ठ पुत्र डाक्टर महेशचन्द्र शर्मा कनिष्ठ प्रोफेसर डाक्टर) सुरेशचन्द शर्मा, ज्यष्ठ पुत्री डा० सुधारानी शास्त्री (विभागाध्यक्षा, सस्कृत विभाग, मगध महिला कालेज), कनिष्ठ पुत्री डा० सुभेधारानी एम० ए० एम० एड० पी० एच० डी०, तथा दोनो दामाद डाक्टर बन्धूसिंह, कामेश्वर प्रसादसिंह, पुत्रवधू डाक्टर सरस्वती कुमारी एव डाक्टर चन्द्रप्रभा भी कालेजो मे प्राध्यापक पद पर कार्यरत है। यह उनकी शिक्षा-प्रेम की मिसाल है। इसके अलावा सकडो छात्रो को उन्होने पठन-पाठन मे मदद की और वे मृत्युपर्यन्त एक फकीर, सन्त की तरह रहे।

उन्होने देश के स्वतन्त्रता आन्दोलनो मे व्यापक रूप से भाग लिया। वे नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के प्रभाव म रहे तथा क्रातिकारी के रूप म पटना सिटी आर्य समाज को केन्द्र बनाया। अग्रेजो से टक्कर ली। तथा भूमिगत होकर वर्षो आजादी के लिए यातनायें सही। वे समाज सुधारक ही नही थे अपितु उन्होने आजादी के लिए भी प्रमुख भूमिका अदा की।

श्रद्धाञ्जलि

आय समाज दीवान हाल दिल्ली की यह महति सभा लोक सभा सदस्य आर्य समाज के प्रमुख सन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी जी के सुपुत्र श्री यश जी के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है।

श्री यश जी प्रसिदध पत्रकार थे। आप दैनिक 'मिलाप जालन्धर के सम्पादक थे तथा बचपन से ही स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुडे हुए थे।

श्री यश जी के निधन से सामाजिक राजनीतिक व साहित्यिक क्षेत्र की अपूर्णीय क्षति हुई है।

हम दिवगत आत्मा की सदगति के लिए प्रार्थना करते है तथा सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना व्यक्त करते है।

सूर्य देव
मन्त्री, आर्यसमाज दीवान हाल, दिल्ली

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली की यह महति सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के पूर्व प्रधान प० वासुदेव शर्मा के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती हैं तथा परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनकी दिवगत आत्मा को सदगति दे तथा उनके शोक सतप्त परिवार एव इष्ट मित्रो को इस महान दु ख को सहन करन की शक्ति दे।

(सूर्य देव)
मन्त्री आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली

स्वतन्त्रता सेनानी प० दुर्गादास का निधन

नई दिल्ली १८ जून वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी एव पत्रकार प० दुर्गादास का आज सुबह निधन हो गया। वह ८४ वर्ष के थे।

लाला लाजपतराय के क्रान्तिकारी विचारो के प्रभाव मे रेलवे की नौकरी छोडकर उन्होने देश सेवा का व्रत लिया था। लाला जी, महात्मा हसराज, प० लेखराम, महात्मा आनन्द स्वामी की विचार श्रृखला को आगे बढाते हुए लगभग ६० वर्ष तक उन्होने साप्ताहिक "आर्य गजट का सम्पादन किया। उन्हीं के सम्पादकत्व म उर्दू के इस सबसे पुराने साप्ताहिक ने अपनी शताब्दि सम्पन्न की है। भारत सरकार ने गत दिनो उन्हें स्वमेव "स्वतन्त्रता सम्मान" पेंशन प्रदान की थी।

शोक प्रस्ताव

दिल्ली की समस्त आर्य समाजो की शिरोमणि सस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी एव कर्मचारी श्री राधेश्याम त्यागी (स्वतन्त्रता सेनानी) के भाई श्री बेगराज त्यागी जी के अकस्मात् देहावसान पर गहरा दुख एव शोक व्यक्त करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके वियोग मे शोक सतप्त दुखी परिवार एव सगे सम्बन्धियो को इस दारूण दुख को सहने की शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करे।

डा० धर्मपाल महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

आवश्यकता

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार (उ० प्र०) के विद्यालय विभाग के लिए एक प्राचार्य (प्रिन्सिपल एक प्रबन्धक तथा चार अधिष्ठाताओ की आवश्यकता है। प्राचार्य पद के लिए दस वर्ष के अनुभवी एम० एम० बी० एड० व्यक्ति आवेदन करे। अवकाश प्राप्त प्रिन्सिपल भी आवेदन कर सकते हैं। वतन योग्यतानुसार दिया जायेगा। आवेदक शाकाहारी हो और शराब सिगरेट तथा किसी भी प्रकार का नशा न करने वाले हो।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय गुरुकुल शिक्षा पद्वति पर आधारित आवासीय शिक्षा सस्था है जहा चरित्र निर्माण भारतीय सस्कृति वैदिक शास्त्र और अग्रेजी के साथ ही साथ आधुनिक विषया की शिक्षा हिन्दी माध्यम से दी जाती है।

आवेदन मुख्य अधिष्ठाता गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार उ० प्र० के नाम १० जुलाई ९२ अन्तिम तिथि तक पहुच जाने चाहिए। प्रबन्धक के पद के लिए प्रशासनिक अनुभव आवश्यक है। अधिष्ठाता पद पर नियुक्त व्यक्ति आश्रम म रहन वाले कमचारियो की देख भाल क लिए उत्तरदायी हाग।

मुख्य अधिष्ठाता

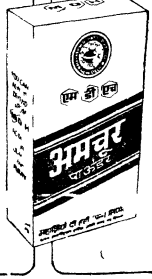
प्रवेश सूचना

गगा तट का सुरम्य वातावरण विशाल परिसर एव केन्द्राय विद्यालय पर आधारित पाठयक्रम—

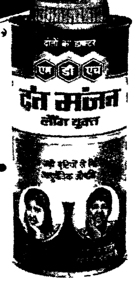
गुरुकुल की विशेषता—छात्रा का बौद्धिक मानसिक और चारित्रिक विकास ६ वष से १० वष के बच्चा क प्रवश के लिए १० दस रुपए नकद अथवा मनी-आडर द्वारा भेज कर प्रवश नियमावली एव फाम प्राप्त कर। १ जौलाइ १९९२ से प्रवेश प्रारम्भ।

मुख्य अधिष्ठाता
आवासीय गुरुकुल कागडी विद्यालय हरिद्वार
पिनकाड २०९४०८









आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N. No 32387/77 Posted at N D P S O on 25 26 6 1992 Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल ११०२४/९२ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) १३९/९२

चुनाव समाचार

आर्य समाज शकरपुर दिल्ली के चुनाव सम्पन्न हुए

आर्य समाज शकरपुर के प्रधान श्री रोशनलाल जी गुप्ता प्रतिनिधि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से हुए जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

श्री मिश्रीलाल गुप्ता—प्रधान श्री पतराम त्यागी—उपप्रधान श्री ओ३म प्रकाश रोहिल—उपप्रधान श्री धर्मेन्द्र कुमार आर्य—मन्त्री श्री ब्रजवल्लभ गुप्ता—कोषाध्यक्ष, श्री रामनिवास कश्यप—उपमन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य—प्रचार मन्त्री।

आर्य समाज कलकत्ता का चुनाव सम्पन्न

—आर्य समाज कलकत्ता की साधारण सभा का अधिवेशन दिनांक १७ मई १९९२ को आर्य समाज कलकत्ता के सभागार में आर्य समाज कलकत्ता के प्रधान श्री सीताराम आर्य की अध्यक्षता में वर्ष १९९२ ९३ के लिए निम्न पदाधिकारियों का निर्वाचन सर्वसम्मति से हुआ—

श्री सीताराम आर्य—प्रधान श्री सुखदेव जी शर्मा—उपप्रधान श्री यशपाल वेदालंकार—उपप्रधान श्री छबलदास सैनी—उपप्रधान श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल—मन्त्री श्री राधेश्याम कुमार आर्य—उपमन्त्री, श्री अशोक कुमार सिंह—उपमन्त्री श्री महाराम वर्मा उपमन्त्री श्री बिन्देश्वरी जायसवाल कोषाध्यक्ष श्री घनश्याम मोर—पुस्तकाध्यक्ष।

आर्य समाज रोहतास नगर शाहदरा का चुनाव सम्पन्न

—आर्य समाज रोहतास नगर शाहदरा का वार्षिक चुनाव ३ ५ ९२ को श्रीमति ईश्वर देवी धवन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, निम्नलिखित अधिकारी चुने गये—

श्री सिद्धानन्द शास्त्री—प्रधान श्री सुशील कुमार व श्री शान्ति स्वरूप—उपप्रधान श्री महाराज कृष्ण धवन—मन्त्री श्री राजीव लोचन—उपमन्त्री, श्री कृष्ण देव कपूर—प्रचार मन्त्री श्रीमति शान्ति देवी—प्रधान स्त्री समाज श्रीमति इन्दू अरोरा—मन्त्री।

आर्य समाज जनकपुरी का वार्षिक चुनाव

७ जून को आर्य समाज मन्दिर जनकपुरी बी० ब्लाक का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ जिसमे निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

प्रधान श्री बिरन्द्र कुमार खट्टर मन्त्री श्री लब्भूराम, कोषाध्यक्ष श्री शान्तिस्वरूप कपूर, उपमन्त्री—श्री के० के० कपनिया पुस्तकालयाध्यक्ष श्री सोमराज टुटेजा प्रचार मन्त्री—श्री विरेन्द्र प्रसाद कपूर।

स्त्री आर्य समाज ग्रीन पार्क का वार्षिक चुनाव

दिनाक १७ ५ ९२ को स्त्री आर्य समाज ग्रीन पार्क का वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ।

प्रधाना श्रीमती कौशल्या देवी, उपप्रधाना—श्रीमती शान्तिदेवी चावला, श्रीमती सुदशन सोनी श्रीमती प्रकाश सूद, मन्त्राणी—श्रीमती आशा ख्याल, उपमन्त्राणी श्रीमती कृष्णा ठुकराल श्रीमती सुदशन खन्ना, कोषाध्यक्षा—श्रीमती सुधा गुप्ता निर्वाचित हुइ।

सेवा में—

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाऊस दरियागंज नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ फोन ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (एल १०२४/१-०९२

ओ३म्

साप्ताहिक

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५ अंक ३२ | रविवार ५ जुलाई १९९२ | विक्रमी सम्वत २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९०९२

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी से त्याग पत्र वापस लेने की मांग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग की बैठक शुक्रवार दिनांक २६ जून को आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल में हुई। बैठक में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के विरुद्ध कुछ भ्रमित व्यक्तियों द्वारा किए गए दुष्प्रचार की भर्त्सना की गई क्योंकि इससे आर्य समाज की छवि को धक्का लगा है।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी से यह अनुरोध किया गया कि वे ऐसे लोगों, जो संगठन के सदस्य भी नहीं है, के दुराग्रह के सम्मुख न झुके तथा आर्य समाज के व्यापक हित को ध्यान में रखते हुए वे अपना त्याग पत्र वापस ले लें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि की यह अन्तरंग सभा आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन एवं उसके प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी के नेतृत्व में पूर्ण निष्ठा एवं आस्था रखती है।

डा० भवानीलाल जी भारतीय सम्मानित होंगे

बम्बई आर्य समाज के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् लेखक व साहित्यकार डा० भवानीलाल भारतीय को ५ जुलाई, ९२ को श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया जा रहा है। यह पुरस्कार आर्य समाज मन्दिर सान्ताक्रुज, बम्बई द्वारा समाज मन्दिर प्रांगण में एक समारोह में दिया जायेगा। उल्लेखनीय है कि वर्ष १९९१ से प्रारम्भ यह पुरस्कार प्रति वर्ष एक ऐसे विद्वान लेखक को दिया जाता है जिसने जीवन पर्यन्त आर्य साहित्य का सृजन कर आर्य समाज की सेवा की हो।

इस समारोह में श्री विजय कुमार जी गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली को साहित्य प्रकाशक के रूप में की गई उनकी सेवाओं के लिए मरणोपरान्त 'स्मृति उपहार' (चांदी की शील्ड) प्रदान की जायगी।

कर्मठ व्यक्तित्व की धनी : सुश्री प्रेम बंसल

नई दिल्ली परिश्रम, लगन व निष्ठा से जो समर्पित हो कार्य करते है, सफलता उनके कदम चूमती है। ऐसी ही एक महिला है सुश्री प्रेम बन्सल। आप आर्य समाज दीवानहाल के सदस्य स्व० लाला रामस्वरूप की सुपुत्री है और ३३ वर्षों से दिल्ली में ऊषा सिलाई के केन्द्र में स्कूल आफिसर के रूप में कार्य कर रही हैं। राष्ट्रपति की पत्नी श्रीमति जानकी वेंकटरमन ने गत वर्ष सुश्री प्रेम बन्सल को श्रेष्ठ सेवाओं के लिए एक कर्मठ आफिसर के रूप में सम्मानित किया था।

देश में इस समय ऊषा सिलाई केन्द्र के लगभग ५०० केन्द्र चल रहे है जिनमें २५०० छात्रायें कटाई, सिलाई, व कढाई का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। अकेले दिल्ली में ४५ केन्द्र चल रहे हैं। एक केन्द्र राष्ट्रपति भवन में चल रहा है जिसका उद्घाटन पूर्व राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि ने किया था और एक केन्द्र आर्य समाज मन्दिर सरस्वती विहार में भी चल रहा है। इन केन्द्रों में छात्राओं को हर प्रकार के वस्त्रों की कटाई, सिलाई व कढाई का प्रशिक्षण दिया जाता है। वर्ष में दो परीक्षाओं के बाद सफल छात्राओं को प्रमाण पत्र दिए जाते हैं।

दिल्ली, राजस्थान व देश के अन्य भागों के ऊषा केन्द्रों में प्रशिक्षण व उनकी उन्नति का दायित्व सुश्री प्रेम बंसल बखूबी निभा रही है। अब तक इन केन्द्रों में हजारों छात्रायें उनके निर्देशन में प्रशिक्षण प्राप्त कर व स्वावलम्बी बन राष्ट्र निर्माण में योगदान दे रही है।

आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के नाम पर दिए गए दान का सदुपयोग हो

दिल्ली २६ जून दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की आर्य समाज दीवान हाल में हुई आज अन्तरंग की बैठक में कुछ सदस्यों ने ऐसी शिकायत की कि गुरुकुलों, गोशालाओं, विधवा आश्रमों, अनाथालयों, आर्य युवक संगठनों के नाम पर तथा प्राकृतिक आपदाओं (भूकम्प, बाढ, अकाल, आदि) के समय जन सेवा के नाम पर कुछ व्यक्तियों तथा संस्थाओं द्वारा प्रचुर मात्रा में अन्न, वस्त्र व अन्य सामग्री तथा धन राशि संग्रह की जाती है तथा उसका सदुपयोग नहीं होता है। ऐसे व्यक्ति एवं संस्थायें न केवल इसका सही-सही व पूरा-पूरा हिसाब किताब रखते हैं और न ही वे किसी के प्रति हिसाब देने के उत्तरदायी होते हैं।

अतः सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि आर्य महानुभाव, दानी श्रेष्ठी अथवा संस्थायें समय समय पर आर्य समाज व महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम पर दान में मांगे जाने वाली सहायता सामग्री अथवा धन राशि केवल दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की रसीद पर ही दें। नकद, चैक, बैंक ड्राफ्ट, आदि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम 'केवल खाते में, सभा कार्यालय १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली में ही भिजवायें ताकि दानी महानुभाव यथा समय अपने सात्विक दान का हिसाब प्राप्त कर सकें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अतिरिक्त अन्य किसी रसीद पर दी गई सहायता सामग्री अथवा धन राशि के लिए सभा उत्तरदायी नहीं होगी।

उल्लेखनीय है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम दानी महानुभावों द्वारा दान में दिया गया एक-एक पैसा वेद प्रचार, आर्य समाज तथा जन सेवा कार्यों के लिए व्यय किया जाता है।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

साहित्य समीक्षा

आचार्य क्षेमचन्द्र "सुमन" व्यक्तित्व, कृतित्व

—लेखिका श्रीमती आशा अग्रवाल

प्रकाशक—पुस्तकायन २/४२४०ए, असारी रोड, नई दिल्ली-२

मूल्य—२०० रुपये

शोध और अनुसधान के क्षेत्र मे प्राय यह बात मानी जाती रही है कि दिवगत लेखको, कवियो साहित्यकारो अथवा उनकी कालजयी कृतियो को ही इस कार्य के लिए उपयुक्त माना जाता है। किन्तु सर्वतोमुखी प्रतिभा का धनी कोई जीवित साहित्यकार भी यदि सारस्वत भण्डार की अभिवृद्धि मे अपना महत्वपूर्ण योगदान करे तो उसके जीवनकाल मे ही उसके व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर शोध कार्य किया जाना अनुचित नही है। ऐसा करने मे एक बडा लाभ तो यह होता है कि ऐसे कृति लेखक के जीवन व्यक्तित्व तथा उसके लेखन कार्य के सबध म सभी स्रोत सदम तथा सामग्री उपलब्ध रहती है जबकि दिवगता के बारे मे तत्-तत् व्यापक जानकारी का एकत्र करना कभी-कभी कठिन हो जाता है। एक अन्य बात यह भी है कि उस लेखक से उसके लेखन तथा विचारो के सबध मे शोधकर्ता प्रत्यक्षतया जानकारी प्राप्त कर लेता है जो प्राय नि सशय होती है।

आचार्य क्षेमचन्द्र "सुमन' हिन्दी के ऐसे ही बहुमुखी प्रतिभा के धनी लखक हैं जिन्होने साहित्य की अनेक विधाओ को अपनी प्रतिभा के बल पर समृद्ध किया है। उनके कृतित्व की ही भाति उनका व्यक्तित्व भी नितान्त प्रेरणादायी तथा उत्साह की उर्मियो को तरगित करने वाला रहा है। आलोच्य शोध,प्रबध के प्रथम दो अध्यायो मे शोधकर्त्री ने विविध स्रोतो से सुमनजी के जीवन तथा व्यक्तित्व विषयक सामग्री को एकत्र करके उसका विशद विवेचन किया है। पुन उनके साहित्यिक व्यक्तित्व का आकलन करने के पश्चात् सुमन कालीन देश की परिस्थितियो का ऐतिहासिक विवेचन किया गया है। यह ज्ञातव्य है कि सुमन जी एक ओर ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की पुनरुत्थान वादी, सुधारप्रिय विचारधारा से प्रभावित हे तो दूसरी ओर महात्मा गाधी की राष्ट्रीय विचारधारा ने भी उनके शालीन एव गौरवास्पद व्यक्तित्व के निर्माण मे महती भूमिका निभाई है।

जहा तक साहित्य की विविध विधाओ का सवाल है वे एक श्रेष्ठ कवि हैं, काव्य मर्मज्ञ है, इतिहास लेखक हैं, साहित्य के इतिहास तथा समीक्षा के पण्डित है। यह सब होने पर भी जीवनी लेखन तथा सस्मरण लेखन जैसी विधाओ का उनका विशिष्ट योगदान है। विदुषी लेखिका ने अत्यन्त विस्तार म जाकर सुमन साहित्य की उपयुक्त सभी शैलियो म लिखी रचनाओ का तात्विक समीक्षण किया है। यहा एक व्यक्तिगत सस्मरण दना उपयुक्त होगा। इस समीक्षा के लेखक ने जब १९५३ मे हिन्दी एम० ए० की परीक्षा दी, तो समालोचना शास्त्र का अध्ययन करते समय उसने सुमन जी के "साहित्य विवेचन' ग्रन्थ को इस विषय का एक श्रेष्ठ ग्रन्थ पाया। जिस सरल तथा मनोग्राही शैली म साहित्य शास्त्र की विवचना इस ग्रन्थ म की गई है वह बडे-बडे आचार्यों तथा विभागाध्यक्षो के द्वारा भी अब तक नहीं की गयी है। इसी प्रकार उनके लगभग सभी सस्मरण ग्रन्थो को पढने का अवसर मुझे मिला है और यह नि सकोच कहा जा सकता है कि हिन्दी मे सस्मरण, लेखन की कला के व अग्रदूत है।

सुमन जी द्वारा सम्पादित कालजयी ग्रन्थ 'दिवगत हिन्दी सेवी" यद्यपि अभी अपूर्ण ही हे किन्तु एक विराट् योजना को दस खण्डो मे समेटने का उनका यह प्रयास यदि निकट भविष्य मे पूर्ण होता है तो वे आधुनिक हिन्दी भाषा और साहित्य के व्यास कहलाने के अधिकारी होगे। यह सब तो उनके लेखन कर्म का एक विहगाव-लोकन मात्र ही है, किन्तु व्यक्ति सुमन तो इससे अधिक ऊर्जावान्, सकल्पनिष्ठ तथा समर्पित व्यक्तित्व के धनी है। साथी लेखको के सहायक होना, युवा लेखको को प्रोत्साहन और प्रेरणा देना, सामाजिक सर्वहितकारी कार्यों मे आगे आना तथा एक निष्ठावान् नागरिक और वफादार मित्र का कर्तव्य निवहन करना यह सब उनके वदनीय चरित्र के कुछ एसे पहलू है जिनसे यह व्यक्ति हम सबका श्रद्धा-भाजन तथा प्रीतिपात्र बना है। निश्चय ही आशा अग्रवाल की यह शोध-कृति एक ऐसे गहनीय कृतिकार का अमल धवल रूप पाठको के समक्ष उजागर करती है जो ध्येयनिष्ठ होकर अर्द्ध शताब्दी से अधिक की कालावधि मे स्वय को स्वदेश, स्वधर्म तथा स्वभाषा के लिए समर्पित करता आ रहा है।

प्रो० भवानी लाल भारतीय

८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर

पवित्र पादरियों की अपवित्र प्रेमलीला का हंगामा

—योगेन्द्र बाली

आजकल ब्रिटेन मे पवित्र पादरियो की प्रेमलीलाओ के धमाके हो रहे हैं। एक ओर स्वय पादरी हैं तो दूसरी ओर हैं, कई कैथोलिक पादरियो की स्वघोषित प्रेमिकाए और उनके वकील। प्रेमिकाओ का दावा है कि वे अपने प्रेमी पादरियो के ससर्ग से या तो मा बनने वाली है या मा बन चुकी हैं। ऐसी घटनाओ के चलते कई कैथोलिक पादरियो और गिरजाघरो का अस्तित्व सकट मे पड गया है। उनसे जवाब मागा जा रहा है।

चर्चा है कि बहुत-सी अविवाहित माताओ के बच्चे ब्रह्मचर्य व्रतधारी पादरियो की सतानें हैं, जिनकी प्रेमलीला पर चर्च पर्दा डालने का प्रयास कर रहा है, अब ये मामले अदालतो म ले जाने के प्रयास किये जा रहे ह। मामलो की गभीरता इस बात से जानी जा सकती है कि अब यह मुद्दा प्रसार माध्यमो और आम जनता के बीच खुली बहस का विषय बन गया है और धीरे-धीरे इसकी भनक रोम के वेटिकन सिटी मे भी पहुचने लगी है।

मामला तब ज्यादा चर्चा म आया जब बर्मिघम के एक वकील रिचड पोप ने १६ मई को कैथोलिक चच के वरिष्ठ अधिकारियो पर पादरियो की प्रेमलीला के परिणामस्वरूप जन्मे दर्जनो बच्चो के जन्म और उनके अस्तित्व को छुपाने का आरोप लगाया।

रिचर्ड का दावा है कि ऐसी बहुत-सी स्त्रियो ने उसे अपने मुकदमे की पैरवी के लिए चुना है, जिनके बच्चो का पिता कोई कैथोलिक पादरी है।

माना जाता है कि पादरियो के साथ यौनलीला के परिणामस्वरूप मा बनी महिलाओ के प्रकाश मे आये मामले दाल म नमक के बराबर है।

रिचर्ड का कहना है कि चर्च मे दोहरे मानदडो के चलते जब तक पादरियो का भण्डा फूट न जाये, तब तक उन्हे चच द्वारा ही सरक्षण दिया जाता है और उनकी गुप्त सतान को भरण पोषण भत्ता भी। गाल्वे के भूतपूर्व पादरी डा० ईमान कैसी और ऐनी के प्रकरण के सामने आते ही कुछ और रहस्यो का खुलासा हुआ। ऐनी पादरी कैसी के ससर्ग से मा बनी।

रिचर्ड के पास पादरियो की प्रेमिकाओ के मुकदमो मे गिल डेवलिन का मामला भी है। ढाई साल तक गिल और कैथोलिक पादरी फादर शान मे टक्कर की प्रेमलीला चली जिसके परिणामस्वरूप गिल ने पुत्री सियान को जन्म दिया।

रिचर्ड की मार्फत डेवलिन बर्मिघम के आर्चबिशप भारिस कूदि मूखी को अदालती सम्मन भिजवा ही है क्योकि यह जानती है कि फादर टक्कर के मामले म वे सब जानते है डेवलिन की शिकायत है कि चर्च प्रशासन ने उसे गुजारा देना बन्द कर दिया। यह मुकदमा डेवलिन की दो वर्ष से जारी उस मुहिम का हिस्सा है, जो उसने गुमशुदा फादर टक्कर की तलाश म शुरू की थी। उल्लेखनीय है कि जब एक पत्रिका ने डेवलिन और पादर टक्कर की प्रेमकथा का पर्दाफाश किया, तो फादर टक्कर ऐस गायब हुए कि आज तक उनका कोई पता नही चला। उसका कहना है कि उसे तीन और ऐसी स्त्रिया मिली जिनके बच्चे का पिता कोई पादरी है और पादरी पिता सतान को उनकी गोद म छोडकर भाग गये।

याकशायर की एक टेलिविजन कपनी ने चार पादरियो की ऐसी प्रेमिकाओ से साक्षात्कार प्रसारित करने का फैसला किया है जो डेवलिन की ही तरह पादरी के ससर्ग से जन्मी सतान की माताए ह।

डेवलिन अपना दर्द बताती हैं जब मेरी बच्ची सियान मुझसे पूछती है 'डैडी कहा है ?' तो मै यह कहकर टाल दती हू कि 'डैडी जरूरी काम से दूर गये हैं', जबकि वह जानती है कि खुद उसे पता नही कि सियान का डैडी कहा हैं और कब तक वह अपनी बेटी से झूठ बोलेगी।

पादरियो की प्रेमकथाओ का खुलासा होना तो अभी शुरू ही हुआ है कि इतनी सनसनी फैल गयी। वकील रिचर्ड पोप को मुवक्किलो के बयान अभी न जाने कितने गुल खिलायेगे और पादरियो के कच्चे चिट्ठे खुलवायेंगे हैं अभी यह भविष्य के गर्भ मे छिपा हुआ है।

'इब्तदाये इश्क है, रोता है क्या ? आगे-आगे देखिए होता है क्या ?'

—साभार सण्डे मेल

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का संक्षिप्त परिचय

सम्पादकीय

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा की स्थापना आय प्रतिनिधि सभा पजाब के त्रिशाखन के फलस्वरूप जुलाई १९७५ मे हुई थी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यालय आर्य समाज मन्दिर १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली म सुचारू रूप से कार्य कर रहा है। इस समय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित १८५ आय समाजें विधिवत आय समाज तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे कार्यरत है। दिल्ली मे आर्य समाज का कार्य निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा का मुख्य काय वेद प्रचार करना, महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्य को आगे बढाना, वेद को सन्देश घर घर तक पहुचाना, नई बस्तियो, पुनर्वास कालोनियो मे आय समाजो की स्थापना करना है। सभा के वेद प्रचार विभाग के अन्तगत दिल्ली की देहातो, ग्रामो, पिछडी बस्तियो, पुनर्वास कालोनियो नई कालोनियो मे दोपहर को भोजनावकाश के समय सरकारी कार्यालयो के समक्ष पार्को मे वेद प्रचार किया जाता है। सभा द्वारा अपने चलते फिरते वाहन के माध्यम से दोपहर को तथा रात्रि को ग्रामो, सरकारी कार्यालयो, सार्वजनिक स्थानो पर वेद प्रचार का आयोजन किया जा रहा है और वैदिक साहित्य वितरित किया जा रहा है। सभा से सम्बन्धित आर्य समाजो के माध्यम से भी वेद प्रचार विभाग वदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे सतत् सलग्न है। इस समय सभा को वैतनिक उपदेशक एव भजनोपदेशको तथा लगभग ६० मानव उपदेशको का सहयोग वेद प्रचार कार्य मे मिल रहा है।

सभा का एक प्रकाशन विभाग "वैदिक प्रकाशन नाम से कार्यरत है, जिसके अन्तर्गत अब तक लगभग ४० पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। नैतिक शिक्षा की कक्षा १ से १२वी तक की पुस्तकें आर्य विद्यालयो के पाठ्यक्रम मे लगी हुई है। गत वर्षों मे निम्नलिखित प्रमुख पुस्तको का प्रकाशन सभा द्वारा किया गया है—

नैतिक शिक्षा (बारह भागो मे)), धर्मवीर हकीकत राय, फ्लैश आफ ट्रूथ, सत्यार्थ प्रकाश सन्देश, एनाटामी आफ वेदान्त, आर्यो का आदि देश, ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका, प्रस्थान त्रयी और अद्वैतवाद, दी ओरिजन होम आफ आर्यन्स चन्वारो वेदा, द्वैतसिद्धि, आर्य समाज आज के सन्दभ मे, हसता चल हसाता चल दयानन्द एण्ड दा वेदाज, पूजा किस की, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश, आर्योद्देश्य रत्नमाला (सुगम व्याख्या), महर्षि दयानन्द की विशेषताए, आचार्य रामदेव-आदर्शवाद के ज्योति स्तम्भ, महर्षि दयानन्द की जीवनी, भारतीय सस्कृति के मूलाधार-चार पुरुषार्थ, सामयिक उन्मेष, युग सन्दर्भ, आदि।

सभा की ओर से साप्ताहिक पत्रिका 'आय सन्देश का प्रकाशन भी नियमित रूप से किया जा रहा है। आय सन्देश की लोकप्रियता दिनो दिन बढ रही है और इसकी ग्राहक सख्या मे भी निरन्तर वृद्धि हो रही है। गत वर्षो मे मुख्य पर्वो एव समारोहो के अवसर पर आर्य सन्देश के निम्न सुन्दर विशेषाक प्रकाशित किए गए— हैदराबाद सत्याग्रह अर्धशताब्दी स्मृति अक, प० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी स्मृति अक, धर्मवीर प० लेखराम अक, प० इन्द्र विद्यावाचस्पति जन्म शताब्दी अक, डा० सत्यकेतु स्मृति अक, प० शिवकुमार शास्त्री अमृतमहोत्सव अक, आर्य समाज मन्दिर अक, समग्र क्रान्ति अक, ऋषि बोधाक, आर्य समाज स्थापना दिवस अक, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी अक, ऋषि बोधाक एव स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती सयुक्ताक, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एव आचाय रामदेव सयुक्ताक, आर्य समाज स्थापना दिवस एव स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती सयुक्ताक।

सभा के अन्तगत आय विद्या परिषद् दिल्ली की ओर से दिल्ली मे स्थित आय शिक्षण सस्थाओ के सचालन प्रबन्ध समितियो के गठन, विद्यालयो के बच्चो के पाठ्यक्रम म नैतिक शिक्षा की पुस्तको के निर्धारण, विद्यालयो के बच्चो के चारित्रिक तथा नैतिक विकास का बोध कराने हेतु उपदेशक वग भेज कर प्रचार करता है। परिषद द्वारा नैतिक शिक्षा की परिक्षाओ का आयोजन भी प्रति वष किया जा रहा है और इन परीक्षाओ मे उल्लखनीय स्थान पाने वाले बच्चो को पुरस्कृत भी किया जाता है।

ग्रामीण जनता की सेवाथ दिल्ली के औचन्दी ग्राम म दीवानचन्द स्मारक गोकलचन्द आय चिकित्सालय का सचालन भी सभा अपने स्थापना काल से करती चली आ रही है। यह चिकित्सालय ग्रामीण क्षेत्र मे काफी ख्याति अर्जित कर रहा है। सभा की ओर से इसी हस्पताल की एक शाखा ग्राम बुराडी म राधेश्याम भवन आय समाज मन्दिर बुराडी म खोली गई है जिसका काय भी प्रगति पर है। इस चिकित्सालय म सप्ताह मे दो दिन सोमवार और शुक्रवार को वीणू नेत्र चिकित्सा सस्थान की चल चिकित्सालय तथा नेत्र रोग विशेषज्ञो की सेवाये प्राप्त हो रही है, जिससे ग्रामीण जनता के नेत्र रोगो का उपचार भी इस चिकित्सालय म किया जा रहा है।

सभा की ओर से वाराणसी मे मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल भी विधिवत् रूप से काय कर रहा है। इस गुरुकुल म शिशु कक्षा से आचाय (एम० ए० तक के अध्यापन का समुचित प्रबन्ध है। बालिकाओ को निशुल्क शिक्षा वस्त्र, पुस्तकें भोजन आवास चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाती है। जिसका सम्पूण व्यय सभा वहन करती है। सभा के तत्वावधान मे समय-समय पर गुरुकुल मे समारोह एव अन्य आयोजन भी किए जाते है।

आय विद्या सभा गुरुकुल कागडी हरिद्वार का गठन सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के त्रिशाखन आदेश के अनुसार किया गया था। उसके अन्तर्गत गुरुकुल कागडी गुरुकुल कागडी फार्मेसी गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, स्वामी श्रद्धानन्द चिकित्सालय कन्या गुरुकुल देहरादून तथा हरिद्वार मे स्थित इन्टर कालेजो के सचालन मे सभा अपना सहदायित्व पूर्ण क्षमता से निभा रही है।

आय वीर दल दिल्ली प्रदेश गत १७ वर्षो से युवा शक्ति को जागृत करने, सगठित करने युवा पीढी मे वैदिक धम की मान्यताओ का प्रचार-प्रसार करने मे निरन्तर प्रगति कर रहा है। आय वीर दल की ओर से समस्त दिल्ली मे प्रात और साय की शाखाए लगाई जाती है। समय-समय पर पर्वो के अवसर पर वीर पर्व, शहीद दिवस फुटवाल टूर्नामेन्ट, आय युवा महासम्मेलना, एव प्रतियोगिताओ का आयोजन किया जाता है। जिसके अन्तगत उन्हे प्रशिक्षण देने के साथ-साथ बौद्धिक ज्ञान भी दिया जाता है। विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओ का आयोजन किया जाता है और उनम विजयी आने वाले बच्चो को विशेष सावजनिक समारोह मे पुरस्कृत किया जाता है। इस वष आय वीरागनाओ का एक प्रशिक्षण शिविर आर्य समाज मन्दिर तिलक नगर मे ३१ मई से ७ जून १९९२ तक लगाया गया जिसमे ८० युवतिया को नित्य प्रति चारित्रिक एव शारीरिक विकास का प्रशिक्षण दिया गया। आर्य वीरो का एक प्रशिक्षण शिविर ७ जून से २१ जून १९९२ तक महाशय चून्नीलाल सरस्वती बाल विद्यालय हरि नगर नई दिल्ली मे लगाया गया, जिसमे लगभग ८०० आय वीरो को प्रशिक्षण दिया गया। समारोह की अध्यक्षता सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की।

पिछले वष उत्तरकाशी (उ० प्र०) मे आये भयकर भूकम्प से जो विनाश लीला का दृश्य उपस्थित हुआ था उससे समस्त भारतवासी परिचित हैं। यद्यपि सरकार अपनी ओर से सहायता काय करती है, परन्तु वह पर्याप्त सिद्ध नही होती। ऐसे दैविक विपदा के समय आय समाज कैसे पीछे रह सकता था। सावदेशिक सभा के आह्वान पर दिल्ली की आयसमाजो और आय जनो ने अपनी पूण गरिमा के अनुरूप आवश्यक खाद्य सामग्री, दवाईया, वस्त्र, गर्म कपडे, कम्बल, टीन की चद्दरे तथा नकद धनराशि को एकत्रित कर सावदेशिक सभा के माध्यम से सहायता शिविरो मे पहुचाने मे अहम भूमिका निभाई तथा सभा द्वारा सचालित आर्य वीर दल के कार्यकर्ता सैकडो की सख्या मे वहा पहुचे और दिनरात भूकम्प पीडित भाई बहनो की सहायता की और अपने कन्धो पर खाद्य सामग्री उठाकर उन तक पहुचाई और उनके आवास बनाकर दिये, जिसकी सराहना आज भी पीडित भाई बहन करते है। इस प्रकार अनेक वर्षो से चली आ रही पजाब एव कश्मीर समस्या दिन प्रतिदिन जटिल रूप धारण कर रही है। वहा से आतकवाद के डर से भारी सख्या मे हमारे हिन्

भाइ बहन अपने परिवारो सहित पलायन कर दिल्ली आ रहे हैं। दिल्ली मे उनके पास खान तथा ठहरने के लिये कोई स्थान नही होता वह भाई बहन सार्वदेशिक सभा तथा दिल्ली सभा के कार्यालयो मे आते हैं। सभा का दायित्व हो जाता है कि वह हर सम्भव उनकी सहायता करे। उन्हे समाज मन्दिरो मे ठहराने तथा उनके भोजन आदि की व्यवस्था की जाती है तथा बाद मे भारत सरकार से सम्पर्क कर उनके स्थाई आवास आदि की व्यवस्था कराई जाती है।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा की ओर से २ नवम्बर से ३ दिसम्बर १९९१ तक आठवा आर्य युवा महासम्मेलन आयोजित किया गया जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताए आयोजित की गयी और मुख्य समारोह मे ३ दिसम्बर को तालकटोरा इन्डौर स्टेडियम नई दिल्ली मे प्रतियोगिताओ मे विजयी आये लगभग ४०० स्कूली बच्चो को मुख्य अतिथि श्री राजेश पायलट केन्द्रीय मन्त्री द्वारा पुरस्कार दिलवाये गय। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने की। इस सम्मेलन मे दिल्ली के विभिन्न विद्यालयो के हजारो बच्चो ने भाग लिया और इसे सफल बनाया।

सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा क तत्वावधान म २३ से २६ दिसम्बर तक दिल्ली के रामलीला मैदान मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आय महासम्मेलन के आयोजन मे दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा ने अपना पूण सहयोग प्रदान किया। सभा से सबधित प्रत्यक आर्य समाज ने अपना तन मन धन से सहयोग प्रदान किया और इसे अभूत पूर्व सफल बनाया।

आज का युग प्रचार प्रसार का युग है। प्रचार प्रसार का सबस प्रमुख तथा उत्तम साधन दूरदशन आकाशवाणी तथा दैनिक राष्ट्रीय समाचार पत्र है। दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो का सदव यही प्रयास रहा है कि दूरदशन तथा आकाशवाणी से आय समाज वैदिक धम तथा उनकी मान्यताओ का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार हो। राष्ट्रीय समाचार पत्रो म भी समय समय पर अग्रलेख प्रकाशित कराय जात हैं तथा दूरदशन और आकाशवाणी पर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस ऋषि बोध दिवस ऋषि निर्वाण उत्सव आयसमाज स्थापना दिवस नव सवत्सर प० इन्द्र विद्यावाचस्पति जन्मशति प० रामप्रसाद बिस्मिल पर विशेष कायक्रम परिचर्चाए प्रसारित कराई गयी। इन परिचर्चाओ के मुख्य विषय स्वामी दयानन्द का सामाजिक चिन्तन स्वामी दयानन्द की समाज सेवा विश्व शान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द राष्ट्रीय एकता के पोषक—स्वामी श्रद्धानन्द आर्यसमाज और आय समाज सुधार आन्दोलन महर्षि दयानन्द-मानवता के पुजारी रहे। गत दिनो प० राम प्रसाद बिस्मिल पर वृत्त चित्र प्रसारित कराया गया। इन कायक्रमो मे डा० धमपाल प० रामचन्द्रराव वन्देमातरम पण्डित क्षितीश वेदालकार डा० महेश विद्यालकार डा० वाचस्पति उपाध्याय पण्डित यशपाल सुधाशु श्रीमती प्रभात शोभा पण्डिता आदि महानुभावो को दूरदशन अधिकारियो ने सहयोगाथ आमत्रित किया।

दिल्ली भारत की राजधानी है। इसका क्षेत्रफल दिना दिन बढता जा रहा है। सभा ने क्षेत्रो म प्रचार प्रसार के लिए दिल्ली को १३ भागो मे विभाजित किया हुआ है—चादनी चौक नई दिल्ली सब्जी मण्डी आजाद पुर नरेला मोती नगर राजोरी गाडन, जनक पुरी सफदर जग इन्क्लैव लाजपत नगर मालवीय नगर, पटपडगज और शाहदरा। उपरोक्त क्षेत्रो में विधिवत उपसभाओ का गठन किया हुआ है। उपसभाओ के अधिकारी समय समय पर अपन अपने क्षेत्रो म उत्सवो पर्वो विशेष समारोहो का आयोजन करत हैं अपने अपने क्षेत्र म बसने वाली नई कालोनी पुनर्वास कालोनी तथा सोमायटियो द्वारा निर्मित की जाने वाली कालोनियो मे विधिवत आयसमाज की स्थापना तथा प्रचार प्रसार करने मे सभा का योगदान करते हैं।

सभा ने सम्बन्धित गुरुकुलो चिकित्सालयो विद्यालयो के सुचारू रूप से सचालन के लिय समितियो का गठन किया हुआ है—मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी (केन्द्रीय समिति) आय विद्या परिषद समिति दीवानचन्द स्मारक गोकलचन्द आय अस्पताल औचन्दी समिति आय धर्माथ चिकित्सालय, बुराडी समिति रतनचन्द सूद आर्य धर्माथ नेत्र तथा जनरल चिकित्सालय समिति, माता चन्ननदेवी आय धमाथ नेत्र चिकित्सालय समिति राजाय सभा, न्याय सभा महिला समिति, जन सम्पक समिति विद्वत परिषद सस्कृति सगम स्वास्थ्य समिति वेद प्रचार समिति ग्राम प्रचार समिति आय सन्देश समिति सम्पत्ति व्यवस्था समिति नशाबन्दी समिति, हिन्दी सस्कृत प्रचार समिति वैदिक साहित्य प्रचार समिति, वैदिक साहित्य प्रकाशन समिति विवाद समाधान समिति कानूनी सलाहकार समिति आर्य वीर दल समिति। इन सभी समितियो के सयोजक तथा सदस्य अपनी-अपनी समितियो का कार्य सुचारू रूप से कर रहे हैं और आय समाज तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे सभा को अपना सहयोग प्रदान कर रहे है।

आय जगत को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि दिल्ली सभा के प्रयत्नो के फलस्वरूप सरकारी प्रकाशनो ने भी आय समाज के प्रवतक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा आय समाज विषयक साहित्य को समय-समय पर प्रकाशित करने मे रुचि दिखाई है। हिन्दी अकादमी तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के अधिकारियो के सहयोग से भी सगोष्ठियो का आयोजन कराया गया है। सभा द्वारा दिल्ली प्रशासन के आदश विद्यालयो मे पढाई का माध्यम हिन्दी मे किए जाने की माग की गयी। गत दिनो हरियाणा के मुख्य मन्त्री श्री भजनलाल द्वारा सम्पूर्ण हरियाणा प्रान्त में सभी विद्यालयो मे बच्चो के नैतिक तथा चारित्रिक विकास के लिए उनके पाठयक्रम मे अन्य पुस्तको के साथ नतिक शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढाई जाने की घोषणा पर सभा द्वारा उन्हे तथा आय परिवार से सम्बन्धित हरियाणा मन्त्री मण्डल के श्री बचनसिंह आय को बधाई दी गई तथा इसे यथाशीघ्र लागू करने की माग की गई। हिमाचल प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री शान्ताकुमार के आदेश पर हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा राजकाज मे हिन्दी भाषा को बढावा देने तथा सरकारी कार्यालयो मे हिन्दी का प्रयोग करने पर उन्हे बधाई दी गई।

सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे ६ ५ १९९२ को स्पीकर हाल मे आयोजित द्वितीय भारतीय भाषा सम्मेलन को सफल बनान मे दिल्ली सभा के अधिकारियो तथा दिल्ली की आय समाजो ने तन मन धन से सहयोग प्रदान किया।

आय प्रतिनिधि सभा हरियाणा म १५ से १७ मई तक हरियाणा के सुप्रसिद्ध नगर चरखी दादरी मे आयोजित पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह को सफल बनाने के लिए दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार दिल्ली की आय समाजो ने बढ चढ कर भाग लिया और इसे तन मन धन से सहयोग देकर सफल बनाया।

दिल्ली मे स्थित आय समाजो तथा शिक्षण सस्थाओ म आयोजित समारोहो मे तो सभा के अधिकारी एव उपदशक जाते ही है। दे अन्य प्रान्तो म आर्य समाजो शिक्षण सस्थाओ और गुरुकुलो तथा प्रान्तीय सभाओ द्वारा आयोजित विभिन्न समारोहो एव सगोष्ठियो म भी समय समय पर जात रह है।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा यथासम्भव विभिन्न कायक्रमो के माध्यम से आय समाज तथा वैदिक धम क प्रचार प्रसार मे सतत कायरत है। सार्वदेशिक सभा के निर्देशन म दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा आय समाज के आन्दोलन को सामयिक सन्दर्भो मे प्रासगिक एव उपयोगी बनाने म तथा मानव मूल्यो की सस्थापना मे सोत्साह सहयोग द रही है। सभा को आय समाजो तथा आय समाजो के अधिकारियो का सभा द्वारा आयोजित कायक्रमो तथा गतिविधियो म पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है।

—डा० धमपाल

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज गोविन्द भवन

आय समाज गोविन्द भवन के ७ जून को हुए वार्षिक चुनाव मे प्रधान—श्री इन्द्रजीत गाधी जी उपप्रधान—श्री आत्मप्रकाश जी मन्त्री—श्री अजीत कुमार मदान, कोषाध्यक्ष श्री रविन्द्र नाथ धर निर्वाचित हुए।

आय समाज निजामुद्दीन (पू०)

आय समाज निजामुद्दीन (पू) नई दिल्ली के वार्षिक चुनाव मे प्रधान—श्री ए० आर० तलवार उपप्रधान—श्री पी० एल० मेहरा मन्त्री—श्री अर्जुनसिंह निर्वाचित हुए।

आर्य कुमार सभा, किंग्जवे कैम्प दिल्ली

आर्य कुमार सभा किंग्जवे कैम्प दिल्ली के ७ जून को हुए चुनाव मे प्रधान — श्री धीरज मलिक, सचिव—श्री प्रवीण ग्रोवर आचार्य—श्री ओम सपरा कोषाध्यक्ष श्री सत्यपाल पुस्तकाध्यक्ष—श्री सौरभ भाटिया प्रकाशन मन्त्री—श्री बद्री दत्त, उपमन्त्री—श्री उमेश चन्द तिवारी चुने गये।

आदर्श-त्रैतवाद-६

परमात्मा जगत का संचालक है—

हृदय कमल को ब्रह्म-महान धाम मान कर स्वसत्ता की जाग्रति के लिए यहां धारणा करना और सत्य नित्य शुद्ध चेतन शक्ति स्वरूप परमात्मा का चिंतन करना दहरोपासना है। इससे प्रसुप्त आत्मभाव जग जाया करता है। आत्म भाव के जगने पर इस व्यष्टि हृदय में ही समष्टि जगत के चमत्कार भाव तथा प्रतिबिम्ब प्रतीत होने लगा करते है। ऐसा साधकों का अनुभव बताता है। हृत पुरुष प्रबुद्ध हो जाय तो साधक के संकल्प में सफलता मनोरथ सिद्धि और कर्त्तव्य आदि बल आ जाया करते है।

आकाशो वै नामरूप योनिर्विहिता। ते यदन्तरा तद ब्रह्म तदमृत स आत्मा। प्रजापतेः सभा वेश्म प्रपद्ये। यशो हं भवामि ब्राह्मणानां। यशो राजां यशो विशाम यशोऽहमनुप्रापत्सि। स आहाहं यशसां यशः श्वेतमदन्तकमदत्कश्येत लिन्दु माऽभिगाम।

छान्दो० ८।१४।१

निश्चय से निराकार परमेश्वर नाम रूप का चलाने वाला है। नाम रूप मय जगत का वह ही संचालक है। वे नाम रूप जिसके भीतर हैं जिसके नियम में है वह ब्रह्म है वह अमृत है और वह आत्मा है। ऐसे ईश्वर का उपासक मैं प्रजापति के सभा गृह—सत्संग भवन को प्राप्त होऊं। मैं ब्राह्मणों के यशवाला होऊं। मैं शुद्ध यश को प्राप्त करना चाहता हूं वह मैं यशों का यश परम शुद्ध आत्मा फिर दान्त रहित भक्षण करने वाले श्वेत रेतस को और पिछले जन्म स्थान को न प्राप्त होऊं। न प्राप्त होऊं।

परमात्मा सूक्ष्म से भी सूक्ष्म और महान् से महान्—

अणोरणीयान महतो महीयानात्मास्य जन्तो निहितो गुहायाम। तमक्रतु पश्यति वीतशोको धातु प्रसादान्महिमानमात्मन कठो० १।२।२०।

परमात्मा सूक्ष्म से भी सूक्ष्म और महान से भी महान है उसमें किसी का गुण नहीं आ सकता वह सर्वव्यापक है सर्वज्ञ है। न्यायकर्ता अपनी मर्जी से सुख या दुख नहीं देता। वह पक्षपात नहीं करता। उसे देख सकता है। जिसकी केवल वही निर्दोष बुद्धि है। स्वभाव से कर्मों का फल दाता है।

ईश्वर निराकार और दिव्य है—

दिव्यो ह्यमूर्त पुरुष स बाह्याभ्यन्तरोह्यजः। अप्राणो ह्यमना शुभ्रो ह्यक्षरात परतः परः। मुण्डको० २।१।२

परमात्मा जो प्रकृति से जगत बनाता है प्रकाश स्वरूप है और निश्चय करके अमूर्त है उसका कोई मूर्ति अथवा आकृति नहीं है। और बाहर भीतर सब जगह वर्तमान है। सबसे बड़ा होने से सबसे बाहर और सूक्ष्म होने के कारण सबमें व्यापक और अजन्मा है। सर्वव्यापक है। निश्चय करके कारण प्रकृति जो नाश रहित है तथा सूक्ष्म जीवात्मा से भी सूक्ष्म वह परमात्मा है [illegible] स्पष्ट कर दिया कि न तो परमात्मा की कोई मूर्ति हो सकती है क्योंकि मूर्ति [illegible] जिसके अवयव जड़ हों और परस्पर मिले हुए हों अतः जिसकी मूर्ति [illegible] वह मिलावट है और जड़ है। परमात्मा तो नित्य और चेतन है वह न तो स्थूल (जुड़ा हुआ) हो सकता है और न जड़। जुड़ी हुई वस्तु जोड़ से उत्पन्न होती [illegible] और [illegible] मात्मा सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है उसमें कोई मिलावट नहीं है अतः परमात्मा निराकार है मूर्ति रहित है।

परमात्मा का विराट रूप—

अग्निर्मूर्द्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ दिशः श्रोत्रे वाग्विवृताश्च वेदाः। वायु प्राणो हृदयं विश्वमस्य पद्भ्यां पृथिवी ह्येष सर्वभूतान्तरात्मा। मुण्डको० २।१।४

परमात्मा का विराट स्वरूप वर्णन करते हुए ऋषि कहते है—अग्नि-द्यौलोक उसका सिर हैं सूर्य और चन्द्रमा उसके नेत्र हैं और कानों का काम आकाश में रहने वाली दिशाएं करती हैं। उसकी वाणी का कार्य वेद करते हैं। जैसे वाणी से कोई बात कही जाती है उपदेश दिया जाता है वैसे ही परमात्मा वेद से उपदेश का काम लेते हैं। वायु प्राणों का काम देती है। और हृदय का काम सम्पूर्ण जगत देता है। पांव का काम पृथिवी देती है। यह इन सबके भीतर रहने वाला परमात्मा है। जिस प्रकार शरीर के भीतर नियम पूर्वक हरकत होने से जीवात्मा का पता लगता है इसी प्रकार संसार का नियम पूर्वक क्रियावान होना परमात्मा की सत्ता का प्रमाण है। ऐसी कोई वस्तु नहीं जो स्वयं कोई विकार कर सके। विकार परिवर्तन परमात्मा के नियम से होते है। प्रत्येक वस्तु के पदार्थ के भीतर रह कर उसको नियम में चला रहा है। वह परमात्मा सब भूतों का अन्तरात्मा है यही भगवान का विराट रूप हैं।

बाहर और भीतर परमात्मा है—

पुरुष एवेदं विश्वं कर्म तपो ब्रह्म परामृतम। एतद्यो वेद निहितं गुहायां सोऽविद्या ग्रंथि विकिरतीह सोम्य! मुण्डको २।१।१०

पुरुष ही यह सारा जगत है—यह सारा जगत परमात्मा के रहने का स्थान है। इसके भीतर बाहर परमात्मा ओत प्रोत है। जो कुछ कर्म और ज्ञान है वह सब उस परमात्मा का ही है। जो ज्ञान साधक अपने अन्तःकरण बुद्धि में इस छपे हुए भेद को जानता है। हे प्यारे वह इस लोक में अविद्या की गांठ को काट देता है उस ज्ञानी साधक का कर्म बन्धन नष्ट हो जाता है। जब तक परमात्मा के स्वरूप में इस सारे जगत को और जगत में परमात्मा के स्वरूप को नहीं देखता। तब तक कर्मबन्ध नहीं टटता। जैसे घड़े के भीतर आकाश और आकाश के भीतर घड़ा है ऐसे ही सब जगत के भीतर और बाहर परमात्मा

परमात्मा सर्वव्यापक है—

अमृत का पुल जानने योग्य

यस्मिन द्यौ पृथिवी चान्तरिक्षमोतं मनः सह प्राणैश्च सर्वैः। तमेवैकं जानथ आत्मानमन्या वाचो विमुञ्चथ अमृतस्यैष सेतुः। मुण्डको २।२।५

जिस परमेश्वर में सौर लोक पृथिवी और आकाश पिरोया हुआ है उसी एक अन्तर्यामी आत्मा को जानो दूसरी वाणियां जो भगवान् का वर्णन नहीं करती छोड़ दो उस वाणी को। वह परमेश्वर अमृत पुल है।

भगवान् का स्वरूप सर्वोत्तम—

आविः सन्निहितं गुहाचरं नाम महत्पदमत्रैतत समर्पितम। एजत्प्राणन्निमिषच्च यदेतज्जानथ सदसद्वरेण्यं परं विज्ञानाद्वरिष्ठं प्रजानाम। मुण्डको २ [illegible]

भगवान के रूप का वर्णन करते हुए ऋषि कहते हैं वह ईश्वर [illegible] किए हुए अकृतिमान जगत में प्रकट। अत्यन्त ही समीप है। सब का साक्षी और प्रसिद्ध है। वह परम धाम है इस गतिमान जगत प्राण लेने वाला तथा आंख झपकने वाला संसार पिरोया हुआ है। सो यह भगवान जानो वह मूर्त और अमूर्त पदार्थों से ऊपर है। इन्द्रिय जन्य ज्ञान से श्रेष्ठ है। जो भगवान प्रजाओं में सर्वोत्तम है।

ईश्वर प्रकाशक और ईश्वर स्वरूप है—

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

मुण्डको २।१।१०

उस ब्रह्म को सूर्य प्रकाशित करता है न चान्द तारागण न ये बिजुलियां उसे प्रकाशित करती है तो भला यह आग कहां से प्रकाश दे। वास्तव में उसी के प्रकाश होने से सब प्रकाशित होते है। उसकी [illegible] ज्योति इस सारे जगत को प्रकाशित करती है।

विश्व ब्रह्म से ओत-प्रोत है—

ब्रह्मैवेदममृतं पुरस्ताद ब्रह्म पश्चाद ब्रह्म दक्षिणतश्चोत्तरेण।
अधश्चोर्ध्वं च प्रसृतं ब्रह्मैवेदं विश्वमिदं वरिष्ठम॥ मुण्डको २।१।११।

भगवान् को प्रकाशमान जानने वाला ऐसी धारणा करे कि यह अविनाशि ब्रह्म ही है। मेरे आगे ब्रह्म है पीछे ब्रह्म है, दक्षिण को और उत्तर को ब्रह्म है मेरे नीचे तथा ऊपर फैला हुआ ब्रह्म ही है, यह विश्व ब्रह्म से ओत प्रोत है और यह जो कुछ श्रेष्ठतम है वह ब्रह्म का प्रकाश है। सर्वत्र ब्रह्म भावना करे।

स्वास्थ्य सुधा—

उपयोगी घरेलू नुस्खे

५७—कफ प्रकोप—अदरक के रस मे बराबर मात्रा मे शहद मिलाकर चाटने मे कफ खासी दूर हो जाती है।

५८—श्वास प्रकोप—अदरक रस, पिसी काली मिर्च, शहद मे मिलाकर चाटने से दमा के रोगी को आराम और श्वास प्रकोप मे कमी होती है।

५९—मोटापे का इलाज—प्रात काल १ गिलास ताजा पानी मे २-३ चम्मच शहद घोल कर शौच जान से पहले पीयें धीरे-२ शरीर की चर्बी कम होने लगती है। समय ३ माह।

६०—दुबलेपन का इलाज—एक गिलास दूध मे सिर्फ २ ३ चम्मच शहद इच्छानुसार डालकर रातको सोने से आधा घन्टा पहले पीने से दुबलापन दूर।

६१—बल वीय वर्द्धक—पाच दाने बादाम के सुबह पानी मे भिगोकर रात को सिल पर पीस १ चम्मच शहद मिलाकर १ गिलास दूध मे डाल सोने से आधा घन्टे पहले धीरे-२ घू ट-२ करके पीने से शरीर की पुष्टि व सुडौलता दिमागी ताकत बढती है।

६२—रक्त चाप—लहसुन की ३-४ कलियो का रस शहद के साथ रोज चाटने से लाभ।

६३—पेट के कीडे—नीम के पत्तो का रस १/२ चम्मच शहद १ चम्मच मिला कर चाटने से २-३ दिन म कीडे मर कर निकल जाते हैं।

६४—सर्दी जुकाम—तुलसी के पत्तो का रस आधा चम्मच १ चम्मच शहद मिला कर चाटने से रोग दूर।

६५—रक्त विकार—प्रात एक गिलास ठण्डे पानी मे नीबू निचोड कर १-२ चम्मच शहद घोल कर शोच जाने से पहले पीने से रक्त की शुद्धि और त्वचा रोगो मे भी लाभ।

६६—थकावट—गर्म दूध मे शहद डाल कर पीने से थकावट दूर।

६७ कफ प्रकोप नाशक योग—प्याज का रस और शहद समान मात्रा मे मिला कर चाटने से कफ निकल जाता है।

६८ त्वचा के रोग—शहद लगाने से त्वचा के रोग भी दूर होते हैं।

बेल फल (बिल्व)—

६९—बेल फल बादी दस्त खूनी दस्त की अचूक दवा है।

७०—पेट का दर्द—बेल का मुरब्बा खाने से पेट का दर्द दूर हो जाता है।

नेतराम शर्मा

प्रधान—भारतीय योग सस्थान, पूर्वी जिला दिल्ली

कैप्टन देवरत्न आर्य प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज सान्ताक्रुज की ७ जून ९२ को सम्पन्न हुई साधारण सभा की बैठक मे कैप्टन देवरत्न आर्य प्रधान निर्वाचित हुये। श्री नरेन्द्र कुमार पटेल महामत्री, श्री चन्द्रभान मल्होत्रा एव कस्तूरी लाल मदान उपप्रधान, श्री लालचन्द व श्री सदीपदत्त आर्य उपप्रधान तथा श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल कोषाध्यक्ष चुने गये। श्री ओकारनाथ आर्य, श्री काति भाई जगबारी, श्री मदन रहेगा, श्री रणवीर भडारी, डा० सोमदेव शास्त्री, श्री दीपक पटेल, श्री गोवर्धन लाल ढाबडिया तथा श्री आर० के० सहगल अन्तरग के सदस्य चुने गये।

गुरूकुल स्थापित किया जायेगा

नव निर्वाचित प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य ने सभा को धन्यवाद देते हुए घोषणा की कि वर्ष १९९४ म इस समाज को स्थापित हुए ५० वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। अतैव इस स्वण जयती की स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु इस समाज द्वारा एक ऐसे गुरुकुल की स्थापना की जाएगी, जिसमे आर्य भाषा के अतिरिक्त अन्य वैदेशिक भाषाओ मे भी वैदिक वाङमय के प्रचारक तैयार किये जायेंगे। सम्पूर्ण विश्व मे इस गुरुकुल मे शिक्षित विद्वानो द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार किया जाएगा। इस प्रस्ताव का सभा ने सहर्ष स्वागत किया।

दो महात्माओ द्वारा सन्यासाश्रम-प्रवेश

देहरादून, १६ जून। आर्य समाज मन्दिर, डाक पत्थर मे कल वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी और वैदिक धर्म प्रचारक श्री प० तोताराम जी और वानप्रस्थी श्री आनन्दमुनि जी ने सन्यास आश्रम की दीक्षा ग्रहण की। सन्यास आश्रम प्रवेश सस्कार का यज्ञ जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० वेददत्त बाली ने कराया। ब्रह्मचारी चन्द्रप्रकाश जी ने उनकी सहयोग किया।

दोनो महात्माओ को सन्यास की दीक्षा लखनऊ से पधारे स्वामी परमानन्द जी ने दी और प० तोताराम जी को स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती का नाम दिया तथा श्री आनन्दमुनि जी को स्वामी धर्मानन्द सरस्वती नाम दिया।

प० तोताराम जी ने स्वतन्त्रता सग्राम मे लम्बी जेल यातनाए सही थी जिसमे हैदराबाद का आर्य सत्याग्रह भी सम्मिलित है। आधी शताब्दी से भी अधिक समय से आप आल इण्डिया दयानन्द साल्वेशन मिशन या आर्य समाज के कर्मठ प्रचारक रहे है और आपने हजारो भटके हुए लोगो को पुन उनके पूर्वजो के वैदिक धर्म प्रत्यावर्तित कराया था और सैकडो भूलो हुओ को पतित होने से बचाया था।

नैतिक शिक्षा बाल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

नई दिल्ली २८ जून आर्य समाज टैगोर गार्डन, नई दिल्ली में २८ जून से चल रहा नैतिक शिक्षा बाल प्रशिक्षण शिविर का आज समापन समारोह हर्षोल्लास के वातावरण मे सम्पन्न हुआ। श्री हीरालाल कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा—

अद्भि गात्रिणि शुद्धन्ति, मन सत्येन शुद्धयति।
बुद्धि ज्ञानेन शुद्धयति, विद्या तपोभ्याम् अय आत्मा॥

अर्थात् जल से शरीर की सत्य से मन की, ज्ञान से बुद्धि की तथा विद्या व तप से आत्मा की शुद्धि होती है।

उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है और यह तभी सम्भव है जब तप से आत्मा शुद्ध होता है।

इस शिविर मे योगासन ध्यान, सन्ध्या, हवन, नीति आदि का प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम मे यह घोषणा की गई कि जिन बच्चो की साप्ताहिक सत्सगो मे सब से अधिक उपस्थिति होगी उनको पुरस्कार दिए जायेंगे। इस शिविर मे श्री रामनारायण, सेवा निवृत्त प्रिंसिपल, श्रीमती कृष्णा चड्ढा, महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य, श्रीमती शशि गोयल एव श्रीमति सुदेश आर्या ने बच्चो को प्रशिक्षण दिया। इससे पूर्व कुवर लाजपत राय जी ने अतिथियो का स्वागत किया। सभी वक्ताओ ने इस सुन्दर कार्यक्रम के आयोजको को बधाई दी।

चुनाव समाचार

आर्य समाज माडल टाउन

१७ मई को १९९२ ९३ के वार्षिक अधिवेशन मे निम्नलिखित अधिकारी चुने गए।

प्रधान—श्री रमेश चन्द्र सूद, उपप्रधान—डा ओमप्रकाश धीर, महामन्त्री—श्रीनिवास गुप्ता, मन्त्री—श्री दिवेन्द्र सिंह वालिया, उपमन्त्री—श्री राजेश गुप्ता, शुल्काध्यक्ष श्री श्रीराम अग्रवाल, कस्टोडियन एव पुस्तकाध्यक्ष—श्री बालकृष्ण कछवा।

आर्य समाज राणा प्रताप बाग

वर्ष १९९२-९३ के वार्षिक चुनाव मे प्रधान—श्री जसवन्तसिंह राही, उपप्रधान श्री तेजपाल महाजन, श्री रमेश चड्ढा श्री धर्मदेव जगीता जी, मन्त्री—श्री ओमप्रकाश आर्य, उपमन्त्री—श्री रमेश डपर, प्रचार मन्त्री—श्री लीलाधर चौधरी, कोषाध्यक्ष—श्री देवराज तनेजा पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती विमला गुलाटी श्रीमति भा निर्वाचित हुए।

भूल सुधार

आर्य सन्देश के १८ जून के अक मे पेज ३ पर सम्पादक के नाम पत्र मे लेखक का नाम व पता इस प्रकार पढें।

श्री भगवान देव चैतन्य,
एम० ए० साहित्यालंकार,—सम्पादक, आर्य वन्दना

स्वामी रामानन्द जी शास्त्री नहीं रहे

आय समाज के मूक सवक श्री स्वामी रामानन्द जी शास्त्री का २३ मई को नानावटी हस्पताल बम्बई मे अकस्मात निधन हो गया। वे ९४ वर्ष के थे।

पूजनीय स्वामी रामानन्द जी न जीवन पयन्त आय समाज के प्रचार प्रसार का काय किया। आपका जन्म १९०५ मे हुआ था। आपन स्वर्गीय समाजवादी नता श्री जयप्रकाश नारायण के साथ आजादी के आन्दोलन म काम किया। स्वामी जी आचाय नरेन्द्रदेव जी के आह्वान पर राजनीति छोड कर योग साधना मे लग गए और तभी स आपका जीवन समाज के लिए समर्पित हो गया आपन पूरे देश का भ्रमण किया योगिक क्रियाओ से विकलागो का उपचार तथा स्वस्थ्य की स्थिरता दीघ आयु की शिक्षा देकर ही नही अपितु नत्रहीना के जीवन को सुधारन का पूर्ण प्रयास किया। उन्होन दश के विभिन्न भागो मे नत्र रोगिया के इलाज के शिविर लगाए तथा नत्र चिकित्सा चल चिकित्सालय का काय आरम्भ किया। पूजनीय स्वामी जी को आय मैडिकल रीलीफ मिशन बम्बई का (विशेष पूण सहयोग मिलता रहा आपन गोरे गाव (प०) मे योग निकेतन का बडी दक्षता से सचालन किया। प्रात वर्ष आय समाज मन्दिर सान्ताक्रुज म भी आप योग शिविर तथा नत्र चिकित्सा शिविर लगाया करत थे जिसमे अनक रोगो के इलाज का भी प्रावधान रहता था। आपके द्वारा लगाय जान वाले नत्र चिकित्सा शिविरो मे रोगियो के आप्रेशन तो निशल्क होते ही थे साथ ही उनके निवास भोजन दवा आर चश्मा की भी व्यवस्था निशुल्क होती थी। इससे गरीब और असहाय लोगा को अत्यधिक लाभ मिलता था।

स्वामी जी न उपरोक्त सस्थाओ के अतिरिक्त समय भारती चेरिटेबल ट्रस्ट बम्बई आय प्रतिनिधि सभा बम्बई गीता योग केन्द्र बम्बई श्रीराम चेरिटेबल ट्रस्ट बम्बई हेल्थ लिंक लन्दन एसियन फाउडशन फार हेल्थ लन्दन तथा योग केन्द्र नवनाथ लन्दन को भी आपने सेवाओ का पूरा-पूरा लाभ प्राप्त कराया।

पूज्य स्वामी रामानन्द जी शास्त्री के देहावसान मे आय जगत की अपूर्णीय क्षति हुई है। आपने अपने काय से जो जनता की सेवा की है उसे सदा याद रखा जायेगा। एसा समर्पित जीवन सरलता सोम्य मूर्ति तपस्वी सन्यासी मिलना निकट भविष्य मे सवथा असम्भव है। हम पूज्य स्वामी जी के देहावसान पर हार्दिक शोक व्यक्त करते है और परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शान्ति और सदगति को प्राथना करते है।

स्वामी रामानन्द जी शास्त्री का अन्तिम सरकार वैदिक रीति अनुसार बम्बई के ओशीवारा शमशान भूमि मे किया गया। उनकी शवयात्रा मे गोरेगाव से जोगश्वरी तक भारी सख्या मे लोगो ने भाग लिया।

श्री शिवमुनि जी वानप्रस्थी नही रहे

महाराष्ट्र प्रदेश में आय समाज के कायकर्ता सिद्धान्तो एव वदिक वाङमय को प्रगति देने वाले श्री शिवमुनि जी वानप्रस्थी का १८ मई को प्रात ब्रह्म मुहूत मे हृदय गति रुक जाने से देहान्त हो गया। आपने महाराष्ट आय प्रतिनिधि सभा को कार्यालय के लिए अपना स्थान दिया तथा सभा के मुख्य पत्र के प्रकाशनाथ अपना मुद्रणालय प्रदान किया। आपने वदिक सेवा आश्रम वाजेगाव की १९८० मे स्थापना की तथा वैदिक सेवाआश्रम पाक्षिक का सचालन किया। स पाक्षिक पत्र द्वारा वैदिक सिद्धान्तो का प्रचार प्रसार होता रहा।

मराठवाडा मे आय समाज के आन्दोलन को प्रज्वलित रखने के लिए आप सदव प्रयत्नशील रहे। जाति प्रथा उन्मलन का काय आपने अपने घर से प्रारम्भ किया। लगभग अधशताब्दी तक वदिक साहित्य का प्रचार प्रसार वे करते रहे। साथ ही साहित्य विक्रय का काय भी बडी लगन से किया। आप को पच महायज्ञो से विशेष लगाव था। वे इन यज्ञो के बिना कभी नही रहे। आपके अतिथि सत्कार तथा विद्वानो के प्रति श्रद्धा अद्वितीय रूप से सराहनीय थे। उन्होने वदिक सेवा आश्रम मे आय गुरुकुल की स्थापना की जिसमे अनाथ और निधन छात्रो को सस्कृत भाषा और वैदिक वाग्मय का यथा शक्ति प्रशिक्षण दे रहे थे।

ऐसे त्यागी तपस्वी तथा समथ की भावना से काम करने वाले श्री शिवमुनि का अकस्मात चले जाना आय जगत की अपूर्णीय क्षति है। प्रभ से प्राथना करते हैं कि उनकी दिवगत आत्मा को शान्ति एव सदगति प्रदान कर।

सत्यव्रत वानप्रस्थी को पितृ शोक

सत्यव्रत वानप्रस्थी के पूज्य पिता जी का २४ मई ९२ को देहान्त हो गया। वैदिक रीति से अन्त्येष्टि सम्पन्न हुई तथा ज को शान्ति यज्ञ मे उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

परमपिता परमात्मा से प्राथना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति एव परिवार जनो को दुख सहन की शक्ति प्रदान करे।

मन्त्री आय समाज समस्तीपुर

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N. No 32387/77 Posted at N D P S O on 23-7-1992 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/९१
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल-११०२४/९२ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) १३९/९२

महाराणा प्रताप स्वतन्त्रता सेनानियो के प्रेरणा स्त्रोत थे

आय समाज मायापुरी नई दिन्ली मे २८ मई तथा ३ जून, १९९२ को वीर सावरकर जयन्ती एव महाराणा प्रताप जयन्ती धूमधाम से मनाई गई। विद्वान् वक्ताओ ने दोनो महापुरुषो के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। जहा एक ओर देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन मे वीर सावरकर के सक्रिय योगदान को रेखाकित किया गया वहा दूसरी ओर इस मान्यता को भी स्थापित किया गया कि महाराणा प्रताप सभी स्वतन्त्रता सेनानिया के प्रेरणा स्रोत थ।

आर्य समाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज 'हनुमान रोड नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव इस वर्ष १२ अक्टूबर से १८ अक्टूबर, १९९२ तक बडे समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है।

१२ अक्टूबर से प्रात यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा, जिसकी पूर्णाहुति रविवार १८ अक्टूबर, १९९२ को होगी तथा रात्रि को ७-३० से ९-३० बजे तक प्रवचन तथा मधुर भजन होगे।

दिल्ली की समस्त आर्य समाजो से, विशेषकर चादनी चौक एव दक्षिण दिल्ली क्षेत्र की आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो, गुरुकुल तथा अन्य आर्य शिक्षण सस्थाओ, प्रतिष्ठित आर्य बन्धुओ से मेरी प्रार्थना है कि वे उपरोक्त तिथिया अभी से अकित कर लें और इन दिनो अपने यहा अन्य कोई कार्यक्रम न रख कर उपरोक्त कार्यक्रम को सफल बनाने मे अपने सगठन का परिचय दें। इससे हमे शक्ति और उत्साह मिलेगा। इसके लिए मैं व्यक्तिगत रूप से आपका आभारी रहूगा।

वेदव्रत शर्मा
मन्त्री आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

विश्वविद्यालय मे महर्षि दयानन्द की प्रतिमा

आर्य समाज शिक्षा सभा अजमेर की १ जून, ९२ को न्यायमूर्ति श्री वी० पी० बरी की अध्यक्षता म हुई बठक म अजमेर विश्वविद्यालय का नाम "महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय रखे जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए जहा इसके लिए प्राचाय दत्तात्रेय जी आर्य के निरन्तर प्रयत्नो का उल्लेख किया गया वही उनके प्रस्ताव पर विश्वविद्यालय की उपकुलपति से यह सर्वसम्मति से आग्रह किया गया कि विश्वविद्यालय परिसर मे महर्षि दयानन्द की आदमकद प्रतिमा स्थापित की जाय।

शिविर राष्ट्रीय एकता के प्रतीक हैं

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद के तत्वावधान मे १५ मई से, १४ जून तक वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून मे सम्पन्न हुआ।

स्वामी सत्यपति जी ने समापन समारोह मे ९५ सफल परीक्षार्थियो को प्रमाण पत्र दिए। इनमे से दो मोरीशस तथा शेष भारत के विभिन्न भागो से शामिल हुए थे। हिन्दी व सस्कृत मे एक एक तेलगू भाषी युवती ने भी शिविर मे भाग लिया। वह अब उस्मानिया विश्वविद्यालय से 'गर्भाधान से अन्त्येष्टि तक १३ सस्कार' विषय पर पी० एच० डी० कर रही हैं।

सचालक आचार्य वेदभूषण ने दीक्षान्त भाषण मे कहा कि महर्षि दयानन्द ऋषि परम्परा के सच्चे प्रतिनिधि थे। पर्यावरण शुद्धि के लिए गो घृत अत्यन्त महत्वपूर्ण है। साधन आश्रम के मन्त्री प० देवदत्त बाली ने इस प्रकार के शिविरों को राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बताया।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन-३१०१५० केलिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (एल १०२४/१-०९२

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १६, अंक ३८ रविवार, ११ जुलाई १९९३ विक्रमी सम्वत् २०५० दयानन्दाब्द १६९ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक—२५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष : ३१०१५०

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय मे
डा० धर्मपाल कुलपति नियुक्त

नई दिल्ली, ८ जुलाई। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल को गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार का कुलपति नियुक्त किया गया है। विश्वविद्यालय के संविधान में प्रदत्त अधिकार के अन्तर्गत परिदृष्टा न्यायमूर्ति श्री महावीर सिंह ने उन्हें आगामी तीन वर्ष के लिए नियुक्त किया है और डा० धर्मपाल ने १ जुलाई, ९३ को पद का कार्यभार संभाल लिया है। उल्लेखनीय है कि गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार, तीन सभाओ—आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, पंजाब व हरियाणा द्वारा संचालित एक शिक्षण संस्थान है। इसकी स्थापना महर्षि दयानन्द के अनन्य अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द ने गंगा के पावन तट कांगड़ी ग्राम में की थी। यह भी स्मरणीय है कि राष्ट्र के स्वाधीनता संग्राम मे इस विश्वविद्यालय ने अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान दिया है

जाने-माने शिक्षा शास्त्री डा० धर्मपाल गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की विभिन्न समितियो—जैसे शिष्ट परिषद, कार्य परिषद, विद्वत परिषद से वर्षों से जुडे हैं। आप आर्य कन्या महाविद्यालय अम्बाला की प्रबन्ध समिति के सदस्य तथा आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगडी के मन्त्री भी रहे हैं। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान आदि के गुरुकुलो के संचालन मे भी डा० धर्मपाल ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। आप दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रहे हैं तथा वर्तमान मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री भी हैं।

१५ मार्च, १९४२ को बड़ौत मेरठ मे जन्मे सिद्ध हस्त लेखक डा० धर्मपाल की अनेक पुस्तक प्रकाशित हो चुकी हैं। आपने वर्षों तक आर्य सन्देश का कुशल सम्पादन किया है तथा देश की अनेक पत्रिकाओ मे आपके लेख प्रकाशित होते रहे हैं। दूरदर्शन व आकाशवाणी पर भी आपके अनेक कार्यक्रम प्रसारित हुए हैं।

वैदिक सिद्धान्तो के मर्मज्ञ विद्वान, सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री, कुशल वक्ता व समर्पित आर्य नेता से विश्वविद्यालय व आर्य जगत को बहुत आशायें हैं। पूर्ण विश्वास है कि प्रभु कृपा से आप इस महत्वपूर्ण दायित्व को सफलतापूर्वक अंजाम देंगे। आर्य सन्देश परिवार की अनेक हार्दिक बधाई।

घर-घर यज्ञ रचाओ व वेदो के गीत गाओ

—स्वामी स्वरूपानन्द

नई दिल्ली, हे आर्यो! यदि आप देव दयानन्द के ऋण से उऋण होना चाहते हो तो घर-घर में यज्ञ रचाओ और वेदो के गीत गाओ। यह उद्गार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द ने गुरु पूर्णिमा ३ जुलाई को आर्य समाज मन्दिर तिमारपुर द्वारा पारिवारिक सत्संग कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए व्यक्त किए। स्वामी जी ने प्रत्येक पूर्णिमा व अमावस्या को घर-घर जाकर पारिवारिक सत्संग करने के निर्णय के लिए समाज के अधिकारियो को साधुवाद दिया और कहा कि यही वास्तविक वेद प्रचार कार्य है।

स्वामी जी ने सत्संग के महत्व एव आर्य समाज के सिद्धातो पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऐसे साप्ता० सत्संगो से न केवल बच्चो मे अच्छे संस्कार पड़ते हैं बल्कि समाज व राष्ट्र का संगठन भी सशक्त होता है। स्वामी जी ने कम खाने, व्यायाम एव सदैव प्रसन्न रहने को स्वास्थ्य व सुखी जीवन का आधार बताया।

इससे पूर्व समाज के पुरोहित श्री राजवीर शास्त्री के ब्रह्मत्व मे विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। उन्होने देव पूजा, संगतिकरण को परम महत्वपूर्ण बताया। पं० चन्द्रपाल ने मधुर भजन प्रस्तुत किए। मन्त्री श्री विमल कान्त शर्मा ने कहा कि सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ हमारी संस्कृति का प्रतीक है तथा मोक्ष का द्वार है। इन पारिवारिक सत्संगो मे हम घर-घर जाकर यज्ञ करेंगे।

यह कार्यक्रम समाज के प्रधान श्री तेजपाल मलिक के बी ३१७, दि० प्रशासन फ्लेट्स में हुआ था। उन्होंने कहा कि यह सौभाग्य की बात है कि आज स्वामी जी का जन्म दिन भी है और उनका आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है। सभी महानुभावो का उन्होंने आभार व्यक्त किया।

महाशय धर्मपाल महात्मा धर्मपाल बने

नई दिल्ली, ३ जुलाई। आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान, एम० डी० एच० के स्वत्वाधिकारी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान एव विभिन्न समाज सेवी संस्थाओ से जुडे महाशय धर्मपाल ने ३० मई, १९९३ को गंगा के किनारे उत्तरकाशी मे स्वामी शक्तिश्वरानन्द जी से वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ली और अब वे महाशय धर्मपाल से महात्मा धर्मपाल बन गए। उनके इस व्रत का सम्मान करने के लिए एम० डी० एच० के विशाल सत्संग भवन मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी की अध्यक्षता मे एक भव्य अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया।

स्वामी आनन्द बोध जी ने इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि महाशय धर्मपाल जी पर अनेक संकट आये परन्तु घोर विपत्ति मे भी उन्होने कभी धैर्य नहीं खोया। ऐसा कोई महान आत्मा ही कर सकता है और महाशय जी वास्तव मे एक महात्मा ही हैं। महात्मा धर्मपाल जी ने साधु जैसा जीवन व्यतीत किया है। स्वामी जी ने महात्मा धर्मपाल जी को आशीर्वाद देते हुए कहा कि वे स्वस्थ व निरोग रहे जिससे कि समाज सेवा के कार्य करते रहें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि के प्रधान व प्रख्यात आर्य नेता श्री सूर्यदेव ने कहा कि महात्मा धर्मपाल जी प्रभु पर अटूट विश्वास करते हैं। वे कहते हैं—मैं तो केवल ईश्वर की आज्ञा का पालन करता हू। मैं पूर्व की भांति व्यापार एव समाज सेवा के

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सहसम्पादक—विमलकान्त शर्मा

वैदिक सस्कृति

सत्यवीर सिंह

वेदो मे परमात्मा की दो प्रकार की आज्ञा है । पहली, वे कर्म जिनको परमात्मा ने करने के लिए कहा है । दूसरे वे कम जिन्हे करने के लिये मना किया है । जिन कर्मों को करने के लिए कहा है वे कर्म करना ही वैदिक सस्कृति है । सस्कृत का शाब्दिक अर्थ पवित्र है । सस्कृति का अर्थ पवित्र कर्म है ।

सृष्टि की सर्वप्रथम पुस्तक चार वेद हैं । इनसे पहले किसी पुस्तक की रचना नही हुई । इसलिए वैदिक-सस्कृति पूरे ससार की सस्कृति है पहले केवल सस्कृत भाषा थी । इसी भाषा मे ससार मानव के मात्र को हर प्रकार की शिक्षा दी गई थी । शिक्षा का केन्द्र भारत था । यहा के ऋषि-मुनि जगत के गुरु थे और पूरी पृथ्वी पर पाण्डवो के समय तक चक्रवर्ती राज भी उन्हीं का था । विदेशो मे छोटे माण्डलीक राजा होते थे । उस समय पूरी पृथ्वी स्वर्ग बनी हुई थी ।

महाभारत के युद्ध के बाद ससारभर मे तथा भारत मे भी वेदो का पढना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना बन्द हो गया था । तब से धीरे धीरे इस पृथ्वी पर अज्ञान अन्धकार फैल गया और मानव ने दानव का रूप धारण कर लिया । वेदो मे सबका एक ईश्वर, एक जाति और एक ही धर्म है ।

ससार मे जितने भी कार्य होते हैं वे मस्तिष्क म स्थित बुद्धि द्वारा ही किये जाते हैं । बुद्धि यदि पवित्र होगी तो कार्य भी पवित्र होग । बुद्धि बिगडने से सवनाश हो जाता है । इसकी पवित्रता का केवल एक उपाय है—

अद्भिर्गात्राणी शुद्धयन्ति, मन सत्येन शुद्धियति ।
विद्या तपोभ्या भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्धयति ॥

अर्थात् जल से शरीर शुद्ध होता है, सत्य का आचरण करने से मन शुद्ध होता है, विद्या प्राप्त करने से आत्मा शुद्ध होती है और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है ।

मानव को जब वेद का ज्ञान नहीं मिलेगा तो बुद्धि कैसे शुद्ध होगी । वैदिक सस्कृति के अनुसार चलने से मनुष्यो का जीवन सफल होता है । वह सबके लिए दया की वर्षा करता है । इसके इतिहास मे उदाहरण हैं । कुछ उदाहरण वैदिक सस्कृति पर चलने वालो के दिये जा रहे हैं ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती को अजमेर मे उसके रसोइये जगन्नाथ द्वारा विष दिया गया था । ऋषि ने कहा-जगन्नाथ आज कोई गलत चीज भोजन मे खाई गई है । रसोइये जगन्नाथ की आत्मा बात को छुपा नही सकी । उसने कहा महाराज मैंने वैश्या नन्ही जान के बहकावे मे आके आपको जहर दूध मे काच डाल कर पिला दिया था । तब क्या ऋषि ने उसे पीटा ? नही । क्या किसी से पिटवाया या पुलिस मे रिपोट की ? नही । महर्षि ने रसोइये से कहा "जगन्नाथ तुम्हे नहीं पता इसमे जनहित की कितनी हानि हुई है । मेरा काम अधूरा रह गया । खैर इसमे तुम्हारा भी क्या कसूर । विधाता ने ऐसा ही करना था । परन्तु आप यह लो पाच सौ (५००) रुपये और एक गर्म शाल तथा नेपाल मे चले जाओ । यहा इस घटना का हिन्दुओ को ज्ञात हो जायेगा तो वे तुम्हें जान से मार देंगे, तुम्हारे प्राणो की रक्षा वही रह कर हो सकती है ।

ऐसा उदाहरण महर्षि दयानन्द के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा, कि अपने हत्यारे को सामान भी दे, रुपये भी दे और सुरक्षा की विधि भी बताये । धन्य हैं हे ऋषि तुमने वैदिक सस्कृति की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये । ससार के लोगो ने आपको चौदह बार मारने का प्रयास किया । परन्तु आपने अपने मन में कभी भी उन नादान लोगो के अनहित का विचार ही नही आने दिया । आप के कारण वेद की ज्योति तब तक जलती रहेगी जब तक यह पृथ्वी बनी रहेगी ।

महाराजा अश्वपति का भारत में राज था । उनके राज्य मे अश्वमेध यज्ञ हो रहा था । एक साधु के साथ चार जिज्ञासु ब्राह्मण ज्ञान की खोज मे यज्ञ मे आये थे । महाराजा ने उनसे कहा-आप भी यज्ञ मे ऋषियो के साथ रहो, आपको भी उतना ही धन मिलेगा जितना दूसरे ऋषियो को मिलेगा । ब्राह्मणो ने धन लेने से मना कर दिया । राजा ने सोचा होगा कि यह ब्राह्मण इसलिए मन कर रहे होगे कि राज में हर प्रकार का धन आता है । अश्वपति जी महाराज उनसे बोले 'हे ब्राह्मण देवताओ, मेरे राज्य मे कोई चोर नहीं, कोई दूसरे के धन को छीनने वाला नही, कोई ऐसा नहीं जो नित्य यज्ञ न करता हो, कोई ऐसा भी नहीं जो दान न देता हो । कोई कजूस नही, कोई शराबी नही, कोई अनपढ़, मूर्ख और अविद्वान नही, कोई पुरुष व्यभिचारी नहीं फिर व्यभिचारिणी स्त्री कैसे हो सकती है ।

आज कोई ऐसी घोषणा नही कर सकता । यह तो अश्वपति महाराजा ही कर सकते थे, क्योकि वे स्वय वैदिक सस्कृति के अनुसार चलते थे और दूसरे को चलाते थे ।

श्री रामचन्द्र जी को राजतिलक के बजाए चौदह वर्ष का वनवास मिला और वे वन मे चले गये । ननिहाल से आने के बाद जब भरत को इस घटना का पता लगा तब वह श्री राम जी को लाने के लिए वन मे गये । श्री रामचन्द्र जी जब भरत को मिले तब भरत उनके चरणो मे गिर गया और कहने लगा कि 'मैं राज नही करूगा, राज के अधिकारी आप हैं आप वापिस चलकर अपना राज सम्भालो ।' श्री रामचन्द्र जी ने कहा "मैं पिताजी के वचनो के निभाने के लिए स्वेच्छा से राज छोड कर वन मे आया हू मैं वापिस नही जाऊगा, चौदह वर्ष के बाद घर वापिस लौटूगा । तब तक आप राजकाज के काय सुचारू रूप से चलाना । दोनो वैदिक सस्कृति के मजे खिलाडी थे । इधर भरत और उधर राम दोनो ने राज को गेन्द बनाई और ठोकर मार कर खेलने लगे । दोनो भाईयो के प्यार ने उन्हे अमर कर दिया ।

दुनिया का इतिहास उठाकर देखो । वैदिक सस्कृति के अतिरिक्त ऐसा उदाहरण दूसरी किसी सस्कृति मे नही मिलेगा ।

वन मे से जब रावण ने सीता जी का अपहरण किया तब विलाप करती हुई सीता ने विमान से ऋष्यमूक पर्वत पर अपने आभूषण डाले थे । उन्हें सुग्रीव ने श्रीराम को दिखाया । श्री राम ने अपने छोटे भाई लक्ष्मण जी को पहचानने लिए कहा । लक्ष्मण जी ने कहा मुझे कुण्डलादि दूसरे आभूषणो की जानकारी नही । मैं केवल उनके पैरो के आभूषण पहचानता हू जिनको मैं प्रात रोज उनके मे प्रणाम करता था तब देखता था । कितना महान चरित्र था लक्ष्मण का । यह सब वैदिक सस्कृति की देन है ।

इतिहास मे ऐसे अनेक प्रमाण है जो यह प्रमाणित करते हैं कि वैदिक सस्कृति के अनुसार चलने वाले स्त्री-पुरुषो ने ससार के सामने आदर्श स्थापित किये हैं ।

पाश्चात्य शिक्षा का भारतवासियो पर ऐसा जादू हुआ कि यह अपने भाषा, वेश, सभ्यता, खान-पान, रहन-सहन सब कुछ भूल गये । ससार मे तीन शक्ति हैं । पहली शक्ति बुद्धि की दूसरी शक्ति धन की और तीसरी शक्ति शारीरिक बल । इनमे बुद्धि या ज्ञान की शक्ति सबसे अधिक महत्व वाली होती है । अग्रेजी भाषा ने सीधा असर मस्तिष्क और बुद्धि पर किया । विदेशियो का ताना-बाना अच्छा लगने लगा । कुछ भारतवासियो के अन्धविश्वासो ने रहा-सहा अपनापन भी भुला दिया । पाश्चात्य सस्कृति दुखदायी होने के कारण भारतवासी तिलमिला उठे । अब क्या करें, कहा चले जायें कुछ सूझता नही था । कुछ लोगो पर भाषा का सम्मोहन चढ़ चुका था, वे विदेशियो के इशारे पर चलते थे ।

ऐसे भयावह वातावरण मे भारत क्या पूरे ससार को एक ऐसे महामानव की आवश्यकता थी जो वेद की वीणा बजा कर अज्ञान, अधविश्वास और पाश्चात्य सस्कृति व भाषा का सम्मोहन दूर कर सके, भीष्म पितामह और हनुमान जैसा चमकता ब्रह्मचय हो जिसमे, भीम जैसा अपार बल हो, श्रीराम जैसा मर्यादा वाला हो, श्री कृष्ण की सी नीतिवाला हो, जिसमे महात्मा बुद्ध जैसा त्याग और वैराग्य हो, गौतम, कपिल, कणाद जैसा दार्शनिक हो । इन सभी गुणो से अलकृत और सुशोभित यहा एक महामानव का आगमन हुआ। जिसका नाम था दयानन्द सरस्वती ।

गुरु विरजानन्द ने अपने शिष्य दयानन्द से गुरु दक्षिणा मे पूरा जीवन मागा था और दयानन्द ने अपना जीवन गुरुदक्षिणा मे गुरु को अपण कर दिया था । आदर्श गुरु की आदर्श दक्षिणा थी । दयानन्द को गुरु ने आज्ञा दी थी कि वेद विद्या का प्रचार फिर से पूरे ससार मे करो, ससार से अन्धविश्वास दूर करो, गऊओ की रक्षा करो, भारत की कुरीतिया मिटाकर इसे स्वतन्त्र कराओ यही मेरी आज्ञा है । दयानन्द ने गुरु की आज्ञा स्वीकार की और कार्य क्षेत्र में उतर गये ।

महर्षि दयानन्द गुजरात के रहने वाले थे । संस्कृत और गुजराती दो भाषा जानते थे । भारत में हिन्दी जानने वालो की सख्या अधिक थी इसलिये उन्होने वेद

(शेष पृष्ठ ३ पर)

वैदिक संस्कृति

(पृष्ठ २ का शेष)

का प्रचार करने के लिए हिन्दी भाषा सीखी और पूरे देश मे प्रचार किया।

सबसे पहले महर्षि दयानन्द ने भारतवासियो को आपस मे प्रेम से रहना सिखाया। कन्या पाठशालायें तथा गुरुकुल, अनाथालय और गऊशालायें खोली। वेद प्रचार से अनेक कुरीतियां दूर की।

सोये सिंह को ऋषि दयानन्द ने फिर से जगा दिया। भारत का पुराना इतिहास दिखाया और बताया कि तुम्हारे पूर्वजो का दुनिया लोहा मानती है और तुम मुट्ठीभर विदेशियो के आधीन हो गये हो। जब तक वैदिक संस्कृति नही अपना आगे तब तक आजाद नही हो सकते।

सबसे पहले बम्बई मे महर्षि दयानन्द ने १८७५ में आयसमाज नाम का एक आन्दोलन चलाया जो सृष्टि पर्यन्त चलता रहगा। इस समाज का मुख्य उद्देश्य है ससार का उपकार करना।

जितने भी स्वतन्त्रता सेनानी हैं वे सब आर्यसमाज से प्रेरणा पाये हुये हैं। महर्षि ने न तो विदेशी भाषा पढ़ी थी और न ही विदेशी पुस्तक। उन्होने अपनी भाषा और अपने ही देश की पुस्तको से ज्ञान प्राप्त करके भारत को जगाया था।

भारत का इतिहास साक्षी है कि विदेशी हमारा राजनैतिक शोषण कर रहे थे। धार्मिक शोषण किया जा रहा था। सामाजिक शोषण भी हो रहा था। अग्रेज भारतीयो और भारत की भाषाओ से घृणा करते थे। समाज मे हेय दृष्टि से यहा के निवासियो को देखते थे। हमारा आर्थिक शोषण भी किया जा रहा था। यहा के निवासियो को किसी प्रकार का व्यापार करने की सख्त मनाही थी। विदेशी वस्तुओ को भारत मे बेचा जाता था। यहा का कच्चा माल कम कीमत मे लिया जाता था।

जो राजनैतिक, धार्मिक सामाजिक और आर्थिक शोषण हमारा अग्रेज कर रहे थे उन्ही चारों बातों का पोषण हमारे देश का कैसे होगा यह सब विधि महर्षि दयानन्द ने बताई थी। देश उसी के बताये मार्ग पर चला और आजाद हुआ।

वैदिक सस्कृति मे बहुत गुण और विशेषतायें हैं। महर्षि दयानन्द के असख्य उपकार हैं जिन्होंने भूली मानव सस्कृति पर चल कर भारतवासियो को भी उस पर चलना सिखा दिया। बिना सस्कृति के मनुष्य पशु से भी नीचे गिर जाता है। इस सस्कृति की कुछ विशेषतायें निम्नलिखित हैं

१ वेदो मे ससार के सभी व्यक्तियो की एक जाति, एक धर्म और एक ईश्वर होने के कारण कोई अलग सम्प्रदाय नही बन सकता। इससे साम्प्रदायिकता के झगड़ नहीं होगे।

२ इसके ज्ञान से मानव चरित्रवान बनता है

३ इससे अन्धविश्वास दूर होता है क्योंकि वेदो का आधार विज्ञान है।

४ माता, पिता, गुरु, समाज, छोटे बडे सब नर नारी का आदर सत्कार करने की वेद शिक्षा देता है। इससे सबमे प्यार और सदभावना आती है।

५ वैदिक सस्कृति में कोई पराया नहीं सब अपन ही हैं। सारा जगत एक परिवार है।

६ चोर डाकू, बदमाश बलात्कारी, दुराचारी अन्यायी रिश्वतखोर आदि को कडी सजा देने का विधान है। राजा के लिए आज्ञा है कि जो प्रजा को तग करते हों उन्ह राजा उचित दण्ड देवे।

७ सभी स्त्री और पुरुषो को समान अधिकार है।

८ जो आत्मा मे धारण करने योग्य बातें हैं वे ही इस सस्कृति मे धर्म कहलाती हैं। शरीर पर धारण करने वाले चिन्हो या वस्तुओ को वेद मे धर्म नहीं माना गया है।

९ इसमें अपनी उन्नति के साथ साथ दूसरो की भी उन्नति करनी चाहिये ऐसा विधान है।

१० यह सबके साथ सदा सत्य का आचरण करना सिखाता है।

११ इसमे पुर्नजन्म होना माना गया है वह भी कर्मो के आधार पर। इसलिए मनुष्य बुरा कर्म नहीं करेगा।

१२ ससार के प्रत्येक नशीले पदार्थो से अपने शरीर को दूर रखना चाहिए अर्थात उनका सेवन नहीं करना चाहिये।

१३ इस सस्कृति मे देश भक्ति की उच्च शिक्षा है।

१४ व्यक्ति समाज और राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने की भी शिक्षा है।

१५ वैदिक सस्कृति आत्मा के वर्षों से आये मैल को इस प्रकार धो डालती है जैसे साबुन कपडें के मैल को धो डालता है।

सहकारी सुरक्षा अधिकारी स्वाती होस्टल
मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-११०००१

—साभार पालिका समाचार

नौजवानो क्रांति का झण्डा उठालो

राष्ट्र का इतिहास करवट ले रहा है,
नौजवानो क्रान्ति का झण्डा उठालो।
जबकि मजिल पास आती जा रही हैं,
मृत्यु अपने पख को फैला रही है।
लुप्त साहिल हो रहे ऐसी घड़ी मे,
जबकि नैया धार मे बल खा रही है।
बिन खिवैया ही न जाये डूब नैया,
आज उठते ज्वार को माझी बनाओ।
राष्ट्र का इतिहास करवट ले रहा है,
नौजवानो क्राति का झण्डा उठालो।
शत्रु सीमा पर खडे ललकारते हैं,
नाग जहरीले बड़े फुफकारते हैं।
सिंह शावक बन समर के साज साजो
वीर दुष्टो को सदा सहारते हैं।
अब प्रणय के गीत गाना छोड दो तुम,
त्याग बशी, आज रणभेरी बजाओ।
राष्ट्र का इतिहास करवट ले रहा है
नौजवानो क्राति का झण्डा उठालो।
है हृदय पर राज्य आज मशीन का,
ज्ञान सब वैज्ञानिको का सो गया है।
न्याय और ईमान का पथ खो गया है,
हाय यह इसान को क्या हो गया है?
त्याग भौतिक पथ निज सस्कृति प्रसारी,
भारती जयघोष दुनिया मे गुजारो।
राष्ट्र का इतिहास करवट ले रहा है
नौजवानो क्राति का झण्डा उठालो।

डा० ओमशरण विजय
प्रधान आर्यसमाज कृष्णपोल बाजार, जयपुर

आदर्श त्रैतवाद (३३)

राजसिंह भल्ला

मोक्ष प्राप्ति का साधन—

सयुक्त मेतत्क्षरमक्षरच व्यक्ता व्यक्त भरते विश्वमीश ।
अनीशश्चात्मा वध्यते भोक्त सावान ज्ञात्वा देव मुच्यते सर्वपाशैं ।।

श्वेता १-८

यह क्षर—परिणाम को प्राप्त होने वाली प्रकृति और अक्षर जीवात्म तत्व परस्पर सयुक्त है । भोग और भोक्ता भोग भोक्त भाव मे सम्मिलित है । इस व्यक्ता-व्यक्त जीवात्मा और प्रकृति की परमात्मा पालन करता है । जीवात्मा अनीश्वर है स्वय ईश्वर नही है इस कारण भोक्ता भाव से प्रकृति का भोक्ता होने से बन्ध जाता है भोग मे आसक्ति के कारण कर्म में लिप्त हो जाता है । परन्तु परमेश्वर की भक्ति द्वारा जान सारे बन्धनो से छुट जाता है । प्रकृति का सग आत्मा के लिए बन्ध का कारण है और भगवान का पूजन आराधन ज्ञान मोक्ष का साधन है ।

भगवान दर्शन का साधन—

स्वदेहमरणिं कृत्वा प्रणव चोतरारणिम् ध्याननिर्मथनाभ्यासाछेव पश्येन्निगूढवत ।

श्वेता १-१४

परम कल्याण का अभिलाषी उपासक अपने शरीर को नीचे की अरणि कल्पना कर और प्रणव-ओ३म् को ऊपर की अरणि कल्पना कर ध्यान रूप अभ्यास से लकडी मे छुपी अग्नि के समान परमेश्वर को देखें । मन लगा कर भगवान के नाम ध्यान स्मरण से उसका दर्शन साक्षात्कार करें ।

प्रणव द्वारा आत्मा का ग्रहण

वह्नेर्यथा योनिगतस्य मूर्ति दृश्यते नैव च लिगनाश ।
स भूय एवेन्धनयोनिग्रहण स्तद्वोभय वै प्रणवेन देहे ।।

श्वेता १-१३

जिस प्रकार अपने आश्रम काष्ट में स्थित अग्नि का रूप दिखाई नही देता और न उसके लिंग-सूक्ष्म रूप का ही नाश होता है और फिर ईधन रूप कारण के द्वारा ही उसका ग्रहण हो सकता है । ठीक इसी प्रकार आत्म तत्व परमात्मा तत्व दोनो देह मे प्रणव से-नाम ध्यान तथा जप से ग्रहण करने योग्य हैं ।

शोक से बचने का ढग—

समाने वृक्षे पुरुषो निमग्नोऽनीशया शोचित मुह्यमान ।
जुष्ट यदा पश्यत्यन्यमीशमस्य महिमानमिति वीतशोक ।।

मुण्डको ३-१२

एक ही वृक्ष—प्रकृति मे जिसमे जीव और ब्रह्म रहते हैं, जीवात्मा अहकार जजीरो से बन्ध कर अपने को शरीर मान कर यह विचार करता है कि मैं बलहीन हू । मेरी सतान मर गई मैं उन्हे बचा नहीं सका, मेरा धन नष्ट हो गया, मैं उसकी रक्षा नहीं कर सका अविद्या के कारण इस प्रकार की चिन्ताओ मे फसा रहता है । और अहकार के कारण उन नष्ट होने वाली वस्तुओं को आत्मा में मान लेता है आप दिल्ली मे रहता है समाचार आया कि बम्बई वाले मकान में आग लग गई सारा जल गया यह रोने लगता है कहता है मेरा नाश हो गया मैं लुट गया । भाई तू तो भला चगा है तेरा कुछ नही बिगडा तू तो अमर है । आत्मा का क्या बिगडता है । किन्तु यह तो मरा जा रहा है । अविद्या अज्ञान के कारण दुखी है । जब दूसरे साथी परमात्मा को जो ज्ञान से पूर्ण है सवशक्तिमाम और दुखो के बन्धन से मुक्त है, जिसको कोई अविद्या मे ला सकता है न दुख दे सकता जो असग है । अलिप्त है । तब उसकी उपासना से यह भी शोक रहित हो जाता है । परमात्मा ही जीव को दुखों से बचाने वाला है ।

दुःखों से दूर होने का ढग—

यदा पश्य पश्यते रुकमवर्ण कर्त्तारमीश पुरुष ब्रह्मयोनिम् ।
तदा विद्वान पुण्यपापे विध्य निरजन परम साम्यमुपैति ।।

मुण्डको ३-१-३

जिस समय मन के मैल को दूर कर के साधक उस प्रकाश स्वरूप परमात्मा को जिसके प्रकाश से सारा जगत प्रकाशित हो रहा है और सम्पूर्ण जगत को उत्पन्न करने वाला है, जो सबका स्वामी है, जिसकी शक्ति से सारे ब्रह्माण्ड का चक्र चल रहा है । चाद सूरज, तारो और पृथिवी की चाल, ऋतुओ का परिवर्तन प्रत्येक प्रकार के कार्य जिस शक्ति के बन रहे हैं जब उसको देख लेता है तब पाप और पुण्य की अभिलाषा और अहकार के मल को धोकर अर्थात किसी प्रकार की इच्छा न रहने से और अन्त करण के पृथक हो जाने से पर ब्रह्म जो परमात्मा है जो सबसे सूक्ष्म और बलवान है, पूर्ण ज्ञानवान और दुखो से रहित है उसको प्राप्त करके उनके आनन्द गुण मिल जाने से उसकी समानता को प्राप्त कर लेता है । जिस प्रकार वह परमात्मा सत् चित आनन्द स्वरूप है ऐसे ही जीव भी उसके आनन्द को प्राप्त करके सम्पूर्ण दुखो से छुट जाता है ।

प्राप्ति का ढग—

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यकज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम् ।
अन्त शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो य पश्यन्ति यतय क्षीण दोषा ।।

मुण्डको ३-१-५

यह भगवान सदा सत्य से, यर्थात ज्ञान से, तप से, तथा ब्रह्मचर्य से प्राप्त किया जाता है । वह परमेश्वर शरीर के भीतर प्रकाशमय और शुद्ध है । अर्थात् सब के भीतर का पवित्र साक्षी है । उस परमेश्वर को निर्दोष यति जन देखते हैं ।

दर्शन का ढग—

न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा नान्येर्देवैस्तपसा कर्मणा वा ।
ज्ञान प्रसादेन विशुद्ध सत्वतस्तस्तु त पश्यते निष्फल ध्यायमान ।।

परमात्मा निराकार है इसलिए आंख उसे देख नहीं सकती वह आख का विषय नहीं है । वह अत्यन्त समीप है इसलिए भी नेत्र उसे देखने मे असमर्थ है । वह महान से भी महान है इसलिए भी नेत्र उसे देखने में असमर्थ हैं । न वाणी उसके गुणो का वर्णन कर सकती है वह वाणी का विषय नहीं है । वह अल्प ही कह सकती है । और न कोई दूसरी इन्द्रिया उसको अनुभव कर सकती हैं और न उसको तप कष्ट आदि सहन करने से जान सकते हैं और न कर्म से उसका ज्ञान हो सकता है किन्तु अज्ञान के दोषों से रहित होकर जब बुद्धि शुद्ध हो जाती है । अर्थात मन में जो मल विक्षेप आवरण आदि दोष हैं वह बिल्कुल दूर हो जाते हैं तब उस शुद्ध मन मे ध्यान करता हुआ साधक उसको अपनी आत्मा में देख सकता है ।

क्रमश

कुछ चुने हुए वेद मन्त्रों के भावों को काव्य व गीतो के माध्यम से व्याख्या (८)

भगवान दास, सम्पादक 'पालिका समाचार'

यस्मिन्नृच साम यजूर्षि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवरा ।
यस्मिश्चित्त सर्वमोत प्रजाना तन्मे मन शिव सकल्पमस्तु ।। यजु० अ० ३४।म ५।।

ध्वनि (रघुपति राघव राजाराम)

भावार्थ—हे सर्वेश्वर सर्वाधार । मन का शुद्ध करो व्यवहार ।।
ऋक्-यजु-साम ज्ञान के आगर । और अथर्व चतुर्थ मिलाकर ।।
चारो तव-वाणी का सार ।।१।।
ब्रह्मज्ञान, सच झूठ जहां पर । इधर उधर आसन ला-लाकर ।।
मन गिरता उठता सौ बार ।।२।।
सूत्र-ग्रथित माला के मनके । बीच भाग में रथ-चक्र के ।
आरे बने केन्द्र आधार ।।३।।
सभी काष्ठ जब जुड़े परस्पर । चक्राकार करें गति फरफर ।
ऐसे मन घूमे क्रमवार ।।४।।
सूर्य-चन्द्र नभ पर थम जाता । विषय-विकारो में रम जाता ।
विचरण करता बारम्बार ।।५।।

क्रमश

स्वास्थ्य सुधा

घरेलू उपचार (२)

नेतराम शर्मा प्रधान—भारतीय योग संस्थान पूर्वी जिला दिल्ली ११००५१

औरतों के चेहरे पर बाल—

सरसो बेसन का उबटन। पहले सरसों पीसकर बेसन मिला पानी के नरम कर लेप कर मलने से एक ही हफ्ते में चेहरे पर महिलाओं के फालतु रोयें साफ।

गले मे जलन और सूजन—

पालक के थोड़ से पत्त थोड़ से पानी में उबालिये और उसकी लुगदी की पुल्टस बना गले में बांधिये और दवा का करिश्मा देखियें।

कनफेडे—

मेथी और जो सिरके में पीस कर गले पर लेप करना।

बन्द पेशाब खोलना—

१ कलमी शोरा मिश्री राई बराबर बराबर लेकर १० ग्राम की मात्रा पानी के साथ दिन मे तीन बार।

२ ढाक के फूल पानी मे पीसकर नाभि पर लप करना।

३ गेहू की चोकर को गमकर पोटली बना पेडू कमर पर सेकना।

मूत्र का बार-बार आना—

१ १० ग्राम बरियारी की जड की छाल २५० ग्राम दूध मे मिश्री मिलाकर १५ दिन तक पीना।

२ अनार के छिलके का चूण ३ ग्राम पानी के साथ सुबह शाम लेना।

३ जाड़ों में २०० ग्राम काले तिल २५० ग्राम गुड की चासनी लड्डू बना बीस ग्राम का लडडू रोज खाना।

४ भुने हुए चने चबाकर खाना।

कण्ठ माला—

१ चिरचिटा की जड के ८ १० टुकड़े लेकर उसकी माला बना रोगी के गलें में पहना दें। कुछ दिनो में ठीक।

२ मूली के बीज बकरी के दूध मे पीसकर लेप करें। अथवा सरसो पीसकर लेप करें। शीघ्र लाभ।

पथरी—

१ मूत्राशय की पथरी तोड़ने के लिए रोज छाछ पीये रहिये। चिकनाई मलाई बन्द। छाछ मे जरा सी फूली फिटकरी मिला लें।

२ ५ ग्राम गोखुरू के बीजो का चूर्ण १० ग्राम शहद के साथ चाटें।

३ गेहू चने उबाल कर पानी को ठडा कर पीना। उबले हुए चने गेहू मे शक्कर मिलाकर खाना। मात्रा-गेहू चना मुटठो भर।

४ २५ ग्राम पालक रस दिन मे दो बार २५ ग्राम चुकन्दर रस दिन मे दो बार पात गोभी का रस एक एक कप दो बार।

५ मूली का रस २५ ग्राम रोज पीने से पथरी गलकर मूत्र के रास्ते निकल जाती है। मूली रस में आवले का चूर्ण ३ ग्राम मिलाकर सेवन से और भी अधिक

सूजन—

१ मुटठी भर गेहू पानी में उबाल कर सुहाने सुहाते पानी से रुई से धोना। गेहू निकाल कर शहद या शक्कर मिलाकर खाना।

२ मटर को पानी में उबाल कर उसके पानी से सूजन को धोना।

३ आंवले के रस में घी मिलाकर पीने से भी लाभ।

शीघ्र पतन—

पांच ग्राम जंगली पालक के बीजों का चूर्ण सुबह शाम दूध में छुहारे औटा कर लेना। समय ४० दिन सहवास से परहेज।

शुक्राणुओ की कमी—

पाच ग्राम बथुआ के बीजो का चूर्ण सुबह शाम छुआरे वाले दूध के साथ पीना। समय ४० दिन। सहवास से दूर।

नपुंसकता—

१ त्रिफला घी और शहद मिलाकर सेवन करें—याद रहे कि शहद और घी बराबर न हो।

२ बड का दूध ५ ७ बूंद बतासे मे डाल सूर्य उदय से पहले खाली पेट लेने से हफ्ते मे दूर।

मूत्र नली मे जलन—

१ चौलाई के पत्त मुटठी भर गम पानी मे उबाल थोडा ठडा होने पर मल कर छानकर आधा-आधा कप दिन मे तीन बार। पेशाब खुलकर आयेगा और जलन खत्म हो जायेगी।

२ पालक के पत्तो का रस पचास ग्राम दिन में तीन बार। पेशाव की जलन व रूकावट दूर।

पेशाब मे खून—

कुलफा पत्तो का रस पचास पचास ग्राम दिन मे तीन बार। एक हफ्ते में चमत्कारी प्रभाव।

फेफडो मे सूजम

पालक के पत्तो के रस से कुल्ले कर दो तीन बार थूकना। इसके बाद छोटे छोटे घूंट पीना। यदि सर्दी लगने से फेफड़ो मे सूजन हो तो पालक का पचांग (पत्ते, शाखा फूल छाल और मूल) मुटठी भर लेकर काढा बनाइये और छोटे छोटे घूंट लेकर पीजिये और सूजन को दूर भगाइये।

फफडो से खून — बथुआ का रस पीने से टी०बी० के कीटाणुओ भी नष्ट हो जाते हैं। मुंह से खून आना बन्द हो जाता है।

पेट मे कीड —बथुआ का रस काला नमक डालकर पीने से कीड नष्ट। खुराक से पहले गुड या जलेबी खाइये।

पेशाब रूक रूक कर आना —

बथुआ का रस दिन में चार बार एक एक कप।

क्रमश

श्री मातबरसिंह अधिकारी बहादुर का दुखद निधन



नई दिल्ली ४ जून। आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली के सेवक श्री मातबरसिंह अधिकारी का दुखद निधन ११ जून, ९२ को प्रात ९ बजे हृदय की गति रुक जाने से हो गया। वे 'बहादुर के नाम से जाने जाते थे। वे ६२ वर्ष के थे। शुक्रवार ११ जून को पचकुइयां रोड श्मशान घाट पर समाज के धर्माचार्य डा० कर्णदेव शास्त्री के पुरोहित्य में अन्त्येष्टि सस्कार सम्पन्न हुआ और राजधानी की अनेक समाजो संस्थाओ के अधिकारियो ने श्री बहादुर को अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित की।

आर्य समाज हनुमान रोड में १४ जून को आयोजित शोक सभा मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने श्री बहादुर को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि सारी आयु निष्काम भाव से सेवा करने वाले बहादुर ने अन्तिम समय मे किसी से भी सेवा नही करायी और चलते फिरते ही वे चले गये। ने अपनी सेवा व सुव्यवस्था द्वारा हर काम को भली प्रकार सम्पन्न करते थे और अपने पीछे सुकर्मों की एक याद छोड गये हैं। नित्य प्रति यज्ञ करने वाले बहादुर को योगियों की गति मिलेगी।

आज बहादुर जी हमारे बीच नहीं हैं। आर्यसमाज को ऐसे निष्ठावान सेवक के परिवार का हर प्रकार ध्यान रखना है और हर सम्भव सहायता करनी है।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने दिल्ली की सभी आर्यसमाजो व आर्य सन्देश परिवार की ओर से श्री बहादुर के प्रति भावाजलि अर्पित करते हुये कहा कि अत्यन्त कर्त्तव्यनिष्ठ सेवक श्री बहादुर के स्वर्गवास से आर्यसमाज की पूरी न होने वाली क्षति हुई हैं।

आय विद्वत वर्ग एव उपदेशक वर्ग की ओर से डा० महेश विद्यालकार ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते कहा कि २३ वर्ष तक निरन्तर सेवा करने वाले बहादुर की सेवायें अविस्मरणीय रहेगी।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के प्राध्यापक डा० रूप किशोर ने कहा कि विनोदी स्वभाव के धनी श्री बहादुर अपनी सेवाओ के कारण हमेशा स्मरण किये जाते रहेंगे। आर्य नगर कोओपरेटिव सोसायटी के प्रधान श्री हरिदेव ने कहा कि श्री बहादुर हमारी सस्था के अन्तरग के सदस्य थे। हमारा यह प्रयास रहेगा कि उनकी सदस्यता में कोई व्यवधान न आने पाये और वह निरन्तर बनी रहे। श्री बहादुर द्वारा दी जाने वाली शेष राशि भी अन्य स्रोतो से प्राप्त करने के प्रयास किये जायेंगे। पुरोहित वर्ग की ओर से डा० कर्णदेव ने श्रद्धाजलि अर्पित करते हुये कहा कि बहादुर एक सच्चे आर्यसुत थे और प्रत्येक काम को कुशलता से अजाम देते थे।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा की ओर से श्रीमती प्रकाश आय ने कहा कि श्री बहादुर का यज्ञमय जीवन था। स्त्री समाज हनुमान रोड की ओर से श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा ने कहा कि बिना लोभ व लालच के श्री बहादुर सदैव मुस्कराते हुए सेवा करते थे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी ने श्री बहादुर को कविता द्वारा श्रद्धासुमन अर्पित किये। समाज के प्रधान श्री राममूर्ति कैला एव मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा ने श्री बहादुर को एक कर्मठ व निष्काम सेवक बताया और कहा कि वे यज्ञवेदी सजाने का काम बेखूबी करते थे। समाज की ओर से उन्होंने श्री बहादुर के परिवार को ११००रु० की सहायता राशि ३१-३-९४ तक पूरा वेतन निःशुल्क आवास अन्य हर सम्भव सहायता देने की घोषणा की।

श्री मातबरसिंह अधिकारी बहादुर अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती ऊषा अधिकारी, दो पुत्र सजय व मनोज अधिकारी तथा एक पुत्री कुमारी अलका अधिकारी छोड़ गए हैं।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत श्री बहादुर की आत्मा को शान्ति व सदगति तथा उनके परिवारजनो को दारूण दुख सहने की शक्ति प्रदान करे।

आर्य समाज तेड़ा (मेरठ)

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नई दिल्ली २० जून। आर्य समाज तेड़ा (मेरठ) का २४ वां वार्षिकोत्सव १८ से २० जून ९३ तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

१८ जून को प० रामनिवास विद्यार्थी के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ प्रारम्भ हुआ। प० विद्यार्थी जी ने पचमहायज्ञ की महिमा पर सारगर्भित विचार रखें। प० धनकुमार आर्य विद्यावाचस्पति, उ०प्र० आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत मेरठ के जिला उप प्रधान श्री अशोक कुमार व स्वामी यज्ञमुनि ने वेदों की प्रासगिकता पर प्रेरक विचार प्रस्तुत किए। नागल राय, आर्य समाज के मन्त्री एव पालिका समाचार के सम्पादक श्री भगवान दास ने यज्ञ की महिमा ईश्वर भक्ति और महर्षि दयानन्द के कृतित्व पर तीनो दिनो गीतो द्वारा सुन्दर विचार रखे। आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यदेव बेधड़क श्री सुमेरसिंह मलिक, श्री वीरेन्द्र मलिक, इन्द्रपाल और महाशय श्रीपालआर्य ने आर्य वीरो के बलिदानों व आर्य सस्कृति की परम्पराओं की चर्चा करते हुए अत्यन्त मनोहर भजन प्रस्तुत कर आर्य जनता को भावविभोर कर दिया। कार्यक्रम का सचालन स्थानीय आर्यसमाज के मन्त्री मास्टर कर्णसिंह आर्य ने कुशलतापूर्वक किया। आर्य वीर दल के संचालक श्री सत्येन्द्र कुमार कौशिक, कोषाध्यक्ष श्री सतीश कुमार व जिलेसिंह अभय ने वार्षिकोत्सव को सफल बनाने मे बहुत योगदान दिया। समाज के प्रधान मास्टर गंदासिंह तोमर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

माता चुनिया देवी की शोक सभा

आय समाज प्रताप नगर दिल्ली के मन्त्री श्री केवल कृष्ण सैठी की माता श्रीमती चुनिया देवी का निधन १३ जून १९९३ को हो गया। २५ जून १९९३ को शाति यज्ञ एव शोक सभा का आयोजन किया गया। स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती प० महेन्द्र कुमार शास्त्री डा० धर्मपाल श्री सब्बरवाल श्री लाजपत राय निझावन श्री कुलानन्द भारती श्री नन्द लाल चौधरी तथा क्षत्रीय प्रतिष्ठित गण्यमान्य महानुभावो ने माता जी के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए। गुरुद्वारा कमेटी सनातन धर्म मन्दिर तथा प्रगतिशील मंच के प्रतिनिधियो ने भी उस पुण्यात्मा को श्रद्धांजलि दी। श्री केवल कृष्ण सैठी की मात सेवा की सभी लोगो ने भूरि भूरि प्रशसा की। एक ही दिन पहले १२ जून १९९३ को उनकी धर्ममाता श्रीमती धर्मवती जी का भी निधन हो गया। श्रीमती धर्मवती जी श्री लाजपत राय निझावन की सहधर्मिणी थी। उन्होने आर्य समाज तथा सामाजिक कार्यों मे चढ़ चढकर भाग लिया।

आर्य सन्देश परिवार की ओर स दोनो माताओ के प्रति हमारे श्रद्धासुमन।

सम्पादक

मुस्लिम मा बेटे ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया

कानपुर—आयसमाज मन्दिर गोविन्द नगर मे आर्य समाज व केन्द्रीय आय सभा के प्रधान श्री देवीदास आय ने एक मुस्लिम महिमा व उसके पुत्र को उनकी इच्छानुसार वदिक धर्म (हिन्दू धर्म) ग्रहण कराया। श्री आय ने उनका नाम दिवाज फातमा से श्रीमती रीता व उसके बेटे का नाम मोहित रखा।

शुद्धि सस्कार के पश्चात श्रीमती रीता का विवाह एक हिन्दू युवक श्री बजेश चतुर्वेदी के साथ वदिक रीति से सम्पन्न कराया।

ज्ञातव्य हो आय समाजी नेता श्री देवीदास आय ने हाल ही में तीन मुस्लिम युवतियो जो डाक्टर वकील व इन्जीनियर हैं और एक ईसाई युवती है जो अध्यापिका है को हिन्दू धम ग्रहण कराया था तथा उनके विवाह शिक्षित हिन्दू युवको के साथ कराए थे।

मन्त्री आय समाज गोविन्द नगर कानपुर

आर्य सन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R.N No 32387/77 Posted at N D P S O on 8-9-7-1993 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/93

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल-११०२४/९३ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसैन्स न० यू (सी०) १३९/९३

"आर्यसन्देश" साप्ताहिक ११ जुलाई १९९३

महात्मा धर्मपाल

(पृष्ठ १ शेष का)

कार्य साथ साथ करता रहूगा। वानप्रस्थ मैंने अपनी आत्मा की आवाज पर ही लिया है। श्री सूर्यदेव जी ने कहा कि महात्मा धर्मपाल जी के इस आदर्श जीवन से सबको प्रेरणा मिलती रहेगी।

इस समारोह मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री एव गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के नवनियुक्त कुलपति डा० धर्मपाल, गुरुकुल गौतम नगर के आचार्य हरिदेव प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री विद्या परिषद के प्रस्तोता प्रि० चन्द्रदेव, 'सन्देश पत्रिका के सह-सम्पादक श्री रामचन्द्र रौदा, वैदिक विद्वान श्री प्रेमचन्द्र श्रीधर, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के रीडर डा० महेश विद्यालंकार, दिल्ली विश्वविद्यालय के सस्कृत विभागाध्यक्ष डा० वाचस्पति उपाध्याय स्वामी शक्तिश्वरानन्द जी महाराज तथा दिल्ली की विभिन्न आर्य संस्थाओ के प्रतिनिधियो ने महात्मा धर्मपाल के त्याग व तपस्या का सम्मान करते हुए अपनी शुभ-कामनाए दीं।

अपने अभिनन्दन के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए महात्मा धर्मपाल, वानप्रस्थी ने विश्वास दिलाया कि वे पहले की भांति समाज सेवा के कार्य करते रहेंगे।

उल्लेखनीय है कि महात्मा धर्मपाल न माता चननदेवी धर्मार्थ औषधालय की स्थापना कर निर्धन जनता की सेवा के लिए एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। शिक्षा के क्षेत्र मे भी उनके लोक सेवा के काय स्मरण किए जाते रहेंगे। इस कार्यक्रम का मच सचालन डा० शिव कुमार शास्त्री ने किया।

आर्य समाज तिमारपुर मे

डा० धर्मपाल का भव्य अभिनन्दन

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल का गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार का कुलपति नियुक्त होने के उपलक्ष्य मे ४ जुलाई को आर्य समाज मन्दिर तिमारपुर, दिल्ली में भव्य अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम मे समाज की उप-प्रधाना माता श्रीमती गोमती देवी ने शाल ओढ़ाकर, प्रधान श्री तेजपाल मलिक ने स्मृति चिह्न तथा मन्त्री श्री विमल कान्त शर्मा ने नारियल भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम मे सर्वश्री आनन्द प्रकाश गुप्त डा० सीताराम बग्गा, श्रीमती ओमवती श्रीमती राठी, श्री कलीराम, प० राजबीर शास्त्री, श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा, चौ० नारायण ने भी माल्यार्पण द्वारा डा० धर्मपाल का स्वागत किया। श्री तेजपाल मलिक ने डा० धर्मपाल को समर्पित नेता बताया। श्री विमलकान्त शर्मा ने आशा व्यक्त की कि व्यक्तित्व व कृतित्व के धनी डा० धर्मपाल से गुरुकुल को बहुत आशाए हैं। प्रभु कृपा से वे इस गुरुतर भार को वहन करने में सफल होंगे।

अपने सम्मान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए डा० धर्मपाल ने कहा कि मैं आर्य समाज तिमारपुर मे अनेक अवसरो पर आया हू और इससे विशेष रूप से जुड़ा रहा हू। उन्होंने आगे कहा कि प्रत्येक आर्य को समाज सेवा व जन परोपकार के काय लगन व रुचि से करने चाहिए तभी उसमें आनन्द आता है और सफलता मिलती है। डा० धर्मपाल ने कहा कि आपकी शुभकामनायें एव आशीर्वाद मेरा सम्बल है।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन : – ३१०१५० के लिएप्रकाशित। रजि० न० डी० (एल ११०२४/–९३

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५ अक ४२ | रविवार २० सितम्बर १९९२ | विक्रमी सम्बत् २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्बत् १९२७९४०९३

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक— २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

राष्ट्रीय ओपन स्कूल की पुस्तक ला० लाजपत राय को उग्रवादी कहती है

नई दिल्ली आप मानें या न मानें पर यह सच है कि राष्ट्रीय ओपन स्कूल की उच्चतर माध्यमिक कक्षा की राजनीति विज्ञान की पुस्तक मे देश के भावी कर्णधारों को यह पढ़ाया जा रहा कि लाला लाजपत राय श्याम जी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर लोकमान्य तिलक भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, खुदीराम बोस अवध बिहारी, मास्टर अमीरचन्द आदि प्रख्यात स्वतन्त्रता सैनानी उग्रवादी थे। साथ ही पजाब के सरदार अजीत सिह बगाल के वरीन्द्र घोष कन्हाई लाल, दीनानाथ आदि अन्य स्वाधीनता सग्राम के सैनानियों को भी उग्रवादी बताया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि उक्त पाठ को आठ लेखको ने लिखा है और लेखक मण्डल के अध्यक्ष हे रमेश चन्द्र थापर।

पुस्तक मे "स्वतन्त्रता आन्दोलन मे काग्रेस की भूमिका" मे लेखक ने उदारवादी, उग्रवादी व क्रान्तिकारी अलग-अलग शब्दो का प्रयोग किया है। अत स्पष्ट है कि क्रान्तिकारियो के लिए उग्रवादी शब्द भूल से नहीं प्रयुक्त हुआ है। इस आशय का समाचार राजधानी से प्रकाशित राष्ट्रीय सहारा के १३ सितम्बर, के अक में प्रथम पृष्ठ पर छपा है।

संस्कृत राष्ट्र को एक सूत्र में पिरो सकती है

नई दिल्ली। दिल्ली प्रशासन की सस्कृत आकदमी द्वारा एक 'त्रिदिवसीय अखिल भारतीय सस्कृत पत्रकारिता सम्मेलन का आयोजन किया गया।

दिल्ली के पूव उपराज्यपाल श्री मार्कण्डेय सिह ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुये कहा कि सम्कृत भारतीयता की पहचान है और सभी भाषाओ की जननी है। वास्तव मे सस्कृत समस्त राष्ट्र को एक सूत्र मे बाध सकती है, परन्तु मानसिक दासता के कारण सस्कृत की आज उपेक्षा हो रही है। इस सम्मेलन मे १३ गज्यो के ५० सस्कृत पत्रकार भाग ले रहे हैं। माकण्डय सिह न सस्कृत पत्रकारो को परामर्श दिया कि वे शास्त्रो के श्लोको का सरल भाषा मे अनुवाद कर जन-२ तक पहुचायें ताकि लोग प्राचीन धरोहर को पहचान सकें।

सम्मेलन की अध्यक्षता श्री सेवाराम शर्मा ने की। श्री शर्मा ने अखिल भारतीय फोरम गठित करने का सुझाव दिया।

तीन दिवस के सम्मेलन मे सस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार मे सस्कृत पत्र-पत्रिकाओ का योगदान, सम्कृत पत्रकारिता के उद्देश्य व नियम आदि विषयो पर विचार किया जायेगा।

वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित

परम दानवीर स्व० ला० दीवान चन्द

के १०८ वें जन्म दिवस

दक्षिण अफ्रीका मे वदिक धम की पताका फहराने व ले

स्व० श्री स्वामी भवानीदयाल संन्यासी

की जन्मशती

के अवसर पर रविवार दिनाक २० सितम्बर १९९२ को प्रात ९ बजे

आर्यसमाज मंदिर दीवान हाल, दिल्ली

मे भव्य समारोह का आयोजन किया गया है।

अध्यक्षता—पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

मुख्य अतिथि—माननीय शिशुपाल रामभरोसे, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफिका

मुख्य वक्ता—प० ब्रह्मदत्त स्नातक, प० महेन्द्र कुमार शास्त्री, बा० सोमनाथ मरवाह, ला० इन्द्रनारायण

भारी सख्या मे पधार कर समारोह की शोभा बढायें।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सहसम्पादक—विमलकान्त शर्मा

जन्मशती पर विशेष लेख—

स्वामी भवानीदयाल संन्यासी : एक गौरवमय व्यक्तित्व

—श्री ब्रह्मदत्त स्नातक, जनकपुरी, दिल्ली

उन्नीसवी सदी मे जन्मे भारतीय सपूतो मे 'स्वामी भवानीदयाल सन्यासी का विशिष्ट और अठा स्थान है। यो तो उनका जन्म भारत के बाहर दक्षिण अफ्रीका म हुआ और उनके जीवन का काफी बडा भाग भी वही बीता परन्तु अन्तिम सास तक वे प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से भारत की सेवा म लगे रहे। अपनी कुशल किन्तु असाधारण रूप से क्रियाशील काया से उन्होने भारत मे और भारत के बाहर विशेषत प्रवासी भारतीयो के लिय काय किया वह सदैव स्मरणीय रहेगा। स्वदेश और विदेश मे भारतीयो के सुख दुख मे हिस्सा बटाना उनका व्रत था जिसे उन्होने आजीवन बडी निष्ठा के साथ निभाया।

पिछली शती के अन्तिम चरण मे एव इस शती के प्रारम्भिक दशको मे प्रवासी भारतीयो के लिए जिन महानुभावो ने विशेष रूप से काम किया उनमे लाला लाजपतराय भाई परमानन्द गोपाल कृष्ण गोखले महात्मा गाधी स्वामी शकरानन्द दीनबन्धु एडरूज सरोजिनी नायडू वी०एस० श्रीनिवास शास्त्री और पडित बनारसी दास चतुर्वेदी विशेष उल्लेखनीय हैं। प्राय उन सभी का स्वामी जी से सम्पक था और व सब स्वामीजी की निष्ठा एव कायशक्ति की सराहना करते थे।

भवानी दयालजी का जन्म १० सितम्बर १८९२ को जोहानीज वर्ग मे हुआ था। इस तरह उनकी जन्मभूमि दक्षिण अफ्रीका थी। किन्तु उनकी जडे भारत मे थी जहा से उनके बिहार निवासी पिता जयराम सिंह और अवध निवासिनी माता मोहिनीदेवी शर्तबद कुलियो के रूप मे दक्षिण अफ्रीका पहुचे थे। इस तरह प्रवासी भारतीयो की सेवा की ललक और भारत भक्ति भवानी दयाल जी को घुट्टी मे मिली थी।

वे निष्ठावान आर्य समाजी और हिन्दू धम एव सस्कृति के अनन्य प्रेमी थे परन्तु कट्टरता के घोर शत्रु थे। खडन मडन और धार्मिक वैमनस्य की बातो से सदा दूर रहकर उन्होने अपने जीवन मे रचनात्मक कार्य को महत्व दिया।

हिन्दी का व्यापक प्रचार करने का उन्होने बीड़ा उठाया था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये दक्षिण अफ्रीका मे उन्होने जगह जगह हिन्दी प्रचार सभाए और हिन्दी रात्रि पाठशालाए स्थापित की। अनेक व्यायामशालाए एव क्रीडागार भी उन्होने खुलवाये। इन सबमे उन्होने हिन्दी को प्रमुख व्यवहार भाषा का स्थान दिलाया। आज दक्षिण अफ्रीका के वेस्टविल डर्बन विश्वविद्यालय मे हिन्दी की स्नातकोत्तर स्तर तक पढाई होती है। स्वामी जी के जीवन काल मे वहा हिन्दी का जो व्यापक प्रचार था उसका श्रेय मुख्यत उन्ही को था। यह दुख की बात है कि दक्षिण अफ्रीका के भारतवशी अब हिन्दी से विमुख हो गये है।

भारत मे रहते हुये स्वामी भवानी दयाल जी ने कलकत्त म हिन्दी पत्रकार सम्मेलन और कानपुर मे आचाय महावीर प्रसाद द्विवेदी की अध्यक्षता म हुए हिन्दी साहित्य सम्मलन मे सक्रिय भाग लिया था। १९३१ मे देवघर म बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वे सभापति बनाये गये। वृन्दावन मे हुए प्रवासी भारतीयो के प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर उन्होने जेल से अपना अध्यक्षीय भाषण हिन्दी मे ही लिखकर भेजा था।

अपनी भारत यात्राओ मे वे राष्ट्रीय महासभा (काग्रेस) के अधिवेशनो एव अन्य सम्मेलनो मे बराबर भाग लेते थे। १९१९ की अमृतसर काग्रेस मे प्रवासी भारतीयो के बारे मे राष्ट्रीय प्रस्ताव उन्होने ही प्रस्तुत किया था, जो सर्वसम्मत से पास हुआ। १९२५ मे वे दक्षिण अफ्रीका क प्रतिनिधियो के साथ भारत आये और मथुरा की दयानन्द जन्म शताब्दी मे भाग लेन के बाद भारतीय पत्रो मे लेखो के जरिये प्रवासी भारतीयो के सम्बन्ध मे बराबर प्रचार करते रहे। १९२७ मे वे दक्षिण अफ्रीका लौट गये और अक्तूबर १९२९ मे फिर भारत आय और प्रवासी भारतीयो के कार्य तथा राष्ट्रीय आन्दोलन म भाग लेते रहे। इस सिलसिले मे उनकी गिरफ्तारी भी हुई और उन्हे हजारीबाग (बिहार) मे रखा गया। माच १९३२ मे वे दक्षिण अफ्रीका लौट गये, १९३५ म वे स्थायी रूप से भारत आ गये और अजमेर मे रहने लगे।

स्वामी भवानी दयाल जी के जीवन पर आर्यसमाज वैदिक धर्म का गहरा प्रभाव था। वे दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रथम अध्यक्ष थे जिसकी हीरक जयन्ती मे भाग लेने का अवसर इस लखक को १९८५ मे सितम्बर मे मिला। उस समारोह मे सभा के विशाल तिमजिल भवन की तीसरी मजिल पर स्वामी जी की स्मृति मे एक सभाकक्ष की नामपटिका का अनावरण हुआ। मैंने देखा कि उस सगमरमर की तख्ती पर अग्रेजी म स्वामी भवानी दयाल चेम्बर लिखा गया था। उससे स्वामी दयानन्द के दक्षिण अफ्रीकी शिष्यो की हिन्दी के प्रति अनास्था प्रकट होती थी। निश्चय ही स्वामी भवानी दयाल जी की दिवगत आत्मा को उससे क्लेश पहुचा होगा।

पिछले दिनो दक्षिण अफ्रीका जाने पर हमे ज्ञात हुआ कि स्वामी जी की स्मृति मे डरबन कारपोरेशन ने उनके मकान वाली सडक का नाम "दयाल रोड रखा है। उनकी पत्नी व दोनो पुत्र ब्रह्मदत्त एव रामदत्त भारत मे दिवगत हो चुके हैं। उनके स्वर्गीय भाई की पत्नी दक्षिण अफ्रीका के स्टेंगर नामक स्थान पर रहती है। मुझे बताया गया कि उनका बेटा यानी स्वामी जी का भतीजा हिन्दी अध्यापक है और भारत मे हिन्दी की शिक्षा लेने के बाद इस समय डरबन विश्वविद्यालय मे हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० सीताराम के सान्निध्य मे स्वामी जी के सम्बन्ध म शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने की तैयारी कर रहा है। स्वामीजी के एक और भतीजे डा० दयाल डरबन मे चिकित्सा कार्य करते है।

स्वामी भवानी दयाल जी सन्यासी ने लगभग आधी शती तक प्रवासी भारतीयो एव मातृभूमि की सेवा द्वारा बृहत्तर भारत के निर्माण मे अपना जीवन खपाया। ९ मई १९५० मे अजमेर मे उनका स्वर्गवास हुआ जहा उन्होने प्रवासी भारतीयो की सेवा के लिये प्रवासी ट्रस्ट की स्थापना की थी। आज वह ट्रस्ट निष्क्रिय एव गतिहीन हो गया है।

भारत पर कर्ज

(१) भारत को प्रतिवर्ष १०० अरब रुपये से भी अधिक की राशि कर्ज के रूप मे चुकानी पडती है।

(२) ३१ मार्च, १९९२ को समाप्त होने वाले वित्तीय वर्ष तक भारत पर २,०५००० करोड रुपये कर्ज था।

अमरीका मे भुखमरी में वृद्धि

सन १९८५ मे अमरीका मे लगभग तीस प्रतिशत लोग भूखे थे। अब करीब ५० प्रतिशत लोग भूखे रहने की स्थिति मे हैं। यह बात केन्द्रीय विश्वविद्यालय के महानिदेशक श्री ब्राऊन ने कही है। उनका कहना है कि अमरीका के शहरी इलाकों मे भी भुखमरी तेजी से बढ रही है और इससे बच्चो मे कुपोषण मे वृद्धि हो रही है।

दूसरी कक्षा क पुस्तक पर शराब का विज्ञापन

मध्य प्रदेश मे दूसरी कक्षा की गणित की पुस्तक पर शराब का एक विज्ञापन छप गया है। यह विज्ञापन पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर ११ लाख किताबों पर छपा है। यह विज्ञापन कैसे छपा, जाच की जा रही है।

आर्य सासद प्रो० रासासिंह को पितृशोक

अजमेर (राजस्थान) से लोकसभा के लिये दूसरी बार निर्वाचित आर्य सासद तथा आर्य समाज अजमेर के उप प्रधान प्रो० रासासिह के पिता श्री भूरा सिंह का ७५ वष की आयु मे नई दिल्ली के राम मनोहर लोहिया होस्पीटल मे चिकित्सा करवाते हुए श्रावणी पर्व के दिन रात्रि में देहावसान हो गया। श्री भूरा सिंह अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनका अत्येष्टि सस्कार सासद के पैतृक निवास बूगाजी का गाव पो० जि० राजसमन्द (राज०) में वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज अजमेर तथा आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के लोग भारी सख्या में सम्मिलित हुए।

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

स्वामी भवानीदयाल संन्यासी

सम्पादकीय

यह वर्ष स्वामी भवानी दयाल सन्यासी का जन्मशताब्दी वर्ष है। यह प्रसन्नता की बात है कि देश-विदेश मे प्रवासी भारतीयो के मसीहा स्वामी भवानी-दयाल सन्यासी के व्यक्तित्व एव कृतित्व पर प्रकाश डालने हेतु कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। वास्तव मे वह जाति जो अपने पूर्वजो को भूल जाती है, कभी उन्नति नहीं कर सकती। हमारे पूर्वज सदैव हमारा पथ प्रशस्त करते रहते हैं। वे हमे प्रेरणा देते हैं। हमारे लिए नई सभावनाओ के आविष्कार के नए आयाम प्रस्तुत करते हैं।

स्वामी भवानीदयाल सन्यासी का जन्म १० सितम्बर १८९२ को दक्षिण अफ्रीका के ट्रास वाल प्रदेश के जोहास बर्ग नगर मे हुआ था। उन्होंने अपनी जन्म-भूमि दक्षिण अफ्रीका की तो सेवा की ही, साथ ही वे अपने मूल देश भारत को भी नहीं भूले जहा से उनके बिहार निवासी पिता जयरामसिंह शत बन्द कुली के रूप मे गए थे। स्वामी भवानीदयाल सन्यासी एक प्रतिष्ठित सार्वजनिक कार्यकर्त्ता, राजनैतिक नेता समाज सुधारक, हिन्दी के प्रख्यात लेखक, सम्पादक और पत्रकार थे। भारत मे रहकर उन्होने भारत के स्वाधीनता सग्राम मे सभी प्रकार के रचनात्मक कार्यों मे अतिविशिष्ट सहयोग प्रदान किया। १९१९ के प्रसिद्ध काग्रेस अधिवेशन में वे सम्मिलित हुए थे और स्वागताध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द क पास ठहरे थे। उन्होने प्रवासी भारतीयो के प्रश्न पर महत्वपूर्ण भाषण किया था और एक प्रस्ताव भी पारित कराया था। वे १९२४-२५ मे मथुरा मे महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मशताब्दी मे भी सम्मिलित हुए थे।

उन्होने सामाजिक राजनैतिक, धार्मिक तथा साहित्यिक क्षेत्र मे जिस समग्र निष्ठा के साथ कार्य किया, वह भारत के गौरवमय इतिहास का एक स्वर्णिम अश है। उन्होन स्वतन्त्र भारत को भी देखा और इस उज्ज्वल अध्याय के प्रारम्भ के समय वे अति प्रफुल्लित थे।

उन्होने अनेक पत्र पत्रिकाओ का सम्पादन भी किया। उनकी प्रमुख कृतिया है—दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास दक्षिण अफ्रीका से मेरे अनुभव, हमारी कारावास कहानी, महात्मा गाधी ट्रासवाल मे भारतवासी, वैदिक धर्म और आर्य सभ्यता, नेटाली हिन्दू, शिक्षित और किसान, वैदिक प्रार्थना, वैदिक धम और आर्य समाज प्रवासी की कहानी।

उस वीर सपूत का १९५२ मे अजमेर म निधन हुआ। ऐसे श्रद्धावान्, कमठ महापुरुष की स्मृति मे हमारी विनत श्रद्धाजलि। —डा० धर्मपाल

ज्ञान-विज्ञान

जैसे एक भवन मे सबसे छोटी इकाई ईट होती है और किसी तत्व का सबसे छोटा भाग परमाणु कहलाता है, उसी प्रकार पेड पौधो सहित सभी जीव जन्तु सूक्ष्मतम इकाइयो से मिलकर बने होते है जिन्हे कोशिकाये कहते है।

मानव शरीर भी असख्य कोशिकाओ की सरचना है। बाल, नाडिया, दात, रक्त, त्वचा, मास पेशियां आदि कोशिकाओ से मिलकर बनते हैं। आप जानते हैं कि मानव शरीर लगभग पचास खरल कोशिकाओ से मिलकर बना है। कुछ कोशिकाओ को तो इलेक्ट्रोनिक सूक्ष्मदर्शी यन्त्र से देख सकते हैं जबकि उससे भी छोटी कोशिकाओ को तो इलेक्ट्रोनिक माइक्रोस्कोप से भी देखना सम्भव नहीं है। कोशिकाओ में ७५ प्रतिशत जल होता है।

प्रस्तुति ऋषि शर्मा

पं० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार

विद्यामार्तण्ड प० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार का जन्म ५ मार्च १८९८ को लुधियाना जिले के सबद्दी नामक ग्राम मे हुआ था। वे १९१९ मे गुरुकुल कागडी के स्नातक बने। १९२३ मे दयानन्द सेवा सदन के आजीवन सदस्य बने और तभी से गुरुकुल मे अध्यापक भी नियुक्त हो गए। डा० सत्यव्रत जी ने गुरुकुल कागडी की अथक सेवा की। वे उन्नति के शिखर पर चढते चले गए। उन्होंने प्राध्यापक, अध्यक्ष, प्रति उपकुलपति कुलपति और परि द्रष्टा पदो को सुशोभित किया।

प० जी ने बडे मनोयोग से साहित्य सृजन भी किया। उन्हे १९३५ मे महात्मागाधी ने तत्कालीन गौरवपूर्ण मगला प्रसाद पारितोषिक प्रदान किया था। उन्हे डा० राधा कृष्णन, श्री लाल बहादुर शास्त्री, श्री वी० वी० गिरि जैसे मूर्धन्य राष्ट्रीय नेताओ के हाथो पुरस्कार ग्रहण करने का सुयोग सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उनकी 'वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार' पुस्तक को तो अनेक सस्थाओ ने सम्मानित किया। गगाप्रसाद उपाध्याय ट्रस्ट ने १२०० रुपये का पुरस्कार प्रदान किया। उत्तर प्रदेश सरकार ने २५०० रुपये का पुरस्कार प्रदान किया। श्री राम-कृष्ण हरजीमल डालमिया द्वारा ११०० रुपये का पुरस्कार दिया गया। दिल्ली प्रशासन ने २१०० रुपये का पुरस्कार प्रदान किया। उन्हे नैरोबी के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य-महासम्मेलन का अध्यक्ष बनाया गया।

प० जी ने अनेक ग्रन्थो का सृजन किया, जिनकी सख्या शताधिक है। भारत वर्ष की अथवा विदेश की किसी भी पत्रिका का कोई विशेषाक उनके लेख के बिना पूर्णता को प्राप्त नहीं करता था। आर्य सन्देश के ऊपर उनकी सदैव कृपा रही है। उन्होने उसके लिए सदैव मौलिक एव सस्मरणात्मक लेख लिखे। आर्य सन्देश की परम्परा रही है कि उन सभी आर्य महानुभावो को प्रकाश मे लाया जाए जिन्होने देश, जाति, धर्म की सेवा की है।

आज प० जी हमारे बीच नही है। उनका १३ सितम्बर १९९२ को नई दिल्ली मे निधन हो गया। उनका गौरव पूर्व स्थान रिक्त हो गया जिसकी पूर्ति असभव है।

उस महामना मनीषी के लिए हमारी विनत श्रद्धाजलि।

—डा० धर्मपाल

सम्पादक के नाम पत्र

आर्य समाज के नियम और सावरकर का हिन्दुत्व

१ मई के आर्य जगत मे डा० हरीन्द्र श्रीवास्तव का हिन्द राष्ट्रीयता के प्रस्थापक वीर सावरकर लेख छपा है। इसमे जो विचार व्यक्त किये गये है उनकी आर्य समाजी दृष्टिकोण से समीक्षा आवश्यक है। किन्तु यहा तो मैं लेखक की इस पक्ति से अपनी घोर असहमति प्रकट करता हू जिसमे वे लिखते हैं—आर्य समाज के दस नियमो मे हिन्दू हिन्दुत्व का ही प्रतिपादन हुआ है। मैं डा० श्रीवास्तव को चुनौती देता हू कि वे आय समाज के नियमो की हिन्दुत्व परक व्याख्या करे। इन नियमो म किसी देश जाति, राष्ट्र, समुदाय तथा वग लिंग आदि का सकेत मात्र भी नही है। ये सार्वभौम, सार्वकालिक तथा मानव मात्र के लिये आचरणीय हैं। प्रथम दो नियम परमात्मा के स्वरूप तथा अस्तित्व का आख्यान करते हैं तो तृतीय नियम बेदो को प्रत्येक मनुष्य के लिये उपादेय तथा सत्य का आगार कहता है। अवशिष्ट नियम तो सत्य, धर्म, लोकोपकार, यथा योग्य वर्तन, विद्या वृद्धि, सब की भलाई मे अपनी भलाई तथा सामाजिक एव वैयक्तिक स्वतन्त्रता जैसी बातो का वर्णन करते हैं। इन नियमो मे हिन्दुत्व अथवा इस्लाम जैसी कोई सकीर्ण दृष्टि नही है।

—भवानीलाल भारतीय
नन्दनवन, जोधपुर

महर्षि दयानन्द के प्रेरणा स्रोत गुरु विरजानन्द

—विमल विधालङ्कार एडवोकेट

भारतीय सन्तान अपने युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की विचार शक्ति के प्रेरणा स्रोत गुरु विरजानन्द को कभी नही भुला सकती। भले ही गुरु विरजानन्द अधिक प्रसिद्धि मे न आए हो, भले ही उनकी मृत्यु का समाचार भारत के अबालवृद्ध नर नारियो तक न पहुचा हो परन्तु महर्षि दयानन्द जैसे शिष्य को पैदा करके वे सदैव के लिए अमर हो गये है।

महर्षि दयानन्द ने जब गुरु विरजानन्द के समक्ष पढने की इच्छा रखी तो सबसे पहला प्रश्न था कि जो मनुष्य कृत ग्रन्थ तुम्हारे पास हैं उन्हे यमुना नदी मे बहा दो और उनके ज्ञान को भूल जाओ क्योकि वह भ्रमपूर्ण हैं। दयानन्द जी को इस अन्धे गुरु की बातें विचित्र लगी, उन्होने सोचा कि आज तक जितने विद्वान् और आचार्यों से मैं मिला हू किसी ने इस प्रकार की बात नही कही, सम्भव है मेरे मन की अभिलाषा 'पूर्ण सत्य की खोज' शायद यहा पूरी हो जाए। उस समय क्या पता था कि ये गुरु ही नही अपितु शिष्य भी उतना ही विचित्र निकलेगा।

गुरु विरजानन्द जी ने बाल अवस्था से ही अन्धे होते हुए भी अत्यन्त कुशलता से अपनी बुद्धि को विकसित किया और शायद भारतीय संस्कृति के इतिहास मे पहली बार किसी व्यक्ति ने आर्ष और अनार्ष ग्रन्थो का भेद करके अपने पढाये हुए शिष्यो की एक टीम तैयार की जिससे भोली-भाली जनता के समक्ष सत्य को उजागर किया जाए। उसी गुरु की शिक्षा को जनता मे फैलाते हुए ऋषिवर दयानन्द सरस्वती ने अपने अनुपम ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका तथा वेद भाष्य इत्यादि अन्य अनेक छोटे-बडे ग्रन्थो की रचना की।

गुरु विरजानन्द जी ने धर्म-शास्त्रो के विशुद्ध रूप को उजागर करने के उद्देश्य से ही आर्ष और अनार्ष अर्थात् ऋषि प्रणीत तथा मनुष्य प्रणीत ग्रन्थो को पृथक करने के लिए कुछ लक्षणो का प्रतिपादन किया।

प्रथम लक्षण उन्होंने बताया कि ऋषियो द्वारा रचे ग्रन्थो का आरम्भ ओ३म् या अथ शब्द द्वारा होता है।

दूसरा – मनुष्य प्रणीत ग्रन्थो मे साम्प्रदायिक विद्वेष भरा रहता है जैसे पुराणो को ही देखें, कोई पुराण किसी देवता के गीत गाता है कोई किसी के और यही नहीं एक पुराण में दूसरे पुराणो के देवताओ की निन्दा भी कही गई है जबकि ऋषियो द्वारा रचित ग्रन्थ इन सब दुराभावो से सर्वथा दूर है उनमे प्रत्येक स्थल पर सार्वभौमिकता दिखाई देती है, प्राणि मात्र के उत्थान का सन्देश प्राप्त होता है उनका मानना था कि जितना लाभ सत्य ग्रन्थो से समाज को होता है उससे अधिक हानि असत्य ग्रन्थो के प्रचलन से होती है।

गुरु विरजानन्द जी को यह पूर्ण विश्वास हो गया था कि भारतवर्ष के पतन का मुख्य कारण यही मनुष्य रचित ग्रन्थ है, जिन्होने धार्मिक और सामाजिक जीवन मे भिन्नता और बुराईया पैदा की है, इसी उद्देश्य को लेकर वे सदैव जनमत परिवर्तन करने के लिए उत्सुक रहत थ। गुरु जी की प्रबल इच्छा थी कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक सार्वभौम सभा की स्थापना की जाए जो कि संस्कृत शिक्षण, शास्त्र मर्यादा, आर्यों के वर्ण और आश्रम की दुर्दशा मे पूर्णतया सुधार लाने का प्रयत्न करे। इस आशय का प्रस्ताव उन्होन तत्कालीन जयपुर नरेश श्री रामसिंह जी के समक्ष भी रखा था परन्तु पौराणिक पण्डितो ने इस प्रस्ताव का यह कहकर विरोध किया कि इससे धर्म की हानि होगी। स्पष्ट है कि ऐसा उन्होने इसीलिए किया क्योकि इस प्रकार की सभा से यदि बुद्धिवाद का उदय हो गया तो इन अल्प बुद्धि पौराणिक पण्डितो को कौन पूछेगा। गुरुजी के मन को इससे बहुत ठेस लगी।

गुरु विरजानन्द ने अपने जीवन मे अनेको शास्त्राथ भी किये और कई प्रान्तो राज्यो के राजा गुरु जी के सम्पर्क मे थे और उनमे श्रद्धा रखते थे। अलवर नरेश श्री विनयसिंह ने तो गुरु जी को तीन-चार वर्ष लगातार अलवर मे ही रखा और नियमित रूप से उनसे संस्कृत तथा आर्ष ग्रन्थो का अध्ययन करते थे। परन्तु गुरु जी का मन इस राजसी ठाठ बाट मे कदापि नही लगा और राजा विनयसिंह के एक दिन गैरहाजिर होने पर उन्होंने इसी बात को बहाना बनाया और अलवर छोड़ने की तैयारी कर ली।

गुरु विरजानन्द जी की पठन-पाठन प्रणाली भी बिल्कुल अनौपचारिक तरीके से तथा पूर्ण समानता के आधार पर चलती थी, उन्होंने अपने आश्रम में किसी प्रकार के कक्षा-विभाग या पढने का समय निश्चित नही कर रखा था जिसकी जब इच्छा हो गुरु जी से पढने बैठ जाता था। गुरु जी पढाते वक्त अपने आश्रम का दरवाजा सदैव बन्द रखते थे और केवल पढने के उद्देश्य से ही किसी को अन्दर आने की अनुमति देते थे। वे विद्यार्थियो के साथ ही उन्ही के समान आसन पर बैठकर उन्हे पढाते थे। विद्यार्थियो के आग्रह पर भी विशेष गद्दी पर नही बैठते थे। वे प्राय हसी मे गद्दी को गधी कहा करते थे। गुरु जी लोभ-लालच मान सम्मान से सदैव दूर रहे। उन्होने कभी किसी भी मिलने वाले राजा या अन्य बडे व्यक्तियो से कोई भेंट स्वीकार नही की।

उन्होने व्याकरण पद्धति मे सुधार लाने की दृष्टि से 'शब्द बोध' नामक ग्रन्थ की भी रचना की, वे किसी भी प्रकार मे सिद्धान्त भाषा या उच्चारण की त्रुटियो को सहन नही करते थे।

गुरु विरजानन्द के जीवन दर्शन से यह स्पष्ट होता है कि ऋषि दयानन्द ने स्वय तथा आर्य समाज की स्थापना के माध्यम से शास्त्राथ पद्धति के द्वारा सत-असत्य ग्रन्थो के अन्तर्द्वन्द्व को लडा लोगो के धार्मिक और सामाजिक उत्थान के प्रयत्न किए। गुरुकुल पद्धति के द्वारा शिक्षा मे समानता का प्रचार किया। इन सब विचारों के प्रेरणा स्रोत गुरुवर विरजानन्द जी ही थे, प्रकाण्ड पण्डित गुरु विरजानन्द की मृत्यु का समाचार सुनते ही वो दयानन्द जो सगे सम्बन्धियों, धन-दौलत विवाह आदि के बन्धन से भी कभी विचलित न हुआ था, इस समाचार पर मुरझा गया और उनके मुख से यह शब्द निकले 'आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।

महोपदेशक पं० सत्यमित्र शास्त्री एक व्यक्तित्व

शास्त्रार्थ महारथी आचार्य पं० सत्यमित्र जी शास्त्री वेदतीर्थ

गुरुकुल अयोध्या के पुराने स्नातक हैं वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय से आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण हैं। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान सांगोपांग वेदाध्ययन करके आर्य समाज के क्षेत्र मे ६० वर्ष से ऊपर महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो का प्रचार-प्रसार किया है। वैदिक सिद्धान्तो के प्रतिपादन मे विपक्षी विधर्मियो का मान मदन जनता जनार्दन के समक्ष किया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के ४० वर्ष से ऊपर महोपदेशक पद पर रहकर उत्तर प्रदेश तथा देश के कोने-कोने मे ऋषि मिशन का नाद बजाया है। आज वृद्धावस्था मे आप बडहलगंज गोरखपुर मे अपने निवास पर विश्राम करते हुए स्वाध्यायरत हैं।

आर्य समाज सदा ही वेद प्रचार हेतु विद्वानो की माग करता रहता है। प० सत्यमित्र शास्त्री हल चलाकर खेत नही जोत सकते हैं शारीरिक श्रम भी नही कर सकते हैं कारण यह है कि

विद्याव्यसनी बौद्धिक विवेक पूर्ण कार्य का काम कर सकता है श्री शास्त्री जी इस योग्य हैं कि वह आर्य समाजो मे जाकर (वैदिक यज्ञ) पारायण यज्ञ प्रवचन कथा व्याख्यान देकर मानव मात्र के कल्याणार्थ समय दे सकते हैं।

विद्वान की उपयोगिता भी यही हैं और आर्यों का परमधर्म भी यही हैं विद्वान का लाभ लेकर पण्डित की सेवाशुश्रुषा भी करें। आर्य समाज की पुरानी पीढी या नवीन शिक्षा क्या मागेगी वेद पढना और वेद पढ़ाना जाना है।

धारा प्रवाह संस्कृत सम्भाषण आपकी विशेषता है सिद्धान्त पक्ष पर प्रमाणो की झडी लगाकर विषय प्रतिपादन करना आपकी विशेषता है।

आज ऐसे विद्वान का आर्य जगत उपयोग कर ज्ञान वर्धन करे—

जीवन का कुछ पता नही ? बडे-बडे महारथी काल के गाल में चले गये, श्री शास्त्री जी के जीवन का अन्तिम चरण है समय का कुछ पता नहीं—

आर्यो ऐसे विद्वान की सेवा करो मुफ्त में नहीं कुछ काम लेकर ही सही ? आवश्यकता तो उनको घर बैठाकर भेंट पूजा कर सेवा करने की है—भगवान उन्हें स्वास्थ्य लाभ देकर दीर्घायु करें, और वह हम सबका शेष जीवन में मार्ग दर्शन करते रहें।

—डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

जीवित पितरो का श्राद्ध करें

विद्याभास्कर पं० ओम्‌प्रकाश जी शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी महोपदेशक अस्वस्थ

पुरानी पीढी के लोग धन्य थे—जिन्होंने अपने पुत्रो को गुरुकुलो मे पढने भेजा, नौकरी के लिए नहीं बल्कि देश जाति धर्म समाज सेवा के लिये सस्कृत अध्ययन हेतु गुरुकुलो में पढ़ने भेजा था।

प० ओम् प्रकाश जी शास्त्री के परिवार की स्थिति भी यही थी उन्होने ओम् प्रकाश जी को स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती के चरणो मे गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार पढने भेजा था।

ओम् प्रकाश जी प्रारम्भ से ही कुशाग्र बुद्धि थे, आचार्य शुद्धबोध तीर्थ की विद्या आचार्य नरदेव शास्त्री के सान्निध्य ने उन्हे आय समाज के मिशनरी के रूप मे तैयार किया।

गुरुकुल महाविद्यालय से स्नातक विद्याभास्कर की और वाराणसेय सस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की। स्नातक होने के बाद आप आर्य-समाज के मच पर आ गये।

महाविद्यालय के बाद आपने प० रामचन्द्र जी देहलवी के निकट बैठकर एक नयी विद्या पाई वह थी इस्लाम और ईसाइयत, बौद्ध और जैन धर्म को समझने की। उन्होंने उसे समझा ही नही बल्कि उनके विद्वानों से शास्त्रार्थ भी किये और मु हतोड उत्तर भी दिये।

आपकी विशेषता थी मच पर खडे होकर जनता को मन्त्र मुग्धकर लेना। शैली मे माधुय ओज गर्वीली वाणी

लम्बा कद छरहरा बदन हसमुख चेहरा गेहुआ गौरवर्ण पर धोती कुर्त्ता शोभायमान वाले श्री शास्त्री की अपनी विशेषता रही है सादा जीवन गम्भीर चिन्तन उच्च विचार।

प्रारम्भिक जीवन मे श्रद्धानन्द ट्रस्ट के द्वारा बिहार के राची क्षेत्र मे क्रिश्चियन मिशन का मुकाबला कर शुद्धि प्रचार में जीवन लगाया। उस समय ला० नारायणदत्त जी ठेकेदार का दिल्ली मे विशेष स्थान था, उनका उन्हें आशीर्वाद प्राप्त था।

आर्य समाज के क्षेत्र मे श्री शास्त्री जी व्यापक स्थान रखते हैं। भाषण शैली मन्त्रमुग्ध करनेवाली कथा वेदमन्त्रो की व्याख्या मे विशेष सिद्धहस्त रहे हैं।

जब आप आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के महोपदेशक थे, आप इतने व्यस्त रहते थे, उत्सवो कार्यक्रमो से अवसर ही नहीं मिलता था आपकी राशि सभा के वेतन से अधिक हो जाती थी। ऐसे व्यक्तित्व के धनी का सिद्धान्त मे कही पर उलझाव भी रहता है। 'वृक्षो मे जीव" नही हैं इस पर आप स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती के प्रतिपादक हैं।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे वृक्षो मे जीव "विषय पर स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती और प० गणपति शर्मा जी का शास्त्रार्थ प्रसिद्ध है परन्तु बाद मे प० रुद्रदत्त शास्त्री और प० ओप्रकाश जी शास्त्री का भी इस विषय पर म० वि० के उत्सव पर शास्त्रार्थ हुआ था। दोनो विद्वान वक्ता अपने-२ विषय को गहन चिन्तन के साथ रख रहे थे।

सारा जीवन व्यक्तित्व के बनाने मे कृतित्व पर ध्यान दिया है। आज प० ओम् प्रकाश जी शास्त्री खतौली मुजफ्फर नगर म कई वर्षों से अस्वस्थ होकर घर पर लेटे हैं। मैंने इसलिये लेखनी उठाई है कि आर्य जगत को ध्यान रहे कि हमारे मच का पहलवान आज कहा है और किस स्थिति मे है।

अन्त मे घर तो काम आता ही है परन्तु हमारी एक स्वस्थ परम्परा रही है अपनी मर्यादा में रहकर अपने जीवित पितरो का श्राद्ध करें। तो श्राद्ध क्या है—यहीं न कि

हम उनके कष्टप्रद जीवनीय क्षणो मे उनको देखें—पूछें और उनकी सेवा मे यदि कुछ बन सकता है तो पत्र पुष्प भेंट करें—

आज प० ओम् प्रकाश शास्त्री अखाड़े के (मच) पहलवान खाट पर पड़े हैं—[illegible] पड़ी पर हमारा कर्तव्य है कि उनकी सेवा करें।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

अग्निवेश का आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नहीं है

पश्चिमी अमेरिका के लाज एजिल्स नगर से प्रकाशित होने वाले अग्रेजी दैनिक एल० ए० इडिया के २२ मई ९२ मे प्रकाशित अविकल समाचार—(अग्रेजी)।

Swami Agnivesh is not in Arya Samaj

This is with reference to the L A INDIA dated April 17 news item ' Rally to D mand Next Ind an Pr sden , from among Delits Amorg the various speakers it is mentioned Swami Agnivesh as an Arya Samaj leader

It is clarified for the information of the readers that Swami Agnivesh is no longer associated with the Arya Samaj in any way though he still claims to be an Arya Samaj leader He has since been debarred from he Arya Sam j by the Inter national Aryan Leagu the supreme body of Arya Samaj headed by Swami Anand Bodh Saraswati (Ram GopalSha lwale ex-Member of Parliament) for his activities found against the principles of Arya samaj These days his activities are mo e political than religious

—Madan Lal Gupta
Furohi Vedic Dharma Samaj
Bellflower CA

लास एंजिल्स मे १७ अप्रैल १९९२ को भारत का नया राष्ट्रपति दलित वर्ग का हो, की माग के समर्थन मे एक रैली का आयोजन हुआ। कई प्रमुख वक्ताओ के साथ स्वामी अग्निवेश ने भी आर्य समाजी नेता के रूप मे रैली को सम्बोधित किया।

पाठको की सूचनार्थ यह स्पष्ट किया जाता है कि स्वामी अग्निवेश का अब आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नही है। आर्य समाज के सिद्धान्तो के विरुद्ध आचरण करने के कारण आर्य समाज के सर्वोच्च सगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (जिसके वर्तमान प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती हैं) ने उन्हें आर्य समाज से निष्कासित कर दिया है। इस समय स्वामी अग्निवेश की गतिविधिया धार्मिक कम अपितु राजनैतिक अधिक हैं।

—मदन लाल गुप्ता
पुरोहित वैदिक धम समाज
बैल फ्लोवर, कैलीफोर्निया

परम दानवीर स्व० लाला दीवानचन्द जी का १०८ वां जन्म दिवस समारोह

२० सितम्बर रविवार को प्रात आठ बजे आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली मे परम दानवीर स्व० लाला दीवानचन्द जी का १०८वा जन्म दिवस समारोहपूर्वक मनाया जायेगा। इस अवसर पर यज्ञ, सगीत प्रवचन एव श्रद्धाजलि के कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। समारोह मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, लाला इन्द्र नारायण, प० महेन्द्र कुमार शास्त्री सहित अनेको गणमान्य व्यक्ति लाला दीवानचन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालेंगे। अधिक से अधिक सख्या में पधार कर समारोह को सफल बनायें।

सूर्यदेव
मन्त्री

मूलचन्द गुप्त
प्रधान

संयुक्त राष्ट्र सघ में हिन्दी

पूर्व विदेश मन्त्री व भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने सन् १९७७ मे सयुक्त राष्ट्र सघ में हिन्दी मे प्रथमबार भाषण देकर हिन्दी की विजय-पताका को फहरा दिया। ज्ञातव्य है कि श्री वाजपेयी बचपन मे आर्य कुमार सभा के सदस्य थे।

एक मुगल शासक का संस्कृत प्रेम

—डा० भवानी लाल भारतीय

भाषा और धर्म दो पृथक चीजे है। धर्म व्यक्ति के विश्वास और आस्था की वस्तु है जबकि भाषा भावो की अभिव्यक्ति का एक साधन। हमारे देश मे ऐसे अनेक इस्लाम धर्मावलम्बी हुए जिन्होने संस्कृत के अध्ययन मे गहरी रुचि दिखाई थी। शाहजादा दाराशिकोह उपनिषदो के ब्रह्मज्ञान पर मुग्ध हुआ तथा उसने कतिपय उपनिषदो का फारसी मे अनुवाद किया। महाकवि अब्दुर्रहीम खानखाना न केवल संस्कृत के ज्ञाता ही थे, उन्होने संस्कृत मे काव्य रचना भी की थी। अलीगढ के मौलाना अब्दुल रहमान शास्त्री ने ईशोपनिषद् पर टीका लिखी।

मध्यकालीन इतिहास मे एक ऐसे मुस्लिम शासक का उल्लेख मिलता है जिसने अपने द्वारा बनवाई गई मस्जिद मे जो शिलालेख स्थापित किया वह संस्कृत मे था। इस शिलालेख की खोज सुप्रसिद्ध पुरातत्वविद् राव० ब० डा० हीरालाल ने की थी और इसका आलेख एपिग्राफिया इण्डिया मे प्रकाशित किया। इस शासक का नाम था आदिलशाह और उसकी यह मस्जिद महाराष्ट्र के बुरहानपुर नगर मे स्थित है।

इस मस्जिद मे लगे संस्कृत शिलालेख का मूल तथा हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है। प्रारम्भ मे ईश्वर स्तुति का श्लोक इस प्रकार अंकित किया गया है—

सर्वलोकस्यकर्तारं इच्छा शक्तिमनन्तकम्। अनादिनिधनवन्देगुणवर्णविवर्जितम्॥

मैं उस परमात्मा की वंदना करता हू जो सब लोको का रचयिता है तथा जिसकी इच्छाशक्ति अनन्त है। सत्वादि तीन गुणो तथा वर्ण रहित अनादि परमात्मा को हमारा नमस्कार हो।

इस श्लोक के पश्चात् एक वाक्य अंकित है—'श्री सृष्टिकर्त्रे नम' संसार के रचयिता को नमस्कार। इसके पश्चात ईश्वर स्तुति का एक और श्लोक अंकित है—

अव्यक्त व्यापकं नित्य गुणातीत चिदात्मकम्।
व्यक्तस्य कारण वंदे व्यक्ताव्यक्त तमीश्वरम्॥

मैं उस ईश्वर को प्रणाम करता हू जो अव्यक्त और व्यापक है, नित्य और गुणातीत है तथा चेतन मात्र है। जो व्यक्त सृष्टि के रूप में स्वयं को व्यक्त करता हुआ, वस्तुत अव्यक्त ही है।

यहां ध्यान देने की बात यह है कि इस श्लोक मे सांख्य दर्शन के उस सिद्धान्त का निदर्शन है जिसमे चेतन पुरुष को अव्यक्त प्रकृति मे गति उत्पन्न करने वाला बताया गया है।

उक्त दो श्लोको के पश्चात् मस्जिद के निर्माता फारुकी वंश की प्रशंसा मे निम्न श्लोक अंकित है—

यावच्चन्द्रातारादि स्थिति स्यादम्बरागणे।
तावत्फारुकिवंशोऽसौ चिरं नन्दन्तु भूतले॥

जब तक आकाश मे सूर्य, चन्द्र तथा तारो की स्थिति है तब तक इस धरती पर फारुकी वंश आनन्दपूर्वक रहे। आगे के श्लोको मे फारुकी वंश के शासको की परम्परा और नाम गिनाये गये हैं —

वंशेऽस्मिन किल फारुकेन्द्रो बभूव राजा मलिकाभिधान।
तस्याभवत्सूनुउदारचेता पुत्रस्तदीयोहसनक्षितीश॥

इसी फारुकी वंश मे मलिक नाम का राजा हुआ, उसका पुत्र उदारचित्त हसन नामक राजा हुआ।

तस्मादभूदेदलशाह भूप पुत्रोऽभवततस्य मुबारकेन्द्र
तत्सूनु क्षितिपाल मौलिमुकुट व्याघृष्टपादाबुज॥
सत्कीर्तिविलसत्प्रतावशगा मित्र क्षितीशेश्वर॥
यस्याहर्निशमानति र्गुणगणातीते परे ब्रह्मणि
श्रीमानेदलभूपति विजयते भूपाल चूडामणि

उस हसन नामक राजा के पुत्र आदिल शाह हुये और उनका पुत्र मुबारक नाम वाला हुआ। राजाओ के अधिराज ये अपनी कीर्ति और प्रताप से सुशोभित रहे। वे पर ब्रह्म, गुणातीत परमात्मा मे रात दिन मन लगाये रहते थे। ऐसे राजाओ के शिरोमणि श्रीमान आदिलशाह की सदा विजय हो।

इस तरह से इस उपासना मन्दिर के बनाने वाले आदिलशाह की स्तुति के पश्चात मसजिद को बनाने का समय ज्योतिषशास्त्रीय विधान के अनुसार अंकित किया गया है।

स्वस्ति श्री संवत् १६४६ वर्षे शाके १५११ विरोधि संवत्सरे पौष मासे शुक्ल पक्षे १० घटी सहृकादश्या तिथौ सोमे कृतिकाघटी ३३ सहरोहिण्या शुभ घटी ४२ योगे वाणिजकरणेऽस्मिनदिने रात्रिगत घटी ११ समये कन्या लग्ने श्रीमान मुबारक शाह सुत एदलशाह राजा मसीतिरिय निर्मित स्वधर्मपालनाय।

विक्रम के वर्ष १६४६ शक संवत् १५११ को पौष शुक्ल पक्ष, एकादशी सोमवार को कृतिका, रोहिणी आदि नक्षत्रो की अमुक स्थिति थी। उस समय कन्या लग्न मे मुबारकशाह के पुत्र महाराजा आदिलशाह ने स्वधर्म के पालन के लिये इस मसजिद का निर्माण कराया।

काश, भारत मे आज बनाई जाने वाली मसजिदो और अन्य धर्मस्थानो के लेख भी संस्कृत और हिन्दी मे होते, न कि अन्य देशो की भाषाओ मे। किसी धर्म का किसी भाषा से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं होता।

(राजस्थान पत्रिका जयपुर ८ ३-९२ से साभार)

डी०डी०ए० में हिन्दी के लिए क्रान्तिकारी कदम

नई दिल्ली। कार्यालय मे दिन प्रतिदिन के काम-काज को बढावा देने के लिए डी० डी० ए० अपने कर्मचारियो को दो वार्षिक वेतन दे रहा है। उल्लेखनीय है कि गृहमन्त्रालय, राजभाषा विभाग के नियमानुसार हिन्दी शिक्षण योजना के अधीन भारत सरकार के कार्यालयो मे केवल एक ही वेतन वृद्धि दी जाती है।

एक अन्य योजना के अन्तर्गत पांच हजार से अधिक शब्द लिखने वालों में से प्रथम बीस कर्मचारियो को भी नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया जाता है। ये पुरस्कार हर तीसरे मास दिये जाते हैं। इस योजना में श्रेणी तीन के सहायक भी भाग ले सकते हैं। उल्लेखनीय है कि ऐसी योजना अन्य कार्यालयों मे नहीं है।

दिल्ली विकास प्राधिकरण के मुख्यालय मे चल रहे टाइप प्रशिक्षण केन्द्र मे गत ढाई वर्षों में लगभग ५० कर्मचारी टाइप सीख चुके हैं। प्रतिदिन एक घन्टा ट्रेनिंग लेकर ६ मास मे कर्मचारी टाइप सीख लेता है।

इन योजनाओ के चलते डी० डी० ए० के कार्मिक, आवास व लेखा विभागो मे अधिकांश काम-काज हिन्दी मे हो रहा है। लिफाफो पर पते हिन्दी में लिखे जा रहे हैं तथा चैक भी हिन्दी मे ही तैयार किये जा रहे हैं। डी० डी० ए० में हिन्दी आशुलिपि प्रशिक्षण देने की योजना भी विचाराधीन है।

उक्त जानकारी २३ अगस्त को निरीक्षण पर आई संसदीय राजभाषा समिति को दी गयी। ११ सदस्यो की इस समिति का नेतृत्व सांसद शंकर दयाल सिंह ने किया था।

आर्य सन्देश के विशेषांक

आप आर्य सन्देश के विशेषांक निकाल कर और उसके अनुसार गहराई तक जानकारियां देकर अद्भुत् कार्य कर रहे हैं। गोरखपुर से स्वर्गीय हनुमान प्रसाद जी के जीवन काल मे विशेषांकों की विशेषता से 'कल्याण' उन्नति की चरम सीमा पर पहुंच गया था और लोग उसके विशेषांकों को आदर के साथ लेते थे और सुरक्षित रखते थे, आपने भी 'आर्य सन्देश' को उसी दिशा में ढालना शुरू कर दिया है। इसके लिए आप प्रशंसनीय है। इसके अतिरिक्त उन व्यक्तियो की जिन्हें हम आर्य समाजी भी भूल रहे थे, आचार्य रामदेव, पंडित चमूपति जी आदियो की स्मृति को जगा दिया है। बड़ी प्रसन्नता होती है।

वार्षिक वृत्तांत विशेषांक मे आपने बहुत सुन्दर रूप में घटनायें एवं कार्य प्रकाशित किए हैं।

सुरेशचन्द्र वेदालंकार
एम० १/६६ राप्ती नगर कालोनी आरोग्य मन्दिर (गोरखपुर)

निर्वाचन समाचार

स्त्री आर्य समाज साकेत

प्रधाना श्रीमती लता बसल, मन्त्राणी—श्रीमती वीरमती खन्ना, कोषाध्यक्ष—श्रीमती राजलूथरा।

आर्यसमाज झिलमिल कालोनी, दिल्ली

प्रधान-श्री चिरजीलाल कालड़ा, उप प्रधान-श्री भगत राम भाटिया, मन्त्री-श्री जगदीश चन्द्र, उपमन्त्री-श्री ओम प्रकाश, कोषाध्यक्ष-श्री बलदेव राज चोपड़ा।

आर्य समाज, लक्ष्मी नगर, दिल्ली

प्रधान-श्री जी० आर० मेहता, उपप्रधान-श्री त्रिलोकी नाथ जी महेश्वरी मन्त्री-श्री सुरेन्द्र कुमार वर्मा, उप मन्त्री-श्री अनील कुमार बहल, कोषाध्यक्ष-श्री हरबंस लाल झाम।

आर्य समाज मन्दिर, मंगोलपुरी

१ प्रधान श्री उपेन्द्र कुमार जी २ मन्त्री श्री धमपाल आर्य
३ कोषाध्यक्ष श्री दयाल सिंह अग्रवाल

आर्य समाज (कमला नगर क्षेत्र) सब्जी मन्डी, दिल्ली-७

प्रधान-श्रीमती सुशीला सेठी जी, पूर्व प्रिंसीपल, उप प्रधान-श्री श्याम सुन्दर आर्य जी, श्री राम प्रकाश आहलुवालिया जी, मन्त्री श्री जय कृष्ण आर्य सह मन्त्री-श्री रामकिशन शर्मा, कोषाध्यक्ष-श्री देवदत्त गौतम, भण्डारी-श्री मोती राम आर्य जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री ओम प्रकाश डग जी।

आर्य समाज, किशन गंज (मिल एरिया) दिल्ली

प्रधान-डा० एस०एस० कामरा, प्रधाना-श्रीमती प्रीतम देवी तुली, उप प्रधान श्री प्रेम प्रकाश गुप्ता, उपप्रधाना-श्रीमती शान्तिदेवी शर्मा, मन्त्री-श्री चमन लाल मदान कोषाध्यक्ष-श्री रामचन्द्र आमेठा।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आयसन्देश–दिल्ली आय प्रातनिधि सभा, १५, हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१ नम्बर}१६६
87 Po ted at N D P S O on 17 9 199 Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/92
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल ११०२८/९२
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) १३९/९२
साप्ताहिक आर्यसन्देश
२० सितम्बर १९९२

पष्ठ ७ का शेष)

आर्य समाज साकेत नई दिल्ली

१ सवश्री कष्ण लाल वाही सरक्षक २ लखीराम कटारिया सरक्षक ३ सत्यदेव शर्मा प्रधान ४ प्रो० अनिल विद्यालकार उपप्रधान ५ अजु नदेव उप प्रधान राजेन्द्र पाल गुप्त मन्त्री ६ मन मोहन अहूजा कोषाध्यक्ष ।

आर्यसमाज, मयूर विहार फज-१ (पटपडगञ क्षेत्र) दिल्ली ९१

१ प्रधान श्री रणजीत लाल चावला २ उपप्रधान श्रीमती शान्ता देवी डाबर ३ मन्त्री-श्री प्रेम कुमार बलेचा ४ उपमन्त्री-श्रीमती कान्ता कौशल ५ कोषाध्यक्ष श्रीमती पुष्पा राजकुमार ।

रामगली आर्यसमाज मंदिर सी-१३, दुर्गा नगर घटाघर नई दिल्ली-६४

१ प्रधान-श्री ओ० पी० खन्ना २ उपप्रधान श्री रत्न प्रकाश भार्गव, ३ मन्त्री-श्री ओम प्रकाश शर्मा सैलानी ४ कोषाध्यक्ष श्री नरेश चन्द गुप्ता ।

वेद मन्दिर (आर्यसमाज ब्रह्मपुरी) भगतसिंह मोहल्ला न्यू उस्मानपुर दिल्ली-५३

प्रधान-श्री महाशय कल्याण दास जी २ उप प्रधान श्री गगाशरण आय जी ३ मन्त्री-श्री श्रीकिशन आय जी ४ उप मन्त्री श्री रविन्द्र कुमार आय जी ५ कोषाध्यक्ष-श्री कमल कुमार गुप्ता जी ६ पुस्तकाध्यक्ष एव प्रचार मन्त्री श्री टूकी राम भारद्वाज जी ।

आर्य समाज सिलीगुडी जिला-दार्जिलिंग (प बगाल)

१ श्री रतीराम शर्मा सरक्षक, २ श्री रमेश प्रसाद गुप्त प्रधान ३ श्री मामनचन्द गुप्त उपप्रधान ४ श्री सूयप्रकाश बोहरा उपप्रधान ५ श्री सुभाष आर्य मंत्री ६ श्री मिथिलेश्वर झा उप मन्त्री ७ श्री मोहन चन्द गुप्त उपमन्त्री ८ श्री सुभाष नकीपुरिया कोषाध्यक्ष ।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन पजाब के हुतात्मा

आय समाज ने हिन्दी की रक्षा के लिए सन १९५६ ५७ मे पजाब में एक विराट हिन्दी रक्षा आन्दोलन का सचालन किया था । इस आन्दोलन मे निम्न महानुभावो ने अपने प्राणो की आहूति दी थी —

(१) श्री सुमेरसिंह जी नया बास (रोहतक) फीरोजपुर जेल लाठी चार्ज १९५७
(२) श्री अमरसिंह जी गुलकडी (सगरूर) मोहरी अम्बाला रेलदुर्घटना १९५७
(३) श्री स्वर्णसिंह जी भैड (संगरुर) " १९५७
(४) श्री जगमोहन जी ग्वालियर (म० प्रदेश) , १९५७
(५) श्री रामस्वरूप जी मौखरा (रोहतक) " १९५७

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज मन्दिर विकासनगर देहरादून का वेदप्रचार सप्ताह व वार्षिकोत्सव दिनाक २३ ८ ९२ से ३० ८ ९२ तक समारोह पूर्वक समापन हुआ । इस वेदप्रचार सप्ताह मे श्री यशपाल आर्य बन्धु मुरादाबाद ओमप्रकाश शास्त्री सहारनपुर व अन्य महानुभावो ने अपने मधुर भजनो व प्रवचनों में उपस्थित जनसमुदाय को सच्चे मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया ।

डा० अरविन्द नाथ मन्त्री आय समाज मन्दिर विकास नगर

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस, दरियागज नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ फोन–३१०१५० केलिए प्रकाशित । रजि० न० डी० (एल १०२४/१–०९२

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

र्ष १५ अक ४२ | रविवार, २७ मितम्बर १९९२ | विक्रमी सम्बत २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्बत १९२७९४०९३
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक — २५ रुपय | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

भवानी दयाल सयासी जन्म शती समारोह .

विश्व में हिन्दी व वैदिक धर्म की पताका फहराने का संकल्प लें

नई दिल्ली २० सितम्बर "बच्चे व युवक भविष्य की आशा है। आज युवकों को चाहिए कि वे आगे आयें और चुनौतियो का सामना करते हुए समाज व राष्ट्र के उत्थान के साथ-२ स्वामी भवानी दयाल की तरह विश्व मे हिन्दी एव वैदिक धर्म की पताका फहराने का सकल्प ले। ये उद्‌गार आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिणी अफ्रीका के प्रधान श्री शिशुपाल रामभरोसे ने दिल्ली की प्रख्यात आर्य समाज दीवान हाल द्वारा आयोजित स्वामी भवानीदयाल सन्यासी की जन्म शताब्दी के अवसर पर आज एक समारोह में व्यक्त किए। श्री रामभरोसे ने दक्षिणी अफ्रीका में स्वामी भवानी दयाल सन्यासी द्वारा हिन्दी व आर्य समाज के लिए की गई बहुमूल्य सेवाओं का उल्लेख करते हुए दक्षिणी अफ्रीका मे आर्य समाज की गतिविधियो की भी जानकारी दी।

समारोह के मुख्य अतिथि प ब्रह्मदत्त जी स्नातक ने कहा कि स्वामी भवानी दयाल सन्यासी का कहना था कि भारत ही मातृ भूमि है पितृ भूमि है। भारत मां की सेवा करना ही मेरा धर्म है। इसी के लिए मरूगा। वास्तव मे देश के लिए समर्पित सन्यासी का अन्तिम समय तक देश सेवा करते ही निधन हुआ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धमपाल ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि हिन्दी, स कृति, पत्रकारिता व आर्य समाज की अस्मिता को देश विदेश में ज्योति जलाये रखने मे स्वामी भवानी दयाल सन्यासी ने अद्‌भुत कार्य किए हैं जो शताब्दियों तक प्रेरणा देते रहेंगे। उन्होने यह भी कहा कि सेवा व परिश्रम स्वामी जी के जीवन का लक्ष्य था तथा वे १९१९ के जलियांवाला काड के बाद अमृतसर में बुलाए गये काग्रेस के अधिवेशन मे भी भाग लेने आये थे जिसके स्वागताध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द थे।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने कहा कि विदेशो में हिन्दी की शान से पताका फहराने वाले जिस प्रवासी सपूत स्वामी भवानी दयाल सन्यासी की जन्म शताब्दी हम मना रहे हैं, उससे भारत मे, विशेषकर दक्षिण में, उन लोगो को प्रेरणा लेनी चाहिए जो आज राष्ट्रीय एकता की आधार हिन्दी का विरोध कर रहे है। उन्होने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी भवानी दयाल ने दक्षिणी अफ्रीका में भी आय समाज द्वारा जलायी राष्ट्रीयता की ज्योति को प्रज्वलित रखा।

श्री सूर्यदेव द्वारा इस अवसर पर प्रस्तुत निम्न प्र ताव सर्व सम्मति से पारित हुआ—

प्रस्ताव

आय समाज दीवान हाल में आयोजित यह विशाल सभा देश विदेश, विशेषत दक्षिणी अफ्रीका मे वैदिक सस्कृति, भारतीयता तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित महान् स्वतन्त्रता सेनानी स्व० भवानी दयाल सयासी की स्मृति को चिरस्थाई बनाने हेतु भारत सरकार से माग करती है कि उनकी जन्म शती के वर्ष मे –

(१ विशेष डाक टिकट जारी करे।

(२) उनके जीवन पर एक वृत्त-चित्र (डाकूमेंटरी फिल्म) बनाये।

(३) उनके द्वारा रचित समस्त साहित्य को भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित कराया जाये।

इस अवसर पर दक्षिणी अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री रामलखन ने भी बच्चो को देश व समाज की रक्षा की सेवा का प्रण लेने का आह्वान किया। इतिहास की धूल की परतो के नीचे छिपे ऐसे महापुरुषों का स्मरण कर इस आयोजन द्वारा एक उल्लेखनीय कार्य किया गया।

लाला दीवान चन्द का जीवन यज्ञमय था

इसी अवसर पर दानवीर स्व० लाला दीवान चन्द जी की १०८वीं जयन्ती के कार्यक्रम मे अपने विचार व्यक्त करते हुए एडवोकेट सोमनाथ मरवाह ने कहा कि लाला जी ने अपनी सात्विक कमाई से अतुल धन राशि आय समाज जैसी सस्था को दी जहा धन का दुरुपयोग नही होता है।

सुप्रसिद्ध कवि श्री उत्तमच द जी शरर ने कहा कि दानवीर लाला दीवान चन्द जी के यज्ञमय जीवन की सुगन्धि हमे आज भी मिल रही है। उन्होने समय की रेत पर अमिट चि ह्न छोडे हैं।

कार्यक्रम में डा० धमपाल एव आय अनाथालय पटौदी हाउस के प्रबन्धक ष० महेन्द्रकुमार शास्त्री ने कहा कि लाला जी के दान म चल रही सस्थाय व बनाये गये आर्य समाज मन्दिर आज भी उनका यशगान कर रह हैं।

इस समारोह मे दिल्ली का आय समाजो विभिन्न सस्थाओ के गणमान्य अधिकारियो के अतिरिक्त आय अनाथालय व बाल ग्रह के ब्रह्मचारी व स्कूला छात्र भी भारी सख्या में उपस्थित थ।

हिन्दी को रोटी से जोड़ने का अभियान चलायें

ज्ञानी जैलसिंह

नई दिल्ली १७ सितम्बर 'चुनाव के अवसर पर ऐसा जन अभियान चलाया जाना चाहिए जिससे ससद के अन्दर व बाहर हिन्दी एव भारतीय भाषाओं के प्रयोग करने वाले प्रत्याशी ही चुन कर आ सक। यदि कोई प्रत्याशी हिन्दी या भारतीय भाषाओ का विरोध कर निर्वाचित होना है, तभी यह माना जा सकता है कि लोग अग्रेजी चाहते है।' ये उद्‌गार पूव राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने १४ सितम्बर को फिक्की सभागार मे दिल्ला हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित एक समारोह मे व्यक्त किए।

ज्ञानी जैल सिंह ने आगे कहा कि रोटी से जुडे होने के कारण ही आज अग्रेजी का म त्व एव वचस्व है अत हिन्दी समर्थकों को भी एक होकर हिन्दी को रोटी से जोडने के लिए एक प्रबल अभियान चलाना चाहिए।

(शेष पृष्ठ ७ पर

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सहसम्पादक—विमलकान्त शर्मा

आर्य समाज और राजनीति

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

१५ अगस्त सन् १९४७ को भारत का विभाजन होने के पश्चात् समाजवादी दृष्टिकोण के लोग श्री जयप्रकाश नारायण सहित तथा साम्यवादी श्रीपाद अमृत डागे ए के गोपालन और नम्बूदरीपाद आदि अपनी विचारधारा के लोगो को लेकर काग्रेस से पृथक अपने दल बनाकर राजनीति करने लगे किन्तु आर्य समाजी जो काग्रेस द्वारा सचालित आन्दोलनो मे ८५ प्रतिशत तक जेलो मे जाते थे काग्रेस मे ही बने रहे। इनका कहना था कि आय समाज धार्मिक सस्था है, इसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नही ।

आर्य समाज के क्षेत्र मे स्व० महाशय कृष्ण का स्थान उस समय के आर्य समाज के विचारको मे प्रमुख था । वह चिन्तक ही नही लेखनी के भी धनी थे, उनके पास दैनिक समाचार पत्र भी थे किन्तु वह आर्य समाज के राजनीति मे भाग लेने के विचार के प्रमुख बिरोधी थे अतएव आर्यसमाज की राजनीति की बेल सिरे नही चढ पायी । श्री पडित प्रकाशवीर शास्त्री के राजनीति मे चले जाने तथा ससद का अतीव विचारक प्रगल्भ वक्ता होने और अपनी योग्यता के प्रभाव से आर्यसमाज के दृष्टिकोणके अनेक काय सरकारसे करा लेने के पश्चात् महाशय जी 'वीर अर्जुन' और 'प्रताप दैनिको मे अपने लेखो मे यह स्वीकार कियाकि यद्यपि मैं आर्यसमाजके राजनीतिमे भाग लेने के विरोधियो मे प्रमुख रहा हू और मैं यह स्वीकार करता हू कि मेरे ही कारण से आर्यसमाज राजनीति मे अभीतक भाग नहीं ले सका किन्तु प्रकाशवीर शास्त्री के ससद मे जाकर अकेला होते हुए भी हमारे अनेक काम हो जाने से मैं यह सोचने लगा हू यदि हमने सामूहिक रूप से राजनीति मे भाग लिया होता तो जिन समस्याओ पर हम लोग लिख और प्रस्ताव पास करके रह जाते हैं, अब तक उनमें से अनेक हल हो जाती किन्तु यह सब सोचते हुए भी मैं यह नही समझ पाया हू कि आयसमाज राजनीनि मे किस प्रकार से भाग ले ?

सम्भवत ४९ या ५० की बात है कि जब श्री पडित बुद्धदेव जी विद्यालकार ने 'भारतीय लोक सघ' नाम से आर्य सामाजिक दृष्टिकोण के राजनीतिक सगठन के लिये नियमावली का निर्माण किया और स्थान-स्थान पर तद्विषयक प्रचार भी किया ।

सन् १९५१ मे मेरठ में सावदेशिक आर्य सम्मेलन था । उस समारोह मे एक राजनीति सम्मेलन श्री पडित भगवद्दत की अध्यक्षता मे रखा गया । उस सम्मेलन से जो वातावरण बना, उसके परिणाम स्वरूप एक समिति आर्यसमाज का राजनीतिक दल बनाने विषयक निर्णय लेने के लिये बनायी गई । श्री बुद्ध देव जी न सघ पर ही माइक पकड कर कहा कि सावदेशिक की समिति क्या करेगी ? जब सावदेशक सम्मेलन उपस्थित है । आर्य समाज के राजनीति मे भाग लने के वराधया सवश्री घनश्यामसिंह गुप्ता, राजगुरु श्री पाडत धुरेन्द्र जी शास्त्री आदि ने कहा कि सावदेशिक क्योंकि आर्यों की शिरोमणि सभा है अतएव उसे स म ति ग ठित करने और उसकी सस्तुति पर विचार कर निर्णय करन का अधिकार है । प डित बुद्धदेव जी न प्रश्न किया कि सार्वदेशिक सभा वडी है या सावद शक सम्मलन यह नणय अभी कर लिया जाय । उनका कहना था कि यह सम्मलन केवल सावदेशिक सभा से ही बडा नही अपितु सावदेशिक जिस साधारण वृहदाधिवशन की अन्तरग है, जिसने इसे निर्वाचित किया है उससे भी बडा है क्याकि इस समय यहा बैठे आर्य जन ही उस प्रतिनिधियो के निर्वाचक हैं जो सावदाशक को बनाते है। सम्मेलन की सम्मति ली गयी और निश्चय हुआ कि सम्मेलन सावदेशिक सभा से बडा है । इसके परिणाम स्वरूप समिति को यह कार्य सौंपा गया कि वह आर्यसमाज का राजनीतिक दल बनाने अथवा आयसमाज के राजनीति मे सीधे आने के विषय म आय जनता की सम्मति जानकर सावदेशिक सभा को सूचित करे । बाद मे जब पडित बुद्धदेव जी विद्यालकार से वार्तालाप हुआ तो उन्होने बताया कि जहा-जहा जाकर मैं वातावरण बनाता हू मरे पीछे-पीछे सार्वदेशिक के चौधरी पहुच जात हैं और मेरे किये कराये पर मिटटी डाल आते हैं ।

सन १९५९ या ६० की बात है जब महाशय कृष्ण जी ने अपन दोनो दैनिका वीर अर्जुन हिन्दी और प्रताप उर्दू मे वह लेख लिखे थे, जिनकी चर्चा ऊपर की जा चुकी है, तभी से मैंने इस दिशा मे प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया था । नई दिल्ली मे सर्वश्री महाशय कृष्ण, प्रकाशवीर शास्त्री और महेन्द्रदेव शास्त्री व चमनलाल एम ए दरियागज, वासुदेव वर्मा पटेलनगर, सरदारीलाल वर्मा हनुमान रोड तथा भगवद्दत्त जी वैदिक अनुसधानकर्ता आदि, अमृतसर मे कैप्टन केशवचन्द्र से मेरा विस्तारपूर्वक वार्तालाप हुआ । कैप्टनजी उन दिनो पजाब जनसघ के प्रधान थे उन्होने ७ दिस० सन् १९६० को मुझसे स्पष्ट कह दिया था कि यदि आप कुछ बना सके तो मैं जनसघ छोड कर आपके साथ हो जाऊगा । दस मास लगातार प्रयत्न करने के पश्चात् 'भारतीय लोक समिति नाम से एक सगठन खडा किया गया । उसका ध्वज भी बना लिया गया था और दिसम्बर १९६१ मे उसका विधिवत् उदघाटन भी हो गया था । उसके प्रमुख अधिकारी अर्थात प्रधान वन्देमातरम् जी रामचन्द्र राव तथा महामन्त्री श्री रामगोपाल शालवाले (श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती) निर्वाचित हुए थे ।

वह दल किस प्रकार समाप्त हुआ, अब उस इतिहास मे आने से कोई लाभ नही । अपनी लम्बी बीमारी के पश्चात् जब महाशय कृष्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे थे तो उन्हाने वीर अर्जुन और 'प्रताप मे अनेक लेख लिखे, जो आर्य समाज और जनसघ आर्य समाज और भारतीय लोक समिति तथा भारतीय लोक समिति और जनसघ शीर्षक से थे । सम्भवत मेरी पत्रावली मे अब भी कही उनकी प्रतिया हैं । महाशय जी को यह इसलिए लिखन पडे थे, क्योकि जनसघ की पूरी शक्ति उन दिनो आर्य समाज और भारतीय लोक समिति का विरोध करन मे लगी हुई थी । इस सन्दर्भ मे मैंने महाशय जी से पत्र-व्यवहार किया । महाशय जी का अन्तिम पत्र मुझे जब मिला तो उसके ७-८ दिन बाद ही उनका देहावसान हो गया और वह अध्याय यहीं समाप्त हो गया ।

अब कुछ मास पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य समाज राजनीति मे भाग ले या नही, एतद्विषयक विचार के लिए एक समिति बनायी है । वैसे तो भारत म समितिया प्राय किसी समस्या को ठण्डे बस्ते मे डालने के लिए बनायी जाती है । ईश्वर कृपा करे कि इस समिति का ऐसा इतिहास न बने । परन्तु यह तो निश्चित है कि इस समय भी हमारे नेता सूझ-बूझ से काम नही लेते तो रहा-सहा आय समाज भी समाप्त हो जायगा, जिनकी समाप्ति के लिए विरोधी पूरी शक्ति के साथ प्रयत्नशील हैं ।

ध्यान रहे कि अशोक सिंहल का कभी ऋषिवर दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की ओर इगित कर ऋषिवर और आयसमाज पर आक्रमण करना तथा कभी ऋषिवर को मूर्तिपूजक और हीन व निकृष्ट वृत्ति का सिद्ध करने के लिये वक्तव्य देना उसी श्रृखला की कडिया है, जिसन भारतीय लोक समिति बनने पर उस समिति और आय समाज के विरुद्ध जनमत निर्माण के लिये प्रबल वेग से प्रचार प्रारम्भ किया था । यदि आय समाज का राजनीतिक दल होता तो यह लोग इस प्रकार के अनर्गल प्रलाप कदापि नही कर सकते थे । आर्य समाज का राजनीतिक दल बन जाने पर यह झुक झुक कर नमन करेंगे । ससार मे शक्ति ही की पूजा होती है । तब यह स्वय दक्षिण पथी मोर्चा बनाने के लिये प्रयत्नशील होगे हिन्दू महासभा तो तुरन्त तैयार हो जायगी । भारतीय लोक समिति के उदघाटन के समय भी उस समय के हिन्दू महासभा के प्रधान श्री देशपाडे ने वही जाकर सावजनिक रूपसे यह घोषणा की थी कि आज मेरे भाई का जन्म हुआ है । अच्छा होता यदि आर्यसमाज ने यह पग कुछ वष पहल उठा लिया होता किन्तु जहा आखे खुली, वही दिन निकला' के अनुसार अब भी यह बहुत अच्छा पग आर्य समाज ने उठाया है । अन्त मे उन्होने कहा था, मुझे अपने इस भाई के जन्म लेने पर हार्दिक प्रसन्नता हुई है । मैं आर्य समाज के इस पग का स्वागत करता हू ।

एक और बात यह है कि आर्य समाजो और सभाओ में जो झगडे हैं, वह उन लोगो द्वारा खडे किये जाते हैं, जो राजनीतिक महत्वाकाक्षी हैं और जो आर्य समाज के माध्यम से अपन लिये राजनीतिक क्षेत्र तैयार कर लेना चाहते हैं । आर्य समाज का अपना ही राजनीतिक दल होने से यह झगडे लगभग समाप्त ही हो जायेंगे अन्यथा आज जो कुछ जितना कुछ आर्य समाज है, उसे मिटाने को यही झगडे पर्याप्त हैं ।

अध्यक्ष—वैदिक सस्थान नजीबाबाद—उ०प्र०)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

गायत्री मन्त्र भारतीय संविधान की धर्म निरपेक्षता की भावना के विरुद्ध नहीं है



पिछले दिनों राष्ट्रीय पत्रों में यह समाचार प्रकाशित हुआ था कि गायत्री मंत्र संविधान की धर्मनिरपेक्षता की धारा के विरुद्ध नहीं है। मद्रास की हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति ने यह निर्णय लिया कि गायत्री मंत्र शब्दब्रह्म है और इसके द्वारा अभिनन्दन करना उचित है। उच्च न्यायालय के विद्वान न्यायाधीश ने कहा कि यह मंत्र ऋग्वेद से लिया गया है जो वैदिक ज्ञान की कुंजी है। वेद किसी एक देश अथवा सम्प्रदाय के नहीं हैं। वेद आदि ज्ञान है और सम्पूर्ण मानवता का दीपक है। विद्वान न्यायाधीश ने यह भी कहा कि गायत्री मंत्र केवल ब्राह्मणों के लिए है यह तर्क भी भ्रामक एवं मिथ्या है। ऐसा किसी भी धर्मशास्त्र में नहीं कहा गया है कि गायत्री मंत्र अथवा वेद केवल ब्राह्मणों की धरोहर है अथवा यह किसी जाति धर्म या सम्प्रदाय की विशेष सम्पत्ति है। उन्होंने अपने निर्णय को पुष्ट करते हुए यह भी कहा कि वेद सृष्टि के आरम्भ में ही हमें प्राप्त हुए हैं। किसी भी अन्य धर्म अथवा सम्प्रदाय का कोई भी ग्रन्थ वेद से पहला नहीं है।

द्रविड़ कड़गम ने मद्रास उच्च न्यायालय में अपना यह दावा पेश किया था कि सन् १९८३ में सार्वजनिक क्षेत्र की एक संस्था यूनाईटिड इन्शोरेन्स कम्पनी द्वारा दीपावली शुभकामना कार्ड में गायत्री मंत्र और उसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया था। वह भारत राष्ट्र की धर्म निरपेक्षता के विरुद्ध है। उन्होंने यह भी दावा किया था कि इस इंशोरेन्स कम्पनी ने सार्वजनिक धन का अपव्यय किया है जो इसके अधिकारियों से वसूल किया जाये।

मनीषी न्यायमूर्ति श्री डी राजू ने इस दावे को रद्द कर दिया और कहा कि इस प्रकार की याचिकायें प्रस्तुत करना वास्तव में भारत राष्ट्र की जनता की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना है। उन्होंने द्रविड़ कड़गम के महामन्त्री श्री के वी पुन्नपा के इस दावे को रद्दी की टोकरी में फैंकने लायक बताया।

उत्तर प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग का सराहनीय कार्य

उत्तर प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग ने पिछले दिनों अपने स्कूली पाठ्य-क्रम में कुछ परिवर्धन एवं संशोधन किये हैं। उन्होंने इतिहास की कक्षा-४ की पुस्तक में एक नया पाठ जोड़ दिया है। इस पाठ का मूल भाव है कि आर्य भारतवर्ष के आदि निवासी हैं। उन्होंने यह भी कहा कि सिन्धु घाटी सभ्यता और हड़प्पा सभ्यता एक ही हैं। उन्होंने इस सिद्धान्त का भी विरोध किया कि आर्यों ने द्रविड़ों पर आक्रमण किया था। इस पाठ में कहा गया है कि इस प्रकार के दुष्प्रचार से राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को चोट पहुंचती है। हड़प्पा सभ्यता वास्तव में आर्यों की ही सभ्यता है। उत्तर प्रदेश शासन को हमारा अभिनन्दन।

—डा धर्मपाल

गायत्री मन्त्र का उर्दू अनुवाद

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धी महि धियो योनः प्रचोदयात्

उर्दू के मशहूर शायर स्व० मुंशी त्रिलोक चन्द महरूम ने गायत्री का अनुवाद इस प्रकार किया है।

तूने हमें पैदा और परवरिश करता है तू।
तुझसे है कायम जिन्दगी दुख दर्द को हरता है तू॥
तेरा जलाले बरतरी है वसू जलवा किशा।
आलम के जर्रे जर्रे में राहत रसाँ आराम जा॥
तेरा ही करते ध्यान हम और मांगते यह दुआ।
प्रभु ओम हमारी अक्ल (बुद्धि) को नेकी के रास्ते पर चला॥

प्रेषक भगवान दास (वान प्रस्थ) सरोजिनी नगर नई दिल्ली

सत्यार्थप्रकाश का चमत्कार

मेरा जन्म मुसलमानों के उस समुदाय में हुआ था जो किसी समय बादशाही तलवार के जोर से या किसी पद की लोलुपता से मुसलमान बनाए गए थे। मेरे पिता जी खेतड़ी के बाशिन्दे थे जो सवत् १९६८ वि० में जयपुर राज्य के उत्तरी भाग शेखावाटी प्रान्त के पचेरी ग्राम में बस गए थे।

पचेरी के जागीरदार ठाकुर घोकल सिंह जी बड़े ही आततायी, अत्याचारी थे। जब मैं युवा हो गया तब मेरे मन पर घोकल सिंह जी के कुकृत्यों का बुरा असर दिखाई देने लगा। श्री ठाकुर नारायण सिंह जी ठा शैतान सिंह जी और ने उस आततायी के अत्याचारों को समाप्त करने का निश्चय कर लिया। घोकल सिंह की जीवन लीला खत्म होने के बाद मुझे आजन्म कारावास की सजा हुई।

राजनैतिक आन्दोलन के बन्दी श्री चौधरी घासी राम जी आर्य भजनीक और श्री प तारकेश्वर जी शर्मा, जो मेरे बाल्यकाल के सहपाठी थे वे भी उसी जेल में आ गए। मुझे उदास देख कर श्री घासीराम जी ने इसका कारण पूछा। मेरे द्वारा अशान्ति और उदासी का कारण बताए जाने पर उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने की प्रेरणा दी। मैंने सत्यार्थ प्रकाश को तन्मयता से पढ़ा। मैं अपने पाठकों को सत्य कहता हूं कि इस अमर ग्रन्थ को पढ़ने से मुझे आत्मशान्ति प्राप्त हुई।

मैंने सत्यार्थ प्रकाश के साथ उपनिषद, महाभारत, रामायण आदि ग्रन्थों को अच्छी तरह पढ़ा। इन सब ग्रन्थों के अध्ययन से मुझे बहुत लाभ हुआ और मेरा पूरा झुकाव सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रतीक आर्य समाज की ओर हो गया।

११-१२ वर्ष की जेल भोगकर मुक्त होने के पश्चात् सन् १९४७ में आर्य समाज शेखावटी में मैंने अपना शुद्धि संस्कार करवाया। सन् १९६२ में अजमेर में दयानन्द मेले में मैंने पण्डित ओमभक्त जी वानप्रस्थ से प्रचारक बनने की इच्छा प्रकट की जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया और अपने पास बुला लिया। मैं यहां साधनाश्रम में महर्षि स्वामी दयानन्द जी के वैदिक सिद्धान्तों का अध्ययन कर अपने शेष जीवन को इसी के प्रचार कार्य में लगाने की प्रबल इच्छा रखता हूं। मुझे यज्ञोपवीत देकर मेरा नाम सुबालाल से सुखदेव रखा है। मुझे आशा है कि यदि मैं कुछ समय टिका रहा तो मेरी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी।

(सार्वदेशिक २१ जून, १९९१ में छपे डा० भवानी लाल भारतीय के लेख का संक्षिप्त रूप)

—राम पथिक मिश्र,
मदनानन्द आर्य वानप्रस्थाश्रम, मुजफ्फरनगर

सम्पादक के नाम पत्र

विशेषांक सराहनीय रहे

आर्य सन्देश के दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक वृत्तान्त विशेषांक तथा श्रावणी एवं पण्डित चमूपति संयुक्तांक प्राप्त हुए। वस्तुतः ये दोनों विशेषांक काफी सुन्दर एवं आकर्षक थे। पहले विशेषांक में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के बारे में काफी जानकारी प्राप्त हुई। दूसरे विशेषांक में श्रावणी पर्व एवं पण्डित चमूपति जी के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। इस पत्रिका के विशेषांकों की बड़ी धूम रहती है। ये दोनों भी अपनी उसी शान के अनुरूप निकले हैं। दोनों विशेषांकों की सफलता के लिए बधाई।

रामकुमार आर्य
वाटर सप्लाई वर्क्स जोन्ती चौहान (सोनीपत)

श्रद्धेय सम्पादक जी नमस्ते।

आज श्रावणी व चमूपति जी का विशेषांक प्राप्त हुआ। इसमें लेख जीवन वृत्त इस तरह से लेखों का समावेश किया गया है कि इसे समाप्त करके ही छोड़ा।

सोहनलाल शारदा
शाहपुरा भीलवाड़ा, राजस्थान

सम्पादक जी सप्रेम नमस्ते।

विगत कुछ वर्षों में आपने अनेक विषयों एवं आर्य महापुरुषों के नाम से जो विशेषांक प्रकाशित किए हैं इनसे आर्य जगत में नई स्फूर्ति पैदा हुई है। आप का यह कार्य सराहनीय है। अन्य पत्र-पत्रिकायें इससे प्रेरणा ग्रहण करेंगी। आशा है सभी आर्य विद्वानों को उनके जन्म दिवस आदि अवसरों पर स्मरण किया जाता रहेगा।

मनमोहन कुमार आर्य
१९६१ चुक्खूवाला, देहरादून

देश विदेश मे—

वैदिक धर्म तथा हिन्दी की पताका फहराने वाले : स्वामी भवानी दयाल संयासी

—मूलचन्द गुप्त

बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध मे जिन महान आर्य सपूतो ने भारतवर्ष तथा विदेशो मे वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार मे अद्वितीय योगदान किया है, उनमे स्व श्री स्वामी भवानी दयाल सयासी का विशिष्ट स्थान है। यद्यपि उनका जन्म प्रवासी भारतीय के रूप मे भारतवर्ष के बाहर दक्षिण अफ्रीका मे हुआ परन्तु वे जीवन-पयन्त भारत व विदेशो मे रह रहे भारत वासियो की सेवा उनमें वैदिक धर्म और भारतीय सस्कृति की ज्योति जलाये रखने तथा हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिये समर्पित रहे।

श्री भवानीदयाल सयासी के पूर्वज यद्यपि बिहार के शाहाबाद जिले के निवासी थे, परन्तु आपका जन्म दक्षिण अफ्रीका के 'जोहान्सबर्ग" नामक नगर में १० सितम्बर सन् १८९२ को हुआ था। आपके पिता बाबू जयराम सिंह और माता मोहिनी देवी गिरमिटिया कुलियो के रूप मे शर्तवादी कुली प्रथा के शिकार होकर दक्षिण अफ्रीका चले गए थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा जोहान्सबर्ग में 'सैण्ट सिप्रियन" तथा 'वेस्लन मेथोडिस्टी" नामक स्कूलो में अग्रेजी माध्यम से हुई थी और हिन्दी का ज्ञान आपने आत्माराम जी गुजराती की पाठशाला मे प्राप्त किया था। आपने कही से भी किसी स्कूल की पढाई का प्रमाण-पत्र प्राप्त नही किया था और सारी योग्यता अपने स्वाध्याय के बल पर ही पायी थी। सन् १८९९ में जब आपकी माताजी का देहावसान हो गया तो सन् १९०४ में आप अपने पिता जी के साथ पहले-पहल भारत पधारे थे।

भारत आने पर आपके पिता जी ने अपने ग्राम "बहुआरा" के साथ-साथ पास के "इस्माइलपुर" तथा "तेंदुनी" नामक गांवो का कुछ भाग भी खरीद लिया था। आपने हिन्दी का अच्छा अभ्यास किया और वहा एक "राष्ट्रीय पाठशाला" खोलकर वहां के बच्चों को नि शुल्क शिक्षा देने लगे।

इसी बीच सन् १९०८ मे आपका विवाह शाहाबाद जिले के "सखरा" गाव की एक कन्या जगरानी देवी के साथ हो गया। वे सर्वथा निरक्षर थीं किन्तु भवानीदयाल जी ने उन्हे विधिवत् पढाकर इतना सुयोग्य बना दिया कि वे आपके भावी जीवन में बहुत सहायक सिद्ध हुई। सन् १९०९ तक आप पूर्णत आर्यसमाज के प्रभाव मे आ गए और अपने ग्राम मे "वैदिक, पाठशाला' खोलने के अतिरिक्त 'सासाराम" शहर में भी "आर्यसमाज" की स्थापना करने मे पूर्ण सहयोग दिया। धीरे-धीरे आप आर्यसमाज की गतिविधियो में इतने तल्लीन हो गए कि सन् १९११ मे आपने "बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा" का अवैतनिक उपदेशक पद स्वीकार कर लिया। साथ ही सभा की ओर से प्रकाशित होने वाले 'आर्यावर्त' नामक मासिक पत्र के भी आप सहकारी सम्पादक हो गए।

जून १९११ मे आपके पिता जी का देहान्त हो जाने के उपरान्त आपके चित्त मे विरक्ति उत्पन्न हो गई। विधवा विमाता को सारी सम्पत्ति सौंप कर आप अपनी धर्मपत्नी श्रीमती जगरानी देवी और अनुज देवीदयाल को साथ लेकर दिसम्बर सन् १९१२ में फिर दक्षिण अफ्रीका चले गए।

१९१३ मे स्वामीजी ने दक्षिण अफ्रीका मे गाधी जी के सत्याग्रह में भाग लेकर सपत्नीक जेल-जीवन व्यतीत किया और वहा मे सन् १९१४ मे महात्मा गाधी ने 'इण्डियन ओपीनियन" नामक जो अग्रेजी पत्र प्रकाशित किया था उसके हिन्दी सस्करण का सम्पादन आपने ही किया था। महात्मा जी के दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस लौटने के बाद सन् १९१५ मे आपने वहा हिन्दी-प्रचार प्रसार का बीडा उठाया और इसके लिए आपने जर्मिस्टन, न्यू कासल, डेन हाउसर, हार्टिग स्पुट, ग्लको, वर्न साइड, बिनेन, लेडी स्मिथ और जेकब्स आदि नगरो में "हिन्दी प्रचारिणी सभाए' और हिन्दी रात्रि पाठशालाए स्थापित की। डरबन नगर के निकट क्लेर इस्टेट नामक स्थान पर आपने एक 'हिन्दी आश्रम" भी बनाया, जिसमे "हिन्दी विद्यालय" तथा 'हिन्दी पुस्तकालय" चलता था। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती जगरानी देवी उस विद्यालय की "अधिष्ठात्री" थी। आपने वहा दक्षिण अफ्रीका हिन्दी साहित्य सम्मेलन" की नीव भी डाली थी जिसके कई अधिवेशन बडे समारोहपूर्वक हुए थे। उसका पहला अधिवेशन "लेडी स्मिथ" मे और दूसरा 'मेरित्सबर्ग" में हुआ था।

हिन्दी-प्रचार का यह कार्य चल ही रहा था कि उन्ही दिनो आपने 'धर्मवीर" नामक एक साप्ताहिक पत्र भी प्रारम्भ किया था जो अग्रेजी तथा हिन्दी भाषाओ में प्रकाशित होता था। सन् १९२२ में "हिन्दी" नामक एक और पत्र आपने निकाला। यह भी दोनों भाषाओ में छपता था। इसी समय आपने डरबन के निकट 'जेकब्स' नामक स्थान मे अपनी पत्नी के नाम पर "जगरानी प्रेस" खोला। "हिन्दी" का मुद्रण इसी प्रेस मे होता था। यह पत्रिका विश्व-भर के प्रवासी भारतीयो मे बहुत लोकप्रिय हुई थी। इसके कई विशेषाक इतने सुन्दर निकले थे कि वे हिन्दी पत्र कारिता के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेंगे। यहां यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि 'हिन्दी" के प्रकाशन से एक मास पूर्व ही आपकी धमपत्नी श्रीमती जगरानी देवी का देहान्त हो गया था।

ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्रि) २ फरवरी, १९२५ के दिन डरबन में जब आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण अफ्रीका की स्थापना हुई जिसका आपको प्रथम प्रधान बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सन् १९२५ के अन्त में जब दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतीयो पर विपत्ति आई तो आप "हिन्दी" का प्रकाशन स्थगित करके भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड रीडिंग से मिलने और श्रीमती सरोजिनी नायडू की अध्यक्षता में हुई काग्रेस के कानपुर—अधिवेशन मे उनकी कष्टकथा सुनने के लिए भारत आए थे। उसी वर्ष भारतवर्ष में आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की जन्म शताब्दी मनाने के लिए जो समिति बनाई गई थी उसके अध्यक्ष आप ही बनाए गये थे। इसी अवसर पर "नेटाल आर्य प्रतिनिधि सभा" की भी स्थापना हुई और आपको उसका भी प्रधान बनाया गया। अपनी इस ऐतिहासिक यात्रा की स्मृति मे आपने अपने जन्म ग्राम मे "प्रवासी भवन" भी बनवाया था।

आपने सन् १९२७ की रामनवमी को सयास ग्रहण किया किन्तु अपना नाम न बदलकर उसके अन्त मे सयासी शब्द ही जोड लिया था। तत्पश्चात् आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली की ओर से वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए दक्षिण अफ्रीका लौट गए और दो वर्ष तक वहा प्रचार-कार्य करते रहे।

सन् १९२९ मे आप फिर भारत आ गए और सन् १९३० मे जब महात्मा गाधी ने डाडी सत्याग्रह' प्रारम्भ किया तब आप भी मार्च १९३० में आरा स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिए गए। आप पर बक्सर डुमरांव और जगदीशपुर आदि स्थानो में जोशीले भाषण देने पर "राजद्रोह" का अभियोग चलाया गया। आप ढाई वर्ष तक हजारीबाग की सन्ट्रल जेल में रहे। आपने वहां पर रहते हुए भी "कारागार' नाम से एक हस्तलिखित मासिक पत्र सम्पादित किया था। इसका "सत्याग्रह विशेषाक" अत्यन्त उल्लेखनीय है। सन् १९३० में आप गुरुकुल वृन्दावन में हुई "प्रवासी परिषद्" के अध्यक्ष मनोनीत हुए थे। उसी वर्ष आपको शाहाबाद जिला काग्रेस कमेटी का अध्यक्ष भी चुना गया था। आपने सन् १९३१ में देवघर (बिहार) मे सम्पन्न हुए 'बिहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन" के दसवे अधिवेशन की अध्यक्षता की थी और उसके बाद आप "अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन" के कलकत्ता अधिवेशन में हुए सम्पादक सम्मेलन के अध्यक्ष बनाए गए थे। उन दिनों आप पटना से प्रकाशित होने वाले "बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा" के पत्र आर्यावर्त" साप्ताहिक का भी सम्पादन करते थे।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

(पृष्ठ ४ का शेष)

सन् १९४४ में "नागरी प्रचारिणी सभा" काशी के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का अध्यक्ष भी आपको चुना गया था। इसके उपरांत आप स्थायी रूप से महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण भूमि अजमेर में रहने लगे थे और "प्रवासी भवन" बनाकर एक "प्रवासी" नामक पत्र भी वहां से निकालने लगे थे। आपके द्वारा लिखित पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं—"दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास", "दक्षिण अफ्रीका के मेरे अनुभव", "सत्य ग्रही महात्मा गांधी", "हमारी कारावास कहानी", "ट्रान्सवाल में भारतवासी", "नेटाली हिन्दू", "शिक्षित और किसान", "वैदिक धर्म और आर्य सभ्यता", "वैदिक प्रार्थना", "भजन प्रकाश" "प्रवासी की आत्म-कथा", "वर्ण व्यवस्था और मरण-व्यवस्था", "बोअर-युद्ध का इतिहास," "स्वामी शंकरानन्द की वृहत् जीवनी" तथा "सत्याग्रह का इतिहास"। इन पुस्तकों के अतिरिक्त आपकी "दक्षिण अफ्रीका में आर्य सन्यासी" नामक एक अप्रकाशित रचना भी है। इनके अतिरिक्त आपके द्वारा लिखित अनेक लेख तथा भाषण विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में बिखरे पड़े हैं। यदि इनका ही संकलन प्रकाशित कर दिया जाय तो एक महा ग्रंथ हो जायेगा। आपकी हिन्दी सेवाओं को दृष्टि में रखकर अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने आपको "साहित्य वाचस्पति" की सम्मानित उपाधि भी प्रदान की थी।

विदेश में निवास के कारण स्वामी जी को अंग्रेजी में लेखन तथा धारा-प्रवाह भाषण का भी अभ्यास था, परन्तु भारतवासियों से हिन्दी में बोलते थे और उन्हें भी हिन्दी में बोलने को विवश करते थे। दक्षिण अफ्रीका में भारत सरकार के तत्कालीन प्रतिनिधि श्री निवास शास्त्री ने जब अंग्रेजी को प्रवासी भारतीयों की शिक्षा का माध्यम रखने के पक्ष में अपनी रिपोर्ट दी तो स्वामी जी ने उसका डट कर विरोध किया। भारतीय वेशभूषा के भी आप बड़े आग्रही थे।

स्व स्वामी जी की स्मृति में डरबन म्यूनिसिपिल कारपोरेशन ने उनके निवास स्थान वाली सड़क का नाम "दयाल रोड" रखा हुआ है।

'वैदिक धर्म' भारतीय संस्कृति तथा हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिये स्व श्री स्वामी भवानी दयाल सन्यासी ने भारत और भारत से बाहर दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारतीयों के लिए जो कार्य किया, वह सदैव स्मरणीय रहेगा।

जन्मशती के अवसर पर स्वामी जी की स्मृति में शतशत नमन। आपका परलोक-वास सन् १९५१ में हुआ था।

प्रधान, आर्यसमाज, दीवान हाल दिल्ली द्वारा प्रसारित

आगामी कार्यक्रम

आर्य समाज नजफगढ़

आर्य समाज नजफगढ का ५९वां वार्षिकोत्सव ९ ११ अक्तूबर तक मनाया जा रहा है। तीनों दिन नगर शोभा यात्रा के अतिरिक्त अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। सभी सादर आमन्त्रित हैं।

प्रधान—आर्य समाज नजफगढ

महर्षि दयानन्द स्मृति सम्मेलन

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर द्वारा २९ सितम्बर से १० अक्तूबर तक एक अथर्ववेद परायण महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर ७ से १० अक्तूबर तक एक विशाल सम्मेलन भी किया जायेगा। १३ दिवसीय कार्यक्रम में अनेक प्रतिष्ठित साधु सन्त, विद्वान व आर्य नेता भाग ले रहे हैं। ज्ञात हो कि स्मृति भवन वह पावन पुण्य स्थली है जहां महर्षि दयानन्द ने जीवन के अन्तिम साढे चार मास व्यतीत किए थे।

आर्य समाज न्यू मोती नगर का रजत जयन्ती समारोह

आर्य समाज न्यू मोतीनगर में ९ से १८ अक्तूबर तक रजत जयन्ती समारोह धूमधाम से मनाया जा रहा है। ११ अक्तूबर को दोपहर २ बजे एक विशाल शोभा यात्रा आयोजित की जा रही है। इस दिन के समारोह में यजुर्वेद महायज्ञ, वेद कथा, आर्य महासम्मेलन, आर्य वीर सम्मेलन, वैदिक सिद्धान्त रक्षा सम्मेलन, आदि के शानदार कार्यक्रम होंगे। सभी बन्धु सादर आमन्त्रित हैं।

प्रधान—तीर्थराम आर्य

वेद ज्ञान के अगाध भण्डार हैं

दिल्ली १२ सितम्बर। वेद ज्ञान का अगाध भण्डार होने के साथ-साथ एक उत्कृष्ट काव्य भी हैं जिसमें देश और काल की सीमाओं से परे मानव मात्र को प्रेरित करने की सामर्थ्य है। सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् एवं जम्मू विश्वविद्यालय मे संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० रामप्रताप वेदालंकार ने ये शब्द दिल्ली विश्वविद्यालय में एक विद्वत् सभा मे व्यक्त किए।

डा० प्रह्लाद स्मारक समिति के तत्वावधान मे 'वेदों मे काव्य तत्व" विषय पर व्याख्यान हुए उन्होंने बताया कि वेद रस व अलंकार सहित काव्य के सभी श्रेष्ठ तत्वों मे परिपूर्ण हैं।

मुख्य अतिथि डा० वाचस्पति उपाध्याय ने कहा कि डा प्रह्लाद स्मारक समिति द्वारा प्रति वर्ष वैदिक विषय पर व्याख्यान का आयोजन वेदों के यथार्थ स्वरूप को समझने मे सहायक है। सभा के अध्यक्ष प्रो० केवल कृष्ण मित्तल ने कहा कि वेद का ज्ञान ही वह स्रोत है जिससे समग्र भौतिक, आध्यात्मिक व दार्शनिक ज्ञान की धारा प्रवाहित हुई है।

पूर्व महानगर पार्षद डा० प्रशान्त वेदालंकार ने दक्षिण एशियाई देशों की यात्रा के अनुभव सुनाते हुए बताया कि बाली तथा थाईलैंड मे वेदों के प्रति अगाध श्रद्धा है सिंगापुर के मन्दिरों में नित्य वेद मन्त्रोच्चारण होता है।

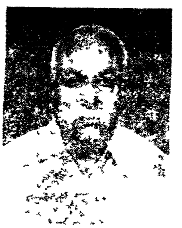
इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय की वेद विकल्प लेने वाली एम०ए० की चार छात्राओं को छात्रवृत्ति भी प्रदान की गई।

समिति के महामन्त्री डा० कृष्णलाल एवं अध्यक्ष डा० सत्यदेव चौधरी ने भी विचार व्यक्त किए।

दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल



श्री रामशरण आर्य, महामन्त्री



श्री हरबन्स कोहली, प्रधान

दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल का चुनाव दिनांक ६-९-९२ को लाला इन्द्रनारायण जी की अध्यक्षता मे आर्य समाज आर० के० पुरम सैक्टर ६ में सम्पन्न हुआ जिसमें संरक्षक श्री लाला इन्द्रनारायण श्री कृष्णलाल सूरी तथा प० रामकृष्ण, प्रधान—श्री हरबन्सलाल कोहली, उप प्रधान—लखीराम कटारिया, श्रीमती सुशीला त्यागी श्री भूपसिंह गुप्ता महामन्त्री—श्री रामशरणदास आर्य, मन्त्री—श्री गणेशदास ग्रोवर श्री खैरायतीलाल, श्री सुरेन्द्र कुमार शास्त्री कोषाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्रनाथ सहगल तथा लेखा निरीक्षक—श्री देशराज जुनेजा सब सम्मति से निर्वाचित हुए।

शोक प्रस्ताव

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी आर्य समाज के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, लेखक श्री सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार जी के अकस्मात देहावसान पर गहरा दुःख एवं शोक व्यक्त करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके वियोग में शोक संतप्त दुःखी परिवार एवं सगे सम्बन्धियों को इस दारुण दुःख को सहने की शक्ति तथा सामर्थ्य प्रदान करें।

आदर्श-त्रैतवाद-८

—राजसिंह भल्ला

ईश्वर सबका स्वामी है—

पुरुष एवेद सव यद भूत यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति ॥ श्वेता ३।१५

जो कुछ भूतकाल मे था और जो भी भविष्य मे होगा वह यह सब पुरुष है—पुरुष आश्रित ही हैं ईश्वर के सहारे ही हैं। जो प्राणी जगत् अन्न से जीता है उसका और मोक्ष का वह स्वामी है। वह ईश्वर चेतन और जड जगत का स्वामी है।

सर्व शक्तिमान् सर्वज्ञ ईश्वर

सर्वत पाणिपाद तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्। सवत श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ श्वेता० ३।१६

वह परम पुरुष सब ओर से हाथ पाँव वाला है सब ओर से आख सिर मुख वाला है और सब ओर से कान वाला है। क्रिया ज्ञान में सर्वशक्तिमान् है सवज्ञ है। वह लोक मे सारे जगत को अपनी शक्ति से घेर कर रहा है।

परम पुरुष

सर्वेन्द्रियगुणाभास सवन्द्रिय विवर्जितम्। सवस्य प्रभुमीशान सर्वस्य शरण बृहत् ॥ श्वेता ३।१७

सब इन्द्रियों के सामर्थ्य युक्त पर तु सब इन्द्रियों से रहित सारे ससार के प्रभु सबके स्वामी और सबके महान् शरण आश्रय भगवान् को परम पुरुष कहा है।

महान् पुरुष ईश्वर

अपाणिपादो जवनो गृहीता पश्यत्यचक्षु स शृणोत्यकर्णः। स वेत्ति वेद्य न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्य पुरुष महान्तम् ॥ श्वेता० ३।१९

वह परम पुरुष हाथ पैर रहित है। स्व सकल्प से वेगवान और ग्रहण करने वाला है। वह नेत्र रहित है परन्तु सबको देखता है। वह कर्ण रहित है परन्तु सब सुनता है। वह सारे ज्ञातव्य को जानता है—परन्तु पूर्णतया उसका ज्ञाता कोई नही है। उसी भगवान् को सन्त जन मुख्य महान् और पुरुष कहते है।

व्यापक अनेक नाम

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद् वायुस्तदु चन्द्रमा। तदेव शुक्र तद ब्रह्म तदापस्तत्प्रजापति ॥ श्वेता ४।२

वह ईश्वर ही वेदो मे अग्नि है वह आदित्य है वह वायु है, और वह चन्द्रमा है वह ही शुक्र है वह ब्रह्म है, वह जल है और वह ही प्रजापति है। इन अग्नि आदि नामो से उस एक ही ईश्वर को वेदो मे गाया गया है।

भगवान् निर्लेप है

छन्दासि यज्ञा क्रतवो व्रतानि भूत भव्य यच्च वेदा वदन्ति। अस्मान्मायी सृजते विश्वमेतत्तस्मिश्चान्यो मायया सनिरुद्ध ॥ श्वेता० ४।९

छन्द यज्ञ इष्टिया व्रत जो हो चुका और जो होगा वेद कहते हैं इस सब को और हम को माया वाला भगवान् रचता है, प्रकट करता है। उसमें सृष्टि मे माया से दूसरा भगवान के अलावा जीवात्मा रुका हुआ—बन्धा हुआ है। माया से—प्रकृति से जीवात्मा हो बन्धा हुआ है। भगवान् सदा निर्लेप है।

शान्ति दाता ईश्वर

यो योनि योनिमधि तिष्ठत्येको, यस्मिन्निद स च विचैति सर्वम्। तमीशान वरद देवमीड्य निचाय्येमा शान्तिमत्यन्तमेति ॥ श्वेता० ४।११

जो एक अद्वितीय ईश्वर योनि है और योनियो के—प्रत्येक कोक व कारण को अधिकार में रख रहा है और जिस में यह सारा जगत विकास को पाता है तथा प्रलय हो ज ता है। उस स्तुति योग्य, वर देने वाले ईश्वर को जान कर उपासक इस अत्यन्त शान्ति को पाता है।

न्यायकारी सर्वज्ञ उत्पत्ति व प्रलयकर्ता

यो देवाना प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपोरुद्रो महर्षि। हिरण्यगर्भं पश्यत जायमान स नो बुद्धया शुभया सयुनक्तु। श्वेता ४।१२

जो भगवान देवों का उत्पत्ति और प्रलयकर्ता है। विश्व का ईश्वर है। न्यायकर्ता है। और सवज्ञ है। हे उपासको! उस अभिव्यक्त प्रकाशमय को देखो उस भगवान को ध्यान मे देखो? उसका चिन्तन करो—उसका साक्षात्कार करों? वह परमेश्वर हम को सद् बुद्धि से सयुक्त करे। वह भगवान हमें उत्तम बुद्धि प्रदान करे।

निर्विकल्प और प्रकाश स्वरूप

यदाऽतमस्तन्न दिवा न रात्रिनसन्न चासच्छिव एव केवल। तदक्षर तत्सवितुर्वरेण्य प्रज्ञा च तस्मात्प्रसृता पुराणी। श्वेता० ४।१८

परमात्मा के पद का—धाम का वर्णन करता हुआ ऋषि कहता है जिस पद में अन्धेरा नही है। वह प्रकाशमय लोक न दिन है न रात्रि है। न व्यक्त है न अव्यक्त है उसमे केवल निर्विकल्प परमेश्वर ही प्रकाशमान् है। वह ही उस सविता का आदित्य वर्ण भगवान् का वरणीय अविनाशी पद है। उस से ही सनातन प्रज्ञा विस्तृत हुई है उसी धाम से सनातन ज्ञान का प्रकाश आता है।

निराकार

नैनमूर्ध्वं न तिर्यञ्च न मध्ये परिजग्रभत्। न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यश ॥ श्वेता० ४।१९

इस आदित्य वर्ण भगवान को कोई न ऊपर से, न तिरछे और न मध्य में पकड सकता है। क्योंकि जिसका प्रसिद्ध और महत् यश है उसकी प्रतिमा मूर्ति नही है। अनन्त कीर्तिमान भगवान् अमूर्त है। निराकार है। इस कारण इन्द्रियों से ग्रहण नही किया जा सकता।

अधिपति आश्रय शासक

यो देवानामधिपो यस्मिल्लोका अधिश्रिता। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पद कस्मै देवाय हविषा विधमे ॥ श्वेता ४।१३

जो देवो का अधिपति है जिसमें लोक आश्रित हैं और जो इस दुपाये और चौपाये जगत् का शासनकर्ता है—ईश्वर है उस सुख स्वरूप भगवान् के लिए भक्ति कर। ऐसे ईश्वर को पूजा अराधना करें।

सूक्ष्मातिसूक्ष्म बीज रूप

सूक्ष्ममातिसूक्ष्म कलिलस्य मध्ये विश्वस्य स्रष्टारमनेकरूप। विश्वस्यैक परिवेष्टितार ज्ञात्वा शिव शान्तिमत्यन्तमेति ॥ श्वेता० ४।१४

प्रलय काल की द्रवी अवस्था का नाम यहां कलिल कहा गया है। कलिल के बीच सूक्ष्म से अति सूक्ष्म विश्व के रचियता अनेक सामर्थ्ययुक्त विश्व के एक अद्वितीय घेरने वाले शिव को परम कल्याण रूप भगवान् को जान कर उपासक अत्यन्त परम शान्ति को प्राप्त करता है।

अनन्त अन्तर्यामी

य एव काले भुवनस्य गोप्ता, विश्वाधिप सर्वभूतेषु गूढम्। यस्मिन्युक्ता ब्रह्मर्षयो देवताश्च तमेव ज्ञात्वा मृत्युपाशाञ्छिनत्ति ॥ श्वेता० ४।१५

जो ही भगवान् समय में सबकाल में जगत् का रक्षक है। विश्व का ईश्वर है। सर्व प्राणियों में गूढ है अन्तर्यामी रूप मे विद्यमान् है। और जिसमें ब्रह्मर्षि जन तथा देवता प्रेम योग से युक्त है उसको ही जान कर उपासक मृत्यु के बन्धनों को छेदन कर देता है।

(पृष्ठ १ का शेष)

पूर्व राष्ट्रपति ने कहा कि विश्व मे भारत के सिवाय कोई ऐसा देश नही जहा लोग व सरकार अपनी भाषा पर गर्व न करते हों। उन्होने खेद व्यक्त करते हुए कहा कि प्रारम्भ में केवल १५ वष के लिए ही अग्रेजी को सहयोगी भाषा के रूप मे रखा गया था परन्तु उसने राजभाषा हिन्दी को बेघर कर दिया है अत हिन्दी को सम्मान दिलाने के लिए सघष की आवश्यकता है।

ज्ञानी जैल सिंह ने यह भी कहा कि हिन्दी के साथ दुर्भावना व भेदभाव के लिए चुन कर आने वाले सासद एव देश को चलाने वाली अफसरशाही ही जिम्मेदार है।

समारोह में अनेक गणमान्य व्यक्तियो के अतिरिक्त हरियाणा के पूव मुख्यमन्त्री श्री बनारसीदास अग्रवाल सांसद ताराचन्द खडेलवाल ने भी भाग लिया। ज्ञानी जी ने डा० सरोजनी प्रीतम श्री बच्चू प्रसाद सिंहा डा० शकरदेव अवतरे डा० आनन्द स्वरूप पाठक को हिन्दी की उल्लेखनीय सेवाओं के लिए सम्मानित किया।

हिन्दी पूरे राष्ट्र की भाषा है

ससदीय हिन्दी परिषद् की डा० सरोजिनी महिषी ने कहा कि आज भारत मे अग्रेजी बोलने वालों की सख्या केवल दो प्रतिशत है और हिन्दी उत्तर भारत की ही नही अपितु पूरे राष्ट्र की भाषा है। हिन्दी मे वे सभी गुण हैं जो एक राष्ट्र भाषा में होने चाहिए। डा० महिषि ससद के केन्द्रीय कक्ष मे ससदीय हिन्दी परिषद् नागरी प्रचारिणी सभा एव अन्य सगठनों द्वारा आयोजित राष्ट्रभाषा दिवस समारोह मे बोल रही थी।

१२वीं कक्षा तक हिन्दी अनिवार्य हो

दिल्ली सस्कृत शिक्षक सघ के अध्यक्ष श्री महेश चन्द्र ने मानव ससाधन मन्त्रालय एव दिल्ली प्रशासन से यह माग की है कि १२वी कक्षा तक हिन्दी शिक्षण अनिवाय किया जाए तथा १०वी तक त्रिभाषी फामूला भी लागू किया जाए।

ससद् की कार्यवाही हिन्दी में चलायें

युवा परिषद् दिल्ली के महामन्त्री श्री प्रवीन खडेलवाल ने ज्ञापन भेज कर लोक सभाध्यक्ष एव राज्यसभा सभापति से ससद की कायवाही हिन्दी मे चलाने की माग की।

अखिल भारतीय स्वतन्त्र पत्रकार व लेखक सघ नेशनल फोरम आफ एजूकेटस आदि अनेक सस्थाओं ने भी विशेष कार्यक्रम आयोजित किए।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R.N. No 32387/77 Posted at N D P S O o‹ 24 25 9 1992 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 135/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल ११०२४ ९२ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसैन्स नं० यू (सी०) १३९/९२

विश्व हिन्दी कम्प्यूटरीकृत सूचना केन्द्र

उत्तर प्रदेश हिन्दा सस्थान द्वारा एक कम्प्यूटर कृत विश्व ह सूच केन्द्र शुरू किया जा रहा है वश्व मे कही भी उपलब्ध हिन्द साहित्य पुस्तकों, पत्रिकाओ लिपि एव हिन्दा प्रकाशन के बारे मे कम्प्यूटर द्वारा जानकारी देने की एक-एक योजना बनाई गई है। प्रथम चरण में पुस्तको के शीपक लेखको के नाम, प्रकाशन वष आदि की जानकारी कम्प्यूटरीकृत की जायगी। दूसर चरण मे दुनिया के किसी भी पुस्तकालय में प्राप्य पुस्तको की माइक्रो फिल्मे तयार की जायेंगी। इस वर्ष इस काय पर दस लाख रुपये व्यय किए जायगे।

हिन्दी आज नहीं तो कभी नहीं

(गोपाल प्रसाद व्यास)

लखनऊ व्यंग्यकार श्री गोपाल प्रसाद व्यास ने कहा कि 'भारत छोडो के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में 'हिन्द आज नही तो कभी नही जैसे नारों पर आन्दोलन चलाने की जरूरत है क्योकि अब हिन्दी के लिए कुछ करने का समय आ गया है। श्री व्यास उत्तर प्रदेश हिन्दी सस्थान द्वारा १४ सितम्बर को आयोजित सम्मान ग्रहण समारोह में बोल रहे थे।

श्री व्यास ने उत्तर प्रदेश सरकार से यह भी अनुरोध किया कि वह हिन्दी भाषी राज्यों के मुख्य मन्त्रियों, भाषाविदो, शिक्षा मन्त्रियों का एक सम्मेलन बुला कर एक समान भाषा, वतनी प्रशासनिक शब्दावली तैयार करन के लिए पहल करे।

हिन्दी से विशेष चिढ़

नई दिल्ली १५ सितम्बर। नई दिल्ली स्थित पाकिस्तान दूतावास के अधिकारियो को लगता है कि हिन्दी से विशेष चिढ है। १४ सितम्बर को शिरोमणि अकाली दल मास्टर तारासिह) न पाक दूतावास के बाहर प्रदशन करने के बा जब तृतीय सचिव को प्रधान मन्त्री मियाँ नवाज शरीफ के नाम हिन्दी में लिखा एक ज्ञापन दना चाहा तो उन्होंने उसे यह कह कर लेने से इनकार कर दिया कि ज्ञापन अग्रेजी में दिया जाये क्योंकि हिन्दी न आपकी भाषा है और न ही मेरी। सिख प्रतिनिधि मण्डल का प्रतिनिधित्व जत्थेदार रछपाल सिह कर रहे थे।

वैदिक गणित का चमत्कार

नई दिल्ली १३ सितम्बर स्व० जगदगुरु भारती कृष्णतीर्थ ने आठ वष के परिश्रम स वैदिक गणित' नामक एक अद्भुत पुस्तक लिखी है। आसानी से समझ आने एव याद होने वाले इसमे १६ सूत्र हैं जिन में १२० शब्द हैं और उनका प्रयोग भी सरल है।

यदि किसी छात्र को केवल पांच तक पहाडे आते हों और जोडना व घटाना जानता हो तो वह गुणा, भाग, खण्डीकरण, आवर्ती दशमलव वर्गों का अन्तर व योग वगफल, वगमूल घनमूल आदि प्रश्न सरलता से हल कर सकता है। उदाहरणाथ १६ अकों के आवर्ती दशमलव प्रश्न को केवल एक ही पंक्ती द्वारा हल किया जा सकता है।

सेवा में—

2367 श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ प्र)

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाउस, दरियागज नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली ११०००१ फोन—३१०१५० केलिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (एल १०२४/१-०९२

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५ अंक ४४ | रविवार, ४ अक्तूबर १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४०९३
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक — २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की जोरदार मांग—

राष्ट्र भक्तों को आतंकवादी कहने वाली पुस्तक जब्त की जाए

नई दिल्ली २६ सितम्बर दिल्ली आर्य समाजों की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की आज सम्पन्न हुयी बैठक में सर्वसम्मति से राष्ट्रीय ओपन स्कूल की १२ कक्षा की राजनीति विज्ञान की पुस्तक में राष्ट्रनायक लाला लाजपत राय, श्याम जी कृष्ण वर्मा वीर सावरकर लोकमान्य तिलक भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, खुदीराम बोस, अवध बिहारी, मास्टर अमीचन्द्र आदि सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानियों को उग्रवादी, हिंसक व आतंकवादी आदि अभद्र शब्दों से अभिहित करने की घोर भर्त्सना की गयी। सभा ने मानव संसाधन मन्त्री श्री अर्जुन सिंह से यह भी जोरदार मांग की कि उक्त पुस्तक को तुरन्त जब्त किया जाए तथा दोषी लेखकों एवं अधिकारियों के विरुद्ध अविलम्ब कठोर कार्यवाही भी की जाए क्योंकि देश के लिए अपना सर्वस्व व प्राणों की आहुति देने वाले राष्ट्र-भक्त क्रान्तिकारियों का यह अपमान है और इससे बच्चे भी गुमराह हो रहे हैं।

सभा ने यह भी निर्णय लिया कि राजधानी की समाजें एवं आर्य संस्थाएं इस आशय का प्रस्ताव पारित कर श्री अर्जुन सिंह मानव संसाधन मन्त्री नई दिल्ली को भेजे तथा उसकी एक-एक प्रति सभा कार्यालय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई-दिल्ली-१ को भी भेजे।

प्रस्ताव का प्रारूप

आर्य समाज की यह सभा राष्ट्रीय ओपन स्कूल की उच्चतर माध्यम कक्षा (१२) का राजनीति विज्ञान की पुस्तक में राष्ट्र नायक लाजपत राय, श्याम जी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर, लोकमान्य तिलक भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, खुदीराम बोस, अवध बिहारी, मास्टर अमीचन्द्र आदि प्रख्यात स्वाधीनता सेनानियों के बारे में उग्रवादी, हिंसक आदि अभद्र शब्दों के प्रयोग करने की घोर निन्दा करती है और साथ ही यह जोरदार मांग करती है कि उक्त पुस्तक को जब्त किया जाए तथा दोषी लेखकों व अधिकारियों के विरुद्ध तुरन्त कठोर कार्यवाही की जाए क्योंकि देश के लिए अपना सर्वस्व एवं प्राणों की आहुति देने वाले राष्ट्रभक्त क्रान्तिकारियों का यह घोर अपमान है।

न किताबें न खेल, न दोस्ती न मेल .

टीवी की भूलभुलैयां में गुम बच्चे

—महेन्द्र राजा जैन

एक समय था जब 'अध्ययन' या पढ़ना अपने आप में एक कला माना जाता था, पर अब घर-घर में टेलीविजन पहुंच जाने के कारण ऐसा जान पड़ता है कि लोगों की पढ़ने की आदत छूटती जा रही है और वह दिन दूर नहीं जब बच्चों में कामिक्स और बड़ों में उपन्यास पढ़ने की आदत भी छूट जाये। आजकल तो छोटे-बड़े सभी एक साथ टेलीविजन से ऐसे चिपके रहते हैं मानों अब उसके सिवा और कुछ जीवन में नहीं रह गया है। टेलीविजन के कारण लोगों की दिन-चर्या बदल गयी है, यहां तक की खाने का समय भी बदल गया है। टेलीविजन पर की जाने वाली उद्घोषणाएं, विज्ञापन, वार्ताएं संगीत कार्यक्रम नाटक नौटंकी, कुछ भी हो, सभी की ओर सभी की आंख बराबर लगी रहती हैं। इस बीच यदि कोई आ जाये तो भी टेलीविजन बंद नहीं किया जाता। परिणामस्वरूप लोग ठीक से बात नहीं कर पाते हैं और कभी-कभी तो टेलीविजन के कारण आगन्तुकों से कह दिया जाता है कि वे बाद में आयें।

मुझे तो कई बार ऐसी पार्टियों में भी जाने का अवसर मिला है, जहां पार्टी के पूरे समय तक टेलीविजन चालू रहा और पार्टी में आये अतिथि आपस में मेल-मिलाप करने के बजाय टेलीविजन देखने में लगे रहे। पार्टी का मतलब ही होता है लोगों से मिलना-जुलना और पार्टियों में अक्सर ऐसे लोगों से भेंट हो जाती है जिनसे हम अरसे से नहीं मिले हैं। पर टेलीविजन के कारण वह भी अब संभव नहीं रहा, क्योंकि जो लोग पहले पार्टी में आने वाले होते हैं, वे अब टेलीविजन का कोई कार्यक्रम 'मिस' नहीं करना चाहते, अतः पार्टी में आने के बजाय वे घर पर ही रहना पसन्द करते हैं। और यदि पार्टी में आये भी तो वहां टेलीविजन चालू रहने के कारण अन्य लोगों का ध्यान उसी तरफ लगे रहने से न तो लोगों से मिल पाते हैं न ठीक से बात ही कर पाते हैं।

वस्तुतः अब टेलीविजन भी एक 'नशा' बन गया है। ऐसा नशा जिसकी आदत चरस गांजा हशीश आदि के समान जल्दी नहीं छूटती जान पड़ता। टेलीविजन के पर्दे पर अच्छे पढ़-लिखे, सभ्य शिक्षित सुसंस्कृत लोग भी आंख गड़ाए लगे रहते हैं। उबाऊ, उद्घोषणाएं और वही विज्ञापन बार-बार देखते रहने पर भी उन्हें ऊब नहीं होती। दृश्य प्रभावों की ओर बच्चे जल्दी आकर्षित होते हैं और जो कुछ भी अच्छा-बुरा वे अपनी आंखों के सामने देखते हैं चाहे वह जीवित हो या अखबार या पुस्तक में छपी फोटो या टेलीविजन कार्यक्रम सभी का सीधा प्रभाव उनके मन मस्तिष्क पर पड़ता है। वे एक के बाद एक कार्यक्रम देखते जाते हैं, मानो अब इसके अलावा और कुछ उनके जीवन में बाकी नहीं रह गया है।

पाश्चात्य देशों में बच्चों पर टेलीविजन के प्रभाव' के सम्बन्ध में अभी तक जो सर्वेक्षण किए गए हैं उनसे यह एक बात स्पष्ट हुई है कि जो बच्चे प्रति दिन एक घण्टे से अधिक समय तक टेलीविजन देखते हैं उनकी स्मरण शक्ति कम हो जाती है तथा किसी विषय पर वे उतना अच्छी तरह ध्यान भी केंद्रित नहीं

(शेष पृष्ठ ४ पर)

प्रधान सम्पादक – सूर्यदेव | सहसम्पादक —विमलकान्त शर्मा

तीर्थ यात्रा

—आचार्यरत्न प० नारायण देव

हमारे आचार्यों ने 'चरैवेति चरैवेति कहकर मानव जीवन को एक यात्रा माना है। ८३ वर्षीय बहु-आयामी जीवन यात्रा के दौरान विशाल भारत के विविध प्रान्तो की यात्रा के फलस्वरूप मैंने यह अनुभव किया है कि जीवन एक साधारण यात्रा नही बल्कि वह एक तीर्थयात्रा है। हमारे मन मे उठने वाली आशा तरगिणी सुख दुख रूपी दो कगारो का स्पर्श करके अनन्त दिशा की ओर बह रही है। हमे मालूम नही यह नदी कब कहा विलीन हो जाएगी। जब मैं यादो के वातायन से मुडकर देखता हू तब मेरी स्मरण सरणी मे कई खट्टी मीठी घटनाए उजागर होती हैं।

महानगरी दिल्ली भारत की राजधानी है जो कि कलिन्दजा (यमुना नदी) के किनारे पर स्थापित है। महाभारत काल से अब तक दिल्ली कई नामो से पुकारी गयी और कई राजाओ तथा बादशाहो का शासन दिल्ली पर हुआ था। गौरवशालिनी दिल्ली नगरी के उत्थान पतन अथवा गुण-दोषो पर प्रकाश डालना मेरा उद्देश्य नही है।

दिल्ली में स्थित एक आदर्श सस्था है अखिल भारतीय हिन्दी सस्था सघ। यह सस्था पिछले पच्चीस साल से हिन्दी का प्रचार और प्रसार कर रही है। भारत के विभिन्न प्रान्तों मे कार्यरत हिन्दी सस्थाओ मे एकात्म भाव स्थापित करने का सशक्त प्रयास यह सस्था करती है। इस कथन मे अत्युक्ति न होगी कि जसे एक विशाल अश्वत्थ वृक्ष (पीपल) अपनी शाखाओ को आवश्यक भोजन देकर इच्छानुसार पनपने का अवसर प्रदान करता है वैसे ही हिन्दी सस्था सघ सभी सस्थाओं को मार्गदर्शन प्रदान करती है। सघ ने विभिन्न योजनाओ के कार्यान्वयन द्वारा ऐसा कार्य किया जितना कार्य पचास वर्षों में भी अन्य कोई सस्था न कर सकी।

सस्था सघ के कर्मठ एव वरिष्ठ काय कर्ताओं ने सन् १९९१ सितबर मे सस्था का रजत जयन्ती समारोह मनाने का निश्चय किया था। दीर्घकालीन हिन्दी सेवा के उपलक्ष्य मे सस्था ने मेरे जसे ढलती उम्रवाले हिन्दी के पथिक को भी दिल्ली मे बुलाकर सम्मानित करने का निश्चय किया था। बुढापे की परवाह न करके मैंने गत वर्ष दिल्ली जाने का टिकट आरक्षित भी किया था। किन्तु इस बीच में दिल्ली और उत्तर भारत के कई शहरो में अचानक उत्पन्न मण्डल आयोग सबन्धी सघर्ष के कारण समारोह के कार्यक्रम स्थगित किये गये। मुझे अपनी यात्रा स्थगित करनी पडी।

एक साल गुजर गया। सस्था सघ ने पुन १९९२ मार्च के अन्त में रजत जयन्ती सम्मेलन चलाने और विभिन्न प्रान्तों मे हिन्दी सेवा मे लगे कार्यकर्ताओ को और विभिन्न सस्थाओ के प्रतिनिधियो को दिल्ली मे बुलाकर उनको सम्मानित करने की योजना बनाई। निमत्रण पत्र मिलने पर मैंने भी दिल्ली जाने का निश्चय किया और निश्चित तारीख के पहले (२३-३-९२) को दिल्ली पहुचा। इस यात्रा के बारे मे लिखने के पहले गतकालीन अपनी दिल्ली यात्राओं के बारे मे भी कुछ लिखना उचित लगता है।

सर्वप्रथम मेरी दिल्ली यात्रा सन् १९२६ मे हुई थी। उस समय मेरी उम्र १७ साल की थी। महात्मा गाधीजी का यह आह्वान —

"एक राष्ट्रभाषा हिन्दी हो,
एक हृदय हो भारत जननी।'

सुनकर मैं हिन्दी के प्रति आकृष्ट हुआ और मैंने उसी वर्ष हिन्दी की प्रारंभिक परीक्षाए पास कीं। मेरे मन में उत्तर भारत मे आकर हिन्दी में उच्च शिक्षा पाने और गाधीजी के दर्शन करने की प्रबल अभिलाषा पैदा हुई। मेरे पूज्य हिन्दी अध्यापक (केरल के सर्वप्रथम हिन्दी प्रचारक श्री एम के दामोदरन उण्णी जी) खादी धारी थे। मैंने अपने अभिभावक से कहा कि मुझे खादी के कपडे खरीदकर दें, लेकिन वे तैयार न हुए तो मैंने उसी दिन अपने सोने के कुण्डल बेचकर खादी के कपडे खरीद लिये। मुझे इस बात का गर्व है कि मैं उस साल से अब तक खादी ही पहनता हू।

मेरी दृढ इच्छा का यह परिणाम था कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्कालीन सचिव इन्द्र विद्या वाचस्पति ने (प्रसिद्ध कांग्रेस नेता शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का पुत्र) दिल्ली मे स्थापित ज्योति पाठशाला मे पहुचकर आर्योपदेशक बनने के लिए प्रतिमास १५/ के हिसाब से तीन साल तक छात्रवृत्ति देने की स्वीकृति दी। केवल पचास रुपय लेकर मैंने यात्रा शुरू की और मद्रास तथा बर्बई होते हुए दिल्ली पहुचा। पुरानी दिल्ली मे लाल किले के सामने जामा मसजिद के पास वाले एक दुमजिले मकान मे स्थापित ज्योति पाठशाला मे मैंने एक साल तक अध्ययन किया। उस पाठशाला म केरल कर्नाटक आन्ध्र बिहार, मोराशम आदि प्रदेशो से आगत आठ दस छात्र हा थे। पन्द्रह रुपये म हम लोग एक महीने का पूरा खर्च चला सकते थे। वर्तमान समय मे दिल्ली मे एक दिन का खर्चा कितने रुपये मे चलेगा, इसकी कल्पना पाठक स्वय कर सकते हैं। १९२६ मे पचास रुपय खर्चकर मैं दिल्ली पहुचा था और १९९२ मे ११००/- खर्चकर दिल्ली पहुचा (अतीत और वर्तमान म कितना अन्तर।)

सन् १९२८ से १९३३ तक मेरा अध्ययन लाहौर शहर मे स्थित गुरुदत्त भवन मे चला। १९३३ के अन्त मे मैं दिल्ली वापस आया और वहा से वेदों के अध्ययन के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा गगा तट पर स्थापित गुरुकुल कागडी में पहुचा। वहां करीब छ महीने अध्ययन कर मैंने अपने शहर कोट्टयम मे आने का निश्चय किया। यही मेरी दूसरी दिल्ली यात्रा थी।

सन् १९७० मे मैंने केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रख्यापित पुरस्कार (गाधी स्मारक नामक काव्य सग्रह) प्राप्त करने दिल्ली की यात्रा की। यह मेरी तीसरी यात्रा थी। अब मैं अपनी चौथी दिल्ली यात्रा का विवरण प्रस्तुत करता हू।

जैसा कि मैंने प्रारम्भ मे उल्लेख किया था मैं ने मार्च २६ वी तारीख को दिल्ली पहुचने का निश्चय किया था। कई मित्रो और रिश्तेदारो ने मुझसे सवाल किया कि मैं इस बुढापे में कैसे यात्रा करूगा। इतना ही नही सस्था सघ द्वारा आने जाने के मार्ग व्यय के अलावा अवार्ड के रूप में कुछ पैसे देने की कोई योजना न थी इस हालत म मेरी यात्रा का मतलब क्या है ऐसा भी मित्रो ने पूछा। इस प्रकार की बाते करने वालो को मैंने जो जवाब दिया उसका भी सक्षिप्त रूप यहा लिखना उचित होगा। मैं सज्जनों की सगति को ही तीर्थयात्रा और सतोष को ही अनश्वर धन मानता हू। एक आर्यसमाजी होने के कारण मरणानन्तर किसी स्वर्ग की अथवा मोक्ष की कल्पना नहीं करता। इस जीवन में जो सुख अनुभव होता है वही स्वर्ग है और जो दुख अनुभव होता है वही नरक है। हमारे आचार्यों ने बताया है —

'ससार विष वृक्षस्य द्वे फले अमृतोपमे,
काव्यामृत रसास्वाद अन्यतम सज्जन सगति।'

मैं सज्जन सगति को मोक्ष मानता हू दूसरी बात धन है। सत कबीर ने सालो पहले बताया है —

'गोधन, गजधन, वाजिधन और सब धन खान
जब आवे सतोष धन सब धन धूरि समान।"

सतोष एक अनश्वर धन है उसकी प्राप्ति होने पर सब धन धूल के समान लगेगा। मैंने गगा, यमुना, कावेरी, पपा, पूर्णा, रावि आदि कई नदियों में स्नान किया है। जिन दिनो के स्नान को लोग पुण्यस्नान अथवा तीर्थ स्नान मानते हैं, उन दिनों मे भी मैं ने हरिद्वार, ऋषिकेश आदि तीर्थस्थलो में स्नान किया। लेकिन मुझे मोक्ष नहीं मिला। फिर धन की चिता और अकेले यात्रा करने की बात। मानव अकेले दुनिया मे जन्म लेता है और अकेले ही इस दुनिया से बिदा लेता है। गीता के अनुसार —

"मन एव मनुष्याणा कारण बन्ध मोक्षयो।"

तब भला! डर किस बात का! मैंने कहा —"मैं अकेला नहीं। यात्रा मे मेरा मन भी मेरा साथ देता है। अपने सुदृढ मनकी सहायता से ही मैंने १९८८ जनवरी मे पटना में सपन्न सर्वभाषा कवि सम्मेलन में भाग लेने की यात्रा की थी।

१९२६ और १९९२ के अन्तराल में दिल्ली शहर का बहुत कुछ कायापलट (परिवर्तन) हुआ है। १९२६ में जब मैं दिल्ली में पढता था तब ससद भवन

(शेष पृष्ठ ५ पर

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

भारतीय भाषाएं और हमारा दृष्टिकोण



१९वीं शताब्दी में ब्रिटिश शासकों ने यह नीति बनाई थी कि शिक्षणालयों में अंग्रेजी को प्रमुख स्थान दिया जाए, शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी को बनाया जाए तथा सरकारी कामकाज में भी अंग्रेजी को अपनाया जाए। आर्यसमाज के संस्थापक, युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती इसे सर्वथा अवाञ्छनीय और अनुचित समझते थे। उन्होंने इसके विरुद्ध सर्वप्रथम आवाज उठाई। उन्होंने कहा हिन्दी भाषा को ही शिक्षा का माध्यम तथा सरकारी कामकाज की भाषा बनाया जाना चाहिए। वे हिन्दी के लिए आर्य भाषा शब्द का प्रयोग किया करते थे। वे वे इसे सम्पूर्ण आर्यव्रत की भाषा मानते थे। उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास मे लिखा कि बच्चों की शिक्षा का प्रारम्भ देवनागरी लिपि मे कराया जाए। उनके पठन-पाठन को विधि में संस्कृत और हिन्दी का प्रमुख स्थान है। उनकी प्रेरणा से इस आशय का ज्ञापन सरकार की ओर से नियुक्त हण्टर कमीशन' को देने की तैयारी की गई थी। उनके लाला कालीचरण, रामचरण और बाबू दुर्गाप्रसाद को लिखे पत्र उपलब्ध है। उन्होंने लिखा था कि पंजाब आदि से राजकार्य में आर्य भाषा के प्रयोग के लिए सरकार को मेमोरियल भेजे गये हैं किन्तु कानपुर, फर्रुखाबाद, बनारस आदि स्थानों से अभी नहीं भेजे गए हैं। यहा से भी मेमोरियल भिजवाए जाने चाहिए। इस प्रकार भारत की राष्ट्रभाषा, राजभाषा हिन्दी हो, इसके लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आन्दोलन चलाया। यह प्रसन्नता की बात है कि आगे चलकर स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने वाली प्रमुख राजनैतिक पार्टी कांग्रेस ने जिस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज के अनेक कार्यक्रमों को अपनाया। उसी प्रकार हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बनाए जाने के कार्यक्रम को भी अपनाया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जोधपुर नरेश को एक पत्र मे लिखा था कि महाराज कुमार को २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कराते हुए पहले देवनागरी भाषा की, फिर संस्कृत विद्या की और बाद मे अंग्रेजी अथवा अन्य शिक्षा दी जानी चाहिए। स्वामी जी देश की उन्नति के लिए हिन्दी के प्रचार प्रसार को आवश्यक मानते थे। उनकी मातृभाषा गुजराती थी। वे संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे। १८७४ तक वे संस्कृत मे ही उपदेश देते थे। हिन्दी का प्रयोग उन्होंने ब्राह्म समाज के नेता श्री केशवचन्द्र सेन के सुझाव पर प्रारम्भ किया था। उनका कहना था कि यदि स्वामी जी हिन्दी में बोलेगे तो अधिक लोग लाभ उठा सकेंगे। उनके हिन्दी अपनाने का एक और कारण भी था। एक बार उनका भाषण २२ फरवरी १८७३ के 'इण्डियन मिरर मे छपा। यह स्वामी जी के संस्कृत भाषण का अनुवाद था। इसमें अनुवादक पं० महेशचन्द्र न्यायरत्न से बहुत सी नई बातें जोड़ दी थीं, जो महर्षि ने कही नही थी इसके अतिरिक्त ऋषिवर हिन्दी को राष्ट्रीय एकता का सूत्र भी मानते थे। स्वामी जी की जीवनी के लेखक जोर्डन्स, प्रोफेसर केनबरा विश्वविद्यालय आस्ट्रेलिया ने ठीक ही लिखा है कि बनारस से लाहौर तथा बम्बई-कलकत्ता, वे जहा भी गए उन्होंने हिन्दी का व्यवहार किया। यह केवल सुविधाजनक नीति नही थी, बल्कि यह सिद्धान्त की भी बात थी। हिन्दी उनके लिए भारत मे फूट डालने वाली प्रवृत्तियों पर विजय पाने का कारण थी, इससे विभिन्न राज्यों, जातियों तथा वर्गों की एकता को पुष्ट किया जा सकता था। जब उनसे पूछा गया कि हमारा देश कब पुरानी गरिमा और समृद्धि को प्राप्त करेगा तो उनका स्पष्ट उत्तर था जब धर्म, भाषा और उद्देश्यो की एकता होगी। वे राष्ट्रीय एकता के लिए भाषा की एकता को आवश्यक मानते थे। स्वामी जी की इच्छा थी कि सभी भारतीय हिन्दी का अध्ययन करें ताकि राष्ट्रीय एकता की पुष्टि हो सके। उनके सामने उनके एक पंजाबी भक्त ने हरिद्वार मे प्रस्ताव रखा कि उनके ग्रंथो का उर्दू मे अनुवाद कराया जाए तो स्वामी जी ने बड़े प्रेम मे कहा था कि—'जिन्हे सचमुच मेरे भावों को जानने की इच्छा होगी वे इस आर्यभाषा को सीखना अपना कर्त्तव्य समझेंगे। अनुवाद तो विदेशियो के लिए होता है।' मैडम ब्लावैट्स्की को उन्होंने लिखा था—मेरा विचार आपको अनुवाद करने मे रोकने का नही है। क्योकि बिना अंग्रेजी अनुवाद के यूरोपीय जातिया सत्य के प्रकाश को नहीं पा सकेंगी, किन्तु भारत की जनता मेरे भाष्य के अंग्रेजी में प्रकाशित होने पर संस्कृत और हिन्दी के अभ्यास को त्याग देगी। मेरा वेदभाष्य समझने के लिए संस्कृत और हिन्दी का अध्ययन जो मेरा लक्ष्य है, नष्ट हो जाएगा।'

महर्षि दयानन्द सरस्वती अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम व राजकाज का भाषा बनाए जाने के विरुद्ध थे। वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा शिक्षा का माध्यम बनाना चाहते थे। भारत का संविधान बनाने वाले उनकी बातो से पूर्णत सहमत थे। संविधान के १७ वे भाग में ९ अनुच्छेद (३४३-३५१) भाषाओं के विषय मे हैं। उनमे मुख्यत चार बाते कही गई हैं—संघ की राजभाषा, प्रादेशिक भाषाए, उच्चतम न्यायालय उच्च न्यायालयो आदि की भाषा और विशेष निदेश। अनुच्छेद ३४६ में संपर्क भाषा हिन्दी की व्याख्या की गई है। अनुच्छेद ३५१ में राजभाषा हिन्दी का स्वरूप निर्धारित किया गया है—हिन्दी भाषा की प्रसार वृद्धि करना, उसका विकास करना ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके, तथा उसकी आत्मीयता मे हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और अष्टमसूची मे उल्लिखित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए तथा जहां आवश्यक या वाञ्छनीय हो, वहा उसके शब्द भंडार के लिए मुख्यत संस्कृत से तथा गौणत वैसी उल्लिखित भाषाओ से शब्द ग्रहण करते हुए, उसकी समृद्धि सुनिश्चित करना संघ का कर्त्तव्य होगा।'

संविधान की इस धारा का विश्लेषण करने पर संस्कृत भाषा का महत्त्व तथा भारत की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति, ये दोनो बाते स्पष्ट उभर कर आती हैं। होना तो यह चाहिए था कि स्वाधीनता प्राप्ति के लगभग ४५ वर्ष पश्चात् अंग्रेजी का यहा कोई स्थान न रहता तथा सरकारी कामकाज की भाषा पूरी तरह हिन्दी बन गई होती और पूरे भारत की संपर्क भाषा हिन्दी होती, पर ऐसा हो नही पाया। न तो हिन्दी को वह स्थान मिला और न ही अन्य भारतीय भाषाओ को।

आर्यसमाज इस बात का समर्थन करता है कि संविधान मे दिए गए प्रावधानो के अनुरूप सारा कार्य हो। प्रान्तों में सभी भाषाओं का समुचित स्थान हो तथा संघ की राज काज की भाषा और संपूर्ण भारत मे एकता स्थापित करने वाली भाषा हिन्दी हो। संस्कृत सभी भारतीय भाषाओ की जननी है। संस्कृत हमारे एक्य स्थापना के उद्देश्य में सहायक हो सकती थी, पर नई शिक्षा नीति मे से संस्कृत को ही निकाल दिया गया। ऐसा प्रतीत होता है कि अंग्रेजी को दीर्घकाल तक चलाए रखने की एक सुनिश्चित योजना है। १९६३ में संसद में एक प्रस्ताव पास हुआ था कि जब तक एक भी प्रदेश हिन्दी का विरोधी होगा, तब तक अंग्रेजी चलती रहेगी। यह प्रस्ताव सद्भावना स्थापना हेतु तो किया जा सकता है, परन्तु यह प्रजातंत्र के अनुरूप नही है।

हमारी यह हार्दिक इच्छा है कि सभी भारतीय भाषाओ को सम्मानित स्थान देते हुए, हम हिन्दी को इसका संवैधानिक अधिकार दे।

—डा० धर्मपाल

[आर्य राष्ट्रीय मंच द्वारा डा० प्रशान्त कुमार वेदालंकार की अध्यक्षता मे आयोजित 'भारतीय भाषायें और हमारा दृष्टि कोण। संगोष्ठी मे उद्घाटन भाषण में व्यक्त विचारो पर आधारित] इस संगोष्ठी मे श्री हरिकृष्ण लाल भगत, अध्यक्ष, राष्ट्रीय कांग्रेस दिल्ली प्रदेश,, श्री ओमप्रकाश कोहली अध्यक्ष, भारतीय जनता-पार्टी दिल्ली प्रदेश, श्री वीरेश प्रताप चौधरी, अध्यक्ष जनता दल, दिल्ली प्रदेश और श्री रामगोपाल सीसोदिया, अध्यक्ष समाज वादी जनता पार्टी, दिल्ली प्रदेश ने भाग लिया था तथा प्रि० बलदेव ने संचालन किया था—संपादक]

कर पाते । उनके सोचने की प्रक्रिया मे व्यवधान आता है तथा उनकी रचनात्मक शक्ति कम हो जाती है । वे किसी कही गई बात को जल्दी और आसानी मे नही समझ पाते और शारीरिक दृष्टि से भी वे जल्दी थक जाते हैं । नेत्र विशेषज्ञो की राय में जो बच्चे एक कमरे में बन्द रह कर बहुत पास से टेलीविजन देखते रहते है, उनका दृष्टि कमजोर होती जाती है तथा इस कारण बच्चो के साथ ही साथ बडो के भी शारीरिक स्वास्थ्य पर असर पडता है । एक ही स्थिति मे काफी समय तक बैठे रहने से मानसिक तनाव के साथ ही साथ भावनात्मक अस्थिरता भी बढ़ती है ।

लेकिन इस सबसे भी अधिक हानिकारक प्रभाव जो टेलीविजन का पडता है, वह है मस्तिष्क की सोचने की शक्ति को कुंठित करना, जो लोग बराबर टेलीविजन देखते रहते है, वे किसी विषय पर जल्दी नही सोच पाते और किसी छपी हुई चीज को पढने पर तो उनका ध्यान जल्दी केन्द्रित होने ही नही पाता, पुस्तको से ध्यान हट जाता है और बच्चो का दिमाग कुंद हो जाता है जिसे एक प्रकार से असस्कृत भी कहा जा सकता है । किसी बात पर सोचने या निर्णय करने की शक्ति और योग्यता वस्तुत पुस्तको से ही आती है । पुस्तको के अलावा और कोई भी ऐसा साधन नही है जिससे बच्चे यह सब सीख सके, टेलीविजन और फिल्म देख कर लोग पर्दे पर दिखाई गई आकृतियो से प्रभावित होते हैं शताब्दियो से यह माना जाता रहा है कि अज्ञानता का अर्थ ही है पुस्तक विहीनता । जिन लोगो को पढने की आदत नही होती उनके लिए जीवन का कोई अर्थ नही रह जाता और उनका जीवन कभी-कभी बहुत ही दयनीय और दुखी हो जाता है उनका समय काटे नही कटता, वे कुछ करते रहना चाहते हैं पर कर नही पाते पुस्तको से हमे शिक्षा मिलती है, वे हमारा ज्ञान बढाती हैं, वे हमारा मनोरंजन करती हैं और हमें दूसरो के मन मस्तिष्क और जीवन में प्रवेश कराती है वे हमे एक बिल्कुल ही दूसरी दुनिया मे ले जाती हैं । पुस्तके पढ कर जो अनुभूति होती है वह प्राय उसी प्रकार की होती है जो किसी साधना में ध्यान केन्द्रित करने से होती है जिन लोगो को पढने मे आनन्द आता है वही लोग मानवीय संवेदनाए, मानवीय विचार मानवीय अनिश्चितिया और जीवन के उतार चढावो को सही ढग से समझ पाते है । पढने के महत्व का अन्दाजा केवल इसी बात से लगाया जा सकता है कि प्राय सभी सरकारें और सरकारी अधिकारी पुस्तको को खतरनाक समझते हैं । एक व्यक्ति के विचारो का दूसरे व्यक्ति के विचारो से आदान प्रदान होने से किसी भी व्यक्ति का पूरा जीवन और सोचने विचारने की शक्ति बदल सकती है । इस कारण सरकारे नही चाहती कि उनके मातहत व्यक्ति अधिकाधिक पुस्तके पढ़ें, शायद इसी कारण कुछ देशो की सरकार कुछ पुस्तके प्रतिबंधित कर देती हैं ।

पढना अपने आप मे एक चुनौती है पढने से जीवन मे एक नये ढग की शुरुआत होती है । जिस व्यक्ति को पढने की धुन लग जाती है वह फिर कभी अपने को अकेला महसूस नही करता । वह पुस्तको में पूरी तरह रम जाता है पुस्तके उसकी हमेशा की साथी बन जाती हैं । इसके विपरीत बराबर टेलीविजन देखते रहने से बुद्धि कुण्ठित हो जाती है टेलीविजन पर जो कार्यक्रम दिखाये जाते है वे प्राय मुख्यत मनोरंजन मात्र होते हैं । टेलीविजन मनोरंजन को जीवन की आवश्यकता मान कर चलता है, इस सीमा तक कि बच्चे फिर मनोरंजन से आगे कुछ सोच ही नही सकते । आल्डुअस हक्सले ने लगभग ५० वर्ष पूर्व अपनी ब्रेव न्यू वर्ल्ड' नामक पुस्तक मे लिखा था कि दुष्प्रेरणा या भ्रष्टाचार और हमारा पतन मनोरंजन के छद्मवेश मे हमारे सामने आयेगा । जिस समय आप टेलीविजन देखते है उस समय कुछ सोच नही सकते, वस्तुत उस समय कुछ सोच सकना सम्भव भी नहीं टेलीविजन कार्यक्रम में कोई सूचना या जानकारी होती भी है तो वह सही सन्दर्भ से अलग इस रूप मे होती है कि वह एक वस्तु मात्र बन कर रह जाती है ।

विशेषकर बच्चो के लिए तो टेलीविजन इस कारण हानिकारक है कि उससे उनकी किसी ओर ध्यान केन्द्रित करने की शक्ति कम हो जाती है । टेलीविजन पर हम जो कुछ देखते हैं उसमे से अधिकांश निरर्थक और निष्प्रयोजन होता है, उदाहरण के लिए चित्रहार कार्यक्रम को ही ले इसमें चुनी हुई फिल्मो के कुछ गीत दिखलाये जाते हैं । अधिकांश गीतों में नायक-नायिका एक दूसरे के पीछे भागते हुए बगीचो में या समुद्र किनारे दौडते हुए एकाएक एक दूसरे के ऊपर गिर

टी० वी० की भूल भुलैयां

(पृष्ट १ का शेष)

पडते हैं और फिर भी ऊची आवाज में मजे से गाते रहते हैं इसका बच्चो पर क्या असर पडता हैं ? क्या वे इससे यही निष्कर्ष निकालते हैं कि सभी व्यस्क लोग इसी प्रकार का व्यवहार करते हैं या यह कि व्यसकों को इस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए ?

ज्ञान जिसका कोई तारतम्य नही और तथ्य जिनसे कोई निष्कर्ष नही निकलता—टेलीविजन से दर्शको को मुख्यत यही मिलता है । लोग टेलीविजन क्यो देखते है ? मनोरंजन के लिए ? नही टेलीविजन देखने का मुख्य कारण है उबाऊपन या बाकरियत । समय काटने की मजबूरी और बेकारी । मैंने कई ऐसे छोटे छोटे बच्चो को देखा है जो शाम को स्कूल से आते ही टेलीविजन के सामने इस आशा से टकटकी लगाये बैठ जाते है कि वह कब चालू हो, टेलीविजन ने उन्हे इस कदर वशीभूत सा कर रखा है । पर्दे पर चलती फिरती तस्वीर जिनका वे कोई अर्थ नही समझते उन्हे अपनी ओर बांधे रखती हैं और वे शांति से ऐसे चुपचाप उसी ओर देखते रहते हैं मानो उन्हे अफीम की गोली दे दी गई हो ।

नैराश्य एकाकीपन और बौद्धिक भूख शान्त करने के साधनो का अभाव—ये मुख्य कारण हैं जिनसे लोग टेलीविजन की ओर आकर्षित होते है । जिस समय लोग टेलीविजन देखते है उस समय कुछ सोचने की आवश्यकता नहीं रह जाती, वस्तुत वे कुछ सोच भी नही सकते वैसी स्थिति मे कुछ सोच सकना लगभग असम्भव सा ही है । व्यस्क लोगो को इसमे भले ही कोई हानि न हो, वे तो दिन भर काम कर थके हुए लौटने के बाद कुछ आराम के लिए टेलीविजन के सामने बैठ जाते हैं और प्राय महिलाए भी काम मे थक कर कुछ आराम के ख्याल से टेलीविजन देखना चाहती हैं (भले ही स्त्री-पुरुष दोनो ही टेलीविजन देखते-देखते ऊंघने ही क्यो न लगें इस स्थिति मे भी वे टेलीविजन बन्द नहीं करते) पर जहां तक बच्चो के अपरिपक्व मन मस्तिष्क का प्रश्न है इससे उन्हे हानि ही होती है, उनके भविष्य के लिए उनके विकास के लिए यह बहुत ही खतरनाक है ।

चुंकि टेलीविजन अब लगभग प्राय प्रत्येक घर की एक आवश्यकता सा बन गया है, पारिवारिक सुख शान्त और बच्चों के भविष्य के लिए यह आवश्यक है कि जहा तक बच्चो के देखने का प्रश्न है, उस पर कुछ प्रतिबन्ध होना चाहिए, सबसे अच्छा तो यह है कि बच्चों को केवल छुट्टी के दिन शनिवार और रविवार को (और वह भी केवल एक निश्चित समय ही) टेलीविजन देखने देना चाहिए अन्य दिनो मे भी कार्यक्रम ऐसे समय दिखाये जाने चाहिए जब वे अपना स्कूल का होम वर्क एव अन्य कार्य समाप्त कर चुके होते हैं । देर रात में तो बच्चो के कार्यक्रम कभी नही दिखाये जाने चाहिए । उदाहरणत 'करमचन्द' बच्चो को भी उतना ही लोकप्रिय था जितना बडों को मैं तो यह भी कहूगा कि बडों की अपेक्षा वह बच्चो को अधिक प्रिय था पर वह रात को देर से दिखाया जाता था जबकि बच्चो के सोने का समय हो जाता था और बच्चे उसे देखने के लिए देर तक जगे रहते थे परिणामत या तो वे सुबह जल्दी नही उठ पाते थे और यदि उठते भी थे तो थके थके से रहते थे और स्कूल में पढाई की ओर ठीक से ध्यान नहीं दे पाते थे । दूसरी बात यह है कि जब भी बच्चा रो रहा हो या मा-बाप अपने काम मे व्यस्त हो तो बेबी सिटर के विकल्प के रूप में बच्चों को प्राय टेलीविजन के सामने बिठा दिया जाता है यह बहुत ही हानिकारक है ।

यदि घर में बडे लोग पूरी शाम नियमित रूप से टेलीविजन के सामने बैठे रहते हैं तो बच्चो से यह आशा नही की जा सकती कि वे भी ऐसा न करे । परिणामत वे किसी रचनात्मक कार्य की ओर ध्यान नही दे पाते और उनका समुचित विकास नही हो पाता । बच्चे यदि घर में बडे लोगों को पढते हुए और पढने में आनन्द लेते हुए देखते हैं और यदि घर में बच्चों के लायक उनकी उम्र के हिसाब से उपयोगी पुस्तके हैं तो बच्चे भी पढने मे आनन्द लेंगे पुस्तको की ओर उनका ध्यान जायेगा । आत्म निर्भरता, आत्म विश्वास, अपेक्षित ज्ञान, बौद्धिक योग्यता, भाषा में व्याकरण का उचित प्रयोग आदि बातो का ज्ञान बच्चो को पुस्तको से ही आता है, टेलीविजन से नहीं, जितना धन सरकार ने देश में टेलीविजन के प्रसार में खर्च किया है और अभी भी कर रही है, उसका शतांश भी यदि प्रत्येक गांव और शहर में बाल पुस्तकालय खोलने और उनके निरन्तर विकास में किया जाये तो बच्चो को तथा देश के भविष्य को एक सही दिशा मिलेगी ।

(साभार सण्डे मेल २७ सितम्बर ३ अक्तूबर)

बहुराष्ट्रीय स्वार्थों के आगे समर्पण

—क्रांति कुमार शर्मा

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आगे हमारे राष्ट्रीय दडवत् का सिलसिला जारी है। यह इस सब के बावजूद है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियो की काली करतूतो के लगातार रहस्योद्घाटन होते रहे हैं और हम 'सब कुछ लुटा कर भी होश मे' नही आना चाहते। ऐसा ही एक सनसनीखेज रहस्योद्घाटन पिछले दिनों हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड के एक पूर्व निदेशक जे०सी०चोपडा ने किया है। श्री चोपडा बीस वर्ष तक इस बहुराष्ट्रीय कम्पनी के निदेशको मे से एक निदेशक रहे हैं। इस दौरान कम्पनी की करतूतों को करीब से देखने पर अब उन्होने जो तथ्य रखे है वे इन कम्पनियो की अंधी मुनाफाखोरी और इस मुनाफे के लिए किसी भी हद तक जाने की प्रवृत्ति को रेखांकित करते हैं।

श्री चोपडा के मुताबिक हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड के अनुसंधान और विकास विभाग ने १९७२ में अपने मुनाफे में बढ़ोत्तरी के लिए देशी घी मे गाय की चर्बी मिलने का फैसला किया था। इसके अनुसार कंपनी ने एटा के अपने दुग्ध संयंत्र में देशी घी 'अनिक' मे गाय की चर्बी मिलाना शुरू कर दिया। वर्ष १९८१ से १९८३ के बीच एटा संयंत्र से लगभग २००० टन गाय की चर्बी बेची गई। इसके साथ घोषणा की गई कि यह वह देशी घी है जो फूड स्पेशियलिटीज लिमिटेड' जैसी कंपनी से खरीदा गया है। इस घी के बड़े डिब्बों का खपत राजस्थान, मध्य प्रदेश और बिहार के बाजारों में की गई और छोटे डिब्बो को २००० ग्राम के पैकेटों में बेचा गया। इससे कम्पनी ने हर साल ८ करोड की कमाई की। यह चर्बी 'यूनीलीवर, लंदन से प्राप्त की गई थी जो बहुत सस्ती और दूषित किस्म की थी। हिंदुस्तान लीवर की चर्बी की वास्तविक खपत इस कंपनी के साबुन और डिटर्जेंट बार मे ३१०० टन, देसी घी (अनिक) में मिलावट २००० टन, संशोधित ग्लेसरीन मे ३४०० टन, टूथपेस्ट व फेस क्रीम में ९००० टन और ग्लेसरीन से बने उत्पादन आदि में ४००० टन रही। इस चर्बी मिश्रित घी के उत्पादन को १९८४ मे रोक दिया गया।

एक ऐसे देश मे जहां गाय को माता का दर्जा देकर पूजा जाता हो, लोगो को इस तरह गाय की चर्बी खिलाना क्या क्षम्य हो सकता है? क्या यह इस देश के करोडो लोगो के पवित्र विश्वासो और धार्मिक भावनाओ से खिलवाड नही है? सवाल यह भी है कि अंधी मुनाफाखोरी के लिए इस कंपनी ने हमें गाय की चर्बी खिलाई है तो क्या गारन्टी है कि कल वह और कोई अखाद्य वस्तु हमे न खिलाए? हिंदुस्तान लीवर के विरुद्ध श्री चोपडा ने और भी अनेक तथ्य प्रस्तुत किए हैं। मसलन उपभोक्ताओ को भरमाने, कर चोरी करने और वित्तीय संस्थाओ को छलने आदि। उन्होने ऐसी राष्ट्रविरोधी कंपनी की मुद्रा सहायता बन्द करने हिंदुस्तान लीवर और उसकी सहयोगी कंपनी लिप्टन की करतूतों की उच्च स्तरीय जांच करने, हिंदुस्तान लीवर के लिप्टन को खाद्य व्यापार के हस्तांतरण के लिए सभी सरकारी समशोधनों को सुरक्षित करने आदि मांगे भी की हैं।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों का शिकंजा हमारे देश पर इस कदर कसा हुआ है कि इन कंपनियो की करतूतों पर समाज से सरकार तक हर तरफ एक गहरी चुप्पी है। आज देश में लगभग १५०० बहुराष्ट्रीय कंपनियां हैं। उपभोक्ता वस्तुओ के क्षेत्र मे ७६ फीसदी बाजार इनके सामानों से भरे पड़े हैं। इनका मकसद हमारी अर्थव्यवस्था का विकास करना नही बल्कि हमारा चौतरफा शोषण करके अपना विकास करना है। ये कंपनियां हमे बुरी तरह दुह रही हैं। एक अध्ययन के अनुसार बहुराष्ट्रीय कंपनियां विकासशील देशो मे एक डालर का निवेश करके २ २ डालर आमदनी हासिल करती हैं। अमेरिकी कंपनियां तो ४ २६ डालर तक आमदनी हासिल करती हैं। इस आमदनी मे उनका लाभ रायल्टी तकनीकी ज्ञान की कीमत, तकनीकी शुल्क, पेटेंट शुल्क, ट्रेड मार्क शुल्क वगैरह शामिल हैं। अगर ये कंपनियां उच्च टेक्नोलाजी वाले उद्योगो मे निवेश करके लाभ कमाए तो यह उतना दुखद नहीं होता। पर अफसोस यह है कि ये कंपनियां साबुन, टूथपेस्ट, क्रीम, शीतल पेय और आलू के चिप्स जैसे उद्योगों में लगी हैं जिन्हे हम स्वयं बना सकते हैं।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों की तथाकथित उच्च तकनीक के मिथक की हालत यह है कि इनसे हमें कभी भी नई तकनीक निशुल्क नहीं मिलती। जो तकनीक ये हमे देती भी हैं वे १५-२० साल पुरानी होती हैं और देश में विदेशी कंपनियो की भागीदारी के बिना भी आसानी से उनका आयात किया जा सकता है।

उपभोक्ता वस्तुओ के अलावा देश के औषधि उद्योग पर भी इन्ही बहुराष्ट्रीय कंपनियों का बेजा कब्जा है। आज दवा के क्षेत्र मे ७५ फीसदी बाजार इनकी गिरफ्त मे है। अपने मुनाफे को ज्यादा बडा आकार देने के लिए ये कंपनियां दवाइयो को उनके रासायनिक नाम से नही बल्कि कंपनी के ब्रांड नाम से बेचती हैं। इसके चलते हालत यह है कि अंतराष्ट्रीय बाजार मे जो दवा १०० रुपए प्रति किलो के भाव मे मिलती है उस पर ये अपना मुहर लगा कर ४००० रुपए प्रति किलो के भाव से बेच रही हैं। एक उदाहरण काफी होगा। लाइब्रियम नामक दवा अंतराष्ट्रीय बाजार मे ३८० रुपए प्रति किलो के भाव से मिलती है, मगर रोश नामक कंपनी ने इसे २७८७० रुपए प्रति किलो के हिसाब से बेचा।

हमारे देश मे इस समय बहुराष्ट्रीय कम्पनियां ५०० से ज्यादा दवाओ को ३००० से ज्यादा ब्रांड नामो से बेच रही हैं। इनमे से अनेक दवाओ पर विश्व के कई देशो मे रोक लगी हुई है पाकिस्तान, मलेशिया फिलीपीन, इजराइल जोर्डन और बांग्लादेश तक में इन पर प्रतिबंध है, पर भारत में ये खूब बिक रही हैं। इनमे क्लोरोस्ट्रेप कूपरस्ट्रेप ओसेबोलीन ड्यूराबोलीन काइमर फोर्ट डोकेबोलान पेरीडान माल्ट्राजीन आदि हैं। इन दवाओ से विकलांगता अंधापन लकवा और कैंसर तक हो सकते हैं पर मे० एण्ड बेकर साबा बेलकमबरोज पाकडविस ब्रूटस इंडिया जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियां ऐसी हानिकारक दवाएं बना रही हैं। सीबा गायगी ने अतिसार के लिए एलिक्विनाल नामक दवा बनाई। प्रायोगिक परीक्षणो से पता चला कि इस दवाई के इस्तेमाल से स्मान नामक बीमारी होती है जिसके लक्षण अंधापन, लकवा आदि हैं। इसके बावजूद एलिक्विनाल दुनिया भर में बेची गई। इससे जापान मे भी ११००० लोगों की मृत्यु हुई। स्वीडन के एक डाक्टर ने १९७० मे इस कंपनी पर एक मुकदमा चलाया जो आठ साल तक चला। अंतत जापानी न्यायालय ने मृतको के परिवारो को करोडो डालर हर्जाना देने का आदेश दिया। इसके बाद भी यह कंपनी भारत व अन्य देशो में दवा बेचती रही है। बहुराष्ट्रीय कंपनियो को न्यौतने के नतीजो पर आखिर हम कब गंभीर होंगे?

(१५ १ ९२ जनसत्ता से साभार)

(पृष्ठ २ का शेष)

का निर्माण हो रहा था। मैं कभी कभी दोस्तो के साथ नई दिल्ली तक सवेरे दौडकर वापस अपने निवास-स्थान में आया करता था। उन दिनों कभी कभी दौडकर यमुना में कूदकर नहाने से बडा आनन्द प्राप्त करता था। फिर कभी ऐसा सुनहरा अवसर मुझे नही मिला।

हाल की यात्रा में दो ही दिन मैं दिल्ली में ठहर सका। २६ ३-'९२ शाम को तान-सेन मार्ग मे स्थित फिक्की सभागार में संस्था संघ का रजत जयन्ती-समारोह चला। उपराष्ट्रपति महामहिम डा० शंकर दयाल शर्मा जी ने दीर्घकालीन हिन्दी सेवियो के रूप मे कई विद्वानों को दुशाला प्रशस्तिपत्र, फलक आदि देकर सम्मानित किया। निश्चित समय पर महामहिम उपराष्ट्रपति डा० शंकर दयाल शर्मा जी सभागार में पधारे और मंच पर आसीन हुए। स्वागत भाषण के बाद प्रबन्ध कर्ता ने सम्मानित होने वाले व्यक्तियो को एक एक करके मंच पर आने को सूचित किया। आयु के क्रम के अनुसार हर व्यक्ति को मंच पर पहुंचना था। वयोवृद्ध शंकर राव लोंढे के बाद मेरी बारी थी। शीर्षस्थ विद्वानो की उस सभा मे मैं अपने को जुगुनू के बराबर ही मानता था। विद्यावृद्धो के समक्ष अन्य प्रकार के वृद्धो की कही पर भी कोई गणना नही है। संकोच के कारण मैंने नम्र शिरस्क होकर महामहिम उपराष्ट्रपति द्वारा प्रदत्त प्रशस्ति पत्र फलक आदि प्राप्त किये। पुलकोद्गमकारी इस मुहूर्त को मैं अपने जीवन का स्वर्णिम निमिष मानता हूं। सभागार मुझे ऐसा लगा या तो यह विक्रमादित्य की राजसभा है अथवा अकबरी दरबार! विभिन्न आयु और वेषभूषा वाले सदस्यों से भरी हुई वह सभा बहु वर्ण पुष्पालंकृत नन्दनोद्यान सा प्रतीत हो रहा था।

मेरे जैसे एक साधारण हिन्दी सेवक को सम्मानित करने का पूरा श्रेय अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के शीर्षस्थ कार्यकर्ताओं को है। उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकटकर मैं यह लेख समाप्त करता हूं। यही वास्तविक मेरी तीर्थयात्रा है।

साभार केरल भारती

श्री निकेतन, कोट्टयम ६८६००४

आदर्श-त्रैतवाद-९

—शार्संह भल्ला

नियन्ता मुक्ति दाता

घृतात्पर मण्डमिवातसूक्ष्म ज्ञात्वा शिव सर्वभूतेषु गूढम्। विश्वस्यैक परिवेष्टितार, ज्ञात्वा देव मुच्यते सर्वपाशै ॥ श्वेता० ४।१६

घृत से अति सूक्ष्म मण्ड की भान्ति—रससार की भान्ति अति सूक्ष्म सब भूतो मे गूढ शिव को ज्ञान कर तथा विश्व के अद्वितीय नियन्ता देव को जान कर उपासक सब बन्धनो से छूट जाता है भगवान की सूक्ष्मतम सत्ता का और सर्वशक्ति मत्ता का ज्ञान हो जाने से कर्मो के सारे बन्धन कट जाते हैं। यहाँ मण्ड उस पदार्थ को कहा है जो सब रसों में सार रूप से—तत्त्व रूप से विद्यमान होता है।

रचियता

एष देव विश्वकर्मा महात्मा सदा जनाना हृदये सनिविष्ट। हृदा मनीषा मनसाभिकलृप्तो, य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति ॥ श्वेता० ४।१७

वह ही देव जगत का रचने वाला हैं, महान् आत्मा है और जनो के हृदय मे सदा प्रविष्ट है—विद्यमान है। वह प्रभु हृदय से—श्रद्धा से, बुद्धि स और मन से प्राप्त हैं। ईश्वर श्रद्धा बुद्धि और मनन से प्राप्त होता है। जो उपासक जन इस भगवान् को जनते हैं वे अमर हो जाते हैं।

अनन्त अविनाशी ब्रह्म मे ज्ञान कर्म दोनों स्थित हैं

द्वे अक्षरे ब्रह्मपरे त्वनन्ते विद्याविद्ये निहिते यत्र गूढे। क्षर त्वविद्या ह्यमृत तु विद्या विद्याविद्ये ईशयते यस्तु सोऽन्य ॥ श्वेता० ५।१

जिस अविनाशी पर ब्रह्म मे विद्या अविद्या दोनो—ज्ञान कम दोनों गहरे स्थित है—जिससे ये दोनो नियत होते। वह सर्वत्र भगवान् है। कम तो नाशवान है और निश्चय रूप से ज्ञान अमृत है तथा जो विद्या अविद्या को शासित करता है—इनका ईश्वर हो रहा है। वह भगवान् इन दोनो से अलग है। वह भगवान् नित्य शुद्ध-बुद्ध-मुक्त स्वभाव है।

रचियता प्रलयकर्ता

एकैक जाल बहुधा विकुर्वन्नस्मिन् क्षेत्रे सहरत्येष देव। भूय सृष्ट्वा पतयस्तथेश सर्वाधिपत्य कुरुते महात्मा ॥ श्वेता ५।३।

यह ऊपर वर्णित परमात्मा प्रत्येक सृष्टि रूप जाल को अनेक प्रकार स विस्तृत करता हुआ इसी क्षेत्र मे आकाश मे उसका सहार करता है। उसी प्रकार फिर जीव प्रकट करके वह महान् आत्मा ईश्वर सबका स्वामित्व करता है।

नियामक नियन्ता

सर्वा दिश ऊर्ध्वमधश्च तियक् प्रकाशयन् भ्राजते यद्वनड्वान। एव स देवो भगवान् वरेण्यो योनिस्वभावानधितिष्ठत्येक ॥ श्वेता० ५ ४

जैसे सूर्य ऊपर निचे तिरछे लोक और सब दिशाए प्रकाशित करता हुआ प्रकाशमान होता है ऐसे ही वह एक वरणीय दिव्यस्वरूप भगवान् कारणों और वस्तु भावों को अधिकृत करता है। काय—कारण—भावों को नियम मे रखता है।

नियन्ता

यच्च स्वभाव पचति विश्वयोनि पाच्याश्च सर्वान् परिणामयेद्य सर्वमेत-द्विश्वमधितिष्ठत्येको गुणाश्च सर्वान् विनियोजयेद्य । श्वेता० ५ ५

जो विश्व का कारण स्वभाव को याथातथ्य कार्य भाव को पकाता है और जो सब पकने योग्य पदार्थो को परिणाम मे लाता है तथा जो सत्व आदि सब गुणों को पदार्थों में भलि भान्ति जोडता है। वह ही अद्वितीय भगवान् इस सम्पूर्ण विश्व को नियम में रख रहा है।

सर्वज्ञ भगवान्

येन वृत विश्वमिद हि सर्वज्ञ कालकारो गुणी सर्वविद्य । तेनेशित कर्म विवर्ततेह पृथ्व्याप्यतेजोऽनिलखानि चिन्त्यम् ॥ श्वेता० ६।२

जिससे यह सारा विश्व आच्छादित है निश्चय से जो सबका ज्ञाता है। काल का कर्त्ता है। गुणी है और जो सब वेत्ता है, उसस अधिकृत होकर इस लोक मे कर्म बतते हैं और पृथिवी जल अग्नि वायु और आकाश होते हैं यह ही भाव चिन्तनीय है।

सनातन अनन्त भगवान

आदि स सयोगनिमित्त हेतु परस्त्रिकालादकलोऽपि दृष्ट। त विश्वरूप भवभूतमीड्य देव स्वचित्तस्थमुपास्य पूर्वम् ॥ श्वेता० ६।५

वह भगवान् सनातन है है। परमाणुओं और जन्मों के सयोग का निमित्त कारण है। तीन काल स ऊपर है—काल का बन्धन उस पर नहीं है वह सदा एक रस रहता है। और कला रहित भी जाना गया है। उस अनन्त स्वरूप उत्पत्ति के स्थान, स्तुति योग्य अपने चित्तस्थ—चित्त मे मिलने वाले—चित्त में रहने वाले देव को पहले अराध कर फिर साधक मुक्त होता।

सर्वशक्तिमान

तमीश्वराणा परम महेश्वर त देवताना परम पति पतीनां परम च दैवत परस्ताद् विदाम देव भुवनेश मीड्यम्। श्वेता० ६।७

उस समर्थों के परम महेश्वर उस देवों के परम दैवत और रक्षकों के उत्तम परम रक्षक भुवन के ईश्वर स्तुति योग्य देव को हम उपासक जानते हैं।

ज्ञान-बल-क्रिया स्वभाविक

न तस्य कार्य करण च विद्यते न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते। परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वभाविकी ज्ञान बल-क्रिया च ।।

उस भगवान का कार्य और कार्य साधन नहीं है—उसको अपने लिए कुछ भी कृत्य नही है। न कोई उसके समान और अधिक दीखता है। उसकी निश्चय विविध विचित्र परम शक्त और नैसर्गिक ज्ञान बल-क्रिया सुनी जाती है। भगवान् की शक्ति परम और आश्चर्य जनक है उसके ज्ञान बल क्रिया गुण स्वभाविक है।

ईश्वर जगत का कारण जीव का स्वामी

न तस्य कश्चित्पतिरस्ति लोके न चेशिता नैव च तस्य लिङ्गम्। स कारण करणाधिपाधिपो न चास्य कश्चिज् जनिता न चाधिप ॥ श्वेता० ६।९

ससार मे उस भगवान का कोई पति—रक्षक नही है। न उसे बस करने वाला है। और नही उसका कोई चिह्न है। इस अजन्मे भगवान् का न कोई उत्पादक है और न अधिपति है वह भगवान् जगत् का कारण है और इन्द्रियों के स्वामी जीव का स्वामी है।

निर्गुण सर्वव्यापी ब्रह्म

एको देव सर्व भूतेषु गूढ सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा। कर्माध्यक्ष सर्वभूताधिवास साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च । श्वेता० ६ ११

एक ही देव सब भूतो म गूढ—छुपा हुआ सर्वव्यापी सब प्राणियों का अन्तर्यामी कर्मो का फल दाता, सर्व भूतो में बसने वाला, ससार का साक्षी ज्ञान स्वरूप, निद्वन्द और निर्गुण है—गुणातीत है—सतोगुण रजोगुण तथा तमोगुण से रहित है क्योकि ये गुण तो प्रकृति के हैं परमात्मा इन से ऊपर है। वह इस मे लिप्त नही होता।

शाश्वत सुख दाता ईश्वर

एकोवशी निष्क्रियाणा बहूनामेक बीज बहुधा य करोति। तमात्मस्थ ये ऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां सुख शाश्वत नेतरेषाम्। श्वेता० ६।१२

जो सबको वश करने वाला एक—अखण्ड ईश्वर अनेक निष्क्रय—जड भूतों के प्रकृति रूप एक बीज—कारण का बहुत प्रकार करता है—नाना रूपों में प्रकट करता है जो धीर जन उस आत्मस्थ भगवान् को देखते है उनको निरन्तर रहने वाला सुख है। दूसरों का सदा रहने वाला सुख नहीं है।

आर्य सन्देश के विशेषाक

वर्ष १९९२-९३ मे आर्य सन्देश के निम्न विशेषाक प्रकाशित किये जा रहे है—

१ निर्वाण अक— प० नाथूराम शर्मा शकर' अक २५-१०-९२
२ श्रद्धानन्द बलिदान अक—स्वामी समर्पणानन्द अक २७-१२-९२
३ ऋषि बोधाक—पण्डित गणपति चन्द्र शर्मा अक २१-२-९३
४ आर्य समाज स्थापना अक—प० रामचन्द्र देहलवी अक २१ ३-९३

विद्वान लेखकों से रचनाय सादर आमन्त्रित है।

श्री सुशील कुमार महाजन, प्रबन्धक रघुमल कन्या प्राइमरी स्कूल डाक्टर्ज लेन, नई दिल्ली दस हजार रुपये की राशि के विज्ञापन भिजवा रहे हैं। आर्य समाजे/आर्य सस्थायें एव विज्ञापन दाता कृपया अपनी-अपनी स था का विज्ञापन सामग्री/ब्लाक एव चैक आदि प्रकाशन तिथि से कम से कम दस दिन पूर्व अवश्य भिजवाने की व्यवस्था कराये

आपका बहुमूल्य सहयोग अपेक्षित है।

भाषण प्रतियोगिता

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के ७०वे वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनाक १६ अक्तूबर को दिल्ली के स्कूली छात्र/छात्राओ के लिए एक भाषण प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। प्रात ९ से १२ बजे तक होने वाली प्रतियोगिता का विषय है 'महर्षि दयानन्द सरस्वती एक राष्ट्र निर्माता'। विजेताओं को नकद पुरस्कार, साहित्य आदि प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा। एक विद्यालय से केवल एक ही छात्र/छात्रा भाग ले सकता है और ७ मिनट का समय दिया जाएगा।

आर्य समाज जगपुरा विस्तार

आर्य समाज जगपुरा विस्तार का स्थापनादिवस ३०,८ ९२ रविवार को प्रात ८-०० से १०-०० बजे तक बडी श्रद्धा के साथ मनाया गया। समाज मन्दिर का शकुन्तला बढ्वार रावलपिन्डी वालो ने १५ ८ १९६० को अपने पवित्रदान स बनवाया था।

आयसन्देश–दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted at N D P S O on 1 2 10 1992 Licence to post without prepayment, Licence No U (C) 139/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल ११०२४/९२
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू (सी०) १३९/९२

चुनाव समाचार

आयवीर दल प्रान्तीय समिति हिमाचल प्रदेश

सरक्षक श्री कृष्णचन्द्र आय प्रमुख सचालक—श्री रामान द आचाय प्रा तीय सचालक—श्री सूय देव शास्त्री सह सचालक—श्री स्वणदास बटोहा अधिष्ठाता—श्री भगवान देव चत य बौद्धिक अध्यक्ष—श्री आचाय शा त शर्मा शारीरिक शिक्षा अध्यक्ष—श्री मदन लाल आय कोषाध्यक्ष—श्र आचाय हस सचिव—श्री डा० कम सिंह आय

नगर आय समाज साहबगज गोरखपुर

प्रधान—प्रो० सत्यदेव आर्य उपप्रधान—श्रीमती सावित्री देवी मनोरमा लोहिया विमला देवा श्री किशन प्रसाद वर्मा महा म त्री—श्रीमती श्रृ गारवती आर्या सयुक्त म त्री—श्री पारस नाथ गुप्त उप मन्त्री—श्रीमती सरस्वती आर्या

आर्य समाज आदश नगर, जयपुर

प्रधान—श्र रामलाल गुलाटी उप प्रधान—श्री बाबूलाल शर्मा श्री हरिबक्श जागिड मन्त्री—श्री सुनील माटू कोषाध्यक्ष—श्री नाथूलाल शर्मा पुस्तकालयाध्यक्षा—श्रीमती मृदुला सामवेदी

आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी

प्रधान—श्री जगत नारायण मौय उप प्रधान—श्री मवा लाल आय श्री बेचन लाल आय म त्री—श्री श्रीराम शास्त्री कोषाध्यक्ष—श्री बुद्धदेव आय

आर्य समाज गन्नौर शहर हरियाणा

प्रधान—प० जयव देव जतोई वाला उपप्रधान श्री पा पत जी आय, श्री डा० लछमन दास जा मन्त्री—ओम प्रकाश वर्मा उप मन्त्र डा० महेन्द्र जी पहुजा उपाध्यक्ष—श्री प्रताप जी भुटानी

आय समाज (मुलतान) देवनगर

प्रधान डा० रघुवर दयाल जो उप प्रधान—श्री टेक च द दीवान डा० वी० देव म त्री—श्री ब्रज न दन प्रकाश उप म त्री—एन० एस० देसवाल, ब्रिज मोहन शर्मा काषाध्यक्ष—श्री अशोक कुमार गुप्ता पुस्तकालयाध्यक्ष—मा० लाल च द जो

आर्य समाज विवेक विहार दिल्ली ३२

प्रधान पद—श्री डा० कृष्ण गोपाल सैनी मन्त्री—श्रीमती उषा किरण, कोषाध्यक्ष श्री प्रक श न ।थमहाजन

आय कन्या विद्यालय समिति, अलवर

अध्यक्ष—श्री छोटूसिंह एडवोकेट उपाध्यक्ष—कैलाशनाथ भागव एडवोकेट म त्री—श्रीमती कमला शर्मा कोषाध्यक्ष—श्री नन्नीलाल गग एडवोकेट

आय समाज सरदारपुरा जोधपुर

प्रधान—श्री रमेश च द भाटिया उप प्रधान—डा आर पी माथुर श्री मोतीलाल टाक म त्री श्री सुखदेव गोयल

सेवा में—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महादय
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ प्र)

मूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस पटौदी हाऊस दरियागंज नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ फोन ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल १०२४/१–०९२

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५ अंक ४५ | रविवार, ११ अक्तूबर १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्बत १९२७९४०९३

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक— २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की जोरदार माग—

हजार घोडों का सवार धारावाहिक में संशोधन करें

आर्य प्रतिनिधि सभाओं व आर्य समाजों को विरोध पत्र भेजने के निर्देश—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने दूरदर्शन द्वारा निकट भविष्य में दिखाये जाने वाले धारावाहिक "हजार घोडों का सवार" के प्रसारण पर कडी आपत्ति की है। स्वामी जी ने प्रधान मन्त्री श्री पी० वी नरसिंह राव, सूचना व प्रसारण मन्त्री श्री अजीत पांजा एव दूरदर्शन निदेशक को २५ सितम्बर को एक पत्र लिख कर यह मांग की है कि प्रसारण से पूर्व इस धारावाहिक में आर्य समाज सम्बन्धी सभी प्रसगों को तुरन्त निकलवा दिया जाये क्योंकि गलत प्रसंगों को जोडने से धारावाहिक के पट कथा लेखक एव निर्माता ने आर्य समाज की छवि को धूमिल करने का प्रयास किया है।

स्वामी आनन्द बोध ने पत्र मे आगे कहा है कि आर्य समाज ने ही सव प्रथम हरिजनों व दलितों को ऊचा उठाने, छूआछूत मिटाने व समाज में समानता लेने के लिए अनेक उल्लेखनीय कार्य किए हैं। स्वामी जी ने यह भी माग की कि यदि तुरन्त उचित संशोधन नही किया गया तो आर्य समाज देश व्यापी आन्दोलन चलायेगा। मालूम हो कि हिन्दी पाक्षिक मनोरमा के सितम्बर, ९२ के अंक में पेज ९२ पर इस सीरियल का विवरण प्रकाशित हुआ है।

स्वामी जी ने सभी सभाओं एव आर्य समाजों को भी निर्देश दिए हैं कि इस धारावाहिक मे आर्य समाज विरोधी प्रसंगों पर कडी आपत्ति करते हुए अपना विरोध प्रकट कर सरकार से संशोधन की जोरदार मांग करे

फीजी की संसद् में हिन्दी में विधेयक प्रस्तुत किये जाते हैं

नई दिल्ली २८ सितम्बर भारतीय जन सचार सस्थान में हिन्दी पत्रकारिता पाठ्यक्रम के संस्थापक अध्यक्ष डा० रामजी लाल जांगिड ने कहा कि हिन्दी का विदेशों में बहुत सम्मान है परन्तु अपने ही देश में वह निर्वासित सा जीवन जी रही है। श्री जांगिड आज भीमराव कालेज द्वारा हिन्दी पखवाडे के उपलक्ष्य में आयोजित एक सगोष्टी में बोल रहे थे।

डा० जांगिड ने आगे कहा कि फीजी ससद् में तो विधेयक तक हिन्दी मे प्रस्तुत किये जाते हैं। विदेशों में आज हिन्दी सीखने के लिए लोग प्रयासशील हैं। उन्होंने यह भी कहा कि यह अजीब बात है कि अपने ही देश में राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए आन्दोलन करने पड़ते हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो० सुरेशचन्द गुप्ता ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डा० गुप्ता ने कहा कि देश के आज अनेक प्रतिभ शाली युवक व युवतिया अग्रेजी के वचस्व व प्रभाव क कारण पिछड रहे हैं। कालेज के प्राचाय डा० प्रेमचन्द पातजलि ने अग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करने पर बल दिया।

हिन्दी में जिरह करने की मांग नहीं मानी तो वकील आन्दोलन करेंगे

नई दिल्ली २२ सितम्बर विगत मास निचली अदालतो के वकीलो की एक बैठक हुई। एसोसिएशन की समन्वयन समिति की बैठक मे दिल्ली बार एसोसिएशन नई दिल्ली बार एसोसिएशन, शाहदरा बार एसोसिएशन तथा कश्मीरी गेट एसोसिएशन के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

बैठक में यह निर्णय लिया गया है कि यदि सरकार ने १ नवम्बर, ९२ तक दिल्ली उच्च न्यायालय में मुकदमों की हिन्दी में जिरह करने की माग स्वीकृत नही की तो निचली अदालतों के वकील आन्दोलन चलायेंगे।

हिन्दू समाज आर्य समाज का सदैव ऋणी रहेगा

चम्बा २७ सितम्बर हिन्दू समाज आर्य समाज का सदैव ऋणी रहेगा क्योंकि आर्य समाज ने अछूतोद्धार एव नारी जाति के उत्थान के लिए सुधारात्मक आन्दोलन चलाने के साथ-साथ अन्ध विश्वासो के विरुद्ध भी सघर्ष का बिगुल बजाया था। ये उद्‌गार हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री वीरेन्द्र वर्मा ने १५ दिवसीय गायत्री महायज्ञ के समापन समारोह मे व्यक्त किए। श्री वर्मा दयानन्द मठ चम्बा के वार्षिकोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे।

समारोह की अध्यक्षता हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने की एव यति मण्डल के प्रधान स्वामी सर्वानन्द ने आशीर्वचन दिए। हवन यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए श्री वर्मा ने करतल ध्वनि के बीच बताया कि राजभवन मे उनके द्वारा प्रतिदिन यज्ञ किया जाता है और उनके गाव मे भी ४ परिवारो मे रोज यज्ञ होता है। श्री वर्मा ने आगे कहा कि मेरे जीवन मे यदि कोई छोटी सी भी अच्छाई है तो वह केवल आर्य समाज की ही देन है तथा जो भी बुराइया नजर आती है वे राजनीति के कारण हैं। मैं मैं दयानन्द के सैनिक की तरह आर्य समाज का काम करने को प्रयासशील रहता हू।

इसस पूर्व श्री वीरेन्द्र वर्मा गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति मे सपत्नीक सम्मिलित हुए एव ११०० रुपये यज्ञ हेतु दान दिए।

सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने आर्य जनो को सम्बोधित करते हुए बताया कि स्वामी सर्वानन्द जी ने हिमाचल प्रदेश के सुरम्य क्षेत्र मे इस दयानन्द मठ की स्थापना कर ऋषि परम्परा को आगे बढ़ाया है।

कार्यक्रम मे गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री सुभाष विद्यालकार सस्कृत महाविद्यालय शिमला के आचार्य रामानन्द, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के न्याय सभा संयोजक श्री विमल वधावन एव उपप्रधान श्री सत्यानन्द मुजाल आदि विभिन्न राज्यो के गणमान्य महानुभावों के अतिरिक्त भारी सख्या में आर्य जन समारोह में उपस्थित थे।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

स० सम्पादक— विमलकान्त शर्मा

रामायण के स्थानों का भौगोलिक परिचय

—श्री क्षितीश वेदालंकार

[मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र की और रामायण कथा की ऐतिहासिकता को तब तक ठीक ढंग से हृदयंगम नहीं किया जा सकता जब तक वाल्मीकि रामायण में आने वाले स्थानों का भौगोलिक परिचय न हो। रामायण में आये स्थानों का परिचय यहां दिया जा रहा है। कई स्थानों के परिचय के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद हो सकता है। पर इस विवरण से इतना अवश्य स्पष्ट हो जायेगा कि उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक भारत के भूगोल से और उसकी आत्मा से श्रीराम किस तरह जुड़े हुए है।]

अगस्त्य आश्रम—नासिक से दक्षिण पूर्व में २४ मील दूर।

आनर्त—उत्तरी गुजरात।

अंग—गंगा के दक्षिण-उत्तर स्थित बिहार का पूर्वी भाग।

अवन्ती—मालवा की प्राचीन राजधानी, उज्जैन।

अयोध्या—सरयू के दक्षिण तीर पर अवध की पुरानी राजधानी।

भारद्वाज आश्रम—प्रयाग में त्रिवेणी के निकट स्थित स्थान।

बिन्दुसार—गंगोत्री से दो मील दक्षिण में स्थित ताल जहां भागीरथ ने तपस्या की थी।

ब्रह्मावर्त—सरस्वती और दृषद्वती (सिन्धु और ब्रह्मपुत्र) के बीच का प्रदेश।

चन्द्रभागा—चिनाब नदी जो चन्द्रा और भागा नामक दो धाराओं से मिल कर बनती है।

चर्मण्वती—चम्बल नदी।

चम्पा—भागलपुर के निकट अंगदेश की राजधानी।

चित्रकूट—बुंदेलखंड में कामतानाथ गिरी जो मंदाकिनी (पयस्विनी) के तट पर स्थित है।

दक्षिणापथ—दक्षिण भारत नर्मदा के दक्षिण का प्रदेश।

दण्डकारण्य—चित्रकूट से गोदावरी (पार्जिटर के अनुसार बुंदेलखण्ड से कृष्णा नदी तक, फैला जंगल प्रदेश।) अन्य नाम जनस्थान बस्तर रियासत जो अब मध्य प्रदेश का आदिवासी इलाका है।

धर्मारण्य—मगध (दक्षिणी बिहार) में स्थित अरण्य।

गान्धार—काबुल नदी का तटवर्ती प्रदेश जिसमें रावलपिण्डी और पेशावर के जिले शामिल थे। इसी प्रदेश की होने के कारण धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी कहलाई।

गौतम आश्रम—जनकपुर (तिरहुत) से २४ मील दूर पर अहियारी गांव के पास अहल्या स्थान।

गिरिव्रज—राजगृह जो महाभारत के समय जरासन्ध की राजधानी था। बौद्ध साहित्य में भी प्रसिद्ध।

गोशृंग—गंगोत्री से १४ मील पर गोमुख।

हस्तिनापुर—कौरवों की राजधानी मेरठ से २२ मील पर स्थित स्थान।

हिरण्यवाह—सोन नदी।

इक्षुमती—कालिंदी नदी जो कुमायूं, रुहेलखण्ड और कन्नौज क्षेत्र से होकर बहती है।

इन्द्रप्रस्थ—दिल्ली का पुराना नाम।

इरावती—रावी नदी।

कालिंदी—यमुना।

कलिंग—उड़िसा के दक्षिण और द्रविड़ देश के उत्तर में स्थित प्रदेश।

कामरूप—असम।

कम्बोज—हिन्दुकुश और काश्मीर के उत्तर में पामीर का प्रदेश।

काम्पिल्य—कम्पिल, फर्रुखाबाद जिले में फतेहगढ़ से २८ मील दूर उत्तर पूर्व में स्थित स्थान।

कांची—कांजीवरम, द्रविड़ देश की प्राचीन राजधानी।

कान्यकुब्ज—कन्नौज, गाधिपुत्र विश्वामित्र का जन्म-स्थान।

कर्णाट—कर्नाटक।

कारुपथ—सिन्धु के पश्चिमी तट पर अटक के पास काला बाग नामक स्थान (अब पाकिस्तान में।)

कौशाम्बी—इलाहाबाद से ३२ मील दूर, यमुना के दक्षिण तट पर कोसम ग्राम।

कौशिकी—कोशी नदी बिहार।

केकय—चिनाब और झेलम का मध्यवर्ती प्रदेश, कैकेयी का जन्म स्थान (जम्मू-कश्मीर) में।

केरल—मालाबार तट।

किरात—भारत का पूर्वोत्तर भाग, नेपाल।

कोसल (उत्तर)—अवध।

कोसल (दक्षिण)—छत्तीसगढ़।

कृष्णवेणी—कृष्णा और वेणी नदी की संयुक्त धारा।

कुरु-जांगल—पांचाल के पश्चिमोत्तर में सम्भवत कुरुक्षेत्र और थानेसर वाला हरियाणा क्षेत्र।

लंका—सिंहल द्वीप कइयों के मत में मध्यप्रदेश में अमरकंटक, मैडागास्कर, आस्ट्रेलिया या अरब सागर में स्थित मालदीव टापू।

लवपुर—लाहौर जिसे श्रीराम के पुत्र लव ने बसाया था अब पाकिस्तान में।

लौहित्य—ब्रह्मपुत्र नदी।

मधुमन्त—दण्डकारण्य।

मधुपुरी—मथुरा जिसे शत्रुघ्न ने बसाया था।

मध्यदेश—हिमालय और विन्ध्य का मध्यवर्ती प्रदेश—

मद्र—रावी और चिनाब का मध्यवर्ती प्रदेश अब पाकिस्तान में।

मगध—दक्षिण बिहार जिसकी पश्चिमी सीमा सोन नदी है।

मागधी—सोन नदी।

महेन्द्र पर्वत—पूर्वी घाट।

माहिष्मती—महेश्वर, नर्मदा के दक्षिणी तट पर इन्दौर से ४० मील दक्षिण में स्थित।

महोदधि—बंगाल की खाड़ी।

महोदय—कन्नौज।

मलयगिरि—पश्चिमी घाट का दक्षिणी भाग।

मालिनी—सरयू की सहायक नदी चूका जहां कण्व ऋषि का आश्रम था।

मल्लदेश—मुलतान, जिसे लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु ने बसाया था। कुछ लोग मुलतान को प्रह्लाद द्वारा बसाया मानते हैं अब पाकिस्तान में।

माल्यवान—तुंगभद्रा के तट पर अनागुंडी पर्वत।

मन्दाकिनी—ऋक्षवान् पर्वत से निकल कर चित्रकूट से होती यमुना में मिलती है। अन्य नाम पयस्विनी।

मत्स्य—अलवर भरतपुर।

मिथिला—जनकपुर, तिरहुत (उत्तर बिहार)।

नैमिषारण्य—नीमसर (गोमती के तट पर सीतापुर से २० मील और लखनऊ से ४५ मील उत्तर पश्चिम में स्थित)।

नलिनी—पद्मा या ब्रह्मपुत्र।

नन्दि ग्राम—अवध में फैजाबाद से ९ मील दक्षिण में नन्द गांव।

पम्पा—हम्पी (कर्नाटक) के उत्तर में एक सरोवर इसी नाम की नदी भी है।

पांचाल—रुहेलखण्ड, गंगा से हिमालय की तलहटी तक फैला प्रदेश। द्रौपदी इसी प्रदेश की होने के कारण पांचाली कहलाई।

पंचवटी—नासिक।

पाण्ड्य—तिन्नवेली और मदुराई जिला, तमिलनाडु।

पर्णाशा—बनास नदी।

पावनी—घग्गर नदी।

प्राग्ज्योतिषपुर—गौहाटी, असम की राजधानी। (क्रमश)

साप्ताहिक ओ३म कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

विजयादशमी आज के सन्दर्भ में



विजयादशमी का भारतीय सस्कृति मे विशेष महत्त्व है। यह पर्व लोकचित्त की उमग का उत्सव है। यह उमग सतत एव शाश्वत है। राम-रावण युद्ध में राम की विजय असद् वृत्तियो के ऊपर सद् वृत्तियों की विजय है। असद् वृत्तियों की लका को जलाए बिना चित्त राम को चैन नही पडता। लोक शक्ति की सीता को मुक्ति दिलाने मे ही उसका जीवन-सौंदर्य है। सीता नारी की मर्यादा है, पवित्रता है, सचित तप की जीवन अग्नि है। राम-सीता का हम सभी साथ देते हैं और रावण का विरोध करते हैं। राम सीता का साथ देने का अर्थ है दस इन्द्रियों वाले रावण को मार कर, मन की कर्मभूमि से विकृतियों-वासनाओं-छलनाओं, मायावी शक्तियों का सफाया करना, सताए गए मानवो—तपस्वियो भयभीत प्राणियों का साथ देना। साम्राज्य वादियों उपनिवेशवादियो के रावणो को मार कर जन शक्ति की सीता को हर कीमत पर बचाना। विजया दशमी इसी दृष्टि से केवल राम की नहीं पूरे भारत की विश्व दृष्टि की विजय का प्रतीक है भले मनुष्य की रक्षा के लिए राम निरन्तर उद्वेलित हैं। वे धनुष बाण लेकर वन मे चलते हैं। उनके साथ जीवन की गरिमा, लोक की गरिमा सीता चलती है। उनके साथ तेज की ज्योति लक्ष्मण चलाते हैं।। सीता को यदि रावण हर ले जाता है, लोक शक्ति को यदि कोई उपनिवेशवादी हर लेता है, तो वे शक्तिशाली—राजाओं—अमीरो से सहायता नही मागते। वे जनशक्ति को सगठित करते हैं। वे स्वय अपने बल पर जन जन की, कोल किरातों की सेना, वानरों की सेना बनाते हैं ? वे विपत्ति के सागर पर पुल बनाने वाले नल-नील की कला पर भरोसा करते हैं। वे जन-जन की शक्ति से सम्पन्न हनुमान को सागर पार भेजते हैं। पर हित निरत, विनयशील, पौरुष की साधना से परिपूर्ण हनुमान ही सीता को खोज सकते हैं। महावीर हनुमान ही भारतीयता की अक्षय अटल, उदात्त शक्ति हैं। निष्ठा की निष्कम्प दीपशिखा को हनुमान बुझने नही देते। इस प्रकार विजयादशमी विश्व सौन्दर्य की आद्या शक्ति का विस्फोट है—असद् पर सद् की विजय है।

पश्चिम की नस्ल परक राष्ट्रीयता और सडती आधुनिकता के शिकार लोगो को विजयादशमी का यह सांस्कृतिक और सामाजिक अर्थ समझ ही नही आता। उनकी भटकी विकृत बुद्धि इसे एक हिन्दू पर्व कह कर ही टाल देती है। उन्हें विजयादशमी हिन्दू सम्प्रदाय की विजय यात्रा लगती है। पर ऐसा नही है, यह तो एक अनुष्ठान है। यह तो कार्य करने के लिए पण का अवसर है। पतित पावन सीताराम' का गाँधी मत्र हम भूल गए है। आज हम पश्चिम से माग कर खाने वाले भिखारी हो गए। हमने राम का मुकुट गिरवी रख दिया है। हम जन शक्ति को सगठित करने के स्थान पर शक्तिशाली और अमीर के सामने भीख का कटोरा फैलाने लगे हैं। हमारे तेजस्वी लक्ष्मण का तुणीर खाली हो गया है। हमारी जन सस्कृति रूपी सीता तडप रही है।

विजय दशमी का पर्व हम इसलिए मनाते है कि हमारे समाज के सभी वर्ण एक साथ मिल कर लोक शक्ति की आराधना कर। यह प्राचीन भारत की स्मृति के स्मरण का दिवस है। इस अवसर पर प्राचीन भारत मे यज्ञशाला के द्वार यज्ञ मन्त्रो से गूंजते थे, आयुधो को सजाया जाता था, व्यापारिक कार्य प्रारम्भ किए जाते थे। 'शक्ति रहे' इस भाव से दिग्विजय यात्रा का महाभाव दुहराया जाता था। विदेशी सोना बह कर भारत को भर देता था, पर अग्रेजों ने हमे मात्र खेतिहर बना दिया। हमारा स्वत्त्व छीन लिया। हमारा बुद्धि कौशल छीन लिया। यह पर्व दस दिन तक मनाया जाता है ताकि हमारा विजय ध्वज दसो दिशाओ में फहराता रहे। विजयादशमी का भाव लोक मगल की आराधना में है। भारत माता की सम्पूर्णता का भाव बिम्ब और जातीय अस्मिता का सामूहिक मन लिए हुए यह पर्व राष्ट्रीय पर्व है। इसमें सास्कृतिक एकता का अमृततत्त्व दर्शन देता है—हमारी भावात्मक एकता के सूत्र कितने गहरे रहे हैं—विजयादशमी उसी का स्मृति बिम्ब है।

युगो की भाव-ज्ञान साधना ने भाव-नायक राम को आकार दिया है। राम की विजय में ही हमारी विजय है। असत्य के ऊपर सत्य की विजय हो यही विजयादशमी का सन्देश है।

—डा० धर्मपाल

सम्पादक के नाम पत्र

हिन्दी विशेषाक अत्यन्त सराहनीय है

आर्य सन्देश का हिन्दी विशेषाक अत्यन्त सराहनीय है, आपको बधाईया और हार्दिक धन्यवाद।

विशेषकर आपका सम्पादकीय लेख प्रेरक और उत्साहजनक है—हिन्दी को व्यवहार एव राजकाज की एक मात्र भाषा स्वीकार कर लेनी चाहिए। अनुरोध है कि आर्य सन्देश के माध्यम से सदैव आप यह सूत्र वाक्य देते रहें और हिन्दी व्यवहार के स्नेह सहित आप —सरकार तथा जन सामान्य को जगाते रहे यही मेरी हार्दिक अभिलाषा है।

रमाकान्त भारती
एम० ए० बी० एम० जे० डी० अनुसधानकर्ता और पत्रकार
एन ५२५ सेक्टर ९ आर० के० पुरम नई दिल्ली

अनुकरणीय विशेषाक

आपके साप्ताहिक आर्य सन्देश का हिन्दी विशेषांक वास्तव में अनुकरणीय एव प्रशसनीय कार्य है तदर्थ आपको बहुत बहुत धन्यवाद, विशेषत आपके सहयोगियो को तो और भी धन्यवाद स्वीकारना चाहिए।

सोहनपाल सीएल
कनवरीगज, अलीगढ

हिन्दी विशेषांक जागरूकता का परिचायक है

आर्य सन्देश के 'चमूपति अक' व हिन्दी अक सुकार्य व जागरूकता के परिचायक हैं।

इस श्रमसाध्य सराहनीय कार्य के लिए बहुत-बहुत बधाई।

श्री अजय भल्ला, पूर्व प्रधान
आर्य समाज करोल बाग नई दिल्ली ५

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली

का १७वां वार्षिकोत्सव

दिनांक—१६, १७, १८ अक्तूबर १९९२ शुक्रवार, शनिवार, रविवार

स्थान—आर्य समाज मन्दिर १५ हनुमान रोड नई दिल्ली

१६ अक्तूबर १९९२ प्रात १० बजे लाला भागमल स्मारक भाषण प्रतियोगिता —महर्षि दयानन्द राष्ट्र निर्माता, आर्य महिला सम्मेलन दोपहर १२ से ५ बजे तक

१७ अक्तूबर १९९२ प्रात १० बजे वेद सम्मेलन
आज के सन्दर्भ मे वेदो की व्यावहारिकता

१८ अक्तूबर १९९२ प्रात १० बजे सस्कृति रक्षा सम्मेलन

आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है।

रामसूर्ति कंला	रतनलाल सहदेव	वेदव्रत शर्मा
प्रधान	स्वागताध्यक्ष	मन्त्री

भारत एवं इंडोनेशिया में सांस्कृतिक समानताएं

इंडोनेशिया के बाली द्वीप में प्रथम मिलन पर अभिवादन में बोला जाने वाला वाक्य है 'ओ३म् स्वस्ति अस्ति'। वहां प्रत्येक व्यक्ति इसी वाक्य के उच्चारण के साथ कार्य का श्रीगणेश करता है और समापन पर 'ओ३म् शान्ति शान्ति का।' वहां भी भारत के समान करबद्ध अभिवादन की परिपाटी है। बाली निवासी बाएं हाथ से किसी से कोई वस्तु नहीं लेते या देते हैं और बाये हाथ से किसी की ओर संकेत किया जाना शत्रुता का परिचायक माना जाता है। हाल में बाली की यात्रा से लौटे एक पत्रकार ने यह जानकारी अपने एक लेख में दी है।

रामचरित के स्वर—उत्तर भारत में विजयादशमी के अवसर पर नगरों में रामलीला का मंचन किया जाता है, जबकि बाली द्वीप में श्री रामचरित की प्रस्तुति वहां का आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम है। राम-वनवास सीता-हरण, जटायु-रावण युद्ध, हनुमान-मिलन, सीता की खोज और लंका दहन तथा रावण वध का जीवन्त अभिनय बाली के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आकर्षक और अविभाज्य अंग है। रामायण के इन प्रकरणों की मंच पर प्रस्तुति हिन्दू धर्मावलम्बियों के साथ ही मुस्लिम कलाकार भी करते हैं। बाली द्वीप की कुल २० लाख की आबादी में से ६० प्रतिशत से अधिक हिन्दू हैं।

मन्दिरों का द्वीप की संज्ञा—बाली को मन्दिरों का द्वीप भी कहा जाता है। वहां बने मन्दिर अति प्राचीन हैं, जिनमें शिव, शक्ति और विष्णु मन्दिरों की संख्या अधिक है। इनमें सामूहिक उपासना होती है तथा मंत्रोच्चारण संस्कृत में ही होता है। संस्कृत का प्रभाव केवल बाली ही नहीं अपितु सारे इंडोनेशियाई निवासियों के नामों से ही स्पष्ट हो जाता है। वहां के राष्ट्रपति मजहब से मुसलमान हैं किन्तु उनका नाम सुहार्तो है। उपराष्ट्रपति सुधमनो भी मुस्लिम हैं। इंडोनेशिया की विमान 'गरुड इंडोनेशिया' कहलाती है। इंडोनेशिया की संसद दीवारों पर रामायण के चित्रों का अंकन वहां की संस्कृति पर राम के प्रभाव को दर्शाता है। सामान्य जन निजी स्तर पर अपने-अपने मजहब से जुड़े हैं, पर सामूहिक और राष्ट्रीय स्तर पर यह संस्कृति ही वहां की मूलधारा कही जा सकती है।

हिन्दू महात्माओं की प्रेरणा—बाली द्वीप की हिन्दू आबादी के सम्बन्ध में एक और उल्लेखनीय तथ्य यह है कि वे लोग भारतीय मूल के नहीं हैं, अपितु इंडोनेशियाई ही हैं, जिनके पूर्वजों ने सैकड़ों वर्ष हिन्दू धर्म अंगीकार किया था। उनकी मान्यता है कि कई हजार वर्ष पूर्व महर्षि मार्कण्डेय ऋषि अगस्त, बाली, जावा तथा सुमात्रा आये थे। उनके तपस्वी जीवन और आध्यात्मिकता से प्रेरित होकर ही वहां के निवासियों ने हिन्दू धर्म की दीक्षा ली थी। उनका यह भी दावा है कि हमारा मजहब या उपासना पद्धति हमारी नागरिता को प्रभावित नहीं करती।

इस द्वीप की एक विशेषता यह भी है कि वहां व्यवस्था का आधार गुण, कर्म स्वभाव है जिसकी व्याख्या गीता में की गई है। उस वर्ण व्यवस्था में वर्ष के आधार पर भेदभाव और ऊंच नीच के लिए तो कोई स्थान है ही नहीं।

शूद्र पिछड़ा वर्ग नहीं—अपने व्यवसाय और कार्य के आधार पर ब्राह्मण की भावी सन्तान क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र भी हो सकती है किन्तु बाली की सामाजिक व्यवस्था में शूद्र पिछड़ा या अछूत वर्ग नहीं माना जाता। वहां जो नौकरी अथवा अन्य सेवा कार्य करता है वही शूद्र कहलाता है। बाली की सामाजिक व्यवस्था के जानकारों के अनुसार वहां शूद्र और ब्राह्मण दोनों को प्रतिष्ठा प्राप्त है। विवाहों के मामले में भी वहां किसी का वर्ण आड़े नहीं आ पाता। वर्ण व्यवस्था के गुण कर्म पर आधारित होने के कारण उसमें सामाजिक भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं है।

बाली की वर्ण व्यवस्था की एक और विशेषता यह है कि वहां जातियां नहीं हैं। वहां शिव, वैष्णव और शक्ति तथा मुसलमान तो हैं परन्तु साम्प्रदायिकता बोध नहीं है। वे स्वयं को एक इकाई अर्थात इंडोनेशियाई राष्ट्र का अविभाज्य अंग मानते हैं। वहां के सभी नागरिकों के लिए राम उनकी संस्कृति के प्रेरणा पुरुष हैं तो श्रीकृष्ण में भी उन्हें आस्था है।

पुनर्जन्म में आस्था—बाली निवासी हिन्दुओं की भी पुनर्जन्म में आस्था है, किन्तु उनकी यह भी मान्यता है कि केवल बालीवासियों को ही अगले जन्म में फिर से इसी द्वीप में जन्म लेने का अवसर मिल पाता है। बाली को प्रकृति ने अपना वरदान प्रदान करने में तनिक भी संकोच नहीं बरता। सागर के मध्य स्थित इस द्वीप में दूर दूर तक फैले धान के खेतों से उठती मोहक सुगन्ध सैलानियों का मन मोह लेती है, तो पीले और श्वेत रंग के पुष्प इसकी छटा को और भी अधिक चित्ताकर्षक बना देते हैं। प्रदूषण रहित वहां का वातावरण अनायास मन में भी आल्हाद के क्षण-भर देता है।

हर घर के आंगन में लगे फूल पौधे भी बालीवासियों की सुरुचि का परिचय देते हैं। इन पुष्पों को देवालयों में समर्पित करना बालीवासियों का नित्य कर्म है। जब वे देव दर्शनार्थ जाते हैं उन सभी के हाथों में पुष्प होते हैं। पुष्पों की टोकरियों को शुभ और कल्याण का परिचायक मानकर लोग अपनी दुकानों और निवासस्थानों के द्वार पर भी उन्हें सजा कर रखते हैं। पुष्पों की तरह बालीवासियों के चेहरे पर मुस्कान भी उनके स्वभाव का अंग बन गयी है।

विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट फल भी बाली की प्राकृतिक सम्पदा की वृद्धि करते हैं। सम्भवतः द्वीप को प्राप्त इसी प्रकृति प्रदत्त वरदान के फलस्वरूप बाली वासियों की यह धारणा बनी है कि अन्य जातियों की अपेक्षा वे स्वर्ग भूमि के अधिक नजदीक हैं।

शिष्टाचार अभिन्न अंग—शिष्टाचार और दूसरे के प्रति सम्मान प्रदर्शित करना बालीवासियों का सहज स्वभाव है अतिथि सत्कार उनका सांस्कृतिक वैशिष्ट्य है। रात को सोते समय वे अपना सिर पूर्व की ओर अथवा पर्वत की ओर रखते हैं, क्योंकि उनकी मान्यता है कि ऐसा नहीं करने पर देवता रुष्ट हो जाते हैं।

बाली द्वीप के गावों में चोरी की घटना की चर्चा शायद ही कभी-कभार सुनने को मिलती हो। ग्रामीण अपने द्वार हर ताला प्रायः नहीं लगाते।

द्वार को बन्द करते हैं तो केवल इसलिए कि कहीं कोई पशु, कुत्ता या बिल्ली उनकी अनुपस्थिति में घर में प्रवेश नहीं कर सके। उनका यह भी विश्वास है कि उनका द्वीप निरापद है। वे स्वयं को देवभूमि का प्रहरी मानते हैं।

—साभार राष्ट्रीय सहारा, ३० सितम्बर, ९२

आर्यसमाज मन्दिर पखा रोड, सी० ब्लाक, जनकपुरी

१३ अगस्त को रक्षाबन्धन तथा २१ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाया गया।

आर्य समाज मन्दिर सान्ताक्रुज, मुम्बई

९ अगस्त से १६ अगस्त, तक वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस दौरान श्रावणी उपाकर्म तथा यज्ञोपवीत परिवर्तन भी श्रद्धापूर्वक किया गया। ६ अगस्त को वृष्टियज्ञ के फल स्वरूप बारिश भी हुई। १५ अगस्त को बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओमकार नाथ आर्य ने ध्वजारोहण भी किया।

आर्य समाज, आर्यनगढ (आजमगढ़) उत्तर प्रदेश

१३ से १७ अगस्त ९२ तक वेद कथा के अधीन प्रतिदिन प्रातः व रात्रि आचार्य प्रेम भिक्षु जी की कथा एवं सत्य प्रकाश के भजनोपदेश होते रहे। १७ अगस्त को महिला जागृति हेतु महिला सम्मेलन भी हुआ।

वेदोपदेशक विद्यालय, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश

ब्रह्मकुटी वेद मन्दिर में श्रावणी पर्व पर उपनयन तथा वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ। कुलाधिपति प० ब्रह्मदत्त प्रकाश शास्त्री तथा अधिष्ठाता स्वामी वेदानन्द ने ब्रह्मचारियों का आशीर्वाद दिया।

आर्य समाज सरदारपुरा, जोधपुर

१३ अगस्त को श्रावणी पर्व व वेद प्रचार कार्यक्रम डा० फतहसिंह पूर्व निदेशक, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान की अध्यक्षता में धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

वैदिक विद्वान् पं० सत्यव्रत विद्यालंकार नहीं रहे

—क्षितीश वेदालंकार

यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा—ससार का सबसे बडा आश्चर्य क्या है? युधिष्ठिर ने उत्तर दिया—

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्तीह यमालयम्।
शेषा स्थावरमिच्छन्ति किमाश्चर्यमतः परम्॥

काल का चक्र ही ऐसा है कि रोज प्राणी ससार से विदा होते हैं, फिर भी मनुष्य की जिजीविषा इतनी प्रबल है कि वह मृत्यु की छाती पर पाव रखकर भी जीने की इच्छा करता रहता है। काल का चक्र यद्यपि किसी को नहीं छोडता-न योगियों को, न सन्त महात्माओं को, न राजाओं को, और न बडे से बडे अपने समय के महान राजनैतिक नेताओं को। एक दिन सबको जाना ही होता है। धीरे धीरे सब स्मृति शेष होते जाते हैं।

सर्वं यस्य वशादगात् स्मृति पथ कालाय तस्मै नमः।

अनेक पुरस्कारों से आदृत और राष्ट्र विद्वान के रूप मे सम्मानित अपन जीवन में लगभग साठ ग्रन्थों के रचयिता वैदिक विद्वान् श्री प० सत्यव्रत सिद्धातालकार भी अब स्मृति शेष हो गये। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द महाराज ने गुरुकुल के जिन स्नातकों को अपने उपदेशों और अपने आचरण से एक खास साचे मे ढाल कर तैयार किया था। उन स्नातकों की पीढी का एक जाज्वल्यमान नक्षत्र प० सत्यव्रत सिद्धातालकार के रूप में इसी १३ सितम्बर को अस्त हो गया।

सत्यव्रत जी अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक जिस प्रकार सक्रिय रहे उसे देखकर उनकी कार्य क्षमता पर आश्चर्य होता है। उनके अन्दर एक आग थी जो दिन रात उनको कुछ न कुछ लिखने और करने के लिये प्रेरित करती रहती थी। अपने देह विलय के कुछ समय पूर्व तक भी वे जितने सक्रिय रहे वह आश्चर्य जनक है। उन्होंने होम्योपैथी पर पुस्तके लिखी जो सारे देश मे समादृत हुई। उन्होंने मनोविज्ञान और समाज विज्ञान पर हिन्दी में स्तरीय पुस्तकें लिखीं जबकि लोग यह समझा करते थे कि इन विषयों की पुस्तके तो केवल अग्रेजी मे ही लिखी जा सकती हैं। सत्यव्रत जी का जीवन बहुआयामी था वे हिन्दी सस्कृत और अग्रेजी तीनो के समान रूप से लेखक और वक्ता थे। उन्होंने अग्रेजी मे अपनी जीवनी भी लिखी थी जो डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति से प्रकाशित हुई थी। ऊपर हमने उनके अन्दर की जिस आग का उल्लेख किया है, उसका आभास स्वय उन्होने अपने उपनिषद प्रकाश 'नवग्रन्थ को भूमिका" में किया है। उस भूमिका के अन्तिम अनुच्छेद मे वे लिखते है—"मैंने अभी तक वदिक साहित्य पर बहुत कुछ लिखा है। अब मैं जीवन के ८३ वर्ष पूरे कर ८४वें वर्ष मे प्रवेश कर रहा हू। कौन जानता है जीवन कितना शेष है। सोचता हू जितना समझा है, जाना है, उसे मानव समाज के हित के लिये पीछे छोड जाऊ। किसका काम पूरा हुआ है पर फिर भी रात रात जागकर जो कुछ अधूरा है, उसे पूरा करने की चेष्टा मे लगा हू। ये पक्तियां भी मैं रात के बारह बजे लिख रहा हू। जिस भावना से मेरी लेखनी को विराम नहीं मिलता उस एक कवि ने बडे मार्मिक शब्दो में रख दिया है—

शमा के मानिन्द जला रहा हू जिन्दगी।
बुझ तो जाऊगा पर सुबह तो कर ही जाऊगा॥

—सत्यव्रत सिद्धातालकार २४-१-१९८१

इससे पहले ८० वर्ष की आयु में उन्होंने "बुढापे मे जवानी की ओर" नामक पुस्तक लिखी थी, जिसमे उन्होंने अपने दीर्घायु होने के अनुभवों के आधार पर अपने चवण सिद्धात का प्रतिपादन किया था। इस सिद्धांत का अभिप्राय यह था कि अपने शरीर के प्रत्येक अग को कम से कम १०० बार रगडा जाये तो उससे शरीर में एक दम नई ताजगी भर जाती है।

ऊपर हमने सन् १९८१ में लिखे एक वक्तव्य का उद्धरण दिया है। परन्तु सत्यव्रत जी तो सन् १९८१ के बाद भी ९७वे वर्ष की आयु तक जीवित रहे।

अन्त में हाल में ही दिवंगत भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति और प्रसिद्ध न्याय वेत्ता श्री हिदायतुल्ला के द्वारा दिये गये बैंजामिन फ्रैंकलिन के इस पद को उद्धरित करना चाहते हैं—

It you would not be forgotton
As soon as you are dead and rottor
Eighter writer thing
worth reading
or do things worth
writing

Benjamin Franklin



सत्यव्रत विद्यालकार

हमारे मित्र श्री दत्तात्रेय तिवारी ने इस कविता का भी अनुवाद करके हमें भेज दिया है जो इस प्रकार है

यदि तुम नहीं चाहते मृत्यु के बाद होना क्षीण
और विस्मृति के गहन गर्त में विलीन।
तो ऐसा कुछ लिखो जो हो पठनीय,
या ऐसा करो जो हो लेखनीय॥

प० सत्यव्रत जी पठनीय भी बहुत लिख गए है और इतना कार्य कर गये है कि आने वाली पीढी उन कामो को लेखनीय भी मानेगी। हमे ऐसे गुरु के शिष्य होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिससे हम अपने आपको धन्य समझते हैं। 'तस्मै श्री गुरवे नमः' अपने गुरु के चरणों में श्रद्धा सहित नमन।

डी-८१, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली

सस्कृत भाषण प्रतियोगिता के छात्र पुरस्कृत

नई दिल्ली २७ सितम्बर दिल्ली प्रशासन की सस्कृत अकादमी द्वारा कल समन्त भद्र सस्कृत महाविद्यालय दरियागज मे आयोजित सस्कृत भाषण प्रतियोगिता के विजेता छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। विजेताओ को ५०० रुपये ४०० रुपये ३०० रुपये २०० रुपये १०० रुपये एव ५० ५० रुपये के कुल २० नकद पुरस्कार, प्रशस्ति पत्र एक स्मृति चिह्न प्रदान कर पुरस्कृत किया गया। इस प्रतियोगिता मे विभिन्न सस्कृत विद्यालयों महाविद्यालय के ५० छात्रों ने भाग लिया।

यह जानकारी अकादमी के सचिव श्री कृष्णदत्त सोमवाल ने दी। समारोह की अध्यक्षता पूर्व महानगर पार्षद डा० प्रशान्त वेदालकार ने की तथा मुख्य अतिथि थे पूर्व कार्यकारी पार्षद श्री कुलानन्द जी भारतीय। उल्लेखनीय है कि सस्कृत अकादमी राजधानी मे सस्कृत के प्रचार-प्रसार व उत्थान के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रही है।

आगमी कार्यक्रम

आर्य लेखक सम्मेलन

कोटा—आर्य लेखक सघ, कोटा के तत्वावधान में ऋषि मेला अजमेर के अवसर पर मेला स्थल पर दिनाक ३० अक्तूबर, को दोपहर ३० बजे और ३१ अक्तूबर शनिवार को प्रात ९ बजे श्री गोपदेव जी दर्शनाचार्य (आन्ध्र) की अध्यक्षता और श्री सत्यानन्द जी आर्य (मन्त्री अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ, दिल्ली) की स्वागताध्यक्षता मे एक 'आर्य लेखक सम्मेलन" का आयोजन किया जा रहा है जिसमे आर्य लेखक सघ का सविधान पारित कर भावी कार्यक्रम और सगठन को सुदृढ बनाने पर विचार किया जाएगा।

अत सभी आर्य लेखक सम्मेलन मे भाग लेकर आर्य लेखको के सगठन को मजबूत बनाये।

तृतीय भारतीय भाषा सम्मेलन

तृतीय भारतीय भाषा सम्मेलन १२ नवम्बर को पटना में आयोजित किया जा रहा है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशानुसार यह सम्मेलन बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में होगा। इस समारोह में दक्षिण भारत के प्रमुख विद्वानो व शिक्षा शास्त्रियों के अतिरिक्त अनेक राजनेता व बिहार के मुख्य मन्त्री लालू प्रसाद यादव भी भाग लेगे। उल्लेखनीय है कि प्रथम भारतीय भाषा सम्मेलन हैदराबाद में दिसम्बर, ९१ तथा द्वितीय दिल्ली में मई, ९२ को हुआ था।

आदर्श-त्रैतवाद-१०

—राजसिंह भल्ला

मुक्ति का साधन ईश्वर

नित्यो नित्याना चेतनश्चेतनानामेको बहूनां यो विदधाति कामान् । तत्कारण साख्योगाधिगम्य ज्ञात्वा देव मुच्यते सर्वपाशै ।। श्वेता० ७।१३

जो अनन्त नित्य चेतनों का—आत्माओ का, नित्य चेतन एक ईश्वर हैं और कामनाओ को पूर्ण करता है उस सांख्य तथा योग से प्राप्त होने योग्य जगत के निमित्त कारण परमेश्वर को जान कर उपासक बन्धनों से मुक्त हो जाता है ।

ज्योति स्वरूप परमेश्वर

न तत्र सूर्यो भाति कुतोऽयमग्नि तमेव भान्तमनु भाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिद विभाति ।। श्वेता० ६।१४

उस प्रकाश स्वरूप भगवान् में सूरज नही चमकता न चाद तारे चमकते हैं न ये बिजुलिया चमकती हैं—तब भला यह साधारण अग्नि कहा से चमके वास्तव में उसही प्रकाशवान्—ज्योति स्वरूप के पीछे सब प्रकाशमय जगत् प्रकाशित हो रहा है । उस भगवान् की ज्योति से ही यह सारा प्रकाशमान जगत् प्रकाशित है । भगवान् ज्योतियों की ज्योति है ।

मुक्ति दाता

एको हसो भुवनस्यास्य मध्ये स एवाग्नि सलिले सन्निविष्ट । तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्य पन्था विद्यतेऽयनाय ।। श्वेता० ६।१५

इस पृथिवि आदि भुवन के बीच विद्यमान एक सर्वज्ञ ईश्वर है वह ही ज्योति है और जल में प्रविष्ट है उसको ही जान कर उपासक मृत्यु को (अति गति) अतिक्रमण—लांघ जाता है । मुक्ति के लिए इसके अतिरिक्त दूसरा मार्ग नहीं है । भगवान् का ज्ञान ही केवल मुक्ति का मार्ग है ।

जगत-कर्ता, स्वज्ञाता, स्वयंभू ज्ञान-स्वरूप काल-कारक सर्वज्ञ ईश्वर

स विश्वकृद्विश्वविदात्मयोनिज्ञ कालकारो गुणी सर्वविद्य । प्रधान क्षेत्रज्ञ-पति गुणेश सस्ार-मोक्ष स्थिति-बन्धहेतु ।। श्वेता०६।१६

जो परमेश्वर प्रकृति और जीवों का स्वामी है सत, रज, तम, इन तीनों गुणों का ईश्वर है, ससार के मोक्ष, स्थिति और बन्ध का कारण है । वह भगवान् विश्व जगत् कर्ता है । जगत् का ज्ञाता है । स्वयभू है । ज्ञान स्वरूप है । काल कारक है । सर्वगुणी है । और सवज्ञ है ।

सर्वज्ञ अविनाशी ईश्वर

स तन्मयो ह्यमृत ईशसस्थोज्ञ सर्वगो भुवनस्यास्य गोप्ता । य ईशे अस्य जगतो नित्यमेव ना यो हेतुर्विद्यत ईशनाय ।। श्वेता० ६।१७

वह परमेश्वर स्व स्वरूपमय है, निश्चय अविनाशी है, ईश्वर भाव में स्थित है, ज्ञान स्वरूप है, सवज्ञ विद्यमान् है और इस जगत् का रक्षक है । जो परमेश्वर सदा ही इस जगत का ईश्वर हो रहा है । उससे भिन्न दूसरा कोई जगत् ईश्वरत्व करने के लिय कारण—समथ नहा है ।

निर्लेप ईश्वर

निष्कल निष्क्रिय शा त निरवद्य निरजनम् । अमृतस्य परमसेतु दग्धेन्धन-मिवानिलम् ।। श्वेता० ६।१९

निश्कल, क्रिया रहित शान्त, परम-पुल मोक्ष के परम पहुचाने वाले और विना धुए की अग्नि (निधम) के समान प्रकाशमान देव को मैं प्राप्त होता हू । उसकी शरण लेता हू । वह अमृत का पुल है ।

दुःख निवारक

यदा चमवद् आकाश वेष्टयिष्यन्ति मानवा । तदा देवमाविज्ञाय दुख-स्यान्तो भविष्यति । श्वेता० ६।२०

जब उपासक—मनुष्य आकाश को—निराकार भगवान् को देह पर जैसे त्वचा लिप्टी हुई है तद्वत् लपेट लेंगे—सब ओर से उसके आश्रय में हो जायेंगे तब देव को भलि भान्ति जान कर उनके दुख का अन्त हो जायेगा ।

सबका स्वामी राजा ईश्वर

स वा अयमात्मा सर्वेषां भूतनामधिपति, सर्वेषा भूताना राजा । तद्यथा रथनाभौ च रथनेभौ चाऽरा सर्वे समर्पिता एवमेवास्मिन् आत्मनि सर्वाणि भूतानि सर्वे देवा, सर्वे लोका सर्वे प्राणा सर्वे एत आत्मान समर्पिता बृहदा० २।५।१६

वह ही ईश्वर सब भूतों प्राणियों का स्वामी है और सब प्राणियों का राजा है । सा जैसे रथ की नाभि में अथवा रथ की नाभि में सारे अरे लगे हुये होते हैं ऐसे ही इस परमात्मा में सारे प्राणी वा तत्व, सारे देव, सारे लोक, सारे जीवन और सब ये मुक्त आत्माए समर्पित है ।

सारा विश्व उसकी इच्छा में और नियति में जड़ा हुआ है ।

सर्व व्यापक ईश्वर

स वा अय पुरुष सर्वासु पूर्षु पुरिशयो नैनेन किंचनानावृत नैनेन किंचना-सवृतम । बृहदा० २।५ १८

वह ही आदि प्रेरक, यह ईश्वर सारे लोकों में पुरिशय-पुरियों मे शयन करने वाला है । इस ईश्वर से कोई भी वस्तु अनावृत-अनाच्छादित नहीं है । इस से कोई भी वस्तु असवृत—बिना घेरे के नही है सब इसके घेरे में हैं । वह ईश्वर सवत्र विद्यमान है ।

अनादि सर्वज्ञ ईश्वर

तदेतद् ब्रह्मा पूर्वमनपरमनन्तरमबाह्यम् । अयमात्मा ब्रह्म सर्वानुभूरित्यनु-शासनम् ।। बृहदा० २।५।१९

और यह वह ब्रह्म है जो अपूर्व है—जिसका कोई पूर्व कारण नहीं है । जो अनादि है अनन्त है । जिसके आदि अन्त और मध्य में कोई नही जो सदा एक रस हैं, जो अबास्य है—यह ही आत्मा परमेश्वर है । और सर्वानुभवकर्ता—सर्वज्ञ है । यह ही आत्मोपदेश है ।

अन्तर्यामी सर्वज्ञ ईश्वर

य सर्वेषु भूतेषु तिष्टन्सर्वेभ्यो भूतेभ्योऽन्तरो य सर्वाणि भूतानि न विदुर्यस्य सर्वाणि भूतानि शरीरम् य सर्वाणि भूतान्यन्तरो यमयत्येव त आत्माऽतर्याम्यमृत ।। बृहदा० ३।७।१५ महर्षि याज्ञवल्क्य कहते हैं—

जो आत्मा परमात्मा सब भूतों में सब प्राणियों में रहता हुआ सब भूतों से बाहर भी है । जिसको ये सब भूत नहीं जानते जिसका शरीर ये सब भूत है । जो भीतर विद्यमान है, सब भूतो को नियम मे रखता है । यह तेरा आत्मा परमात्मा अन्तर्यामी अमृत है यह वर्णित आत्मा अन्तर्यामी विश्व चेतना है । यह अपनी महिमा से सब पदार्थो के भीतर बाहर विद्यमान है । प्रत्येक को भीतर से नियमन तथा सचालन करता है अखिल विश्व इसकी देह है । यह चेतना सारे जगत के समष्टि शरीर का आत्मा है ।

अक्षर असंग निराकार ईश्वर

स होवाचैतद्वै तदक्षर गार्गि ब्राह्मणा अभिभवयस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घम-लोहितमस्नेहमच्छायमतमोऽवाय्वनाकाशमसगमरस-मगन्धम चक्षु कश्कम श्रोत्रम-वागमनोऽतेजस्कमप्राणममुखममात्रमनन्तरमबाह्यम् न तदश्नाति किंचन न तदश्नाति कश्चन । बृहदा० ३।८ ८

याज्ञवल्क्य बोले हे गार्गि ! निश्चय ब्राह्मण लोग यह वह अक्षर कहते हैं आकाश के आश्रय को अ वनाशि वर्णन करते हैं । उस अक्षर को अस्थूल, अनणु अह्रस्व अदीर्घ न लाल, न चिकना, छाया रहित अन्धकार रहित, अवायु, आकाश रहित, असग, रस रहित, गन्ध रहित, मन रहित, अग्नि आदि के ऊष्ण भाव रहित, प्राण रहित, मुख रहित, परिणाम रहित, अन्दर रहित, बाहर रहित ब्राह्मण वर्णन करते हैं । वह अविनाशी कुछ भी नही खाता इसको कोई भी नहीं खाता । यह अविनाशी भगवान् परम शुद्ध स्वभाव और निराकार है । (क्रमश)

सम्पन्न हुए कार्यक्रम

आर्यसमाज डी० एन० पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली

१७ से २३ अगस्त, ९२ तक वेद कथा व जन्माष्टमी महोत्सव मनाया गया। आचार्य रामकिशोर जी शास्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, महामन्त्री डा० धर्मपाल वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार आदि ने प्रेरक विचार रखें।

वेद प्रचार मण्डल यमुना पार क्षेत्र दिल्ली

१५ से २१ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह के अधीन विभिन्न परिवारों में प्रतिदिन यज्ञ होता रहा। श्रावणी उपाक्रम एव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी कार्यक्रम भी मनाया गया।

आर्य समाज मन्दिर शकरपुर, दिल्ली

२१ से २३ अगस्त, ९२ तक वेद प्रचार सप्ताह एव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व धूमधाम से मनाया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री डा० धर्मपाल एवं अनेक विद्वान् वक्ताओं ने विचार रखे।

आर्य समाज देवनगर, नई दिल्ली

१० से १६ अगस्त, ९२ तक श्रावणी पर्व मनाया गया। आचार्य श्याम सुन्दर जी स्नातक की कथा तथा प० सत्यदेव जी स्नातक के भजन हुए। १३ अगस्त को रक्षाबन्धन पर्व भी मनाया गया।

वेद मन्दिर (आर्य समाज ब्रह्मपुरी) भगत सिंह मोहल्ला, न्यू उस्मानपुर, दिल्ली

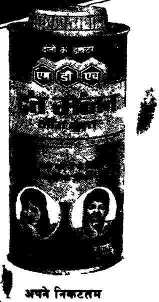
वेद प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत ८ अगस्त से ३० अगस्त ९२ तक वेद कथा होती रही। २१ अगस्त को जन्माष्टमी मनायी गयी।

आर्य समाज जींद

समाज में २१ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री डा० धर्मपाल एव सांसद श्री बी० एल० शर्मा प्रेम ने श्रीकृष्ण के जीवन के प्रेरणा लेने की अपील की।









R.N. No 32387/77 Posted at N D P S O on 8 9-10 1992 Licence to post without prepayment. Licence No. U (C) 139/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल-११०२४/९२
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) १३९/९२

सम्पन्न हुए कार्यक्रम

वेद प्रचार सप्ताह श्रावणी पर्व व श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह सोल्लास मनाये गये

नई दिल्ली राजधानी दिल्ली एव देश के अनेक राज्यों की आर्यसमाजों व सस्थाओ द्वारा वेद प्रचार सप्ताह, श्रावणी पर्व हैदराबाद सत्याग्रह स्वाधीनता दिवस तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी कार्यक्रम धूमधाम से मनाये जाने के समाचार लगातार मिल रहे हैं। आर्य सन्देश के चमूपति विशेषाक एव हिन्दी विशेषाक के कारण ये समाचार इससे पूर्व नहीं प्रकाशित किये जा सके। स्थाना भाव के कारण सक्षिप्त विवरण ही दिया जा रहा है।

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली

१३ से २१ अगस्त, ९२ तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। डा० कृष्ण देव द्वारा प्रतिदिन यज्ञ तथा रात्रि को कथा, स्वामी स्वरूपानन्द के मधुर भजन तथा श्री विजय भूषण के मनमोहक सगीत के कार्यक्रम होते रहे हैं।

१९ अगस्त को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री की अध्यक्षता में हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस का भव्य समारोह हुआ। पं० ब्रह्मदत्त स्नातक जी ने भी रोचक संस्मरण सुनाये।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर २२ अगस्त को ६ कुण्डी महायज्ञ हुआ। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उप कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने यजमानों को आशीर्वाद दिया।

आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली

वेद प्रचार सप्ताह, श्रावणी पर्व एव हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस कार्यक्रम समारोह पूर्वक मनाये गये।

२१ अगस्त को समाज मन्दिर के सभागार में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव पर केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री बलराम जाखड ने कहा कि योगीराज कृष्ण सामाजिक समानता के अग्रदूत थे और पावन ग्रन्थ गीता कर्मयोग पर विशेष बल देता है। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने की। पश्चात वैदिक विद्वान श्री यशपाल सुधांशु, दिल्ली सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, महामन्त्री डा धर्मपाल, प० महेन्द्र कुमार शास्त्री आदि ने श्री कृष्ण के पवित्र जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

आर्य समाज हडसन लाईन (कुग्जवे कैम्प) दिल्ली

२१ अगस्त को समाज मन्दिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में धूमधाम से सम्पन्न हुआ। श्रीमती शकुन्तला दीक्षित, आचार्य सत्यमित्र, समाज के पुरोहित पुरोहित डा० सत्यकाम वेदालकार आदि वक्ताओं ने योगीराज कृष्ण को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उनके पवित्र जीवन से शिक्षा ग्रहण करने का अनुरोध किया। इससे पूर्व वेद कथा होती रही।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (एल १०२४/१-०९२

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १५, अक ४६ | रविवार, १८ अक्तूबर १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्वत १९२७९४०९३

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक— २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

थारू जन जाति का अस्तित्व खतरे मे—

ईसाई मिशनरियों के काले कारनामे

उत्तर प्रदेश के नैनीताल, लखीमपुर, गोंडा, बहराइच, गोरखपुर आदि जिलों में ईसाई मिशनरी अनेक प्रकार के छल प्रपच द्वारा 'थारू' जाति के भोले भाले लोगो का बडी तेजी से धर्म परिवर्तन कर रहे हैं। ईसाई मिशनरी उन गावों में मजमे लगा कर एक पानी भरे टब में हिन्दुओ के देवी देवताओं व ईसा मसीह की जब मूर्तियां रखते हैं तो शेष सब मूर्तियां तो डूब जाती हैं पर विशेष प्रकार की ईसा की मूर्ति तैरती रहती है और इस प्रकार मिशनरी थारू लोगों को शक्तिशाली ईसा की शक्ति का कथित करिश्मा दिखा कर ईसाई बनाते हैं।

अ ध विश्वास व झाड फू क मे विश्वास करने वाले भोले थारू लोगों का धर्म परिवर्तन करने के लिए मिशनरी उन्हे मन्त्र पढ कर तेल देकर भी अपने जाल में फसाते हैं। इतना ही नही युवतिया भी थारू युवकों को अपने प्रेम जाल में फसा कर ईसाई बनाती हैं और बदले में मिशनरी युवतियों को अच्छी रकम देते हैं।

मिशनरी थारू लोगो की धन से सहायता करते हैंऔर अपने जाल मे फसा लेते हैं और जब वे धन नही लौटा पाते तो उन्हे ईसाई बनने को मजबूर किया जाता है।

उल्लेखनीय है कि थारू जन जाति के लोग कट्टर हिन्दू हैं और आज भी अपने बालो में चोटी रखते हैं थारू रण परिषद् ने राष्ट्रवादी हिन्दू सगठनो की मदद से ईसाई मिशनरियों की इन गतिविधियों से चितत हो विरोध करना शुरू कर दिया है। पजाब केसरी के ९ अगस्त के अक मे श्री प्रमोद कुमार द्वारा प्रकाशित इस समाचार विश्लेषण में कहा गया है कि आर्य समाज की मदद से ईसाई बन चुके कई गावों को पुन हिन्दू बना लिया गया है। राष्ट्रवादी सस्था आर्य समाज को ईसाई मिशनरियो के धर्म परिवर्तन के इन कुचक्रो को विफल करने के लिए निरन्तर प्रयास करते रहना चाहिए।

आर्यों के गौरव का प्रतीक—

नवलखा महल २९ नवम्बर को आर्यसमाज को सौंपा जायेगा

युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिस भवन मे बैठ कर कालजयी कृति सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की थी उसे राजस्थान के मुख्य मन्त्री श्री भैरोंसिह शेखावत २९ नवम्बर को एक सम्मेलन मे आर्य समाज को हस्तातरित करेंगे। श्री शेखावत आर्यों के गौरव नवलखा महल की चाबो व सभी कागजात गुलाबी बाग उदयपुर के विशाल सम्मेलन मे सौंपेंगे। आर्य समाज इस पवित्र स्थल को एक भव्य स्मारक म परिवर्तित करने को कृत सकल्प है।

२८-२९ नवम्बर को दो दिवसीय सम्मेलन में बृहद यज्ञ, विशाल शोभा यात्रा, खुला अधिवेशन, विविध सम्मेलन ऋषि लगर का आयोजन किया गया है। ऋषि कृत ग्रन्थ व वैदिक साहित्य भी विपुल मात्रा में उपलब्ध होगा।

सभी आय जन आय प्रतिनिधि सभा, राजस्थान द्वारा सादर आमन्त्रित हैं। ऋषि लगर व यज्ञ के लिए घी, अन्न आदि के अतिरिक्त चैक ड्राफ्ट, धनादेश आदि सभा के नाम भिजवाने की व्यवस्था कराये।

नौवां आर्य युवा महासम्मेलन

नई दिल्ली ११ अक्तूबर राजधानी के स्कूली छात्र व छात्राओ के शारीरिक मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक विकास के लिए गत वर्षो की भाति दिल्ली प्रतिनिधि सभा द्वारा इस वर्ष भी आर्य युवा महासम्मेलन आयोजित किया जा रहा है।

।। कार्यक्रम ।।

७ नवम्बर १९९२ ११ प्रात बजे चित्रकला, वनिबन्ध प्रतियोगिता।

स्थान—रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल वाई ब्लाक, सरोजनी नगर,
नई दिल्ली २३

सयोजक—श्रीमति अनीता कपिला (प्रिसिपल)

१४ नवम्बर प्रात· १० बजे खेल कूद प्रतियोगिता

स्थान—सरआंबा आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, करोल बाग,
नई दिल्ली-५

सयोजक—श्री खुशीराम शर्मा एव श्रीमती सावित्री गाबा

२१ नवम्बर प्रात ११ बजे वाद विवाद प्रतियोगिता

स्थान—बिरला आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, बिरला लाईन्स,
कमला नगर, दिल्ली-७

सयोजक—श्रीमती आदश कोहली, (प्रिसिपल)

२८ नवम्बर प्रात ११ बजे भाषण प्रतियोगिता

स्थान—रघुमल आय कन्या सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल, राजा बाजार, निकट
मद्रास होटल नई दिल्ली-१

सयोजक—श्रीमती चन्द्रा किनरा

पुरस्कार वितरण समारोह १३-१२-९२ प्रात. ९ बजे

अध्यक्ष : श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

प्रधान सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा

मुख्य अतिथि—

स्वागताध्यक्ष—श्री महाशय धर्मपाल

प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली

स्थान—ताल कटोरा इन्डोर स्टेडियम नई दिल्ली

विस्तृत जानकारी के लिए सभा कार्यालय १५ हनुमान रोड अथवा दूरभाष ३१०१५० पर सम्पर्क कर।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

रामायण के स्थानों का भौगोलिक परिचय

—श्री क्षितीश वेदालंकार

(११ अक्तूबर ९२ अंक से आगे)

प्रलम्ब—बिजनौर से ८ मील उत्तर में मडावर।

प्रस्रवण—तुंगभद्रा तटवर्ती पर्वत शृंखला।

प्रयाग—इलाहाबाद।

पुष्कलावती—गांधार की राजधानी। पेशावर से १८ मील दूर आधुनिक चारसद्दा नामक स्थान जहां सीमान्त गांधी खान अब्दुल गफ्फार खां का जन्म हुआ।

राजगृह—दक्षिणी बिहार में मगध की पुरानी राजधानी।

रामगिरि—रामटेक, नागपुर से २४ मील उत्तर में।

रसातल—पश्चिमी तातार प्रदेश जिसमें तुर्किस्तान और कैस्पियन सी (कश्यपसागर) का उत्तरी भाग शामिल था।

रत्नाकर—पश्चिमोदधि या अरब सागर।

ऋष्यमूक—तुंगभद्रा के तट पर अनागुण्डी से ८ मील दूर स्थित पर्वत जहां राम की हनुमान और सुग्रीव से भेंट हुई थी। यही स्थान बाद में (१६वीं १७वीं सदी में) विजय नगर हिन्दू राज्य का केन्द्र बना जिसके भग्न अवशेष आज भी १२ मील तक फैले पड़े हैं।

ऋष्यशृंग आश्रम—भागलपुर से पश्चिम में २८ मील दूर ऋषिकुण्ड।

सानीरा—राप्ती नदी जो सरयू की सहायक नदी है।

सह्याद्रि—पश्चिमी घाट।

शाल्मली—चिनाब की सहायक नदी।

साकाश्य—सीता जी के पितृव्य राजा कुशध्वज की राजधानी इक्षुमती नदी के तट पर संकिशाग्राम।

सरस्वती—घग्घर नदी जो कभी हिसार के पास बहती थी।

सरयू—घाघरा नदी जो हिमालय के आन्तरिक प्रदेश में चौली गंगा कहलाती है।

शतद्रु—सतलज नदी जो मानसरोवर से निकलती है और जिस पर गोविन्दसागर तथा भाखड़ा बांध बना है।

सौराष्ट्र—काठियावाड़।

सौवीर—उत्तर सिन्ध कच्छ और खम्भात की खाड़ी से लगता प्रदेश।

सिद्धाश्रम—स्थित शाहाबाद जिले में बक्सर (बिहार) से पश्चिम की ओर

सिन्धु स ... नद ... आ उसके तटवर्ती उत्तर प्रदेश अब सिन्ध प्रदेश पाकिस्तान में।

श्रावस्ती—राप्ती ... तट ... सहेत महेत ... बौद्ध साहित्य में बहुचर्चित

शृंगवेरपुर—प्रयाग ... १८ मील दूर गंगा के तट पर स्थित सिंगरौर।

सुतीक्ष्ण आश्रम—मन्दाकिनी के उद्गम के आस पास कोई स्थान।

सुमागधा—सोन नदी।

शूर—मथुरा का निकटवर्ती प्रदेश जो शौरसेनी प्रदेश भी कहलाया।

सुवर्णद्वीप—जावा।

स्यन्दिका—गंगा और गोमती के बीच बहती है कोसल देश की दक्षिणी सीमा बनाने वाली सई नदी।

तक्षशिला—भरत के पुत्र तक्ष द्वारा बसाई गई नगरी (अब पाकिस्तान में रावलपिण्डी के पास। यहां का विश्वविद्यालय प्रसिद्ध था)।

तमसा—टोंस नदी जो आजमगढ़ होकर बलिया के पास गंगा में मिलती है।

ताम्रपर्णी—तिन्नवेल्ली में ताम्रवारी नदी।

त्रिकूट—सिंहलद्वीप (सिलोन) का एक पर्वत।

उशीनर—दक्षिणी अफगानिस्तान।

उत्कल—उड़ीसा।

उत्तरकुरु—तिब्बत और पूर्वी तुर्किस्तान।

उत्तरगा—रामगंगा नदी।

वाल्हीक—बलख पश्चिमोत्तर पाकिस्तान।

वाल्मीकि आश्रम—तमसा (टोंस) नदी के तट पर प्रयाग से २० मील दूर। कुछ लोग कानपुर से १४ मील दूर बिठूर को वह स्थान मानते हैं सन् १८५७ में नानाजी पेशवा का यह क्रान्ति केन्द्र रहा।

वनायु—प्राचीन अरब देश

वंग—बंगाल।

वाराणसी—काशी राज्य की राजधानी।

वत्स—इलाहाबाद के पश्चिम का प्रदेश जिसकी राजधानी कौशाम्बी थी

वेदश्रुति—तमसा और गोमती के मध्य बहने वाली अवध में स्थित बेहता नदी।

वेत्रवती—बेतवा नदी।

विदर्भ—बरार जो इस समय महाराष्ट्र का भाग है। महाराज नल इसी प्रदेश के राजा थे।

विदेह—तिरहुत जनक का राज्य।

विदिशा—भेलसा। शत्रुघ्न के पुत्र ने इसे बसाया था। बौद्ध साहित्य में बहुचर्चित भोपाल से लगभग ३० मील दूर

विपाशा—व्यास नदी जो रोहतांग दर्रे से निकल कर कुल्लू होकर बहती है। हिमाचल प्रदेश में इसी पर अब पौंग बांध बन रहा है।

विशाला—हाजीपुर (बिहार) से १८ मील उत्तर में गंडक नदी के तट पर मुजफ्फरपुर के पास। बाद में बौद्ध साहित्य में यही स्थान वैशाली गणराज्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसमें लिच्छवि गण का शासन था।

विश्वामित्र आश्रम—आधुनिक बक्सर के पास कोई स्थान। ●

अन्ध विश्वासों व तान्त्रिकों के कारण आज भी बच्चे मर रहे हैं

नई दिल्ली ७ अक्तूबर। अन्ध विश्वासों व तान्त्रिकों के पाखंडों के विरुद्ध महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सबसे पहले बिगुल बजाया और इनके उन्मूलन के लिए ऋषि ने ... आर्य समाज की स्थापना की थी। स्वामी जी ने इनके विरुद्ध लड़ाई लड़ते लड़ते कष्ट सहते हुए प्राण न्यौछावर कर दिए। तत्कालीन ... परिस्थितियों में ऋषि को कितना संघर्ष करना पड़ा होगा इसका ... चलता है ... आज विज्ञान की उन्नति व शिक्षा के प्रचार के बावजूद ... समाचार पत्रों में अन्ध विश्वासों व तान्त्रिकों ... के कारण अनेक मौत हो रही हैं

अन्ध विश्वास के कारण इस प्रकार की घटना इस वर्ष अगस्त मास में मध्य प्रदेश के सागर शहर के ... गांव में हुई। गांव में मोतीझारा टायफायड खसरा व ... से पीड़ित ६ बच्चों की इस लिए मौत हो गई क्योंकि अन्ध विश्वास ... एक साधु की सलाह पर मन्दिर में पूजा पाठ का तरीका अपनाया और इलाज के लिए डाक्टरों की सलाह को ठुकरा दिया। गांव के लोग खसरा को छोटी माता और टायफायड को बड़ी माता मानते हैं।

दूसरी घटना २९ सितम्बर की है। सहारनपुर के उमराला नामक गांव में रणजीतसिंह के एक आठ वर्षीय बालक ईश्वरसिंह का जब वह रात को रामलीला देख कर लौट रहा था तो दो व्यक्तियों ने उसका अपहरण कर लिया। उस बालक की हत्या कर दी गई क्योंकि एक तान्त्रिक ने रेखा नामक स्त्री को बताया था कि यदि वह चार बालकों की बलि देकर उनके खून में स्नान करे तो उसके बच्चे जो अब मर जाते हैं, भविष्य में जीवित रहेंगे। इस सम्बन्ध में पुलिस ने तान्त्रिक व तीन व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया है इस प्रकार पकड़ जाने से तीन और बच्चों की बलि नहीं दी जा सकी।

साप्ताहिक ओउम् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

मद्य निषेध आन्दोलन



महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना करते समय, सदस्यों के लिए सदाचार को अनिवार्य बताया था और सदाचार की परिभाषा उन्होने इस प्रकार की है—

'सध्या आदि नित्यकम, शुद्ध वृत्ति वैदिक सस्कार पत्नी व्रत वा पतिव्रत आदि सदाचार हैं। व्यमिचार, मादक द्रव्यों और मांस आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन जुआ, चोरी, छल, कपट, रिश्वत आदि दुराचार हैं।' उन्होंने अपने वक्तव्यो तथा लेखों तथा ग्रन्थों में अनेक स्थानो पर इस प्रकार की बुराइयो के विरुद्ध लिखा है। वे एक स्थान पर लिखते हैं कि 'राजाओं को उचित है कि जो मादक द्रव्यो का सेवन करे, उनको अत्यन्त दण्ड देवे।'

आज स्थितिया विषम हो गई हैं। आज सरकार ही मादक द्रव्यो के सेवन को बढावा दे रही है। यदि किसी प्रान्तीय सरकार से पूछा जाए अथवा केन्द्रीय सरकार से ही पूछा जाए कि मादक द्रव्यों तथा मद्यादि की यह खपत क्यो बढ रही है और सरकार इसे प्रोत्साहन क्यो दे रही है तो उनका एक ही उत्तर है कि इससे राजस्व की प्राप्ति होती है और उस धन को सरकार का कम काज चलाने तथा विकास के कार्यों मे खर्च किया जाता है। यदि राजस्व प्राप्त न हो तो सरकार के सभी काय ठप्प हो जायेंगे। कैसी विडम्बना है पराधीन देश मे स्वाधीनता सग्राम के अग्रणी लोगों ने जिन गलत कार्यों को समाप्त करने की प्रतिज्ञा ली थी वे आज वही कर रहे हैं। महात्मा गाधी और अन्य सभी राष्ट्रीय नेता शराब जैसी बुराई को समाप्त करने के पक्षधर थे, पर आज उनके अनुयायी उसे समाप्त करने की बात सोचने मे भी हिचकिचाते हैं? महात्मा गाधी ने तो यहा तक कहा था 'यदि मुझे एक घण्टे के लिए समूचे भारत का डिक्टेटर बना दिया जाए तो मेरा पहला काम होगा, बिना मुआवजा दिए शराब की दुकानो को बन्द कर डालना। मैं सब कारखानेदारो को मजबूर कर दूगा कि वे अपने मजदूरो के लिए माननीय हालात बनायें और उनको निर्दोष पेय तथा उतने ही निर्दोष मनोरजन उपलब्ध करायें।

राष्ट्रपिता के इतने स्पष्ट विचारों के आधार पर ही भारतीय सविधान के निर्माताओं ने सविधान के अनुच्छेद ४७ में मद्य निषेध की भावना को सम्मिलित किया था। पर आज सभी ने इस दूषित राजस्व को कमाने का अन्धी दौड में सविधान की इस पवित्र भावना को भी भुला दिया है। कहा गया है कि जैसा खावे अन्न वैसा हो मन। यदि सरकारी कामकाज मे इस दूषित रुपये का इस्तेमाल होगा, तो इस राजस्व से वेतन पाने वाले के मन क्या दूषित न होंगे? क्या उनके अन्दर भ्रष्टाचार और अनाचार की भावना नही पनपेगी? क्या वे कामचोर नही हो जायेंगे? सभवत इन प्रश्नो पर विचार करने की आवश्यकता सरकारों को नही है।

पिछले दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा ने इस बुराई के खिलाफ आवाज उठाई है। आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली और आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने उनका साथ दिया है। सार्वदेशिक सभा का आशीर्वाद उन्हे प्राप्त है। तीनों सभाओं ने अपने प्रतिनिधियों—प्रो० शेरसिंह, डा० धर्मपाल और स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती के द्वारा २८ जुलाई १९९२ को उच्चतम न्यायालय मे एक याचिका दायर कर दी है। याचिका में मांग की गई है कि सविधान के अनुच्छेद ४७ पर अमल किया जाए। इस अनुच्छेद के क्रियान्वयन न किए जाने के कारण जनसाधारण और विशेषकर गरीब तथा उपेक्षित जनता को अनुच्छेद २१ के द्वारा दिए गए मौलिक अधिकार का हनन हो रहा है।

याचिका पर १२ अगस्त १९९२ को उच्चतम न्यायालय के तीन माननीय न्यायाधीशो—न्यायमूर्ति एस० रगनाथन, वी० रामास्वामी तथा वी० पी० जीवन रेड्डी ने सुनवाई की और आदेश दिया कि केन्द्रीय सरकार तथा सभी राज्य सरकारो को अधिसूचित किया जाये कि वे ४ नवम्बर १९९२ तक अपना पक्ष पेश करे। १९-८-९२ के अपने आदेश में विद्वान न्यायाधीशो ने कहा कि याचिका में वास्तव मे एक महत्वपूर्ण विषय को उठाया गया है। उन्होने यह भी सलाह दी है कि वादी अपने पक्ष मे जनमत तैयार करे तथा जनता को इसकी पूरी जानकारी दे।

आज विभिन्न प्रान्तो मे विभिन्न राजनैतिक दलो की सरकार हैं। यह विडम्बना ही है कि कुछ वर्षों से ये राजनैतिक पार्टिया अपने चुनावी घोषणा पत्रो मे मद्य निषेध जैसे महत्वपूर्ण विषय को सम्मिलित ही नही करती। अब इन सभी पार्टियो का पक्ष भी जनता के सामने आएगा।

अब समय आ गया है कि सभी स्वय सेवी सगठन, तथा धार्मिक एव सामाजिक सगठन इस मद्य निषेध अभियान में सम्मिलित हो जाए। दिल्ली की नशाबन्दी परिषद इस अभियान मे सम्मिलित हो गया है। प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा प्रान्तीय आर्य महिला सभा से भी निवेदन किया गया है कि वे इस अभियान में सम्मिलित हो। आर्य समाज के सभी सगठनो तथा भारतवर्ष की सभी प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ को इस बुराई के खिलाफ लडाई मे साथ आ जाना चाहिए। आर्य जनता से भी अपील है कि वे अपनी सभाओ को इस आन्दोलन मे सक्रिय सहयोग दे।

किसी भी अभियान को चलाने के लिए तन मन धन का आवश्यकता सबसे पहले होती है। सभी आर्य भाइयो-बहनो से निवेदन है कि वे अपना योगदान 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम 'केवल खाते में' चैक, ड्राफ्ट मनीआडर अथवा नकद यथाशीघ्र सभा कार्यालय-१५ हनुमान रोड नई दिल्ली के पते पर भेजे। वे स्पष्ट लिख दें कि यह धनराशि मद्य निषेध अभियान के निमित्त है।'

ऐसे महान कार्य सभी के सहयोग से सम्पन्न किए जा सकते हैं।

—डा० धर्मपाल

परिणयोत्सव

नई दिल्ली दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव आर्य सन्देश के प्रधान सम्पादक श्री सूर्यदेव के सुपुत्र एव स्व० वैद्य प्रह्लाद दत्त के पौत्र चिरजीव डा० रविकान्त का पाणिग्रहण सस्कार स्व० जयनारायण वर्मा की सुपुत्री सौ० छाया के साथ १० अक्तूबर का प० महेन्द्र कुमार शास्त्री, प० नेत्रपाल शास्त्री व आचार्य दिवाकर जी के पौरोहित्य में पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ तत्पश्चात् दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो० व सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० वाचस्पति उपाध्याय ने विवाह सस्कार के महत्व पर प्रकाश डाला।

तत्पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह व श्री एच० के० एल० भगत, सासद श्री मदनलाल खुराना व श्री सज्जन कुमार, गुरुकुल कागडी हरिद्वार के कुलपति श्री सुभाष विद्यालकार आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल, व वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द, दिल्ली प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला आर्या प्रख्यात पत्रकार श्री के नरेन्द्र, सर्व श्री बिजय कुमार मल्होत्रा, बलराज मधोक, और श्री ताराचन्द खडेलवाल, सत्यनारायण बसल एडवोकेट सोमनाथ मरवाह लाला इन्द्र नारायण सहित अनेक सस्थाओ व समाजों के गणमान्य महानुभावो ने वर-वधु के दीर्घ व सुखद जीवन के लिए आशीर्वाद दिया।

मांस की दुकानें तुरन्त बन्द की जाएं

नई दिल्ली आर्य समाज गोविन्दपुरी के वेद कथा समापन समारोह पर एक प्रस्ताव पारित कर दिल्ली प्रशासन व भारत सरकार से यह माग की गई कि डी० डी० ए० रोड पर पटरी पर खोखों में चल रही खुले मास की दुकाने तुरन्त बन्द की जाये क्योकि इससे न केवल गन्दगी व बीमारी फैलने का खतरा है अपितु पक्षियो द्वारा मास के टुकडे मन्दिरो पर डालने से धार्मिक स्थानो की पवित्रता नष्ट होती है। मन्त्री, आर्य समाज, गोविन्दपुरी

षड्दर्शनों का वेद प्रामाण्य

—डा० कर्मसिंह शास्त्री

न्याय, वैशेषिक साख्य, योग, मीमासा और वेदान्त इन छः दर्शनों को 'आस्तिक दर्शन कहा जाता है। चार्वाकादि दर्शनो को वेद-प्रामाण्य को स्वीकार न करने से 'नास्तिक दर्शन कहते है। नास्तिक का अभिप्राय है वेदनिन्दक, अर्थात् वेद की प्रामाणिकता को न मानने वाला स्वामी दयानन्द का भी मत यही है कि उपरोक्त षड्दर्शनो मे सैद्धान्तिक रूप से विरोध नही है क्योकि ये सभी वेद प्रामाण्य को स्वीकार करते हैं और इनमे वर्णित ज्ञान-विज्ञान का बीजरूप से वर्णन वेदों मे है। न्यायदर्शन (२ १-६८) में सूत्रकार कहता है कि मन्त्रायुर्वेदप्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्त-प्रामाण्यात्। अर्थात् मन्त्र विचार तथा आयुर्वेदवत् वेदो का प्रमाण है। ऐसा ही सब आप्तो ने माना है।

वैशेषिक दर्शन—भी वेद को प्रामाणिक मानता है—तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्। अर्थात् ईश्वर का प्रमाण होने से वेद चतुष्टय का प्रमाण है।

साख्य दर्शन (५ ५०) मे वेदों को अपौरुषेय मानते हुये कहा है कि "यस्मिन्नदृष्टे कृतबुद्धिरुपजायते तत् पौरुषेयत्वम्" अर्थात् जिसमें कर्त्ता के न देखने पर भी कृतबुद्धि हो वह पौरुषेय है। इससे वेदों का अपौरुषेयत्वसिद्ध होता है। इससे अगले ही सूत्र मे कहा गया है—निजशक्त्यभिव्यक्ते स्वत प्रामाण्यम् (५ ५१) अर्थात् वेद परमात्मा की अपनी शक्ति से प्रकट हुआ है, अत स्वत प्रमाण है। इसी प्रकरण मे वेद के नित्यत्व का प्रतिपादन करते हुए साख्यसूत्र (५-४७) में कहा गया है कि—"मुक्तामुक्तयोरयोग्यत्वात् अर्थात् मुक्त तथा अमुक्त किसी में भी वेद के रचने मे शक्ति नही है। इसके उपरान्त साख्य सूत्र (५-४८) मे यह शका की गई कि अपौरुषेय होने से वेद नित्य नहीं, जैसे अकुर अपौरुषेय होने पर भी नित्य नही। इससे अग्रिमसूत्र मे (५-४९) में समाधान किया गया है कि—"तेषामपि तद्योगे दृष्ट बाधादिप्रसक्ति' अर्थात् यदि वेदो का कर्त्ता माना जावे अनित्य माना जावे तब प्रत्यक्ष का बाध्य है क्योकि प्रत्यक्ष से वेदो का कर्त्ता सिद्ध नहीं होता, तथा जो जिसका स्वाभाविक गुण है वह नष्ट नही होता वेद परमात्मा का स्वाभाविक ज्ञान है अत यह अनित्य नही। इस प्रकार साख्य दर्शन भी वेद प्रामाण्य को स्वीकार करता है।

योगदर्शन मे—परमात्मा का स्वरूप बतलाते हुए उसे सभी का गुरु माना गया है। स एष पूर्वेषामपि गुरु कालेनानवच्छेदात् (१-२६) अर्थात् वह भगवान् सर्व प्रथम ऋषियो का भी गुरू है क्योकि वह सवकाल मे ज्ञानी है। यहा सवकाल के ज्ञान के रूप में ईश्वरीय नित्य ज्ञान ही ग्राह्य है।

मीमासा दर्शन (१-१ ५ भी वेद को स्वत प्रमाण मानता है। प्रथम अध्याय मे वेदो मे अनित्यइतिहास का खण्डन करते हुए कहा गया है कि 'उक्त तु शब्द पूर्वत्वम (१-१-२९) अर्थात ऋषियो ने वेदो मे से शब्द लेकर सासारिक पदार्थों के नाम रखे हैं। इसके उत्तर मे भगवान जैमिनि कहते हैं कि परं तु श्रुति सामान्यमात्रम्' (१ १-३१) अर्थात् वेदो मे ऐतिहासिक व्यक्तियो के नाम नही है उनमे तो सामान्य नाम है

वेदान्तदर्शन—भी अन्य दर्शनो की तरह वेदप्रामाण्य को स्वीकार करता है। सर्वप्रथम ब्रह्मजिज्ञासा की स्थापना करके सूत्रकार ने कहा है कि "शास्त्रयो-नित्वात्' (१-१-३) अर्थात् शास्त्र का ऋग्वेदादि का कारण होने से ब्रह्म के अस्तित्व का बोध होता है। इस सूत्र मे वेद को ईश्वरीय ज्ञान माना गया है।

—अनुसधान सहायक

हिमाचल कला सस्कृति एव भाषा अकादमी शिमला-हि०प्र०

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज मन्दिर तिमारपुर के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है जो दैनिक यज्ञ, वैदिक सस्कारा, कथा आदि कराने मे दक्ष हो। निःशुल्क निवास सुविधा उपलब्ध है। अविवाहित को प्राथमिकता दी जायेगी। इच्छुक सज्जन अधोहस्ताक्षरी से १५ दिन के अन्दर आवेदन एव सम्पर्क करें।

तेजपाल सिंह मलिक
मन्त्री आर्य समाज, तिमारपुर, दिल्ली-५४

पुरस्कार वापस लिया जाय

आर्य राष्ट्रीय मच की ३० अगस्त की बैठक मे साहित्य एकादमी से माग की गई कि उर्दू के लेखक सलाउद्दीन परवेज के 'आइडेण्टेटी कार्ड' को दिया गया पुरस्कार वापस लिया जाय—

(क) पृ० २३७ पर स्वामी श्रद्धानन्द जी को अबुल जहल व अबुल हकम, जो मुस्लिम मान्यता के अनुसार शैतान के अनुयायी थे और हजरत मोहम्मद साहब और इस्लाम के शत्रु थे का अनुयायी लिखा गया है और उनको दिल और दिमाग से खाली लिखा गया है। स्वातन्त्र्य समर के महान् सेनापति-आर्यसमाज के गौरव अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का अपमान समूचे हिन्दू समाज व राष्ट्र भक्ति का अपमान है।

(ख) पृष्ठ १६५ पर लिखा है 'उर्दू मा है हिन्दी की भी और आज की औलाद अपनी मा से मुह जोरी करने लगी है।' यह राष्ट्रभाषा हिन्दी का अपमान है और इतिहास को झुठलाया गया है।

(ग) पृष्ठ ३० व १७० पर लिखा है कि पाकिस्तान जाने वालो का बदला उनसे लिया जा रहा है जो अपनी मिट्टी छोड़कर नही भागे। मुसलमान अब इस देश में तीसरे दर्जे का नागरिक है। उसमे जहा हिन्दुओ की उदारता को झूठा साबित करने की कुचेष्टा की गई है वहा भारत सरकार को बदनाम किया गया है।

सदस्यो ने यह भी अनुभव किया कि गत वर्षों से साहित्य अकादमी ऐसी पुस्तकों को पुरस्कृत कर रही है जो आपत्तिजनक हैं जिनसे राष्ट्रीय गौरव, एकता व साम्प्रदायिक सद्भाव को चोट पहुचती है।

शोक प्रस्ताव

काशी मे आर्य समाज आन्दोलन के स्तम्भ, वयोवृद्ध आर्यसमाजी कार्यकर्ता एवम् प्रसिद्ध समाजसेवी श्री रामकृष्ण आर्य का दिनाक १७ अगस्त को उनके लल्लापुरा स्थित आवास पर निधन हो गया। रामकृष्ण जी आर्य ने एक उत्साहू युवक के रूप मे सन् १९३५ ई० में आर्य नवयुवक सभा की स्थापना तथा १९४३ मे आर्यसमाज की स्थापना लल्लापुरा मे की। आर्यसमाज लल्लापुरा का भव्य भवन निर्माण कराने मे उनका योगदान विशेष उल्लेखनीय है। जाति-पाति के भेद-भाव के विरुद्ध आपने आजीवन सघर्ष किया तथा अस्पृश्यता निवारण तथा शुद्धि आन्दोलन को गतिशील बनाने मे आपका योगदान समाज मे विशेष रूप से स्मरणीय है।

श्री रामकृष्ण आर्य के वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न अन्त्येष्टि सस्कार में सैकड़ो लोगो ने भाग लिया

आर्य समाज लल्लापुरा मे आयोजित शोक सभा मे नगर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों व आर्यजनो ने श्री रामकृष्ण आर्य के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला एव दो मिनट मौन रहकर दिवगत नेता को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमेश्वर से उनकी आत्मा की शांति तथा शोक सतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की।

श्री तोखाराम नहीं रहे

आर्यसमाज नागल राय नई दिल्ली के पूर्व प्रधान श्री तोखराम का १४ सितम्बर को निधन हो गया। वे ८० वर्ष के थे। उत्साही, कर्मठ ऋषि भक्त श्री तोखराम गत ४० वर्षो से आर्य समाज नागल राय से जुड़े थे और दैनिक यज्ञ में नियमित रूप से भाग लेते थे उनके भरे पूरे परिवार में ६ पुत्र व ३ पुत्रिया हैं।

२४ सितम्बर को तेरहवीं की रस्म मे पूर्व महानगर पार्षद श्री लोकवीर सिंह पूर्व निगम पार्षद श्री भूपसिंह तवर, पालिका समाचार (हिन्दी व पजाबी) के सहायक सम्पादक श्री भगवान दास आदि अनेक गणमान्य महानुभावों ने श्री तोखराम की सेवाओं का स्मरण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा की शान्ति एवं शोक सतप्त परिवार को दु ख सहने की शक्ति प्रदान करें।

आर्यसमाज के साहित्यकार—डा० केशवदेव शास्त्री

—डा० भवानी लाल भारतीय

प्रसिद्ध लेखक, पत्रकार तथा आर्य नेता केशवदेव शास्त्री का जन्म अविभाजित पजाब के जिला मोण्टगुमरी के कमालिया ग्राम में १८८१ ई० मे हुआ। इनके पिता का नाम चौधरी सुखानन्द था। शास्त्री जी की प्रारम्भिक शिक्षा अपने ग्राम में ही हुई। तत्पश्चात् कुछ काल तक वे डी० ए० वी० कालेज लाहौर मे पढते रहे। कुछ समय बाद इधर उधर भ्रमण करते हुए अजमेर पहुचे और ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित वैदिक यत्रालय के प्रबन्धक पद पर कार्य किया। कालान्तर मे सद्धर्म प्रचारक यन्त्रालय कागडी के अधिष्ठाता बन कर गुरुकुल कागडी चले गये। इनके प्रबन्धकाल मे ही इस यन्त्रालय से प० लेखराम के ग्रथो का सग्रह कुलियात आर्य मुसाफिर' का प्रकाशन हुआ। सस्कृत अध्ययन की उपयोगिता का अनुभव कर शास्त्री जी रावलपिण्डी गए और प० सीताराम शास्त्री से विधिवत् सस्कृत सीखी। यहीं से उन्होने पजाब विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की और आयुर्वेद का अध्ययन करने कलकत्ता चले गए। आयुर्वेद में उनके गुरु महामहोपाध्याय प० द्वारिकानाथ सेन कविराज थे। सेन महाशय ने शास्त्री जी को भिषगाचार्य की उपाधि प्रदान की।

१९०८ के अन्त में शास्त्री जी ने काशी को अपना कार्य क्षेत्र चुना। यहा चिकित्सा के साथ-साथ वे आर्य समाज के कामों में भी रुचि लेने लगे। आर्य समाज आन्दोलन में युवकों, बालकों तथा किशोरो की भूमिका का महत्व अनुभव करते हुए उन्होने आर्य कुमार आन्दोलन की नीव डाली और भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की स्थापना की। इसका प्रथम अधिवेशन १९०९ मे रावलपिण्डी मे शास्त्री जी की ही अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कालान्तर में लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा हसराज जसे नेताओ ने इस सस्था के वार्षिक अधिवेशनो की अध्यक्षता की। जिस समय पटियाला राज्य में प्रमुख आर्य समाजी राज्य कर्मचारियों पर अग्रेजी सरकार के इशारे पर राजद्रोह का अभियोग चलाया जा रहा था उस समय शास्त्री जी ने दीनबन्धु सी-एफ एण्ड्रूज, श्रीमती एनी बेसेन्ट आदि प्रमुख व्यक्तियो से आर्य समाज के सम्बन्ध म सम्मतिया मगा कर प्रकाशित की तथा यह सिद्ध किया कि आय समाज का राजनीतिक षड्यन्त्रो स किसी प्रकार का सम्बन्ध नही है।

२७ माच १९१० को काशी में शास्त्री जी ने एक अन्तर्जातीय प्रीतिभोज का आयोजन किया जिसम हिन्दुओ की विभिन्न जातियो के अतिरिक्त मुसलमानो तथा अग्रेजो ने भी भाग लिया। इस सहभोज को लेकर आर्यसमाज मे वाद-विवाद खडा हो गया। एक ओर प० तुलसीराम स्वामी ने 'वेदप्रकाश' में एक लेख लिख कर इस प्रकार के भोज आयोजित करने का विरोध किया तो दूसरी ओर महात्मा मुन्शीराम, मास्टर आत्माराम अमृतसरी तथा पण्डित गगाप्रसाद आदि नेताओं ने इस आयोजन का समर्थन किया। शास्त्री जी ने इस बात की भी चेष्टा की कि १९११ की जनगणना मे अछूत जातियो को हिन्दू समाज मे पृथक न लिखा जाए। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए उन्होने १९१० मे प्रसिद्ध सनातन धर्मी विद्वान् महामहोपाध्याय प० शिवकुमार शास्त्री की अध्यक्षता मे एक सभा आयोजित की, जिसमें यह प्रस्ताव स्वीकार किया गया कि अछूत हिन्दुओ के अभिन्न अग हैं तथा उनमें शिक्षा का प्रचार आवश्यक है।

प० केशवदेव शास्त्री उच्च कोटि के सुधारक एव प्रचारक तो थे ही वे एक सफल पत्रकार भी थे। १५ जून १९०९ स उन्होंने काशी स 'नवजीवन' नामक मासिक पत्र निकालना प्रारम्भ किया। इसकी गणना हिन्दी प्रमुख पत्रों मे होती थी। शास्त्री जी के अमरिका चले जाने पर इसका सम्पादन चार श्री द्वारिका प्रसाद सवक न लिया तथा सरस्वती सदन इन्दौर स इस पत्र का प्रकाशित करने लगे। आय कुमारों में वैदिक धम के प्रति श्रद्धा भावना भरन की दृष्टि म आपने 'आय कुमार' मासिक पत्र का भी प्रकाशन किया।

शास्त्री जी के प्रयासो से प्रसिद्ध थियासोफिस्ट श्री ब्रुक्स को वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया। इसी प्रकार कुमारी एरबस तथा श्री राबटसन ने भी वैदिक धर्म में प्रवेश लिया। १९१२ मे उन्होंने काशी मे वेद विद्यालय, दयानन्द स्कूल तथा रात्रि पाठशाला की स्थापना की। २३ अक्तूबर १९१२ को वे प्रचारार्थ बर्मा गये और १४ जनवरी १९१३ को स्वदेश लौटे। World's Purity Federation (पवित्रता प्रचारिणी विश्व समिति) के निमत्रण पर वे अमेरिका गए। यहा रह कर उन्होंने अपने वक्तव्यो लेखो तथा भाषणो द्वारा भारत मे कार्य करने वाले ईसाई प्रचारकों को काय पद्धति का भण्डा फोड किया। फलत डा० क्राफट्स नामक एक ईसाई धर्म प्रचारक ने पवित्रता प्रचारिणी सभा मे हिन्दू धर्म के प्रतिनिधि के रूप मे उन्हे न लेने का आन्दोलन किया। पर्याप्त सघर्ष के पश्चात् शास्त्री जी की विजय हुई और वे उक्त सभा में अपना वक्तव्य दे सके।

इस सम्मेलन से मुक्त होकर शास्त्री जी ने अमरिका मे डाक्टरी का विषद अध्ययन आरम्भ किया तथा ८ जून १९१५ को एम० डी० की उपाधि ससम्मान प्राप्त की। अमेरिका से आपके साथ कुमारी जैन नामक एक युवती भी आई जिस के साथ भारत आकर शास्त्री जी ने विवाह किया तथा उक्त युवती का नाम सुवीरादेवी रखा। १९२३ स १९२८ तक वे सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के मन्त्री रहे। इस काल में उन्होने सभा के मुख्य पत्र सार्वदेशिक' का सम्पादन भी किया। शास्त्री जी का निधन २६ अक्तूबर १९२८ ई० में हुआ।

कुतुब मीनार कुतबुद्दीन ने नहीं बनवाई थी

झज्जर ८ सितम्बर, दिल्ली की कुतुब मीनार के पास स्थित कुवैत इल मस्जिद मे लाल पत्थर के खम्भे पर खुदे नवमी शती के एक सस्कृत लेख से पता चला है कि कुतुब मीनार कुतबुद्दीन ऐबक ने नही बनवाई थी। इसमे ४०० वर्ष पूर्व के मन्दिरो मस्जिदों की स्थिति का इस शिलालेख से पता लग जाता है। मस्जिद के जिस खम्भे पर यह लेख खुदा है इसके नीचे मूल मदिर का १३वा स्तम्भ स्थित है। यह मस्जिद २७ हिन्दू ज्योतिष के मन्दिरों को तोड कर बनायी गई थी।

इस शिलालेख की खोज हरियाणा प्रान्तीय पुरातत्व सग्रहालय गुरुकुल झज्जर के सग्रहपाल श्री विरजानन्द दवकरणि ने की है। एक बयान में उन्होंने बताया कि इसकी सूचना भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक श्री मुनीश चन्द्र जोशी को भी दे दी गई है। श्री जोशी ने अपने अधिकारियो की एक टीम भेज कर इस बात की जाच कराई एव पुष्टि की है।

आर्यसमाज पंजाबी बाग नई दिल्ली

१३ अगस्त को श्रावणी पर्व के अवसर पर पूर्णिमा यज्ञ एव सामूहिक यज्ञोपवीत बदलने का कार्यक्रम हुआ। समाज मन्दिर मे २१ अगस्त को श्री कृष्ण जन्माष्टमी धूमधाम मे मनायी गई। इससे पूव १३ अगस्त से लगातार प्रतिदिन प्रात यज्ञ होता रहा।

आर्य समाज अनाज मण्डी शाहदरा, दिल्ली

१७ स २१ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह एव श्री कृष्ण जन्माष्टमी त्योहार समारोह पूर्वक मनाये गये।

आयसमाज अनारकली नई दिल्ली

आय समाज अनारकली, मन्दिर माग नई दिल्ली का ६८वां वार्षिकोत्सव ६ से १५ नवम्बर, ९२ तक समाज मन्दिर मे समारोह पूवक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर गायत्री महायज्ञ वेद प्रवचन, स्त्री समाज उत्सव, दयानन्द बाल मेला, आर्य युवक महासम्मेलन आदि कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। सभी धम प्रेमी बन्धु सादर आमन्त्रित हैं।

विवाह पजीकरण

आर्य समाज देवनगर देशबन्धु गुप्ता मार्ग (समीप आनन्द पर्वत बस स्टाप नई दिल्ली) मे विवाह योग्य युवक युवतियों के विवाह सम्बन्ध पजीकरण किये जाते हैं इच्छुक प्रार्थी साय ५ बजे से ७ बजे तक तथा रविवार को प्रात ठीक ९ बजे पास पोर्ट आकार का चित्र तथा पूण विवरण सहित डा० रघुवर दयाल जी प्रधान आय समाज मे सम्पर्क करें।

आदर्श-त्रैतवाद-११

—राजसिंह भल्ला

प्रशासक नियामक परमेश्वर

एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि ? सूर्याचन्द्रमसौ विधृतौ तिष्टत एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि द्यावा पृथि[illegible]ौ विधृते तिष्ठत एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि ? निमेषा मुहूर्ता अहोरात्राण्यर्धमासा मासा ऋतव सवत्सरा इति विधृतास्तिष्ठ[ ]ति । एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि ? प्राच्योऽन्या नद्य स्यन्दन्ते श्वेतेभ्य पर्वतेभ्य प्रतीच्योऽन्या या या च दिशमन्वेतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गी ! ददतो मनुष्या प्रशासन्ति यजमानं देवा दर्वी पितरोऽन्वायत्ता ।

बृहदा० ३।८।९

याज्ञवल्क्य बोले—हे गार्गि ! निश्चय इसी अक्षर—भगवान की आज्ञा मे इसी अविनाशी परमेश्वर के नियम में सूर्य और चन्द्र नियमित होकर रहते हैं। इसी हा परमेश्वर का आज्ञा मे हे गार्गि ! द्युलोक और पृथिवी लोक नियमित होकर रहते हैं हे गार्गि ! इसी ही परमेश्वर की आज्ञा मे निमेष, मुहूर्त, दिन, रात अर्धमास मास ऋतुए और वष धारण किए हुए रहते हैं। काल का नियन्ता भी वह ही है। हे गार्गि ! इसी हो ईश्वर की आज्ञा मे अनेक नदिया श्वेत पवतो से नीचे पूव को बहती है। अनेक पश्चिम को बहती है। और जिस जिस दिशा को बहती है उसा के नियम मे रहती हैं। हे गार्गि ! इसी परमेश्वर की आज्ञा मे मनुष्य दानशीलो की प्रशसा करत हैं, देव गण यजमान की प्रशसा करते हैं। और पितर जन आदर आतिथ्य के चिह्न भोजन को आश्रित करते है। सारे लोक-लोकान्तर भगवान् के शासन मे है, सभी परिवतनों मे उसका नियम काम करता है। और पुण्य कर्म भी उसी के नियत किये नियम मे होते हैं।

ईश्वर सर्वाश्रय है

तद्वा एतदक्षर गार्ग्यं दृष्ट दृषश्रुत श्रोत्रमत मन्त्रविज्ञात विज्ञातृ । नान्य-दतोऽस्ति श्रोतृ नान्यदतोऽस्ति मन्तृनान्यदतोऽस्ति विज्ञातृ एतास्मन्नु खल्वक्षरे गार्ग्याकाश ओतश्च प्रोतश्चेति । बृहदा० ३।८।११

याज्ञवल्क्य बोले ! हे गार्गि ! वह ही यह परमेश्वर अक्षर अदृष्ट-नेत्र से न देखा हुआ सबका दृष्टा है। कान स न सुना हुआ सबका सुनने वाला है। मन स न मनन किया गया सबका मनन करने वाला है और बुद्धि से अगम्य सब सबका ज्ञाता है सर्वज्ञ है। इसके अलावा विश्व का दृष्टा कोई नहीं है। इसस अन्य सबका श्रोता नहीं है। इससे अन्य सबका मनन करने वाला कोइ नहीं है। इससे अन्य सबका ज्ञाता कोई नहीं है। हे गार्गि ! निश्चय इसी अक्षर भगवान में आकार+जगत का आदि कारण ओत-प्रोत है। सबका आश्रय ईश्वर ही है।

असग, निर्लेप, अविनाशी ईश्वर

कस्मिन्नु त्व चात्मा च प्रतिष्ठितौ स्थ इति ? प्राण इति । कस्मिन्नु प्राण प्रतिष्ठित इति ? अपान इति । कस्मिन्नपान प्रतितिष्ठति इति । व्यान इति कस्मिन्नु व्य न प्रतिाष्ठति इति ? उदान इति । कस्मिन्नुदान प्रतिष्ठित इति ? समान इति । स एष नेति नेत्यात्माग्रह्यो न हि ग्रह्यतेऽशीर्यो न हि शीयतेऽसङ्गो न हि सज्यतेऽसितो न व्यथत न रिष्यति । बृहदा ३-९-२६

शाकल्य ने याज्ञवल्क्य से पूछा—हे याज्ञवल्क्य तू—देह और आत्मा देही किस में प्रतिष्ठित है ? उसने कहा प्राण मे प्रतिष्ठित है। शाकल्य ने पूछा प्राण किसमें प्रतिष्टित है ? उसने उत्तर दिया अपान में। शाकल्य ने पूछा अपान किसमें प्रतिष्टित है ? उसने कहा व्यान में शाकल्य ने पूछा व्यान किसमे प्रतिष्ठित है ? उसने कहा उदान में। शाकल्य ने कहा उदान किसमे प्रतिष्ठित है। उसने कहा समान मे स्थिर है। वह यह देह मे रहने वाला आत्मा नेति नेति शब्द से बताया जाता है देह तथा प्राण आदि वह नहीं है यह कह कर वणन किया जाता है। वास्तव मे वह आत्मा ग्रहण करने योग्य नहीं है। क्योंकि इन्द्रियो से तथा तक से नही ग्रहण किया जा सकता अविनाशी है क्योंकि नष्ट नहीं किया जा सकता, असग है, निर्लेप है, क्योकि स्वभाव से नहीं आसक्त होता। बन्धन रहित है। यह नहीं पीडित होता और न हनन होता है।

ज्योतियों की ज्योति

यदैतमनुपश्यत्यात्मान देवमञ्जसा ईशान भूत भव्यस्य न ततो विजुगुप्सते। यस्मादर्वाक्सवत्सरोऽहोभि परिवर्तते । तदेवा ज्योतिषां ज्योतिरायुर्होपासते ऽमृतम् ॥ बृहदा ४।४।१५ १६

जब साधक साधना के पश्चात् इस आत्म देव को देखता है जो भूत भविष्यत् का अनुशासन करने वाला है तब उस कारण से किसी की निन्दा नहीं करता दिन और रात्रियों के साथ वह सवत्सर काल जिसके पीछे ही घूम रहा है जो ज्योतियों की ज्योति आयु और अमृत है। उसकी उपासना विद्वान् गण करते हैं। जब साधक गुरु के उपदेशानुसार अनुष्ठान के पश्चात् साक्षात् उस आत्म देव परमात्मा को देखता हैं अथवा जान लेता है—तब इस आत्म साक्षातकार के कारण वह किसी जीव से घृणा नही करता या किसी जीव की निन्दा नहीं करता।

ईश्वर एक है

मनसैवानुदृष्टव्य नेह नानाऽस्ति किंचन । मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति । बृहदा० ४।४।१९

यह ब्रह्म मन से ही देखने योग्य है। इस ब्रह्म मे अनेकपन कुछ भी नही है वह ईश्वर एक है। परन्तु जो मनुष्य ब्रह्म स्वरूप मे अनेक ब्रह्म ही देखता है—जो अनेक परमेश्वर मानता वह मृत्यु से मृत्यु को प्राप्त होता है। आवागमन के चक्कर में फसा रहता है।

एक, अजन्मा, महान् ईश्वर

एकधैवानुदृष्टव्यमेतदप्रमेय ध्रुवम् । विरज पर आकाशादज आत्मा महान् ध्रुव ॥

तमेव धीरो विज्ञाय प्रज्ञा कुर्वीत ब्राह्मण । नानुध्यायाद् बहूञ्छब्दान्वाचो विग्लापन हि तदिति ॥ बृहदा० ४ ४।२०।२१

वह अमिट निश्चल ब्रह्म एकत्व से ही जानना चाहिये वह एक ही जानना चाहिये। वह पापरज रहित परमेश्वर आकाश से भी उत्कृष्ट है। अजन्मा है, महान् है और परम स्थिर आत्मा है। धीर ब्राह्मण उस ही भगवान् को जान कर अपनी धारणा को स्थिर करे। उसमे निष्ठा को बनावे। परमेश्वर मे बुद्धि स्थिर हो जाने पर अनेक ग्रथों और तक वितर्कों के चिन्तन मे न फसे क्योंकि तक वितर्क तो केवल वाक्य जाल ही है। धारणा के पक जाने पर ही भगवान् का साक्षात्कार सम्भव होता है।

अजन्मा अन्नदाता संहरता

स वा एष महानज आत्माऽन्नादो वसुदानो विन्दते वसु ये एव वेद ॥

बृहदा ४।४।२४

वह ही यह महान् अजन्मा आत्मा ईश्वर सर्वान्न का अत्ता है—सारे जगत का सहारक है अथवा सब प्रकार मे अन्नदाता है। और धन दाता है। जो ऐसे जानता है वह धन का प्राप्त होता है।

ईश्वर अजन्मा अमर अभय

स वा एष महानज आत्माऽजरोऽमरोऽमृतोऽभय ब्रह्माभय वै ब्रह्माभय हि वै ब्रह्म भवति य एव वेद बृहदा ४।४।२५।

वह ही यह महान् अजन्मा आत्मा अजर है, अमर है, अविनाशी है और अभय है। निश्चय ब्रह्म अभय है। जो ऐसे ब्रह्म को अभय जानता है वह ब्रह्म को ही प्राप्त होता है।

परमेश्वर अखण्ड है पूर्ण है

ओ३म् पूर्णमद पूर्णमिद पूर्णात्पूर्णमुदच्यत । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाव-शिष्यते ओम ख ब्रह्म । ख पुराण वायुर खमिति ह स्माह कौरव्यायणी पुत्रो वेदोऽय ब्राह्मणा विदुर्वेदनेन यद्वेदितव्यम् । बृहदा० ५।१।१

वह परमेश्वर पूर्ण है। अखण्ड है। यह जगत् स्वसत्ता मे पूर्ण है—इस मे कुछ भी कमी नही है। पूर्ण भगवान से ही यह पूर्ण जगत् उदय होता है। पूर्ण परमेश्वर का पूर्ण स्वरूप लकर पूर्ण स्वरूप को अपने मे धारण कर फिर भी सर्वत्र पूर्ण ही रह जाता है। परमेश्वर स्वसत्ता से सर्वत्र पूर्ण स्वरूप से ही विद्यमान है। ख ब्रह्म है। कौरव्यायणी पुत्र ने कहा था कि मैं ख ब्रह्म को जानता हू यह भेद ब्राह्मण जानते हैं। जो परमेश्वर जानने योग्य है। हे शिष्य ! तू उस इस ख को ही जान। ख शब्दोपासना से ही परमेश्वर का ध्यान कर।

ऋषि निर्वाणोत्सव

२५ अक्तूबर ९२, प्रातः ८ से १२ बजे तक

रामलीला मैदान, नई दिल्ली

आमन्त्रित वक्ता

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
श्री डा० वाचस्पति उपाध्याय
श्रीमती शकुन्तला आर्य
आचार्य यशपाल सुधांशु

आप सब सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित यथा समय भारी संख्या में पधार कर महर्षि के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करें।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

श्री कर्मवीर शास्त्री

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत विद्या सभा द्वारा संचालित नैतिक शिक्षा संस्थान में श्री कर्मवीर को प्राचार्य पद पर नियुक्त किया गया है। श्री शास्त्री कथा, संस्कार, यज्ञानुष्ठान आदि कार्यों में कुशल हैं।

राष्ट्र निर्माता महर्षि दयानन्द सरस्वती

दूरदर्शन परिचर्चा

२५ अक्तूबर १९९२

डा० धर्मपाल, डा० महेश विद्यालंकार, डा० वेदप्रताप वैदिक,
श्री शशिभूषण जैन

प्रस्तुतकर्ता—श्री वी० पी० सिंह

तो कोई बात बने

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

मूल दुर्व्यसनो की झाडो, तो कोई बात बने ।
अविद्या दूर लताडो तो कोई बात बने ।
वृक्ष पाखण्ड का दिन दिन पनपता जा रहा है ।
मूल से इसको उखाडो, तो कोई बात बने ।
हर कोई बैठा है यहा भगवान बन कर ।
इनकी करतूते उघाडो, तो कोई बात बने ।
अकड कर घूमते हैं भक्त बन कर देश द्रोही ।
पजम्मा इनका फाडो, तो कोई बात बने ।।
यहा बरसाती मैंडक जोर से चिल्ला रहे हैं ।
शेर सम आप दहाडो, तो कोई बात बने ।।
बगुला भक्तो ने गुरुडम का जाल बिछा रखा है ।
बाग इनका उजाडो, तो कोई बात बने ।।
विश्व कल्याण के साधन सभी मिल कर सजायें ।
पताका ओम् की गाडो, तो कोई बात बने ।।
ईर्ष्या द्वेष तज अभिमान "राघव" ।
सगठन को न बिगाडो, तो कोई बात बने ।।

ज्ञान-गंगा बह रही है

—प० रामाज्ञा 'आर्यपुत्र'

ऋषि दयानन्द साधना की, अमर गाथा कह रहा है ।।
अज्ञता के घोर तम में एक योगेश्वर चला था ।
शास्त्र चर्चा-भूमि मे वह ओ३म् ध्वज लेकर डटा था ।।
वेद की पावन ऋचाए, गु जरित फिर हो रही है ।। १ ।।
'सत्य अर्थ प्रकाश लिख नव चेतना वह भर गया है ।
ईश-ध्वनि का भाष्य अनुपम, विश्व को वह दे गया है ।।
ज्ञान के उस पु ज की, जयकार चहुदिशि हो रही है ।। २ ।।
जहर था जिसने दिया, उसको अभयता दान देकर ।
'ईश तेरी पूण इच्छा हो' यही फिर वाक्य कह कर ।।
उस सुऋषि की यश काया, प्रेरणा नव भर रही है ।। ३ ।।
घोर पापाचार बढता, देख कर हम मोन क्यों हैं ?
वेद-पुस्तक हाथ मे, फिर हम निराश हताश क्यों हैं ?
सगठित हो हम बढें, ऋषि वेदना यह कह रही है ।। ४ ।।
'आर्यपुत्र' को साधना से, दीप अनगिन फिर जलेगे ।
'मूलशकर' जागरण स, वेद सब घर-घर पढेगे ।।
उच्च स्वर मे नारिया भी, ऋचा-गायन कर रही हैं ।। ५ ।।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन-३१०१५० केलिए प्रकाशित । रजि० न० डी० (एल १०२४/१-०९२

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

वर्ष १६, अंक ३ | रविवार, १ नवम्बर १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्वत १९७२९४९०९३
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक— २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

ऋषि निर्वाणोत्सव

आर्यसमाज निस्वार्थ भाव से देश के लिए काम कर रहा है

—माखनलाल फोतेदार

नई दिल्ली, २५ अक्टूबर। "आज देश मे सभी दल व सगठन अपने-अपने हितो को आगे बढाने की कोशिश कर रहे हैं परन्तु आर्य समाज ही एक ऐसा सगठन है जो त्याग व निस्वार्थ भाव से राष्ट्र की एकता व अखण्डता के लिए काम कर रहा है। ये उदगार श्री माखनलाल फोतेदार, केन्द्रीय स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मन्त्री ने आज आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा रामलीला मैदान मे आयोजित १०९वें ऋषि निर्वाणोत्सव के अवसर पर महर्षि दयानन्द को श्रद्धाजलि देते हुए व्यक्त किये। श्री फोतेदार मुख्य अतिथि के रूप मे बोल रहे थे।

श्री फोतेदार ने आगे कहा कि देश से जातिवाद व प्रान्तीयता को दूर करने तथा नैतिकता व शुद्धता लाने के लिए आज आर्य समाज की पहले से भी अधिक जरूरत है।

श्री फोतेदार ने इस समारोह मे भारी सख्या मे पधारे आर्य नर नारियो को दीपावली की शुभकामनायें दी। उन्होने कहा कि स्वामी दयानन्द ने सारा जीवन सत्य का प्रचार किया और वे स्वय दयानन्द की विचारधारा से प्रेरणा लेते हैं। बचपन मे वे डी० ए० वी० के छात्र थे। उस समय जैसी शिक्षा दी जाती थी वैसी आज नही मिल रही है।

श्री माखन लाल ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने समाज व राष्ट्र के उत्थान के लिए अद्वितीय कार्य किए हैं। स्वामी जी ने विधवा विवाह को वेदानुकूल बताकर इसका प्रचलन किया तथा नारी शिक्षा का भी प्रचार किया। स्वामी जी ने रूढियो, पाखण्डो के खिलाफ आन्दोलन चलाकर देश मे एक नयी चेतना पैदा की थी।

श्री फोतेदार ने आर्य समाजियो का आह्वान करते हुए कहा कि वे समाज व राष्ट्र मे एक नयी क्रान्ति लाने एव देश की एकता व अखण्डता को सुरक्षित करने के लिए आगे बढ़कर काम करते रहें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज दुशमन देश को तोडना चाहता है परन्तु हमे मन, वचन, व कर्म से 'ओम सगच्छध्व' के मन्त्र पर आचरण करने हुए आर्यसमाज के संगठन व देश की एकता को सुदृढ करना है।

स्वामी जी न कहा कि अग्रेजों ने दयानन्द को बागी फकीर करार दिया था और आर्य समाजियो को सरकारी नौकरियो से चुन-चुनकर निकाला था। आर्यसमाज ने आजादी व समाजोत्थान में अनेक कुर्बानिया दी हैं। ऋषि दयानन्द ने ससार के उपकार के लिए आर्य समाज की स्थापना की है, उसी लक्ष्य को पूरा करने के लिए काम करते रहना चाहिए।

स्वामी आनन्दवोध ने कहा कि आय बाहर से नही आए थ और यहा के मूल निवासी थे। उन्होने कहा कि वे एक प्रतिनिधि मडल के साथ प्रधानमन्त्री से मिलकर इतिहास के तथ्यो को प्रस्तुत करेंगे और हम चाहते हैं कि अगले बोधोत्सव तक पाठय पुस्तको मे वाछित सशोधन हो जाए।

स्वामी जी ने कहा कि आय समाज को सत्ता नही चाहिए। जो भी ठीक काम करेगा हम उसका समथन करेंगे। उन्होने उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश की सरकारो द्वारा इतिहास सशोधन के लिए बधाई दी। स्वामी आनन्दबोध ने भारत सरकार के रक्षामन्त्री व सैनिको को देश की सीमाओ की रक्षा के लिए बधाई दी।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे डा० वाचस्पति उपाध्याय ने कहा कि देश मे सच्चा सुधार दरिद्र नारायण की सेवा द्वारा ही किया जा सकता है और वैचारिक व शैक्षिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार वैदिक शिक्षा का प्रचार किया जाना चाहिए। उन्होने आगे कहा कि दयानन्द ने अपने तेज व ओज से देश को महिमा-मडित किया था और दयानन्द की वाणी, वेद की वाणी है। जैसे रात्रि को असख्य तारो मे अकेला चन्द्रमा अन्धकार को दूर करता है वैसे ही आय समाज को समाज मे व्याप्त अन्धेरे को दूर करने के लिए सकल्प लेना चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कथाकार आचार्य यशपाल सुधाशु ने कहा कि सन १८८३ मे दीपावली के दिन मगलवार को ऋषि का निर्वाण हुआ था। गुरुदत्त, स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम आदि ने दयानन्द के दीप से ज्योति ले अद्वितीय काय किए थे। उसी मशाल को लेकर अनेक वीर आगे बढ़ते रहे हैं। आज हमे देव दयानन्द की राह पर चलने का व्रत लेना चाहिए।

दिल्ली आर्य प्रान्तीय महिला सभा की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला आर्या ने कहा कि भारत की पवित्र भूमि पर परमपिता परमात्मा ने सबसे पहले वेद ज्ञान दिया था। इसी पुण्य भूमि पर अनेक महापुरुषो ने भी जन्म लिया है। यही आर्यों का आदि देश है, हमें इस पर गर्व है। स्वामी विद्यानन्द ने भी प्रमाण सहित बताया कि भारत ही आर्यों का मूल देश है।

इससे पूर्व आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, श्री रामनाथ सहगल, चौधरी लक्ष्मी चन्द आदि ने अतिथियो का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रात प० महेन्द्र कुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुए यज्ञ से हुआ। स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने ओमध्वजारोहण किया। फीजी से पधारी सुश्री शान्तिदेवी का भी स्वागत किया गया। मच सचालन सभा मन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने किया।

वैदिक विचारधारा संस्कार प्रदूषण का समाधान है

आज हमारे राष्ट्र के सामने जलवायु प्रदूषण की जहा ज्वलन्त समस्या है, वही इससे भी अधिक भयावह समस्या संस्कार प्रदूषण की है। इस्लाम के आक्रमण ने इस देश के लोगो को तलवार से मिटाने का प्रयत्न किया परन्तु हमने अपने अस्तित्व को मिटने न दिया किन्तु दूसरा आक्रमण अग्रेज ने इस देश के लोगो के सस्कारो पर किया, जिसका घाव तलवार से कही अधिक गहरा हुआ।" ये उद्गार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने आर्य समाज न्यू मोती नगर (कर्मपुरा) के रजत जयन्त समारोह के अवसर पर १६ अक्टूबर को आयोजित वैदिक सिद्धात रक्षा सम्मेलन मे व्यक्त किये।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

महर्षि दयानन्द निर्माण दिवस दीपावली के अवसर पर

ऋषिवर की पावन स्मृति में

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष—वैदिक सस्थान, नजीबाबाद

विक्रमी वर्ष १९४० की दीपावली को सायकाल साढे पाच बजे, जब देश-देशान्तर मे बसे भारतीय अपने-अपने घरो मे दीपमाला के दीप प्रज्ज्वलित कर रहे थे, तब विश्व-मानवता के हितार्थ ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण वेद-दीप प्रज्ज्वलित कर महर्षि दयानन्द का जीवन-दीप अनन्त आकाश मे विलुप्त हो गया।

उस महामानव के महाप्रयाण की सूचना जहा-जहा पहुची—न केवल भारत और आर्य जाति मे ही अपितु समस्त भूमण्डल पर निवास करने वाले मनीषियो के मन और मस्तिष्क पर शोक छा गया।

यद्यपि वह महान् विभूति १९४० विक्रमी की दीपावली की सायकाल से इस ससार मे कहीं दिखायी नही देती किन्तु उसके द्वारा प्रकाशित किया गया वह ज्ञान-विज्ञान परिपूर्ण दीप, अनादि पुरुष का वह शाश्वत ज्ञान—जो शताब्दियो से लुप्त प्राय था और जिसके विषय मे अविद्यान्धकार के गर्त मे भटकती आर्य जाति मे यह किवदन्ति प्रसिद्ध थी कि "वेद को शखासुर लेकर पाताल चला गया—उस महामानव ने पुन प्रकाशित कर विश्व-मानवता के विशाल प्रागण में उसका प्रकाश फैला दिया। केवल उस प्रकाश को स्वय ही फैलाया हो, ऐसी बात भी नही अपितु युगयुगान्तर तक इस विशाल पृथिवी पर उसे प्रज्जवलित करते रहने के लिये अपने उत्तराधिकारी के रूप मे आर्य समाज का सगठन बनाकर "वेद का पढना पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम् धर्म है" इस सूत्र के रूप मे उसे दायित्व सौप दिया।

महर्षि के उत्तराधिकारी आर्य समाज ने भी उस दायित्व के निर्वहन मे अपने पूर्ण सामर्थ्य का उपयोग किया और निरन्तर कर रहा है। महर्षि की इस घोषणा के अनुरूप कि "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है" आर्य समाज ने वेद के विविध विज्ञानो से सम्बद्ध अब तक सैंकडो ग्रन्थ प्रकाशित कर ससार के पुस्तकालय की भी वृद्धि की है।

आर्य समाज का ऐसा मन्तव्य नही है कि यान्त्रिकीय ही विज्ञान है अपितु आर्य-समाज की यह मान्यता है कि प्रत्येक विषय का अपना विज्ञान होता है। यह तो सभी जानते हैं कि प्रत्येक विषय का अपना ज्ञान होता है किन्तु इससे आगे बढ कर प्रत्येक विषय के विज्ञान तक सब नही पहुच पाते हो, ऐसी भी बात नही है अपितु प्रत्येक विषय का विज्ञान भी होता है, ऐसा बिचार भी सब नही कर पाते तथा तथ्य तो यह है कि सव सामान्य की तो बात हो क्या बडे-बडे ज्ञानी मनीषियो का भी इस ओर ध्यान नही जाता। वास्तविकता यह है कि प्रत्येक विषयक ज्ञान का विवेचन और विश्लेषण तथा उसके परिणाम स्वरूप होने वाली उपलब्धि उस विषय का विज्ञान होता है।

यदि केवल यान्त्रिकीय दृष्टि से भी देखा जाय तो भी वेद मे इस परिमाण मे विज्ञान भरा पडा है कि न केवल हमारी पृथिवी पर अपितु विश्व ब्रह्माण्ड मे "यावत् चन्द्रदिवाकरो जब तक चन्द्रमा और सूर्य सहित यह सृष्टि रहेगी, तब तक उस प्रभु-प्रदत्त ईश्वरीय ज्ञान मे से विज्ञान के सूत्रो को उपलब्धि होती रहेगी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही वेद को सब सत्य विद्याओ का पुस्तक' कह कर वेद की वैज्ञानिकता की चर्चा की हो, ऐसी बात भी नही है अपितु अब से दीर्घ समय पूर्व महर्षि भारद्वाज के 'यन्त्र सर्वस्व' नामक ग्रन्थ के टीकाकार श्री बोधानन्द ने अपने द्वारा की गई टीका के मगलाचरण मे लिखा है —

> निर्मथ्य तदवदाम्बुधि भारद्वाजो महामुनि ।
> नवनीत समुद्धृत्य यन्त्र सर्वस्व रूपकम ॥

अर्थात महामुनि भारद्वाज ने वेदरूपी समुद्र को मथ कर उसमे से "यन्त्र सर्वस्व" ग्रन्थ के रूप मे नवनीत (मक्खन) निकाल लिया है। यदि यन्त्र सर्वस्व को ही हम उदधृत करने लग जाये तो लेख का कलेवर बहुत बढ जायगा। किन्तु फिर भी इतना कह देना अनुचित न होगा कि उक्त ग्रन्थ के केवल वैज्ञानिक प्रकरण को ही लिया जाय तो भी वैज्ञानिक यान्त्रिकी के साथ साथ उसमे युद्धोपयोगी अन्य भी अनेक यान्त्रिकीय उपकरणो के निर्माणार्थ उनके तन्त्र भी वर्णित किय गये हैं, जिनमे प्रयुक्त होने वाली धातुओ तथा वनस्पतियो के अतिरिक्त आग्नेय आदि पदार्थों के प्रयोग का भी वर्णन है और शत्रु के विमानो मे आग लगा कर उन्हे नष्ट कर देने के लिए तैयार किए गए दर्पण तथा भूगर्भ मे छिपा कर रक्खे गए भयकर आग्नेय गोलो का पता लगाने वाले यन्त्रो (राडारो) को तैयार किए जाने के लिए प्रयोग मे लाये जाने वाले तापमानो के अश तक वर्णित हैं।

इसके अतिरिक्त भी हम वेद मे दैवी अर्थात् अणुचालित नावो और पनडुब्बियों तक का वर्णन "गर्भे अन्त समुद्रे" समुद्र" अन्दर के गर्भ मे तथा "सिन्धुरूर्मो कार विभ्रत" समुद्र की लहरो पर कार को चलाने का वर्णन पाते हैं।

आकाश मे सूर्य के चारो ओर "शकमय धूम सूर्यमारात' सूर्य को चारो ओर से घेरे हुए श्वेत धूम (हीलियम गैस) वर्णित है तो सूर्य मे खाद्य पदार्थों के भरे होने की बात कह कर सूर्य की ऊर्जा तथा उसकी किरणो के माध्यम से प्राप्त होने वाली भोज्य सामग्री की भी चर्चा है। यहा इस लघु निबन्ध मे इन सब उद्धरणो को वेद से प्रस्तुत करने का हम प्रयत्न नही कर रहे। वह तो पृथक से एक ग्रन्थ का विषय है, फिर कभी किसी लेख में वेद-विज्ञान विषय पर पृथक् से चर्चा की जाएगी।

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती के दिवगत होने के पश्चात् अभी तक एक ही महा-पुरुष योगीराज अरविन्द घोष ऐसे भारतीय मनीषी हुए हैं, जिन्होने महर्षि दयानन्द की वेद मे विज्ञान होने की घोषणा का यह कह कर समर्थन किया है कि "महर्षि दयानन्द ने वेद मे विज्ञान होने की बात कह कर कुछ अतिशयोक्ति नही की है अपितु न्यूनोचित से ही काम लिया है, क्योकि वेद के असख्य विज्ञानो के रहस्य तो अभी तक अज्ञात ही हैं। यह स्मरण रहे कि श्री अरविन्द घोष आर्य समाजी नही थे किन्तु उन्होने जब वेद का अध्ययन किया तो आधुनिक युग प्रवर्त्तक तथा वेदोद्धारक देव दयानन्द के वेदभाष्य के अतिरिक्त उनकी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका भी—जिसमे "तार विद्या' तथा 'नौविमानादि विद्या' प्रकरण हैं अवश्य पढी होगी। परिणाम-स्वरूप उन्होने उक्त घोषणा करके महर्षि दयानन्द के वेद मे विज्ञान होने के दृष्टिकोण का उनसे भी आगे बढ कर समर्थन किया।

पश्चिमीय जगत मे महर्षि दयानन्द के समकालीन जर्मन निवासी प्रौफेसर मैक्समूलर ने ऋग्वेद के नासदीय सूक्त का जब अध्ययन किया तो वह आश्चर्य-चकित रह गए और वेद मे प्रलयावस्था की वैज्ञानिकता के वर्णन को स्वीकार किया। उन्होने अपनी "भारतीय दर्शन के छ सिद्धान्त नामक पुस्तक मे लिखा है कि "मैं अब तक वेदो को ऋषियो की खोज मानता था किन्तु ऋग्वेद के नासदीय सूक्त को पढ कर इस परिणाम पर पहुचा कि प्रलयकाल मे क्योकि ऋषि आदि कोई भी प्राणी नही था, अतएव यह ऋषियो की खोज नही हो सकती। प्रलयकाल मे मानवो की उपस्थिति न होने पर भी उस काल के इतने स्पष्ट आखो देखे जैसे वैज्ञानिक वर्णन के होने से तो यह ज्ञान परमात्मा की ओर से ऋषियो की ओर आता प्रतीत होता है।" इस प्रकार ऋषिवर दयानन्द ने वेद को शखासुर द्वारा पाताल के जान की भ्रान्ति का निवारण कर वैदिक विज्ञान की दुन्दुभि बजाकर विश्व मनीषियो का ध्यान वेद की ओर आकर्षित किया।

आर्य पुरुषो का चरित्र हनन तुरन्त बन्द हो

मेरा ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित किया गया है कि कतिपय आर्य पत्रो के कुछ अति उत्साही और तथाकथित हिन्दुत्व के प्रति अपार निष्ठा वाले सम्पादक प्राय अपने पत्रो मे स्वामी विवेकानन्द, वीर सावरकर, गुरु गोलवल-कर आदि नेताओ का तो गुणगान करते ही है परन्तु आर्य समाज तथा ऋषि दयानन्द के प्रति अनन्य आस्था तथा जीवन भर आर्य आदर्शों के लिए समर्पित प्रो० उत्तम चन्द शरर, प्रो० भवानी लाल भारतीय आदि निष्ठावान आर्य पुरुषो के प्रति अभद्र भाषा तथा कटाक्षपूर्ण लेखन मे लगे रहते है। मेरा ऐसे व्यक्तियो से अनुरोध है कि वे यह चरित्र हनन वाला लेखन तुरन्त बन्द करें तथा सैद्धातिक वाद विवाद को उसी स्तर पर करें। आर्य पत्रो का ऋषि दया-नन्द द्वारा स्थापित आदर्शों से हटना निश्चय ही चिन्ता जनक है।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान—सार्वदेशिक सभा

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश



महर्षि दयानन्द का सन्देश

महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस २५ अक्तूबर को दीपावली के दिन मनाया गया। अनेक संस्थाओं ने तथा आर्य समाजों ने भी इस दिवस को अपनी-अपनी सुविधा अनुसार विभिन्न दिनों में आयोजित किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जो हमें सन्देश दिया था आज आवश्यकता इस बात की है कि हम उसके अनुसार कार्य करें। उनका स्थान समाज सुधारकों में सर्वोपरि है। कबीर नानक, राममोहन राय, महादेव गोविन्द रानडे ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, महात्मा फुले, केशव चन्द्र सेन आदि ने भी इस दिशा में भरपूर कार्य किया है। हिन्दी के प्रचार प्रसार में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वयं कार्य किया। बाद में उनके अनुयायियों ने कार्य किया और अन्य हिन्दी के साहित्यकार भी उनके कृतित्व से प्रभावित हुए। भारतेन्दु हरीश चन्द्र ने गद्य लेखन की दिशा में जो कार्य किया उस पर महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्रभाव था। द्विवेदी युग के भी अनेक साहित्यकार उनके विचार से प्रभावित थे। उन्होंने आर्यसमाज के नियम का निर्माण करते समय वेद को सर्वोपरि स्थान दिया। उन्होंने कहा कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। उन्होंने ये भी कहा है कि वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। यह बात कही अवश्य गयी है परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि अभी तक हम वेद के प्रचार प्रसार में तथा वेद के अनुसार व्यवहार करने में पिछड़े हुए हैं। आखिर क्या कारण है कि आज भी सती प्रथा है, आज भी बाल विवाह हो रहे हैं माँस भक्षण, मदिरापान, पशुबलि आदि दुष्प्रवृत्तियां आज भी मौजूद हैं। यदि हम चाहते हैं कि आर्य समाज का सर्वत्र प्रचार हो और हम कृण्वन्तोविश्वमार्यम के नारे को केवल नारा न रखकर व्यवहार में ला सकें तो यह आवश्यक है कि हम महर्षि दयानन्द सरस्वती के सामाजिक, आध्यात्मिक राजनैतिक आर्थिक, साहित्य सन्देश को अपने जीवन में उतारें। हम बहुदेवत्व के स्थान पर एक परमात्मा को मानें तथा हमारी भाषा एक हो, हमारी वेशभूषा एक हो और हम सब लोग मिलकर कार्य करें तभी हम आर्य समाज का प्रचार प्रसार कर सकते हैं।

मद्यनिषेध कार्यक्रम

आवश्यकता इस बात की है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के सन्देश को याद करते हुए हम आत्मनिरीक्षण करें, अपने कार्यक्रमों को रचनात्मक ढंग से पूरा करें अपने मन्दिरों, स्कूलों तथा संस्थाओं का सही उपयोग करें। हम केवल अपनी शक्ति और संगठन को केवल भागदौड़, धन संग्रह और ईंट पत्थर को जोड़ने में ही न लगे रहें बल्कि अपने मन्दिरों को श्रद्धा, भक्ति, शान्ति, प्रेम, सेवा, त्याग आदि पवित्र भावनाओं से पूरित करें।

आर्य समाज कोई व्यवसाय नहीं है यह तो एक आन्दोलन है। पिछले दिनों सर्वोच्च न्यायालय में भारतीय संविधान की धारा-४७ के अन्तर्गत मद्य निषेध लागू करवाने के लिए जो प्रावधान रखा गया है, उसको लागू कराने के लिए सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका प्रस्तुत की गयी है। इस याचिका को स्वीकार कर लिया गया है और अब इसके बारे में चार नवम्बर को विचार होगा। केन्द्र सरकार और सभी राज्य सरकारों को सर्वोच्च न्यायालय की ओर से आदेश भेज दिये गये हैं कि वे ४ नवम्बर तक अपनी आपत्तियां प्रस्तुत करें। आर्य समाज के इस विशाल संगठन का कर्त्तव्य है कि सभी लोग नशाबन्दी सम्बन्धी इस कार्यक्रम में सम्मिलित हो जायें। वे सभी अपनी ओर से भी सुप्रीम कोर्ट में इसी याचिका के सम्बन्ध में अपनी याचिकायें प्रस्तुत कर सकते हैं। इसी कड़ी में २० वां अखिल भारतीय नशाबन्दी कार्यकर्ता सम्मेलन ७-८ नवम्बर १९९२ को रोहतक में आयोजित किया जा रहा है। आर्य भाईयों बहनों से निवेदन है कि वे इस सम्मेलन में सम्मिलित हों।

आर्य युवा महासम्मेलन

प्रतिवर्ष की भांति दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्य युवा महासम्मेलन का आयोजन ७ नवम्बर, १९९२ से १३ दिसम्बर १९९२ तक समारोह पूर्वक किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रत्येक शनिवार को प्रातः ११.०० बजे से विभिन्न स्थानों पर चित्रकला एवं निबन्ध प्रतियोगिता, खेल-कूद प्रतियोगिता वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता बालीबाल प्रतियोगिता और समूहगान प्रतियोगिता आयोजित की गई है। मुख्य समारोह रविवार १३ दिसम्बर १९९२ को प्रातः ९.०० बजे से तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली होगा। विभिन्न विद्यालयों तथा आर्य वीर दल की शाखाओं के छात्र/छात्रायें वेदगायन, पी.टी. योग और शास्त्र आदि प्रदर्शन में भाग लेंगे। समारोह की अध्यक्षता पूज्य श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती करेंगे और स्वागताध्यक्ष श्री महाशय धर्मपाल होंगे। इस अवसर पर श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती, प्रो० शेर सिंह, श्री रामनाथ सहगल श्रीमती शकुन्तला आर्या, श्री वाचस्पति उपाध्याय, श्रीमती बृजबाला भल्ला, डा० वेदव्रत आचार्य आदि अनेक विद्वतजनों को आमन्त्रित किया गया है। दिल्ली की सभी आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि वे आर्य युवा महासम्मेलन के सभी कार्यक्रमों में बढ़चढ़कर भाग लें। युवक बालक तथा बालिकाओं का उत्साह बढ़ायें तथा इस निमित्त अपनी ओर से अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग राशि भी दें।

हमारा कर्त्तव्य है कि दीपावली के अवसर पर हम आत्मनिरीक्षण करते हुए युवा शक्ति को आगे बढ़ाने के लिए सहयोग प्रदान करें।

डा० धर्मपाल

बिगड़ी बात बना सकते हो

रचयिता—प्रा० राजेन्द्र "जिज्ञासु"

बिगड़ी बात बना सकते हो पाप की लंक जला सकते हो।
पद लोलुपता तज दो जो तुम, झगड़े सभी मिटा सकते हो॥
लेखराम का पथ अपना कर, लुटता देश बचा सकते हो।
काज अधूरा दयानन्द का, पूरा कर दिखला सकते हो॥
तुम चाहो तो आर्य वीरो दुर्दिन दूर भगा सकते हो।
इसी डगर पर चलते-चलते, मुर्दा कौम जिला सकते हो॥
मिशन ऋषि का पूछ रहा क्या, जीवन भेंट चढ़ा सकते हो?
तुम सुधरोगे जग सुधरेगा, जो कुछ बचा बचा सकते हो॥
विजय मिलेगी, लेखराम सी, धूनी अगर रमा सकते हो।
वही पुरातन मस्ती लाकर, जो चाहो फिर पा सकते हो॥
सत्य सनातन धर्म वेद की जय-जयकार गुञ्जा सकते हो।
याग तपस्या होगी तो फिर, श्रद्धा का युग ला सकते हो॥
शोध करो कुछ निज जीवन का, फिर तो युग पलटा सकते हो।
दम्भ दर्प जो घूर रहा फिर, इसकी जड़ें हिला सकते हो॥
सत्ता की गलियों में खोकर, क्या कर्त्तव्य निभा सकते हो?
देश धर्म हित इस शासन में, क्या तुम मनवा सकते हो?
शीश तली पर धर कर हो तुम, बस्ती नई बसा सकते हो॥
दक्षिण में जो दिखलाया था, क्या शौर्य दिखला सकते हो?
राजपाल व श्यामलाल की क्या घटना दोहरा सकते हो?
परमानन्द और सोमानन्द सम, फिर क्या कष्ट उठा सकते हो?
लोह पुरुष के तुम वंशज हो, भू पर शूल बिछा सकते हो॥
स्मरण करो नारायण का तुम, जो खोया है, पा सकते हो।
'जिज्ञासु' अरमान जगाकर, जीवन-शंख बजा सकते हो॥
मन के शिव-संकल्पों से तुम, जीवन दीप जला सकते हो।
निशा-निराशा हट जावेगी, बढ़कर मंजिल पा सकते हो॥
डूब रही मझधार बीच जो, नय्या पार लगा सकते हो।
मन में कुछ सद्भाव जगाकर, फिर यह गाना गा सकते हो॥

हमारे बच्चे आर्य कैसे बनेंगे ?

लेखक
प० जगतराम आर्य, बी-१०९ प्रीत विहार दिल्ली-९२

जिस आर्य समाजी ने महर्षि दयानन्द और आय समाज को जान लिया है और समझ लिया है,ऐसा प्रत्येक आर्यसमाजी हृदय से चाहता है कि मेरी स तान मेरी तरह आर्य समाज के प्रति निष्ठावान, कर्मठ बन, आर्य समाज का भूत हर समय उसके सिर पर सवार रहे, महर्षि दयानन्द का अनन्य भक्त बने। इसके लिए माता-पिता बच्चे की आयु के लिहाज से उसी स्तर का महर्षि दयानन्द का सरल, सुबोध जीवन चरित्र पढाया जाए। महर्षि के जीवन-चरित्र के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज तथा प० गुरुदत्त विद्यार्थी, प० लेखराम आय मुसाफिर और महात्मा हसराज जी का जीवन-चरित्र पढाया जाए। इन पाच महापुरुषो के जीवन चरित्र पढ लेने के बाद बच्चो को आय समाज के बारे मे बहुत कुछ समझ मे आ जाता है और आर्य समाज के प्रति आस्था, श्रद्धा बन जाती है और वे आर्य समाज के महत्व को समझने लग जाते हैं।

कुछेक माता-पिता समझते हैं कि यदि हमारे बच्चे इन महापुरुषो के जीवन चरित्र को पढने और समझने मे लग जाए गे तो स्कूली किताबें जिनकी परीक्षा देकर पास होना है, उसमे कमजोर रह जाए गे और पास नही हो पाए गे। ऐसी बात नही है। २४ घण्टे मे एक घण्टा केवल इन महापुरुषो की जीवनी पढने मे लगाना है। एक विषय को छोडकर दूसरे विषय की पुस्तक पढने मे बच्चे विश्राम अनुभव करत है।

बच्चो को आय समाज मन्दिर मे साप्ताहिक सत्सग मे अपने साथ ले जाना आरम्भ कर देना चाहिए। यह प्रथा सदैव बनी रहनी चाहिए।

अक्सर देखा गया है प्राय माता पिता लडके से अधिक लाड प्यार करत है, लडकी से कम। साप्ताहिक सत्सग मे भी आय मन्दिर मे प्राय लडको को ही साथ ले जाते है परन्तु लडकी बेचारी को घर के किसी न-किसी छोटे-मोटे कार्यों मे लगाए रखते हैं। यह न्याय नही है। एक बात याद रखिए—परिवार मे यदि माता आर्य विचारधारा की होगी तो बच्चो पर आर्य विचारधारा का प्रभाव अवश्य पडेगा। इस प्रकार समस्त परिवार आर्य परिवार होगा और यदि केवल पिता आर्य विचार-धारा का होगा तो परिवार मे केवल पिता ही आय विचार धारा का रहेगा, अन्य कोई नही। ऐसे परिवार को आर्य परिवार नही कहा जा सकना। कन्या का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वे आर्य विचार धारा की बने। बडी होकर आय समाज का प्रचार और प्रसार महिलाओ द्वारा जितना हो सकता है उतना पुरुषो द्वारा नही होता। बच्चो का स्वभाव नकल करने का होता है। घर म माता-पिता की जैसी दिनचर्या होगी, बच्चे वैसा ही करेंगे। इसलिए घर का वातावरण अर्थात कार्यक्रम आयत्व से भरपूर हो। जैसे मिलकर सन्ध्या करना हवन-यज्ञ करना, सात्विक भोजन करना, मीठा बोलना क्रोध न करना, हर हाल मे खुश रहना, सबका भला करना झूठ न बोलना आदि। बच्च का पहला गुरु मात। होती है इसलिए माता जैसा चाहे, बच्चे को बना ले। इसलिए माता को सोच समझकर हर काम और हर बात करनी चाहिए जिससे बच्चे मे कोई बुरी आदत न पड जाए। ऐसा मेरा अनुभव है।

आज से ४० ५० वष पहले जैसे आय समाज के रग मे पूर्णतया रगे हुए आय समाजी देखने मे नही आते। आज तो प्राय नकली, फसली व अवसरवादी आर्यसमाजी है। आर्य समाज के अधिकारियो मे अधिकतर ऐसे हैं जो महर्षि दया-नन्द को और आर्य समाज को समझे ही नही। आर्यसमाज के नियमो-उपनियमो आय समाज के सिद्धाता को नही समझे है। आय समाज के सिद्धान्तो पर आचरण करना तो दूर की बात है। पुराने आर्य समाजी आय सिद्धातो पर कदाचित किसी कीमत पर भी समझौता नही करते थे। ऐसे आर्य समाजी बनन के लिए उपरोक्त पाचो आर्य समाज की महान विभूतियो के जीवन-चरित्र और उनके काय पढने चाहिए तभी हम और हमारे बच्चे देवऋण, ऋषिऋण तथा पितृऋण से उऋण हो सकते हैं।

दिल्ली से आय समाज की हिन्दी मे ती। पत्रिकाए छपती हैं। कुछेक आर्य समाज मन्दिरो मे यह तीनो पत्रिकाए मगाते ही नही, जो मगाते भी हैं तो वहा के अधिकारी तथा सदस्यगण पढत ही नही। आर्य जगत मे क्या हो रहा है उन्हे कुछ पता नही। आर्य ग्रन्था के स्वाध्याय का तो नाम लेते ही नही। वह समय था जब कोई विपक्षी महर्षि दयानन्द पर तथा आर्य समाज पर कोई आक्षेप अथवा आरोप लगाता था तो आर्य समाज के अधिकारी अथवा सदस्यगण उस विपक्षी को ऐसा मु हतोड उत्तर देते थे कि विपक्षी भविष्य मे ऐसा साहस न करता था।

यदि आप ऐसा बनकर महर्षि दयानन्द का स्वप्न साकार करना चाहते है तो उपरोक्त पाच महान विभूतिया के जीवन-चरित्र अवश्य पढे और उसके बाद विश्व का अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" पढे और समझें तभी अपना, आय समाज का तथा राष्ट्र का कल्याण कर सकेंगे।

महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र पढकर ही पता लगता है कि उन्होंने ३७ वर्ष सत्य की खोज तथा समाज सुधार के लिए कितने भीषण कष्ट सहन किए। सस्कृत के बडे-बडे धुरन्धर विद्वान वेद मार्ग को भूलकर निजी स्वार्थों के कारण जनता को अध-विश्वास अन्ध श्रद्धा, रूढिवाद मूर्तिपूजा और अवतारवाद के अधे कुए म धकेल रह थे। महर्षि न समस्त भारत के विद्वानो को शास्त्राथ के लिए ललकारा। सैकडो शास्त्राथ हुए और सभी मे विपक्षी पराजित हुए। चकित करने वाली बात तो यह है कि एक व्यक्ति जो केवल सस्कृत पढा-लिखा हुआ था, समस्त विश्व मे चर्चित और प्रसिद्ध हुआ। समस्त विश्व मे तहलका सा मचा दिया। ऋषि, साधु-सन्त, महात्मा, धुरन्धर विद्वान सभी कहत थे कि ऐसा अद्वितीय सन्यासी आज तक न हुआ और न होगा। पूर्वजन्म के पवित्र सस्कारो को लेकर सत्य की खोज और ईश्वर प्राप्ति के लिए योगबल और ईश्वरीय वरदान प्राप्त करके मानव-मात्र के भले के लिए दिन रात व्यस्त रहकर अति कष्ट सहन करके जो कार्य किया इतना काम पौराणिको के अवतारो ने नही किया। पौराणिको के अवतारो और स तो, महात्माओ, सन्यासियो से यदि निष्पक्षता से तुलना की जाए तो महर्षि दयानन्द का नाम सबसे ऊपर आएगा

धन्य पडित गुरुदत्त विद्यार्थी जिन्होने रात दिन काम करके २६ वर्ष की अल्पायु मे ही महर्षि दयानन्द का स्वप्नसाकार करने के लिए और आर्य समाज के प्रचार एव प्रचार मे चमत्कारिक कार्य कर दिया।

आर्य समाजी भाईयो से मेरा नम्र निवेदन है कि यदि आप आर्य समाज को सवश्रेष्ठ धार्मिक सस्था मनाते हैं और आय समाज का काम जो ईश्वरीय काम है, उसे तन मन धन से करना चाहते हैं तथा अपनी सतान को इसी राह पर लाना चाहते हैं तो प्रेरणा करने के लिए महर्षि दयानन्द का और उनके उत्तराधिकारी चारो विभूतितो के जीवन-चरित्र एव सत्याथ प्रकाश अवश्य पढें।

आय समाज का कार्य करने से आपको जो सन्तोष और आनन्द प्राप्त होगा, वैसा सन्तोष एव आनन्द सम्पत्ति प्राप्त करने से भी नहीं होगा।

हैदराबाद सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सेनानी सम्मानित

दिल्ली १३ अगस्त। दिल्ली की प्रमुख आर्य समाज दीवान हाल की ओर से भारत छोडो आन्दोलन के स्वर्ण जयन्ती वष के उपलक्ष मे स्वतन्त्रता सेनानियो को आज सम्मानित किया गया। समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे हुआ। इस अवसर पर स्वामी जी ने प्रत्येक स्वतन्त्रता सेनानी को एक शाल और नकद राशि से सम्मानित किया।

स्वामी जी ने अपने सन्देश मे कहा भारत छोडो आन्दोलन १९४२ मे हुआ था जबकि इससे पूर्व आर्य समाज ने १९३८-३९ मे हैदराबाद निजाम के क्रूर अत्याचारो के विरुद्ध आय सत्याग्रह आन्दोलन चलाया था। आप सभी स्वतन्त्रता सेनानियो ने उसमे भाग लिया था। आज हम इस आन्दोलन मे शहीद हुए आर्य वीरो को भी श्रद्धा पूवक याद करते है जिन्होने राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और स्वतन्त्रता के जागरण मे अमूल्य योगदान दिया था।

स्वामी जी ने कहा भारत छोडो आन्दोलन मे भी आय समाज के हजारो राष्ट्र भक्तो न भारत से अग्रेजी राज्य की जडें उखाड फेकने के लिए अनेक प्रकार के कष्ट सहे और जेलो में गए थे। आज समूचा राष्ट्र उन सभी स्वतन्त्रता सेनानियो के त्याग और बलिदान के लिए कृतज्ञता प्रकट करता है।

समारोह के अन्त मे आर्य समाज दीवान हाल के प्रधान श्री मूलचन्द गुप्त ने सभी महानुभावो का धन्यवाद किया।

आदर्श-त्रैतवाद-१२

—राजसिंह भल्ला

ब्रह्म सत्य है

तद्वै तदेतदेव तदास् सत्यमेव । स यो हैत महद्यक्ष प्रथमज वेद सत्य ब्रह्मेति जयतीमाल्लोकान जित इन्नवसावसद एवमेत महद्यक्ष प्रथमज वेद सत्य ब्रह्मेति सत्य ह्येव ब्रह्म । वृहद० ५-४-१

वह हृदय ही वह यह सत्य ही है—चित्त में सत्ता सत्य ही है । वह जो उपासक इस महान् पूज नीय, सबसे प्रथम सत्य ब्रह्म को जानता है—परमेश्वर को महान् पूज्य सनातन और सत्य स्वरूप समझता है वह इन लोकों को जीतता है । इसी प्रकार जो ऐसे इस महान् यक्ष को जानता है उसने यह असत्—नाश वा मृत्यु जीत लिया । ब्रह्म सत्य है ब्रह्म सत्य ही है ।

प्रकाश पु ज सबका स्वामी

मनोमयोऽय पुरुषो भा सत्यस्तस्मिन्नन्तहृदये यथा व्रीहिर्वा यवो वा स एष सवस्येशान सर्वस्याधिपति स्र्वमिद प्रशास्ति यदिद किञ्च । वृहद० ५-६-१

उस अन्तर्हृदय मे व्रीहि और यव जैसा सूक्ष्म जो यह आत्मा है—मनुष्य के अन्त करण मे जो यह आत्म सत्ता है वह मनोमय—ज्ञानमय है और प्रकाश ही सत्यस्वरूप है । जिसका ऐसा भास्वर सत्य है । और वह यह आदित्य रूप पुरुष—प्रकाश पु ज परमेश्वर सब का ईश्वर है । सब का स्वामी है और यह जो कुछ है इस सारे चराचर को शासन करता है । परमात्मा देही आत्मा से भिन्न है । अनन्त शक्तिमय है ।

ब्रह्म अमृत रूप है

य आकाशे तिष्ठन्नाकाशादन्तरो यमाकाशो न वेद, यस्याकाश शरीर, य आकाशमन्तरो यमयत्येष न आत्माऽन्तर्याम्यमृत । वृहद० ३-७-१२

जो ब्रह्म आकाश में ठहरा हुआ है और उसके अन्दर व्याप्त है उसको आकाश नही जानता है । यह आकाश ही उस ब्रह्म का शरीर है । यहा आकाश में ब्रह्म के शरीर की कल्पना की गई है उपासना के लिये केवल अलकारिक वर्णन ही है । यह ब्रह्म ही आकाश के अन्दर ठहर कर इसका नियमन करता है । अथवा इसे अपने अन्दर धारण करता है । यही तेरा अन्तर्यामी भगवान् है । यह ब्रह्म ही अमृत रूप है । अर्थात् शुद्ध, बुद्ध नित्य मुक्त स्वभाव है । इस आकाश म ही इस ब्रह्म का अन्य भूतो की अपेक्षा सर्वश्रेष्ठ साक्षात्कार हो सकता है ऐसा साधको—सयमी महात्माओ का कहना है ।

सनातन अविनाशी ब्रह्म

यस्मिन्पञ्च पञ्चजना आकाशश्च प्रतिष्ठित तमेव मन्य आत्मान विद्वान्ब्रह्मामृतोऽमृतम् । वृहद० ४-४-१७

प्राणस्य प्राणमुत चक्षुषश्च—क्षुरुत श्रोत्रस्य श्रोत्रम् मनसो ये मनो विदु । ते निचिक्युं ब्रह्म पुराणमग्रयम् । वृहद० ४-४-१८

जिसमे पाच-पांच जन—पृथिवी जल वायु अग्नि, सजीव जगत् और आकाश स्थिर है, मैं अमर आत्मा उस ही अविनाशी आत्मा को जानता हुआ ब्रह्म मानता हू । उस प्राण के प्राण को और नेत्र के नेत्र को तथा श्रोत्र के श्रोत्र को, मन के मन को जो जानते हैं उन्होने ही सनातन मुख्य ब्रह्म को जाना है । विचार और अनुभव से निश्चित किया है ।

ब्रह्म अन्तर्यामी अमृत है मोक्ष रूप है

य पृथिव्यां तिष्ठन्पृथिव्या अन्तरो य पृथिवी न वेद यस्य पृथिवी शरीर य पृथिवीमन्तरो यमयत्येष त आत्माऽन्तर्याम्यमृत । वृहद० ३-६-३

जो ब्रह्म पृथिवी मे ठहरा हुआ है पृथिवी के अन्दर व्याप्त है, जिसको पृथिवी नही जानती, जिसका पृथिवी शरीर है । जो पृथिवी को अन्दर से चलाता है वह तेरा ब्रह्म अन्तर्यामी अमृत रूप मोक्ष रूप है ।

ज्योति स्वरूप उससे सारा जगत चमकता है

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारक नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्नि । तमेव भान्तमनुभाति सव तस्य भासा सर्वमिद विभाति । कठो० १-५-१५

उस परमेश्वर में सूरज नही चमकता उसको सूर्य नहीं प्रकाशित करता, न उसको चान्द तारे प्रकाशित कर सकते हैं और न ही ये बिजलिया उसको प्रकाशित कर सकती हैं । अग्नि तो कहा स प्रकाशित करेगी वास्तव मे उसके ही चमकने पर दीप्तिमान होने पर सारा विश्व चमक र ा है । उसकी ज्योति से यह सारा जगत अनेक प्रकार स चमकता है । भगवान तो प्रकाश धाम है, ज्योति स्वरूप है सब को ज्योति देने वाला ईश्वर है । उसकी सत्ता के आश्रित यह विश्व है

पुरुष-भगवान सृष्टि का रचयिता सहरता है

यथोर्णनाभि सृजते गृह्णते च यथा पृथिव्यामोषधय सम्भवन्ति । यथा सत पुरुषात् केशलोमानि तथाऽक्षरात् सम्भवतीह विश्वम् । मुण्डको० १-१-७

अविनाशी भगवान से सृष्टि का प्रकाश कैसे होता है यह दर्शाते हुए अंगिरा ऋषि कहते हैं कि जैसे मकडी जाले को रचती और निगल जाती है जैस भूमि में वनस्पतिया उत्पन्न होती है और जैसे जीवित पुरुष के सिर तथा शरीर के बाल निकलते हैं ऐसे ही अक्षर भगवान स यह विश्व प्रकट होता है । जैसे मकडी मे जाले की सामग्री सूक्ष्म रूप में होती है उसम वह जाला रचती है और फिर उसे निगल भी लेती है इसी प्रकार परम पुरुष में प्रकृति कल्पनातीत ढग से रहती है उसी से भगवान सृष्टि का सृजन और फिर सहार करते हैं । जैसे भूमि में वनस्पतिया अकुरित हो जाती है ऐस ही भगवान् की विद्यमानता मे लोक-लोकान्तरो का विकास हो जाता है । और जसे जीवित मनुष्य की देह में केश तथा लोम निकलत है इसी प्रकार अविनाशी प्रभु से इस ब्रह्माण्ड का उदय होता है । भगवान् की इच्छा प्रकृति मे प्रवेश करके उसमे क्रिया उत्पन्न कर देती है । उसी आदि-सकल्प म सचालित प्रकृति नाना रूप रग आकार प्रकार आदि को जन्म दे रहा है । वास्तव मे इसम भगवान का इच्छा बाज बना हुई है ।

ईश्वर अगम्य है

न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति नो मनो न विद्मो न विजानीमो यथैतदनुशिष्यात् । अन्यदेव तद् विदितादथो अविदितादधि, इति शुश्रुम पूर्वेषां ये नस्तद व्याचचक्षिरे । केनो० १-३

ब्रह्म का निरुपण करते हुए गुरु ने शिष्य को कहा कि उस ब्रह्म म आख नही जाती न वाणी जाती है और न मन जाता है कोई किस प्रकार इसका उपदेश करे हम नही जानते नहीं समझते हैं । क्योंकि वह जाने हुए से निराला ही है । और अज्ञात से भी ऊपर भिन्न है । ऐसा पूर्वजो से हमने सुना है । जो हमारे लिये उस भगवान् का वणन कर गए है । ब्रह्म इन्द्रियों से जाना नही जाता । वाणी के व्यापार स भी बाहर है । उसका स्वरूप इन्द्रियों से अगोचर तथा अगम्य है । ऐसे अरूप को और अवर्णनीय ब्रह्म का कोई कैसे वर्णन कर सकता है यह हम नही जानते । न ही यह बात हमारी समझ मे आती है । यह ब्रह्म तो जाने हुए स्वरूप तथा न जाने हुए भेद से भिन्न है । वास्तव मे वह अगम्य है । ऐसा ही पूर्वज ऋषियो स हम सुनते आए हैं ।

उसकी महिमा अनन्त है

यद् वाचाऽनभ्युदित यन वागभ्युद्यते तदेव ब्रह्म त्व विद्धि नेद यदिदमुपासते केनो० १-४

ब्रह्म का वणन वाणी की सीमा स परे है । उसकी महिमा अनन्त है । उसे वाणी म बाध नही सकते । वाणी तो केवल सकेत करती है । इस कारण वह अनन्त लीलामय ब्रह्म वाणी मात्र से प्रकाशित नही होता । उसका स्वरूप वर्णनातीत है । यह सत्य है कि उससे वाणी प्रकाशित होती है । उसकी शक्ति तथा नियम मर्यादा से वाणी बोली जाती है । क्योंकि वह सृष्टि का कर्त्ता है । उसकी इच्छा तथा शक्ति सृष्टि मे ओत-प्रोत है । गुरू ने शिष्य को कहा तू ब्रह्म को वाणी से अवर्णनीय और वाणी के नियम का निर्माता जान । तार्किक जन जिस ब्रह्म का वर्णन युक्ति-जाल से करते हैं वह ब्रह्म नही है । ब्रह्म तो तक से अगम्य है ।

सम्पादक के नाम पत्र

मान्यवर डा० धर्मपाल जी

सादर नमस्ते।

आर्य सन्देश का पण्डित चमूपति अक प्राप्त हुआ। आपने यह अक प्रकाशित करने मे जो प्रयास किया है वह सराहनीय है। समय समय पर आप ऐसे अक प्रकाशित करते रहते हैं। जिनके द्वारा आर्य समाज के अतीत का एक रूप हमारे सामने आ जाता है। पडित चमूपति का आर्य समाज मे एक विशेष स्थान था इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक था कि आज की आय जनता को उनके विषय मे कुछ पता चले। इसके लिए आपने और आपकी सभा ने जो प्रयास किया है उसके लिए आप आर्य जगत के धन्यवाद के पात्र हैं।

—वीरेन्द्र

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

प० चमूपति की तरह सभा स्वाध्याय साधना मे लीन रहे

आपके सत्प्रयासो से श्री प० चमूपति जी एम० ए० एव श्रावणी उपाकर्म सयुक्ताक आज आय सन्देश के विशेषाक के रूप मे पाठको के हाथो मे है। विषय वस्तु साज सज्जा काफी आकर्षक है। प० चमूपति जी आर्य जगत के उदभट विद्वान दाशनिक व्यक्तित्व थे। पडित जी का धैय, सहनशीलता, गम्भीरता एव विवेकपूर्णता हम सभी आर्यों के लिए अनुकरणीय है। पडित जी के समान हमे भी निरन्तर स्वाध्याय साधना मे रहते हुए सुराष्ट्र निमाण मे रत रहना चाहिए। सम्पादक जी को कोटिश धन्यवाद। इसी प्रकार आगे भी आर्य सन्देश के विशेषाक के रूप मे अन्य विद्वानो मनीषियो के जीवन चरित्र से आय जगत को परिचित कराते रहे।

—लालमणि शर्माय पहरी (बलिया)

आर्य सन्देश के आजीवन ग्राहक बनवा रही हू

आदरणीय सम्पादक जी!

नमस्ते।

दिनाक २० सितम्बर १९९२ को आर्य सन्देश मे डा० भवानी लाल भारतीय जी द्वारा लिखा गया एक मुगलशासक का सस्कृत प्रेम" वाला लेख मुझको बहुत अच्छा लगा अत मैं प्रचारार्थ दो तीन प्रतिया मगाना चाहती हू। आशा है आप इसके लिए कष्ट करेंगे।

मैं जहा तक है दो तीन माह के अन्दर आजीवन ग्राहक अपनी पौत्री 'सुजाता को बनाना चाहती हू किन्तु लगता है आपको कहीं घाटा न लग जाय। क्योकि पुत्री की आयु केवल १४ वर्ष की है मुझे आपका आर्य सन्देश बहुत अच्छा लगता है मैं उसे साङ्गोपाङ्ग पढा करती हू। जो अक मगा रही हू तो मन में भावना यही है कि सभवत इसी को पढके लोग ग्राहक बन जाये। 'किमधिकम्"

—कुलमाता हरदेवी आय

पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी (उ० प्र०)

चमूपति अक सग्रहणीय है

प० चमूपति एव श्रावणी सयुक्ताक प्राप्त हुआ। अक वस्तुत सग्रहणीय है इन विशेषाको के माध्यम स सभा एव सम्पादक महोदयों ने ऐसा श्लाघनीय काय किया है कि जिसे आज तक कोई भी नही कर सका। भविष्य मे करने की किसी की योजना भी नही थी इस प्रकार आय समाज के दिवगत महापुरुषों के चरित्र जनता के सामने आ रहे है। यदि चुन चुन कर ... नेताओ विद्वानो सन्यासियो के जीवन चरित्र इसी प्रकार प्रकाशित होते रहे तो अद्भुत काय होगा

श्री रघुवीर वेदालकार नई दिल्ली

हिन्दी विशेषाक

सम्पादक बन्धु

आपका हिन्दी विशेषाक देखा और पढा। उसमे बडा काम की चीज थीं सो फिर गम्भीरता से पढा। हिन्दी के सन्दभ मे आपने बहुत लिखा है और अच्छा लिखा जो न केवल ज्ञान ही बढायगा बल्कि कौतुक भी अभिवृद्ध करगा।

उसमें एक लेख मे माननीय श्री प० लोकनाथ जी तर्क वाचस्पति को भजनोपदेशक शब्द से सम्बोधित किया गया है। प० लोकनाथ जी सगीत और काव्यकला के ममज्ञ आर्यसमाज के शास्त्राथ महारथी महोपदेशक थे। पूज्य पडित जी के कारण आर्यसमाज को कई स्थानो पर विजयश्री मिली। आपका अक हिन्दी साहित्य के इतिहास की दृष्टि मे इतना महत्त्वपूर्ण है कि प्रमाण की कोटि मे आ सकता है। इस प्रकार के ग्रन्थ मे अपने एक विद्वान का भजनोपदेशक सम्बोधन उसका एकाकी चित्रण है। यह कुछ खटकता सा है।

हिन्दी के पक्ष में श्री श्याम सिंह जी का विद्वानो को समर्थन निस्सदेह सकलनीय है। आपका सम्पादकीय भी आपकी हिन्दी ज्ञान सम्बन्धी प्रौढता को शीशे सा चमकाता है। सम्पादन अच्छा है।

—भूदेव साहित्याचार्य

महोपदेशक, आर्यसमाज आनन्द बिहार, दिल्ली

प० लोकनाथ तर्क वाचस्पति जी अद्वितीय शास्त्रार्थी तर्कपटु एव विद्वान लेखक भी थे। यह छपने म रह गया इसका हमें खेद है।

संस्कार प्रदूषण का समाधान

(पृष्ठ १ का शेष)

डा० धर्मपाल ने आगे कहा कि लार्ड मैकाले ने शिक्षा पद्धति को आमूलचूल बदलकर प्राचीनता के गौरव को साफ कर डाला। हमारे इतिहास को भी बदला। वैदिक साहित्य को इस ढग से प्रस्तुत किया कि उसको पढने वाले ही उसके महत्व को भूल बैठे। शिक्षा के नाम पर सास्कृतिक विकृतियो का भार देश की भावी पीढी वहन कर रही है। ऐसी स्थिति मे राष्ट्रीय चिन्तन कमजोर पडा है। मानव आपस मे एक-दूसरे के साथ जुडने के स्थान पर एक दूसरे से दूर भाग रहा है। देश के लोग भाषा सम्प्रदाय, प्रान्त और जाति के नाम पर इस देश को खण्ड-खण्ड कर देना चाहते हैं। इन सब समस्याओ का एक ही समाधान है कि देश के नागरिको को देश की मूल सस्कृति से जोडा जाए और यह सस्कृति केवल देश की ही नही अपितु समस्त विश्व की विश्ववारा सस्कृति है। इसी का दूसरा नाम वैदिक सस्कृति है। वेद के असली और पक्षपात पूर्ण भावना से किये गये भाष्यो को एक ओर रखकर यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के वेदार्थ को हम सब समझें और इसका प्रचार करे तो एक दो नही, राष्ट्र की अनेको समस्याओ का समाधान हो जाएगा।

सम्मेलन की अध्यक्षता श्री वेद प्रकाश जी शास्त्री, भूतपूर्व प्रधानाचाय ने की तथा सयोजन डा० प्रेमचन्द्र जी श्रीधर ने किया। सम्मेलन मे आचार्य ओ३मवीर जी शास्त्री, प्रो० भारत मित्र जी शास्त्री, डा० महेश चन्द्र विद्यालकार प० परमानन्द जी (प्रधान आय समाज पूर्वी शालीमार बाग), डा० शशि प्रभा कुमार, आदि ने प्रेरक विचार व्यक्त किए।

आर्य समाज न्यू मोतीनगर (कमपुरा) मे रजत जयन्ती समारोह ९ से १८ अक्तूबर तक मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ। जिसके ब्रह्मा ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य व अध्वर्यु श्री योगेश्वर चन्द्र आर्य थे। ११ अक्तूबर को विशाल शोभा यात्रा निकाली। १६ को महिला सम्मेलन, रात्रि ७ ३० बजे से। १७ को महर्षि दयानन्द सरस्वती शिशु बाल मन्दिर का वार्षिकोत्सव म सास्कृतिक कायक्रम प्रस्तुत करके सम्पन्न हुआ। १७ को आर्य युवक सम्मेलन तथा रविवार १८ को यज्ञ की पूर्णाहुति तथा ऋषि निर्वाणोत्सव आदि विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

विरोध-पत्र

नई दिल्ली। आर्यसन्देश के ४ अक्तूबर ९२ के अक म 'राष्ट्रभक्तो को प्रातवादी कहने वाली पुस्तक जब्त की जाए' शीर्षक के अन्तर्गत आय प्रतिनिधि सभा की अपील पर देश की अनेक आर्य समाजो से श्री अर्जुन सिंह मानव ससाधन मन्त्री को विरोध-पत्र भेजने के समाचार प्राप्त हो रहे हैं।

आर्यसमाज मुलुण्ड कालोनी हिन्दुस्तान चौक, आर्य समाज गली, बम्बई-८२ श्री निरशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या (फैजाबाद) आर्यसमाज (गुरुकुल) अशोक विहार, दिल्ली, आयसमाज तिमारपुर दिल्ली एव आर्यसमाज झिलमिल कालोनी, शाहदरा दिल्ली ने मानव ससाधन मन्त्री को भेजे पत्रो की प्रतिया दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली को भी भेजी हैं।

नागरिक अभिनन्दन

जोधपुर। आर्यसमाज सरदारपुर जोधपुर मे १५ नवम्बर ९२ को आदर्श समाज सेवी व ऋषि भक्त ९१वर्षीय आर्य श्री दानमल जी सिंघवी का नागरिक अभिनन्दन किया जा रहा है।

आगामी कार्यक्रम

नशाबन्दी अधिवेशन

रोहतक ११ अक्तूबर अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् का अधिवेशन ७ व ८ नवम्बर९२ को रोहतक मे होगा। दयानन्दमठ रोहतक मे प्रो० शेरसिह की अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की सम्पन्न हुई बैठक मे यह निणय लिया गया था।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज पजाबी बाग एक्सटेन्शन नई दिल्ली का ७वां वार्षिकोत्सव १ से १५ नवम्बर तक मनाया जा रहा है। समारोह मे प्रभात फेरी चतुर्वदशतकीय यज्ञ, प्रवचन आदि कार्यक्रम होगे १५नवम्बर को पूर्णाहुति होगी।

वेद कथा आरम्भ

वैदिक सस्थान, सी-२२, राजोरी गार्डन नई दिल्ली मे ३० नवम्बर से ४ दिसम्बर तक प्रतिदिन वेद पढाने की व्यवस्था की गई है। इच्छुक जन २८ नवम्बर तक समाज मन्दिर मे अपना नाम पजीकृत करा लें।

उल्लेखनीय है कि महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के नियमो मे कहाहै कि वेद का पढ़ना-पढाना व सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। सस्कृत न जानने वाले के लिए यह उत्तम अवसर है।

आर्यसमाज दिलशाद गार्डन

आर्य समाज दिलशाद गार्डन मे प्रथम वार्षिकोत्सव एव ऋषि निर्वाणोत्सव ५ से ७ नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है प्रतिदिन प्रात ८-३० तक ब्र० आर्य नरेश के ब्रह्मत्व मे यज्ञ तथा रात्रि ७ ३० से ९-३० बजे तक वेदकथा, भजन आदि होगे।

७ नवम्बर को दोपहर २ से ५ बजे तक महिला सम्मेलन तथा ८ को पूर्णाहुति एव मुख्य समारोह होगा जिसमे प० क्षमचन्द जी सुमन आचार्य यशपाल सुधाशु आदि के प्रवचन होगे। सभी धर्मप्रेमी सादर आमन्त्रित हैं।



200/-रुपये की खरीद पर1सुधाशुजी का टेपरिकार्डर कैसेट या तौलिया







आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R. N. No 32387/77 Posted at N D P S O on 29 30-10-1992 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/९२

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल-११०२४/९२ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) १३९/९२

शोक समाचार

ब्रह्म० कृष्णदत्त जी का दु:खद निधन

ब्रह्म० कृष्णदत्त जी का १५ अक्तूबर को प्रात ३ १० बजे निधन हो गया। वे ५० वर्ष के थे।

वैदिक सस्कृति के प्रति समर्पित ब्रह्म० कृष्णदत्त जी गुरुकुल बरनावा के सरक्षक थे प्रतिवर्ष शिवरात्रि के बाद वाले रविवार से आठ दिन का चतुर्वेद पारायण यज्ञ गुरुकुल की पाच विशाल यज्ञशालाओ मे किया करते थे।

दिनकरपुर ग्रामवासी श्री कालूराम ने साय ४-३० बजे ब्रह्म० जी के शव को मुखाग्नि दी और अन्तिम संस्कार किया गया। १७ अक्तूबर को अस्थि सचयन किया गया।

ब्रह्म०जी की पुण्य स्मृति मे १ अक्तूबर से चारो वेदो का पारायण यज्ञ शुरु किया गया है और २५ अक्तूबर को प्रात ९ बजे पूर्णाहुति है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करे।

श्री प्रेमसिह आर्य नहीं रहे

नई दिल्ली। आर्य वीर दल के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री प्रेमसिह आर्य का ९ अक्तूबर ९२ को देहावसान हो गया। श्री आर्य ने आर्य वीर दल के सैनिक के रूप मे कार्य आरम्भ किया था और सारा जीवन आर्य समाज के लिए कार्य करते रहे।

आर्यसमाज बिरला लाइन्स, दिल्ली से लगभग ४५ वर्षों से वे जुड़े हुये थे। मधुरवाणी, कार्य कुशलता एव ईमानदारी के कारण आर्यसमाज मे अनेक पदो पर रहकर उन्होने सेवा की एव अन्त तक अन्तरग सभा के सदस्य बने रहे।

आर्य समाज बिरला लाइन्स ने ११ अक्तूबर को आयोजित एक शोक सभा मे श्री प्रेमचन्द आर्य को एक सच्चा ऋषि भक्त, समाज सेवक एव एक कर्मठ कार्यकर्त्ता के रूप में याद करते हुये उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

परमपिता से प्रार्थना है कि वह दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान कर सद्गति प्रदान करे तथा शोक सतप्त परिवार को महान् दु:ख सहने की शक्ति दे।

आर्य समाज निर्माण विहार

आर्यसमाज निर्माण विहार का १२वा वार्षिकोत्सव २ से ८ नवम्बर तक सैन्ट्रल पार्क निर्माण विहार मे धूम-धाम से मनाया जा रहा है। रात्रि ८-३० से ९-३० बजे तक आचार्य यशपाल सुधाशु जी की मनोहर वेद कथा होगी। प्रतिदिन प्रात ६-३० बजे से ८ बजे तक प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सामवेद यज्ञ होगा। ८ नवम्बर को पूर्णाहुति व आर्य सम्मेलन मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती व अन्य विद्वान व नेता उद्बोधन देंगे।



सेवा मे—

2367 श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ प्र)

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन—३१०१५० केलिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल १०२४/१–०९२

सांप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १६, अंक ४ रविवार, ८ नवम्बर १९९२ विक्रमी सम्वत् २०४९ दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक— २५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश मे ५० पौण्ड १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

आर्यसमाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गौरवमयी आर्य संस्कृति की रक्षा का आह्वान

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

नई दिल्ली १८ अक्तूबर। "सस्कृति नदियो, तालाबो पुलो, सडको व मकानो का नाम नही है, अपितु सस्कृति हमारी आन्तरिक विचारधारा, वेशभूषा, पर्व-त्यौहार, धर्म व ज्ञान मे समाहित है और इस पर चिन्तन की आवश्यकना है।" ये उद्गार मार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सग्स्वती ने १८ अक्तूबर को आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड, नई दिल्ली के ७०वे वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयाजित सस्कृति रक्षा सम्मेलन मे व्यक्त किये। स्वामी जी ने कहा कि रामराज्य का काल हमारी सस्कृति का सर्वश्रेष्ठ व आदर्श काल था अन इस प्राचीनतम गौरवमयी सस्कृति की रक्षा के लिए आर्यों को आगे बढकर काम कग्ते रहना चाहिए।

इस सस्कृति रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षना मार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शाम्त्री ने की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान व सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी प० रामचन्द्रराव वन्देमानरम ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि जब तक लोगा को अपनी सस्कृनि का गौरव न पता हो तब तक वे उस सस्कृति की विशष्टता कायम नही कर सकतेहै। यदि आप किसी राष्ट्र की हत्या करना चाहते हैं नो उस राष्ट्र की सस्कृति को नष्ट कर दे। अंग्रेजो ने हमारी सस्कृनि का हनन किया और आज जरूरत है सस्कृति का गौरव पहचानने व उसकी रक्षा करने की।

श्री केदारनाथ साहनी ने कहा कि हमे उस प्राचीन उज्जवल सम्कृनि की परीक्षा व पग्विर्द्धन करना चाहिए जिसका गौरव गान करते ऋषि-मुनि व महापुरुष भी नही थकते थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि महर्षि दयानन्द ने आर्य सस्कृति व वैदिक विचारधारा को जीविन रखने के लिए सस्कार विधि की ग्चना की थी। सस्कारो का जीवन निर्माण म बहुत महत्व है परन्तु बच्चो का जन्मदिन आज केक काट कर मनाया जा रहा है। इससे बच्चो पर क्या सम्कार पडेगे।

अत जन्मदिन, नामकरण, मुण्डन कर्ण छेदन आदि सस्कार वैदिक रीति से मनाने चाहिए ताकि बच्चो का चरित्र निर्माण हो सके एव उनमे भारतीय सस्कृति के प्रति आस्था बढ सके।

श्री सूर्यदेव ने आगे कहा कि माता-पिता को अभक्ष्य पदार्थो का सेवन नही करना चाहिए और शुद्ध खान-पान व शुद्ध आचार-विचार पर विशेष ध्यान देना चाहिए ताकि हम बच्चो को अच्छे सस्कार देकर अपनी गौरवमयी सस्कृति की रक्षा मे योगदान दे सके।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने कहा कि हमे राम-लक्ष्मण के आदर्शों की रक्षा करनी चाहिए। जब मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने लक्ष्मण स पूछा कि क्या ये आभूषण मीता के हैं ता लक्ष्मण ने कहा—

नाह जानामि के पूरे नाह जानामिकुन्डले।
नू पुरैव नु अभिजनामि, नित्यम् पादाभिवन्दनात्॥

अन हमे इस उच्च आदर्श को ध्यान मे रखते हुये भारतीय सस्कृति की रक्षा के लिए मकल्प लेना चाहिए।

मस्कृति रक्षा मम्मेलन मे मुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार एव प० महेन्द्रकुमार शास्त्री आदि ने भी आदर्श आर्य सस्कृति की विशेषना पर प्रकाश डाला।

इससे पूर्व आज प्रात ऋग्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति मे राजधानी की विभिन्न समाजो व सस्थाओ के सैकडो नर-नारी श्रद्धापूर्वक सम्मिलित हुये। १२ अक्तूबर से प्रारम्भ हुये इम यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य मदनमोहन विद्यासागर हैदराबाद वाले थे। आर्य समाज हनुमान रोड के धर्माचार्य डा० कर्णदेव शास्त्री यज्ञ म सहयोगी थे और गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियो ने वेदपाठ किया।

पूर्णाहुनि के उपरान्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की धर्मार्य मभा के अध्यक्ष लब्ध प्रनिष्ठ वैदिक विद्वान डा० भवानीलाल भारतीय का मनोहर व्याख्यान हुआ।

मभाज मन्दिर मे १६ अक्तूबर को लाला भागमल सहदेव स्मारक 'महर्षि दयानन्द—राष्ट्र निर्माता भाषण प्रतियोगिता मे स्कूली छात्र-छात्राओ ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम के अध्यक्ष थे डा० धर्मपाल आर्य एव निर्णायक मडल म थे डा० आशारानी जोशी, श्यामप्रसाद मुखर्जी कालेज डा० पूरनचन्द टडन, दिल्ली विश्वविद्यालय, डा० देवराज पथिक श्रद्धानन्द कालेज। वक्ताओ ने छात्रो के शैक्षिक विकास मे ऐसी प्रनियोगिताओ के महत्व पर प्रकाश डाला।

इससे पूव प्रात मार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने ओम ध्वजारोहण किया।

१६ अक्तूबर अपराहन १२ से ५ बजे तक आयोजित आर्य महिला सम्मेलन मे नारी उद्धारक स्वामी दयानन्द की नारी जाति के प्रति अमूल्य सेवाओ का स्मरण कर विदुषी वक्ताओ ने बाल-विवाह, दहेज प्रथा मती प्रथा व मामाजिक कुरीतियो के उन्मूलन के लिए मघर्ष करने का सकल्प लिया।

आज क सन्दर्भ मे वेदो की व्यावहारिकता' पर १७ अक्तूबर का आयोजित वेद सम्मेलन डा० भवानीलाल भारतीय की अध्यक्षना मे सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के मयोजक थे डा० महेश विद्यालकार सामद श्री सोमपाल डा० प्रमचन्द श्रीधर, श्री अभिविनय भारती, डा० रघुवीर

(शेष पृष्ठ ८ पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा

९ नवम्बर को १००वें जन्म दिवस पर विशेष

विलक्षण प्रतिभा के धनी : पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

—श्री विमलकान्त शर्मा

प० इन्द्र विद्यावाचस्पति जी न केवल एक महान राष्ट्रभक्त, अनन्य हिन्दी सेवी, मूर्धन्य साहित्यकार, सुप्रसिद्ध भाषा शास्त्री व इतिहासविद् ही थे बल्कि वे एक यशस्वी पत्रकार भी थे।

प० इन्द्र विद्यावाचस्पति का जन्म ९ नवम्बर १८८९ को जालन्धर के एक सम्पन्न परिवार मे हुआ था। उन्हे अपने स्वनाम-धन्य पिता स्वामी श्रद्धानन्द से देशप्रेम व राष्ट्र भक्ति की भावना विरासत मे मिली थी। छात्र जीवन मे उनकी देशप्रेम सम्बन्धी लिखी एक कविता की निम्न पक्तिया उल्लेखनीय हैं

हे मातृभूमि तेरे चरणो मे सिर नवाऊ,
मैं भक्ति भेंट अपनी तेरी शरण मे लाऊ।
तेरे ही काम आऊ तेरे ही मन्त्र गाऊ,
मन और देह तुझ पर बलिदान मैं चढाऊ॥

उन्होने बचपन मे ही लोकमान्य बाल गगाधर तिलक को अपना राजनैतिक गुरु मान लिया था और स्वतन्त्रता सग्राम मे सक्रिय भाग लेकर वे कई बार जेल भी गये। बाद मे तो वे जिला व प्रान्तीय कार्ग्रेस समिति के भी प्रधान चुने गये थे।

मेधावी छात्र प० इन्द्र देव जी की शिक्षा दीक्षा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार मे हुई थी। सन १९१२ मे वहा से स्नातक की उपाधि ग्रहण की और वे उसी विश्वविद्यालय मे इतिहास के अध्यापक नियुक्त हो अध्यापन करने लगे। उन्नति करते करते वे मुख्य अधिष्ठाता व कुलपति के गौरवशाली पद तक पहुच गये। उनके कार्यकाल मे विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का बहुत सुधार हुआ और उन्होने गुरुकुल कागडी मे एक सग्रहालय की भी स्थापना की जो आज भी पर्यटको के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

प्रख्यात साहित्यकार प० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने लगभग ५० पुस्तकें लिखी हैं। इनके ६ उपन्यासो मे "सरला की भाभी" "अपराधी कौन", "जमीदार", आदि विशेष लोकप्रिय हुये। धार्मिक ग्रन्थो मे "उपनिषदो की भूमिका", आत्म-बलिदान" "भारतीय सस्कृति का प्रवाह", आदि उल्लेखनीय हैं। 'मेरे पिता" नामक पुस्तक पर उन्हे उत्तर प्रदेश सरकार ने पुरस्कृत किया था।

प० इन्द्र जी एक इतिहासकार भी थे। उन्होने अकबर से लाड माउन्ट बेटन तक भारत का इतिहास ६ भागो मे लिखकर एक प्रशसनीय कार्य किया है। आर्य समाज का इतिहास (२ खण्ड) लिखकर उन्होने सर्वप्रथम मौलिक प्रयास किया था।

भाषा शास्त्री प० इन्द्र विद्यावाचस्पति जी का सस्कृत, उर्दू, अग्रेजी, फ्रेंच आदि कई भाषाओ पर समान अधिकार था। हिन्दी के प्रकाड पडित इन्द्र जी ने तो राष्ट्रभाषा की अद्वितीय सेवा की है। बाल्यकाल से ही वे अपनी डायरी हिन्दी या सस्कृत मे लिखते रहे थे। दिल्ली मे पहले उर्दू का बोलबाला था, परन्तु उनके प्रयासो से यहा हिन्दी का विशेष प्रचार हुआ। गुरुकुल कागडी मे शिक्षा का माध्यम हिन्दी करवाने का श्रेय तो प० जी को ही जाता है। हिन्दी की उल्लेखनीय सेवाओ के लिए तो हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उन्हे साहित्य वाचस्पति की उपाधि से सम्मानित किया था।

प० इन्द्र वाचस्पति जी दिल्ली मे हिन्दी पत्रकारिता के जनक माने जाते हैं। ७-८ वर्ष की अल्प आयु मे ही उन्होने "सत्य प्रकाशक" नामक हस्तलिखित पत्रिका निकाल कर एक अद्भुत कार्य किया था और बाद मे वे 'सद्धर्म प्रचारक" साप्ताहिक पत्रिका का भी प्रकाशन करने लगे।

सन १९१२ मे दिल्ली से उन्होने "विजय' नामक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया जिससे उन्हें पर्याप्त ख्याति मिली। "वैभव", "भविष्य', "अर्जुन', "वीर अर्जुन", "नवराष्ट्र', 'जनसत्ता', आदि अनेक पत्र पत्रिकाओ का सफल व कुशल सपादन कर उन्होने निष्पक्ष व राष्ट्रवादी विचारधारा का शखनाद किया था। पडित जी के अग्रलेख व सपादकीय देश प्रेम की भावना से ओतप्रोत होते थे और वे सदैव अग्रेजी सरकार के कोपभाजन बने रहे। इसी कारण कई बार वे जेल भी गये और उन्हे अखबार तक बन्द करने पडे।

प० इन्द्र जी एक आदर्श व यशस्वी पत्रकार थे और उन्होने पत्रकारिता को एक मिशन के रूप मे अपनाया था। वे सफल पत्रकार उसे ही मानते थे जो तपस्वी व निर्लोभी हो। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन ने "वीर अर्जुन" की रजत जयन्ती के अवसर पर कहा था, 'प० इन्द्र विद्यावाचस्पति के करो मे हिन्दी प्रेम का गाडीव सदैव राष्ट्रीयता की रक्षा करता रहेगा"। प्रख्यात साहित्यकार श्री क्षेमचन्द सुमन ने एक बार उनके बारे में कहा था कि प० इन्द्र जी हिन्दी पत्रकारिता के गगन के एक देदीप्यमान नक्षत्र हैं। आपके प्रयासो से ही अखिल भारतीय पत्रकार सघ की स्थापना हुई और वे दो बार इसके प्रधान भी चुने गये। हिन्दी पत्रकारिता जगत मे उनकी बहुमूल्य सेवाए सदैव स्वर्णाक्षरो मे अकित रहेंगी।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने उन्हें सन १९५२ मे राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया था और वे सन १९५८ तक इसके सदस्य रहे। आप सघ लोक सेवा आयोग के परामर्शदाता, शिक्षा मन्त्रालय की विश्वकोश परामर्शदात्री समिति के सदस्य, अस्पृश्यता निवारण लीग के महामन्त्री, स्वदेश सघ के प्रधान भी चुने गये। अपनी अद्भुत सूझबूझ से उन्होने इन सभी सस्थाओ को सक्रिय सहयोग देकर इनका मार्गदर्शन किया था। ऐसे महापुरुष का स्वर्गवास २३ अगस्त १९६० में हुआ था।

प० इन्द्र विद्यावाचस्पति आर्य समाज के निष्ठावान कार्यकर्ता थे। वे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के भी मन्त्री व प्रधान निर्वाचित हुए। प० जी ने अत्यन्त लगन व समर्पित भाव से आर्य जगत की जो बहुमूल्य सेवा की है, वह सदैव स्मरणीय रहेगी।

ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी प० इन्द्र विद्यावाचस्पति की जयन्ती के अवसर पर उन्हें कोटि कोटि श्रद्धा सुमन अर्पित हैं।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज

बम्बई। आर्यसमाज सान्ताक्रुज, बम्बई ने सन् १९९३ के स्वर्ण जयन्ती वर्ष से पुरस्कार राशि मे वृद्धि की घोषणा की है। वेद-वेदाग पुरस्कार राशि को २१००० रु० से बढाकर २५००० रु०, वेदोपदेशक राशि को २१००० से बढाकर २५००० रुपये तथा मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार राशि को ११००० रुपये से बढाकर २५००० रुपये कर दिया है।

उल्लेखनीय है कि इस वर्ष लब्ध प्रतिष्ठ वैदिक विद्वान् डा० भवानी लाल भारतीय को श्री मेघ जी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार स सम्मानित किया गया था। डा० भारतीय को ११ हजार रुपये की थैली, अभिनन्दन पत्र, शाल व चादी की ट्राफी एक विशाल व भव्य समारोह मे प्रदान की गई थी।

अमीचन्द मेहता निर्वाण शताब्दी

जोधपुर। सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के धर्माधिकारी डा भवानीलाल भारतीय ने आर्य जगत से पुरजोर अपील की है कि अमीचन्द मेहता की वर्ष १९९३ मे निर्वाण शताब्दी भव्य व शानदार मनाये। उल्लेखनीय है कि श्री मेहता आर्यसमाज के आद्य भजनोपदेशक, गायक और कवि भक्तराज थे जो महर्षि दयानन्द का ससर्ग प्राप्त कर सद्मार्ग पर आये थे। २८ जुलाई १८९३ को श्री मेहता का निधन हुआ था।

डा भारतीय के सुझाव इस प्रकार है—

१—निधन शताब्दी पर सभाये दो द्विसीय कार्यक्रम रखे।

२—आर्य शिक्षण सस्थाओ मे अमीचन्द के भजनो की प्रतियोगिताये रखकर विजेता छात्र-छात्राओ को पुरस्कृत किया जाए। ३—विश्व की सभी आर्य समाजे स्थानीय रूप से आयोजन कर श्री मेहता को श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर। ४—वयोवृद्ध भजनोपदेशक गायको, कवियो, सगीतज्ञो आदि को सम्मानित किया जाए।

डा भारतीय द्वारा सम्पादित श्री मेहता का ६३ भजनो का सग्रह व जीवन चरित्र प्रकाशनाधीन है। अग्रिम आदेश आदित्य प्रकाश आर्य, ५००२/२, हलवाई हट्टा पानीपत, हरियाणा को भेजे।

साप्ताहिक ओ३म्
आर्य सन्देश

लोहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल



भारत को ब्रिटिश शासन की दासता से मुक्त कराने के लिए जिन महान देशभक्तो न अपना योगदान दिया उनम लोहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल का विशिष्ट स्थान है। सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म ३१ अक्तूबर सन १८७५ को गुजरात प्रान्त के करमसद गाव मे हुआ। उनके पिता जवेद भाई न १८५७ के प्रथम स्वाधीनता सग्राम मे भाग लिया। उनके हृदय मे देश को आजाद कराने की तडप ी गाधी जी का भी उद्देश्य यही था। उन्होन स्वय को गाधी जी को समर्पित कर दिया। श्री के० एम० मुशी ने लिखा है— गाधी जी के सामन उनका पूण आत्म समपण जो प्राय आध्यात्मिक ढग का था उनकी महान प्रबन्ध शक्ति राष्टीय शक्ति के मख्य स्तम्भ सामान्य प्रशासन को बनाने और बनाये रखने का उनका सामथ्य उनका साहसी नेतृत्त्व मनुष्यो की भावनाओ और आकाक्षाओ को ठीक ठीक जान नने की शक्ति और ब्रिटिश शासन के प्रति उनकी समझौता न करने की प्रवत्ति ने भारत की स्वाधीनता के सघर्ष म जबदस्त ताकत का केन्द्र बना दिया था। सन १९१६ से ही वे एक निर्भीक साहसी राष्ट्र भक्त और स्वाधीनता सग्राम के सेनानी के रूप मे उभर गए थे। १९१८ म अहमदाबाद की मजदूर हडताल म वे अग्रणी रहे। १९२३ मे नागपुर झण्डा सत्याग्रह का उन्होने नेतृत्त्व किया। १९२७ २८ मे बारडोली सत्याग्रह मे उनकी सफलता से प्रभावित होकर गाधी जी ने उन्हे सरदार कहकर सम्मानित किया था। उन्होने उस समय किसानो के लिए जो कहा था अविस्मरणीय है अगर इस दुनियामे कोई सर उठाकर चल सकता है तो वह किसान है। वह स्वय पैदा करता है, बाकी सब उसकी कमाई खात हैं। पर आज उसका बुरा हाल हो गया है। सारी दुनिया तुम दोनो अर्थात किसान और मजदूर के सहारे चलती है पर फिर भी दुनिया की सबसे ज्यादा मसीबत तम्हारे ऊपर है। मझ तम लोगो की दुखदायी लाचारी देखकर बडा दुख होता है। तुम्हारी अवस्था पर बहुत शर्मन्दा और अपमानित महसूस करता ह। मैं जब देखूगा कि तुम आदमियो की तरह सर उठाकर चल सकते हो तब मैं अपने आपको धन्य समझूगा और अपनी मेहनत को सफल समझूगा। इन्ही विचारो को आय समाज के सस्थापक युग प्रवत्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बहुत पहले कहा था—'राजाओ के राजा किसान आदि खाने पीन और धन से रहित होकर दुख न पाव। डा० रामकृष्ण आय ने इस वाक्य को अपनी पुस्तक स्वामी दयानन्द का आर्थिक चितन के आवरण पृष्ठ पर लिखकर देश की अथ व्यवस्था मे किसान मजदूर की उपादयता और महत्ता को रेखाकित किया है।

निस्सन्देह सरदार पटेल का योगदान राष्ट्र मुक्ति सघर्षों मे नेतृत्त्व के साथ साथ काग्रेस को शक्ति और ऊर्जा प्रदान करन म भी याद किया जाएगा। १९३० के नमक सत्याग्रह मे वे जेल गए। १९३१ मे वे काग्रेस अध्यक्ष रहे। १९४२ क अन्तिम स्वतन्त्रता सग्राम तक वे वर्षों जेलो मे रह। जब काग्रेस ने १९३५ के शासन विधान के आधीन पद ग्रहण करने का निश्चय किया तब सरदार पटेल ने विभिन्न प्रान्तो मे कांग्रेस मन्त्री मण्डलो के सचालन म प्रमुख भाग लिया। जान गुन्थर ने लिखा था— पटेल बहुत अच्छ पार्टी नेता है। जब एक बार गाधी जी कोई माग निश्चित कर लेते हैं, तब उस पर सबको चलाने का भार पटेल का होता है। वह पोलीटिकल मशीन के निर्माता हैं और वही आठ काग्रेसी मन्त्री मण्डलो को नियन्त्रित करत हैं।

सरदार पटेल न देशी रियासतो के विलीनीकरण और राष्ट्रीय एकता के सस्थापक के रूप मे भी विशिष्ट योगदान दिया। सितम्बर १९४६ मे अन्तरिम सरकार में वे उपप्रधान मन्त्री बनाए गए और १९४७ में भारत विभाजन के बाद गृहमन्त्री। उन्होने अपनी राजनीतिक सूझ बूझ से ६०० से अधिक रियासतो का भारतीय सघ मे विलीनीकरण किया। हैदराबाद के निजाम और जूनागढ के नवाब ने जब नकारात्मक रवैया अपनाया तो उन्होने पुलिस कायवाही द्वारा इनका दमन किया और इन्हे भारतीय सघ मे मिलने के लिए बाध्य किया। उन्होने इस अवसर पर आय समाज को याद रखा। उन्होने कहा था आय समाज न यदि पहले से भूमिका तैयार न की होती तो तीन दिन मे हैदराबाद मे पुलिस एक्शन सफल नहीं हो सकता था।

देश का महान स्वतन्त्रता सेनानी राष्ट्रीय एकता एव अखण्डता का प्रबल समथक राष्ट्र निर्माता सरदार वल्लभ भाई पटेल १५ दिसम्बर १९५० को हमे छोड गया परन्तु उसका महान व्यक्तित्व एव कृतित्व देशवासियो को सदैव अनुप्राणित करता रहेगा। उनके विभिन्न कायो तथा उनके गौरवपूण व्याख्यान हमे सदैव प्रेरणा देते रहेगे।

सरदार पटेल को रामलीला मैदान म प्रतिवष दीपावली के अवसर पर आय केन्द्रीय सभा के तत्त्वावधान म आयोजित महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह में ९ ११ ५० को आमन्त्रित किया गया था। उन्होने उस समय तिब्बत और नेपाल की घटनाओ के खतरे का विश्लेषण करने हुए कहा था — इस भीषण काल मे भारत वासियो का कत्तव्य है कि वे इस प्रकार की आपत्तियो से डर कर भाग नही वरन बहादुरी के साथ वीरता के साथ इनका डटकर मकाबला कर। स्वामी दयानन्द और महात्मा गाधी का वास्तविक आह्वान यह था कि कायरता और भीरुता म साहस विहीन मत बनो और खतरे से डरकर मत भागो। देश को स्वतन्त्र हुए तीन वष हुए हैं। इस स्वतन्त्रता की पूर्णतया रक्षा करनी है। इस कलियुग मे हम अहिंसा का जवाब अहिंसा से दग परन्तु यदि किसी न हमारे विरुद्ध शक्ति का प्रयोग किया तो हम शक्ति के साथ उसका प्रतिकार करेंगे। उन्होने महर्षि दयानन्द को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा था— स्वामी दयानन्द का सबसे बडा योगदान यह रहा कि उन्होन देश को किंकत्तव्य विमूढता के गहरे गडढ मे गिर जान से बचाया उन्होने ही भारत की स्वाधीनता की वास्तविक नीव डाली थी।

श्री के एम मुशी ने एक पुस्तक लिखी है एक युग का अन्त हैदराबाद की स्मृतिया। श्री मुशी को सरदार पटेल ने हैदराबाद मे भारत सरकार का एजेंट जनरल बनाकर भेजा था। वे वहा पर ५ जनवरी से २१ सितम्बर १९६८ तक रह। उन्होने इस पुस्तक मे सरदार पटेल का अनेक स्थानो पर सश्रद्ध स्मरण किया है। उन्होने आय समाज का भी सम्मानपूवक स्मरण किया है। वे लिखते हैं मैं जानता था कि हैदराबाद मे भारत के एजट जनरल के रूप मे मेरी उपस्थिति का स्वागत नही किया जाएगा। दस वष पूव जब मैं बम्बई का गहमन्त्री था मैंने हैदराबाद के निजाम की इस प्राथना को ठुकरा दिया था कि मैं आय समाजियो के विरुद्ध जो हैदराबाद मे शोलापुर होकर आत थे कायवाही करू। मैंने उन्हे कह दिया था कि यह मेरा काय नही है कि मैं उन सत्याग्रहियो के विरुद्ध कायवाही करू जो धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए तथा लम्बे समय से पीडित हिन्दुओ के उदधार के लिए काय कर रहे थे। (पृष्ठ ८)

उन्होने आगे लिखा है कि आय समाज ने हैदराबाद मे हिन्दुओ की स्वतन्त्रता के लिए सत्याग्रह किया था। आय समाज हिन्दू धम का सशक्त प्रहरी है। उन्होने यह भी बताया कि हिन्दुओ की ओर मे जो ज्ञापन भारत सरकार को दिया गया था और जिस पर श्री एम एस अने श्री पा मी ? श्री सी वाई चिन्तामणि और श्री पी एस शिवस्वामी अय्यर के हस्ताक्षर थे उसे उन्होने स्वय पढा था। उसमे चार मागे थी (१) वदिक धम और सस्कृति के व्यवहार और प्रचार की स्वतन्त्रता २ आय समाज मन्दिर हिन्दू मन्दिर सिख गुरुद्वारा यज्ञशाला हवनकुण्ड की स्थापना और मरम्मत की स्वतन्त्रता (३) हिन्दू लडके लडकियो के लिये स्कूल चलाने की स्वतन्त्रता (४) धार्मिक सामाजिक जुलूस और नगर कीर्तन आयोजित करने की स्वतन्त्रता य चारो बात ऐसी थी जिनके लिए आय समाजियो को दन्डित करना मानवीयता के विरुद्ध होता। सर अकबर हय्याद्री ने पडोसी के नाते मुझसे प्रार्थना की पर मैंने यह कहकर ठुकरा दिया था कि जिनका अधिकार है उन्हें मिलना ही चाहिए।

(पृष्ठ २३ २४)

श्री मुशी ने आगे लिखा है कि जब उन्हे तात्कालिक विश्लेषण और निरीक्षण के लिए विश्वसनीय व्यक्तियो की आवश्यकता पडी तो उस समय आय समाज के

शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादक के नाम पत्र

आर्य सन्देश अद्वितीय पत्र है

आपका सम्पादित पत्र आय सन्देश मै पिछले तीन वर्षो से स्थाई रूप से मगवा रहा हू इसकी सामग्री आर्य समाज के प्रचार-प्रसार एव ज्ञान वर्धन के लिए अद्वितीय होती है वही इसके विशेषाक सुन्दर आकषक एव सम्पूर्ण साहित्यिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं जिनका कोई भी दूसरा पत्र मुकाबला नही कर सकता। पडित चमूपति अक लिखकर आपने महाविद्वान की जानकारी देकर हम सदैव आर्य सन्देश का अग्रणी ऋणी बना दिया है। इसी प्रकार के विशेषाको एव साप्ताहिक मे प्रसारित ज्ञानवर्धन सामग्री के कारण अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन दिल्ली मे मैंने इसकी सदस्यता हेतु शुल्क जमा कराया था तब से प्रतिवर्ष शुल्क नियमित भेजता रहा हू।

—रामेश्वर प्रसाद आय
पो० करड, सीकर राजस्थान-३३२७२३

उपयोगी विशेषांक

'वार्षिक वृतान्त विशेषाक तथा 'श्रावणी उपाकर्म एव प० चमूपति सयुक्ताक' यथासमय प्राप्त हुए, धन्यवाद।

आपके दोनो ही प्रकाशन अत्यन्त उपयोगी एव प्रशसनीय हैं। वृत्तात विशेषाक तो दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा चालित समस्त गतिविधियो का परिचायक विश्वकोष ही है और दूसरा विशेषाक प० चमूपति जी जैसे मनीषी एव वैदिक सिद्धातो के प्रति पूर्णत समर्पित एव सतत जागरूक महापुरुष के जीवन-प्रसगो एव कार्यकलापो का परिचय कराने वाला एक उत्तम कोटि का साहित्य है। इसका प्रकाशन कर आर्य जनो का जो उपकार आप द्वारा हो रहा है, उसके लिए आप शतश बधाई के पात्र हैं।

—विजय नारायण सिंह (रि० प्रिंसिपल)
गाव-पचराव, पो हासीपुर, जि मिर्जापुर उ प्र)

समाज मन्दिरों में अतिथि गृह हो

सेवा मे— मन्त्री जी, आर्य प्रतिनिधि सभा

निवेदन है कि आर्य समाज की उन्नति के लिए एक सुझाव दे रहा हू। वह है प्रत्येक आर्य समाज मे अतिथियो को ठहराने की व्यवस्था होनी चाहिए चाहे इसके लिए परिचय पत्र का प्रयोग किया जाए। आज हिन्दू समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्वयको असुरक्षित समझता है, अगर आप इस सुझाव को कार्यान्वित करेंगे तो हिन्दू समाज मे अपन पन की भावना जाग्रत होगी। आयसमाज गुरुद्वारो की भाति आदर प्राप्त करेंग। प्रत्येक मनुष्य प्यार चाहता है आयपमाज आय व्यक्ति को ठहरायगा तो जनता मे आर्य समाज की प्रशसा करेगा।

—रामचन्द्र, मालवीय नगर

ज्वलन्त प्रश्नो की विवेचना होनी चाहिए

आर्य सन्देश मे प्रचारात्मक सामग्री के साथ ही ज्वलन्त प्रश्नो का विवेचन धारावाहिक क्रम से होना चाहिए। जैसे राजकीय पुस्तको मे भरे गलत सन्दम -आर्य बाहर से आए, वेदो मे छुआछूत ऊचनीच, ब्राह्मण शूद्र सघष, दास प्रथा, रग के आधार पर घृणा आदि का तर्क के आधार पर उत्तर जरूर छपना चाहिए।

विशेषाको के विषय मे एक सुझाव दे रहा हू। विशेषाको का साइज तय कर लीजिए पृष्ठ भले ही कम या अधिक हो लेकिन लम्बाई चौडाई सुनिश्चित होनी चाहिए, इससे फाइल करने मे सुविधा रहती है।

—भगवद्दत्त शुक्ल,
महाराणा आयसे इन्टर कालेज,
पो० तिकुनिया (उ० प्र०)

नीर क्षीर विवेक के विशेषाक

आदरणीय डा० साहब (दिव्य आत्मा स्वरूप)

सादर नमस्ते!

नीर क्षीर विवक के साथ वार्षिक वृत्तात विशेषाक पढे-पढे सभी कायक्रमो की रूप रेखा व सब प्रकार से सत्य व सुस्पष्ट जानकारी देकर अन्त मन को छू लेता है। हिन्दी विशेषाक छोटा सा कार्य कलवर मे भी विशद जानकारी देकर जन-मन को प्रेरित कर रहा है कि हिन्दी बिना हिन्द किसी भी दशा मे खुशहाल नही हो सकता है। सम्पादन की चुस्तता एव दुरस्तता भी स्पष्ट परिलक्षित है।

—बाबूराम सिंह "कवि, मरोली, बलसाड, (गुज)

राष्ट्रीय जागरण का मसीहा

केन्द्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक विवरण का विशेषाक सराहनीय कार्य है यदि सभी प्रान्तीय व सार्वदेशिक सभा इस प्रमाण को माने तो आर्य समाज की प्रामाणिकता कही बढ जावेगी। कितना अच्छा हो आप सामयिक व राष्ट्रीय समस्याओ पर विशेषाक निकाले जैसे राष्ट्र भाषा व सस्कृत की उपेक्षा, वैदिक सस्कृति का विकृतीकरण, विशेषकर पाश्चात्य विद्वानों द्वारा, सेक्यूलरवाद प्रतीत होता है पर आर्य समाज के क्रातिकारी कार्यक्रम की बात ही नही करना चाहता है यही आर्य समाज की अवनति का मूल कारण है आपका पत्र तो राष्ट्रीय जागरण का मसीहारहा है मेरा विनम्र निवेदन है कि पत्र के ८ पृष्ठो के एक-एक शब्द से राष्ट्र जागरण वैदिक सस्कृति प्रत्यागमन, धर्मान्तरण व पाखण्ड जातिभेद, छुआछूत विरोध का जीता-जागता प्रमाण होना चाहिए तो आदर्श पत्र को आय समाज के वैचारिक क्रान्ति का अग्रदूत बनाये। नय लेखक व पाठक ढूढे व आर्य समाज के सदेश को घर-घर बालयुवा, युवतियो तक पहुचाए। मुझे आशा है आप सहमत होगे कि पत्र मे काफी सुधार की गुजायश है। मुझे जो सेवा देंगे करने का भरसक प्रयास करूगा।

१२९ बी, डीडीए फ्लेट (एमआईजी)
राजौरी गार्डन नई दिल्ली-२७

आर्य समाज के नियमों मे एक समता होनी चाहिये

हमने प० चमूपति जी का आर्य सन्देश विशेषाक पढा जो बहुत ही अच्छा लगा इसका श्रेय आप लोगो के अनथक प्रयास को जाता है। भविष्य मे भी आशा है कि आप इसी तरह महापुरुषो एव यशस्वी लोगो के विशेषाक निकालते रहेंगे।

आजकल कई समाजो तथा आय सस्थाओ मे आय समाज के नियमो का अग्रेजी अनुवाद ' The Principles of Arya Samaj ' मे काफी भिन्नता दिखाई देती है और हमारा ये हार्दिक प्रयत्न है कि "द प्रिंसिपल आफ आय समाज' मे एक रूपता होनी अत्यावश्यक है आप भी इस पर विचार करें और आर्य समाज के नियमो का अन्य भाषाओ मे अनुवाद सब आय सस्थाओं मे एक ही जैसा होना चाहिए ऐसा प्रयत्न करे।

—धर्मवीर गुलाटी, मन्त्री

अन्य आर्य महापुरुषों के विशेषांक प्रकाशित करें

"आर्य सन्देश" का श्रावणी उपाकर्म एव प० चमूपति सयुक्ताक मिला। आपने विशेष अक निकाला है। अक बहुत ही सुन्दर है। प्रत्येक लेख अनुपम और विचारमग्न कर देता है। पडित जी की जीवनी और कार्य पढने को मिला। पडित जी के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि यही है कि जब हम सब पडित जी के अधूरे रहे सपनो को पूरा कर दिखाये व उनके बनाए हुए रास्ते पर चलें। प्रभु आपको शक्ति दे। आप हर आर्य महापुरुषो का विशेषाक समय पर देते रहें ताकि आर्यो मे आया आलस दूर हो जाय।

—चौ कानजी भाई, नरसिंह भाई
आर्य निवास, महसोना, गुजरात

जीवन चरित्र सम्भवतः किसी के मन को छू जाए

सादर नमस्ते! कुशलोपरान्त मैं आपका हार्दिक धन्यवाद करता हू विशेषाक के लिये जो पडित चमूपति जी के जीवन पर प्रकाश डालता है। अति उत्तम कार्य कर रहे हैं, समय-२ पर ऐसे आर्य समाज के सैनानियो का परिचय देकर। सम्भवत किसी के मन को छू जाये ऐसे समय मे जब अन्धकार ही अन्धकार है। उपदेशक मात्र होने से तो जागृति आयेगी नहीं। ईश्वर आपको शक्ति दे और ऐसे ही हमे आर्य पुरुषो का जीवन दर्शन होता रहे।

—राम प्रकाश, अशोक विहार-१

शोध कार्य का निश्चय

आय सन्देश का हिन्दी विशेषाक बहुत उत्तम है, बधाई स्वीकार करे। हमारी समाज के एक कर्मठ कायकर्त्ता की सुपुत्री कु० सुनीती वर्मा ने इसको पढने से 'राष्ट्रीय नवजागरण मे स्वामी दयानन्द का हिन्दी के लिए योगदान' विषय पर शोध कार्य का निश्चय किया है। विषय स्वीकार हो गया है।

—राजीव कुमार, मन्त्री, आर्यसमाज आजमगढ़

जननी और जन्मभूमि के प्रति श्रद्धा की भावना सहज स्वाभाविक है

—डा० धर्मपाल

जननी और जन्मभूमि के प्रति इसी भावना को व्यक्त करने वाले अनेक मन्त्र वैदिक साहित्य मे उपलब्ध है। अथर्ववेद के बारहवे काण्ड के प्रथम सूक्त मे ६३ मन्त्र मातृभूमि की वन्दना के है। इसे ही भूमि सूक्त भी कहा जाता है। जब हम राष्ट्र निर्माण की बात करते हैं तो हमे सबसे पहले भूमि को रक्षा करनी होगी, फिर मनुष्यो का निर्माण करना होगा और उनमे सास्कृतिक मूल्यो को सस्कारित करना होगा। भूमि, जन और सस्कृति ये तीन ही राष्ट्र के आधार हैं। राष्ट्र निर्माण के लिए इन तीनो की रक्षा तथा उत्कर्ष आवश्यक है ये विचार डा० धर्मपाल ने आर्यसमाज मुरादाबाद द्वारा आयोजित राष्ट्र निर्माण सम्मेलन मे अपने अध्यक्षीय भाषण मे व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि वेदो मे राष्ट्रीयता से सम्बन्धित अनेक मन्त्र आए हैं—सत्य बृहदृतमुग्र दीक्षा तपो, ब्रह्म यज्ञ पृथिवी धारयन्ति। मानो भूतस्य भव्यस्य पुल्युरू लोक पृथ्वी न कृणोतु। महान सत्य, महान ऋत उग्रता अर्थात् छात्र शक्ति, दीक्षा, तप ब्रह्मशक्ति और यज्ञ ये सात पृथ्वी को धारण करते हैं। तात्पर्य यह है कि राष्ट्र निर्माण के लिए हमें सातो का अनुसरण करना चाहिए और अपने जीवन मे इनको विकसित करके तदनुसार व्यवहार करना चाहिए।

बनो वीर प्रताप, शिवा तुम

आज जरूरत है भारत को, आर्य वीर महानो की।
यश गाथाए गाता है जग, देशभक्त मर्दानो की॥

आर्य वीर उन्हें कहते हैं, काम जगत के आते हैं।
अबला, दीन, अनाथजनो को, अपने गले लगाते है॥
विघ्न और बाधाओ में जो, कभी नही घबराते हैं।
मानवता के हत्यारो से, कभी नही दहलाते हैं॥

अमर कहानी हो जाती है, जग मे उन बलवानो की।
यश गाथाए गाता है जग, देश भक्त मर्दानो की॥

परम पिता उस परमेश्वर को, भूल गये हैं नर-नारी।
भौतिकता की चकाचौंध मे अन्धी है दुनिया सारी॥
खाओ, पीओ मौज उडाओ, कहते हैं भ्रष्टाचारी।
भेद-भाव की, ऊच-नीच की पनप गई है बीमारी॥

घूम रही हैं आज टोलिया, दगा-बाज शैतानो की।
यश गाथाए गाता है जग, देशभक्त मर्दानो की॥

युवक, युवतिया, ऋषियो मुनियो की शिक्षाए भूल गए।
फैशन के दीवाने वैदिक, पथ से हो प्रतिकूल गये॥
स्वास्थ्य, चरित्र दिया खो, पगले झूठे मद में फूल गये।
अण्डे मास लगे खाने मदिरा मे हो मसगूल गये॥

गीता, रामायण ना पढते, होड है फिल्मी गानो की।
यश गाथाए गाता है जग, देशभक्त मर्दानो की॥

भारत मा के वीर सपूतो, अपना सीना तान उठो।
क्या थे हम क्या आज गये हो, ठीक तरह पहचान उठो॥
बनो वीर प्रताप शिवाजी, नलवा से बलवान उठो।
बिसमिल शेखर, भगतसिंह, बन भारत मा की शान उठो॥

निर्भय अकिल ठीक कर दो, तुम पापी बेईमानो की।
यश गाथाए गाता है जग, देशभक्त मर्दानो की॥

भारत की माताओ, बहिनो, अपना धर्म निभाओ तुम।
भ्रष्टाचार की लपटो से, मिटता ससार बचाओ तुम॥
दुर्गा, लक्ष्मी, किरणमयी, बन रण मे तेग बजाओ तुम।
अत्याचारी व बदमाशो का, जग से वश मिटाओ तुम॥

कदर करेगी सारी दुनिया, नन्दलाल के गानो की।
यश गाथाए गाता है जग, देशभक्त मर्दानो की॥

—श्री नन्दलाल निर्भय, बहीन फरीदाबाद (हरियाणा)

इस अवसर पर डा० प्रशान्तकुमार वेदालकार ने विश्व सस्कृति का तुलनात्मक स्वरूप प्रस्तुत किया तथा राष्ट्र निर्माण मे सस्कृति के योगदान को रेखाकित किया। श्री यशपाल आर्य बन्धु और डा० मनुदेव के ओजस्वी भाषण हुए। आर्य समाज के प्रधान श्री राममोहन जी और मन्त्री श्री विनोदकुमार ने अभ्यागतो का स्वागत एव धन्यवाद किया।

वैदिक रीत्यानुसार उपनयन संस्कार सम्पन्न

दिल्ली, २७ सितम्बर। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार विभाग के अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती के पौत्र एवम् श्री गुलाबसिंह जी राघव के पुत्र चिरञ्जीव ओमप्रिय राघव का वैदिक रीति से उपनयन सस्कार २७ सितम्बर को उनके निवास स्थान एफ-२७१ सी दिलशाद गार्डन दिल्ली-११००९५ पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मानद महोपदेशक आचार्य ओ३म् वीर जी शास्त्री एम०ए० के ब्रह्मत्व मे सुसम्पन्न हुआ। समारोह मे काव्य जगत के मूर्धन्य विद्वान पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द्र जी सुमन, आर्य जगत के जाने माने दानी एवम् कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री जयप्रकाश की आर्य आर्य समाज गाधीनगर के प्रधान श्री सत्यपाल जी भाटिया श्री रामचन्द्र जी आर्य मन्त्री आर्य समाज दिलशाद गार्डन ने चिरञ्जीव ओमप्रिय को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्य क्षेमचन्द्र जी सुमन ने अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि मानव निर्माण कार्य वैदिक सस्कारो के द्वारा ही पूरा हो सकता है।

समाज कल्याण मन्त्राणी आर्य पुत्री बनी

कानपुर १२ अक्तूबर। श्री देवीदास आर्य की नारी जगत का समर्पित अमूल्य सेवाओ की प्रशसा करते हुये प्रदेश की समाज कल्याण मन्त्री श्रीमती प्रेमलता कटियार ने कहा कि माननीय आर्य जी तो मेरे राजनैतिक गुरु है। आपने ही मुझे घर की दुनिया से निकाल कर समाज सेवा के लिए प्रेरित किया था वरना आज मे एक सामान्य घरेलू महिला होती। माननीय आर्य जी पाच सौ अनाथ कन्याओ का कन्यादान करके पाच सौ पुत्रियो का पिता होने का गौरव प्राप्त कर चुके है। मै उसमे थोडा सशोधन कर उन्हे पाच सौ एक पुत्रियो के पिता घोषित करती हू, क्योकि उनकी पाच सौ एकवी पुत्री मैं स्वय हू। यद्यपि मेरा विवाह आर्य जी ने नही कराया था।

उपरोक्त उद्गार प्रदेश की समाज कल्याण मन्त्री श्रीमती प्रेमलता कटियार ने आर्यसमाज गोविन्दनगर तथा आर्य कन्या इण्टर कालेज के ४५वे तीन दिवसीय सयुक्त अधिवेशन के समापन समारोह मे व्यक्त किए। महिला व समाज कल्याण मन्त्री ने जीवन भर महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के आदर्शो व सिद्धान्तो पर चलने का भी सकल्प लिया क्योकि वह श्री आर्य की पुत्री बन गयी हैं।

शारदीय नवरात्रि महोत्सव सम्पन्न

वेद प्रचार मण्डल, दिल्ली देहात के बैनर तले २७ सितम्बर से ५ अक्तूबर ९२ तक नवरात्रि महोत्सव पूर्ण कार्य क्षेत्र मे बडी ही श्रद्धा तथा उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस कार्यक्रम मे बडे-बडे यज्ञो तथा सत्सगो के माध्यम से नवरात्रि का मौलिक महत्व तथा दुर्गा का सच्चा अर्थ जनता को बताया गया। ५ अक्तूबर ९२ को समापन म क्षेत्र के ससद-सदस्य भाई सज्जन कुमार ने जनता से वेद मार्ग का अनुशरण करते रहने की अपील की।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज नजफगढ नई दिल्ली-४३ का ५८वा वार्षिकोत्सव दिनाक ९,१०,११ अक्तूबर १९९२ को महर्षि दयानन्द पार्क, पुराना रोशनपुरा नजफगढ मे अत्यन्त समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रथम दिवस शाम विशाल शोभायात्रा निकाली गई जिसमे ८ गुरुकुलो के ब्रह्मचारियो ने भाग लेकर अपने करतब दिखाये। जिसका नगर निवासियो पर बहुत अच्छा प्रभाव पडा। समारोह मे तनो व आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली केन्द्रिय सभा प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियो ने प्रेरक उद्बोधन से उत्सव को सफल बनाया।

गायत्री मन्त्र साम्प्रदायिक नहीं है

गायत्री मन्त्र द्वारा शुभकामनाएं व्यक्त करना भारतीय संविधान की साम्प्रदायिक भावनाओं के विरुद्ध नहीं है। मद्रास उच्च न्यायालय ने अपने एक निर्णय में इसे शब्द ब्रह्म के रूप में वर्णित किया है।

उल्लेखनीय है कि यूनाईटिड इन्शोरेन्स कम्पनी ने अपने दीपावली शुभकामना कार्ड में गायत्री मन्त्र और उसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया था।

द्रविड कजगम [डी के] ने मद्रास उच्च न्यायालय में दावा प्रस्तुत किया कि सन १९८३ में उक्त इन्शोरेन्स कम्पनी ने अपने ५००० दीपावली शुभकामना कार्ड में गायत्री मन्त्र प्रकाशित करके साम्प्रदायिकता पूर्ण कार्य किया है उनके सचिव के दावे के अनुसार इन्शोरेन्स कम्पनी ने २५ ००० के सार्वजनिक धन का अपव्यय किया है और न्यायालय से प्रार्थना की कि सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनी को आदेश दिया जाए कि वे इस प्रकार की साम्प्रदायिक दुर्भावना से स्वयं को दूर रखें।

उच्च न्यायालय के विद्वान न्यायाधीश श्री राजू ने प्रस्तुत दावे को रद्द करते हुए अपने निर्णय में कहा कि यह मन्त्र ऋग्वेद से लिया गया है जो वैदिक ज्ञान की कुंजी है। समस्त वेद सदा से ही मानवता के प्रतीक रहे हैं जिनका सम्बन्ध किसी भी धर्म विशेष जाति या सम्प्रदाय से नहीं है। न्यायाधीश श्री राजू ने दावेदार के इस तर्क को मानने से इन्कार कर दिया कि गायत्री मन्त्र ब्राह्मणों के लिए ही है उन्होंने कहा कि इस प्रकार का तर्क भ्रामक व मिथ्या है। किसी भी स्थान पर ऐसा उद्धृत नहीं है कि यह मन्त्र केवल ब्राह्मणों की बपौती है या किसी भी जाति धर्म या सम्प्रदाय विशेष की सम्पत्ति है।

—कैप्टिन देवरत्न आर्य
प्रधान आर्य समाज सान्ताक्रुज

प्रवेश प्रारम्भ

वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट [गढ मुक्तेश्वर] में उपदेशक श्रेणी की पढाई आरम्भ हो चुकी है। प्रवेश के लिए कुछ स्थान रिक्त हैं। निःशुल्क भोजनादि की उत्तम व्यवस्था है। निर्धन और योग्य विद्यार्थियों को २५ रुपये मासिक की छात्र वृत्ति भी दी जाती है। १०वीं श्रेणी की योग्यता वाले वैदिक धर्म प्रचार में रुचि रखने वाले योग्य तथा उत्साही युवक ही शीघ्रातिशीघ्र आवेदन करें। —ब्रह्मप्रकाश शास्त्री

वेद प्रचार व महिला जागृति अभियान

मेवात १६ अक्तूबर। आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात के मन्त्री श्री सत्येन्द्र प्रकाश सत्यम ने एक पत्रकार गोष्ठी में बताया कि हरियाणा दिवस पर १० स्थानों पर महिला जागृति अभियान चलाये जायगे तथा मेवात क्षेत्र में आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात गौ सम्वर्द्धन क्षत्रीय अल्प संख्यक हिन्दुओं में सामाजिक एवं धार्मिक चेतना बाल विकास योजनाओं का क्रियान्वयन युवा पीढी में राष्ट्रीयता एवं नैतिकता के साथ साथ अछूतोद्धार के कार्यों पर विशेष बल दिया जाता रहेगा।

मंडल १२ सुयोग्य प्रचारकों द्वारा धुंआधार वेद प्रचार भी कर रहा है।

जयपुर में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

भारत की एकता अखण्डता वैदिक धर्म व संस्कृति की रक्षा के लिये नगर आर्यसमाज प० शिवदीन मार्ग कृष्णपोल जयपुर के तत्वावधान में ३ अक्तूबर से ८ अक्तूबर तक स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के आचार्यत्व में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ बडे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस यज्ञ में गुरुकुल गौतमपुरा दिल्ली के वेदपाठी विद्वान सर्वश्री प नरदेव शास्त्री प नारायण शास्त्री प सुभाष शास्त्री प देवेन्द्र शास्त्री डा कुसुमलता वेदालंकार आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मन्त्री स्वामी सुमेधानन्द तथा भजनोपदेशक भूपेन्द्रसिंह जी के प्रवचन तथा भजनोपदेश हुए।

कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज के प्रधान श्री भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर ने किया।

सरदार पटेल

(पृष्ठ ३ का शेष)

निर्भीक नेता नारायण राव और उनके अनुयायियों का पूर्ण सहयोग मिला। जहां पर कोई जाने की सोच भी नहीं सकता था, वे वहां जाकर आंकड़े इकट्ठे करके लाते थे। (पृष्ठ ८४)। उन्होंने अपनी पुस्तक में नवाब अली यावर जंग के 'हैदराबाद का अतीत' से उद्धरण दिया है—'यह सुनिश्चित था कि श्री मुंशी की जन्मकुंडली में हैदराबाद का विरोध लिखा था। उन्होंने पहली बार तब विरोध किया जब वे बम्बई के गृह-मन्त्री थे और उन्होंने आर्य समाजी सत्याग्रहियों के विरुद्ध कार्यवाही करने के हैदराबाद के अनुरोध को ठुकरा दिया था। (पृष्ठ १००) उन्होंने लिखा है कि गोआ-कराची के माध्यम से हैदराबाद में गोला बारूद लाए जाने में वृद्धि हो गई थी। पर्याप्त खतरा उठाकर बहादुर नारायण राव जो आर्य समाज के प्रधान थे और उनके साथियों ने इन योजनाओं की पूरी जानकारी हमें उपलब्ध कराई और तब उन स्टेशनों और गाडियों के विरुद्ध कार्यवाही की जा सकी। (पृष्ठ १७९)। इन वक्तव्यों से स्पष्ट है कि आर्य समाज ने हैदराबाद को मुक्त कराने में कितना योगदान दिया था।

इस लेख को समाप्त करने से पहले सरदार पटेल के एक पत्र को उद्धृत किया जाना अति प्रासंगिक है। श्री मुंशी हैदराबाद से २१ सितम्बर १९४८ को लौट आए और उन्होंने एजेन्ट जनरल पद से त्याग पत्र दे दिया। उनके कुछ साथियों ने अच्छा कहा और कुछ ने बुरा। श्री मुंशी की धर्मपत्नी ने एक पत्र श्री पटेल को लिखा। श्री पटेल ने जो उत्तर दिया वह ध्यान देने योग्य है—

'समाज सेवकों को मोटी चमडी का होना चाहिए। हमें बेईमान आलोचकों तथा अफवाह फैलाने वालों की परवाह नहीं करनी चाहिए। हमें इस बात से आहत भी महसूस नहीं करना चाहिए कि वे क्या कहते हैं और करते हैं। यहां तक कि गांधी जी भी इस प्रकार के आक्रमणों से नहीं बच सके थे। आज तक कोई भी बुरों को दुनिया से मिटा नहीं सका है। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि जो कुछ हम करेंगे सभी लोग उसकी प्रशंसा करेंगे। हमें उन लोगों की प्रतिक्रियाओं से बिल्कुल भी उद्वेलित नहीं होना चाहिये जो जान बूझकर झूठे आरोप लगाते हैं। हम जो करते हैं, उन्हें वह पसन्द नहीं आएगा। वे शायद हमसे नाराज हो अथवा कोई अन्य कारण हो सकता है। चाहे वे हमारे काम को पसन्द करें या न करें यदि काम ईमानदारी और सच्चाई के साथ किया गया है, तो एक दिन काम ही स्वयं बोलेगा। इसलिए मेरा आपसे अनुरोध है कि आप परेशान न हों। सरदार पटेल ने यह पत्र ३० नवम्बर १९४८ को लिखा था। इसकी प्रासंगिकता आज भी निसंदिग्ध है।

सरदार पटेल ने आर्य समाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती को सदा ही ऊंचा स्थान दिया था। उन्होंने कहा था कि स्वामी दयानन्द ने हिन्दू धर्म पर छाई हुई धूल को साफ किया। हमें इन महापुरुषों की बातों को हृदयंगम करना चाहिये और उनके बताए मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

सरदार पटेल के जन्म दिवस पर उनके प्रति श्रद्धासुमन!

—डा० धर्मपाल

वेद प्रवचन

आर्य समाज सरिता विहार नई दिल्ली द्वारा वेद प्रवचन सप्ताह गत ७ से ११ अक्तूबर तक सरिता विहार में बडी धूमधाम से मनाया गया जिसमें आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री प्रेमचन्द श्रीधर जी ने वेद मन्त्रों पर बहुत सुन्दर व प्रभावशाली ढंग से प्रवचन दिये व श्री श्यामवेद जी शास्त्री ने मनमोहन भजन प्रस्तुत किये।

सम्पादक के नाम पत्र

विशेषांक अच्छे लगे

चमूपति अंक व हिन्दी विशेषांक बहुत अच्छे लगे, बहुत-बहुत धन्यवाद। दीपावली की शुभकामनायें।

जी आर के रेड्डी 'अमर जी' डी० न० ७-३३३। डी
कारेपुडी-गुंटूर आन्ध्रा प्रदेश।

हिन्दी विशेषांक

'हिन्दी विशेषांक' पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई और प्रेरणा मिली हिन्दी की ओर जन जन को आकर्षित करने तथा उसकी उपयोगिता ...
की।

ऋषि निर्वाणोत्सव

नई दिल्ली। आर्य समाज ग्रटर कैलाश २ मे १८ अक्तूबर को ऋषि निर्वाणोत्सव श्री कृष्णलाल जी सिक्का की अध्यक्षता म घूम धाम से मनाया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्म पाल डा० महेश विद्यालकार प० नेत्रपाल शास्त्री ने महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का सयोजन श्री रघुनन्दन जी ने किया।

—लुधियाना २४ अक्तूबर। प्रेम एजुकेशनल सोसाइटी (रजि०) की ओर से प्रम माडल हाई स्कूल जनकपुरी लुधियाना मे आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस बडी श्रद्धापूर्वक मनाया गया। प० अनिल शास्त्री पुरोहित आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना ने यज्ञ सम्पन्न कराया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सोसाइटी के प्रधान श्री प्रम वर्मा ने की।

वेद प्रचार

नई दिल्ली। आय महिला मण्डल करोल बाग क तत्वावधान मे आय समाज नारायण बिहार मे विगत मास वेद प्रचार दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। स्वस्तिवाचन मन्त्र प्रतियोगिता मे श्रीमती प्रमलता भटनागर प्रथम श्रीमती मरला गुप्ता द्वितीय श्रीमती सत्यावती तृतीय आई। डा० रूण को विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। श्रीमती सरला मेहता श्रीमती कृष्णा चड्ढा श्रीमती प्रकाश बुग्गा आदि ने सुन्दर विचार प्रस्तुत किये।

वेदसम्मेलन

नई दिल्ली। प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा आर्य समाज ग्रटर कैलाश पार्ट २ मे विगत मास श्रीमती शकुन्तला दीक्षित की अध्यक्षता मे एक वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया। कायक्रम ध्वजारोहण व यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। श्रीमती डा० शशि प्रभा श्रीमती सरला मेहता श्रीमती शकुन्तला आर्या डा० ऊषारानी शास्त्री सुशीला आनन्द आदि ने वेदो की प्रासगिकता पर प्रकाश डाला।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N. No. 32387/77 Posted at N D P S O on 5 6 11 992 Licence to post without prepayment Licence N o U (C) 13 /९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल ११०२४/९२ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) १३९/९२

हजार घोड़ों पर सवार धारावाहिक

नई दिल्ली। आर्यसमाज डी० ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली आर्य समाज मन्दिर समुदाय भवन डी० ब्लाक पुष्पाञ्जलि एन्क्लेव आर्यसमाज लोधीरोड (जोरबाग) आर्यसमाज नत्थूपुरा दिल्ली आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना पजाब एव आर्यसमाज नीमच मध्य प्रदेश द्वारा सूचना व प्रसारण मन्त्री भारत सरकार निदेशक प्रायोजित कार्यक्रम दूरदशन नई दिल्ली को हजार घोडो का सवार धारावाहिक मे वाछित सशोधन के लिए विशेष पत्र भेजे गये हैं और प्रतिलिपि सभा कार्यालय १५ हनुमान रोड को भेजी गई है। ११ अक्तूबर के आर्य सन्देश मे इस बारे मे अपील छपी थी। सभी सस्थाओ का आभार।

आर्यसमाज हनुमानरोड

(पृष्ठ १ का शेष)

वेदालकार एव आचार्य मदनमोहन विद्यासागर आदि सभी वक्ताओ ने कहा कि वेदो की शिक्षाये आज भी प्रासगिक है और सभी आर्यों को वेदो के पढने-पढाने व सुनने सुनाने के साथ-साथ वैदिक विचार धारा क प्रचार प्रसार के लिए भी प्रयास करते रहना चाहिए।

वार्षिकोत्सव मे १७ अक्तूबर तक रात्रि ८ से ९ बजे तक आचार्य मदन मोहन विद्यासागर को कथा एव श्री विजय भूषण आर्य के मनोहर भजन होते रहे।

श्री जगदीश गुप्ता सम्मानित

नई दिल्ली। वेद प्रचार मण्डल, दिल्ली देहात के तत्त्वावधान मे आयोजित एक कार्यक्रम मे ८ अक्तूबर को कर्मठ समाज सेवी श्री जगदीश-चन्द गुप्ता का अभिनन्दन किया गया। पूर्व महानगर पार्षद एव महासचिव दिल्ली प्रदेश काग्रेस कमेटी चोधरी मुखत्यारसिंह ने श्री गुप्ता को शाल, प्रतीक चिन्ह व अभिनन्दन-पत्र भेट किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने कहा कि निष्ठावान कार्यकर्त्ता श्री जगदीश गुप्ता पालम कालोनी आर्य समाज के सस्थापक रहे हैं तथा आर्यसमाज करोल बाग मे भी मन्त्री के रूप मे प्रशसनीय कार्य किया है। सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द प्रधानाचार्य श्री डी. डी. शर्मा श्रीमती सुमन चौधरी श्री शान्ति प्रकाश त्रिपाठी आदि ने भी प्रेरक विचार रखे। कार्यक्रम डी ए वी स्कूल पालम गाव मे श्री खेमसिंह भाटी एडवोकेट की अध्यक्षता मे हुआ था।

विजय दशमी समारोह पूर्वक सम्पन्न

आर्यसमाज खण्डवा मे विजय दशमी पर्व दशहरा आर्यसमाज मन्दिर मे समारोह पूर्वक मनाया गया। इसी अवसर पर स्वामी अमनसानन्द ने अपने वक्तव्य मे कहा कि दशहरा एक राष्ट्रीय पर्व है बुराई के ऊपर अच्छाई की विजय निरूपित करते हुये कहा कि फिर भी समाज मे कई रावण हैं जो रावण के चरित्र को ही अपने जीवन में उतारे हुये हैं। समाज मे चरित्र निर्माण की ओर ध्यान देने की अत्यन्त आवश्यकता है।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिकप्रेस पटौदी हाऊस दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन—३१०१५० केलिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल १०२४/१-९२

ओ३म्

साप्ताहिक

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १६, अंक ५ | रविवार, १५ नवम्बर १९९२ | विक्रमी सम्वत् २०४९ | दयानन्दाब्द १६८ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९३

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक— २५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष ३१०१५०

आर्यसमाज निर्माण विहार—

आर्य समाज देश का सजग प्रहरी है ।

—सूर्यदेव

नई दिल्ली, ८ नवम्बर । आर्य समाज ने धार्मिक सामाजिक व राष्ट्रीय उत्थान के लिए एक अद्वितीय वैदिक विचारधारा प्रस्तुत की है। आर्यसमाज की विशेष पहचान है परन्तु कुछ शक्तियां आर्य समाज को आज विघटित करने मे लगी हैं। ये विचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव ने आर्य समाज निर्माण विहार के आठवें वार्षिकोत्सव समारोह एवं आर्य सम्मेलन के अवसर पर व्यक्त किये।

श्री सूर्यदेव ने आगे कहा कि आज जहा-जहा भी आर्य समाज सशक्त है वहा देश की आजादी को कोई खतरा नही है। अत आज आर्यसमाज को और अधिक मजबूत बनाने की जितनी जरूरत है उतनी पहले नही थी। आर्य समाज के जीवन्त व सक्रिय रहने से भारतीय संस्कृति, देश की सुरक्षा व एकता को कोई खतरा नहीं हो सकता है क्योंकि आर्य समाज देश का सजग प्रहरी है।

समारोह मे लब्ध प्रतिष्ठ वैदिक कथाकार आचार्य यशपाल सुधांशु, डा० महेश विद्यालकार, श्री प्रेमचन्द श्रीधर, प० प्रकाशचन्द शास्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने समाज, राष्ट्र व विश्व के कल्याण के लिए महर्षि दयानन्द के बताये हुये रास्ते पर चलने का आह्वान किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने इस सुन्दर कार्यक्रम के लिए आयोजकों को बधाई देते हुये कहा कि धार्मिक क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्यों के साथ-साथ हमे दीन-दुखियों के उत्थान के लिए भी मिल जुलकर परोपकार के कार्य करते रहना चाहिए। डा० धर्मपाल ने ओ संगच्छध्व सवदध्व मन्त्र को उन्नति का मूल मन्त्र बताया।

समारोह मे सर्वश्री रतनलाल सहदेव, पुरुषोत्तम गुप्ता, रामसिंह आर्य जैसे गणमान्य महानुभावो सहित विभिन्न समाजो के सैकडो नर-नारी शामिल थे।

इससे पूर्व समाज मन्दिर की नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन समाज के प्रधान श्री राधेलाल गुप्ता एवं कर्मठ कार्यकर्ता श्री प्राणनाथ कुमार ने किया। २ से ८ नवम्बर तक पं० प्रकाशचन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में चल रहे सामवेद महायज्ञ की आज पूर्णाहुति थी। श्री राधेलाल गुप्ता की ओर से ऋषि लगर की सुन्दर व्यवस्था थी।

समारोह मे प्रतिदिन रात्रि आचार्य यशपाल सुधाशु की मनोहर कथा भी होती रही।

आर्यसमाज मन्दिर दिलशाद गार्डन—

जब भक्ति का रंग चढ़ता है तो उलझनें समाप्त हो जाती हैं

—आचार्य यशपाल सुधाशु

दिल्ली, ८ नवम्बर। 'जीवन मे कभी बदला लेने की भावना न रखो। यदि कोई तुम्हारा बुरा करे तो भी उसे क्षमा कर दो। इससे तुम्हारे मन मे ईर्ष्या व द्वेष की भावना न पनपेगी। एक बार ऋषि दयानन्द के भक्त जब उनके पास जहर देने वाले व्यक्ति को पकड कर लाये तो स्वामी जी ने उसे छोड देने का आदेश दिया। महर्षि ने कहा मैं दुनिया मे किसी को कैद कराने नहीं बल्कि मुक्त कराने आया हू।" ये उद्गार अन्तर्राष्ट्रीय कथाकार आचार्य यशपाल सुधाशु ने आज आर्य समाज दिलशाद गार्डन दिल्ली द्वारा आयोजित प्रथम वार्षिकोत्सव के अवसर पर अपने प्रवचन मे व्यक्त किये।

आचार्य यशपाल जी ने आगे कहा कि जब मनुष्य पर भक्ति का रंग चढ जाता है तो उसके जीवन की उलझनें समाप्त हो जाती हैं। उसके मन से चिन्ता समाप्त हो जाती है और मन प्रसन्न व शान्त रहता है। आचार्य जी ने कहा परमात्मा ने हमे एक जीभ व दो कान इसलिए दिये हैं कि हम बोलें कम व सुनें अधिक। हमे जीवन मे सहनशीलता लाकर तप करना चाहिए और इससे ही हम आर्य बनकर दूसरों की भलाई कर सकते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्यसमाज मन्दिरो का निर्माण इसलिए करते हैं कि हम मिल जुलकर यज्ञ व भक्ति कर सकें तथा वहां परमात्मा की वाणी वेदो का सुनना व सुनाना तथा पढना व पढाना सम्पन्न हो सके। आर्यसमाज मन्दिर हमे जीवन मे आर्यत्व लाने की निरन्तर प्रेरणा देते रहते हैं।

डा० धर्मपाल ने राष्ट्र की एकता व अखण्डता मे आर्य समाज के योगदान का उल्लेख करते हुये बताया कि लोहपुरुष सरदार पटेल ने हैदराबाद के पुलिस एक्शन मे आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका की बहुत सराहना की थी। डा० धर्मपाल ने आगे कहा कि हमे सेवा व त्याग का व्रत लेते हुये राष्ट्र रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

इससे पूर्व समारोह के मुख्य अतिथि पद्मश्री आचार्य क्षेमचन्द सुमन ने ओम ध्वजारोहण किया। उन्होंने आशा व्यक्त की कि अगला वार्षिकोत्सव समाज मन्दिर की यज्ञशाला मे होगा। आचार्य जी ने सभी को मिल जुलकर आर्य समाज क लिए काम करने का आह्वान किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हमे ढोग व पाखण्डो को जड से उखाड कर ऋषि दयानन्द के पदचिन्हो पर चलते रहना चाहिए।

समारोह मे ब्र० आर्य नरेश ने अपनी ओजस्वी वाणी में ब्रह्मचर्य के

(शेष पृष्ठ ४ पर।

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव

सहसम्पादक– विमलकान्त शर्मा

प्यारे ऋषि आपका ऋण संसार उतार नहीं पाएगा

—आचार्य वेदभूषण, अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद-२७

महर्षि स्वामी दयानन्द का सन्देश उन्नीसवीं शती की सर्वश्रेष्ठ घटना है। जैसे समुद्र के जल मे सर्वत्र क्षार तत्व दृष्टिगोचर होता है वैसे ही महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा फैलाया गया सत्य ज्ञान का प्रकाश या आलोक सूर्य के प्रकाश के समान एक छोर से दूसरे छोर तक धरती के कोने-कोने में देखा जा सकता है।

वैसे तो ससार मे हजारो सम्प्रदाय, मत व पन्थ हैं पर उन्नीसवी शताब्दी के बाद हर मत सम्प्रदाय की विचारधारा पर महर्षि दयानन्द के विचारो का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जैसे कोई शक्तिशाली पुरुष लोहे की मोटी छड़ को मोड देता है वैसे ही महर्षि ने अपने प्रभाव से ससार के विचार रूपी प्रवाह के नद को मोड दिया। मोटी बुद्धि के साधारण लोग इस यथार्थ को देख नहीं पाते। पर हर सूक्ष्मदर्शी इस सत्य को सर्वत्र सूर्य के प्रकाश के समान देख सकता है।

महर्षि दयानन्द जब स्वामी विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त कर हरिद्वार के कुभ के मेले में पहुचे और हर की पौडी पर पाखण्ड खण्डनी पताका लहराई उससे पहले की धार्मिक मान्यताओ और आस्थाओं में और महर्षि के उत्तरवर्ती काल की मान्यताओ और आस्थाओ की व्याख्या मे एक अन्तर स्पष्ट देखा जा सकता है। फिर चाहे वे व्याख्याए कुरान की हो या बाइबिल की हो चाहे पुराण की हो।

विश्व व्यापी पाखण्ड, अज्ञान अधविश्वासो के अन्धकार पर इतना गहरा और शक्तिशाली आक्रमण महर्षि दयानन्द से पूर्व कोई कर न पाया था। अन्धकार को न मानना या अन्ध विश्वास का प्रतिरोध करना या किसी पर कीचड उछाल देना, एक साधारण बात है। पर झूठ के स्थान पर सत्य को अन्धकार के स्थान पर प्रकाश को अन्धविश्वास के स्थान पर सत्य श्रद्धा को स्थापित करना, अपने आप मे एक सशक्त सुदृढ और यथार्थ को स्थापित करना उजागर करना एक असाधारण बात है।

किसी की मान्यता को नकार देने का कार्य तो एक अज्ञानी अबोध शिशु भी कर सकता है। किन्तु किसी झूठ को नकार कर सत्य को स्थापित कर देना यह कार्य कठिनतम कार्य होता है।

जैसे बादलो मे कभी-कभी सूर्य छिप जाता है वैसे ईश्वरीय ज्ञान वेद की स्थिति हो गई थी। सायण और महीधर के वेदभाष्यो को अपनी भाषा मे अनुदित करवाकर जब विश्व के प्रसिद्ध ज्ञानी विज्ञानियो ने जानने का यत्न किया तो उन्होने अनुभव किया कि वेद की बातें अशिक्षित अनपढ लोगो की असभ्य लोगो के अश्लील गीत मात्र हैं।

तब ससार के शिक्षित मान जाने वाले लोगो ने कहा कि ईश्वरीय ज्ञान, वेद वास्तव मे ईश्वरीय ज्ञान नही है अपितु वेद गडरियो के गीत हैं।

उस समय पश्चिमी विश्व मे जर्मनवासी मैक्समूलर सस्कृत के ज्ञाता व शास्त्रो के पडित माने जाते थे। उन्होंने स्वय यह राय प्रकट की थी कि—वेद तो अज्ञानी असभ्य गडरियो के गीत है।

जब महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मैक्समूलर को मोक्षमूलर बना उन्हे वेदो का यथार्थ बोध कराया तब मोक्षमूलर को स्वीकार करना पडा कि वेद गडरियो के गीत नही अपितु ज्ञान विज्ञान के आदि स्रोत हैं।

आज तो युग ने वेदो पर अपनी मान्यता की मोहर लगा दी है और मान लिया है कि ससार के पुस्तकालय मे ज्ञान की पहली पुस्तक ऋग्वेद है।

महर्षि दयानन्द ने जो सत्य और यथार्थ का प्रकाश किया उसके परिणाम स्वरूप आज बाइबिल (कुर्आन और पुराण की व्याख्याए बदल गई हैं।) जिन मान्यताओ को पहले सत्य स्वीकारा जाता था आज उन्हें आलकारिक वर्णन मात्र माना जाने लगा है।

वैसे तो प्रोपगण्डा पब्लिसिटी और विज्ञापन की दृष्टि से महर्षि दयानन्द से भी अधिक ख्याति कई लोगोने प्राप्त की है जैसे कार्लमार्क्स, म० गाधी, स्वामी विवेकानन्द और टालस्टाय आदि के नाम लिए जा सकते हैं। किन्तु इनकी स्थिति घूडे की उस बेल के समान है जो कचरे कूडा, करकट के ढेर पर उग कर बडी तेजी से फैल जाती है और अपने आचल मे कूडे के ढेर तक को छिपा देती है। पर वह जितनी तेजी से फैलती है, उतनी तेजी से कुछ ही काल बाद वह सूखकर कचरे के ढेर मे वृद्धि कर जाती है। पर वट वृक्ष या बड का झाड बहुत धीरे धीरे बहुत सुदृढ आधार लेकर धीरे-धीरे विकसित होता है और फिर छा जाता है तो उसकी छाया मे अनेक शताब्दिया गुजर जाती हैं। महर्षि दयानन्द उन्नीसवीं शताब्दी मे अकुरित हुए एक वट वृक्ष हैं जिनके आलोक का विस्तार कोई चार-पाच शताब्दियो के बाद विश्व के मस्तिष्क में सूर्य के समान चमक उठेगा।

भारतीय आकाश में चमकने वाले देदीप्यमान नक्षत्रो मे जैसे राम और कृष्ण सारे विश्व में जाने और माने जाते हैं वैसे ही महर्षि का तप और उन द्वारा किया गया सत्य का प्रकाश कभी समूचे विश्व को आलोकित कर देगा। यह सुनिश्चित है।

पहले इस्लाम उठा और उसके पीछे ईसाईमत। इन दोनो से भी पहले बौद्धमत देश देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर मे फैले। पर महर्षि द्वारा स्थापित आर्य समाज और उनके वैदिक सिद्धात कालान्तर विश्वव्यापी और विश्व मान्य हो जायेंगे। इसमें कोई सन्देह नही है।

महर्षि द्वारा प्रतिपादित एक भी वैदिक सिद्धांत ऐसा नहीं है जिस पर कोई लकीर खींच दे। क्योकि अधकार को चीरने का सामर्थ्य प्रकाश मे ही होता है। पर प्रकाश को आचल मे समेटे जब एक चिनगारी उठती है तो उस कण मात्र सी चिनगारी को समस्त विश्व का अन्धकार मिलकर भी परास्त नही कर सकता।

महर्षि दयानन्द के विचार व उन द्वारा प्रस्थापित वैदिक सिद्धात तो हजारो हजारो सूर्य के प्रकाश से भी अधिक व ज्योतिर्मान हैं।

जैसे अग्नि का हर कण तेजोपुज सूर्य से बना होता है वैसे ही महर्षि का ज्ञान व सत्य का प्रकाश ससार ध्रुव सत्य ज्ञान वेद से आवेष्टित है। इसीलिए अनेक धर्मान्ध अन्धविश्वासी जो महर्षि के सिद्धान्तो और मान्यताओ को काटने के उद्देश्य से उठते हैं वे कालान्तर मे महर्षि के अनुयायी बन कर रह जाते हैं।

देवबन्द मे दीक्षित हुए दर्जनो मौलाना और मौलवी सनातन धर्म के अनेक विद्वान व पडित आज महर्षि के ज्ञान के आलोक मे वेदो की अलख जगाते घूम रहे हैं और वह दिन भी नजदीक है जब चर्चों के पादरी भी वेदो के प्रवक्ता बन विश्व में सत्यधर्म के प्रचार के लिए कटिबद्ध हो जायेंगे।

महर्षि स्वामी दयानन्द का जो आत्म स्वरूप है वह अत्यन्त भास्वर है। इसे हम शुक्ल पक्ष कह सकते हैं पर महर्षि दयानन्द के ऊचे स्वर मे उदघोष लगाकर जयजयकार से आकाश को गुजाने वालो का व्यवहार और जीवन में कथनी और करनी में एक रूपता का अभाव विश्व को प्रभावित व अनुप्राणित करने में अक्षम हो चला है।

दीपावली पर जलने वाला हर दीप हमें अपने अन्तर में झांकने की प्रेरणा देने आता है।

काश हम आर्य लोग जीवन मे छल कपट रहित होकर सत्य व्यवहार, सत्य आचरण और पक्षपात रहित न्यायाचरण का सकल्प ले सार्वभौम नागरिक के स्वरूप को अगीकार कर लें तो वह दिन दूर नहीं है जबकि हम धरती को फिर से वेदो के प्रकाश से जगमगा दें।

पर शोक महाशोक आपसी फूट राग और द्वेष तथा छल-छदमयुक्त व्यवहार हमे चार-चार आसू बहाने के लिए विवश कर रहा है।

कार्तिक अमावस्या के कृष्णपक्ष के स्वरूप को त्याग यदि हम एकाकी भी शुक्ल पक्ष मे चलने का सकल्प लें और कुर्सियो और अधिकार की पारस्परिक लडाई से पृथक एकान्त भाव से सन्मार्ग पर चलें और सत्प्रेरणा का व्रत धारण करें तो हम उस महर्षि के चरणो मे अपनी छोटी-सी तुच्छ श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं। गम्भीरता से निष्पक्ष भाव से शुद्ध अन्त करण से विचार करें तो ज्ञात होगा कि—

प्यारे ऋषि दयानन्द आपके ऋण हम पर और सारे ससार पर इतने अधिक हैं कि हम जन्म जन्मान्तर आपसे उऋण हो नही सकते।

जिस पथ को खोजने विश्व का आदमी आज यहा दर दर भटक रहा है मृग मरीचिका के पीछे जैसे हिरण दम तोड देता है या कस्तूरी मृग की भाति भ्रांति में पडा मनुष्य बाहर भ्रान्त हो भाग रहा है पर उसकी खोज जारी है, हम उसका आभार मानते हैं।

पर जिनके सामने जीवन का राजमार्ग अत्यन्त स्पष्ट और निरापद है वह भी पथ पर आगे न बढ सके तो उससे बढ़कर अभागा इस धरती पर कौन होगा।

प्रभु हम आर्यों को सत्प्रेरणा दे, हम आपस के क्षुद्र स्वार्थों से ऊपर उठकर जीवन के महान लक्ष्य की ओर आगे बढ़ें। यही एक सच्ची श्रद्धांजलि देव-दयानन्द के चरणों में अर्पित की जा सकती है।

साप्ताहिक ओ३म्
आर्य सन्देश

पं० जवाहरलाल नेहरू और जातिगत आरक्षण



प० जवाहरलाल नेहरू का नाम राष्ट्र निर्माताओ मे सम्मानपूर्वक स्मरण किया जाता है। उन्होंने सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक क्षेत्र में देश को सम्मानजनक स्थान दिलाने में विशेष भूमिका भी निभायी। अन्तर्राष्ट्रीय जगत मे और वैज्ञानिक क्षेत्र में देश के गौरव को स्थापित करने में उनका विशिष्ट एव मौलिक योगदान है। वे स्वाधीनता संग्राम के अग्रणी नेता हैं। उनका जन्म दिवस १४ नवम्बर को प्रतिवर्ष बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। वे बच्चों के प्यारे चाचा नेहरू हैं।

पिछले दिनो मडल यात्रा निकाली गई। जातीय आधार पर प्रस्तावित आरक्षण निश्चय ही सामाजिक विषमताओ में वृद्धि करने वाला है। अनेक महापुरुषों और नेताओं ने इसके विरोध में बहुत कुछ कहा है। प० जवाहरलाल नेहरू भी उसके पक्ष मे नहीं थे।

पडित जवाहरलाल नेहरू जाति या समुदाय के आधार पर मुख्यत. नौकरियो और पदोन्नतियो के सर्वथा विरुद्ध थे। वह इस पक्ष मे थे कि अच्छी शिक्षा उपलब्ध करवाई जाए और आर्थिक न कि जाति के आधार पर उन्हें मदद दी जाए। उनका कहना था कि आरक्षण से कार्यकुशलता नष्ट हो सकती है।

भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री के विचार उस पत्र मे स्पष्ट रूप से दर्ज हैं जो उन्होंने २७ जून १९६१ मे राज्यो के मुख्यमन्त्रियो के नाम भिजवाया था। मुख्यमन्त्रियो के नाम जवाहरलाल नेहरू के पत्र नामक पुस्तक माला के पाचवे और अतिम खण्ड ९१ पर प्रकाशित किये गये हैं जिनमे से एक आरक्षण पर भी है। ये पत्र नेहरू जी ने १९५८ से १९६४ के बीच लिखे थे।

इस पत्र में नेहरू जी ने परम्परागत रट से निकलने और कार्य कुशलता बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होने कहा कि जरूरत इस बात की है कि हम एक जाति या एक समुदाय को या विशेषाधिकार देने की अपनी पुरानो आदतो के खोल से बाहर निकलें।

प० जवाहर लाल नेहरू यह तो चाहते थे कि निर्माण के समय सभी को समान सुविधाए प्रदान की जायें।

नेहरू जी ने पत्र मे राज्यो के मुख्यमन्त्रियो की एक बैठक का हवाला दिया। बैठक मे राष्ट्रीय एकीकरण पर विचार किया गया था और यह तय पाया था कि जाति की वजह से नही बल्कि आर्थिक अवस्था के आधार पर मदद की जाए।

नेहरूजी ने लिखा—यह सच है कि कुछ कायदो और कुछ खातो की तरफ से मुल्क अनुसूचित जाति और जनजातियों की मदद करने के लिये प्रतिबद्ध है। वे मदद लेने के काबिल हैं। फिर भी मैं किसी भी तरह के आरक्षण को पसन्द नहीं करता खासतौर से नौकरियों मे। उस हर चीज के खिलाफ मेरे मन मे तीव्र प्रतिक्रिया होती है जो अकुशलता या दोयम दर्जे के मानदण्ड पैदा करे। मैं चाहता हू कि मुल्क हर तरीके से हर बात मे 'फर्स्ट क्लास' हो। जब भी हम दोयम चीज को प्रोत्साहन देंगे, हम नष्ट हो जायेंगे।

नेहरू जी यह नहीं चाहते थे कि किसी को दया करके कुछ दिया जाए। वे चाहते थे कि सभी को योग्य बनने का अवसर दिया जाए और जब वे योग्य हो जाए तो वे अपना अधिकार योग्यता के बल पर प्राप्त करें।

इस सन्दर्भ मे नेहरू जी ने दो 'बहुत महत्वपूर्ण' सरकारी निर्णयो का उल्लेख किया। एक सभी को निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा का फैसला था। प्राथमिक शिक्षा को नेहरू जी ने बुनियादी बताया। दूसरा बड़े पैमाने पर तेजस्वी छात्रों को शिक्षा-वृत्तियां देना था। नेहरू जी ने तेजस्वी छात्र व छात्राओं पर जोर दिया क्योंकि वे वे ही हैं जो हमारे 'स्टैण्डर्ड' को बढाएगी। उन्होने कहा—'मुझे इसमे कोई शक नही कि हमारे मुल्क मे प्रतिभा की कोई कमी नहीं। बात सिर्फ लोगो को मौका देने की है।

लेकिन हम सम्प्रदाय या जाति के आधार पर आरक्षण करते हैं तो हम प्रतिभावान व योग्य व्यक्तियो को पीछे धकेलते है और खुद सैकेण्ड रेट या थर्ड रेट रहते हैं।

नेहरू जी को इस बात का गहन खेद था कि आरक्षण का धन्धा साम्प्रदायिकता से ओतप्रोत कर दिया गया। मुझे यह जानकर अचम्भा हुआ है कि पदोन्नतिया भी साम्प्रदायिक तथा जाति के आधार पर की जाती हैं। यह न केवल मूर्खता है बल्कि घोर अनर्थ है। मैं चाहता हू कि पिछडो को सभी सहायता मिले लेकिन कार्य कुशलता की कीमत पर नही।

पडित जी तो चाहते थे कि योग्यता के बल पर, कार्य कुशलता के बल पर व्यक्ति उच्च पद को प्राप्त करे।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जा तमेवन्तु विद्या द्वैश्यात्तथैव च॥

शूद्र ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेता है और ब्राह्मण शूद्रता को, वैसे ही विद्या आदि की प्राप्ति के द्वारा क्षत्रिय व वैश्य भी ब्राह्मणत्व को और अच्छे गुणों तथा उच्च वर्णो के कर्मों को छोडकर शूद्रत्व को प्राप्त होते हैं।

हमारा कर्तव्य है कि हम श्रेष्ठ गुणो को धारण करे। जो राष्ट्र नेता नेहरू के नाम की दुहाई देते है, वे उनके विचारो का अनुसरण करें।

पडित जी के जन्म दिवस पर मेरी विनत श्रद्धाजलि। —डा० धर्मपाल

सम्पादक के नाम पत्र

दीपावली विशेषांक

आप पत्रिका में पाठको के लिए काफी ठोस एव महत्त्वपूर्ण सामग्री दे रहे हैं। आर्य सन्देश का आर्य समाज की तमाम पत्र-पत्रिकाओ में अपना विशिष्ट स्थान है। इस पत्रिका के विशेषाकों की बडी धूम रहती है। लेकिन बडे खेद की बात है कि मुझे अब तक आर्य सन्देश का दीपावली विशेषाक प्राप्त नहीं हुआ है। काफी प्रतीक्षा करने के बाद तथा अपने स्थानीय डाकघर से पूरी-२ जाच पडताल के बाद यह पत्र लिख रहा हू। पत्र मिलते ही आप आर्य सन्देश के २५ अक्तूबर व १ नवम्बर, १९९२ का दीपावली विशेषाक भेजें, प्रतीक्षा रहेगी।

पता—रामकुमार सोरायन लोक निर्माण जन स्वास्थ्य विभाग जलघर जोशी चौहान वाया बहालगढ (सोनीपत) हरि०

—वयम् जयेम त्वयायुजा (ऋक्)। 'आर्य सन्देश' साप्ताहिक पत्र के समस्त अधिकारी मण्डल के सदस्यो में, ऋषिवर की सच्ची वेदना का प्रभाव है, इसमे कोई सन्देह नहीं क्योंकि यदि ऐसा न होता तो स्व० प० चमूपति जी की स्मृति आनी सम्भव ही नही थी। हार्दिक शुभकामनाए स्वीकारें।

ईश्वर व महर्षि दयानन्द परक श्रेष्ठ रचनाओ पर यदि वर्ष मे एक ही विशेषाक निकालने का यदि प्रबन्धक मण्डल निर्णय ले सके तो यह आर्य जगत की एक अत्यन्त सार्थक सेवा होगी। —प० रामाज्ञा 'आर्यपुत्र,
(बौद्धिकाध्यक्ष) आर्य वीर दल पूर्वी उ० प्र०

—प० चमूपति, तथा हिन्दी विशेषाक भी मिले, धन्यवाद। महर्षि देव दयानन्द सरस्वती की कृपा से कैसे कैसे विद्वान, राष्ट्रभक्त, वीर, निर्भीक महानुभाव भारत की इस पवित्र भूमि पर अवतरित हुए, निश्चय ही उन अग्रणी पुरुषो मे एक नाम प० चमूपति जी का भी है, जिसके प्रति विशेषाक प्रकाशित कर आर्य जगत को प्रेरित करने का प्रयास किया है यह सराहनीय पग है। वास्तव मे आर्य समाज के अनेक पुरुषो ने धर्मोत्थान, राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिये जो बलिदान किया वह इतिहास का भाग है परन्तु यह दुर्भाग्य ही है कि राष्ट्र उनको भुलाये बैठा है।

हिन्दी विशेषाक पढा, विचार पढे नेताओ के परन्तु राष्ट्रभाषा स्वीकार करने वाले ही इसको वह स्थान न दे सके। यह दुर्भाग्य ही है कि पैंतालीस वर्ष पश्चात भी हमें विशेषाक द्वारा प्रचार की आवश्यकता अनुभव हो रही है और राजतन्त्र भी वर्ष में एक दो बार हिन्दी सप्ताह मना कर अपने आपको सन्तुष्ट मानता है।

निवेदन है आप इस पत्रिका को थोडा सामाजिक बनायें जैसे कुछ समय चिकित्सा का ज्ञान देते रहे ऐसे गृहस्थ, शिक्षा तथा राष्ट्रीय कर्तव्य पर लेख दें। सम्भवत किसी को प्रेरणा मिले। श्री रामप्रकाश जी, के. बी ७८ ए,
अशोक विहार, फेस-I, दिल्ली-११००५२

हिन्दी पत्रकारिता में क्षितीश जी का योगदान

—शिव कुमार कौशिक

मैंने अनेक वर्षों तक दैनिक हिन्दुस्तान मे क्षितीश जी के साथ काम किया है। इसलिये पत्रकारिता सम्बन्धी उनकी सूझबूझ का मैं प्रत्यक्ष साक्षी हू। उसी के आधार पर कुछ अपने व्यक्तिगत सस्मरण लिख रहा हू।

एक बार श्री देवदास गाधी न जो उस समय हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान टाईम्स के मैनेजिग एडीटर थे। हमारे स्टाफ की मीटिंग बुलाई उसमे उन्होने कहा कि जिस तरह अग्रेजी मे हिन्दी शब्दो का प्रयोग नही होता उसी तरह हमें भी हिन्दी मे अग्रेजी शब्दो का प्रयोग नही करना चाहिए। जिस समाचार की ओर उनका सकेत था वह क्षितीश जी ने लिखा था इसलिए सब लोग उनकी ओर देखने लगे उसमें गारण्टी शब्द का प्रयोग हुआ था। देवदास जी ने कहा कि जैसे गारण्टी अग्रेजी का शब्द है उसका हमे हिन्दी मे क्यो प्रयोग करना चाहिए ? क्षितीश जी ने सुनते ही कहा कि गारण्टी के लिए हमको तो हिन्दी शब्द मालूम नहीं है, कृपया करके आप ही बता दें तो भविष्य मे हम उस शब्द का प्रयोग किया करें। क्षितीश जी की इस बेबाकी से हम सब लोग स्तब्ध रह गए। तब देवदास जी ने कहा नही मेरा यह मतलब नही है। हमे उसके लिए हिन्दी शब्द तलाश करना चाहिए।

एक बार जब एयरकण्डीशन शब्द चला तो प्रश्न पैदा हुआ कि इसके लिए हिन्दी मे क्या शब्द रखा जाय। उस समय शीतता पर नियन्त्रक शब्द सुझाया था, लेकिन वह किसी को पसन्द नही आया। तब एक शब्द सामने आया—वायु अनुकूलित उस शब्द के बारे मे कुछ-२ रजामन्दी हो ही रही थीकि क्षितीश जी ने कहा—वातानुकूलित। इस शब्द पर सबकी सहमति हो गई और आगे से यही शब्द प्रयोग होने लगा। इसी तरह इमरजेंसी के लिये संकटकालीन स्थिति शब्द का प्रयोग होता था परन्तु एक दिन पता नही कहा से क्षितीश जी ने सुझाया—आपात स्थिति। मैं नहीं जानता उन्होंने यह शब्द अपनी प्रतिभा से ही खोजा था डा० रघुवीर के किसी शब्द कोष से परन्तु उससे पहले हमारे किसी साथी ने यह शब्द सुना नही था। जब पहली पहली बार क्षितीश जी ने इसका प्रयोग किया तो सब चौंके कि क्या यह शब्द ठीक है परन्तु बाद में वही सही सिद्ध हुआ और उसी का प्रयोग होने लगा।

इसी तरह एक बार सुपर सोनिक शब्द के लिये हिन्दी शब्द की तलाश हुई तब कई शब्द सामने आये किसी ने कहा—शब्दातिशायी–लेकिन शब्द और ध्वनि शब्द में तो अन्तर है न। और ध्वनि के लिये कोष में स्वन शब्द स्वीकृत है। तब क्षितीश जी ने कहा कि सुपर सोनिक के लिए हम अतिस्वन शब्द का प्रयोग क्या न करें ? सबको यह बात जंच गई और आगे से इसी शब्द का प्रयोग होने लगा।

इसी तरह अग्रेजी अखबार वाले अफ्रीकी और एशियाई देशों के लिए अफ्रेशियन कन्ट्रीज शब्द का प्रयोग करते थे और हम हिन्दी वाले उसका अनुवाद अफ्रीकी और एशियाई देश किया करते थे। तब क्षितीश जी ने एक दिन कहा कि यदि अग्रेजी वाले अफ्रेशियन कन्ट्रीज लिखते हैं तो हम हिन्दी मे उनको अफ्रशियाई देश क्यो नही कह सकते। बात सबको जच गई और आगे से इसी शब्द का प्रयोग होने लगा। कहा जाता है कि पत्रकार की एक तीसरी आख भी होती है जिससे वह अपनी दूरदृष्टि से भूत और भविष्य का भी आकलन कर लिया करता है। मुझ याद है कि मेरे जनकपुरी के निवास स्थान पर उस दिन क्षितीश जी रात को वही सोये थे। तो रात को ही मुझे कहने लगे कि मुझ लगता है कि कल सवेरे आपात स्थिति शुरू हो जायेगी। सवेरे जब हम उठ तो हमे देखकर आश्चर्य हुआ कि किस तरह बसो और ट्रको का चलना बन्द हो गया था और क्षितीश जी का आंकलन सही सिद्ध हुआ था। यह दूरदर्शिता मैंने उनकी अन्य राजनैतिक विषयो में भी कई बार देखी है और उनका आंकलन सही पाया है।

मुझे जब पता लगा कि अपने जीवन के प्रारम्भ मे कविता करते रहे हैं तब उनकी भावुकता से मैं पूर्व परिचित तो था ही इस जानकारी स उसकी और पुष्टि हो गई। इस विषय मे मैं एक अत्यन्त निजी सस्मरण का उल्लेख करना चाहता हू जिसमे उनकी भावुकता मुखर होती है और मैं उसे कभी भूल नहीं सकता।

मैंने बौद्ध कालीन साहित्य के आधार पर एक उपन्यास लिखा था जिसके एक अध्याय को जब मैंन क्षितीश जी को सुनाया तब उन्होंने बार-बार उसमे कुछ कमिया निकाल कर उस अध्याय को मुझसे तीन-तीन बार लिखवाया। इससे वह पुस्तक इतनी मझ गई कि हिन्दी के बड़े प्रकाशक आत्मा राम एण्ड सन्स ने उसको बड़े शौक से छापा और वह पुस्तक खूब लोकप्रिय भी हुई। मैंने वैशाली की जिस नगर वधू का चित्रण किया था, उसका एक काल्पनिक खूब बढिया रगीन पूरे पज का चित्र धर्मयुग मे भी प्रकाशित हुआ था। इससे पुस्तक की लोकप्रियता और बढ गई। अन्त मे नौबत यहा तक आई कि इस पुस्तक के बारे मे एक समारोह करने का अवसर उपस्थित हो गया। उस समारोह मे बौद्ध और जैन भिक्षु जिन दोनो के लिये बुद्ध और महावीर दोनो से जुड़े होने के कारण और प्रसिद्ध गणराज्य होने के कारण तीर्थ स्थल बन गया था, बडी सख्या मे उपस्थित हुए। समारोह का उद्‌घाटन गन्धर्व महा विद्यालय के छात्र छात्राओ के गायन से हुआ। उसके बाद समारोह मे उपस्थित प्रसिद्ध राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर बोले। अन्त मे मैंने क्षितीश जी से कुछ कहने का आग्रह किया। क्षितीश जी ने अपना भाषण शुरू ही इस वाक्य से किया—इस सस्थागार मे उपस्थित 'हे भिक्खुओं' इस सम्बोधन को सुनते ही बौद्ध और जैन भिक्खू तो मुग्ध हो गये और इसके बाद क्षितीश जी ने जो भाषण दिया उसम उनका बौद्ध साहित्य का विपुल ज्ञान उदभाषित होता है। श्री दिनकर जी ने पूछा कि यह आदमी कौन है तो मैंने उनसे कहा कि हमारे दैनिक हिन्दुस्तान के कार्यालय में ही काम करते हैं। बडे प्रतिभाशाली और साहित्यकार भी हैं।

अन्त मे जब गन्धर्व महाविद्यालय के छात्र छात्राओ को वापस भेजने का प्रसग आया तो उसके निमित्त टक्सी के लिये मेरे पास पैसे नहीं थे, मैं बगलें झाकने लगा। क्षितीश जी ने पूछा--कौशिक ! क्या बात है ? और यह कहकर मुझे तुरन्त अपनी जेब से १०० रुपये का नोट निकाल कर दिया। मैं उनके मुह की ओर देखने लगा यह क्या। क्षितीश जी ने कहा कौशिक जी, कहीं छोटे भाई के समारोह मे खाली हाथ जाया जाता है। उसके बाद न तो उन्होंने मुझसे वह पैसे कभी मागे और न मैंने लौटाये ही। पाठक जी मुझे बतायें कि क्या आपने इस अग्रज की ऐसी उदारता और ऐसा सौहार्द मैं कभी भूल सकता हू। एक बार 'हिन्दुस्तान टाइम्स' ने मारिशस में हुए अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन के बाद कुछ हिन्दी साहित्यकारो के सम्बन्ध में लेख छापने का निश्चय किया। तब उनका ध्यान भी क्षितीश जी की ओर हो गया। तब पता लगा कि क्षितीश जी तो अग्रेजी भी बढिया लिखते हैं। उसके बाद "ईवनिंग न्यूज" में उनकी साहित्यिक प्रतिभा के बारे में डबल कालम चित्र के साथ इनके ऊपर एक फीचर छापा। तब कई अग्रेजी भक्तो का भी इनकी ओर ध्यान हो गया।

८३/३४, जनकपुरी, नई दिल्ली-११००५८

भक्ति का रंग

(पृष्ट १ का शेष)

महत्व पर प्रकाश डाला और युवको से समाज व राष्ट्र के उत्थान के लिए ब्रह्मचर्य व्रत लेने का आह्वान किया। क्षेत्रीय आर्य उपप्रतिनिधि सभा, शाहदरा क्षेत्र के प्रधान विशम्भरनाथ भाटिया ने भी सुन्दर विचार रखे। कार्यक्रम मे विभिन्न समाजो व सस्थाओ से पधारे पदाधिकारियो ने अतिथियो का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

कार्यक्रम का सुचारु सचालन श्री गुलाबसिंह राघव ने किया। इससे पूर्व आज १ नवम्बर से प० भूदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुये यज्ञ की पूर्णाहुति मे सैकडो आर्यों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। ७ नवम्बर को महिला सम्मेलन हुआ। रात्रि प्रतिदिन पं० भूदेव साहित्याचार्य की कथा व श्री राघव जी के मनोहर भजन होते रहे।

जापानियों का संस्कृत प्रेम

टोकियो, ६ अक्तूबर (पीटीआई)। जापानी विद्वानो को संस्कृत में शुद्ध उच्चारण सिखाने के लिए एक जापानी मन्दिर पुस्तकालय ने संस्कृत व्याकरण और श्लोको की एक कम्पैक्ट डिस्क तैयार करने की योजना बनाई है।

यह कम्पैक्ट डिस्क नारा तोप जी बौद्ध मन्दिर पुस्तकालय बना रहा है। इसमें सस्कृत के एक मद्रासी विद्वान डा० एस एस जानकी की आवाज में सस्कृत व्याकरण और चुने हुए श्लोक भरे जायेंगे।

डा जानकी का चुनाव मन्दिर पुस्तकालय के निदेशक श्री शोशु हिराओका ने किया था।

श्री हिराओका दो सस्कृत शब्दावलिया पहले ही तैयार कर चुके हैं। आज के जापान टाइम्स मे छपी एक रिपोर्ट मे उन्होंने कहा है कि कम्पैक्ट डिस्क से जापानियों को देवभाषा सस्कृत सीखने मे सहायता मिलेगी।

(दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्स ७ अक्तूबर १९९२ के अक से साभार)

महर्षि दयानन्द सरस्वती का ११०वां निर्वाण दिवस मनाया गया

बम्बई १८ अक्तूबर। बम्बई की समस्त आर्य समाजो का ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे १८-१०-९२ को आर्य समाज मन्दिर शान्ताक्रुज (प०) में महर्षि दयानन्द सरस्वती का ११०वा निर्वाण दिवम धूम-धाम से मनाया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे भारत सरकार खादी ग्रामोद्योग कमीशन के अध्यक्ष श्री डा० यशवीरसिंह ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वनो ने इस देश को स्वदेशी का पाठ पढाया, स्वतन्त्रता का बिगुल बजाया और राष्ट्रभाषा व राष्ट्रीय एकता का सन्देश दिया। केवल एक दयानन्द ही ऐसे महापुरुष हुए जिन्होने ससार के कल्याण की बात वेद के आधार पर कही।

विशेष अतिथि श्री राममनोहर त्रिपाठी पूर्व राज्यमन्त्री ने कहा आज के युवक समाज की यज्ञ के प्रति कोई रुचि नहीं है सन्ध्या बन्दन उसे अच्छा नही लगता इसी कारण विश्व में चारो ओर अशान्ति का वातावरण है। जहा से धर्म चला जाता है वहा अशान्ति का साम्राज्य हो जाता है।

डा० सामदेव जी शास्त्री ने कहा कि यदि जहर न दिया जाता तो भारत का इतिहास कुछ और ही होता।

श्री प्रकाशचन्द जी त्यागी अध्यक्ष सस्कृत विभाग ने कहा दयानन्द ने जो ससार के कल्याण की बात कही और वेद भगवान की वाणी है इस पर सबका समान अधिकार है।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्री ओकारनाथ जी आर्य ने कहा कि आर्य समाज का इतिहास गौरवशाली है महर्षि दयानन्द का जीवन त्याग और तपस्या का जीवन था और स्वामी जी ने अपना सर्वस्व प्रदान कर ससार का कल्याण किया।

आर्यसमाज शान्ताक्रुज के प्रधान कैप्टिन देवरत्न जी आर्य ने जन-समूह को सम्बोधित किया तथा सम्माननीय अतिथियो का परिचय कराते हुए स्वागत किया। इस अवसर पर श्रीमती लज्जारानी जी गोयल ने भी अपने विचार प्रकट किये और श्रीमती शिवराजवती जी आर्या एव श्री प्रकाशचन्द जी ने मनोहर भजन प्रस्तुत किये।

आर्यसमाज के महामन्त्री श्री नरेन्द्र अब्बालाल पटेल ने समारोह का सयोजन किया एव जन समुदाय का धन्यवाद ज्ञापित किया।

शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इन समस्त आर्य बन्धुओं ने प्रीतिभोज मे भी भाग लिया। —कैप्टिन देवरत्न आर्य प्रधान

शोक समाचार

श्री बाबू रूपचन्द नहीं रहे



आर्यसमाज नागल राय के सस्थापक एव पूर्व प्रधान श्री बाबू रूपचन्द जी का ९२ वर्ष की आयु म १ अक्तूबर ९२ को निधन हो गया। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड गये हैं। १४ अक्तूबर को तेरहवीं के अवसर पर पूर्व महानगर पार्षद श्री राजेन्द्र कुमार तवर पूव निगम पार्षद सवश्री भूपसिंह व मगतराम तवर तथा अनेक सस्थाओ के प्रतिनिधियो ने श्री रूपचन्द की सेवाओ का स्मरण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। बाबू रूपचन्द ने १९३३ के कोटा भूकम्प हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी आन्दोलन, गोहत्या आन्दोलन आदि मे उल्लेखनीय कार्य किया था। समाज के हर काम मे वे बढ़चढ़ कर भाग लेते थे। परमपिता प्रभु से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति व शोक सतप्त परिवार को दु ख सहने की शक्ति प्रदान करे।

—गाजियाबाद लाला किशोरीलाल की धमपत्नी श्रीमती भगवती देवी का २१ अक्तूबर को ८५ वर्ष की आयु मे गाजियाबाद मे अपने निवास स्थान मे स्वर्गवास हो गया। उनके परिवार में तीन पुत्र व दो पुत्रिया हैं। श्रीमती भगवती देवी गाजियाबाद आर्य समाज की मन्त्राणी रही हैं और वे आर्य समाज की गतिविधियो मे बढ़चढ़ कर भाग लेती थीं। सन १९५७ के हिन्दी सत्याग्रह में लुधियाना में जेल गयीं थीं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि शोक सतप्त परिवार को दु ख सहने की शक्ति व दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—गुरुकुलीय स्नातक मण्डल दिल्ली प्रदेश की अक्तूबर मे हुई बैठक में गुरुकुल कागडी के यशस्वी स्नातक स्वर्गीय पडित सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार स्वर्गीय भाई नरेन्द्र जी आयुर्वेदालकार (गुजरात), स्वर्गीय श्री सुरेन्द्रकुमार विद्यालकार (मद्रास) तथा श्री अनिल जी विद्यालकार की धर्मपत्नी तथा स्वर्गीय पडित विष्णुदत्त जी विद्यालकार की पुत्री बहन श्रीमती इन्दु के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया।

—प्रशान्त विद्यालकार सयोजक

दूसरी शादी रचाने पर गिरफ्तार

शाहदरा, १८ अक्तूबर। एक बीवी के जिन्दा रहते धोखाधडी से दूसरी शादी रचाने के आरोप मे शौहर को गिरफ्तार किया गया है। अदालत ने अभियुक्त पति को पाच दिन के पुलिस रिमाड पर सौंप दिया है। अभियुक्त शौहर को पुलिस ने उसकी दूसरी पत्नी की शिकायत पर गिरफ्तार किया।

भोलानाथ नगर की मधुबाला ने थाना विवेक विहार मे रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि उसके पति चन्द्रमोहन ने झूठ और धोखाधडी से उसके साथ विवाह किया है। मुद्दई के मुताबिक चन्द्रमोहन ने उससे यह कहकर शादी की कि उसका पहली पत्नी से कानूनन तलाक हो चुका है। शादी विवेक विहार के आर्यसमाज मन्दिर मे दस जुलाई १९९१ को हुई।

मधुबाला ने पुलिस को बताया कि शादी के बाद उसे चन्द्रमोहन ने अम्बाला जम्मू और बटाला मे रखा। गर्भवती होने पर चन्द्रमोहन ने गर्भपात कराने के लिए उस पर दबाव डाला। लेकिन वह इसके लिए तैयार नही हुई। इसी बीच पता चला कि चन्द्रमोहन का पहली बीवी से कानूनन तलाक नही हुआ है। इसके बाद उसने पुलिस मे अपने पति के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराने का फैसला किया। उसने पुलिस से दहेज मे दिया गया सामान दिलाने की माग की।

पुलिस ने मामला भारतीय दण्ड सहिता की दफा ४२०/४९४/४०६ के तहत दर्ज करके अभियुक्त चन्द्रमोहन को गिरफ्तार कर लिया। अभियुक्त को पुलिस ने शाहदरा अदालत मे पेश किया। सरकारी वकील आईयू बाबर ने अभियुक्त का पुलिस रिमाड मागा ताकि मुद्दई को दहेज का सामान दिलाया जा सके। अदालत ने सरकारी वकील की दलील को मानते हुए अभियुक्त को पाच दिन के पुलिस रिमाड पर दे दिया।

आदर्श-त्रैतवाद-१३

—राजसिंह भल्ला

ब्रह्म का स्वरूप अनन्त लीला अनन्त

यदि मन्यसे सुवेदेति दभ्रमेवापि नून त्वंवेत्थ ब्रह्मणो रूपम् ।
यदस्य त्वम् यदस्य च देवेष्वथ नु मीमांस्यमेव ते मन्ये विदितम् ॥ केन० २ १

गुरु ने शिष्य को कहा—यदि तू ऐसा जानता है कि मैं ब्रह्म का पूरा रूप जानताहू तो निश्चय तू अल्प ही जानताहैं । जो इस ब्रह्म का स्वरूप तू जानता है और जो इस का स्वरूप देवो मे जाना जाता है वह भी अल्प ही है। इस कारण जो तूने जाना है वह तुझे मनन ही करना चाहिये । यह मैं मानता हू ब्रह्म का स्वरूप अनन्त है उसकी लीला अपार है। उसके जानने का अभिमान नही करना चाहिए। अनन्त स्वरूप ईश्वर मानव की मति की सीमा मे बन्ध नहीं सकता उसका जो प्रकाश जो मानवो और देवो मे पाया जाता है वह भी अल्प ही है। यदि मानव की समझ में उसका सारा ज्ञान आ जाए तो ब्रह्म सीमित हो जाएगा । उसके ज्ञान की अनन्तता तो तब ही सिद्ध होती हैं जब उस ब्रह्म के बारे में सीमित ही ज्ञान हो और वह ज्ञान भी एक देश का ही हो। जिन लोगो ने उस ब्रह्म को सीमित कर दिया है वे लोग ही ससार मे मत-मतान्तरो के झगडो के कारण बने हैं। ईश्वर तो एक है और वह सब का है सर्वव्यापक है सर्वज्ञ है।

ब्रह्म नित्य शुद्ध बुद्ध व्यापक सूक्ष्म

यत्त दद्रेश्यमग्राह्य मगोत्रमवर्णम चक्षु श्रोत्र तदपाणिपादम् ।
नित्य विभु सर्वगत सुसूक्ष्म तदव्यय तद भूत योनि परिपश्यन्ति धीरा ॥
मुण्डको० १-६

वह जो अक्षर है उसको अदृश्य, ग्रहण न होने वाला, अजन्मा, रगरूप रहित, आख कान रहित तथा हाथ पाव से हीन, नित्य समर्थ, सर्वत्र विद्यमान, अत्यन्त सूक्ष्म तथा अपरिवर्तनशील और सारे जगत का कारण धीर जन जानते हैं। यह परब्रह्म का वर्णन है। ब्रह्म न देखा जा सकता है न पकडा और न ग्रहण किया जा सकता है। क्योंकि मनुष्य के समान शरीर वाला नही है जिसका कोई गोत्र या ब्राह्मण आदि वर्ण हो, न उसके नेत्र हैं, न श्रोत्र, न हाथ, न पैर। वह नित्य है। विभु है। सब मे व्यापक अत्यन्त सूक्ष्म और नाश रहित है। जो सब पचभूतो आदि की योनि है कारण है। जिसको धीर योगी सयमी देखते है। दर्शन करते हैं।

चित्त के द्वारा अनुभव और प्रत्यक्ष रूप से साक्षात्कार करते है

यन मनसा नमनुते येनाहुमनो मतम् ।
तदेव ब्रह्म त्व विद्धि नेद यदिदमुपासते ॥ केन० १।५

जो मन से नहीं चिन्तन करता किन्तु जिससे मन सकल्प विकल्प करता है ऐसा कहते हैं तू उसी को ब्रह्म जान जो यह ब्रह्म का वर्णन कल्पना करने वाले करते हैं यह ब्रह्म नहीं है। परमेश्वर मन की दौड से अपार है। वह मनोवृति के अधीन नहीं है। किन्तु मनोवृत्ति के नियम का निर्माता है। उसका ज्ञान वृत्ति के घेरे से ऊपर है। वह सारे जगत का साक्षी है और ज्ञान स्वरूप है। गुरु ने कहा तू उसी ईश्वर को जान। जिस ब्रह्म का वर्णन दार्शनिक लोग करते हैं वह ब्रह्म नहीं है कल्पना तो मानसिक जगत है मनोरचना है विचारमाला है उसका सर्वांश में पूर्ण होना कठिन है। मनुष्य अपूर्ण हैं। उसकी कल्पना तकना मे ब्रह्म को बाध देना भारी भूल है। परमेश्वर तो मन से अचिन्त्य है। (क्रमश)

उदयपुर चलो उदयपुर चलो

उदयपुर राजस्थान के मुख्य मन्त्री श्री भैरोंसिंह शेखावत २८ व २९ नवम्बर, ९२ को एक समारोह मे आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को नवलखा महल हस्तान्तरित करेंगे। उल्लेखनीय है कि युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अमर-ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश उदयपुर स्थित इसी नवलखा महल में लिखा था।

समारोह में वृहद यज्ञ, विशाल शोभा यात्रा, खुला अधिवेशन, विविध सम्मेलन, लगर आदि की व्यवस्था है।

सभी सादर आमन्त्रित हैं। दान राशि चैक, ड्राफ्ट द्वारा आर्य समाज मन्दिर दयानन्द मार्ग, उदयपुर, ३१३००१ को भेजें।

आर्य युवा महासम्मेलन

नई दिल्ली, ७ नवम्बर। राजधानी मे स्कूली छात्र-छात्राओ के शारीरिक, शैक्षिक व बौद्धिक विकास के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित नवम् आर्य युवा महासम्मेलन का सुप्रसिद्ध समाज सेवी व दानवीर श्री रतनलाल सहदेव ने आज रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल सरोजनी नगर मे विधिवत् उद्घाटन किया। श्री सहदेव ने छात्रो के बहुमुखी विकास के लिए ऐसी प्रतियोगिताओ के महत्व का उल्लेख किया एव प्रतियोगिता मे शामिल बच्चो को बधाई दी।

आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री प्रियतमदास रसवन्त ने आर्य वीर दल की गतिविधियो की जानकारी दी तथा सभा के कोषाध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम गोयल सचालक डा० ज्ञानप्रकाश ने भी बच्चों को प्रेरक उद्बोधन दिया। कार्यक्रम मे दिल्ली सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने शामिल होकर बच्चो का उत्साह वर्धन किया।

श्रीमती अनीता कपिला, प्रिंसिपल के सयोजकत्व मे आयोजित चित्र-कला व निबन्ध प्रतियोगिताओ मे विभिन्न स्कूलो के १६७ बच्चो ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यालय के प्रबन्धक श्री रोशनलाल गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

सरलीकृत विवाह

सरलीकृत विवाहो के इतिहास पर दृष्टि डालेंगे तो आपको पता चलेगा कि यह कार्यक्रम शुद्धि आन्दोलन के गर्भ में जन्मा। उस समय इसकी आवश्यकता पडी थी क्योकि शुद्ध हुये युगल के माता-पिता और सगे सम्बन्धियों से सम्पर्क तो होता नही था, अतएव उसमे समाज का प्रतिष्ठित वर्ग उपस्थित होता था और सारा सस्कार वैदिक विधि मे उनके समक्ष सम्पन्न होता था, और यह उपस्थित प्रतिष्ठित वर्ग उभय पक्षो का दायित्व पूरा करता था। आज जो इन सरलीकृत विवाहो का रूप आर्य समाजों ने अपनाया हुआ है वह एक विकृत रूप है और सर्वथा त्याज्य है।

स्वामी जी ने हमे "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का सकल्प दिया। क्या हम सरलीकृत पद्धति द्वारा घर-परिवार समाज से भागे हुये इन स्त्री-पुरुषों को श्रेष्ठ नागरिक बना रहे हैं? क्या इन स्त्री-पुरुषो की आर्य समाज मे आस्था बनती है? क्या हम यह पसन्द करेंगे कि हमारी पुत्रिया इस प्रकार का आचरण करके हमारी और हमारे समाज की अवहेलना करें और समाज मे हमे एक भद्दी चर्चा का विषय बनायें? यदि हम अपने लिये ऐसा नही चाहते तो दूसरो के लिये अपना जैसा मापदण्ड क्यो नही अपनाते? मेरा मन्तव्य यह है कि इस सरलीकृत विवाह द्वारा हम समाज मे उच्छृखलता को प्रोत्साहन न दे यह सरलीकृत विवाह पद्धति जिस उद्देश्यसे अपनाई गई थी, उसे उसी उद्देश्य तक सीमित रखें। धन्यवाद! —सत्यदेव गुप्त,
बी-३८ सर्वोदय एन्क्लेव नई दिल्ली-१७

आर्य समाजो का धन्यवाद

दूर दर्शन से प्रसारित किये जाने वाले हजार घोड़ों का सवार सीरियल मे आर्य समाज विरोधी पटकथा को पढने के उपरान्त सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य समाज की ओर से इस धारावाहिक के प्रसारण पर रोक लगाने की जोरदार माग की थी। सार्वदेशिक सभा के निर्देश पर देश भर की हजारो आर्य समाजों ने अपने प्रस्ताव बनाकर भारत सरकार को भेजे हैं।

विदित हो कि आर्य समाज के कड़े विरोध पर मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की इन्दौर खण्डपीठ ने इस धारावाहिक हजार घोड़ों के सवार पर रोक लगा दी है सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने उन सभी आर्य समाजों व आर्य जनों का धन्यवाद किया है जिन्होंने सभा के निर्देशों का पालन करते हुए इस आन्दोलन में अपना सहयोग दिया है। व्यक्तिगत पत्रों का उत्तर देना संभव न होने के कारण इस वक्तव्य द्वारा सबका धन्यवाद किया है।

—सभा मन्त्री

गुरुकुल आश्रम आमसेना (कालाहाण्डी) रजत जयन्ती महोत्सव

अपील

२८ से ३१ दिसम्बर १९९२ को गुरुकुल आश्रम आमसेना का रजत जयन्ती महोत्सव अत्यन्त समारोह के साथ मनाया जायेगा। गुरुकुल ५ वर्ष से असहाय निर्धन, वनवासियों की सेवा में लगा हुआ है, अब तक अनेक सुयोग्य स्नातक यहा से निकलकर विभिन्न कार्यों मे सलग्न हैं। सत्यार्थप्रकाश भाष्यभूमिका आदि पचासों ग्रन्थ उड़िया भाषा में प्रकाशित हो चुके हैं। २४ हजार से अधिक विदेशी मत मे गये हमारे बन्धु पुन शुद्ध होकर वैदिक धर्म में आ चुके हैं। अत यह गुरुकुल अनेक गतिविधियो का केन्द्र तथा वैदिक धर्म की रक्षा का विशेष स्तम्भ बना हुआ है। रजत जयन्ती महोत्सव पर छात्रावास विद्यालय पुस्तकालय वनवासी एव निधन छात्रों को छात्रवृत्ति धर्मार्थ चिकित्सालय धर्म रक्षा अभियान पानी की व्यवस्था एवं साहित्य प्रकाशन के लिये २५ लाख रुपये सग्रह की योजना है।

जो दानी महानुभाव पूरे भवन का निर्माण या सहायता करेंगे उनका फोटो लगाया जायेगा।

दानी महानुभाव चैक या ड्राफ्ट आचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना के नाम स्टेट बैंक या सेन्ट्रल बक खरियार रोड का भेजें। गुरुकुल को दिया गया दान आय कर से मुक्त है।

मित्रसेन आर्य (रोहतक प्रधान)	धर्मानन्द सरस्वती (आचार्य)
धर्मपाल आर्य (स्वागत मन्त्री)	आचार्य हरिदेव (स्वागताध्यक्ष)
आर्य साहित्य ट्रस्ट दिल्ली	गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली

इंजीनियरों की परीक्षा के लिए हिन्दी विकल्प स्वीकृत

नई दिल्ली केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग में जूनियर इजीनियरो से सहायक इजीनियरो की विभागीय पदोन्नति परीक्षा के सभी प्रश्न पत्र हिन्दी व अग्रेजी मे छापे जायेंगे। तथा सघ लोक सेवा आयोजन ने परीक्षा के लिए हिन्दी विकल्प की सुविधा भी दे दी है। २ ३ सहा० इजी० की नियुक्ति के लिए देश के प्रमुख नगरो में २३ दिसम्बर ९२ को परीक्षा हो रही है। यह जानकारी सघ लोक सेवा आयोग ने १६ ९ ९२ के पत्र में श्री जगन्नाथ सयोजक राजभाषा काय के सा हि प० सरोजनी नगर नई दिल्ली को दी है।

आयसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड नई दिल्ली-११ ००१
R. N. No 32387/77 Posted at N D P.S O on 12 13 11 1992 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/92
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (एल ११०२४/९२ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९ ९२

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

वेद विद्यालय का वार्षिक चतुर्वेद पारायण यज्ञ पूर्व की भांति इस वर्ष भी विभिन्न सम्मेलनो के साथ २९ नवम्बर से १३ दिसम्बर तक सम्पन्न हो रहा है। इस शुभ अवसर पर सपत्निक यजमान बनकर १ २ ३ या ४ वदो के यज्ञ मे अथवा कम से कम किसी एक समय प्रात या सायकालीन हवन मे यज्ञीय वेशभूषा धारण कर यजमान बन सकते हैं। सूचना दूरभाष न० ६५७२३४ अथवा विद्यालय के पते पर पत्र लिखकर भी दे सकते हैं। यज्ञ समय—प्रात ६ बजे से ९ ३० बजे तक साय—३ बजे से ६ ३० बजे तक।

निवेदक

हरिदेव आचार्य — चौ० दिलीपसिंह प्रधान

श्रीमद् दयानन्द वेद विद्यालय ११९, गौतम नगर नई दिल्ली

विजय दशमी व दीपावली समारोह

आर्य समाज (गुरुकुल) अशोक विहार फज-२ दिल्ली में १६ से १८ अक्तूबर तक विजय दशमी व दीपावली कार्यक्रम समारोहपूर्वक मनाये गये। स्वामी आत्मानन्द जी तीर्थ के ब्रह्मत्व मे प्रातः व सायं यज्ञ सम्पन्न हुआ। सर्वश्री यशपाल शास्त्री ओमप्रकाश शर्मा स्वामी सत्यानन्द उदयनारायण शास्त्री प० काशीराम आदि ने प्रेरक विचार रखे। गीता भारती पब्लिक स्कूल के बच्चो को ऋषि दयानन्द की झांकी प्रस्तुत करने पर समाज के प्रधान श्री पी एन सरीन ने वैदिक साहित्य भेंट किया।

आर्य समाज बोट क्लब

नई दिल्ली, ६ नवम्बर आर्यसमाज बोट क्लब के तत्वावधान में आज युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाणोत्सव बोट क्लब मैदान में आज अत्यन्त उत्साह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ पं० प्रणवप्रकाश शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ। श्री शास्त्री ने अपने प्रवचन में कहा कि ससार का उपकार करना ऋषि के जीवन का लक्ष्य था अत दयानन्द के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि हम जीवन में अच्छे विचार व कर्मों द्वारा अर्थात आर्यत्व लाकर स्वामी जी के बताये मार्ग पर चलें।

दयानन्द माडल पब्लिक स्कूल विवेक विहार के प्रबन्धक श्री शिवकुमार ओझा ने अध्यक्षीय भाषण में वेद की शिक्षानुसार आचरण पर बल दिया। समारोह में वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द व विभिन्न समाजों के अनेक महानुभावों के अतिरिक्त भारत सरकार के मन्त्रालयों में सरकारी कर्मचारी भारी संख्या में उपस्थित थे। श्रीमती कान्ता सिक्का प्रधाना वैदिक सत्संग समिति की ओर से आधे मूल्य पर वैदिक साहित्य दिया गया।

वेद कक्षा ३० नवम्बर से शुरू

नई दिल्ली वेद संस्थान, सी-२२ राजौरी गार्डन, में ३० नवम्बर से प्रतिदिन वेद कक्षा आरम्भ हो रही है। कक्षा सप्ताह में प्रतिदिन सोम से शुक्रवार तक लगती रहेगी। इच्छुक श्रद्धालुओं को वेदों के साथ-२ संस्कृत का भी ज्ञान कराया जायेगा। जो प्रतिदिन कक्षा में नहीं आ सकते हैं, उन्हें शनिवार को पांच कालांशों में वेद पढ़ाया जायेगा। इच्छुक सज्जन २८ नवम्बर ९२ तक संस्थान में पञ्जीकरण करा लें।

श्री सम्पादक जी गुरुकुल पत्रिका
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ०प्र०)

मुद्रित द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा ... परिवाग, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन-३१०१५० ... (एल १०२४/९–०११

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १६ अंक ६-७ रविवार, २२, २९ नवम्बर १९९२ विक्रमी सम्वत २०४९ दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्वत १९७२९४९०९३

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक— २५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश में ५० पौण्ड १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

तृतीय भाषा सम्मेलन—

भारतीय भाषायें राष्ट्रीय एकता की ताकत बनें

पटना, १२ नवम्बर। "राष्ट्रद्रोही शक्तियो द्वारा भाषा के नाम पर विघटन पैदा करने के प्रयास किये जा रहे हैं। अत केन्द्र एव राज्य सरकारो को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि सभी भारतीय भाषायें जो परस्पर बहनो की तरह हैं और जिनका उद्गम सस्कृत है, वे राष्ट्र मे एकता स्थापित करने की ताकत बने। ये उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने आज पटना मे आयोजित तृतीय भारतीय भाषा सम्मेलन मे व्यक्त किये। सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे यह आयोजन भारतीय नृत्य भवन मे सम्पन्न हुआ। यह आयोजन बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा किया गया था। श्री वन्देमातरम ने आगे कहा कि आर्य समाज राष्ट्रीय एकता के इस नये दृष्टिकोण के आधार पर भविष्य मे जन-चेतना जागृत करने के लिए लक्ष्यबद्ध होकर काम करेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूज्य प्रधान ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे घोषणा की कि आर्य समाज की यह भाषा यात्रा देश के सभी बड़े-बडे प्रान्तो तक पहुचेगी। सम्भवत चतुर्थ भारतीय भाषा सम्मेलन दक्षिण भारत के तामिलनाडू या बगलौर मे आयोजित किया जायेगा। उल्लेखनीय है कि सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रथम भारतीय भाषा सम्मेलन २१ व २२ दिसम्बर १९९१ को हैदराबाद मे हुआ था जिसका उद्घाटन केन्द्रीय मानव ससाधान मन्त्री श्री अर्जुनसिंह ने किया था। द्वितीय भारतीय भाषा सम्मेलन नई दिल्ली मे कान्स्टीटयूशन क्लब मे ९ मई, १९९२ को सम्पन्न हुआ था जिसका उद्घाटन लोकसभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल ने किया था तथा अध्यक्षता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने की थी।

सम्मेलन का शुभारम्भ आर्य कन्या विद्यालय की छात्राओ द्वारा प्रस्तुत स्वागत गान से हुआ। बिहार सरकार के राजस्व मन्त्री श्री दव नारायण यादव ने द्वीप प्रज्जवलित करके सम्मेलन का विधिवत् उदघाटन किया।

इस सम्मेलन मे तमिलनाडू आ० प्रदेश केरल राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र दिल्ली आदि अनेक राज्यो के भाषायी विद्वानो ने भाग लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री कान्तिकुमार कोरटकर भी इस सम्मेलन मे शामिल हुये।

इस भारतीय भाषा सम्मेलन को तमिलनाडू के विद्वान प्रो० पी० के० बालसुब्रह्मण्यम् नालन्दा खुला विश्व विद्यालय के उपकुलपति डा० कुमार विकल तथा पटना उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति (जस्टिस) विनोदकुमार राय ने भी सम्बोधित किया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की न्याय सभा के सयोजक श्री विमल वधावन एडवोकेट ने सम्मेलन मे उपस्थित विद्वानो के समक्ष ६ प्रस्ताव विचारार्थ पढकर सुनाये। सम्मेलन के अन्त मे उपस्थित प्रतिनिधियो ने हाथ उठाकर एकमत से अपना समर्थन व्यक्त किया।

सम्मेलन मे स्वीकृत प्रस्तावो मे यह भी माग की गयी है कि नागरी लिपि के माध्यम से सभी भारतीय भाषाओ के परस्पर एकीकरण करने का प्रबल आन्दोलन किया जाये।

इस सफल सम्मेलन का कुशल सचालन आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के मन्त्री प्रो० योगेन्द्र नारायण ने किया।

आर्य युवा महासम्मेलन

स्कूली छात्र-छात्राओ के लिए प्रतियोगिताएं

नई दिल्ली। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे राजधानी मे आर्य युवा महासम्मेलन आयोजित किया गया है। इस सम्मेलन के अन्तर्गत चल रही विभिन्न प्रतियोगिताओ मे दिल्ली के स्कूली छात्र व छात्रायें बढ चढ कर भाग ले रहे हैं।

३० नवम्बर ९२ को प्रात ११ बजे रत्नदेवी आर्य कन्या सीनियर सैकेण्डरी स्कूल कृष्ण नगर मे बालिकाओ के लिए बालीवाल प्रतियोगिता हो रही है जिसकी सयोजिका हैं प्रिंसिपल श्रीमती महेश्वरी खन्ना। समूह गान प्रतियोगिता ५ दिसम्बर को महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल आर्य समाज राजोरी गार्डन, नई दिल्ली मे प्रात ११ बजे प्रारम्भ होगी जिसमे कक्षा १ से ५ कक्षा ६ से ८ तथा कक्षा ९ से १२ के छात्र क्रमश प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्ग के अन्तर्गत भाग ले सकते हैं, समूह गान मे अधिकतम ११ छात्र-छात्रायें भाग ले सकते है। विद्यालय की प्रिंसिपल श्रीमती नीलम मित्र इस प्रतियोगिता की सयोजिका हैं।

उल्लेखनीय है कि सभी प्रतियोगिताओ के विजेताओ को १३ दिसम्बर ९२ को तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम मे एक भव्य समारोह मे पुरस्कार प्रदान किए जायेंगे।

शोध प्रबन्ध लोकार्पण—

आचार्य सुमन निर्लिप्त भाव से साहित्य साधना में लीन हैं

—डा० गिरिजा व्यास

नई दिल्ली, १८ नवम्बर। कवि सभा दिल्ली एव आचार्य सुमन महोत्सव समिति के सयुक्त तत्वावधान मे आयोजित एक समारोह मे लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार क्षेमचन्द सुमन पर कवि डा० आशा अग्रवाल के शोध प्रबन्ध 'आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन व्यक्तित्व कृतित्व" का आज सूचना व प्रसारण उपमन्त्री सुश्री डा० गिरिजा व्यास ने आज स्पीकर हाल विठठल भाई पटेल भवन नई दिल्ली मे लोकार्पण किया। डा० व्यास कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थी। (शेष पृष्ठ ० पर)

प्रधान सम्पादक—सूर्यदेव सहसम्पादक विमलक न शर्मा

अविद्या विनाशक वेद प्रकाश

—भगवान देव "चैतन्य", एम. ए साहित्यालकार

आज समस्त ससार अशान्त है। इस अशान्ति का सबसे प्रमुख कारण मनुष्य का भोग विलास के पीछे अन्धे होकर दौडना ही है। सासारिक भोग विलासो की परितृप्ति की तलाश मे मानव निरन्तर भटक रहा है। उसकी स्थिति मरुस्थल मे पानी की तलाश मे भटकते हुए मृग जैसी हो गई है—जो अन्तत अपना दम तोड देता है मगर परितृप्त नही हो पाता है। अज्ञानता के कारण मानव गलत स्थानो पर सुख और शान्ति की तलाश कर रहा है। परिणाम स्वरूप वह अनेक प्रकार के क्लेशो मे घिरकर सिर धुन रहा है। महर्षि पातन्जली जी ने अपने योगदर्शन मे इन क्लेशो को इस प्रकार वर्णित किया है —

"अविद्यास्मिता रागद्वेषाभिनिवेशा पच क्लेशा।' (योग २ ३)

अर्थात अविद्या, अस्मिता, राग द्वेष और अभिनिवेश ये पाच क्लेश हैं, जिनमे फसकर व्यक्ति स्वय के जीवन को तहस-नहस करता रहता है। इससे अगले ही सूत्र मे कहा है।

"अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषा प्रसुप्ततनुविच्छिन्नो, दाराणाम।' (योग० २ ४)

अर्थात यह जो बाद के अस्मिता राग, द्वेष और अभिनिवेश चार क्लेश हैं इनका उत्पत्ति स्थान भी अविद्या ही है। इस सम्बन्ध मे महर्षि दयानन्द जी सरस्वती लिखते हैं—(अविद्या योग०) उनमे से अस्मितादि चार क्लशो और मिथ्या भाषणादि दोषो की माता अविद्या है, जो कि मूढ जीवो को अन्धकार मे फसा के जन्ममरणादि दुख सागर मे सदा डुबाती है। परन्तु जब विद्वान और धर्मात्मा उपासको को सत्यविद्या से (अविद्या) विच्छिन्न अर्थात छिन्न-भिन्न होके (प्रसुप्ततनु) नष्ट हो जाती है, तब वे जीव मुक्ति को प्राप्त हो जाते हैं। (ऋ० भू० मुक्तिविषय)

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती की इस सत्य विद्या को जानने के लिए जिससे अविद्या नष्ट होती है हमे आर्य समाज के इस नियमो मे से तीसरे नियम का अवलोकन करना होगा जिसमे उन्होने लिखा है—"वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।' इस नियम मे महर्षि जी ने मुख्य रूप से दो बातो का दिग्दर्शन कराया है। जिनमे से एक तो मनु महाराज जी के उस धर्म का विवेचन करता है जिसके बारे मे उन्होने कहा है—"सुखस्य मूल धर्म' अर्थात व्यक्ति को धर्म के मार्ग पर चलकर ही सुख शान्ति और आनन्द प्राप्त हो सकता है। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने यहा पर आर्यों का परमधर्म वेद के स्वाध्याय और उसके प्रचार को माना है। वेद की शिक्षाओ को ही उन्होने सत्य विद्या की सज्ञा दी है जिससे अविद्या रूपी क्लेश नष्ट हो सकता है। यदि यह अविद्या रूपी क्लेश समाप्त हो गया तो शेष के सभी क्लेश भी स्वत ही ध्वस्त हो जायगे, क्योकि इन सब का स्रोत केवल और केवल मात्र अविद्या ही है। जिस प्रकार प्रकाश के प्रकट होने से अन्धकार दूर हो जाता है, ठीक उसी प्रकार वेद विद्या के प्रकट होने से अविद्या नष्ट हो जाती है। आज के दुखी मानव की सबसे बडी त्रासदी यही है कि वह अन्धकार से अन्धकार को दूर भगाने मे परिश्रम कर रहा है। परिणाम स्वरूप निरन्तर दुखो और कष्टो मे पडकर अपने अमूल्य जीवन को बर्बाद कर रहा है। सासारिक विषय वासनाओ मे डूब डूबकर परितृप्त होने का झूठा प्रयास कर रहा है। असत्य को सत्य और सत्य को असत्य समझ बैठने का यही कुपरिणाम होता है। यह अविद्या अन्धकार वेद प्रकाश द्वारा ही नष्ट किया जा सकता है। वेद स्वय ज्ञान अर्थात विद्या का पर्यायवाची है। इसलिए जहा वेद होगा वहा अविद्या का नाश होना स्वाभाविक है।

आज क्योकि मनुष्य का व्यक्तिगत जीवन असतुलित और मानवीय गुणो से रहित हो गया है इसीलिए परिवार समाज, राष्ट्र और समूचे विश्व मे असतुलन पैदा हो गया है। आज प्रत्येक व्यक्ति केवल और केवल मात्र अपने ही स्वार्थ की पूर्ति करना चाहता है। जीओ और जीने दो के सिद्धान्त से वह कोसो मील दूर हो गया है। इस स्वार्थवृत्ति की पराकाष्ठा यह हुई कि भाषा क्षेत्र और मजहब के नाम पर मानवता का खून गलियो और बाजारो मे बह रहा है। किसी ने कभी कल्पना तक भी नही की होगी कि परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति मानव की बुद्धि कभी इतनी अधिक विकृत हो जायगी कि वह बन्दूको और बमो की भाषा मे ही बात करने लगेगा। चिन्तन और मनन को तिलाञ्जलि देकर आज अपने अन्ध स्वार्थों मे डूबा हुआ व्यक्ति हथियार बन्द होकर आदमखोरी अभियान पर निकल पडा है। स्थिति यही रही तो मानवता के अवशेष तक ढूढने कठिन हो जायगे।

कुछ मुट्ठी भर बुद्धिजीव यदि बचे भी है तो उन्हे भी इस विकट परिस्थिति से सामना करने का कोई मार्ग दिखाई नही दे रहा है। वे भी केवल मात्र अपनी-अपनी आख से इन परिस्थितियो का आकलन कर रहे हैं जब कि इन समस्याओ के अवलोकन और समाधान के लिए किसी ऐसी आख की आवश्यकता है जिस पर किसी भी सम्प्रदाय, मजहब, भाषा, क्षेत्र और जाति का लेंस न लगा हो। अब ऐसी आख कहा से लाई जाए? ऐसा लेंस और ज्योति कहा से प्राप्त की जाए? महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने एक ऐसी ही आख अविद्या मे भटक रहे मनुष्य के समक्ष पुन रखी थी। एक ऐसी ज्योति और प्रकाश से हमारा परिचय कराया था जिसे सदियो से विस्मृत किया जा रहा था। वह प्रकाश ही वेद प्रकाश' है। जिसके समक्ष भाषा, मजहब, जाति सम्प्रदाय और क्षेत्रीयताके काले धब्बे टिक नहीं सकते। ईश्वरीय ज्ञान वेद मनुष्य मात्र के लिए है। वेद प्रकाश हमे किसी जाति या सम्प्रदाय और क्षेत्र विशेष मे नही बाटता है। यह प्रकाश पूरे विश्व भर के लिए एक जैसा है मगर व्यक्तियो ने स्वय अपने लिए अलग अलग खाके बना लिए हैं। अलग अलग मुखौटे पहन लिए हैं। इसलिए जो व्यक्ति उनके खाको मे फिट नही बैठता या जिसका मुखौटा उनके स्वय के मुखौटे से मिलता-जुलता नहीं है, उसके समक्ष आज का मानव बन्दूक और तलवार उठाकर खडा हो जाता है। आज समूचे विश्व के सभी राष्ट्रो की स्थिति यही है। राष्ट्रो मे कुलबुलाते हुए लोगो की यही स्थिति है मगर इसके समाधान के लिए हमे मजहबी और स्वार्थी चश्मे उतारने होगे।

एक सामूहिक आख एक सार्वभौमिक सोच को लेकर चलना होगा तभी हम भयकर कैंसर की तरह समूचे विश्व मे फैलते हुए आतकवाद से छुटकारा पा सकते हैं अन्यथा आतकवाद की यह ज्वाला समस्त मानवीय गुणो को राख मे बदलती चली जाएगी। वह सामूहिक सोच हमे किसी मजहबी किताब मे नही मिलेगी बल्कि वह जीओ और जीने दो का सिद्धात हमे वेद विद्या की शरण मे जाकर ही मिल सकेगा। वेद किसी देश विशेष जाति या सम्प्रदाय विशेष की बात नही करता है बल्कि समस्त मानवता के लिए एक सा उपदेश देता है। केवल और केवलमात्र वेदज्ञान ही सार्वभौमिक ज्ञान है। वही समूची मानवता का धर्म है और समूचे विश्व का सविधान है। वह स्वय परमपिता परमेश्वर का आदेश है स्वय उनके द्वारा निर्दिष्ट मार्ग है। जिस पर चलकर हम सुख, शाति, समृद्धि और एक ऐसी स्थिति तक पहुच सकते हैं जहा भ्रातृभाव के अमर प्रेम मे डूबकर समूची मानवता परितृप्त हो सकेगी। आज का मानव मनुष्य कृत ग्रन्थो की छाया मे प्रेम और सौहार्द ढूढ रहा है। अपने-अपने साम्प्रदायिक ग्रन्थो को ही सवमान्य बता रहा है। अपने-अपने मजहब द्वारा निश्चित किये पहरावे चिन्हो और नियमो आदि को मनवाने पर बल दे रहा है। इसी के लिए कभी धन का तो कभी बल का प्रयोग कर रहा है। अब तो नित नए नए गुरु और नए नए सम्प्रदाय बनने की मानो होड सी लग गई है। प्रत्येक गुट या सम्प्रदाय स्वय को सबसे सच्चा मानता है मगर आश्चर्य की बात यह है कि उस सच्चाई को प्रमाणित करने की केवल उनकी अपनी ही आख और सोच होती है, किसी और की नही। अर्थात अपने मुह मिया मिटठू कहलाने जैसी ही बात है। अवतारो, गुरुओ, पैगम्बरो, मठाधीशो, पोपो पादरियो, मौलवियो और ग्रन्थियो की ओट मे मानो परमात्मा छुप गया है और ऐसी नवनिर्मित पुस्तको और ग्रन्थो की ओट मे वेदप्रकाश छुपा दिया गया है। वास्तव मे वह परमात्मा ही हम सबका बन्धु, भ्राता, सखा, माता-पिता और उपास्य देव है। वही गुरुओ का भी गुरु आदि गुरु है। इसी प्रकार उसका दिया हुआ वेद ज्ञान भी मनुष्य मात्र को एक समान दर्शाया गया धर्म मार्ग है। हम समस्त अपने अमृत पुत्रो और पुत्रियो को उस परम दयालु पिता ने पैदा करके भटकने और दुख कलेश उठाने के लिए लावारिस नही छोड दिया बल्कि वेद ज्ञान के रूप मे प्रत्येक क्षेत्र मे कार्य करने के लिए शिक्षा भी दी है। इसे ही हम सवसाक्षी गुरुवाणी की सज्ञा दे सकते हैं। यह वेद ज्ञान सार्वभौमिक, सार्वकालिक, प्राचीनतम और सवमान्य है तथा सभी गुरुओ, ग्रन्थो और उपदेशो का आदि स्रोत है सृष्टि के प्रारम्भ मे दिया गया यह ज्ञान कितना अदभुत पावन और व्यक्ति की चतुर्दिक उन्नति का आधार है यह इसके स्वाध्याय और तदनुसार आचरण करके स्वय सिद्ध किया जा सकता है। हालाकि वेद का मुख्य विषय ईश्वर प्राप्ति है जिससे व्यक्ति के दुख और कलेश नष्ट होकर उसे असीम आनन्द अर्थात पूर्ण सुख की प्राप्ति होनी है। इन्द्रियो द्वारा भोग भोगने से हमे जो सुख मिलता है उसे अल्प सुख कहा जाता है। इसीलिए बार-बार भोगकर भी व्यक्ति उससे तृप्ति प्राप्त नही कर सकता है। भोगो मे आकण्ठ डूबकर

(शेष पृष्ठ ४ पर)

साप्ताहिक ओ३म् आर्य सन्देश

सम्पादकीय

आर्यों का आदि देश

पर्याप्त समय से यह मिथ्या धारणा बनी हुई है कि आर्य लोग बाहर से आये थे उन्होने यहा के मूल निवासियो को पराजित करके इस देश पर अपना अधिकार कर लिया । इस विचार को बढ़ाने मे अ ग्रेजी इतिहासकारो का सबसे बडा हाथ रहा है। उनका उद्देश्य वास्तव मे यहा के निवासियो में फूट डालना रहा है और यही कारण रहा है कि कोल द्रविड भील और सथाल आदि लोग देश की मूल धारा से नही जुड पाये । दिल्ली के स्कूलो मे और भारत के स्कूलो मे भी लगभग यही बात पढ़ाई जाती है कि जब पहले पहल आर्यों ने भारत मे पदार्पण किया तो उन्हें भूमि के लिए उन लोगो से युद्ध करना पडा जो लोग यहा पहले से रह रहे थे ।

वास्तविकता यह है कि भारत आर्यो का आदि देश है। आर्य भारत मे कहीं बाहर से नही आये, वे यहीं के मूल निवासी हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस भ्रात धारणा के विरुद्ध यह घोषणा की थी – किसी सस्कृत ग्रन्थ अथवा इतिहास मे नही लिखा कि आय लोग ईरान से आये और यहा के जगलियो से लड कर, जय पाके उन्हें निकाल कर इस देश के राजा हुए। पुन विदेशियो का लिखा मान्य कैसे हो सकता है।

यही बात एक पाश्चात्य विद्वान म्यूर ने भी कही है—यह निश्चित है कि किसी भी सस्कृत ग्रन्थ में चाहे वह कितना ही पुराना क्यो न हो, आर्यों के विदेश मूलक होने का उल्लेख नहीं मिलता है। ऋग्वेद मे जिन दास, दस्यु एव असुर जैसे शब्दो का उल्लेख है, वे अनार्य मूलक अर्थात आदिम जातियो के लिए प्रयुक्त किए गए हो इस प्रकार का भी कोई प्रमाण या सकेत नहीं मिलता है।

सुप्रसिद्ध इतिहासकार एलफिन्सटन ने भी यही बात कही है—न मनुस्मृति में,न वेदो मे और न मनुस्मृति से प्राचीन किसी अन्य ग्रन्थ मे आर्यों के भारत से बाहर अन्य किसी देश मे रहने का उल्लेख है। आर्य लोग भारत के बाहर से आये, यह बात कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इन्डिया मे पहली बार कही गयी है और इस बात का प्रचार करने के लिए बनारस और लाहौर केन्द्र बनाए गए थे। सही बात तो यह है कि पाश्चात्य विद्वान भारतियो का भारतीयत्व समाप्त करना चाहते थे और वे चाहते थे कि भारतवर्ष से वैदिक सस्कृति मिट जाये और वहा पर ईसाईयत का प्रचार हो। लार्ड मैकाले ने एक यूरोपियन विद्वान प्रो० मेक्समूलर को वेद के अनुसधान और अनुवाद कार्य मे इसलिए लगाया था कि वह इसकी मान्यताओ को ऐसा बना दे कि लोग इससे घृणा करने लगे और भारतीय भी इसके प्रति अपनी आस्था न रखें। कुछ भारतीय विद्वानो ने भी यह माना है कि आर्य लोग भारत के बाहर से आये। बाल गगाधर तिलक की यह मान्यता है कि आर्य उत्तरी ध्रुव से आये थे और बाद मे यहा आकर बस गये। उन्होने अपनी पुस्तक मे लिखा है कि आर्य लोग सोमरस का पान करते थे और सोमरस उत्तरी ध्रुव म रात्रि के समय निकाला जाता था। सच्चाई यह है कि सोमलता तो हिमालय के एक भाग मु जवान पर्वत पर होती है। ऐसा प्रतीत होता है कि वे भारत के उत्तर मे हिमालय पर्वत जो बहुत ऊचा है, उसको ही उत्तरी ध्रुव मानते होगे। एक बात अच्छी है कि तिलक महोदय ने यह स्पष्ट कह दिया कि हमने मूल वेद नही पढे। हमने तो साहिबो का किया हुआ अनुवाद पढा है। सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान स्वामी विद्यानन्द सरस्वती पर्याप्त समय से इस विषय के अनुसधान, विश्लेषण एव अनुशीलन मे लगे हुए हैं। इस विषय पर उनकी आर्यों का आदि देश एक छोटी सी पुस्तिका सन् १९८६ मे प्रकाशित हुई थी। यह पुस्तका भारत की कई अन्य भाषाओ मे भी प्रकाशित हो चुकी है। इसके साथ ही एक बडा ग्रन्थ इसी नाम से अ ग्रेजी और हिन्दी दोनो भाषाओं में प्रकाशित हो चुका है। इस विषय में उन्होने निरन्तर केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारों से भी बातचीत की है। तत्कालीन शिक्षा मन्त्री श्री प्रताप चन्द्र और श्री कृष्ण चन्द्र पन्त उनकी बातो से बहुत प्रभावित भी हुए थे। वर्तमान प्रधानमन्त्री जब मानव विकास ससाधान विकास मत्री थे, उनसे भी इस विषय पर बातचीत होती रही है। डा० बलराम जाखड ने इस विषय मे गहरी रुचि ली। पिछले दिनो दो प्रान्तीय सरकारो ने तो अपने विद्यालयो मे इस विषय को पाठ्य पुस्तको मे सम्मिलित भी कर लिया है।

कोई भा विद्वान व्यक्ति, जब किसी विषय के बारे मे सोचता है तो उसकी अवधारणा अन्तिम नही हुआ करती। स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने भी इस सूक्ष्म ग्राहणी प्रतिमा का परिचय दिया है। इस वर्ष महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के अवसर पर रामलीला मैदान से अपने उदघाटन भाषण मे इसी विषय का प्रतिपादन करते हुए उन्होने उपस्थित जनता से एक प्रश्न किया—क्या कोई व्यक्ति जबरदस्ती किसी के घर मे घुसकर यह कहने का अधिकार रखता है कि यह मेरा घर है, मैं इस घर में रहूगा और स्वाधीनता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। उन्होने बताया कि बाल गगाधर तिलक ने यह नारा दिया था कि स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। यदि भारत आर्यों का मूल देश नही है और वह उत्तरी ध्रुव से यहा आकर बसे हैं अथवा वे ईरान से यहा आये हैं तो बाल गगाधर तिलक इस प्रकार का नारा देने का अधिकार नही रखते। ऐसा नारा तो महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसा ही क्रान्तदर्शी पुरुष दे सकता है, जिसने सत्यार्थप्रकाश मे लिखा था—भारत आर्यों का मूल देश है, वे यहा किसी अन्य देशो से आकर नही बसे हैं। कहीं न कही तिलक के मन मे यह भावना अवश्य रही होगी कि भारत आर्यों का आदि देश है पर वे विदेशी विद्वानो से प्रभावित होकर गलती से लिख गये कि आर्यों का जन्म उत्तरी ध्रुव मे हुआ था।

यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर निरन्तर विचार किया जाना चाहिए और भ्रान्त धारणा को समाप्त करने के लिए सभी आर्यों को एकजुट होकर प्रयत्न करना चाहिए तथा केन्द्र सरकार तथा प्रान्तीय सरकारो को बाध्य कर दिया जाना चाहिए कि वे इतिहास की पुस्तको से इस असगत पाठ को निकाल कर शुद्ध विचारधारा का प्रचार प्रसार करने मे सहयोग दें। —डा० धर्मपाल

लेखकों से निवेदन

—सामयिक लेख, त्यौहारो व पर्वों से सम्बन्धित रचनाए कृपया अ क प्रकाशन से एक मास पूर्व भिजवायें।

- आर्य समाजो, आर्य शिक्षण सस्थाओ आदि के उत्सव व समारोह के कार्य क्रमो के समाचार आयोजन के पश्चात यथाशीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करायें।

सभी रचनाए अथवा प्रकाशनार्थ सामग्री कागज के एक ओर साफ-साफ लिखी अथवा डबल स्पेस मे टाइप की हुई होनी चाहिए।

—पता बदलने अथवा नवीकरण शुल्क भेजते समय ग्राहक सख्या का उल्लेख करते हुए पिन कोड नम्बर भी अवश्य लिखे।

—आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क २५ रुपये तथा आजीवन शुल्क २५० रुपये है। आजीवन ग्राहक बनने वालो को ५० रुपये मूल्य का वैदिक साहित्य अथवा आर्य सन्देश के पुराने विशेषाक नि शुल्क उपहार स्वरूप दिए जायेंगे। स्टाक सीमित है।

—आर्य सन्देश प्रत्येक शुक्रवार को डाक से प्रेषित किया जाता है। १५ दिन तक भी अ क न मिलने पर दूसरी प्रति के लिये पत्र अवश्य लिखें।

आर्य सन्देश के लेखको के कथनो या मतो से सहमत होना आवश्यक नही है।

—पाठको के सुझाव व प्रतिक्रिया आमन्त्रित हैं।

कृपया सभी पत्र-व्यवहार व ग्राहक शुल्क दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली के नाम भेज।

सम्पादक

कश्मीर घाटी के हालात

'अलिफ' से आतंकवाद, 'बे' से बन्दूक, 'ते' से तोड़फोड़

राजीव सक्सेना, निशीथ जोशी

श्रीनगर १३ नवम्बर। कश्मीर घाटी मे नन्हे-मुन्ने पूरी तरह स्कूलो से अलग हो चुके हैं। उनकी दुनिया उनके घर और उसके इद गिद की गलियो तक सिमटकर रह गयी है। इन्ही गलियो मे वे 'अलिफ से आतकवाद, बे से बन्दूक 'ते' से तोड फोड और पे' से पाकिस्तान का सबक सीख रहे हैं।

तालीम की इस तबाही से अभिभावक परेशान है, लेकिन उनके परेशान होने से घाटी के वे स्कूल/कालेज दोबारा चालू नहीं हो सकते, जो नेस्तनाबूत हो चुके हैं। घाटी मे पिछले तीन वर्षों मे तीन सौ से भी ज्यादा शिक्षण सस्थाओ को जगजुओ ने आग के हवाले किया है। इनमे प्राईमरी स्कूलो से लेकर डिग्री कालेज तक शामिल है।

घाटी मे जो इक्का दुक्का स्कूल चल भी रहे हैं, तो वहा जगजुओ के अपने नियम-कायदे लागू हैं। उनके द्वारा लगायी गयी पाबदिया हैं। मसनन, छात्रो के लिए हिन्दी लिखने पढ़ने पर सख्त पाबदी है। वे अगर अपनी किसी सहपाठी छात्रा के साथ घमते नजर आये, तो सारी जिन्दगी उनके मा-बाप की निगाहो मे उनकी सूरत ही 'घूमती' रह जाएगी। इसी प्रकार छात्राओ के लिए जरूरी है कि वे बुर्का पहनें।

इन स्कूलो के अध्यापको ने भी समझ लिया है कि उन्हें क्या करना है? उन्हे बहुत पहले ही बताया जा चुका है कि स्कूलो मे अब 'जन-गण मन नही चलेगा। प्रात कालीन प्रार्थना भी जरूरी नही। अगर आप घाटी के किसी स्कूल मे अध्यापक हैं और ये बातें आपको बकवास नजर आती है तो इसका मतलब होगा कि आपको अपनी जिन्दगी की परवाह नही इसके बावजूद अगर आप सही सलामत बच जाए, तो सिर्फ एक बार स्कूली बच्चो को इकट्ठा करके गाइये 'सारे जहा से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा।'

कुछ समय पूर्व अनन्तनाग जिले के एक प्राध्यापक ने ऐसी ही 'भूल' की थी। इस 'भूल' का उन्हें जो परिणाम भुगतना पडा, वह आज घाटी के हर अध्यापक के लिए सबक बन गया है। उनके घर मे घुसकर जगजू उनकी पत्नी को उठा ले गये। पति की भूल की सजा पत्नी के शरीर के आरा मशीन से टुकडे करके दी गयी।

घाटी के छात्रो का रुझान शिक्षा की ओर से मोडकर उनके हाथो मे बदूक पकडाने की योजना के तहत ही जगजू सगठनो ने शिक्षण सस्थाओ को निशाना बनाया। इस क्रम मे सबसे पहले श्रीनगर स्थित देवकी आर्या पुत्री पाठशाला को आग के हवाले किया गया।

इसके बाद निशाना बनी घाटी की सबसे बडी शिक्षण सस्था विश्व भारती। प्राइमरी से लेकर स्नातकोत्तर कक्षाओ वाली इस सस्था की सुरक्षा के लिए सी आर पी की एक टुकडी तैनात की गयी थी फिर एक दिन अचानक वहा से सी आर पी को हटाकर जम्मू कश्मीर आम्र्ड पुलिस तैनात कर दी गयी। इसके अगले ही दिन जगजुओ के एक बडे दल ने धावा बोलकर इस शिक्षण सस्था को जलाकर राख कर दिया।

यही हाल तीन शाखाओ वाले डी० ए० वी० स्कूल और श्रीनगर के ३३ अन्य स्कूलो का हुआ जिनमे अधिकाश सरकारी थे। इन स्कूलो मे कार्यरत लोग भी घाटी से पलायन कर चुके हैं। जम्मू मे विस्थापितो के शिविरो मे रह रहे इन लोगो का कहना है हमारे स्कूलो की इमारतो का बीमा था लेकिन दो वर्षों में भी बीमा कम्पनियो ने क्लेम का रुपया नही दिया। इसी से अन्दाजा लगा सकते हैं कि सरकार इन स्कूलो को दोबारा शुरू कराने मे कितनी दिलचस्पी ले रही है।'

लगभग यही बात कश्मीर विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर भी दोहराते हैं। वे कहते है तमाम शिक्षण सस्थाओ, छात्रो और अभिभावको ने अखबारो के जरिये स्कूल कालेजो को दुबारा चालू करने की अपीलें की हैं, लेकिन उनका कोई असर नही पडा है। वे कहते हैं, खाली दिमाग शैतान का घर होता है। घाटी के अधिकाश छात्रो के पास आज कोई काम नही। ऐसे मे जगजू सगठन उन्हे भडकाकर अगर अपनी फौज मे शामिल कर लेते हैं, तो इसमे लाचार छात्रो का क्या कसूर?'

जगजू सगठन के सदस्यो की बाबत पता लगाइए तो उनमे अधिकाश युवक एसे मिल जाएगे, जो छात्र थे और पढ़ाई को लात मारकर जगजू बन गये। इस हकीकत को जानने के बाद सुरक्षाबलो के कदम स्कूलो कालेजो विश्वविद्यालय और उनके छात्रावास मे पडना लाजिमी बात है।

सुरक्षाबलो ने छात्रो के साथ सख्ती का जो रवैया अख्तियार किया, उससे जगजुओ को एक मौका और मिला-छात्रो को भडकाने का।

घाटी के किसी छात्र से बात कीजिए, वह यही बतायेगा अमुक स्थान पर अमुक छात्र सुरक्षाबल की गोली से 'शहीद हो गया।

कुछ दिनो पूर्व श्रीनगर मे सुरक्षाबलो और जगजुओ के बीच हुई फायरिंग मे दो छात्राओ की मौत और लगभग दस छात्रो के घायल होने की घटना ने छात्रो के दिलो पर बेहद बुरा असर डाला है। इस घटना की बाबत बात करते वक्त कोई नही मानता कि फायरिंग जगजुओ ने भी की थी। नफरत और दर्द के मिले-जुले लहजे में एक छात्र कहता है, 'क्या हम सिर्फ इसलिए गोली खायें कि हमारे कुछ साथी जंगजू बन गये हैं।

इतना कहते-कहते १९ २० साल के इस छात्र का गोरा चेहरा तमतमा कर सुर्ख हो उठता है। उसकी आखो से आसू टपकने लगते हैं। भावावेश मे वह कहता चला जाता है—'आपको मालूम है कि मेरे अब्बू इसी यूनिवर्सिटी मे प्रोफेसर हैं। मेरे छोटे भाई का जगजुओ से सम्पर्क हो गया था। वह गलत रास्ते पर न चल निकले, इसलिए अब्बू ने उसका कश्मीर ही छुडवा दिया। उसे देवबद (सहारनपुर) भेज दिया पढने को। जानते हैं अब्बू ने उसे वहा क्यू भेजा—मुझे क्यो नहीं भेजा? इसलिए क्योकि उन्हे भी उस पर भरोसा नही था, मुझ पर उन्हे भरोसा था, लेकिन सुरक्षाबल के लोग दो बार मेरे साथ भी बदसलूकी कर चुके हैं। यह सिलसिला जारी रहा, तो तय मानिये कि अगली बार इशा अल्लाह आप मिले, तो मेरे हाथो में भी ए० के० ४७ देखेंगे।'

साभार राष्ट्रीय सहारा

अविद्या विनाशक वेद प्रकाश

(पृष्ठ २ का शेष)

भी प्यास ज्यो की त्यो बनी रहती है। यहा तक कि जीवन भी समाप्त हो जाता है मगर भूख फिर भी वैसी की वैसी बनी रहती है। वेद हमे ईश्वर प्राप्ति का सीधा, सच्चा और सरल मार्ग बताता है। ईश्वर की प्राप्त से ही व्यक्ति के समस्त कष्टो का सदा-सदा के लिए अन्त हो जाता है।

वेद मे समाज राष्ट्र, धर्म और राजनीति आदि समस्त विषय पर परमात्मा ने दिशा निर्देश दिए हैं जिन पर चलकर व्यक्ति निश्चित रूप से इस धरा को स्वर्ग बना सकता है। आपसी समझबूझ और प्रेम सौहार्द के वातावरण मे ऐसे समाज का निर्माण कर सकता है जहा बैर वैमनस्य का नामोनिशान तक भी न रहे। इसके लिए सबसे पहली आवश्यकता वैचारिक स्तर को परिपक्व बनाने की है। यदि आज का अपने-अपने दायरो मे बटा, कटा आदमी, केवल अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए आखे बन्द करके दौडता हुआ कुछ क्षण रुक कर अपने परम पिता के इस उपदेश पर मनन और चिन्तन करे तो विश्व शान्ति का एक ऐसा आधार बन सकता है जहा बैर-विरोध स्वत ही ध्वस्त हो जायेंगे। वेद मे निहित ज्ञान इतना उत्कृष्ट और विज्ञान सम्मत तथा सवग्राह्य हो कि उसके समक्ष सभी मनुष्य कृत भ्रान्ति युक्त उपदेश बौने और उथले हो जाते हैं। जिस प्रकार एक छोटी रेखा के बराबर एक लम्बी रेखा खीच दें तो पहले वाली रेखा स्वत ही छोटी हो जाती है, ऐसा ही है ईश्वर कृत वदज्ञान। जिस प्रकार दीपक जलाने से अधकार स्वत ही भाग जाता है, ऐसा है वेद प्रकाश। अविद्यादि क्लेश इस विद्या के समक्ष टिक नहीं सकते। इसमे नीहित उपदेशो की तनिक थोडी सी झलक तो देखें। जीओ और जीने दो का एक अद्भुत सूत्र देखिए—

सङ्गच्छध्व स वदध्व स वो मनांसि जानताम्।
देवा भाग यथापूर्वे स जनाना उपासते॥
(ऋ० १० १९१-२)

अर्थात् हे मनुष्यो! तुम लोग मिलकर चलो अर्थात आपस मे प्रेमपूर्वक बातें करो। तुम्हारे मन सदा मिलकर विचार करें। जैसे प्राचीन काल के विद्वान लोग परस्पर विचार करके, सत्यासत्य का निर्णय करके अपने अपने उपयोग के भाग को प्राप्त करते आए हैं अर्थात प्राचीन काल से विद्वानो की यह प्रथा चली आती है कि मन, वचन और कर्म से मिलकर रहे और प्रेमपूर्वक निर्णय करके अपने-अपने हिस्सो की वस्तुओ का उपभोग करें। १९०/एस ३ सुन्दर नगर (हि प्र)-१७४४०२

अग्निवेश व कैलाश सत्यार्थी को देशद्रोह और अन्तर्राष्ट्रीय साजिश में सहभागिता के आरोप में गिरफ्तार किया जाये

संसद सदस्य वीरेन्द्र सिंह की मांग

मिर्जापुर-मदोही के ससद सदस्य श्री वीरेन्द्र सिंह का कहना है कि अग्निवेश और कैलाश सत्यार्थी का गिरोह देशद्रोही है। यह मुट्ठीभर लोगो का एक प्रभावशाली गिरोह है जो मिथ्या प्रचार, विदेशी दलाली, तोड-फोड और भारतीय कानूनो के दुरुपयोग मे दक्ष है। उन्होने कहा अग्निवेश और कैलाश सत्यार्थी को तुरन्त गिरफ्तार किया जाना चाहिए और दोनो पर देशद्रोह और अन्तर्राष्ट्रीय साजिश मे सहभागिता के मामले की सी० बी० आई० द्वारा जाच कराई जानी चाहिए।

जनसत्ता दैनिक के सम्वाददाता के सर्वेक्षण की रोंगटे खड़े करने वाली रिपोर्ट १८ नवम्बर १९९२ मे प्रकाशित विवरण से साभार।

—सम्पादक

श्री सिंह ने सरकार से जोरदार माग की है कि बन्धुआ मुक्ति की फर्जी धन्धेबाजी, क्षेत्र मे वास्तविक काम न कर विदेशो मे झूठा प्रोपेगण्डा करने की कलकित जालसाजी, फरेब और मक्कारी अन्तर्राष्ट्रीय ईसाई मिशनरी सगठनो से करुणा के नाम पर इस काम के लिए भारी रकम लेकर उससे ऐश करने और झूठे ब्यौरे देने व कागजी सगठन चलाने और मानवाधिकार के नाम पर तथ्यहीन प्रचार करने के सगीन आरोपो के मामले मे अग्निवेश और कैलाश सत्यार्थी पर मुकद्मा चलाया जावे और विदेशी मुद्रा नियमन-अधिनियम के तहत इन्हे दी गई मान्यता तुरन्त रद्द कर इनके पासपोर्ट जब्त किए जावे।

इसी प्रकार भारत के अतिरिक्त महान्यायवादी श्रीदेवेन्द्र द्विवेदीने कहा—कि बाल श्रमिको की मुक्ति क स्वयभू दूत अग्निवेश व कैलाश सत्यार्थी और उनके आठ दस सहयोगियो की आर्थिक दशा मे आश्चर्यजनक सुधार हुआ है। ये लोग लगभग हर महीने वायुयान से विदेश आते-जाते है। भव्य ढग से ठहरते और बरतते हैं। इनके प्रचार तन्त्र के पास प्रचुर धन आया है।

इसी प्रकार के आरोप खमरिया गोपीगज कटरा के सर्वमान्य व्यक्ति सच्चा बावा, नुमरिया के नागेश मिश्र घनश्याम शिवानन्द कोई गुना के शिवानन्द, मुरियावा के राधेश्याम दुबे राधेश्याम मिश्र धनिकवार के रामचन्द,मानापुर के जयप्रकाशसिह फत्तूपुर के पुरुषोत्तम पाडे अमोला के सत्यनारायण, धनीपुर के प्रकाशनाथ, रुद्रनाथ, राकश मिश्र, गिरिजाशकर, करमनपुर के प्रेमशकर, मसुधी के चन्द्रनाथ, कावलगाँव के रामविलास का कहना है कि अग्निवेश कोई विदेशी एजेण्ट दीखता है और इनका गिरोह राष्ट्र द्रोही है।

विशाल धर्म सम्मेलन सम्पन्न

वेद प्रचार मण्डल, दिल्ली देहात की ओर से 'कार्तिक पूर्णिमा का पव गायत्री महायज्ञ एव धर्म सम्मेलन के रूप में मधु विहार मे मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व महानगर पार्षद चौ० मुख्त्यार सिंह ने कहा कि 'वेद' के प्रचार प्रसार से ही भारतीय सस्कृति की रक्षा हो सकती है। चौ० सिंह यजमान भी बने। मुख्य वक्ताओ मे सर्वश्री मुकुन्द राम भट्ट, पीताम्बर दत्त पाठक रायसिह राणा, दयाकृष्ण जोशी, कन्हैयालाल पाल, जी० बी० पाठक, एच० बी० भट्ट, कु० गीता अग्निहोत्री, कुलदीप जैन आदि ने धर्म की मौलिकता और आवश्यकता पर अपने विचार प्रकट किए।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए धर्माचार्य उदय श्रेष्ठ न कहा—हमे धार्मिक अन्ध विश्वासो तथा रूढियों के खिलाफ एकजुट होकर सघर्ष करना होगा नहीं तो धम के ठेकेदार नये-नये पूजनो, यात्राओ, रैलियो के साथ-२ जनता से धर्म के नाम पर अपना कच्छा तक पुजवाने लगेंगे।

कार्यक्रम के सयोजक श्री डी० एस० पवार ने सभी का धन्यवाद किया।

—आर्य समाज पालम गाव नई दिल्ली-४५

आर्य वीर दल ब्रह्मचर्य व्यायाम प्रशिक्षण

जनपद मु० नगर। श्री बालमुकुन्द मैमोरियल जूनियर हाई स्कूल करौदा मे २४ से ३१ अक्तूबर १९९२ तक आर्य वीर दल ब्रह्मचर्य व्यायाम प्रशिक्षण शिक्षण का आयोजन किया गया जिसमे क्षेत्र के लगभग ७० युवको न सघन प्रशिक्षण प्राप्त किया। श्री रामगोपाल आर्य (सचिव) व्या शि सार्वदेशिक आर्य वीर दल श्री समरपाल (व्या शि) एव श्री राजवीर सिंह (शाखा सचालक) आदि शिक्षको ने नवयुवको को प्रशिक्षण दिया। ब्र० रामफल सिंह जी का शक्ति प्रदशन सराहनीय रहा। शिविर समापन समारोह मे एन०डी०एम० बुढाना, तहसीलदार बुढाना थानाध्यक्ष फुगाना जिला परिषद अध्यक्ष श्री विजयमलिक मु० नगर ने आर्य वीरो को प्रमाण-पत्र वितरित किये। आर्य वीर दल जनपद मु० नगर के सचालक श्री ऋषिपाल वर्मा एडवोकेट ने इन सभी अधिकारियों को आसन प्राणायाम की पुस्तकें एव आर्यवीर दल का चिन्ह भेंट किये। डा० शिवकुमार जी न आगामी गर्मियो की छुट्टियो मे १००० (एक हजार नौजवानो का शिविर लगाने की भी घोषणा की।

आर्य समाज कस्तूरबा नगर डिफेंस कालोनी

आर्य समाज कस्तूरबा नगर डिफेंस कालोनी नई दिल्ली का २५ वा वार्षिक उत्सव २६ अक्तूबर से ११ नवम्बर ९२ तक उत्साह पूर्वक मनाया गया। ६-३० बजे तक अथर्ववेद पारायण यज्ञ श्री नेत्रपाल जी के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ।

१ नवम्बर को पूर्णाहुति के पश्चात डा० प्रशान्त वेदालकार जी की अध्यक्षता मे 'विश्व शान्ति की समस्या मे वैदिक दृष्टिकोण विषय पर सम्मेलन हुआ। जिसमें डा० प्रेमचन्द श्रीधर एव महात्मा रामकिशोर जी वैद्य ने वैदिक दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला तथा शान्ति पाठ के पश्चात ऋषि लगर सम्पन्न हुआ।

—आर्यसमाज कस्तूरबा नगर—कर्नल डा ओमप्रकाश वर्मा प्रधान विंग कमान्डर राजेन्द्रपाल मन्त्री एव मनोहरलाल जी मल्होत्रा कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। नव निर्वाचित प्रधान जी को अपनी अन्तरिम सभा बनाने का अधिकार दे दिया गया।

१०० धर्मशिक्षको की आवश्यकता

नई दिल्ली। १०० धर्मशिक्षको की आवश्यकता है इसलिये यदि आपकी जानकारी में ऐसा कोई प्रत्याशी जो एम ए सस्कृत अथवा हिन्दी हो तथा आचार्य एव शिक्षा शास्त्री हो और आय समाज के सिद्धान्तो से ओत प्रोत हो वैदिक धर्म प्रचार की लग्न हो तो उनका आवेदन पत्र हमे भेजें। यदि उन्हे पढाने के योग्य समझा गया तो उन्हें सीधा विद्यालय मे धमशिक्षक के पद पर नियुक्त किया जा सकता है अन्यथा एक वर्ष का प्रशिक्षण देकर विद्यालयो मे नियुक्त करा दिया जायेगा।

उल्लखनीय है कि डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति ने अपने सभी विद्यालयो के धर्मशिक्षा विषय अनिवार्य कर दिया है। हर विद्यालय मे आय समाज की स्थापना कर दी गयी है और यज्ञशाला का निर्माण किया जा रहा है। धर्मशिक्षक सप्ताह में एक दिन सत्सग कराते हैं। यज्ञादि मे अध्यापको व छात्रो का सम्मिलित होना अनिवार्य है। पता—डी ए वी नैतिक शिक्षा सस्थान, आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया

नई दिल्ली। आर्य कन्या गुरुकुल दाधिया का ३१ वा वार्षिकोत्सव ४ से ६ दिसम्बर ९२ को मनाया जा रहा है। पहले यह उत्सव २० से २२ नवम्बर तक होना था।

आचार्य सुमन

(पृष्ठ १ का शेष)

डा० गिरिजा व्यास ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि कालेज के दिनो मे मैंने जब सुमन जी की रचनाये पढी थी तभी से मन मे उनके दर्शन की अभिलाषा रही है। आपको देखकर आज राजा जनक की याद आती है। एक बार भगवान विष्णु ने नारद मुनि को राजा जनक से जब ज्ञान लेने उनके दरबार म भजा तो राजा जनक सुन्दरियो का नृत्य दखने मे मग्न थे। जनक ने नारद जी के हाथ मे तेल से भरा बर्तन देकर कहा कि नृत्य देखते रहो परन्तु यदि तेल गिर गया तो तुम्हारी खैर नही। अन्त मे जनक ने नारद जी से पूछा कि नृत्य का आनन्द लिया और क्या देखा। नारद जी राजा जनक का भाव समझ गये।

डा० व्यास ने कहा इसी प्रकार आचार्य सुमन जी राजा जनक की भाति निर्लिप्त भाव से तप द्वारा साहित्य साधना मे आज लीन हैं। आज यदि २०वी सदी मे किसी ने राजा जनक को जीया है तो वे सुमन जी है।

डा० गिरिजा व्यास ने आगे कहा कि आज हम गाधीवाद की बात करते है। गाधी जी के प्रासगिकता के बारे मे यदि कोई प्रश्न पूछना है तो सुमन जी से पूछा जा सकता है और सुमन जी ही गाधीवाद का मूल मन्त्र आज जन-जन तक पहुचा सकते है। डा० व्यास ने प्रभु से प्रार्थना की कि सुमन जी की १२५ वर्ष की आयु हो वे साहित्य साधना मे लीन रहे। मन्त्री महोदया ने चरण स्पर्श कर आचार्य सुमन से आशीर्वाद लिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि सुमन जी के पास साहित्य का अथाह भडार है और उन्होने अनेक अनमोल मोती व्यवस्थित रूप से सम्भाल कर रखे हैं। इस शोध प्रबन्ध के लिए आचार्य जी ने डा० आशा अग्रवाल को अत्यन्त उपयोगी सामग्री उपलब्ध करायी है, वे बधाई के पात्र हैं। लेखिका को भी उन्होने साधुवाद दिया।

डा० हरदयाल ने कहा कि आचार्य सुमन जी ने सिद्धान्तो से कभी समझौता नही किया। डा० प्रमिला शर्मा ने भी शोध ग्रन्थ के बारे मे विस्तृत विवरण दिया।

साहिबाबाद के डा० गणेशदत्त शर्मा ने कहा कि सुमन जी मे कष्ट सहने की गजब की शक्ति है। जब भी हिन्दी के गौरव पर आच आयी तो सुमन जी सबसे आगे रहे। राष्ट्रभाषा व स्वदेश प्रेम की धारायें जहा मिलती हैं वे सुमन जी हैं और सुमन जी शिखर पर पहुच कर भी जमीन पर चलने वालो को नही भूलते हैं। उन्होने आगे कहा कि ब्रिटिश सरकार भी सुमन जी की लेखनी को न झुका सकी। डा० मनोहरलाल ने कहा कि सुमन जी अद्‌भुत स्मरण शक्ति के व्यक्ति हैं।

मैं जो कुछ हूँ मात्र आर्यसमाज के कारण हूं

—आचार्य सुमन

आचार्य क्षेमचन्द सुमन ने इस कार्यक्रम मे विभिन्न वक्ताओ द्वारा व्यक्त उद्‌गार के लिए आभार प्रकट करते हुये कहा कि इसमे शताश भी ठीक नही है। आज मैं जो कुछ भी हू वह मात्र गुरुकुल ज्वालापुर व आर्य समाज के कारण हू। सुमन जी ने बताया कि बचपन मे गुरुकुल मे दाखिले के लिए जब मैंने दो दिन तक खाना नही खाया तो मेरी माता जी ने अपने जेवर मेरे पिता जी देते हुये कहा कि इस बच्चे को दाखिल कर आओ वरना ये प्राण त्याग देगा। गुरुकुल मे आचार्य जी ने परीक्षा मे मुझे ठीक पाकर प्रवेश द दिया और पिता जी से कहा कि जाओ आज से यह बच्चा हमारा हो गया और इसकी फीस की चिन्ता न करो और जेवर वापस ले जाओ। बाद मे पैसे हो, चाहो तो देना अन्यथा चिन्ता न करना।

आचार्य जी ने आगे बताया कि गुरुकुलीय जीवन ने मुझमे स्वभाषा, स्वदेश, स्वसस्कृति के प्रति ऐसे सस्कार भर दिये कि जिन्दगी मे मैंने कभी सिद्धान्तो की खातिर समझौता नही किया और जगह-जगह भटकता रहा। उल्लेखनीय है कि सुमन जी ने तीस वर्ष तक साहित्य अकादमी की जो अद्वितीय सेवा की है वह चिर स्मरणीय रहेगी।

सुमन जी ने कहा कि आज जो कुछ भी मेरे पास है वह साहित्य, समाज व सस्कृति का है। यदि कोई नुक्ताचीनी भी करता है तो भी मैं उसे प्रणाम करते हुये कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर रहना चाहता हू और हाथ फैलाने की बजाये परिश्रम मे विश्वास करता हू।

समारोह मे दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० विजेन्द्र स्नातक ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि सुमन जी ने निस्वार्थ भाव से वह काम किया है जो सस्थायें मिलकर भी नही कर सकती हैं। डा० स्नातक ने सुमन जी को परिश्रम का देवता बताते हुये कहा कि यदि ब्रह्मा के पास जाकर कोई व्यक्ति परिश्रम का वरदान मागेगा तो वह कहेगे कि परिश्रम तो सारा सुमन जी ले गये। उन्होने बताया कि सुमन जी के घर मे जब रोटी तक न थी तो भी इन्होने स्वभिमान की रक्षा की।

डा० स्नातक ने बताया कि मैं देश की अनेक अकादमियो व सस्थाओ से जुडा हू। ८०० से अधिक रेडियो वार्तायें भी हुई। पर मेरा सकलन का स्वभाव नही है, जब कि सुमन जी के पास बहुमूल्य सकलित सूचनाओ का अम्बार है। उन्होने बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी सुमन पर लीक से हटकर शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने के लिए डा० आशा अग्रवाल को बधाई दी।

कार्यक्रम का सचालन डा० इन्द्र सेगर ने किया। स्वागताध्यक्ष श्री विद्यासागर शर्मा ने भी विचार रखे। मञ्च सचिव श्री गुलाबसिह राघव द्वारा शान्ति पाठ से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आगामी कार्यक्रम

आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री का अभिनन्दन

वैदिक धर्म एव आर्य समाज के प्रति की गयी बहुमूल्य सेवाओ के लिए त्यागी, तपस्वी, वेदो के प्रकाण्ड पडित, कुशल वक्ता व अद्‌भुत लेखक आचार्य श्री सत्यप्रिय का आर्य जगत की ओर से २८ फरवरी ९३ को भव्य अभिनन्दन किया जा रहा है। दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार के प्राचार्य प० सत्यप्रिय का अभिनन्दन कालेज परिसर मे एक भव्य समारोह मे सम्पन्न होगा और उन्हे एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया जाएगा।

आर्य समाज शान्ति नगर

आर्य समाज शान्ति नगर, सोनीपत म २३ से २८ नवम्बर तक यजुर्वेद पारायण यज्ञोत्सव धूमधाम से मनाया जा रहा है।

योग साधना शिविर

नई दिल्ली। आर्य समाज कीर्ति नगर नई दिल्ली-१५ मे २३ से २९ नवम्बर ९२ तक स्वामी दिव्यानन्द जी के सरक्षण मे योग साधना शिविर आयोजित किया जा रहा है। प्रतिदिन प्रात ६ से ७ ३० तक योग साधना, आसन व प्राणायाम, साय ६ से ६ ४५ तक योग साधना तथा रात्रि ८ से ९ तक प्रवचन होंगे। शिविर मे भाग लेने वाले व्यक्ति बिस्तर साथ लायें।

वीर पर्व सम्पन्न

आर्य वीर दल आर्यमगढ उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित 'वीर पर्व समारोह मुख्य अतिथि आचार्य ब्र० नरेन्द्रलाल आर्य (सहसचालक पूर्वी उत्तर प्रदेश आर्य वीर दल) की उपस्थिति में विगत मास सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पूर्वी उत्तर प्रदेश के बौद्धिकाध्यक्ष श्री रामाज्ञा 'आर्य पुत्र' देवरिया व मण्डल सचालक आर्यमगढ़ डा० राजेन्द्र प्रसाद आर्य उपस्थित थे।

वीर पर्व की अध्यक्षता महात्मा अक्षयमुनि जी (सरक्षक आर्य वीर दल आर्यमगढ़ व अध्यक्ष आर्य विद्या सभा) ने की तथा सचालन राजीव कुमार आर्य ने किया।

डा० रविकान्त जी दुर्घटना ग्रस्त

आर्य समाजी परिवार के युवा एव होनहार युवक डा रविका त जा का दिनाक १३ ११ ६२ को अपनी क्लीनिक से घर लौटत समय एक ट्रक से एक्सीडेण्ट हो गया है। डा० रविका त दो पहिया स्कूटर पर सवार थे। उन्हे गम्भीर रूप से घायल अवस्था मे गुरु तेगबहादुर अस्पताल म भर्ती किया गया था। उन्हें सिर पर तथा क घ और बाहा मे चोट आई है। इस समय वह श्यामल न नर्सिग होम दरियागज मे उपचार कराकर आयसमाज दीवानहाल मे हैं।

सावदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की विगत २ ३ वर्षों से वह नि शुल्क चिकित्सा कर रहे हैं। गरीब परिवार क रोगियो को वह नि शुल्क चिकित्सा परामश देते हैं।

डाक्टर साहब दिल्ली आ०प्रति नधि सभा के प्रधान श्री सूयदेव जी के ज्येष्ठ सुपुत्र हैं। पिछले महीने ही उनकी शादी हुई है। आय स देश परिवार उनक शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्राथना करता है। —डा० धमपाल

प्रभात आश्रम की प्रभा

गुरुकुल प्रभात आश्रम के स्नातक श्री राजेन्द्र कुमार तथा श्री हिमाश ने मेरठ विश्वविद्यालय द्वारा दिनाक २६ १० ६२ को आयोजित अतर्विश्व विद्यालयीन सस्कृत वाद विवाद भाषण प्रतियोगिता क विषय राजन्ते तावदन्यानि पुराणानि सता गण। याव नदृश्यते साक्षाच्छीमद्भागवत परम। पर अपने पक्ष की प्रबल पुष्टि के पश्चात क्रमश सवप्रथम तथा द्वितीय थान प्राप्त कर स्वण पदक एव रजत पदक सहित चल वजयन्ती उपहार प्र प्त किये। गुरुकुल प्रभात आश्रम स्नातक मण्डल अपने नातक बधुओ की विजय से गव अनुभव करते हुए हष प्रकट करता है और अपने स्नातक ब धुआ के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। जिन्होने आय जगत सहित गुरुकुल का गौरव बढाया है।

स्नातक मण्डल
गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला मेरठ ५ ५

प्रायसन्देश–दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रो , नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted a N D P S O on 26-27 11 992 Licence to post w th ut prepayment Licence No U (C) 139/९२
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० एल ११०२४ ९२ पूव भगतान कि बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू (सी०) १३९ ९२

शराबबन्दी के लिए महिलाये भी मैदान में

८ नवम्बर। आय प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान मे आयोजित शराबबन्दी परिषद द्वारा आयोजित महिला सम्मेलन म शराबबन्दी के लिए कटिबद्ध महिलाओ ने अपने सकल्प दोहराये। सम्मेलन की सचालिका श्रीमती प्रभात शोभा पण्डित ने कहा शराब का सबसे बुरा प्रभाव भूख अभाव और उत्पीडन के रूप मे महिलाओ को झेलना पडता है इसलिए इस अभिशाप को मिटाने के लिए अब वे पुरुषो से आगे हैं। मणिपुर आन्ध्रप्रदेश उत्तराखण्ड आदि प्रदेशो मे वे स्वय सघष कर रही हैं।

देश के विभिन्न क्षत्रो मे आई अनेको महिला नेताओ ने शराबखोरी का घोर विरोध किया। परिषद की पूर्वाध्यक्ष श्रीमती सुशीला नयर ने कहा बोडोलैण्ड पजाब आदि का उग्रवाद शराब की देन है।

उत्तराखण्ड से राजाभटट हरयाणा से नसीब साहू दिल्ली से निमला देशपाण्ड जम्मू से ललिता नागर बिहार मे कलावता देवी कानपुर से मानवती आर्या नरेला से ब्रह्मचारिणी जबाला डा शकुन्तला सभी महिलाओ ने शराब के बढते प्रभाव पर रोष प्रकट किया और शराबबन्दी आन्दोलन म कूदन का आह्वान किया। यह सभी महिलायें अपने अपने क्षत्र मे शराबबन्दी आन्दोलन का नेतृत्व कर रही है।

गुमशुदा की तलाश



देवदत्त वदिक पुत्र स्व० श्री रामप्रसाद जी वदिक निवासी ८४० महावीर नगर कोटा ५ (राज० आयु १५ १/२ वष लम्बाई ५ फुट ४ इच रग गोरा बाल काले तथा चेहरा गोल है। सामने ललाट पर पुरानी चोट का आडा निशान है इकहरा बदन है दिनाक ४ ९ ९२ से कोटा (राज०) से लापता है अथवा किसी ने गायब कर दिया है। वह आय समाज महर्षि दयानन्द नगर तलवण्डी कोटा का सक्रिय आय वीर है तथा वदिक सस्कारो म ओतप्रोत है। सभी आय बन्धुओ से निवेदन है कि यदि किसी को वह मिले तो अविलम्ब उक्त पते पर सूचित करने की कृपा कर। धन्यवाद!

सम्पक हेतु पता —

ओमदत्त वदिक ८४० महावीर नगर प्रथम कोटा राजस्थान
फोन २२४४८

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिकप्रेस पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली ११०००२ मे मुदित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५ हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१ फोन ३१०१५० केलिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (एल १०२४/१-०९२

साप्ताहिक ओ३म कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १६, अंक ८ रविवार, ६ दिमम्बर १९९२ विक्रमी सम्बत् २०४९ दयानन्दाब्द १६८ सृष्टि सम्बत १९७२९४९०९३

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक— २५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश म ५० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

पं० राजगुरु शर्मा का निधन एक राष्ट्रीय क्षति

नई दिल्ली २९ नवम्बर। सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान महू निवास प० राजगुरु शर्मा का २८ नवम्बर को दिल्ली मे देहावसान हो गया। वे ७० वर्ष के थे। पडित जी का पार्थिव शरीर विमान द्वारा २९ ११-९२ को उनके पैतृक स्थानी इन्दौर मे ले जाया गया यहा पूर्ण वैदिक रीति से अत्येष्टि सस्कार किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत एव विभिन्न सस्थाओ के नेताओ व प्रतिनिधियो ने पडित जी के अन्तिम दर्शन कर उन्हें भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

उदयपुर से लौटकर आये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने सभा कार्यालय में आयोजित एक शोक सभा मे प० राजगुरु जी के निधन पर गहरा दु ख व्यक्त किया। स्वामी जी ने कहा कि पडितजी अनेक वर्षों तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी एव मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी रह चुके हैं।

स्वामी जी ने आगे कहा कि पडित राजगुरु जी एक विलक्षण वक्ता व प्रख्यात वैदिक विद्वान थे तथा वे वृहद वैदिक यज्ञ कराने मे दक्ष थे। प० जी सारी आयु देश विदेश मे महर्षि दयानन्द की विचार धारा एव आर्य समाज का प्रचार व प्रसार करते रहे।

प० राजगुरु जी के निधन से न केवल आर्य समाज अपितु राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति हुई है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एव परिवार जनो को दु ख सहने की शक्ति प्रदान करे।

श्रीमती लीलावन्ती गुलाटी का दुःखद निधन

नई दिल्ली, २८ नवम्बर। आय केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान दानवीर आर्य श्रेष्ठी महाशय धर्मपाल की धर्मपत्नी श्रीमती लीलावन्ती गुलाटी का २७ नवम्बर को रात्रि लगभग ११-३० बजे सहारनपुर मे निधन हो गया। वे ६७ वर्ष की थीं। वे महाशय धर्मपाल के साथ गुरुकुल कागडी की एक बैठक के बाद वापसी मे अपनी बहिन को सहारनपुर मे मिलने आयी थीं। अकस्मात उन्हे तकलीफ हुई और ऊची ध्वनि मे ओम् नाम स्मरण करते हुये उन्होने नश्वर शरीर त्यागा।

२८ नवम्बर को आर्य समाज हनुमान रोड के धर्माचार्य डा० कणदेव शास्त्री के पुरोहित्य मे पचकु इया रोड शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से श्रीमती गुलाटी का दाह सस्कार किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, मन्त्री श्री वेदव्रत शर्मा वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द, प्रि० चन्द्रदेव, श्री रतन लाल सहदेव, श्री प्रियतमदास रसवन्त, डा० शिवकुमार शास्त्री, श्री विमल कान्त शर्मा एव विभिन्न सस्थाओ व आय समाजो के सैकडो प्रतिनिधियों ने श्रीमती गुलाटी को अन्तिम श्रद्धाजलि अर्पित की।

श्रीमती लीलावन्ती गुलाटी लगभग ३० वर्ष से नियमित यज्ञ करती रही है। वे धार्मिक स्वभाव की ईश्वर मे अटूट श्रद्धा रखने वाली महिला थी। वे दीन दु खियो को दुखी देखकर द्रवित हो जाती थी और सदैव सेवा व परोपकार मे सग्लन रहतीं थीं। उनके नाम से सुभाष नगर मे एक स्कूल एव और कई सस्थाये चल रही हैं। उनके भरे पूरे परिवार में २ पुत्र और ६ पुत्रिया हैं।

धर्म शान्ति यज्ञ ९ दिसम्बर को उनके निवास स्थान ई-६/६, बसन्त बिहार न दि मे अपराह्न २-३० से ४-३० बजे तक होगा। परमपिता परमात्मा से प्राथना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति एव शोक सतप्त परिवार को दारुण दु ख सहने की शक्ति प्रदान करे।

आर्य युवा महासम्मेलन

पुरस्कार वितरण समारोह

रविवार, १३ दिसम्बर १९९२ प्रात. ९ बजे

स्थान . ताल कटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली-१

- वेद गायन
- पी० टी०, योग, शस्त्रादि प्रदर्शन
- पुरस्कार वितरण

अध्यक्ष

श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

प्रधान सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

स्वागताध्यक्ष

श्री महाशय धर्मपाल

प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली

उद्बोधन—

(१) श्री स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती (२) प्रो० शेरसिंह (३) डा० वाचस्पति उपाध्याय (४) डा० देवव्रत आचार्य (४) श्रीमती बज बाला भल्ला

प्रतियोगिता परिणाम पृष्ठ ४ पर देखें। विजेना बच्चे, अभिभावक स्कूल के सहपाठियो सहित समय पर पहुचे।

सूयदेव	**डा. धमपाल**	**प्रियतमदास रसवन्त**
प्रधान	महामन्त्री	अधिष्ठाता आर्य वीर दल

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

प्रधान सम्पादक—सूयदेव सहसम्पादक—विमलका त शर्मा

आर्यों की दुर्बलता का मूल कारण संस्कारों की उपेक्षा

आचार्य वेद भूषण

जिस प्रकार भवन की दृढ़ता और परिपक्वता का आधार उस नींव पर ही होता है वैसे ही मनुष्य के स्वस्थ, बुद्धिमान और दीर्घायु होने का आधार गर्भाधान संस्कार पर ही होता है किन्तु आज समाज मे सर्वाधिक उपेक्षित कोई संस्कार है तो वह है गर्भाधान संस्कार।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने संस्कार विधि का प्रणयन बड़ी आशाओ से किया था। यदि आर्य परिवारो मे संस्कार विधि के पठन पाठन पर जोर दिया जाता तो आज आर्यों के रूप मे एक विकसित नस्ल की मानव जाति का निर्माण हो जाता। कुछ मन्त्रो का अशुद्ध पाठ कर आत्म-तुष्टि करने कुछ नारे लगा लेने या जोशीले भाषणो से उन्नत प्रकार का आर्य बन सकता है सोचना एक आत्म प्रवचना मात्र है।

आर्य समाजो मे सत्सग करने या आर्य शिक्षण सस्थाओ के खोल लेने भर से ससार आर्य बन जाएगा सोचना दिवास्वप्न है। हम आर्य समाज के सदस्य बनने से आर्य नहीं बन सकते। आर्य बनने बनाने की प्रक्रिया गर्भाधान सस्कार को ठीक ठीक विधि से सकल्पपूर्वक सन्तान को जन्म देने से ही सभव है।

मानव जीवन का मूल आधार स्वस्थ शरीर, तीव्र बुद्धि युक्त पावन मन और सुस्वभाव युक्त आत्मा के सयोजन से ही होता है। स्वस्थ देह मे ही स्वस्थ मन और स्वस्थ मन मे ही सस्कारित आत्मा विकासोन्मुख होती है।

गर्भाधान सस्कार मानव निर्माण की अत्यन्त वैज्ञानिक अदभुत विधि है।

यह निर्विवाद सत्य है कि—ससार मे सदा बुद्धिमान व्यक्ति ही उन्नति करता है और सुख भोगता है। बुद्धि एक शारीरिक यन्त्र है। बुद्धि यन्त्र जितना स्वस्थ व सशक्त सूक्ष्म होगा मनुष्य भी उतना ही उन्नत व सुखी होगा।

बुद्धिमान सन्तान के निर्माण के लिए महर्षि ने अपनी सस्कार विधि में स्पष्ट रूप से उत्तम औषधि का उल्लेख करते हुए सन्तान को बुद्धिमान बनाने का श्रेष्ठ उपाय प्रस्तुत किया है। परन्तु इस सस्कार की उपादेयता और उक्त सस्कार के रहस्यो को स्वय पुरोहितो ने भी नहीं समझा।

हम बहुत अनुरोधपूर्वक यह सुझाव प्रस्तुत कर रहे हैं कि—हमे विवाह सस्कार के अवसर पर नव दम्पती को सस्कार विधि उपहार स्वरूप देनी चाहिए और वर एव वधू को प्रथम सस्कार की विधि को ध्यानपूवक पढने की प्रेरणा भी देनी चाहिए।

आय समाज के अपने ही क्षत्र म अनेक आय आयुवदिक फामसिया है जो लाखो करोडो रुपयो का व्यवसाय करती है पर किसी फार्मेसी वाले ने महर्षि द्वारा उल्लिखित सर्वोषधि बनाने का यत्न नही किया। जबकि हमारी आय फार्मेसिया को चाहिए कि वे मानव मात्र की नस्ल की सुधार के लिए सर्वोषधि का प्रचुर मात्रा मे निर्माण करें और उसके विज्ञापन पर विशेष बल दे।

प्रत्येक आय परिवार के दम्पतियों को सन्तान के उत्तम निर्माण के लिए इस सर्वोषधि का सेवन करना चाहिए तथा बारह दिन का व्रत करके विधिवत गर्भाधान सस्कार करके पुन गर्भ स्थापन करना चाहिए।

नाना प्रकार के अवदिक कर्मो को करने और आर्य होकर चाय काफी का सेवन करते हमे लज्जा नही आती पर गर्भाधान सस्कार कराने मे हमे लज्जा अनुभव होती है।

प्राय हम समझते हैं कि सस्कार विधि पुस्तक तो केवल मात्र पुरोहितो के काम की पुस्तक है जबकि सस्कार विधि पुस्तक तो गृहस्थाश्रम की गीता है। प्रत्येक गृहस्थी को इस पुस्तक का गहराई से अध्ययन करना चाहिए तथा मानव जाति के उन्नत नस्ल निर्माण की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

सस्कार डालने अथवा भरने का काल मुख्य रूप से केवल मात्र नौ वर्ष का है। गर्भाधान करने के एक वर्ष पूर्व से लेकर बच्चे की आठ वर्ष की आयु तक का काल सस्कारित करने का उत्तम काल है। वह यह अवस्था है कि—जब तक बालक माता पिता के सरक्षण मे रहता है। आठ वर्ष से सोलह वर्ष की आयु तक उसमे वे सस्कार परिपक्व होने लगते है जो उसने आरभ के आठ वर्षों मे ग्रहण किए थे। सोलह वर्ष की आयु के बाद सस्कार बडी कठिनाई से पड़ते हैं। सस्कार पडने की गति मन्द पड जाती है। चौबीस वर्ष की आयु के बाद जब यौवन काल आरम्भ होता है तब वृक्ष पर जसे फल लगने आरम्भ होते हैं वैसे ही मनुष्य जीवन में भी सस्कार फलित होने लग जाते हैं।

आयु जितनी छोटी होगी सस्कार उतना ही शीघ्र और उतना ही गहरा पडता है। शिशु को सस्कारित करने का सर्वश्रेष्ठ काल गर्भ काल है कि—जब शिशु माता के पेट मे होता है।

इस बात को समझने के लिए आटे का उदाहरण बहुत उपयुक्त है। आटे मे जब हम पानी डालते है और उसे गीला करते हैं तब आटे मे सरलता से बाहरी वस्तु का प्रभाव उसमे भरा जा सकता है। चाहे उसे खारा कर दें या मीठा बना लें। गूथ लने के बाद फिर उसमे नमक मिलाने या शक्कर मिलाने मे जरा विशेष यत्न करना पडेगा। किन्तु जब आटे की रोटी बना कर हम तवे पर डाल देते हैं और रोटी सिक जाती है तब उसकी स्थिति परिपक्वता की हो जाती है। गीले आटे की रोटी पर आप अपना नाम अकित करना चाहे तो अकित किया जा सकता है। किन्तु रोटी सिक जाने के बाद फिर उस पर रेखा खींचना कठिन हो जाता है। आजकल अनेक गुरुकुलों में छठी श्रेणी से बालको को प्रवेश दिया जाने लगा है। यही कारण है कि हम उन पर अपने सस्कार गहरे नही डाल पाते हैं। जितनी छोटी आयु का शिशु होता है उतने अधिक गहरे सस्कार उस पर डाले जा सकते हैं।

इसी लिए छान्दोग्योपनिषद मे कहा है मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद। यदि मातृमान पितृमान न होगा तो केवल आचार्यवान से कार्य सफल नहीं हो सकता।

अत उत्तम सतान के निर्माण के लिए माता व पिता की भूमिका बहुत अधिक महत्व रखती है।

यही कारण था कि प्राचीन काल मे जब माता गर्भवती हो जाती तो उसे कही कन्याओ के आश्रम मे भेज दिया जाता था। सीता को घर से राम ने निकाल दिया कहना अज्ञान है। सीता को गर्भवती होने के कारण आश्रम में भेज दिया गया था जिससे गर्भस्थ शिशु पर अच्छे सस्कार पड सके।

आज माता पिता अपनी सारी शक्ति सुन्दर मकान बनाने अथवा मोटर-कार खरीदने या अन्य यात्रिक सुख-सुविधाओ के सचयन मे ही लगे रहते हैं। सन्तान के निर्माण की प्रक्रिया से ही वे अनभिज्ञ होते हैं।

इसका स्पष्ट प्रमाण है कि स्वतत्र भारत के सविधान निर्माताओ को भी सन्तान निर्माण की वैज्ञानिक प्रक्रिया का बोध न था। यदि उन्हे यह ज्ञान होता कि पूर्णिमा अमावस्या अष्टमी चतुर्दशी आदि तिथियो मे गर्भाधान नही करना चाहिए तो व भारत मे ईस्वी सन की तारीखो का प्रचलन व रविवासरीय अवकाश को मान्यता न देकर विक्रम सवत व वैदिक तिथियो को ही मान्यता प्रदान करते।

पूर्णिमा अमावस्या के दिन धरती पर रात्रि मे सूर्य का तापक्रम घटता बढता रहता है। इससे हमारे शरीर मे विशेष ऊर्जा काम करती है। ऐसे समय मे कामातुरता से हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है और उसका दुष्प्रभाव सतान के स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। इसीलिए भारतदेश मे पूर्णिमा अमावस्या, अष्टमी के दिनो मे सावजनिक अवकाश दिया जाता था जिससे माता पिता को तिथियो का ज्ञान रहे।

उत्तम नस्ल व सस्कारित सन्तान निर्माण की प्रक्रिया जीवन निर्माण की महत्वपूर्ण साधना है। इसी साधना और तप के आधार पर यह भारत देश ऋषि-मुनियो की क्रीडास्थली बना।

भावी सन्तान के निर्माण की प्रक्रिया पर विशेष बल देने के कारण ही हमारा देश ससार का गुरु कहलाता था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी मानव निर्माण की वैज्ञानिक प्रक्रिया को सस्कारविधि मे प्रस्तुत किया है। सस्कार विधि श्रेष्ठ जाति के मानव निर्माण की योजना का सविधान है। यदि आय परिवार ही महर्षि के इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ की

(शेष पृष्ट ३ पर)

पं० राजगुरु शर्मा का निधन-आर्यसमाज के लिए अपूरणीय क्षति

सम्पादकीय

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान प० राजगुरु शर्मा का शनिवार २८-११-९२ को ७० वर्ष की आयु मे ह्रिदय का दौरा पडने से नई दिल्ली मे निधन हो गया। प० जी आर्यसमाज कालका जी के वार्षिकोत्सव पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा थे, तथा रात्रि मे उनके वेदो पर सारगर्भित व्याख्यान होते थे। प० जी मऊ के निवासी थे। उनका मध्यभारत ही नही, सपूण भारत मे तथा विश्व की आयसमाजो मे अनन्य स्थान था। सावदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आयोजित समारोहो, विश्व सम्मेलनो तथा शताब्दी सम्मेलनो मे प० राजगुरु शर्मा को यज्ञ वेदी की साज सज्जा करते, यजमानो से वार्त्तालाप करते तथा वेदोपदेश करते, सभी आर्य-जनो ने ससम्मान देखा है। लखनऊ की शताब्दी हो, अलवर की हो, हैदराबाद की हो, जालन्धर की हो, रोहतक की हो या दिल्ली की हो प० राजगुरु शर्मा की उपस्थिति सर्वत्र अनिवार्य होती थी। उनका चमकता-दमकता मुखडा, लम्बी-लम्बी मूछें, सफेद पगडी, गले मे पटका-अगवस्त्रम् उनकी स्वच्छ वेशभूषा सभी का मन मोह लिया करते थे।

प० जी के देहावसान का समाचार श्री सूयदेव जी के द्वारा मुझे हरिद्वार से लौटने पर मिला, हृदय स्तब्ध हो गया। हमने एक और वैदिक धर्म का अनन्य प्रहरी, प्रचारक सुयोग्य वक्ता खो दिया। सावदेशिक सभा की बैठको मे उनके विचार सुव्यवस्थित तथा तर्क पूर्व शैली मे सुनने को मिलते थे। उन्हे आर्य समाज की सभी गतिविधियो का तो परिचय था, ही उन्हे सवैधानिक स्थिति का भी अच्छा ज्ञान था। उनके तर्क अकाटय होते थे। अन्य वक्ताओ को देखना पडता था कि उनके शब्दो से कैसे अथ व्यञ्जित हो रहे हैं। लगभग दस वष के लम्बे समय मे मुझे ऐसा कोई अवसर स्मरण नही आ रहा है जब उनके द्वारा प्रस्तुत विचारो को स्वीकृत न किया गया हो। विभिन्न सभाओ के विवादो के समाधान मे उनकी भूमिका अहम् हुआ करती थी।

प० जी आर्य जगत् के सुयोग्य विद्वान और ओजस्वी वक्ता थे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अनेक समारोहो को उन्होने सुशोभित किया था। २० जनवरी १९८५ को हमने महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण शताब्दी का आयोजन तालकटोरा स्टेडियम मे किया। भारत के राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैलसिह जी मुख्य अतिथि थे। जब प० जी अपना भाषण समाप्त करके अपनी कुर्सी की ओर बढे तो महामहिम राष्ट्रपति जी ने खडे होकर उनका अभिवादन किया तथा उनके विचारो की प्रशसा की थी। यह चित्र आज भी हमारी आखो के सामने है।

प० जी का निधन हमारे लिए अपूर्णीय क्षति है हमारे वृहद् यज्ञो का सूत्रधार हमारे बीच से चला गया। उनके नेतृत्व और माग दशन की हमे आज भी बहुत अधिक आवश्यकता है।

दिल्ली की समस्त आर्य समाजो की ओर से प० जी की स्मृति मे शोक सभा का आयोजन रविवार ६ दिसम्बर १९९२ को प्रात ११ बजे आय समाज मन्दिर दीवान हाल मे किया गया है। परमपिता परमात्मा से कामना करता हू कि उन्हें सद्गति प्रदान करे तथा शोक सतप्त परिवार जनो को यह दारुण दुख सहने का सामर्थ्य प्रदान करे।

पूज्य प० जी की स्मृति में मेरी विनत श्रद्धाजलि।

—डा० धर्मपाल

विशाल शोभायात्रा

नई दिल्ली। आर्य युवा विकास परिषद्, दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे महर्षि दयानन्द सरस्वती के १०९वें निर्वाणोत्सव के अवसर पर पालमपुर क्षेत्र मे एक भव्य शोभा यात्रा का किया गया। प्रात १०-३० बजे से शुरू हुआ जलूस क्षेत्र के विभिन्न मार्गों से होता हुआ। अन्तिम स्थल १-३० बजे पहुँचा। आय समाज कैलाश कॉलोनी के प्रांगण मे आयोजित सभा मे महर्षि दयानन्द को भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गयी। शोभा यात्रा का शुभारम्भ श्री भागमल द्वारा ध्वजारोहण से हुआ था।

सुदेश जीवनी-संजीवनी का लोकार्पण

नई दिल्ली, २५ नवम्बर। दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा एव वैदिक सत्सग समिति जगपुरा, नई दिल्ली के सयुक्त तत्वावधान मे आयोजित गायत्री महायज्ञ समारोह मे सावदशिक आय प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आर्य विदुषी शिक्षिका स्व० श्रीमती सुदेश बजाज के जन्म दिवस पर 'सुदेश जीवनी-सजीवनी का लोकार्पण किया। इस पुस्तक के सम्पादक आर्य समाज दीवान हाल के प्रधान श्री मूलचन्द गुप्त हैं।

गुरुकुल महाविद्यालय सराथू, प्रयागराज के कुलपति आचाय विश्वमित्र मेधावी के ब्रह्मत्व मे २२ नवम्बर से शुरू हुये इस महायज्ञ की आज पूर्णाहुति के अवसर पर राजधानी व आस पास के क्षेत्रो के सैकडो आर्य नर-नारी व गण मान्य व्यक्ति व गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी भी उपस्थित थे। इस चार दिवसीय कार्यक्रम मे श्रीमती सुदेश स्मृति म वृक्षारोपण किया गया, गुरुकुल गौतम नगर को एक गऊ दान की गई तथा विधवा ब्राह्मणी की पुत्री क विवाह मे स्वणदान भी किया गया।

स्वामी आन दबोध जी न अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि बहिन सुदेश ने अनपढो को पढाया, गिरे हुये को उठाया तथा सारी आयु परोपकार के कार्यो मे सलग्न रही। ऐसी देवी हमारे समाज का गौरव थी। स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द द्वारा नारी जाति पर किये गये उपकारो एव गोपालन के महत्व पर भी प्रकाश डाला। स्वामी जी ने कहा कि गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने प्राचीन आर्य सस्कृति की मशाल को जलाये रखा है।

दिल्ली आय प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धमपाल ने पुस्तक क बारे म विचार व्यक्त किय और कहा कि श्रीमती सुदेश जी का यज्ञमय जीवन था। हमे राष्ट्रभाषा हिन्दी एव देववाणी सस्कृत के प्रचार-प्रसार मे योगदान देना चाहिए।

समारोह मे श्री मूलचन्द्र गुप्त, आचाय विश्वमित्र, एव भजनोपदेशक श्रीमती सुशीला आय को पूज्य स्वामी आनन्द बोध जी ने शाल ओढाकर व स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

कार्यक्रम म वैदिक विद्वान डा० महेश विद्यालकार, श्री मूलचन्द, आचार्य हरिदेव श्री लक्ष्मी नारायण व्यास जी ने भी श्रीमती सुदेश के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला और उनसे प्रेरणा लेन का आह्वान किया। मच सचालन श्री पुरुषोत्तम गुप्ता ने किया। श्री आर्य मित्र बजाज ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

(पृष्ट २ का शेष)

ओर ध्यान देकर सस्कार विधि को जान लेते तो सारा ससार आर्यो की सस्कार विधि का अनुसरण करन लगता। सस्कार विधि के विधान पर चलकर ही आर्य नस्ल के पुरुषों को पैदा किया जा सकता है। इस रहस्य को जानने की आवश्यकता है। आय नस्ल या जाति से अभिप्राय है श्रेष्ठ सस्कारो से युक्त अच्छी नस्ल व श्रेष्ठ गुण, कम, स्वभाव युक्त मनुष्य का निर्माण।

मानव जीवन निर्माण मे सस्कारो का अनिवाय स्थान है। इस अनिवायता को जानकर हमे अनिवाय रूप से सस्कारो की परम्परा का दृढता से पालन करना चाहिए।

सस्कारो के रहस्य को जानने वाला ही पुरोहित कहलाता है। वह परिवार के वश को उन्नति की ओर अग्रसर करने वाला मानव निर्माता होता है। गृहस्थरूपी उद्योग मे वह कम विशेषज्ञ के रूप मे वैसे ही प्रतिष्ठित होता है जैसे कारखाने मे इजिनियर का महत्व होता है। गहस्थ जीवन हो या कारखाना ये दोनो कर्मकाण्ड के ही अग हैं।

इसीलिए ससार के मनुष्यो को श्रेष्ठ सस्कार व उत्तम प्रजाति का निर्माण करने के लिए श्रेष्ठ पुरोहितो के निर्माण की व्यवस्था करनी होगी। तभी "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" रचनात्मक रूप मे सभव होगा।

प्रत्येक आर्य परिवार मे सुयोग्य पुरोहित का होना आवश्यक है। इसके अभाव के कारण ही हम ह्रास एव अवनति के गर्त मे गिरते चले जा रहे है।

हमारा यह पुनीत कर्तव्य है कि परमात्मा की इस सृष्टि को हम सुन्दर से सुन्दर बनाये रखें। यह कार्य मन्दिरो व मस्जिदो से सभव नहीं है। यह कार्य तो सस्कार विधि के महत्व को जानकर उसे क्रियात्मक रूप मे आचरण मे लाने से ही सम्भव होगा। जो कर्मकाण्ड मे दक्ष होता है आचार्य सज्ञा भी उसी की होती है।

पाठकगण अपने परिवार निर्माण के लिए सस्कार विधि को जरा ध्यानपूर्वक पढने का सकल्प करें और इस विधि को अपने परिवारो मे सस्कारित करें। एक भी सस्कार की उपेक्षा न करें। अन्यथा सतान मे उपेक्षित सस्कार का दुष्प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होगा।

ससार के श्रेष्ठ निर्माण के लिऐ सस्कार विधि को पढो और उसे क्रियात्मक रूप प्रदान करें। —अधिष्ठाता, अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद-२७

नवम् आर्य युवा महासम्मेलन प्रतियोगिता परिणाम

तिथि	प्रतियोगिता	विषय	वर्ग	पुरस्कार	विजेता	स्कूल
७-११-९२	निबन्ध	हिन्दी भाषा	कक्षा १ से ५	प्रथम	हिमांशु	रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजनी नगर
		का महत्व		द्वितीय	ऋषिपाल	, "
				तृतीय	आनन्द कुमार	दयानन्द वेद विद्यालय, गौतम नगर, नई दिल्ली
		वैदिक वर्णाश्रम	कक्षा ६ से ८	प्रथम	रीता रानी	दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर, नई दिल्ली
		व्यवस्था		द्वितीय	मोनिका नेगी	रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजी नगर, न दि
				तृतीय	किशोर कुमार	दयानन्द वेद विद्यालय, गौतम नगर, नई दिल्ली
		संघ लोक सेवा आयोग	कक्षा ९ से १२	प्रथम	गगनदीप कौर	बिरला आर्य कन्या सी० से० स्कूल, दिल्ली
		की परीक्षाओं का माध्यम		द्वितीय	सुरेन्द्र सिंह	पी जी डी ए वी सी सैं स्कूल, पटेल नगर, नई दिल्ली
		एवं भारतीय भाषाएं		तृतीय	दिनेश कुमार	दयानन्द वेद विद्यालय, गौतम नगर, नई दिल्ली
	चित्रकला	सूर्योदय	कक्षा १ से ५	प्रथम	निधि भार्गव	रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजनी नगर, नई दिल्ली
				द्वितीय	अमित कुमार	डी ए वी स्कूल, तिलक नगर, नई दिल्ली
				तृतीय	शालिनी तंवर	रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजनी नगर, नई दिल्ली
		ऋषि का आश्रम	कक्षा ६ से ८	प्रथम	पूनम	दयानन्द माडल स्कूल
				द्वितीय	नरसिंह	रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजनी नगर, नई दिल्ली
				तृतीय	हरप्रीत	" "
		महापुरुष का चित्र	कक्षा ९ से १२	प्रथम	कुसुम	बिरला आर्य कन्या सी से स्कूल, कमला नगर, दिल्ली
				द्वितीय	मुकुल	राजकीय बाल सी से स्कूल, सरोजनी नगर, नई दिल्ली
				तृतीय	भवर सिंह	डी ए वी सी से स्कूल, पटेल नगर, नई दिल्ली

१४-११-९२	वर्ग	प्रतियोगिता	पुरस्कार	विजेता	स्कूल
खेल कूद प्रतियोगिता	५ से १० वर्ष	१०० मीटर दौड़	प्रथम	अनिल	डी ए वी स्कूल, तिलक नगर, नई दिल्ली
स्थान : सत्भावा आर्य कन्या		(छात्र)	द्वितीय	रामवीर	रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजनी नगर
सी. से स्कूल करोल बाग, न दि			तृतीय	कपिल सहगल	सरस्वती शिशु मन्दिर
संयोजक श्रीमति सावित्री गावा	५ से १० वर्ष	१०० मीटर दौड	प्रथम	आरती रानी	दयानन्द आदर्श पब्लिक स्कूल, तिलक नगर
		(छात्रायें)	द्वितीय	मोना	दयानन्द माडल स्कूल, पटेल नगर
			तृतीय	डिम्पल	सरस्वती शिशु मन्दिर, पटेल नगर
	१० से १४ वर्ष	२०० मीटर दौड़	प्रथम	प्रदीप कुमार	दयानन्द विद्यालय, गौतम नगर
		(छात्र)	द्वितीय	जय प्रकाश	आई आर आई पूसा
				गौरव खुराना	डी ए वी स्कूल, तिलक नगर
			तृतीय	सजय कुमार	बिरला सी से स्कूल, कमला नगर, दिल्ली
	,	२०० मीटर दौड	प्रथम	शालू	सत्भावा आर्य कन्या सी से स्कूल, करोल बाग
		(छात्रायें)	द्वितीय	सबीना	दयानन्द माडल स्कूल वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली
			तृतीय	हिमानी	सत्भावा स्कूल, करोल बाग
	१० से १४ वर्ष	ऊची कूद	प्रथम	कीर्तिवास	दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर, नई दिल्ली
		(छात्र)	द्वितीय	दिनेश	, "
			तृतीय	दीपक	आई ए आर पूसा
	१० से १४ वर्ष	ऊची कूद	प्रथम	सोनिया	सत्भावा आर्य कन्या सी से स्कूल करोल बाग, नई दिल्ली
		(छात्रायें)	द्वितीय	सगीता	" "
			तृतीय	×	×
	"	लम्बी कूद	प्रथम	कीर्तिवास	दयानन्द वेद विद्यालय, गौतम नगर
		(छात्र)	द्वितीय	गौरव	डी ए वी स्कूल, तिलक नगर
			तृतीय	रमेश	दयानन्द वेद विद्यालय, गौतम नगर
				दिनेश	बिरला लाइन्ज स्कूल
	,	लम्बी कूद	प्रथम	हिमानि	सत्भावा आर्य कन्या सी से स्कूल, करोल बाग, नई दिल्ली
		(छात्रायें)	द्वितीय	ज्योति	" "
			तृतीय	मीनू	दयानन्द माडल स्कूल, वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली
	१४ से १७ वर्ष	४०० मीटर दौड़	प्रथम	संजीव कुमार	राजकीय बाल उ मा विद्यालय, गौंडा
		(छात्र)	द्वितीय	प्रमोद	बिरला सी से स्कूल, कमला नगर, दिल्ली
			तृतीय	सुन्दर कुमार	राजकीय बाल उ मा विद्यालय, सागरपुर, दिल्ली
	,	४०० मीटर दौड	प्रथम	वन्दना	सत्भावा सी से स्कूल, करोल बाग
		(छात्रायें)	द्वितीय	कविता	बिरला आर्य कन्या सी से स्कूल, कमला नगर
			तृतीय	कविता	सत्भावा आर्य कन्या सी से स्कूल, करोल बाग
	१४ से १७ वर्ष	८०० मीटर दौड़	प्रथम	सुन्दर कुमार	राजकीय बाल उ मा स्कूल, सागरपुर
		(छात्र)	द्वितीय	दीपक सिंह	आई ए आर आई पूसा
			तृतीय	विनोद कुमार	बिरला सी से स्कूल, कमला नगर

तिथि	प्रतियोगिता	विषय	वर्ग	पुरस्कार	विजेता	स्कूल
		१४ से १७ वर्ष	८०० मीटर दौड़	प्रथम	कविता	बिरला आर्य कन्या सी से स्कूल कमला नगर
			(छात्रायें)	द्वितीय	निशा	दयानन्द माडल स्कूल, वेस्ट पटेल नगर
				तृतीय	मीना सूरी	, ,
		१४ से १७ वर्ष	ऊंची कूद	प्रथम	जयदेव	देव दयानन्द, गौतम नगर
			(छात्र)	द्वितीय	सजीव	गौंडा
				तृतीय	दिनेश	दयानन्द वेद विद्यालय
		"	ऊंची कूद	प्रथम	वन्दना	सत्भावा आर्य कन्या सी से स्कूल, करोल बाग
			(छात्रायें)	द्वितीय	कविता	" "
				तृतीय	×	×
		"	लम्बी कूद	प्रथम	विनोद कुमार	आई आर पूसा, नई दिल्ली
			(छात्र)	द्वितीय	सजीव कुमार	धौंडा
				तृतीय	बलजीत गिरि	बिरला उ मा विद्यालय, कमला नगर
		"	लम्बी कूद	प्रथम	शिल्पा	सत्भावा आर्य कन्या सी से स्कूल, करोल बाग
			(छात्रायें)	द्वितीय	कविता	" "
				तृतीय	कविता	" "
		१४ से १७ वर्ष	गोला फेंक	प्रथम	प्रमोद	बिरला उ मा विद्यालय, कमला नगर
			(छात्र)	द्वितीय	विजय कुमार	आई ए आर आई पूसा
				तृतीय	अजयपाल	"
		"	गोला फेंक	प्रथम	शशि	बिरला आर्य कन्या उ मा स्कूल, कमला नगर
			(छात्रायें)	द्वितीय	बोबी	सत्भावा आर्य कन्या उ मा स्कूल, करोल बाग
				तृतीय	संगीता	बिरला आर्य कन्या उ मा, स्कूल, कमला नगर
		१८ से २५ वर्ष	गोला फेंक	प्रथम	यशवन्त	गुरुकुल, गौतम नगर
			(पुरुष)	द्वितीय	सुन्दर कुमार	सागरपुर
				तृतीय	हरी प्रकाश	गुरुकुल टटेसर
		"	४०० मीटर दौड़	प्रथम	हरी प्रकाश	आर्य वीर दल गुरुकुल टटेसर, दिल्ली
			(पुरुष)	द्वितीय	प्रवीण कुमार	" "
				तृतीय	जयकिशन	गुरुकुल गौतम नगर
		,	८०० मीटर दौड़	प्रथम	जयकिशन	"
			(पुरुष)	द्वितीय	प्रवीण कुमार	गुरुकुल टटेसर
				तृतीय	ओमपाल	गुरुकुल गौतम नगर
		आर्य वीर दल	ऊंची कूद	प्रथम	हरीप्रकाश	गुरुकुल टटेसर
				द्वितीय	जयदेव	गुरुकुल गौतम नगर
				तृतीय	दिनेश कुमार	सागरपुर
		"	लम्बी कूद	प्रथम	सुन्दर कुमार	सागरपुर
				द्वितीय	हरी प्रकाश	टटेसर
				तृतीय	जय प्रकाश	गौतम नगर
२१-११-९२	वाद-विवाद	आर्य समाज का	कक्षा १ से ५	प्रथम	सौरभ	डी ए वी पब्लिक स्कूल, रोहिणी
		उद्देश्य ससार का		द्वितीय	अमित	रतनचन्द स्कूल, सरोजनी नगर
		उपकार करना है		तृतीय	तमन्ना	डी ए वी पब्लिक स्कूल, तिलक नगर
		शाकाहारी दीर्घायु	कक्षा ६ से ८	प्रथम	मोनिका नेगी	रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल, सरोजनी नगर
		होता है।		द्वितीय	पूनम	रघुमल आर्य कन्या स्कूल राजा बाजार
				तृतीय	ज्योत्सना	एम डी पी स्कूल, राजौरी गार्डन
		आरक्षण देश की उन्नति मे बाधक है।	कक्षा ९ से १२	प्रथम	वन्दना	रघुमल आय कन्या स्कूल, राजा बाजार
				द्वितीय	अरुणा	बिरला आर्य कन्या स्कूल
				तृतीय	प्रीति	रघुमल आर्य कन्या स्कूल
२८-११-९२	भाषण	माता का महत्व	कक्षा १ से ५	प्रथम	साक्षी मल्होत्रा	डी ए वी पब्लिक रिजर्व बैंक एन्क्लेव
				द्वितीय	भारती चड्ढा	मानवस्थली स्कूल मेरो एन्क्लेव
				तृतीय	विधु	रघु आर्य कन्या स्कूल
	"	वैदिक वर्णाश्रम	कक्षा ६ से ८	प्रथम	पूनम	रघुमल आर्य कन्या स्कूल राजा बाजार
		व्यवस्था		द्वितीय	रिंकी	बिरला आर्य कन्या स्कूल, कमला नगर
				तृतीय	श्वेता	डी ए वी स्कूल, रोहिणी सैक्टर-२
	"	अस्पृश्यता निवारण	कक्षा ९ से १२	प्रथम	प्रभजीत	रघुमल आर्य कन्या स्कूल, राजा बाजार
		में आर्य समाज की		द्वितीय	रेखा	बिरला आर्य कन्या स्कूल, कमला नगर
		भूमिका		तृतीय	धर्मवीर	गुरुकुल टटेसर, जौन्ती, दिल्ली
३०-११-९२	वालीबाल		(छात्राओ के लिए)	प्रथम		
				द्वितीय		
				तृतीय		

श्रीराम का सन्देश

डा० महेश विद्यालकार शालीमार बाग

श्रीराम भारतीय सस्कृति के ऐसे वटवृक्ष है, जिसकी छाया मे मानव युग-युग तक जीवन की प्रेरणा और उपदेश लेता रहेगा। जब तक श्री राम जन-जन मे जीवित हैं, तब तक भारतीय सस्कृति के मूल तत्व अजर, अमर रहेगे। राम भारतीय जन-जीवन मे धम भावना के प्रतीक है। उनमे मानवोचित और देवोचित गुण थे। इसीलिए वे "मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। कोटि-कोटि जनमानस के वे प्रात स्मरणीय एव वन्दनीय हैं। उनका जीवन चरित्र भारत की सीमाओ को लाघकर विदेशियो के लिए शान्ति प्रेरणा और नवजीवन दायक बनता जा रहा है। आज शिक्षित अशिक्षित सभी उठते बैठते सोते जागते राम का नाम लेकर अपनी धार्मिक भावना प्रकट करते है। श्रीराम का यहा तक महत्व है कि शव को श्मशान भूमि तक ले जाते समय भी उनके नाम का उच्चारण किया जाता है। वे धम के साक्षात स्वरूप हैं। धर्म के किसी अग को देखना है तो राम जीवन देख लो। धम की असली पहिचान हो जायेगी। धम की पूर्णता उनके जीवन मे आद्यन्त घटित हुई है। राम जैसा चरित नायक आज तक धरती पर नही आया। श्रीराम एक आदश महामानव थे। उन्होने लौकिक धरातल पर स्थित रहकर, धम, मर्यादा का पालन करते हुए, मानव को असत्य से सत्य की ओर, अधर्म से धर्म की ओर, अन्याय से न्याय की ओर चलने की प्रेरणा दी है। कर्त्तव्य की वेदी पर अपने व्यक्तिगत सुख प्रयोजनो की आहुति राम की जीवन कहानी का सार है।

ससार मे महापुरुष अपने जीवन, गुण कर्म, स्वभाव कर्त्तव्य बुद्धि, तप-त्याग और तपस्या से जो अमर जीवन सन्देश देते हैं वही मानवता की स्थायी धरोहर होती है। हमारा सौभाग्य है कि हम ऐसे दैवीय गुणो के धनी मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र की सन्ताने हैं। प्रतिवर्ष रामनवमी और विजयदशमी का पव मनाते हैं। कितु उनके आदश चरित्र से जीवन, परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए कोई प्रेरणा, सन्देश एव सकल्प नही लेते हैं। उनकी शिक्षाए आदर्श तथा जीवन मूल्य आज जगत जीवन मे व्याप्त दुख चिन्ता अतृप्ति, असन्तोष, सघर्ष, वैर विरोध आदि का सुन्दर समाधान दे सकते हैं। श्रीराम का प्रेरक चरित्र भूली भटकी मानव जाति मे नव-जीवन चेतना का सचार कर सकता है। उनके जीवन की घटनाए आज के भोगी विलासी मानवता का गला घोटने वाले, नामधारी मनुष्य को बहुत कुछ सोचने, करने और जीने की प्रेरणा दे सकती हैं। उनके जीवन के प्रत्येक क्रिया-कलाप से अमर सन्देश मिलता है।

श्रीराम के द्वारा दर्शित आदर्शों एव जीवन मूल्यो का भारतीय समाज मे बहुत ऊचा स्थान है। किन्तु दुर्भाग्य इस हिन्दुजाति का जो राम जैसे आदर्श चरित्र का विकृत भौंडा और भद्दा प्रदशन रामलीलाओ, पिक्चरो एव नाटको मे प्रदर्शित कराके अपना गौरव समझ रही है। आज राम के सच्चे आदर्शों एव मान्यताओ की ससार को महती आवश्यकता है। तभी मानव समाज मे सुख शान्ति तथा प्रसन्नता आ सकती है। यदि हम सबक लना चाहे तो रामायण की प्रत्येक घटना से बहुत कुछ सीखा जा सकता है मनुष्य के लिए कुछ घटनाओ का सक्षेप सकेत दे रहा हू। राम के राज्याभिषेक मे मूल विघ्न कैकेयी थी। कैकेयी की सलाहकार मन्थरा थी। कैकेयी की सोच स्वार्थ भावना से प्रेरित थी। इस घटना से हमे प्रेरणा मिलती है कि बुरे विचार वाले, कुसस्कारी, पापी अधर्मात्मा, कामी क्रोधी लोभी व्यक्तियो का साथ सदा दुखदायी और पतन का कारण बनता है। कैकेयी ने अपना परिवार छिन्न-भिन्न किया। सुहाग नष्ट किया जगत मे अपयश लिया। आज मानव को अच्छे विचार अच्छी सगति न मिलने के कारण आज का मनुष्य दुख चिन्ता और अशान्ति मे घिरा है। सीता का राम के साथ वन जाना। ससार के इतिहास मे एक नया अध्याय जोड देता है। वनवास राम को मिला था, सीता को नहीं। नारी की परीक्षा सपत्ति में नही विपत्ति मे होती है। भोग विलास श्रृगार मे फसी नारी को सीता का चरित्र युग-युग तक प्रकाश और जीवन दे सकता है। आज नारी अपने मूल धर्म और स्वरूप से हट रही है। इसी कारण अनेक दुख व वेदना देने वाली अनेक समस्याए हमारे सामने आ रही हैं। लक्ष्मण का राम के साथ वन-गमन करना, भरत का राज्य को ठुकराना, पादुका रखकर शासन-व्यवस्था चलाना, परस्पर भाईयो की प्रीति का श्रेष्ठ उदाहरण है। आज भाई-भाई एक दूसरे के रक्त के प्यासे हो रहे हैं। परिवार परस्पर की कलह के कारण टूट रहे हैं। सवत्र स्वार्थ अहकार और अकेले भोगने की भावना उद्दाम हो रही है। रामायण हमे शिक्षा देती है कि नश्वर सुख-भोग और धन-धाम धरा के लिए परस्पर लडो नही। पद, सम्मान एव कुर्सी के पीछे अपने धम-कर्त्तव्य न्याय और सत्य के मार्ग को मत छोडो। परस्पर प्रेम त्याग व सहयोग से उन्नति करो।

चित्रकूट प्रवास-काल मे शूर्पणखा का श्रीराम को अपनी और आकर्षित करना विवाह का प्रस्ताव रखना। राम का दृढता से प्रताडित करना, प्रेरणा देता है कि यदि जीवन को सुखी, शातिमय बनाना है तो एक पत्नीव्रत का आचरण करना चाहिए। आज के सम्पन्न समाज मे भोग-विलास और परस्त्री भोग का रोग तेजी से फैल रहा है। आए दिन अखबारो मे घटनाए आती हैं, परस्त्री भोग के कारण उसे जीवन से हाथ धोना पडा। न बुझने वाली भोग और काम वासना की आग से न जाने कितने परिवार, व्यक्ति, जल चुके हैं। राम हमे सन्देश देते हैं कि एक पत्नीव्रत बनकर काम वासना को धीरे-धीरे सयमित करने मे ही मानव का कल्याण निहित है।

स्वर्णमृग को देखकर सीता का उसे पाने की इच्छा करना, राम का मायावी मृग को पाने के लिए पीछे दौड़ना, सीता का हरण हो जाना, यह घटना आज के जीवन प्राणो को बहुत कुछ प्रेरणा दे सकती है। आज का मनुष्य धम की मृग तृष्णा के पीछे पागलो की तरह दौडा जा रहा है। जो प्राप्त है उससे सन्तुष्ट नही हो पा रहा है। विज्ञान की चमकीली, भडकीली दिखावटी, बनावटी चीजो के पीछे दिन-रात अधम-असत्य, छल-प्रपन्च का सहारा लेकर दौडा जा रहा है इनसे हानि यह हुई है कि आत्मारूपी सीता छिन गई है। भौतिकवादी व्यक्ति सिर्फ शरीर के लिए जीने लगा है। इस मृत तृष्णा मे जीवन का अन्त कर लेता है। रामायण करती है दुनिया मे आखें खोलकर चलो। सभी चमकने वाली चीजें सोना नहीं होती हैं। चमक दमक मे व्यक्ति हमेशा धोखा खाता है। इसी धोखे मे सीता का रावण द्वारा हरण होता है। राम रावण का निर्णायक युद्ध चलता है।

रामायण की शिक्षा रही है कि जो परनारी पर दृष्टि रखता है उसका रावण की तरह विनाश हो जाता है। जो मनुष्य अपनी इन्द्रियो को अपने वश मे नही रखता उसका भी विनाश हो जाता है। यदि इन्द्रिया मालिक बन गई तो "दशहरा" दस इन्द्रियो द्वारा हरा जानेवाला रावण बनकर विनाश को प्राप्त होता है। आज समाज मे गली गली, नगर-२ घर घर, रावण बढ और पल रहे हैं। हमारे मनो मे भी रावण बस रहा है। हमारे चेहरो पर अतृप्त वासना और कामुकता का डेरा है। रोज न जाने कितनी सीताओ का भगाना, उठाना, चुराना और बलात्कार हो रहे हैं। क्या हमने यही रामायण और राम से सीखा है? यदि सीखना है तो रामायण और रामलीला से सीखो—चरित्र निर्माण, विचारो की उच्चता, भाव की शुद्धता पवित्रता तथा जीवन को धर्म-मर्यादा एव उच्चादर्श की ओर ले चलना।

आज के मानव समाज मे रावण वृत्ति बडी तेजी से फैल रही है। मानव दानव बनकर मास, मदिरा, परस्त्रीगमन, छल प्रपच अधर्म आदि बुराईयो को जीवन का अग बनाता जा रहा है। किन्तु भूल रहा है कि गलत आचरण और मान्यताओ का अन्त रावण की तरह होता है। अन्याय, अधर्म असत्य, राक्षस भाव आदि पहले तो रावण की तरह फलते-फूलते है किन्तु अन्त मे समूल ही नष्ट हो जाते है। रावण के चरित्र पतन से आज के मानव को शिक्षा लेनी चाहिए। हमारा खान पान, आचरण, जीविका और विचार चिन्तन शुद्ध पवित्र और धार्मिक होने चाहिए।

सक्षेप मे राम और रामायण का अमर जीवन सन्देश आज के भूले भटके राक्षसवृत्ति मे फसे मानव समाज को यही है कि अपने जीवन को पवित्र और सुन्दर बनाओ। खान-पान, रहन-सहन में सादगी, सरलता और सात्विकता लाओ। परमात्मा की सत्ता पर विश्वास करके, उसके बताए मार्ग पर चलकर मानव जीवन को सफल बनाओ।

आर्यसमाज झण्डेवालान एक्सटेंशन

नई दिल्ली १५ नवम्बर। आर्य समाज झण्डेवालान एक्सटेंशन मे १२ वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर ११ अक्तूबर से १५ नवम्बर तक प्रतिदिन श्री प० प्रेम चन्द श्रीधर के ब्रह्मत्व में यज्ञ एव गीता का उपदेश होता रहा।

१५ नवम्बर को पूर्णाहुति के पश्चात दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल ने जन कल्याण सम्मेलन मे अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वेद ज्ञान के साथ २ हमें व्यवहार ज्ञान भी होना चाहिए। दृष्टान्त के माध्यम से डा० धर्मपाल ने बताया कि एक तोता बार २ यह कह रहा था कि मुझे मुक्त कर दो तो पिजरे से निकलने के बाद भी वह यही बोलता रहा क्योकि उसे शब्दो का पता था परन्तु अर्थ ज्ञान नही था। इसी प्रकार हमे वेद मन्त्रो के शब्द ज्ञान के साथ साथ अर्थ ज्ञान भी होना चाहिए।

समारोह में ११ कुण्डी यज्ञ का सुन्दर आयोजन था। श्री प्रेमचन्द श्रीधर प० चन्द्र शेखर शर्मा आदि ने भी प्रेरक विचार रखे।

शराबबन्दी मे हरियाणा मार्गदर्शन करेगा

रोहतक स्वामी ओमानन्द ने कहा कि अब हर कीमत पर शराब बन्दी करायी जायेगी। यदि सरकार ने शराब बन्द नही की तो बन्द करायी जायेगी। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान एव अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने कहा कि न केवल हरियाणा मे शराब बन्द होगी अपितु शराब बन्दी आन्दोलन मे देश के दूसरे प्रदेशो का मार्गदर्शन भी करेगा। ये विचार ७ व ८ नवम्बर को रोहतक मे सम्पन्न हुये शराब बन्दी सम्मेलन मे व्यक्त किये।

इस सम्मेलन मे डा० सुशीला नैयर ने नशाबन्दी परिषद् का अध्यक्ष पद प्रो० शेर सिंह को सौंपा और आशा व्यक्त की कि भारत नशा मुक्ति कार्यक्रम मे विश्व का मार्गदर्शन करेगा।

परिषद के महामन्त्री श्री सत्य नारायण ने वर्ष १९९१ ९२ की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

श्री गोविन्द भाई कसाना नशाबन्दी राज्य मन्त्री गुजरात ने शराब एवं नशीली दवाओ के प्रयोग पर रोक लगाने पर बल दिया।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R.N No 32387/77 Posted at N D P S O on 3 4 12-1992 Licence to post without prepayment, Licence No. U (C) 139/92
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (एल-११०२४/९२ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू (सी०) १३९/९२

श्री अतरसिंह आर्य सम्मानित

हरियाणा प्रदेश मे युवाओ के उत्थान के लिए विशेष कार्य करने एव शराब बन्दी आन्दोलन मे अत्यन्त महत्वपूर्ण काय करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी को ८ नवम्बर को राष्ट्रीय शराब बन्दी सम्मेलन रोहतक मे सम्मानित किया गया। परिषद के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह जी ने एक गोल्ड मैडल तथा एक प्रशस्ति पत्र भेंट किया।

ज्ञातव्य है कि क्रान्तिकारी जी सन १९८३ से हरियाणा मे शराब बन्दी के लिए भूख हडताल शराब के ठेको पर धरने देना, शराब के ठेको की निलामी पर जि० स्तर पर प्रदर्शन करना कई कई गाव की पैदल यात्राए करना शराब बन्दी सम्मेलन करना हवन पर शराब व धुम्रपान न करने की प्रतिज्ञा करना, बच्चा से गाव-गाव मे शराब बन्दी नारे लगवाना आदि कायक्रम चलाए हुये हैं।

पब्लिक स्कूल बन्द करें

नई दिल्ली आर्य समाज लाजपत नगर मे आयोजित एक कायक्रम मे यह माग की गयी कि पब्लिक स्कूल बन्द करके सभी के लिए एक समान स्कूल खोले जायें। मन्त्री का बच्चा व सन्तरी का बच्चा एक साथ पढ सकें। यह कार्यक्रम विगत मास हिन्दी दिवस पर आयोजित किया गया था। सवश्री नरेन्द्र अवस्थी, मेघश्याम वेदालकार आदि ने हिन्दी के प्रचार प्रसार मे आर्य समाज के योगदान का उल्लख किया।

इन्जीनियरो को परीक्षा के लिए हिन्दी विकल्प स्वीकृत

नई दिल्ली केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग मे जूनियर इ जी० से सहायक इ जी० की विभागीय पदोन्नति परीक्षा के सभी प्रश्न पत्र हिन्दी व अग्रेजी मे छापे जायेंगे तथा सघ लोक सेवा आयोग ने परीक्षा के लिए हिन्दी विकल्प की सुविधा भी दे दी है। २६३ सहा० इ जी० की नियुक्ति के लिए देश के प्रमुख नगरो मे २३ दिस १९९२ को परीक्षा हो रही है। यह जानकारी सघ लोक सेवा आयोग ने १६-९-९२ के पत्र मे श्री जगन्नाथ, सयोजक, राजभाषा कार्य, के स० हि० प०, सरोजनी नगर को दी है।

आर्य वीर दल का जोरदार अभियान

मेरठ सार्वदेशिक आर्य वीर दल चौगामा क्षेत्र के सचिव श्री राम गोपाल आय ने बताया कि नवयुवको को स्वस्थल निरोग बनाने,उनमें अनुशासन हीनता दूर करने, वैदिक सिद्धान्तो व भारतीय सस्कृति के प्रचार व प्रसार के लिए १५ अक्तूबर से एक जोरदार अभियान चलाया गया है। अब तक बिटावधा, भड्ल, निरपुडा, फुगाना आदि गावो मे यह कार्यक्रम चलाया गया है। प्रत्येक गाव में आर्यवीर दल की शाखाये लगायी जायेगीं तथा एक हजार नवयुवको का शिविर भी लगाया जायेगा।

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिकप्रे स, पटौदी हाउस, दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन-३१०१५० केलिए प्रका शित। रजि० नं० डी० (एल १०२४/१-०९२

III. CLOTHING

Section	*Items Priced*	*Remarks*
1 Men's outer clothing	Three-piece suit, worsted, ready-made (2 grades) Overcoat, ready-made Sports coat, tweed Trousers, union or Derby tweed Raincoat, cotton gaberdine, lined Hat, wool felt, or cap Overall, bib and brace	These descriptions are sufficiently elastic to allow individual retailers to select, for pricing purposes, the particular line which is predominantly sold to working-class households Retailers are asked to supply detailed descriptions, sizes, etc, of the particular articles for which they quote prices, in order to ensure comparability of quotations
2 Men's under-clothing	Shirt, work shirt, collar attached Shirt, tunic shirt, cotton, with two collars Vest, cotton and wool plated Pants or trunks, interlock cotton Socks, wool or woollen mixture	
3 Women's outer clothing	Suit or costume, woven woollen Skirt, woollen Winter overcoat, wool, fully lined (2 grades) Mackintosh, light, unlined, rubber-ised, single texture Blouse, filament rayon, short sleeves Dress, spun rayon, short sleeves Dress, woollen, long sleeves Jumper or cardigan, wool Overall, cotton, cross-over or slip-on, sleeveless Hat, wool felt (price fixed or branded kind) Gloves, unlined cape	
4 Women's underclothing	Slip, locknit rayon, round neck Knickers, rayon Vest, cotton mixture, sleeveless Corsets Roll-on (two-way stretch) Hose, seamless rayon Hose, fully-fashioned rayon Hose, fully-fashioned lisle Sanitary towels	
5 Children's outer clothing	Boy's two-piece suit, union, lined Boy's jersey or pullover, wool and cotton plated Boy's raincoat, wool gaberdine Girl's gym tunic, woollen Girl's dress, cotton, short sleeves Girl's overcoat, woollen, fully lined Infant's pram set, knitted wool with feet Infant's smocked frock, woven rayon	

Section	*Items Priced*	*Remarks*
6 Children's underclothing	Boy's shirt, flannel Boy's three-quarter hose, wool Girl's knickers, interlock cotton Girl's ankle socks, rayon plated Infant's nursery squares, terry	
7 Clothing materials	Rayon dress material, per yard Woollen coating material, per yard Winceyette or flannelette, per yard Baby knitting wool, per oz	These descriptions are sufficiently elastic to allow individual retailers to select, for pricing purposes, the particular line which is predominantly sold to working-class households Retailers are asked to supply detailed descriptions, sizes, etc, of the particular articles for which they quote prices, in order to ensure comparability of successive quotations
8 Men's footwear	Heavy working boots Shoes, Oxford, leather sole	
9 Women's footwear	Walking shoes (" comfort " shoes), lace or one bar Fashion shoes, court Slippers, fabric uppers	
10 Children's footwear	Boy's shoes, leather sole Boy's shoes, composition sole Girl's shoes, one bar, leather sole Girl's lace-up school shoes, leather sole Child's plimsolls Child's wellingtons Child's sandals	

IV. FUEL AND LIGHT

Section	*Items Priced*		*Remarks*
1 Coal and coke	Coal of selected types Gas coke, boiler nuts Gas coke, open fire	per cwt per cwt per cwt	The types of coal included in respect of each area have been selected by Regional Coal Officers as being representative of domestic consumption in the selected towns
2 Gas	Flat rate per therm, rent of meter		
3 Electricity	Average cost per unit, inclusive of fixed quarterly, etc, charges and meter rent, at a consumption level of approximately 1,000 units per annum		
4 Other	Lamp oil Candles	per gallon per lb	

V. HOUSEHOLD DURABLE GOODS

Section	*Items Priced*	*Remarks*
1 Furniture	Wooden bedstead Kitchen chair Bedroom suite Upholstered wooden armchair Drop-side cot Dining-room table Hair or interior spring mattress Upholstered three-piece suite Kitchen cabinet, wood or metal	Retailers are asked to supply detailed descriptions of the particular articles for which they quote prices, in order to ensure comparability of successive quotations
2 Appliances, etc	Radio set Pedal cycle (man's) Vacuum cleaner Domestic sewing machine Perambulator Alarm clock (mechanical) Rubber-roller table mangle Electric fire Electric iron Gas fire Gas cooker Tennis racquet Gramophone record	
3 Floor coverings	Felt-base floor covering per sq yard Inlaid linoleum per sq yard Axminster rug per sq foot Carpet per sq yard	
4 Drapery and soft furnishings	Sheets, cotton or flannelette per pair Blankets, wool per pair Curtain material per yard Hand towel, terry, each, or roller towel, terry, made-up or per yard Tea towel or glass cloth, cotton, linen or union, each	
5 Hardwear, pottery, glass, etc	Household bucket, galvanised Cake tins Saucepan, aluminium Washup bowl, enamel Garden digging fork Scissors Distemper Scrubbing brush Soft broom (hair or substitute) Paint brush Cup, undecorated whiteware Teapot, earthenware Tumbler, pressed glass, no handle Electric lamp, 60 watt	

VI. MISCELLANEOUS GOODS

Section	*Items Priced*	*Remarks*
1 Soap, etc	Toilet soap Hard soap Soap powder Soapless detergent	
2 Miscellaneous household goods	Soda Polishes (boot, floor, metal) Cleaning powders Matches, per box	
3 Medicine and toilet requisites	Selected proprietary medicines, etc, tooth pastes, razor blades, cosmetics, hair cream, toilet paper	
4 Newspapers, toys, books, and stationery	Newspapers and periodicals (including children's periodicals), toys, books (cheap edition), writing paper	

VII. SERVICES

Section	*Items Priced*	*Remarks*
1 Travel	Rail fares Omnibus, trolley bus and tramway fares Petrol, per gallon Cycle and motor cycle tyres Motor cycle insurance Motor cycle licence	
2 Postage, etc	Inland letter postage Inland parcel postage Poundage on postal orders and money orders Wireless licence	
3 Entertainment	Admission to —Cinemas Football matches	
4 Other services	Boot and shoe repairs soling and heeling man's shoes, heeling woman's shoes Laundry bag wash or 1 sheet Dry cleaning man's three-piece suit, woman's coat Hairdressing man's hair cut, woman's shampoo and set Domestic help recognised rate per hour for charwoman Watch repairs cleaning man's wrist watch	

VIII. ALCOHOLIC DRINK

Section	*Items Priced*	*Remarks*
1 Beer	Beer, draught, per pint, and bottled beer	
2 Whisky	Whisky, per bottle and per single "nip"	

IX TOBACCO

Section	*Items Priced*	*Remarks*
1 Cigarettes	Cigarettes, various brands, per 10	
2 Pipe tobacco	Pipe tobacco, various brands, per oz	

APPENDIX VIII

INTERIM INDEX OF RETAIL PRICES
DETAILED NOTES ON ITEMS

Food

In general the items selected in each section are those which can be regarded as likely to reflect the movements in prices in the section as a whole. The conditions prevailing when the index started, however, prevented finality in the choice of items, but where possible provision has been made for modifications when restrictions come to an end. For example, while only " National " butter is on sale, this is taken for the index, but some modifications in procedure will be required when other types are available. For margarine, the "Special" type only is priced, since this is virtually the only type purchased, but other varieties may need to be introduced for the purpose of the index at a later date. As regards cheese, the Cheddar type, available all the year round, is the kind used for the index, but it is not possible to say what the predominant type of cheese may be in the future.

Certain of the food items present special problems and notes on these are given below :—

(*a*) *Fish and chips*. Owing to the difficulty of obtaining satisfactory price quotations independent of changes in quantity and quality, the item " Fish and Chips " is omitted from the list of food items for which prices are collected, but the weights allocated to fresh fish and potatoes are slightly increased to compensate for the omission.

(*b*) Milk. The average price of milk used for the index allows for school milk and milk supplied at reduced prices, or free, under the National Milk Scheme. The proportion of each category is known each month to the Ministry of Food. If, however, the prices were weighted in these proportions, the average price would rise in the periods of school holidays and fall in winter when the amount of full-price milk is relatively smaller. Since it is undesirable that the index should be subject to such marked variations (which would not be the result of changes in actual prices) the weighting is the average of the proportions in the twelve months preceding the date of each index figure.

(*c*) *Potatoes*. Up to and including mid-June in each year the prices of old potatoes only are used, provided that there are reasonable quantities on sale and that sufficient quotations can be obtained. In July, but normally in no other month, the prices of both old and new potatoes are taken into account, the prices of old and new potatoes for that month being combined in proportion to the quantities of old and new potatoes actually on sale. But allowance is made for the fact that there is less wastage and greater nutritive value with new potatoes than with old, and, to allow for this, $5\frac{1}{2}$ lbs. of new potatoes are taken as equivalent to 7 lbs. of the old crop in July. In August, when the supply is entirely of the new crop, 6 lbs. of potatoes are taken as equivalent to 7 lbs. in the remaining months in the year. With these exceptions, the price of the predominant variety on sale in each area is taken, irrespective of variations in quality.

(*d*) *Other vegetables*. The compilation of an index which measures monthly

changes in the retail prices of vegetables is a matter of some complexity, one of the principal difficulties being the relatively short period for which particular kinds are commonly available and the seasonal variations in the supplies of other kinds Consideration has been given to various methods and the following method is the one adopted for the index

The varieties of vegetables covered by the enquiries are

Tomatoes	Carrots (sold without tops)
Cabbage	Turnips or swedes
Cauliflower or broccoli	Onions, ripe
Brussels sprouts	Canned peas
Peas	

Certain of these items such as tomatoes, cabbage, onions and canned peas are available in every month of the year and are included in the calculations each month The remaining vegetables are included for those months when they are normally in season For each vegetable included in any given month, the percentage increase in price since the base date is computed, the base price being that in the base month, or in the first month of the season if this does not cover the base date As a variety falls out of season it ceases temporarily to enter into the calculation The index for all the vegetables is the average of the indices for the individual vegetables available in the month under review, most of the items being given equal weighting in this average, but tomatoes, cabbage and canned peas being given larger weights because of their importance In combining this index with the indices for other food sections, it receives the full weight for the section " other vegetables ", irrespective of the monthly variations in the kinds of vegetables covered

(e) *Tea* There are special difficulties in measuring changes in the price of tea of uniform and unvarying quality, and price quotations from retailers are liable to reflect changes in quality or in the blends in current demand rather than changes in the actual level of prices For the present, changes in the maximum permitted prices under the price control Orders of the Ministry of Food are taken as representing the actual changes in price level, and these changes are calculated with reference to the qualities of tea retailed at about 3s a pound at the date when the index started, in 1947 If control is removed, enquiries as to price and quality will be made of wholesale suppliers in a similar manner to the procedure used for manufactured foods

(*f*) *Food for animals* Owing to the very wide variety of kinds of food for animals and the difficulty of selecting typical examples, food for animals is omitted as a separate item, but the appropriate weight is included in the total weight allocated for food

Clothing

In consultation with representatives of the clothing distributive trades, the Technical Committee drew up a list of items for which it seemed possible to obtain regular price quotations, and which could be regarded as providing a representative sample of the articles of clothing and footwear purchased by working-class households Moreover, the items of clothing and clothing materials were selected so as to maintain, so far as possible, a satisfactory balance between materials, *e g*, wool, cotton and rayon goods, and between different methods of manufacture Changes in the types and qualities of goods on sale from time to time make it impossible to measure with absolute precision the real movement in price levels, but, within the broad descriptions of the items listed in Appendix VII, each retailer is asked to select and describe particular articles being commonly sold to his working-class customers, and to continue to quote for these same articles as long as possible When it becomes

impossible to continue to quote prices for any particular article, the retailer is asked to substitute the price of another and to supply such particulars as are necessary to enable the effect of the change in quality, if any, to be allowed for when comparing the actual price quotations

Fuel and Light

Coal and Coke While retail prices of coal and coke are controlled, schedules of current maximum prices in different localities, as authorised by Regional Officers of the Ministry of Fuel and Power, are available These maximum prices may be regarded as an adequate guide to the changes, from time to time, in the prices actually being charged, and are, therefore, used as the basis for computing changes in prices for the interim index The kinds and qualities of coal available for domestic use vary from town to town, but the Regional Coal Officers of the Ministry of Fuel and Power have selected, in each of the 200 towns listed in Appendix X, the grades most commonly purchased by working-class households and furnish particulars of the changes, from time to time, in the authorised prices of these grades For coke, the kinds used for domestic purposes are more or less uniform over the country as a whole and the Regional Coal Officers supply particulars of the authorised prices of two selected types in each of the 200 towns

Gas The actual charge for gas for domestic use in any one locality does not vary according to whether supplied by prepayment meter or ordinary meter, and where higher charges appear to be made for supplies by prepayment meter, the addition is in respect of fittings, apparatus, meter rent, etc It is not considered practicable to measure changes in the charges for hiring apparatus and in the Appliances Section in Group V certain heating and cooking appliances have been included as the best means of measuring price changes applicable to this kind of expenditure In these circumstances, in this section of the index the price charged for gas supplied by ordinary meter, together with the meter rent, is used In certain areas there are arrangements under which the rate per therm varies according to the level of consumption, but as the level of consumption at which the rate is reduced is usually fairly high, the lower charge under such tariffs is not taken into account in the index

Electricity As regards electricity, there is a wide variety in the basis of charges for lighting, heating, etc , and in many areas the consumer has a choice of tariffs The actual cost per unit for any particular household is dependent, not only on the choice of tariff, but in a very large proportion of cases it also depends on the actual consumption of the household, owing to the prevalence of domestic two-part tariffs, under which the cost comprises a fixed quarterly charge plus a relatively small charge per unit The 1937-38 budgets indicated that at that date the average consumption of the households covered was in the neighbourhood of about 500 units per annum This average covered households with widely differing rates of consumption, but special enquiries made by the Department in 1947 as to the current charges at various selected levels of consumption suggested that regular enquiries in respect of a consumption level of 500 units per annum might then be regarded as giving a sufficiently representative basis for the measurement of changes in electricity charges Accordingly, when the index started, in 1947, the quotation obtained for each town was the cost per unit by whichever tariff would be the cheapest for a typical working-class household consuming 500 units per annum Where a separate meter rent was charged, the amount of such meter rent was included, but the hire of apparatus was dealt with as in the case of gas

When reviewing this procedure in 1951 the Technical Committee observed that the average consumption of electricity by working-class households was then probably double the pre-war rate of consumption As standing charges tended to remain unaltered while the charges per unit were often altered, the Committee concluded that the basis of calculation hitherto in use exaggerated

the stability of the electricity index, neither increases nor decreases being fully recorded by the index They therefore recommended that the measurement of changes in electricity charges should be altered and should be calculated by reference to the cost per unit for an annual consumption of 1,000 units This method of calculation has been used as from January, 1952

Household Durable Goods

Included under this group are certain heating and cooking appliances, the expenditure on some of which was classified in the results of the budget enquiry under expenditure on fuel and light A selection of items of furniture is included which, it is considered, provides an adequate measure of the movement in the prices of furniture purchased by working-class households

Miscellaneous Goods

In this group, as in the case of household durable goods, care has been taken to include a fair representation of items bearing Purchase Tax Certain additional items have been included since January, 1952 The items included in respect of medicines, etc , are proprietary articles and not those made up on prescriptions

Services

In the case of rail fares account is taken of changes in single, return, season and early morning or workmen's fares For omnibus, trolleybus and tramway fares, information is obtained in respect of the predominant form of transport in the towns covered by the food items, omitting those with populations under 5,000 In London particulars are obtained in respect of the whole of the London passenger transport system In other areas particulars are obtained in respect of the cost of travelling certain fixed distances, the number of selected distances being —

Towns with a population of 200,000 and over —3 distances

Towns with a population of 50,000–200,000—2 distances

Towns with a population of 5,000–50,000—1 distance

Where there are workmen's fares on omnibuses, trolleybuses or tramways, the cost of travelling one distance is taken

In the case of poundage on postal and money orders, information is obtained in respect of the changes in poundage on postal and money orders of three values, selected as predominant in consultation with the General Post Office As regards entertainment, the charges for admission to football matches are measured by the ground admission charge to First Division League games, and the details of the cinema seats to be included have been chosen in consultation with the Customs and Excise Department and the industry

Alcoholic Drink

Beer The problem of measuring changes in the prices of beer presents peculiar difficulties In order to conform with the general principle underlying the index, the price movements taken into account should relate as far as possible to commodities of constant quality, but the quality of beer, particularly as regards its alcoholic content, does not, in fact, remain constant Beer is not a standardised commodity, and many different kinds and qualities are on sale, at different prices, at any given moment It is therefore necessary to collect price data covering large numbers of public houses in many different areas in order to obtain a representative index of price movements, ensuring, so far as possible, that the successive quotations for any particular public house relate to the same kind of beer at each date But the chief difficulty occurs as a consequence of the general increases or decreases in strength that are liable to occur from time to time

It is not considered possible to make adjustments to the price of beer prevailing in any month which would accurately measure the consumers' loss or gain in satisfaction from changes in the quality of the beer For beer which is bought in public houses the question of consumer satisfaction may be bound up with the service, recreation, social intercourse and the amenities of the public house as well as with the alcoholic strength of beer Nevertheless differences in strength are reflected to some extent in differences in price, and changes in strength may be introduced sometimes in conjunction with a corresponding change in price but sometimes as an alternative to a change in price Accordingly the Technical Committee were of the opinion that some allowance must be made for variations in the strength of beer in any index which purports to measure changes in prices for articles of unchanged quality They believed, however, that since alcoholic content is not the only criterion of quality in beer, an index which made full allowance for changes in strength would over-weight the importance to consumers of variations in the alcoholic content of beer

The method used for measuring changes in the prices of beer for the purpose of the retail prices index represents a compromise between a method which totally ignores changes in strength and a method which makes a full allowance for changes in strength From June, 1947 up to January, 1952, this method was one in which the actual prices charged were adjusted to allow for the extra duty which would have been payable if the strength had been that which prevailed in 1938 From January, 1952, a slightly simpler procedure has been adopted, the percentage change in the price of beer being taken as the simple average of —

(*a*) the percentage change in the price of a pint of beer as sold, irrespective of its strength , and

(*b*) the percentage change in the price when fully adjusted to allow for changes in strength

This new procedure is equivalent to taking the mean of the price changes for what are known in the trade as the " bulk barrel " and the " standard barrel " In practice it gives much the same result as the procedure followed before January, 1952, but avoids some anomolies The information needed for this purpose is the price and the specific gravity, and both are obtained from a representative sample of brewers who produce about one-third of the total beer sold in the United Kingdom The current retail prices of each of the large number of beers produced by these firms are combined by fixed weights representing the average quantity of each sold in 1950 The current specific gravities of each of these beers are also combined by the same fixed set of weights The resulting weighted averages are then used to calculate the percentage increases referred to in (*a*) and (*b*) above Separate percentages are first computed for each of five broad categories, draught mild, draught bitter, bottled brown, bottled pale and bottled stout The five are then combined, by appropriate weighting based on the relative 1950 expenditure in each category, in order to produce a single index for beer as a whole

Spirits As regards spirits, the prices of whisky per bottle and per single " nip," as charged in public bars, are obtained from specified public houses in each of the 200 towns covered by the food enquiries For this item difficulties concerning quality variations as judged by alterations in alcoholic strength do not normally arise

Tobacco

The prices of specified brands of cigarettes and pipe tobacco are collected by the Statistics Department from manufacturers, and appropriate adjustments would be made if at any time the size of the selected brands of cigarettes were changed If found necessary local enquiries are instituted as a check on actual prices

APPENDIX IX

WEIGHTS USED IN CALCULATING THE INDEX OF RETAIL PRICES

(Proportions per 1,000 of Grand Total)

Group and Section	Earlier Series* (in proportion to pre war consumption at June, 1947 prices)	Current Series* (in proportion to 1950 consumption at January, 1952 prices)
I. FOOD		
1 Bread	23	27
2 Flour	7	4
3 Biscuits, cakes, buns, etc	32	32
4 Beef	25	22
5 Mutton and lamb	12	15
6 Other meat	23	32
7 Bacon and ham	18	18
8 Fish	8	19
9 Fresh milk	32	40
10 Butter	19	14
11 Margarine, cooking fats, etc	12	11
12 Cheese	5	9
13 Eggs	13	22
14 Tea	16	12
15 Sugar and syrup	11	10
16 Potatoes	11	18
17 Other vegetables	18†	25†
18 Fruit	23†	19†
19 Miscellaneous manufactured foods	40†	50†
Total—Food	348	399
II. RENT AND RATES	88	72‡
III. CLOTHING		
1 Men's outer clothing	21	20
2 Men's underclothing	9	10
3 Women's outer clothing	23	19
4 Women's underclothing	8	7
5 Children's outer clothing	8	8
6 Children's underclothing	3	3
7 Clothing materials	5	6
8 Men's footwear	8	11
9 Women's footwear	8	9
10 Children's footwear	4	5
Total—Clothing	97	98
IV. FUEL AND LIGHT		
1 Coal and coke	41	30
2 Gas	14	18
3 Electricity	6	14
4 Other	4	4
Total—Fuel and Light	65	66

Group and Section	*Earlier Series* (in proportion to pre-war consumption at June, 1947 prices)*		*Current Series* (in proportion to 1950 consumption at January, 1952 prices)*	
V. HOUSEHOLD DURABLE GOODS				
1 Furniture	18		16	
2 Appliances, etc	24		17	
3 Floor coverings	11		11	
4 Drapery and soft furnishings	9		12	
5 Hardware, pottery, glass, etc	9		6	
Total—Household Durable Goods		71		62
VI. MISCELLANEOUS GOODS				
1 Soap	8		7	
2 Miscellaneous household goods	9		11	
3 Medicines and toilet requisites	7		4	
4 Newspapers, books, stationery, etc	11		22	
Total—Miscellaneous Goods		35		44
VII. SERVICES				
1 Travel	25		31	
2 Postage, etc	9		9	
3 Entertainment	18		24	
4 Other services	27		27	
Total—Services		79		91
VIII. ALCOHOLIC DRINK				
1 Beer	93		71	
2 Whisky	8		7	
Total—Alcoholic Drink		101		78
IX. TOBACCO				
1 Cigarettes	87		72	
2 Pipe tobacco	29		18	
Total—Tobacco		116		90
GRAND TOTAL		1,000		1,000

*The earlier series of weights were used for calculating the index figures from June, 1947, up to January, 1952 The current series of weights have been used from February, 1952, onwards, for calculating index figures on the basis January, 1952, taken as = 100

†Canned and bottled vegetables and canned and bottled fruit were covered by the " miscellaneous manufactured foods " section in the earlier series of weights, but in the current series of weights they are included in the sections for " other vegetables " and " fruit ", respectively

‡The weight assigned to rent and rates in the current series includes an allowance for the rents of dwellings built since June, 1947, which had been excluded from the calculations up to January, 1952

APPENDIX X

I LIST OF OFFICES OF THE MINISTRY OF LABOUR AND NATIONAL SERVICE USED FOR THE COLLECTION OF FOOD PRICES

(*a*) *In Greater London* (25 Offices)

Acton	Hackney
Battersea	Harrow
Bermondsey	Hayes
Brixton	Hendon
Bromley	Ilford
Brook Green	Kingston
Camden Town	Orpington
Croydon	Stepney
Dagenham	Tottenham
East Ham	Walham Green
Enfield	Westminster
Erith	Woolwich
Finchley	

(*b*) *In Towns with Population* (*in* 1947) *over* 200,000 (25 Offices)

Attercliffe (Sheffield)	Leicester
Belfast	Leith (Edinburgh)
Birmingham	Levenshulme (Manchester)
Bootle	Liverpool
Bradford	Manchester
Bristol	Maryhill (Glasgow)
Cardiff	Newcastle-on-Tyne
Coventry	Nottingham
Glasgow Central	Parkhead (Glasgow)
Handsworth (Birmingham)	Portsmouth
Hanley	Selly Oak (Birmingham)
Hull	Walton (Liverpool)
Leeds	

(*c*) *In Towns with Population* (*in* 1947) *of* 50,000–200,000 (50 Offices)

Aberdeen	Lancaster
Barnsley	Lincoln
Barrow-in-Furness	Merthyr Tydfil
Bedford	Middlesbrough
Birkenhead	Motherwell
Blackburn	Newcastle-u-Lyme
Blackpool	Newport (Mon)
Bolton	Northampton
Brighton and Hove	Norwich
Burnley	Nuneaton
Cambridge	Oldham
Carlisle	Oxford
Darlington	Peterborough
Derby	Plymouth
Dudley	Reading
Dundee	St Helens
Eastbourne	Southampton
Exeter	Stockport
Gateshead	Stretford
Grays	Sunderland
Grimsby	Swansea
Huddersfield	Swindon
Ipswich	Walsall
Keighley	Watford
	Worcester
	York

(*d*) *In Towns with Population* (*in* 1947) *of* 5,000–50,000 (50 Offices)

Altrincham	Londonderry
Batley	Loughborough
Berwick-on-Tweed	Maesteg
Bishop Auckland	Melton Mowbray
Bletchley	Montrose
Blyth	Northwich
Camborne	Omagh
Chatham	Pembroke Dock
Chichester	Penrith
Chorley	Perth
Cowes	Rothesay
Denton	Rugby
Dover	Saffron Walden
Dumfries	Salisbury
Ebbw Vale	Scarborough
Ellesmere Port	Shrewsbury
Epping	Spalding
Goole	Spennymoor
Hertford	Stafford
High Wycombe	Stroud
Kendal	Todmorden
Kidderminster	Trowbridge
Leek	Weybridge
Leigh (Lancs)	Worksop
Llanelly	Wrexham

NOTE —In the case of Belfast, Bradford, Cardiff, Coventry, Hull, Leicester, Newcastle-on-Tyne, Nottingham and Portsmouth one or two of the retailers are located in a suburb

I LIST OF OFFICES OF THE MINISTRY OF LABOUR AND NATIONAL SERVICE USED FOR THE COLLECTION OF FOOD PRICES (*contd*)

(*e*) *In Towns with Population (in* 1947) *under* 5,000 (50 Offices)

Amble
Annan
Bakewell
Blandford
Brecon
Cardigan
Carrickfergus
Chipping Norton
Cockermouth
Crediton
Crewkerne
Cromer
Cupar
Dalbeattie
Daventry
Diss
Downpatrick
Dungannon
Forres
Haddington
Haverhill
Honiton
Huntly
Jedburgh
Keith
Keswick
Kirkham
Launceston
Ledbury
Leiston
Linlithgow
Liskeard
Llangollen
Looe
Malton
Marlborough
Maybole
Newport Pagnell
Northallerton
Portmadoc
Ross-on-Wye
Royston (Herts)
Sandwich
Shaftesbury
Shepton Mallet
Tewkesbury
Thame
Thetford
Towyn
Wallingford

II LIST OF LOCALITIES COVERED BY THE COLLECTION OF RENT STATISTICS

London County Council Area
Acton
Ealing
East Ham
Edmonton
Tottenham
Walthamstow
West Ham
Willesden

Barnsley
Birmingham
Blackburn
Bolton
Bootle
Bradford
Bristol
Cardiff
Derby
Hull
Leeds
Leicester
Lincoln
Liverpool
Manchester
Middlesbrough
Newcastle-on-Tyne
Norwich
Nottingham
Reading
Rochdale
St Helens
Salford
Sheffield
Smethwick
South Shields
Stockport
Stoke-on Trent
Walsall
West Bromwich
Wigan
Wolverhampton
Aberdeen
Dundee
Edinburgh
Glasgow
Paisley

APPENDIX XI

Conventions of the International Labour Conference

During the thirty-five Sessions held from 1919 to 1952 the Conference has adopted 103 Conventions embodying the following main principles —

First Session, 1919

(1) Hours of work in industry should not exceed eight per day and forty-eight per week

(2) A system of free employment offices under public control should be established

(3) Women should not be employed in industry or commerce for six weeks before and six weeks after childbirth, and should be paid maternity benefits

(4) Women should not work in industry at night

(5) Children under fourteen should not be employed in industry

(6) No one under eighteen should be employed in industry at night

Second (Maritime) Session, 1920

(7) Children under fourteen should not be employed on vessels

(8) Shipwrecked sailors should be paid while unemployed

(9) Free employment agencies should be provided for seamen

Third Session, 1921

(10) Children under fourteen should not be employed in agriculture if their school attendance would suffer thereby

(11) Agricultural workers should have the same right to organise as industrial workers

(12) Agricultural workers should be included in the operation of workmen's compensation laws

(13) The use of white lead in painting should be restricted

(14) All industrial workers should have a weekly day of rest

(15) No one under eighteen should work as a trimmer or stoker on a vessel

(16) Seafarers under eighteen should have a yearly certificate of physical fitness

Fourth, Fifth and Sixth Sessions, 1922-1924

At these Sessions the Conference adopted Recommendations only, in order to give States time to consider and act on the Conventions already adopted

Seventh Session, 1925

(17) Workmen's compensation should be paid for industrial accidents

(18) Workmen's compensation should be paid for occupational diseases

(19) Foreigners should have equality with nationals as regards accident compensation.

(20) Night work in bakeries should be forbidden

Eighth Session, May-June, 1926

(21) Inspection of emigrants on board ship should be simplified

Ninth (Maritime) Session, June, 1926

(22) The completion and enforcement of seamen's articles of agreement should be subject to public supervision

(23) Seamen discharged abroad should be repatriated

Tenth Session, 1927

(24) Compulsory sickness insurance should be established for industrial and commercial workers and domestic servants

(25) Compulsory sickness insurance should be established for agricultural workers

Eleventh Session, 1928

(26) Minimum-wage-fixing machinery should be created in underpaid trades

Twelfth Session, May-June, 1929

(27) The weight should be marked on heavy packages transported by water

(28) Measures should be taken to safeguard dockers when loading or unloading ships

Thirteenth (Maritime) Session, October, 1929

At this Session the Conference completed the first discussion of four questions concerning maritime employment and decided that they should be placed on the agenda of a future Session

Fourteenth Session, 1930

(29) Forced or compulsory labour for Natives in colonial territories should be abolished

(30) Hours of work for salaried employees should not exceed forty-eight per week and, in general, eight per day

Fifteenth Session, 1931

(31) The time spent by each worker in an underground coal mine not to exceed seven hours and three-quarters in one day

Sixteenth Session, 1932

(32) The Conference revised Convention No 28, passed in 1929, on certain points

(33) Children under fourteen should not be employed in non-industrial occupations

Seventeenth Session, 1933

(34) Fee-charging employment agencies to be abolished

(35) A system of compulsory old-age insurance to be established for persons employed in industrial or commercial undertakings, in the liberal professions, and for outworkers and domestic servants

(36) A system of compulsory old age insurance to be established for persons employed in agricultural undertakings

(37) A system of compulsory invalidity insurance to be established for persons mentioned in No 35

(38) A system of compulsory invalidity insurance to be established for persons employed in agricultural undertakings

(39) A system of compulsory widows' and orphans' insurance to be established for persons mentioned in No 35

(40) A system of compulsory widows' and orphans' insurance to be established for persons employed in agricultural undertakings

Eighteenth Session, 1934

(41) The Conference revised Convention No 4 on certain points which do not affect its main principle

(42) The Conference extended the list of occupational diseases for which compensation should be paid, under Convention No 18 Silicosis and other diseases were added

(43) Hours of work and rest periods in automatic glass works should be regulated on a basis of 42 working hours to the average week

(44) A system of unemployment insurance should be established

Nineteenth Session, 1935

(45) Employment of women underground in mines should be prohibited

(46) The Conference revised Convention No 31 on certain points which do not affect its main principle

(47) The Conference adopted the principle of the 40-hour week, at the same time providing for maintenance of the standard of living of the workers

(48) Workers transferring their residence from one country to another should retain their pension rights

(49) Hours of work and rest periods in glass-bottle works should be regulated on the basis of 42 working hours to the average week

Twentieth Session, 1936

(50) The recruiting of native workers should be regulated

(51) Employees in industry and commerce should have at least 6 days annual leave with pay

(52) A 40-hour week should be applied on public works

Twenty-first (Maritime) Session, 1936

(53) Masters and officers should have certificates of competency

(54) Masters and officers should have at least 12 days' annual leave with pay and seamen 9 days

(55) The shipowners should be liable in case of sickness or injury of seamen

(56) Compulsory sickness insurance should be established for persons employed at sea

(57) Hours of work at sea should be fixed on the basis of an 8-hour day and adequate manning scales should be observed.

Twenty-second (Maritime) Session, 1936

(58) Children under 15 should not be employed on vessels (revision of No 7)

Twenty-third Session, 1937

(59) Children under 15 should not be employed in industry (revision of No 5)

(60) Children under 15 should not be employed in non-industrial occupations (revision of No 33)

(61) A 40-hour week should be applied in the textile industry

(62) Safety provisions should be observed in the building industry

Twenty-fourth Session, 1938

(63) Statistics of hours of work and wages should be compiled on a uniform basis and communicated periodically to the I L O

Twenty-fifth Session, 1939

(64) Contracts of employment of indigenous workers should be regulated

(65) Penal sanctions for breaches of contract to which the Convention applies should be abolished progressively and as soon as possible Penal sanctions for any such breach by a non adult person should be abolished immediately

(66) The recruitment, placing and conditions of labour of migrants for employment should be regulated

(67) The hours of work and rest periods of professional drivers (and their assistants) of road transport vehicles should be regulated

Twenty-sixth Session, 1944

At this Session the Conference adopted Recommendations only

Twenty-seventh Session, 1945

At this Session the Conference adopted a Recommendation only

Twenty-eighth (Maritime) Session, 1946

(68) Provides for the control and inspection of food and catering for crews on board ship

(69) Provides that persons selected as ships' cooks shall hold certificates of qualification before appointment

(70) Provides for medical and unemployment benefits to resident seafarers

(71) Provides for introduction of national schemes to grant pensions to seafarers at age of 55 or 60

(72) Makes provision regarding the length of seafarers' minimum annual holidays with pay

(73) Seafarers should be medically examined before going to sea, and thereafter at intervals of two years

(74) Lays down procedure for granting certificates of qualification for Able Seamen

(75) Deals with accommodation of crews on board ship, prescribing in detail the necessary requirements

(76) Fixes an international minimum wage for seamen, and provides for its application by collective agreements between shipowners and seafarers

Twenty-ninth Session, 1946

(77) Requires a medical examination for children and young persons to establish their fitness for employment in industrial undertakings

(78) Requires a medical examination of children and young persons to establish their fitness for employment in non-industrial occupations

(79) Restricts the employment at night of children and young persons in non-industrial occupations

(80) Provides for amendments to texts of past Conventions adopted by the Organisation made necessary by the dissolution of the League of Nations and the amendment of the Constitution of the International Labour Organisation

Thirtieth Session, 1947

(81) Requires a system of labour inspection to be set up in industrial and commercial workplaces to enforce legal provisions relating to conditions of work

(82) Embodies policies and measures for the improvement of social conditions in non-metropolitan territories

(83) Requires ratifying States to inform the Director-General of the International Labour Office how certain Conventions specified in the Schedule are applied to non-metropolitan territories

(84) Guarantees the rights of employers and employed in non-metropolitan territories to form lawful associations

(85) Requires labour inspection services to be maintained in non-metropolitan territories

(86) Restricts the maximum length of contracts of employment of indigenous workers in non-metropolitan territories

Thirty-first Session, 1948

(87) Provides that workers and employers shall have the right to establish or join organisations of their own choosing

(88) Requires the establishment of a free public employment service to ensure the best possible organisation of the employment market

(89) Restricts the employment of women in industry during the night and revises in certain important respects Convention No 41

(90) Restricts the employment of young persons in industry during the night and revises in certain important respects Convention No 6

Thirty-second Session, 1949

(91) Revises Convention No 72 on certain points that do not affect its main principles

(92) Revises Convention No 75 on certain points giving a greater amount of flexibility in the application of the Convention

(93) Revises Convention No 76 on certain points that do not affect its main principles

(94) Guarantees to workers under public contracts rights equal to those of workers in comparable trades or industries

(95) Makes detailed regulations to prevent any abuses in the payment of wages

(96) Revises Convention No 34 by providing the alternatives of regulation or of abolition of fee-charging employment agencies

(97) Sets out international minimum standards to protect persons migrating from one country to take employment in another and replaces Convention No 66

(98) Supplements No 87 It guarantees adequate protection against acts of anti-union discrimination in respect of the employment of workers, and provides protection for workers' and employers' organisations

Thirty-third Session, 1950

At this Session the Conference adopted a Recommendation only

Thirty-fourth Session, 1951

(99) Requires that minimum wage fixing machinery should be created in agriculture

(100) Embodies policies concerning equal remuneration for men and women workers for work of equal value

Thirty-fifth Session, 1952

(101) Requires Governments to assure agricultural workers an annual holiday with pay after a period of continuous service with the same employer

(102) Requires Governments to assure a certain standard of social security protection

(103) Requires Governments to assure maternity leave of at least 12 weeks and other forms of maternity protection

INDEX